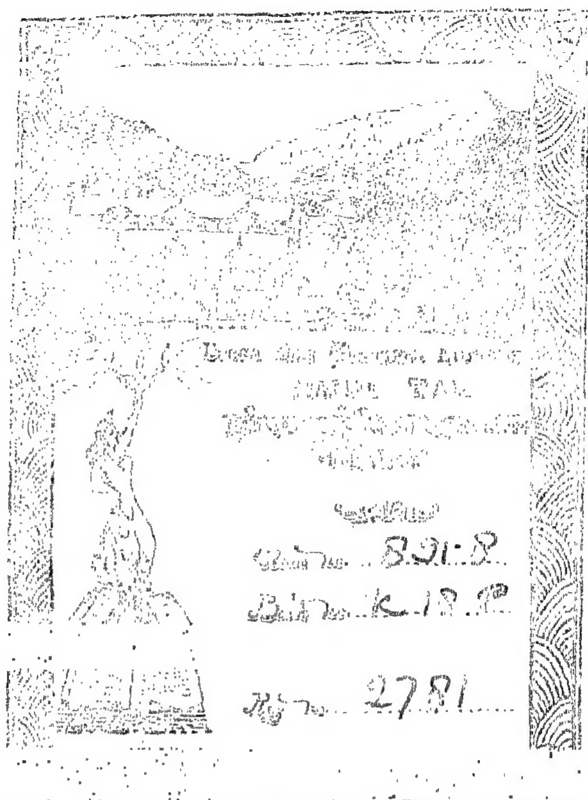

891.2
2781

पांचवें पुत्र को

बापू के आशीर्वाद

पांचवें पुत्र को बापू के आशीर्वाद

महात्मा गांधी का जमनालाल बजाज व उनके परिवार के अन्य लोगों के साथ हुआ पत्र-व्यवहार

संपादक

काका कालेलकर

प्रस्तावना

जवाहरलाल नेहरू



१९५३

मुख्य विक्रेता

सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली

पहला संस्करण : २ अक्टूबर १९५३

मूल्य
सादी जिल्द : साढे छह रुपये
पक्की जिल्द : आठ रुपये



एसोसिएटेड एडवर्टाइझर्स एंड प्रिंटर्स लि० बंबई में पी. एच. रामन
द्वारा मुद्रित तथा जमनालाल सेवा ट्रस्ट वर्धा की ओरसे
मार्तण्ड उपाध्याय द्वारा प्रकाशित

प्रकाशक का निवेदन

पूज्य गांधीजीके श्री. जमनालाल बजाज तथा उनके परिवारके लोगोंके साथ हुए पत्र-व्यवहारके इस संग्रहको हिन्दी-जनताके सामने रखते हुए हमें बड़ी प्रसन्नता हो रही है। जमनालालजी गांधीजीके पांचवें पुत्र बने थे। इस दृष्टिसे इस संग्रहमें अपने पुत्र-पौत्रोंके प्रति गांधीजीकी अनुपम वत्सलताके दर्शन होते हैं।

पूज्य काकासाहबने इसका संपादन करके तथा बीच-बीचमें सलाह आदि देकर हमारा जो मार्गदर्शन किया उसके लिए हम कृतज्ञ हैं।

पूज्य गांधीजीके पत्रों तथा लेखों आदिको प्रकाशित करनेकी स्वीकृति देनेके लिए नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद, के भी हम आभारी हैं।

प्रस्तुत पुस्तक तीन भागोंमें विभक्त है। पहले भागमें गांधीजी व जमनालालजीका पत्र-व्यवहार है। इसमें पूज्य बा, श्री. महादेवभाई देसाई तथा श्रीमती जानकीदेवी बजाजके पत्र भी ले लिये हैं। दूसरे भागमें बजाज परिवारके अन्य लोगोंको गांधीजीने जो पत्र लिखे है उनका संग्रह दिया गया है। तीसरे भागमें गांधीजी व जमनालालजी संबंधित पत्र व अन्य सामग्री दी गई है।

अंतमें परिशिष्ट है। इसके चार भाग है। पहले परिशिष्टमें मूल पुस्तकके भाग १ और २ के चुने हुए पत्रोंका हिन्दी अनुवाद है। मूल पुस्तकमें जिन पत्रोंकी संख्याके नीचे 'अ' संकेत दिया है सिर्फ उन्ही पत्रोंका अनुवाद दिया गया है। जमनालालजी रोज डायरी लिखते थे। उसमें वे दिनभरके काम तथा अपने मनोभावोंका वर्णन लिखा करते थे। गांधीजी-संबंधी उल्लेखोंसे

ये डायरियां भरी पड़ी है। शुरूसे सन् १९३२ के अंत तककी डायरियां खो गई है। उसके बादसे उनकी मृत्युसे एक दिन पहले तककी डायरियां सुरक्षित हैं। परिशिष्टके दूसरे भागमें इन डायरियोंमेंसे तथा परिवार वालोंको लिखे पत्रोंमेंसे गांधीजी-संबंधी चुने हुए अंश तथा विचार उद्धृत किये गये हैं। परिशिष्टके तीसरे भागमें "हिन्दी नवजीवन" "यंग इंडिया" "हरिजन सेवक" तथा "हरिजन" पत्रोंसे जमनालालजीके संबंधमें समय-समय पर लिखे गये लेखों और संस्मरणोंमेंसे चुने हुए अंश दिये गये हैं।

गांधीजीने जो पत्र स्वयं अपने हाथों लिखे है उनकी भाषा बिना कुछ फरक किए ज्यों की त्यों रखी गई है। ऐसे पत्रोंकी क्रमसंख्या परिशिष्ट ४ में दी गई है।

संपादकके वक्तव्यके बाद "मार्गदर्शककी खोज" तथा "पांचवें पुत्रको" ये दो शीर्षक आप पायेंगे। पहलेमें जमनालालजी मार्गदर्शककी खोजमें बापू-तक कैसे पहुंचे यह उन्हींके शब्दोंमें दिया गया है। दूसरेमें बापूने अपने 'पांचवें पुत्र' के प्रति समय-समय पर जो उद्‌गार व्यक्त किये हैं उनमेंसे कुछ उद्धरण दिये गये हैं।

"परिचय" में गांधीजी और जमनालालजीके 'परिवार' में से उन्हीं लोगोंका परिचय दिया है जिनके नाम पत्र-व्यवहार हुआ है।

सारा पत्र-व्यवहार मूलमें जिस भाषामें लिखा गया है उसी भाषामें दिया गया है। गुजराती पत्र नागरी लिपिमें छापे गये हैं। हरेक भागमें पत्र आदि तारीखवार दिये गये हैं।

पुस्तकमें कहीं कहीं विशेष पत्रोंके ब्लाक बनाकर भी दिये गये हैं।

जिन पत्रोंके नीचे हस्ताक्षर ब्लाकमें दिये गये हैं, उनकी मूल प्रतियां मौजूद हैं। जिनको नक़ल परसे लिया गया है उनके नीचे लेखकका नाम दे दिया गया है।

पत्रोंके बीचमें जहां तारक चिह्न (* * *) आये हैं उसका अर्थ है कि वहां संपादकने कुछ अंश छोड़ दिया है। अक्षर अस्पष्ट हो जाने या

नष्ट हो जानेसे जो अंश पढ़ा नहीं जाता है, वहां बिन्दु चिह्न (.....) दिये गये हैं। कई पत्रोंमें पूरी तारीखें व स्थान नहीं है। उनको खोजकर या संदर्भसे जानकर कौसमें दे दिये हैं।

इस संग्रहमें वे ही पत्र दिये जा सके है जो हमें प्राप्त हो सके हैं। जमनालालजी-संबंधी गांधीजीके तथा गांधीजी-संबंधी जमनालालजीके अनेक पत्र मित्रों एवं संबंधियोंके पास होंगे। उन सबसे हमारी प्रार्थना है कि उनके पास इस तरहके जो भी पत्र हों उनको या उनकी नक़लें हमें भेजनेकी कृपा करें ताकि दूसरे संस्करणमें उनका उपयोग किया जा सके।

इस संग्रहको तैयार करनेमें जिन भाइयोंने प्रेमपूर्वक हमें सहायता प्रदान की है उनके हम हृदयसे आभारी हैं। इन सहायकोंमें सर्वश्री हरिभाऊ उपाध्याय, नीलकंठ मशरूवाला, यू. एस. मोहन राव, के. वी. कामत, चिमनलाल शाह तथा रामलाल परीख मुख्य हैं।

मार्तण्ड उपाध्याय

प्रस्तावना

सन् १९१९ ईसवीमें भारतके लंबे इतिहासमें एक नये युगकी शुरूआत हुई। इससे पहले ही भारतमें ही नहीं वल्कि विदेशोंमें भी गांधीजी काफी प्रख्यात हो चुके थे। पर सन् १९१९ में तो वे एक तेज सितारेकी तरह भारतके विशाल रंगमंच पर चमक उठे। लाखों लोगोंकी श्रद्धाका केन्द्र तो वे बन ही चुके थे, साथ ही इस समय तक जुदा-जुदा प्रवृत्तियों वाले श्रद्धालु लोगोंका एक बड़ा मजमा भी उनके आसपास आ जुटा था।

हमारा यह जमघट बड़ा अजीबो-गरीब था। हमलोग एक दूसरेसे बिलकुल अलग थे; हमारी पृष्ठ-भूमियां अलग थीं, जीवनप्रणालियां अलग थीं, विचारधारायें भी अलग थीं। लेकिन इसके बावजूद हममें कुछ-न-कुछ समानता जरूर रही होगी जो हमें उस अद्भुत विभूतिकी ओर बरबस खींचती थी।

उस समय गांधीजीके नजदीक आने और उनके गिने-चुने आत्मीय जनोंमें निकटका स्थान पाने वालोंमें जमनालाल बजाज एक थे। जहां तक मेरा खयाल है उनसे मेरी पहली मुलाकात सन् १९२० के कांग्रेस अधिवेशनमें हुई थी। गांधीजीके नेतृत्वमें चल रहे राष्ट्रीय आन्दोलनमें सहयोगियोंके तौर पर काम करते हुए हम अकसर मिलते रहे, और हमारा परिचय काफी घनिष्ठ होता गया। स्वभावतः हम एक दूसरेसे बहुत भिन्न थे, और मुमकिन है कि दूसरी परिस्थितियोंमें यह घनिष्टता

गांधीजी व जमनालालजीका पत्र-व्यवहार अंग्रेजीमें *To a Gandhian Capitalist* नामसे प्रकाशित हो चुका है। यह प्रस्तावना वहांसे अनुवाद करके ली गई है।

पैदा होनेका मौका ही न आता। मेरे खयालसे हमने एक-दूसरेकी कीमत समझी और हमारा आपसी प्रेम और आदर आहिस्ते-आहिस्ते बढ़ता ही गया। जमनालालजीके प्रति निश्चय ही मेरा आदर बढ़ गया और प्रेमवश मैं उनको एक निकटका पारिवारिक व्यक्ति समझने लगा। हमारी विचार प्रणालियां भिन्न होनेके बावजूद मैं अपने घरेलु तथा सार्वजनिक मामलोंमें सलाह लेने अकसर उनके पास जाया करता था। क्योंकि मैंने यह देख लिया था कि वह बड़े ध्येयनिष्ठ और व्यवहारकुशल व्यक्ति थे।

हम दोनों अपने अपने दृष्टिकोणसे गांधीजीको श्रेष्ठ तथा महान व्यक्ति मानते थे। उनके नेतृत्वमें उनके साथ ही हम दोनों भी एक ही ध्येयकी साधनामें बढ़ते गये। जिस महान आन्दोलनमें हमने हिस्सा लिया उसके कई पहलू थे और सभी ढंगके लोग उसकी ओर आकर्षित हुए। उसमें भारतकी अनगिनत जनता थी, बुद्धिजीवी और समाजवादी, जमींदार और किसान, पूंजीपति और मजदूर, व्यापारी और कारीगर, सभी थे। एक अजीब मेला था। सबका समावेश करनेवाले उस आन्दोलनमें हम सबने अपना अपना छोटा-बड़ा हिस्सा अदा किया। यह कहना मुनासिब होगा कि जमनालालजी इस आन्दोलनमें एक विशेष और अनोखी प्रतिभा लेकर आये। हममेंसे लगभग सभी लोग औरोंकी तरह ही थे। हमारे बिना शायद काम चल भी जाता। पर जमनालालजी तो अपने ढंगके एक ही थे। उनके जैसे और लोग इस आन्दोलनमें उनकीसी निष्ठाके साथ शरीक नहीं हुए थे। इस वजहसे वे हमारे लिए और भी कीमती थे। सत्यके प्रति निष्ठा और कर्त्तव्य-परायणताके कारण वे हमारे प्रिय बन गये थे।

जब भरी जवानीमें वे हमसे जुदा हो गये, हम सबको जबर्दस्त सदमा पहुंचा। उनकी जगह लेनेवाला कोई नहीं था। मुझे निहायत खुशी है कि उनके पत्रोंका यह संग्रह प्रकाशित हो रहा है। इससे इस बातका कुछ पता लगता है कि जमनालालजी क्या थे। साथ ही गांधीजीके जीवन और कार्यके अनेक पहलुओंमेंसे एककी कुछ झलक भी दिखाई देती है।

पहलगांव (कश्मीर), जवाहरलाल नेहरू
२६ जून १९५१

संपादक का वक्तव्य

अनोखा संबंध

पूज्य गांधीजी और जमनालालजीका संबंध पूरे पच्चीस सालका और अत्यन्त घनिष्ट था। हम यह भी कह सकते हैं कि एक तरहसे अद्वितीय था। बचपनमें उनके जन्मदाताने जमनालालजीको गोद दे दिया था। प्रौढ़ अवस्थामें उन्होंने स्वयं अपनेको महात्मा गांधीजीकी गोदमें अर्पण किया और महात्माजीने उनको अपने पांचवें पुत्रके तौर पर स्वीकार किया। जमनालालजीने न केवल अपने हृदयको, अपनी संपत्तिको और सेवा-शक्तिको गांधीजीके चरणोंमें अर्पित किया, बल्कि जहां तक हो सका, उन्होंने अपना सारा परिवार ही गांधीजीके हाथोंमें सौंप दिया। गांधीजीने भी न केवल जमनालालजीकी, किन्तु उनके सारे परिवारकी, व्यावहारिक तथा आध्यात्मिक चिन्ता अपने सिर पर ले ली। सचमुच यह संबंध अनोखा था।

गांधीजी आदर्शवादी महात्मा होते हुए भी व्यवहार-कुशल नेता थे। जमनालालजी अत्यन्त व्यवहार-कुशल व्यापारी और समाज-सेवक होते हुए भी आदर्श-परायण थे। इसीलिए इन दोनों अद्‌भुत बनियोंका संबंध इतना घनिष्ट हो सका।

बचपनमें पिताका कुछ कड़ा रुख देखते ही धन-संपत्तिका सब मोह छोड़नेकी तेजस्विता जिन्होंने बताई थी, उन्होंने लगातार पचीस वर्ष तक अपनी बुद्धि-शक्ति, हृदय-शक्ति, और शारीरिक-शक्ति गांधी-कार्यमें लगाकर अपनी आत्मनिवेदनकी, स्वात्मार्पणकी श्रद्धा व निष्ठा भी बताई। ऐसे शिष्यको, और उनके परिवारके व्यक्तियोंको भी, गांधीजीने जो अनेक पत्र लिखे थे, उनका यह संग्रह है।

इन पांच-छ सौ पत्रोंको पढ़ते और उनमें अवगाहन करते ऐसा अनुभव होता है, मानो हम पवित्र गंगाजीके प्रवाहमें स्नान और पान कर रहे हैं। क्षण-क्षण हम उसकी पावनता और प्रसन्नता अनुभव करते हैं और पढ़ते-पढ़ते उसमेंसे नया बल भी मिलता है। संत-चरित्रके श्रवणका जो माहात्म्य बताया है उससे भी बढ़कर संत-संवादोंका होना चाहिये। और ये पत्र तो मानो नित्यके लिखित संवाद ही हैं। इन पत्रोंके साथ संबंध रखनेवालोंमेंसे आज श्री. महादेवभाई नहीं हैं, राष्ट्रमाता कस्तूरबा नहीं हैं, इन पत्रोंके प्रधान लेखक राष्ट्र-हृदयके नेता महात्मा गांधी भी नहीं हैं और उनके पंचम पुत्र, जो अपनी साधनाके जरिये उनके उत्तम पुत्र हुए थे, वे भी नहीं हैं। किन्तु इन चारोंके साधक-जीवनकी प्रेरणा हमारे पास है, जो इन पत्रोंके अन्दर प्रतिबिम्बित हुई है, और वह दीर्घकाल तक दुनियाके अनेक देशोंके और अनेक जमानोंके श्रेयार्थियोंको कृतार्थ करती रहेगी।

महात्माजीके जीवनके हम तीन प्रधान अंग मान सकते हैं। एक उनका राजनैतिक जीवन, जिसमें प्रधानतया सत्याग्रहकी आत्मशक्ति और बलिदानकी दिव्य-शक्ति प्रकट होती है। दूसरा उनका रचनात्मक जीवन, जिसके जरिये वे हिन्द जैसे एक गिरे हुए विस्खलित, निराश और अंध राष्ट्रको नवजीवनकी दीक्षा देते रहे और मानो धीरे-धीरे उसकी सब हड्डियां इकट्ठी करके उसमें प्राण फूंकते गये। रचनात्मक कार्य केवल संस्था-रचनाका नहीं, राष्ट्र-निर्माणका कार्य था। रचनात्मक संस्थाओंके द्वारा असंख्य कार्यकर्त्ताओंको नये आदर्शकी दीक्षा देना, कदम-कदम पर उनमें शुद्ध दृष्टि और अदम्य शक्तिका विकास करना, और उनके द्वारा सारे राष्ट्रमें नया चारित्र्य और नया तेज पैदा करना, यह कोई सामान्य काम नहीं था।

महात्माजीके जीवनका तीसरा पहलू है, असंख्य व्यक्तियोंके जीवनमें, उनके व्यक्तिगत सवालोंमें, पारिवारिक संबंधोंमें और व्यवहारकी अनेक बातोंमें पिता और माताके हृदयसे प्रवेश करना और पूरी आत्मीयताके द्वारा असंख्य परिवारोंकी अखंड सेवा करते रहना।

भारतके आम लोग गांधीजीके प्रथम दो पहलुओंको अच्छी तरह जानते हैं। बाहरी दुनिया गांधीजीके राजनैतिक और सत्याग्रही कार्योंको देख कर चकित

हो गई और उसीसे अब भी प्रेरणा ले रही है। हिन्दुस्तानके लोग, और कुछ हद तक हिन्दुस्तानके अंग्रेज-राज्यकर्त्ता भी, गांधीजीके रचनात्मक कार्यक्रमकी संजीवनीको बहुत कुछ समझ सके। लेकिन गांधीजीके तीसरे पहलूका कार्य, उसकी गहराई, उसका विस्तार और उसकी तेजाब जैसी शुद्धि-शक्ति बहुत कम लोग जानते हैं। गांधीजीके इस तीसरे कार्यसे जिन परिवारोंको लाभ हुआ वे ही उसकी लोकोत्तरता जानते हैं। लेकिन वे भी उसका विस्तार कहांसे जानें? गुप्त दानका माहात्म्य जिस तरह सबसे बड़ा है, वैसे ही इस आध्यात्मिक, उत्कट, व्यक्तिगत और पारिवारिक सेवाका माहात्म्य भी असाधारण है। मैं तो मानता हूं कि गांधीजीके ऊपर बताये हुए विविध कार्योंमें इस आखिरी अप्रकट सेवा-कार्यका महत्त्व दूसरे प्रकट कार्योंसे तनिक भी कम नहीं है।

सद्भाग्यसे इन तीनों पहलुओंका परिचय हमें यहां इन पत्रोंमें मिलता है। और विशेष तो यह कि जो पहलू हम या जगतके लोग अन्यथा नहीं समझ सकते वह इस पत्र-संग्रहमें विशेष रूपसे प्रकट हो रहा है। इतिहासकी दृष्टिसे और आध्यात्मिक दृष्टिसे भी यह मसला एक असाधारण दस्तावेज है।

हम यहां यह भी देखते हैं कि जिस तरह गांधीजीने जमनालालजीके जीवनमें और परिवारमें प्रवेश किया उसी तरह या उससे भी अधिक जमनालालजीने भी गांधीजीके जीवनमें, उनके जीवन-कार्यमें, उनके कुटुंबमें और उनके विशाल राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय परिवारमें प्रवेश किया। इसी परसे हम अन्दाज लगा सकते हैं कि जमनालालजीकी विभूति भी कितनी उत्तुंग और मर्मस्पर्शी थी। अगर गांधीजीने जमनालालजीकी कई उलझनें सुलझाईं तो जमनालालजीने भी गांधीजीकी व्यक्तिगत तथा संस्थागत उलझनें सुलझानेमें अपनी असाधारण निष्ठा और कुशलता दिखलाई है। ऐसा करते-करते उन्होंने इतना अधिकार पाया था कि कभी-कभी उनको गांधीजीसे कड़ी शिकायत करते और उनके रुखको सुधारते हुए भी देखा गया है। ऐसे समय गांधीजीकी प्रसन्नता एवं धन्यता कुछ अजीब ढंगसे उनके चेहरे पर प्रकट होती थी। जब-जब गांधीजी जमनालालजीकी बात मान जाते थे तब जमनालालजीके मुंह पर भी सच्छिष्य होनेका आनन्द प्रगट होता था। इन निस्स्वार्थ, निरभिमान और समान दृष्टिके रोचकोंके बीच जो संवाद चलते थे, उनको सुननेका अधिकार या मौका मिलना भी एक भाग्य था।

श्री महादेवभाई भी कभी-कभी ऐसी ही बातें महात्माजीसे करते थे, किन्तु उनका रुख अनुव्रताके जैसा था। उसमें गांधीजीके साथ असाधारण हार्दिक और आध्यात्मिक एकताकी झलक मिलती थी, और जमनालालजीके संवादोंमें उत्तराधिकारी सत्पुत्रकी निष्ठाकी झलक। इसीलिए जब जमनालालजीका अकस्मात् देहान्त हुआ तब गांधीजीने जमनालालजीके सब परिचित मित्रोंको उनके कार्य-भारको उठानेका आमन्त्रण देते हुए लिखा था :—

"आप जानते हैं कि जमनालाल और मेरे बीचमें कितना घनिष्ठ संबंध था। कोई काम मैंने नहीं किया जिसमें उनका पूरा सहयोग तन, मन और धनसे न रहा हो। जिसको राजकाज कहते हैं वह न मेरा शौक था न उनका। वे उसमें पड़े, क्योंकि मैं उसमें था। लेकिन मेरा सच्चा राजकाज तो था रचनात्मक कार्य। और उनका भी राजकाज यही था। मेरी आशा थी कि मेरे बाद जो मेरे खास काम माने जायं, उन्हें वे संपूर्णतया चलावेंगे। उन्होंने मुझे ऐसा आश्वासन भी दे रखा था।"

और सचमुच जमनालालजीमें वह शक्ति थी। दो तपकी याने चौबीस वर्षकी अवधि तक ऐसा कार्य करके उन्होंने वह अधिकार भी प्राप्त कर लिया था।

गांधीजी और जमनालालजीमें यह एक समान विशेषता पाई जाती है कि दोनोंका हृदय-विकास इतना असाधारण था कि केवल विस्तार ही नहीं किन्तु उत्कटता से भी वे सारे राष्ट्रको अपना कौटुंबिक परिवार बनानेकी शक्ति रखते थे। जहां इन दोनोंको प्रवेश मिला वहां वे तुरन्त ही अपने कौटुंबिक सद्‌गुणोंकी सुगंध फैला देते थे। और वह केवल दिखावेके शिष्टाचारमें नहीं, किन्तु सचमुच प्रेम, आत्मीयता और सेवाके द्वारा। जब गांधीजीने जमनालालजीको शिमलामें राजकुमारीजीके यहां ठहरनेके लिए भेजा तबका इन दोनोंका पत्र-व्यवहार पढ़ने लायक है। ऐसा लगता है कि वहांका इन दोनोंका विनोद मानो कौटुंबिक गुणोंके विकासकी होड़ ही है।

जमनालालजी, जानकीमैया या उनके पुत्र-पुत्रियोंके बारेमें जब गांधीजी पूछताछ करते हैं तब उनके लिए एक भी चीज कम महत्त्वकी नहीं है। उनके शरीर-स्वास्थ्यसे लेकर हरेककी पढ़ाई, उसका विकास, खासकर व्यक्तित्वका विकास, सब पहलुओं पर गांधीजीकी वात्सल्यपूर्ण दृष्टि पाई जाती है।

चि. कमलनयनको गांधीजीने समय-समय पर जो पत्र लिखे हैं उनके अन्दर उसके क्रमिक विकासकी झलक पाई जाती है। छोटी उम्रके पत्र अलग हैं। सीलोन जानेका तय हुआ तबके अलग हैं, और उसकी महत्त्वाकांक्षा देखकर ही गांधीजी मातापिताको सलाह देते पाये जाते हैं।

चि. कमला, मदालसा और ओम् तीनों मीठी लड़कियां हैं। प्रेमल हैं। किन्तु तीनों अपने-अपने नमूनेकी स्वतंत्र व्यक्तियां हैं। गांधीजी तीनोंको अलग-अलग ढंगसे प्रेरणा देते हैं और उनके विकासमें मददगार होते हैं।

मिठास तो सबसे ज्यादा रामकृष्णकी है, लेकिन वह अपनी संस्कारी नम्रताके पीछे अपनी स्वतंत्रताको संभाल लेता है। यही कारण है कि उसके नाम गांधीजीके खत कम हैं। किन्तु प्रेम और इंतजारी सबकी ओर एकसी ही है। जानकीमैयामें आत्म-विश्वास पैदा करनेका काम तो गांधीजी ही कर सके। यहां तक कि जमनालालजीके स्वर्गवासके बाद जो जानकीमैया सती होकर अपने जीवनका अंत चाहती थीं उनके सिर पर बापूजीने गोसेवाका भार डाला। इतना ही नहीं, किन्तु उन्हें उर्दूके हर्फ सीखनेके लिए भी बिठा दिया। यह तो गांधीजी ही का काम था।

भारतका आंतरिक इतिहास अगर हम ध्यानसे पढ़ें तो हम देख सकते हैं कि हमारे राष्ट्रके सांस्कृतिक धुरंधर सबके-सब विशाल परिवार, याने अविभक्त कुटुंब पद्धतिके ही कायल थे। "वसुधैव कुटुम्बकम्" ही उन सबका आदर्श था। हम यह भी जानते हैं कि आदर्श कौटुंबिक सद्गुणोंका विकास किये बिना, परिवारकी परिधि बढ़ाते जाना खतरेसे खाली नहीं है। अपने देशमें हमने अविभक्त कुटुंब पद्धतिका पुरस्कार करते-करते कई व्यक्तियोंके विकासमें बाधा डाली है और चंद व्यक्तियोंके व्यक्तित्वको कुचल डाला है। कई बार गांधीजीने चंद व्यक्तियोंका नेतृत्व मजबूत करनेके लिए, दूसरोंके व्यक्तिगत विकास पर अंकुश रखा है, और अगर उन्होंने अपने विकासके लिए अलग क्षेत्र नहीं ढूंढा तो उनका व्यक्तित्व बढ़नेसे रुक भी गया है। जमनालालजीका तरीका कुछ अलग था। उन्हींके मुंहसे मैंने सुना है कि जब कभी उन्होंने देखा कि दो व्यक्तियोंके स्वभावमें परस्पर मेल नहीं है तो वे दोनोंके लिए अलग-अलग भिन्न-भिन्न क्षेत्र बना देते थे ताकि दोनोंकी शक्तिका पूर्ण विकास हो सके। यही कारण था

कि ऐसे मामलोंमें जमनालालजीको ज्यादा सफलता मिलती थी। अगर हम इतिहासमें ढूंढ़ें तो गांधीजी और जमनालालजीने मिलकर जिस विशाल कुटुंबकी स्थापना की, उसके जैसा विशाल कुटुंब, कुटुंबके रूपमें शायद ही और कहीं चला होगा।

जब गांधीजीने राजकोटका सवाल अपने हाथमें लिया और जमनालालजीने जयपुरका, तब दोनोंमें यही मध्यकालीन खानदानी-वृत्ति काम कर रही थी। गांधीजी और जमनालालजी बारबार कहते थे कि वे स्वयं जितने प्रजाके हितचिंतक थे उतने ही देशी राजाओंके भी मित्र थे। देशी राजाओंने कभी गौरसे सोचा ही नहीं कि इन वचनोंमें कितनी गहराई भरी हुई थी। अगर देशी राजाओंके सब सवाल इन्हींके द्वारा और इन्हींके ढंगसे हल किये जाते तो देशका राजनैतिक जीवन, हमारी संस्कृतिके लिए अधिक हितकर हो जाता। लेकिन पश्चिमकी शिक्षाने अपना प्रभाव इतना फैलाया था कि राजा और प्रजा दोनों गांधीजीकी पद्धति और जमनालालजीकी मनोवृत्ति या महत्त्वाकांक्षाको समझ नहीं सके, झेल न सके। और अंग्रेजोंकी मौजूदगी और नीतिके कारण भी मामला हमेशा बिगड़ता गया।

जो बात देशी राजाओंके बारेमें थी वही हिन्दुस्तानके समाजके बारेमें भी सही थी। गांधीजीमें धार्मिक या सामाजिक तंगदिली तनिक भी नहीं थी, किन्तु हिन्दू-धर्म और हिन्दू-समाज दोनोंके प्रति उनकी आत्मीयता कम न थी। जमनालालजीके बारेमें भी यही कहा जा सकता है। जो निष्ठा जमनालालजीमें हिन्दू-धर्मके प्रति पाई जाती है वैसी निष्ठा बहुत कम लोगोंमें देखनेको मिली है। इस धर्मनिष्ठाके कारण ही वे गांधीजीके भक्त बने। जमनालालजीमें यदि हिन्दू-धर्मके प्रति औरोंके जैसी विकृत निष्ठा होती तो वे गांधीजीको अपना हृदय अर्पण नहीं कर सकते। गो-सेवा, अस्पृश्यता-निवारण, आंतर्जातीय-विवाह, हिन्दू-मुस्लिम एकता, राष्ट्रभाषा-प्रचार, सर्व-धर्म-समभाव और ट्रस्टीशिपका सिद्धांत (संपत्तिकी ओर विश्वस्त-वृत्ति), इन सब बातोंमें जमनालालजीने गांधीजीके साथ अपनी पूर्ण एकता सिद्ध की थी। कितने आश्चर्यकी बात है कि गांधीजीके पचीस वर्षके इन पत्रोंमें उनको ऊपर बताई बातोंमें जमनालालजीसे कभी भी दलील नहीं करनी पड़ी!! ऐसा लगता है कि दोनोंके बीच ये सब बातें पहले ही मान्य थीं। इसी

लिए इन सब बातोंमें जमनालालजी गांधीजीका कार्य पूर्ण हृदयसे करके उनको संतोष दे सकते थे और स्वयं भी संतोष पा सकते थे।

सचमुच जमनालालजी गांधीजीकी कामधेनु थे। पैसे देने या लानेकी दृष्टिसे ही नहीं, किन्तु गांधीजीके आदर्श और मनोरथ समझकर उनकी सब कामनायें सिद्ध करनेके लिए अपनी समस्त शक्ति, अपना समस्त बल — द्रव्य-बल, मनुष्य-बल, बुद्धि-बल और व्यवस्था-बल — लगानेवाली कामधेनु थे।

गांधीजीको रचनात्मक कार्यक्रमके लिए पैसे तो कई लोगोंने दिये हैं। बिड़ला-बंधु, अहमदाबादके व्यापारी, रंगूनवाले डा. प्राणजीवन मेहता, उत्कलके जीवराम कोठारी आदिसे लेकर डा. रजबअली पटेल तक असंख्य लोगोंने गांधीजीको आर्थिक सहायता दी है; किन्तु गांधीजीके कार्यको अपना ही कार्य बनानेकी शक्ति तो जमनालालजीने ही दिखाई। खादी हो या इतर ग्रामोद्योग, गुजरात विद्यापीठ हो या राष्ट्रभाषा प्रचार, अस्पृश्यता-निवारण हो या गो-रक्षा, सब कार्योंमें जो कुछ भी जोश या जिन्दापन आया उसमें जमनालालजीके व्यक्तित्वका भाग कमोवेश अवश्य था। गांधीजीके इन सब पत्रोंमें इतना विश्वास पाया जाता है कि राष्ट्र हितकी हर बातमें जमनालालजी उनके साथ हैं ही।

खादी और गो-रक्षा दोनोंमें वैश्य-धर्मका चरम उत्कर्ष है। जब जमनालालजीने गांधीजीके पास आत्मशुद्धिके लिए कोई साधना मांगी तब गांधीजीने उनको गोसेवाका ही काम सौंपा। हमारे शास्त्रकारोंने कहा है कि गो-रक्षाका काम भगवानने वैश्योंको सौंपा है। गो-रक्षा वैश्य ढंगसे ही हो सकती है, क्षात्र ढंगसे नहीं। फिर कौनसा आश्चर्य है कि गांधीजी और जमनालालजी दोनों वैश्य इस कार्यमें अपनी अधिकसे-अधिक शक्ति लगा सके!

सन् १९२२ में ही गांधीजीने जमनालालजीको लिखा था: यदि विदेशी सूत और कपड़ोंका व्यापार करनेवाले लोग अपने व्यापारको नहीं छोड़ेंगे, और जनता विदेशी कपड़ोंका मोह नहीं छोड़ेगी तो मुल्ककी महाबीमारी — भूख हरगिज हट नहीं सकती। दर्दनाक अनुभवसे कहना पड़ता है कि आज भी वह बात उतनी ही सही है। गांधीजीने तीस बरस पहले जो स्पष्ट देखा था उसका विश्वास आज भी न हमारे व्यापारी वर्गको हुआ है,

न हमारी जनताको, न प्रजाकीय सरकारको। महाबीमारी—भूख घटी नहीं, बढ़ती ही जाती है। तो भी लोग और सरकार अपनी सारी शक्ति खादी और ग्रामोद्योग के पीछे नहीं लगा रहे हैं!

श्रेयार्थी जमनालालजीके आत्मशुद्धिके सतत प्रयत्नका संपूर्ण चित्र हमें कौन दे सकेगा? श्री विनोबाजी शायद कुछ दे सकें। लेकिन ऐसे चित्रका दर्शन करके पावन होनेके अधिकारी भी तो कौन और कितने हैं?

जीवन-शुद्धिका प्रयत्न मनुष्य-जीवनकी सर्वोच्च साधना है। अधिकांश जनता इस बारेमें जागृत ही नहीं होती। बहुतसे लोग तो कानूनके डरसे स्थूल बातोंमें अपनेको स्वच्छ मार्ग पर रखते हैं। थोड़े ऐसे भी होते हैं जो अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा बनाये रखनेके लिए अपनेको सीधे मार्ग पर रखते हैं। चंद लोग अपने बाल-बच्चोंके लिए अच्छी विरासत छोड़नेके खयालसे सदाचारके रास्ते पर चलते हैं और इतनी सिद्धि हासिल की तो अपने आपको कृतार्थ मानते हैं। पर जमनालालजीको इतनी सिद्धिसे संतोष नहीं था। वे कहते थे कि अशुभ वासना मनमें पैदा ही क्यों हो?

समय-समय पर जमनालालजी बापूजीको अपनी मानसिक स्थितिकी रिपोर्ट देते थे, और गांधीजी भी उन्हें उचित सलाह और प्रोत्साहन देते रहते थे। अगर यह सारा पत्र-व्यवहार अविकल रूपसे मिल जाता तो आत्मोन्नतिके मार्गमें सतत प्रयत्न करनेवाले तमाम विश्वके यात्रियोंके लिए वह एक दिशादर्शक नक्शा हो जाता। आज भी जो कुछ हिस्सा यहां पर हमें उपलब्ध है, उसमें उपनिषत्कालके साधक और महर्षियोंके संवादकी झलक और भव्यता पाई जाती है। नारद या प्रतर्दन राजा अपने गुरुके पास जाकर अपनी हालत बताते हैं और आगेका रास्ता पूछते हैं, वैसा ही वायुमंडल यहां दीख पड़ता है।

गांधीजीने अपना प्रधान जीवन-सिद्धान्त और व्यापक जीवन-दृष्टि जमनालालजीको सबसे पहले उस एक ही पत्रमें लिख भेजी, जो उन्होंने भारतमें प्रथम बार जेल जाने पर साबरमती जेलसे १६-३-१९२२ को लिखा था। यह मानो एक दीक्षा पत्र ही था और ऐसा दीख पड़ता है कि उसी समयसे जमनालालजी आत्मशुद्धिके लिए गांधीजीसे मदद मांगने लगे। गांधीजीकी दृष्टिमें आत्मशुद्धि और स्वराज्य-प्राप्ति एक ही चीज है।

सत्यकी अनन्य निष्ठाके बिना किसीका आदर्श-सत्याग्रही बनना अशक्य है।

इस पत्रमें गांधीजी बताते हैं कि सर्व श्रेष्ठ साधना सत्यकी ही हो सकती है। सत्यकी खोज करते-करते उन्हें उसमें जीवनके और सब सिद्धांत मिल गये। सत्यके द्वारा ही उन्हें अहिंसाका साक्षात्कार हुआ। पूर्ण सत्यके दर्शन तो भगवानकी कृपासे ही होंगे। लेकिन निर्मल अंतःकरणको जिस समय सत्यके जैसी जो भी चीज लगे उसीको पूरी निष्ठासे चलाते-चलाते शुद्ध सत्य मिल सकता है।

अहिंसाका ऐसा नहीं। सत्यके द्वारा अहिंसा प्राप्त होती है। केवल अहिंसासे सत्य मिलेगा ही, ऐसा विश्वास नहीं है। कई बार अहिंसा किसे कहें इसका निर्णय करते असमंजस पैदा होता है। जन्तुनाशक पानीका व्यवहार भी हिंसा ही है। सच तो यह है कि इस हिंसामय जगतमें अहिंसामय बनकर रहना यही बड़ी साधना है। सत्यकी दृढ़ निष्ठासे अहिंसा सिद्ध हो सकती है। सत्यसे ही प्रेम सिद्ध होता है, सत्य ही हमें मृदु बनाता है। जो सत्यवादी बनना चाहता है, सत्यका आग्रह रखना चाहता है, उसका नम्रताके बिना चलेगा नहीं। सत्यकी मात्रा जैसे-जैसे बढ़ती जाती है वैसे-वैसे वह नम्र होता ही जाता है।

गांधीजीने अपने अनुभवसे ही यह बात लिखी है। वे कहते हैं, सत्यको आज मैं जितना पहचान सकता हूं और उसका खयाल रख सकता हूं उतना एक वर्षके पहले नहीं था। आज अपनी अल्पताका भान जितना है उतना एक सालके पहले नहीं था। मुझे दिन पर दिन 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' के महावाक्यका अद्भुत साक्षात्कार होता जाता है। इसलिए हमें धीरज बढ़ाना चाहिए। धीरज बढ़ते-बढ़ते कठोरता मनुष्यके हृदयसे कम होने लगती है, सहिष्णुता बढ़ती है। अपनी खामियां पहाड़के जैसी दीख पड़ती हैं और दुनियाकी खामियां रजके जैसी। सत्यके द्वारा ही आत्माके दर्शन होते हैं।

जबतक आत्माको न पहचानोगे तबतक उसकी जगह अहंकार लेता है। अहंकारके कारण हमारा शरीर टिक सकता है। अहंकारका पूर्ण नाश होते ही शरीरका भी अत्यधिक नाश होगा और वही है मोक्ष। जिसके अहंकारका पूर्ण नाश हुआ है, वह तो सत्यकी प्रत्यक्ष मूर्ति रहेगा। उसे परब्रह्म कहनेमें भी कुछ संकोच नहीं। इसीलिए तो परमात्माका एक सुंदर नाम है दासानुदास। हमें भी दासानुदास होकर ही रहना है।

लेकिन सत्य-निष्ठा कोई आसान व्रत नहीं है। स्त्री, पुत्र, मित्र, परिग्रह, सब कुछ सत्यके अधीन रहना चाहिये। सत्यकी खोज करते-करते अगर इन सबोंका त्याग करनेके लिए तत्पर रहें, तभी हम सत्याग्रही बन सकते हैं।

गांधीजी स्वराज्य और राष्ट्रोत्थानकी प्रवृत्तिमें पड़े, उसका मुख्य कारण भी सत्य प्राप्तिकी इच्छा ही था। सत्यकी उपासना द्वारा सत्यरूप हो जाना यही परम धर्म है। इस धर्मका पालन करते हुए स्वराज्य साधना पैदा हुई। उसीकी सिद्धिमें जमनालालजी जैसे अपने साथियोंको कुरबान करते उन्हें कभी संकोच नहीं रहा। बाह्य स्वराज्य तो एक प्रतीक मात्र है। सच्चा स्वराज्य तो व्यक्तिका आंतरिक और हृदयका स्वराज्य है। गांधीजीका विश्वास है कि ऐसा एक भी सत्याग्रही सिद्ध हुआ तो स्वराज्य प्राप्ति होते एक क्षणकी भी देरी नहीं लगेगी। यह मार्ग कठिन है इसलिए उसे हम छोड़ न दें। मार्ग कठिन है इस वास्ते प्रयत्नकी पराकाष्ठा करनी चाहिये।

गांधीजीने जमनालालजीको अपना पांचवां पुत्र बनाया, तभीसे जमना-लालजी तो सत्पुत्र होनेका प्रयत्न करते ही थे, लेकिन गांधीजी भी सत्पिता बननेकी अखंड कोशिश करते रहे। और उनका प्रयत्न इतना उत्कट था कि हरेक आदर्श वे इसी जन्ममें सिद्ध करना चाहते थे। चकित दुनियाने देख लिया कि उत्कट प्रयत्नसे साधक कितनी ऊंचाई तक पहुंच सकता है।

जेलसे लिखे और एक पत्रमें ५-१०-२२ को गांधीजी जमनालालजीको उन-की धर्म-भावनाके बारेमें लिखते हैं: मनमें अपवित्र विचार आ जाय उससे घबरा जानेका कोई कारण नहीं है। अपवित्र विचारोंसे जो व्यक्ति पूर्ण मुक्त हुआ उसे मोक्ष ही मिला। अपवित्र विचारोंका पूर्ण नाश दीर्घ तपश्चर्यासे ही होता है। उसका उपाय एक ही है। जब कभी मनमें अपवित्र विचार आ जाय तब तुरन्त उसके सामने उसका विरोधी पवित्र विचार खड़ा कर देना चाहिये। ईश्वरके अनुग्रहसे ही यह हो सकता है। इस अनुग्रहके लिए सर्वकाल ईश्वरका नाम लेना और वह अंतर्यामी है इस बातको पहचान लेना जरूरी है। शुरू-शुरूमें रामनाम हृदयसे नहीं निकलेगा। जीभ रामनाम लेती जायगी और मनमें दूसरे विचार आते जायेंगे, इसकी परवाह नहीं। आत्म-शुद्धिका खयाल रखकर हम रामनाम लेते जायें, तो अंतमें जो नाम जीभ पर है वह हृदयमें भी प्रथम स्थान ले लेगा।

और एक बात है। मन तो चाहे दौड़ता रहे, हम अपनी इंद्रियोंको उसके अधीन न होने देंगे। जहां मन गया वहां अगर उसके पीछे हमारी इंद्रियां भी गई, मनकी वासनाके वश होकर अगर हम वैसा आचरण करने लगे तो हमारा नाश हो जायगा। लेकिन जबतक मनुष्य, भले ही जबरदस्ती, अपनी इंद्रियोंको काबूमें रखता है, किसी-न-किसी दिन अपवित्र विचारोंको भी काबूमें ले ही आवेगा। अपनी बात बताते हुए जमनालालजीको प्रोत्साहन देनेके लिए गांधीजी कहते हैं कि आज भी अगर मेरे विचारोंके अनुसार मैं अपने इंद्रियोंको कार्य करने दूं तो आज ही मेरा नाश हो जायगा। मनमें अपवित्र विचार आते ही इससे हम मायूस क्यों हों, हमें तो अधिक उत्साही बनना चाहिये। प्रयत्नका सारा क्षेत्र हमारे वश है। परिणामका क्षेत्र भगवानने अपने वशमें रख लिया है, इस वास्ते परिणामकी चिंता हम न करें। जब कभी मनमें अपवित्र विचार आ जाय तब ऐसा समझ लेना कि अपनी पत्नीके प्रति हम बेवफा बने हैं। साधु पति पत्नीके प्रति बेवफा हो ही कैसे सकता है? तुम साधु हो। मामूली इलाज तो तुम जानते ही हो। आहारकी मात्रा कम करके अल्पाहारी बनना चाहिये। दृष्टि अपने सामनेकी जमीन पर रखकर ही चलना चाहिये। आंख अगर मलिन हो जाय तो उसपर ऐसा क्रोध करना मानो हम उसे फोड़नेके लिए तैयार हुए हैं। पवित्र ग्रंथोंका सत्संग तो रखना ही चाहिये।

इस तरह गांधीजी जमनालालजीको अश्वासन देते गये।

दिन पर दिन जमनालालजीको मनमें शंका उठने लगी कि इस तरह गांधीजीके ऊपर अपना बोझ डालना कहां तक मुनासिब है। तारीख २५-१०-२२ को जमनालालजीने लिखा: मेरे बारेमें आपने जो रास्ते बतलाये उनका उपयोग मैं अवश्य करूंगा, इससे जरूर लाभ पहुंचेगा। लेकिन ऐसा मनमें सवाल उठता है कि जब मनकी ऐसी हालत थी तब आपका पुत्र बननेका अधिकार ही मुझे क्या था। आप पर मैंने ज़वाबदारी डाल दी। लेकिन उससे मैं अपनी जवाबदारीसे मुक्त नहीं हो सकता। मन बाहर इधर-उधर जाता है, तो इज्जतके डरसे उसे रोक सकता हूं, लेकिन मेरी इच्छा तो यही है कि गृहस्थाश्रममें रहते हुए भी कामवासनासे हमेशाके लिए मुक्त हो जाऊं। यही तो सबसे कठिन बात है, लेकिन मुझे विश्वास है कि आपके पवित्र आशीर्वादसे मुझे मुक्ति मिलेगी।

गांधीजीने जमनालालजीको अपना पुत्र बनाया सही। एक बार उन्होंने जमनालालजीको एक पत्रमें चिरंजीवकी जगह भाई जमनालालजी लिखा। जमनालालजीको इसका दुख हुआ और उन्होंने शिकायत की। जवाबमें गांधीजीने लिखा कि खुले खतमें चिरंजीव लिखना योग्य है या 'भाई' इसका निर्णय मैं उस समय नहीं कर सका, इस वास्ते मैंने 'भाई' शब्दका प्रयोग किया। अब जिस तरह तुम्हारे मनमें शंका है कि चिरंजीव बननेकी योग्यता तुममें है या नहीं, इसी तरह मेरे मनमें भी शंका है कि मैं पिताका स्थान लेनेके योग्य हूं या नहीं। अगर तुम अपूर्ण हो तो मैं भी अपूर्ण हूं। मुझे भी अपनी योग्यताका विचार करना चाहिये। तुम्हारे प्रेमके कारण मैं 'पिता' बन गया, ईश्वर मुझे इस स्थानके योग्य बनाये। अगर तुममें खामी रही तो वह मेरे स्पर्शकी खामी होगी। मुझे विश्वास है कि हम दोनों प्रयत्न करते-करते सफल हो जायेंगे और अगर सफलता प्राप्त नहीं हुई तो भी क्या? भगवान् जो भावनाका ही भूखा है, हमारे अंतरको समझ सकता है। जैसी हमारी योग्यता होगी वैसा हमारा निकाल करेगा। इसलिए जबतक मुझमें मलिनताको ज्ञानपूर्वक स्थान न दूं तबतक तुमको चिरंजीव (पुत्र) ही मानता रहूंगा।

इस पत्रमें गांधीजीने जमनालालजीके साथ अपनी इतनी एकता मानी है कि वे लिखते हैं कि तुम्हारे अन्दर अगर कुछ कमी रही तो वह मेरे स्पर्शकी कमी होगी।

इसमें तनिक भी आश्चर्य नहीं। जब गांधीजीने भारतकी सेवा शुरू की तब उन्होंने कहा था कि मैं सारे देशका प्रतिनिधि हूं। सज्जन, दुर्जन, देशभक्त, देशद्रोही, सब भारतियोंके कृत्योंका उत्तरदायित्व मेरे सिर पर है। इसीलिए तो उन्होंने चौरीचौराके अत्याचारोंकी पूरी जिम्मेदारी अपने सिर पर ली और उसका प्रायश्चित्त किया। आश्रममें अगर किसीने कोई गलती की तो वह अपनी ही गलती है, ऐसा समझकर वे स्वयं प्रायश्चित्त करते थे। भारतीय वेदान्तमें विश्वात्मैक्यकी जो भावना बताई है, उसकी साधना गांधीजी केवल ध्यानके द्वारा नहीं किन्तु इस तरह समग्र जीवन द्वारा भी करते थे।

जब जमनालालजीको उनकी जातिने बहिष्कृत किया तब गांधीजीने उनको लिखा कि तुमने जो कुछ भी किया है उसमें कुछ भी ऐसा नहीं जिसके

लिए शरम या पछतावा हो सके। जातिको तो अधिकार है ही कि जिस किसी व्यक्तिने उसके नियमोंका उल्लंघन किया उसका वह बहिष्कार करे।

जब तुम्हारे नाम तोहमतनामा आयेगा, उसको तुम मेरे पास भेज देना। मैं उसका जवाब लिख दूंगा। उसमें फिर जैसा चाहो वैसा फेरफार कर सकोगे। मैं इतना चाहता हूं कि हमारे जवाबमें पूरी नम्रता और विनय होना चाहिये। इस बहिष्कारके कारण जातिमें तुम्हारा प्रभाव कम होगा और द्रव्य इकट्ठा करनेकी तुम्हारी शक्ति भी घटेगी, इसकी मुझे फिक्र नहीं है। धर्मकी रक्षा करते भीख मांगनेका समय आ जाय तो भी क्या ? आखिर जब तुम्हारी जाति तुम्हारी धर्म-निष्ठा और नम्रता पहचान सकेगी तब स्वयं नम्र बनेगी। इसी तरहसे जातियोंमें सुधार हो सकेगा।

तारीख २१-११-१९२६ के पत्रमें आशीर्वाद भेजते हुए गांधीजी लिखते हैं: तुम दीर्घायु होवो और तुम्हारी पवित्रतामें वृद्धि होवे। इस जगतमें दूषणसे रहित कोई है ही नहीं। हम उस दूषणको दूर करनेकी कोशिश ही कर सकते हैं। ऐसा प्रयत्न तुम कर ही रहे हो। भगवानका वचन है कि प्रयत्नशीलके लिए दुर्गति है ही नहीं।

जमनालालजीने एक बार कपड़ेकी एक मिल खरीदनी चाही। उसमें एक उद्देश्य यह भी था कि मिल-मजूरोंको गांधीजीके आदर्शके अनुसार रखनेकी कोशिश की जाय। जब जमनालालजीके घरके लोगोंको इसका पता चला तो सबके सब अस्वस्थ हो उठे। खादी प्रचारक जमनालालजी कपड़ेकी मिलके मालिक बन जायं यह कैसा! ऐसे वायुमंडलमें गांधीजीने जमनालालजीको एक खत लिखा जिस परसे सिद्ध होता है कि सारा बजाज परिवार गांधीजीके असरके नीचे आगया था।

तारीख २७-९-३४ के पत्रमें वर्धासे गांधीजी लिखते हैं: खादी प्रचारमें इतनी गहराई तक उतरनेके बाद कपड़ेकी मिलका मालिक बनना अच्छा नहीं है। मुझे तो इस बातका आघात हुआ। लेकिन शायद मैं कुछ न लिखता, परन्तु जानकीमैया कल आकर पूछने लगी कि यह बला किसके लिए खरीद रहे हैं ? लड़के भी इस चीजको पसंद नहीं करते। नौकर जरूर कहेंगे कि अच्छा हुआ, अब मालिक हमें खादी पहननेका उपदेश थोड़े ही करेंगे।

जो चीज किसीको पसंद नहीं है उसे छोड़ ही देना चाहिए। अगर परोपकारके लिए धन कमानेके खयालसे ही इस प्रवृत्तिमें पड़े हो तो इस परोपकारके विना काम चला लेंगे।

गांधीजीके इस खतके मिलनेके पहले ही जमनालालजीने मिल न लेनका निर्णय कर लिया था।

जब जमनालालजीने ४९ वर्ष पूरे किये और पचासवेंमें प्रवेश किया तब उनकी मानसिक अस्वस्थता बहुत ही बढ़ गई थी। उन्होंने पवनारसे ४-११-३८ को गांधीजीको एक ऐसा दर्द-भरा पत्र लिखा है जो पढ़ते-पढ़ते हरेकका हृदय अस्वस्थ हो जाता है। उनके मनमें आत्महत्याके विचार भी आने लगे थे। दुनिया-भरके पत्र-साहित्यमें यह पत्र एक अनोखा स्थान प्राप्त करेगा।

"आज मिती व तारीखके हिसाबसे मुझे ४९ वर्ष पूरे हुए हैं। पचासवां वर्ष चालू हुआ है। आपका आशीर्वाद तो सदैव ही रहता है, परन्तु मैं जब विचार करता हूं तो मुझे इन दो अढ़ाई वर्षोंमें ऐसा साफ दिखाई देता है कि मैं आपके आशीर्वादका पात्र नहीं हूं। मेरी कमजोरियोंका जब मैं विचार करता हूं तब तो इन वर्षोंमें खासकर छोटेलालजीकी घटनाके बाद मेरे मनमें आत्महत्याके भी विचार आये, जिसे मैं कायरता व पाप समझता आ रहा था, बुद्धिसे तो अभी भी समझता हूं। मुझे दुःख इस बातका विशेष रहता है कि मेरी उन्नतिके बदले अवनति विशेष होती दिखाई दे रही है।

"इसके कई कारण हो सकते हैं, परन्तु उन सबकी जिम्मेवारी तो मेरी ही है। देहलीके पहलेतक तो विचारोंका जोर मेरे मनमें चलता रहा, एक तो मैं सब सार्वजनिक कार्योंसे, अगर संभव हो तो खानगी कामसे भी, अलग हो जाऊं। अगर यह संभव न हो तो ज्यादा जिम्मेवारीका काम लेकर उसमें रात-दिन फंसा रहूं। परन्तु अब तो निकलनेमें ही अधिक समाधान मिलना संभव है।

"मेरी कमजोरी मुझे इस प्रकार दिखाई दे रही है। अहिंसा व सत्यका आचरण कम होता दिखाई दे रहा है। डर है कि कहीं इस परसे श्रद्धा भी कम न हो जावे। इसी कारण असहनशीलता भी बढ़ रही है। क्रोधकी मात्रा भी बढ़ती जा रही है। कामवासना बढ़ती हुई मालूम हो रही है। लोभकी मात्रा भी। इतने सब दुर्गुण या कमजोरी जो

मनुष्य अपनेमें बढ़ती हुई देख रहा है फिर उसे जीनेका मोह कैसे रह सकता है? याने मानसिक कमजोरीके विचार तककी बात होती तो भी फिर प्रयत्नके लिए उत्साह रहता, परन्तु जब शरीरकी इन्द्रियोंको भी मैं काबूमें न रख पाता हूं यानी प्रत्यक्ष शरीरसे पाप होते दिखाई देता है तब लाचार बन जाता हूं। ऊपरी हिम्मत तो बहुत ज्यादा रख रहा हूं, रखनेका प्रयत्न भी करता रहूँगा, परन्तु मुझे आज यह अनुभव हो रहा है कि कहीं यही दशा रही तो या तो पागलकी स्थिति पर पहुंच जाना संभव है या पतनके मार्ग पर जानेका भय है। इसलिए आज अगर स्वाभाविक मृत्युका निमंत्रण आये तो मेरी आत्मा कहती है कि मुझे समाधान, शांति मिलेगी, क्योंकि मेरा भविष्य अंधेरेमें दिखाई दे रहा है। मुझे आज यह विश्वास हो जावे कि मेरा पतन कभी नहीं होवेगा, मैं सत्यके मार्गसे नहीं हटूंगा, तो मुझमें फिर नवजीवन, उत्साह आना संभव है। मुझे इन वर्षोंमें बहुतसी मानसिक चोटें लगी हैं, कुटुम्बियों द्वारा, मित्रों द्वारा, जिसके लिए मेरी तैयारी न थी। अगर इसी प्रकार चोटें लगती ही रहीं तो पागल होनेके सिवा दूसरा क्या होवेगा? मृत्यु तो मेरे हाथकी बात नहीं है। आत्महत्यामें तो कायरता व पाप दिखाई देता है। क्या करूं, कुछ समझमें नहीं आता। मेरे दिलका दर्द किसे कहूं? कौन ऐसा है जो प्रेमसे मेरी मानसिक स्थितिको सुधार सकता है? मेरा भरोसा तो आप पर व विनोबा पर ही था। परन्तु आपसे तो अब आशा कम होती जा रही है। विनोबासे अभी आशा है। शायद कोई समाधान-कारक मार्ग निकल जाए।

"इन वर्षोंमें मैं आपके पास कई बार हृदय खोलनेके लिए आया परन्तु आपकी मानसिक, शारीरिक व आसपासकी स्थितिके कारण पूरी तौरसे खोल नहीं सका। इसका मेरे मनमें दुःख रहा और ऐसा लगता रहा कि मैं आपको व अन्य मित्रोंको धोखा तो नहीं दे रहा हूं। क्योंकि मैं धोखेसे बढ़कर पाप या नीच कृत्य नहीं मानता आया। इसलिए मैंने मेरी स्थिति कई मित्रोंको, घरवालोंको कहनेका प्रयत्न किया, परन्तु उसमें पूर्ण सत्य न रहनेकी वजहसे या अन्य कई कारणोंसे उसका जो परिणाम आना चाहिये था, वह नहीं आया। अब आप कोई राजमार्ग बता सकते हैं। मुझे तो लगता है कि अभी तक मेरी बुद्धि काम दे रही है। मेरेमें जो-जो कमजोरियां हैं व वे जिन कारणोंसे घुसी हैं वह भी मालूम है, उनको निकालनेकी इच्छा

भी है। यह इच्छा तीव्र बनाई जा सकती है। परन्तु मेरे पास याने मेरे साथ कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसमें प्रेम, सेवा व उदारता भरी हुई हो, जिसके पवित्र चरित्र व प्रेममय वातावरण या सेवासे मेरे मनको शांति मिले। क्या इस प्रकारकी बहिन या भाई आपकी निगाहमें है ? अगर निगाहमें है तो क्या उसका मेरे साथ रह कर मेरी सेवा करना संभव है ? सार्वजनिक कार्यकर्त्ताके पाससे काम छुड़ा कर उससे अपनी सेवा लेनेकी हिम्मत नहीं होती। मैंने जिन कमजोरियोंका वर्णन किया है उसका यह अर्थ नहीं है कि मेरेमें पहले कमजोरियां नहीं थीं, इन वर्षोंमें ही आई हैं। वे पहलेसे ही थीं, परन्तु मुझे लगता था कि वे जोरसे निकल रही हैं। परन्तु आज ऐसा नहीं मालूम हो रहा है, यही खास बात है।

"आप कोई ऐसा मार्ग निकाल सकें तो निकालें जिससे मेरी मामूली मनुष्योंमें गिनती हो। लोग अधिक पवित्र व उच्च न मानें तो शायद इससे भी मेरा कल्याण हो। आप मेरी इस अवस्थासे दुःखी तो होंगे ही परन्तु मैं क्या करूं? समझमें नहीं आता। मुझे तो आपको प्रणाम करनेमें भी संकोच होता है।

"मेरे मनमें जिस प्रकार विचार आये आज जन्मदिनके निमित्त लिख दिये हैं। आप जब यहां आवेंगे तब समय निकालकर जो कहना हो सो कहें, वहां तक मैं विनोबासे मदद लेनेका प्रयत्न करूंगा।"

यह पत्र गांधीजीको कुछ देरीसे मिला। इस बीच वे गांधीजीसे मिले और उन्होंने अपना सारा हृदय-मंथन गांधीजीके सामने प्रकट किया। मौनवार होनेके कारण गांधीजीने सब बातें सुन लीं और एक कागज पर लिखा: एक-दो दिनके लिए रह सको तो रह जाओ। कल कुछ समय निकालकर हम बातें करेंगे। तुम्हारे दर्दकी दवा मैं तो आसान मानता हूं। डर जानेका कोई कारण नहीं है और तुम्हारा विनाश तो है ही नहीं। फिर भी तुम्हारे दोषोंको मैं तो स्वीकार कर ही लेता हूं; क्योंकि मुझे ऐसे सब अनुभव हो चुके हैं। ये सब गुत्थियां यहां हल करके ही जाओ, इतना ही आज कहता हूं। लेकिन जमनालालजी रुक नहीं सके, इसलिए उसी रातको गांधीजीने अपने विचार स्पष्ट करते हुए उन्हें एक पत्र लिखा। गांधीजी लिखते हैं कि, मनुष्यको चाहिये कि वह अपने दोषोंका चिन्तन न करे, गुणोंका ही करे; क्योंकि मनुष्य जैसा चिन्तन करता है, वैसा बनता है। उसके यह मानी नहीं कि दोष

कभी नहीं देखना चाहिये। दोष देखे बिना चलेगा नहीं, लेकिन उन्हींका विचार करते-करते पागल न बनना चाहिये। आत्म-विश्वास रखकर निश्चय करो कि तुम्हारे हाथोंसे कल्याण ही होगा।

इसके बाद, कौनसी प्रवृत्ति कम करनी चाहिये, कौनसी प्रवृत्ति छोड़नी चाहिये, क्या-क्या करना चाहिये, यह सब बतानेके बाद गांधीजी लिखते हैं कि दूसरा सवाल विकारका है। यह जरा मुश्किल काम है। अगर मैं तुम्हारी बात बराबर समझा हूं तो कहूंगा कि तुम्हें स्त्री-परिचर्या छोड़नी चाहिये। सब कोई उसे हजम नहीं कर सकते। अपनी प्रवृत्तियोंमें स्त्रियोंकी सेवा लेनेवाला ज्यादातर मैं ही हूं। मेरी सफलता-निष्फलताका निर्णय मेरी मृत्युके बाद ही हो सकेगा। मैं केवल प्रयोग कर रहा हूं। मेरी कामना है कि मैं शुकदेवजी जैसा निर्विकारी बन जाऊं। उस स्थिति तक मैं नहीं पहुंचा हूं। स्त्री-जातिकी सेवा छोड़ देनेकी बात इसमें नहीं है। जो कुछ मैंने बताया है वह अगर हृदयसे जंच जाय तभी उसका पालन करना। निराशाके लिए कहीं भी स्थान नहीं है। तुम पतित नहीं हो, सत्यनिष्ठ हो। सत्यनिष्ठका पतन कभी नहीं हो सकता।

जमनालालजीके जीवनमें यह संक्रान्तिका समय था। यहांसे वे अधिकाधिक अन्तर्मुख होने लगे। जयपुर जेलसे १५-४-३९ को वे गांधीजीको लिखते हैं:

"मेरा मन तो यहां लग गया है। शान्ति भी ठीक मिल रही है। विचार भी प्रायः ठीक चलते हैं। कई बार कमजोरियोंके खयालसे उदासीनता व रोना आ जाया करता है। बादमें विचार करनेसे, पढ़नेसे उत्साह व भविष्य ठीक दिखाई देने लगता है। भक्तिकी ओर झुकाव बढ़ रहा है—बढ़ा रहा हूँ। परमात्माकी दया रही और आपका तथा विनोबाका आशीर्वाद रहा तो जीवनमें उत्साह ठीक आ जावेगा। पत्र सुबह प्रार्थनाके बाद लिखा है, जैसे विचार आये वैसे ही।"

अपनी जीवन-साधनाके सिलसिलेमें जमनालालजीको पिता तो गांधीजी मिल चुके थे, किन्तु वे एक आध्यात्मिक माताकी खोजमें भी थे। गांधीजीने सिफारिश की कि श्रीमती कमला नेहरूकी जिनपर श्रद्धा थी, ऐसी एक साध्वी

माता आनन्दमयी देहरादूनके पास रहती हैं, उनसे मिल लेना। जमनालालजी अगस्त १९४१ में उनसे मिले। बड़े ही प्रभावित हुए। आनन्दमयी विवाहिता होते हुए भी बाल ब्रह्मचारिणी थीं। उन्होंने अपने पतिको भी संन्यास लेनेका उपदेश दिया था।

एक समय जमनालालजीको जन्म-दिवसपर आशीर्वाद भेजते हुए यरवडा जेलसे गांधीजीने लिखा था :—

जन्म और मृत्यु दोनोंकी बात सोचते हुए मुझे लगता है कि जन्मकी अपेक्षा मृत्यु कुछ अच्छी चीज है। जन्ममें दुख भरा हुआ है, पराधीनता भी होती है। मृत्युके सामने हम पराधीनतासे छूट जाते हैं। चंद लोगोंने ब्राह्मी स्थितिका अनुभव भी किया है। अगर ठीक देखा जाय तो जन्मके मानी है दुखमें प्रवेश; पर मृत्यु तमाम दुखोंसे पूर्ण मुक्ति बन सकती है। इस तरह हम मृत्युके सौन्दर्यके बारेमें और उसके लाभके बारेमें बहुत कुछ सोच सकते हैं। मैं तो आशीर्वाद देता हूं कि इसी प्रकारकी मृत्यु तुमको मिले। इस आशीर्वादमें, इस इच्छामें सब इष्ट बातें आ जाती हैं।

अध्यात्म शास्त्रका कौल है कि श्रेयार्थी और पुरुषार्थी साधकका अंतिम गुरु यमराज ही है। न सोचनेवाले लोग मृत्युसे नाहक डरते हैं। डरके मारे वे ऐसे अंधे होते हैं कि मृत्युका स्वरूप तो क्या मृत्युकी मुखमुद्रा तक देखते नहीं। सचमुच आत्मार्थी और ऋतार्थी साधकके लिए मृत्यु परम मित्र है, जिसने आज तक किसी भी साधकको निराश नहीं किया। दोष जलानेकी जो शक्ति तेजाबमें है वही शक्ति साधकोंके लिए सर्वांतक यमराजके पास होती है। सब तरहकी प्रतिकूल परिस्थितिका छेद करके साधक-आत्माको अपने हाथमें लेनेकी और एक क्षणमें उसके सब पाश तोड़नेकी शक्ति उस परम गुरुमें ही है। जिसने पूर्ण हृदयसे चाहा कि अपना हृदय शुद्ध हो और सत्यनारायणका दर्शन हो, उसके लिए कृतान्त हमेशा रास्ता साफ और खुला रख छोड़ता है। जो लोग वासना-जालमें फंसे हैं उनके भाग्यमें चौरासी लाख योनिका फेरा बदा हुआ है। लेकिन जो सत्यधर्मी हैं, कृतात्मा हैं, श्रेयार्थी यानी मोक्षार्थी हैं, उनके लिए परमात्मा स्वयं परम-मित्र मृत्युका रूप धारण करके आता है और

उसकी सब ग्रंथियां तोड़ देता है। सब संशयोंकी निवृत्ति कर देता है और सब जटिलता दूर करके उसे अपने हृदयमें स्थान दे ही देता है।

येथे झाली नाहीं, कोणाची निरास,
आल्या याचकास कृपेविशीं॥

बम्बई, काका कालेलकर
८ सितम्बर १९५३

सा. क.

यह किताब करीब करीब तैयार हो जानेके वक्त परिशिष्ट २ का तैयार मसाला पढ़नेको मिला। इसमें अधिकांश तो जमनालालजीके जानकीदेवीके नाम लिखे हुए पत्र तथा डायरी में गांधीजीके बारेमें जो जिक्र पाये जाते हैं, उनका संग्रह है। इतना सारा पूरा मसाला हाथमें आते कौनसा संपादक हृदय-हर्षित न होगा? सन् १९१७ के प्रारंभसे लेकर श्री. जमनालालजीका विकास कैसा होता गया, कौटुंबिक जीवनको सामाजिक एवं राजकीय जीवनके साथ एकरूप बनानेका उनका सतत प्रयत्न कैसा था, यह सब इस मसालेमें इतना स्पष्टरूपसे प्रकट हुआ है कि मानो हम उनकी आत्मकथा ही पढ़ रहे हैं।

राष्ट्रभक्ति और सेवा का उच्च आदर्श और जीवनशुद्धिका उत्कटसे उत्कट जागरूक प्रयत्न एक साथ, एक धारामें चलते देख कर बापूजीके इस उत्तम शिष्य-पुत्रकी जीवनसाधना पूरी-पूरी ध्यानमें आती है। अखंड कर्मयोग और उसके साथ अंतर्मुख आत्मपरीक्षण और गुरुभक्तिके वातावरणका ध्यानयोग, यह सब आत्मोन्नति साधनाके नये नमूने दुनियाके सामने पेश हुए हैं। यह सब पढ़नेके बाद निश्चय होता है कि जमनालालजी सचमुच गांधी-युगके दैवी संपतके सर्वोत्तम नमूने थे। गांधीजीने जमनालालजीको उनके आखरी दिनोंमें जो आश्वासन दिया था वह पढ़ते अर्जुनको दिया हुआ श्रीकृष्णका आश्वासन याद आता है:—

मा शुचः संपदं दैवीं
अभिजातोसि भारत।

का. का.

मार्गदर्शक की खोज

जीवन सेवामय, उन्नत, प्रगतिशील, उपयोगी और सादगी-युक्त हो, यह भावना, जबसे मैंने होश संभाला तबसे, अस्पष्ट रूपसे मेरे सामने थी। इसीकी पूर्तिके हेतु, सामाजिक, व्यापारिक, सरकारी और राजकीय क्षेत्रोंमें कुछ हस्तक्षेप करना मैंने प्रारम्भ किया। सफलता मेरे साथ थी। पर मुझे सदा यह विचार भी बना रहता था कि जीवनकी संपूर्ण सफलताके लिए किसी योग्य मार्गदर्शकका होना जरूरी है। मैंने अपने विविध कार्योंमें लगे रहने पर भी इस खोजको चालू रखा। इसी मार्गदर्शककी खोजमें मुझे गांधीजी मिले। और सदैवके लिए मिल गये।

* * * *

मार्गदर्शककी खोजमें मैंने भारतके अनेक व्यक्तियोंसे संपर्क स्थापित किया। महामना मालवीयजी, कविवर रवींद्रनाथ ठाकुर, सर जे. सी. बोस, लोकमान्य तिलक, आदि अनेक नेताओं तथा व्यक्तियों से मैंने कम-अधिक परिचय प्राप्त किया। उनके संपर्कमें रहा। उनके जीवनका निरीक्षण किया। मेरी इस खोजमें एक बातने मेरे दिल पर सबसे बड़ा असर कर रखा था। वह थी समर्थ रामदासजीकी उक्ति: "बोले तैसा चाले, त्याची वंदावी पाउलें।" अनेक नेताओंसे मेरा परिचय होने पर मुझे उनके जीवनमें मेरे इस सिद्धांतकी प्राप्ति जिस परिमाणमें होनी चाहिए, नहीं हुई। भिन्न-भिन्न व्यक्तियोंके भिन्न-भिन्न गुणोंका मुझ पर असर पड़ा। सबके प्रति मेरी श्रद्धा और आदर भी बना रहा। पर अपने जीवनके मार्गदर्शकके स्थान पर किसीको आसीन नहीं कर सका।

* * * *

जब मैं मार्गदर्शककी खोजमें था तब गांधीजी दक्षिण आफ्रिकामें सेवाकार्य कर रहे थे। उनके विषयमें समाचार पत्रोंमें जो आता उसे मैं

गौरसे पढ़ता था, और यह स्वाभाविक इच्छा होती थी कि यदि यह व्यक्ति भारतमें आवे तो उससे संपर्क पैदा करनेका अवश्य प्रयत्न किया जाय। सन् १९०७ से १९१५ तक इस खोजमें मैं रहा। और जब गांधीजीने हिन्दुस्तानमें आकर अहमदाबादके कोचरब मोहल्लेमें किरायेका बंगला लेकर अपना छोटासा आश्रम आरंभ किया, तब उनसे परिचय प्राप्त करनेके हेतु मैं तीन बार वहां गया। उनके जीवनको मैं बारीकीसे देखता। उस समय वे अंगरखा, काठियावाड़ी पगड़ी और धोती पहिनते थे। नंगे पैर रहते थे। स्वयं पीसनेका काम करते थे। स्वयंपाक-गृहमें भी समय देते थे। स्वयं परोसते थे। उनका उस समयका आहार केला, मूंगफली, जैतूनका तेल और नीबू था। उनकी शारीरिक अवस्थाको देखते हुए उनके आहारकी मात्रा मुझे अधिक मालूम होती थी। आश्रममें प्रातः सायं प्रार्थना होती थी। सायंकालकी प्रार्थनामें मैं सम्मिलित होता था। गांधीजी स्वयं प्रार्थनाके समय रामायण, गीता आदिका प्रवचन करते थे। मैंने उनकी अतिथि-सेवा और बीमारोंकी शुश्रूषाको भी देखा और यह भी देखा कि आश्रमकी और साथियोंकी छोटीसे छोटी बात पर उनका कितना ध्यान रहता है। आश्रमके सेवा-कार्यमें रत और निमग्न बा को भी मैंने देखा। गांधीजीने भी मेरे बारेमें पूछताछ करना आरंभ किया। धीरे-धीरे संपर्क तथा आकर्षण बढ़ता गया। ज्यों-ज्यों मैं उनके जीवनको समालोचक की एक सूक्ष्म दृष्टिसे देखने लगा त्यों-त्यों मुझे अनुभव होने लगा कि उनकी उक्तियों और कृतियों में समानता है और मेरे "बोले तैसा चाले" इस आदर्शका वहां अस्तित्व है। इस प्रकार संबंध तथा आकर्षण बढ़ता गया।

* * * *

महात्माजीके कार्यमें मैं अपने आपको विलीन हुआ पाने लगा। वे मेरे जीवनके मार्गदर्शक ही नहीं, पिता-तुल्य हो गये। मैं उनका पांचवां पुत्र बन गया।

* * * *

आज २४ वर्षसे अधिक समय व्यतीत हो गया, जबसे मैं महात्माजीके संपर्कमें हूं। इन वर्षोंमें मैंने उनके जीवनके समस्त क्षेत्रोंका अवलोकन किया। मैं उनके सहवासमें घूमा, उनके आश्रम-जीवनमें भी

रहा, उनके उपवासोंमें उनके निकट रहा, बीमारियोंके समय उनकी शुश्रूषामें भाग लेता रहा। उनकी अनेक गहन मंत्रणाओंका मैं साक्षी हूं, और उनके सार्वजनिक कार्योंका भार मैंने शक्ति भर उठाया। सारी अवस्थाओंमें उनके अनेक गुणोंका मुझपर असर होता ही गया। मेरी श्रद्धा बढ़ती गई। मैं अपने आपको उनमें अधिकाधिक विलीन करता ही गया। और आज तो वे मेरे आदर्श हैं और उनकी आज्ञा मेरा जीवनादर्श है। उनका प्रेम मेरा जीवन है।

महात्माजीमें अनेक अलौकिक गुण हैं। इस प्रकारके शब्दोंसे मैं अपने हृदयके सच्चे भाव प्रकट कर रहा हूं। पर विरोधकी आशंका न करते हुए इतना तो अवश्य कह सकता हूं कि उनमें मनुष्योचित गुणोंका बहुत बड़ा समुच्चय है। मानवी गुणोंके तो वे हिमालय हैं। उनकी नियमितता, सार्वजनिक हिसाब रखनेकी सूक्ष्मता, बीमारोंकी शुश्रूषा, अतिथियोंका सत्कार, विरोधियोंके साथ सद्व्यवहार, विनोद-प्रियता, आकर्षण, स्वच्छता, बारीक निगाह और दृढ़ निश्चय आदि गुण मुझे उत्तरोत्तर प्रकट होते हुए दिखाई दिये हैं। महात्माजीमें मैंने विरोधी गुण भी देखे हैं। उनकी अविचल दृढ़ता, कठोरता, अगाध प्रेम और मृदुता की बुनियाद पर खड़ी है। उनकी पाई-पाईकी कंजूसी महान् उदारताके जलसे सिंचित है और उनकी सादगी सौंदर्यसे पोषित है।

* * * *

महात्माजीके प्रति अगर मेरा खाली आदर भाव ही रहता तो उनके विषयमें मैं कुछ विशेष लिख सकता। पर महात्माजीने मुझे इस तरहसे अपनाया है कि उनके प्रति मेरे मनमें पिता और गुरुके समान ही भाव पैदा होता है।

बचपनसे ही सार्वजनिक जीवनका प्रेम होनेके कारण बहुतसे सरकारी प्रतिष्ठित कर्मचारी तथा देशके प्रख्यात नेतागणसे मेरा परिचय हुआ। पूज्य लोकमान्य तिलक महाराज और भारतभूषण मालवीयजी जैसे महान् पुरुषोंका परिचय मेरे लिए लाभदायक हुआ। लेकिन महात्माजीने तो मेरी मनोभूमिका ही बदल दी। मेरे मनमें कई बार त्यागके विचार पैदा हुआ करते थे। उन्हें कार्यरूपमें लानेका रास्ता बता दिया। उनका निर्मल चारित्र्य, शीतल तेजस्विता, गरीबोंकी कलक, मनुष्य-मात्रसे सद्-व्यवहार, अनुपम प्रेम और धर्म-श्रद्धा देखकर ही मेरा मन उनकी ओर खिंचता गया। मेरे जीवनकी

त्रुटियां मुझे दिखाई देने लगीं एवं यह महत्वाकांक्षा बढ़ने लगी कि इस जीवनमें किस तरह महात्माजीके सहवासके योग्य बन सकूं।

* * * *

मेरी रायमें आज भारतमें गरीबोंके साथ यदि कोई एक-जीव हुआ है तो वह महात्माजी हैं। महात्माजी मानो कारुण्यकी मूर्ति हैं। गरीबोंके कष्ट दूर करनेमें अमीरोंके साथ भी अन्याय न होने पावे, और भिन्न-भिन्न वर्गोंके बीच द्वेषभाव तनिक भी पैदा न हो, इसकी वे हमेशा चिन्ता रखते हैं। इसीलिए भारतवर्षके सब धर्म, पन्थ और वर्ग के लोग उनको आत्मीयताकी दृष्टिसे देखते हैं। चातुर्वर्ण्यका तो मानो उनमें सम्मेलन ही हुआ है। भारतवर्ष पर उनका जो असीम प्रेम है उसके लायक यदि हम भारतवासी बनें तो भारतका उद्धार अवश्य हो जाय।

मेरी समझमें तो महात्माजीका सहवास जिसने किया हो, या उनके तत्वोंको समझनेकी कोशिश की हो, वह कभी निरुत्साही नहीं हो सकता। वह हमेशा उत्साह-पूर्वक अपना कर्त्तव्यपालन करता रहेगा। क्योंकि देशकी स्थितिके सुधरनेमें—स्वराज्य मिलनेमें—भले ही थोड़ा विलम्ब हो, परन्तु जो व्यक्ति महात्माजीके बताये मार्गसे कार्य करता रहेगा, मुझे विश्वास है कि वह अपनी निजी उन्नति तो जरूर कर लेगा, अर्थात् अपने लिए तो स्वराज्य वह अवश्य पा सकता है।

* * * *

मुझे अपनी कमजोरियोंका थोड़ा ज्ञान रहनेके कारण मैंने बापूको 'गुरु' नहीं बनाया, न माना; 'बाप' अवश्य माना है। वह भी इसलिए कि शायद उन्हें बाप माननेसे मेरी कमजोरियां हट जावें।

* * * *

मुझे दुनियामें बापू पिता व विनोबा गुरुका प्रेम दे सकते हैं, अगर मैं अपनेको योग्य बना सकूं तो।

* * * *

महात्माजीकी अनुपम दयासे आज मैं कमसे कम अपनी कमजोरियोंको थोड़ा-बहुत तो पहचानने लग गया हूं।

* * * *

जिस दिन मैं महात्माजीके पुत्र-वात्सल्यके योग्य हो सकूंगा वही समय मेरे जीवनके लिए धन्य होगा।

पांचवें पुत्र को

जमनालालजी मेरे पांचवें पुत्र बने। इस स्वेच्छासे गोद आये पुत्रने कितना कुछ किया इसका पता बहुत कम लोगोंको होगा। मैं कह सकता हूं कि इससे पहले किसी मनुष्यको ऐसा पुत्र नसीब नहीं हुआ होगा।

* * * *

जमनालालजीने बिना किसी संकोचके अपने आपको और अपने सर्वस्वको मुझे समर्पित कर दिया था। मेरा शायद ही कोई ऐसा काम होगा, जिसमें मुझे उनका हार्दिक सहयोग न मिला हो, और जो अत्यंत कीमती साबित न हुआ हो।

* * * *

उन्होंने मेरे कामोंको पूरी तरह अपना लिया था। यहांतक कि मुझे कुछ करना ही नहीं पड़ता था। ज्यों ही मैं किसी नये कामको शुरू करता वे उसका बोझा खुद उठा लेते थे। इस तरह मुझे निश्चिंत कर देना मानो उनका जीवन-कार्य ही बन गया था।

* * * *

मेरी इच्छाओंकी पूर्तिके लिए मैं आसानीसे उनपर भरोसा कर सकता था, कारण कि जितना उन्होंने मेरे कामको अपना लिया था, उतना शायद ही और कोई अपना पाया होगा।

* * * *

उनकी बुद्धि कुशाग्र थी। वह सेठ थे। उन्होंने अपनी पर्याप्त संपत्ति मेरे हवाले कर दी थी। वह मेरे समय और मेरे स्वास्थ्यके संरक्षक बन गये। और यह सब उन्होंने सार्वजनिक हितकी खातिर किया।

* * * *

वे बुद्धिशाली भी थे और व्यवहार कुशल भी। वे अपनी जगह पर अद्वितीय थे।

* * * *

वे जिस कामको हाथमें लेते थे उसमें जी-जानसे जुट जाते थे।

* * * *

खादीके काममें उनकी दिलचस्पी मुझसे कम न थी। खादीके लिए जितना समय मैंने दिया उतना ही उन्होंने भी दिया। इस कामके पीछे उन्होंने मुझसे कम बुद्धि खर्च नहीं की थी। थोड़ेमें यह कह लीजिए कि अगर मैंने खादीका मंत्र दिया तो जमनालालजीने उसको मूर्तिरूप दिया।

* * * *

जमनालालजीमें छुआछूतको हटाने, सांप्रदायिकतासे दूर रहने और सब धर्मोंके प्रति समान आदरभाव रखने की जो उत्कृष्ट वृत्ति है वह उन्हें मुझसे नहीं मिली ह। कोई भी व्यक्ति अपने विश्वास दूसरोंको नहीं सौंप सकता। हां, यह हो सकता है कि जो विश्वास दूसरोंमें पहलेसे मौजूद हों उन्हें प्रकट करनेमें कोई सहायक हो सके। किन्तु जमनालालजीके उदाहरणमें तो मैं यह श्रेय भी नहीं ले सकता कि मैंने उन्हें इन विश्वासोंको प्राप्त करने या उन्हें प्रदर्शित करने में सहायता पहुंचाई है। मेरे संपर्कमें आनेसे बहुत पहले ही उनके ये विश्वास बन चुके थे। और उन्होंने उनका अनुकरण करना शुरू कर दिया था। उनके इन आंतरिक विश्वासोंकी बदौलत ही हम एक दूसरेके संपर्कमें आये और हमारे लिए इतने सालोंतक घनिष्ट सहयोगके साथ काम करना संभव हुआ।

* * * *

जिसको राजकाज कहते हैं वह न मेरा शौक था न उनका। वे उसमें पड़े क्योंकि मैं उसमें था। लेकिन मेरा सच्चा राजकाज तो था रचनात्मक कार्य, और उनका भी राजकाज यही था।

* * * *

वे एक ऐसी साधनामें लगे हुए थे जो कामकाजी आदमीके लिए विरल है। विचार-संयम उनकी एक बड़ी साधना थी। वे सदा ही अपनेको तस्कर विचारोंसे बचानेकी कोशिशमें रहते थे।

* * * *

जब कभी मैंने यह लिखा है कि धनवानोंको सार्वजनिक हितके लिए अपनी संपत्तिका ट्रस्टी या संरक्षक बन जाना चाहिये, तो मेरे दिमागमें सेठ जमनालालजीका उदाहरण मुख्य रूपसे रहा है।

अगर उनका ट्रस्टीपन आदर्श तक नहीं पहुंच पाया तो इसमें कसूर उनका नहीं था। मैंने जानबूझकर उन्हें रोका। मैं यह नहीं चाहता था कि वह अपने उत्साह या आवेश में कोई ऐसा कदम उठायें, जिसके लिए ठंडे दिमागसे सोचने पर उन्हें अफसोस करना पड़े। उनकी सादगी खुद उनकी ही विशेषता थी।

* * * *

जहां तक मुझे मालूम है मैं दावेसे कह सकता हूं कि उन्होंने अनीतिसे एक पाई भी नहीं कमाई, और जो कुछ कमाया उसे उन्होंने जनता-जनार्दनके हितमें ही खर्च किया।

* * * *

जबसे वे पुत्र बने तबसे वे अपनी समस्त प्रवृत्तियोंकी चर्चा मुझसे करने लगे थे। अंतमें जब उन्होंने गो-सेवाके लिए फ़कीर बननेका निश्चय किया तो वह भी मेरे साथ पूरी तरह सलाह-मशविरा करके ही किया।

* * * *

त्यागकी दृष्टिसे उनका अंतिम कार्य सर्वश्रेष्ठ रहा। देशके पशुधनकी रक्षाका कार्य उन्होंने अपने लिए चुना था, और गायको उसका प्रतीक माना था। इस काममें वे इतनी एकाग्रता और लगन के साथ जुट गये थे कि जिसकी कोई मिसाल नहीं।

* * * *

होना यह चाहिये था कि मैं उनके लिए अपनी विरासत छोड़कर जाता, पर उसके बदलेमें वे अपनी विरासत मेरे लिए छोड़ गये।

* * * *

यह मैं कैसे कहूं कि उनके जानेसे मुझे दुःख नहीं हुआ। दुःख होना तो स्वाभाविक था। क्योंकि मेरे लिए तो वही मेरी कामधेनु थे। लेकिन जब उनके कामोंको याद करता हूं और हमारे लिए जो संदेश छोड़ गये हैं उसका विचार करता हूं तो अपना दुःख भूल जाता हूं।

बापूके आशीर्वाद

परिचय

बा	कस्तूरबा गांधी
महादेव देसाई ...	गांधीजीके निजी मंत्री
किशोरलाल मशरूवाला	गांधीजीके निकटके साथी जो कभी कभी उनके मंत्रित्वका काम भी करते थे
वालजी गोविंदजी देसाई	गांधीजीके साथी, आश्रमवासी
नारणदास गांधी ...	गांधीजीके भतीजे
प्यारेलाल ...	गांधीजीके निजी मंत्री
मीराबहन (मिस् स्लेड)	गांधीजीकी एक अंग्रेज भक्त व शिष्या
अमृत कौर ...	गांधीजीकी निजी मंत्री
चंद्रशंकर शुक्ल ...	कुछ समयके लिए गांधीजीके निजी मंत्री
देवदास गांधी ...	गांधीजीके चौथे पुत्र
सुशीला नय्यर (डॉ.)	गांधीजीकी स्वास्थ्य-मंत्री, प्यारेलालजीकी बहन
कृष्णदास गांधी ...	गांधीजीके भतीजे छगनलाल गांधीके दूसरे पुत्र
कनु गांधी... ...	नारणदास गांधीके दूसरे पुत्र
जानकीदेवी बजाज ...	जमनालालजीकी पत्नी
केशवदेव नेवटिया ...	जमनालालजीके समधी
लक्ष्मणप्रसाद पोद्दार	जमनालालजीके समधी
राधाकृष्ण बजाज ...	जमनालालजीके भतीजे
गोदावरी (अनसूया) बजाज	श्रीकृष्णदास जाजूकी पुत्री, राधाकृष्णजीकी पत्नी
रामेश्वरप्रसाद नेवटिया	जमनालालजीके दामाद
कमला नेवटिया ...	जमनालालजीकी बड़ी पुत्री, रामेश्वरप्रसादजीकी
कमलनयन बजाज ...	जमनालालजीके बड़े पुत्र [पत्नी
सावित्री बजाज ...	लक्ष्मणप्रसादजीकी पुत्री, कमलनयनजीकी पत्नी
श्रीमन्नारायण अग्रवाल	जमनालालजीके दामाद
मदालसा अग्रवाल ...	जमनालालजीकी दूसरी पुत्री, श्रीमन्नारायणजीकी
ओम् (उमादेवी) अग्रवाल	जमनालालजीकी तीसरी पुत्री [पत्नी
जगदीश पोद्दार ...	लक्ष्मणप्रसादजीके दूसरे पुत्र
रामकृष्ण बजाज ...	जमनालालजीके दूसरे पुत्र
दामोदरदास मूंदड़ा ...	जमनालालजीके निजी मंत्री

विषय-सूची

भाग १

महात्मा गाँधी और जमनालालजी
तथा जानकीदेवी बजाज
का पत्र-व्यवहार

मोतीहारी
आषाढ कृष्ण ५

सुज्ञ भाईश्री जमनालालजी,

आपका पत्र और हुंडी रु. १५०० की मीली है. मैं बहुत खुश हुआ. आपका दान हिंदी शिक्षा प्रचार के लीये रखा जायगा. यदि दूसरे कोई सार्वजनिक काम के लीये भेजना हो तो और कुछ देने का रहे जाता तो आपका हुकम. हुकम दे कार्यों मे खर्च करूंगा.

मेरा शरीर अच्छा है. होजाते पत्र भेजते रहुंगा.

आपका
मोहनदास गांधी

नोट:– फाइलोंमें प्राप्त जमनालालजीको लिखा गांधीजीका यह पहला पत्र है। इस पत्रकी प्रतिलिपि सामनेके पृष्ठ पर देखें।

: १ :

मोतीहारी,
श्रावण शुक्ल
(जुलाई १९१७)

सुज्ञ भाई श्री जमनालालजी,

आपका खत और हुंडी रुपैया १५००) की मीली है। मैं ऋणी हुआ हुं। आपका दान हिंदी शिक्षा प्रचारमें ही रखा जायगा। यदि दूसरे कोई इसी हि काम के लीये सिर्फ भेज देंगे और कुछ धन बचेगा तो आपका दान दूसरे कार्योंमें भी खर्चा जायगा। मेरा फीर वर्धा आनेका होगा तो खबर दे दुंगा।

आपका
मोहनदास गांधी

: २ :

अमदावाद,
भाद्रपद शुक्ल
(अगस्त १९१७)

भाई श्री जमनालालजी,

आपका पत्र मीला है। मैं थोडे दीनोंके लीये यहां आया हुं। आपको चम्पारन आनेका प्रयोजन नहि है। कमीटी[1] का कार्य बहोतकर अभी समाप्त हो गया है।

आपका
मोहनदास गांधी

१. चंपारन जांच कमिटी।

: ३ :

रांची,
भाद्रपद शुक्ल ९
(२५–९–१९१७)

मुज्ञ भाई श्री,

आपका पत्र एक मुंबईमें मैं रेलपर जाता रहा उस वखत मीला था। उस बारेमें मैंने आपके पास मेरा भतीजाको जानेका कह दीया था। अब रामनारायणजीका पत्र आ गया है। ये रखने लायक देख पडते है। थोडी और हकिकत उनके पास मंगवाया हुं। दो शिक्षक मनेर से मीले हैं। एक को रख लीया हुं। दूसरे की बात कर रहा हुं। दो मास के बाद ये आ सकेंगे। रामनारायणजी तीसरे होंगे। इतने से गुजारा हो जायगा।

आपका
मोहनदास गांधी

: ४ :

साबरमती,
महाकृष्ण १३
(१०–३–१९१८)

भाई जमनालालजी,

आपका खत का उत्तर देने में देरी हुई है। मैं यहां दो बड़े कार्य में गीरफतार हो गया हुं। मुझे क्षमा कीजीयेगा। पुस्तकालयके लीये मेरा नाम रखना उचित हो तो वैसा कीजीये।

मोहनदास गांधी का
वंदेमातरम्

: ५ :

साबरमती,
माघ कृष्ण
(मार्च १९१८)

मुज्ञ भाई श्री,

आपका पत्र मीला है। मेरा नागपुर आनेका मोकुफ रहा है। इस वखत तो यहां का कार्य मेरा सब क्षण ले लेता है। मजदुरोंकी हडताल[1] चल रही है और खेडामें[2] कीसानो पर सरकार का जुल्म चल रहा है। दोनों कार्य भारी हैं।

आपका
मोहनदास गांधी

१. देखिये 'एक धर्म युद्ध'। २. देखिये 'खेडानी लडत'।

: ६ :
अ

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

साबरमती,
जेठ सुद १०
(१९–६–१९१८)

भाई श्री ५ जमनालालजी,

टीकटना पैसा तमारा माणसने में आग्रहपूर्वक चूकव्या। जो एम न करूं तो वगर संकोचे हुं बीजां कामो सोंपी न शकुं ;

अहिं आवो बांधकामनो हिसाब तपासशो। मारी पासे रु. २८,०००)

आव्या छे। खर्च रु. ४०,००० थई गयुं छे। बीजुं खर्च आश्रमनी बीजी प्रवृत्तिनां नाणां छे तेमांथी थयुं छे। मने अत्यारे खरी जरूर बांधकामने सारु पैसानी छे। खर्च एक लाखनुं छे। आमां तमारे कंई आपवानी इच्छा होय तो मोकलशोजी।

मोहनदासना वंदेमातरम्

मारी मुसाफरीनुं खर्च उपाडो तेना करतां आ विशेष जरूरनुं छे।

मोहनदास

: ७ :

नडीयाद,
ज्येष्ट कृ. ६
(३०–६–१९१८)

भाई श्री जमनालालजी,

आपका पत्र मीला है। यदि रेलवे खर्च के लीये जो रकम जमा कीई है वही रकम बांधकामके खर्चमें दे सकते हो तो मेरी तकलीफ दूर होती है। दूसरे मित्रोंको भी मैंने लीखा है। भाई शंकरलाल बंकरने रु. ४००० भेज दीया है। भाई अंबालालजी रु. ५००० भेज रहे है। इससे जो खर्च हो गया है उसमें मदद मीलती है। दूसरे दो मित्रसे भी आशा रखता हुं। यदि आप इस २५००० रु. बांधकाममें दे दें तो मैं बहोतकर निश्चित हो सकता हुं। रेल खर्चकी आवश्यकता नहि है। यह खर्च साधारण आमदनी में से चलता है।

मेरे लीखने से देना ही चाहिये ऐसा नहि समजना। यदि आप वेसंकोच बांधकाममें दे सकते हो तभीज देना।

भाई मोहनदासका
वंदेमातरम्

: ८ :

नडीयाद,
अषाड़ शुक्ल १०
(१८–७–१९१८)

सुज्ञ भाई श्री जमनालालजी,

मैं मुंबईसे कल रातको आया। भ्रमणमें रहनेसे पत्र आज तक नहि लीख सका। आपका पत्र आनेसे मैं निश्चित हो गया हुं। भाई अंबालालजीने रु. ५००० भेज दीये है और भाई शंकरलाल बेंकरने रु. ४००० दीये है।

जिन भाई मेरी भिक्षाका अनादर नहिं करते है उनको मेरी जरुरीयत सुनाने में मुझको संकोच लगता है, न सुनाना अशक्य होता है। इस लीये मेरी तिव्र इच्छा है की जब मेरी भिक्षा स्वीकारने में हरज हो उस वखत अस्वीकार करनेसे मेरी पर अनुग्रह होगा।

आपका दर्द तो अब तद्दन नष्ट हुआ होगा।

आपका

मोहनदास गांधी

:९:

नडीआद

आषाढ शु. ८

भाई श्री जमनालालजी

आपके प्रेम भावसें मैं तो चकित होता हुं. मैं इतना प्रेमका लायक बनुं ऐसा चाहता हुं — परमेश्वरसे मांगता हुं. आपकी नम्रता कि आपको हमेशा नीति मार्गमें आगे ले जानेवाली है ऐसी मैं आशा रखता हुं.

मारवाड़में शिक्षा प्रचारका कार्य करनेके [illegible] की आवश्यकता है.

भरतीका कार्य अनुकूलतासे चलता है. करीब ५०० नाम हुए हैं. कोई को अब तक भेजे गये नहिं हैं. गुजरातीओंकी एक बटालीयन बनानेकी तजवीज कर रहा हुं.

आपका

मोहनदास गांधी

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

नडीयाद,
अषाड कृ. ४
(२७–७–१९१८)

भाई श्री जमनालालजी,

आपके प्रेमभावसे मैं लज्जित होता हुं। मैं इतना प्रेमके लीये लायक बनु एसा चाहता हुं—प्रभूजीसे मागता हुं। आपकी भक्ति आपको हमेशा नीतिमार्गमें आगे ले जायगी ऐसी मैं आशा रखता हुं।

मारवाडमें विद्याप्रचारका कार्यकी सफलताके लिये अच्छा व्यवस्था-पककी आवश्यकता है।

भरतीका कार्य[1] बहुत धीमा चलता है। करीब १५० तक हुए होंगे। कोईको अब तक भेजे गये नहिं है। गुजरातीओं की एक बेटेलीयन बनानेकी तजवीज कर रहा हुं।

आपका
मोहनदास गांधी

:१०:

अहमदाबाद,
श्रावण कृष्ण ७
(२८–८–१९१८)

भाई जमनालालजी,

आपका पत्र और ५००० रुपयेकी हुंडी मिले हैं। देरी होने से कुछ हानि नहिं हुइ, मेरी तबीअत के लिये निश्चित रहेना। दिन प्रतिदिन अच्छी होती जाती है। और थोडा रोज तक बिछाने में रहना पडेगा। अशक्ति बहुत आगइ है।

आपका
मोहनदास गांधी

१. इस विश्वयुद्धके समय गांधीजी खेड़ा जिलेमें रंगरूटोंकी भरतीका काम कर रहे थे।

: ११ :

शांतिनिकेतन,
बोलपुर,
ता. १५

प्रिय भाईसाहब जमनालालजी,

आपका तार मिला. बापूजीका स्वास्थ्य अबतक अच्छा नहीं है. स्वामी [illegible] नहीं छोड़ी है. आजकल यहांसे उन्हें आश्रमको ले जायेंगे यह विचार किया है, और यहांसे फौरन जायेंगे तो वर्धासे कहीं जाना होगा, इसलिये जबलपुर नागपुरसे जाना होगा.

पंडित [illegible] शुक्लजीका मन कुछ दुःखी पड़ा है ऐसा मालूम होता है. उन्होंने एक पत्र लिखके बापूजीको निवेदन किया है कि यदि उनका अन्तःकरण [illegible] [illegible] तो [illegible]. उनका [illegible] उनकी अनुमति लिये बगैर [illegible] होगा [illegible] उन्हें रवाना भी [illegible]

आपका सेवक
महादेव देसाई

नोट:- फाइलोंमें प्राप्त जमनालालजीको लिखा महादेव भाईका यह पहला पत्र है।

: १२ :

अगर पत्र
मेरी सेवक ...
होतो आप उनके ...
तो तार द्वारा ...
लिख देना। ... मोहनदास के प्रणाम

मोहनदास

बम्बई भा. व. ११
सं. १९७७
ता. २८-८-२०

पूज्य श्री बापूजी

सविनय प्रणाम। आपका स्वास्थ्य अब ठीक होवेगा? आप बम्बई कब तक आवेंगे व आगे क्या प्रोग्राम (कार्यक्रम) है। आज रोज डा. मुंजे नागपुर के कहनेसे तार आपको दीया है वह पोन्डीचेरी श्री अरविन्द घोष को नागपुर कांग्रेस के सभापति के लिये आग्रह करने गये हैं अगर आप मुनासिब समझें तो श्री अरविन्द घोष को यह पद स्वीकार करने के लिये तार देने के लिये लिखा है सो मेरी समझ है आपने तार दीया होवेगा? कृपया लिखियेगा। आपके खयाल से नागपुर कांग्रेस के सभापति कौन सज्जन होना चाहिये।

इधर मुझे आज मुलकके कहनेसे ही यह मालूम हुआ कि मेरे को रखते हैं की मैं स्वागत कारणी सभा का सभापति बनाया जाऊं किन्तु यह मेरी समझ से बाहर है मैंने उनसे कहा है की मैं इस पद के लिये मुझको योग्य नहीं समझता हूं

नोट:— फाइलोंमें प्राप्त गांधीजीको लिखा जमनालालजीका यह पहला पत्र है।

कारण सहजसे मेरा विश्वास बहुत कम है
इसमें व्यवस्था व अनुभवकी कमी है इसपर
उनका कहना यह भी था कि हिन्दी के गुरु अपना
काम पढ़ाने को स्वामी सत्यदेवजी जैसे
हिन्दी में [illegible] हिन्दीप्रचार [illegible]
दूसरा कारण इन्होंने कहा कि इस प्रान्त के
व्यापारी वर्ग बहुत उत्साही खासकर मारवाड़ी
समाज पैसे देनेको तय्यार हैं परंतु आगे
नहीं आते अगर तुम होजावो तो
व्यापारी समाज पदभी अवश्य होवेगा। व
दूसरे भी आगे आने लग जावेंगे इस तरह
इनका व और [illegible] भीलोंका कहना
है। मैं यहां तक समझता हूं बेशक मेरा न
मुझे इस पद के योग्य नहीं बनाता मैंने इस पद
के लिये श्री बजाजजी के लिये सोच रखा है
परंतु वह कौन्सील के लिये खड़ा रहना चाहते
हैं। उनको असहयोग में [illegible] नहीं है।
इस लिये आप सब बातों का विचार कर
जो उचित समझें वह लिख भेजें आपका पत्र
अजमेर में पूर्णी [illegible] आपकी आज्ञा पर निश्च
य करूंगा पत्र ता. २४ तक पहुंचना चाहिये

(उपरोक्त दोनों पत्रोंकी प्रतिलिपि)

: ११ :

शांतिनिकेतन,
बोलपुर, ता. १५
(१५–९–१९२०)

प्रिय भाइसाहेब जमनालालजी,

आपका तार मिला। बापूजीका स्वास्थ्य अबतक अच्छा नहीं है। खांसी पीछा नहीं छोड़ती है। आजकल यहांसे आश्रमको चले जायंगे, ऐसा विचार किया है, और यहांसे फौरन जायंगे तो वर्धासे नहीं जाना होगा, चर्नासे जबलपुर लाइनपरसे जाना होगा।

पंडित विशनदत्त शुक्लजीका मन कुछ दुविधामें पड़ा है, ऐसा मालूम होता है। उन्होंने एक पत्र लिखके बापूजीको निवेदन किया है कि यदि उनका अन्तःकरण असहकारकी कुछ बातें न ग्रहण करे तो क्षमा कीजिएगा। उनका पत्र तो उनकी अनुमति के बिना नहीं प्रसिद्ध होगा ऐसी उन्हें खात्री दी गई है।

आपका सेवक
महादेव देशाई

: १२ :

श्रीहरि

वर्धा,
मि. भा. शु. १२, सं १९७७
ता. २४–९–२०

पूज्य श्री बापूजी,

सविनय प्रणाम। आपका स्वास्थ्य अब ठीक होवेगा। आप बम्बई कब तक जावेंगे व आगे क्या प्रोग्राम (कार्यक्रम) है? आजरोज डॉ. मुंजे नागपुर के कहनेसे तार आपको दिया है। यह पान्डीचेरी श्री अरविन्द घोषको नागपुर कॉंग्रेसके सभापतिके लिये आग्रह करने गये हैं। अगर आप मुनासिब समझें तो श्री अरविन्द घोषको यह पद स्वीकार करनेके लिये तार देनेके लिये लिखा है। संभव है आपने तार दिया होगा? कृपया लिखियेगा। आपकी रायसे नागपुर कॉंग्रेसके सभापति किन सज्जनको होना चाहिये?

२. डाक्टर मुंजे आज मुझसे कहते थे कि कई मित्रोंकी राय है कि मैं स्वागतकारिणी सभाका सभापति बनाया जाऊं। इसपर वह मेरी राय पूछते थे। मैंने उन्हें कहा है कि मैं इस पदके लिये मुझको योग्य

नहीं समझता हूं। कारण एक तो मेरा विद्याध्ययन बहुत कम है, दूसरे में अवस्था व अनुभव भी कम है। इसपर उनका कहना पड़ा कि हिन्दीमें तुम अपना भाषण पढ़ सकते हो। स्वामी श्रद्धानंदजीने भी हिन्दीमें भाषण दिया था। हिन्दीमें भाषण ठीक होवेगा। व दूसरा कारण उन्होंने यह कहा कि इस प्रांतका व्यापारीवर्ग बहुत डरता है—खासकर मारवाड़ी समाज। वह पैसे देनेको तयार है, परंतु आगे आना नहीं चाहते। अगर तुम हो जाओगे तो व्यापारी समाजपर भी असर होवेगा व वह भी आगे आने लग जावेंगे—इस तरह इनका व और मित्रोंका कहना है। मैं जहां तक सोचता हूं वहां तक मेरा मन मुझे इस पदके योग्य नहीं बताता। मैंने इस पद-के लिये श्री शुक्लाजीके लिये सोच रखा है। परंतु वह कौंसिल के लिए खड़ा रहना चाहते हैं। उन्हें असहयोगमें हाल तक श्रद्धा नहीं है। इसलिये आप सब बातोंका विचार कर जो उचित समझें वह लिख भेजें। आपका पत्र आनेपर मैं पूर्ण तौरसे आपकी आज्ञापर विचार करूंगा। पत्र ता. २९ तक पहुंचना चाहिये। अगर पत्र नहीं पहुंच सकता हो तो आप उचित समझें तो तार द्वारा अपनी राय लिख भेजियेगा।

आपका
जमनालाल बजाज

: १३ :

AHMEDABAD,
25-9-20

JAMNALAL,
BACHHRAJ, WARDHAGANJ.

Have wired Aravinda Ghosh. Health very much better.

—*Gandhi*

: १४ :

आश्रम,
ता. २५–९–२०

कृपावंत भाइसाहेब जमनालालजी,

आज पंडित [illegible]का पत्र आया है, वह आपको भेजता हूं। उनको आज एक तार भेज दिया गया है कि "जमनालालजीने अपना पत्र प्रसिद्ध करनेकी इजाजत दे दी है और उसके मुताबिक मैं उनका पत्र ३० सितंबरको प्रसिद्ध कर दूंगा। यदि आप चाहें कि वह भी प्रसिद्ध न हो तो जमनालालजीसे बात करके उनको हमको तार भेज देनेको कहिएगा।" आपकी क्या राय है?

आज आपका तार आया। उसका उत्तर भी भेज दिया है। पू. अरविंद घोषको एक तार दिया गया है।

बापूजीका स्वास्थ्य आजकल खूब सुधर गया है। खांसी थोड़ीसी है। यहां खूब आराम करते हैं, और चार-पांच रोज और ठहरेंगे इतने समयमें स्वास्थ्य बिलकुल ठीक हो जायगा।

दो और तीन अक्टूबरको बापूजी मुंबईमें होंगे। पीछे यू. पी. और बिहारका दौरा है।

आपका

महादेव देसाई

: १५ :

AHMEDABAD,
27-9-20

JAMNALAL,
BACHHRAJ, WARDHAGANJ

If Shuklaji does not accept you may accept.

—*Gandhi*

: १६ :

आश्रम,
२७ सितंबर (१९२०)

प्रिय भाइसाहेब,

आपका पत्र मुझे और महात्माजीको मिला। तार आपको भेजा गया है। आपको अध्यक्षपद लेनेकी संमति दी गई है, उसका मुख्य कारण यह है कि कोइ अयोग्य मनुष्य आ जाय वह इच्छनीय नहीं है। आप जो वय और अज्ञान (कम विद्याभ्यास) की दलील करते हैं वे उनको स्वीकार्य नहीं हैं। सिर्फ एक दलील थी–वह यह है कि वहांका वातावरण शायद आपके लिये संपूर्ण निर्मल न हो। लेकिन आजकी स्थिति में वह भी बरदास्त कर लेना होगा। बापूजी समझते हैं आप जरूर हिंदीमें व्याख्यान तैयार कर सकते हैं और उसका अच्छा इंग्रेजी अनुवाद करवाके गेट पर बांट सकते हैं।

प्रणाम सह–

आपका

महादेव देसाई

: १७ :
अ

બાપુના આશીર્વાદ

ચિ. [illegible],

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

તમારો તાર મ રાંધણી
બેડા કુશળ ભળ સમાવે છે.
ચં કુનાલાલ પાણી ના
ઉપવાસ ખોરાક દિવસો
દિવસ બાલ બાળકો સાદિવસ
મળ ઘણ દેખવાનું છું.
તેના જાતમતે પડગમા
ન માન. તેમનું ના વાતમાં
સદિશા ઘરાળ રહ્યું છું.
જાત માન પ્રેમ ભર્યા છે!
જાત માન ઝઘડા ભર્યા છે.
જાત વાદી, જાત વાદી
તદ્દન નથી હોવો જોઈએ.
તેનું જાતમ બાળ વધે તો
તે નમનારાજ. સાધુચરિત

મૌન 3

આજે જગત વચ્ચેથી - મને
સત્યને સત્યનો વિરોધ
મારા છ તેરમાં વર્ષ
પહેલાં ન હતો અને સત્યને
મારી આ સાધના મનોગત
તેની એક પણ ક્ષણ હતી
નહીં તો ગણતી.
અહિંસા અસ્તેય, બ્રહ્મચર્યાદિ
એ બાકીના યમ રૂપ
મને દીવાથી દીવો થતાં
જતાં જણાયા.
તેમ આપણે હમેશાં
ધીરજ રાખવી. ધીરજ
રાખનારનાં બધાં કામો
ઠરેલાં આપણાં નીવડે

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

५

[illegible]-

સ્ત્રી પુરુષ ભિન્ન [illegible]
[illegible]
રહેવું જોઈએ - [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]-

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] નથી.
તેનું [illegible]
[illegible] તેનું [illegible]

સ્વરૂપ તને બડીનું
સ્વભાવ છે – હજુ સુધી
પણ એવો રહ્યો છે સખત
મહીનથી પાડ્યો તેમ
ઠીક થાય છે – પણ તેમ
ગાળવાનું તું જાણે ડાહ્યલી
નથી તેમ તો વધારે
પ્રયત્નનું કામ છે

તમે પાંચમા પુત્ર તો
થયા છો – પણ હું લાયક
બનવા પ્રયત્ન કરી રહ્યો
છું – દત્તક લેનારની લા-
યકાત હોવી જોઈએ તેમાં
નથી – ઈશ્વર મને સહાય
થાઓ ને હું તેવો લાયક થાઉં
બનું.
બાપુના આશીર્વાદ

17-3-22

नोट:—१. गांधीजीने यह पत्र अंडर ट्रायल कैदीकी हालतमें लिखा था और इसे जेल-मजिस्ट्रेटने १७-३-२२ को सही करके भिजवाया था।

२. यह मूल पत्र पेन्सिलसे लिखा होनेसे मूलपरसे इसका ब्लॉक ठीक नहीं बन सकता था। अतः इसकी नकल करके उसपरसे यह ब्लॉक बनाया गया है।

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

(साबरमती जेल)
गुरुवारनी रात
(१६-३-१९२२)

चि. जमनालाल,

जेम हुं सत्यनी शोध करतो जाउं छुं तेम तेम मने भासे छे के तेमां बधुं आवी जाय छे। अहिंसामां ते नथी पण तेमां अहिंसा छे एम घणी वेळा भासे छे। निर्मळ अंतःकरणने जे समे जे लागे ते सत्य। तेने वळगतां शुद्ध सत्य मळी आवेछे। तेमां क्यांए धर्म संकट पण नथी जोतो। पण अहिंसा कोने कहेवी तेनो निर्णय करतां घणी वेळा मुसीबत आवे छे। जंतुनाशक पाणीनो उपयोग ए पण हिंसा छे। हिंसामय जगत्मां अहिंसामय थईने रहेवानुं रह्युं। ते तो सत्यने वळगवाथीज थाय। तेथी हुं तो सत्यमांथी अहिंसा घटावी शकुं छुं। सत्यमांथी प्रेम मळे छे। सत्यमांथी मृदुता मळे छे। सत्यवादी, सत्याग्रही तद्दन नम्र होवो जोईए। तेनुं सत्य जेम वधे तेम ते नमतो जाय। आ हुं क्षणे क्षणे अनुभवी रह्यो छुं। मने अत्यारे सत्यनो जेटलो ख्याल छे तेटलो वर्ष पहेलां न हतो अने अत्यारे मारी अल्पता मने लागे छे तेटली एक वर्ष पहेलां नहोती लागती।

ब्रह्म सत्यं, जगन्मिथ्या ए वाक्यनो चमत्कार मने दीवसे-दीवसे वधतो जतो लागे छे।

तेथी आपणे हमेशां धीरज राखवी। धीरज राखतां आपणामांथी कठोरता चाली जशे। ते जतां आपणामां सहिष्णुता वधशे। आपणी भूलो आपणने पहाड जेवडी लागशे ने जगत्नी राई जेवडी लागशे। शरीरनी स्थिति अहंकारने लईने संभवे छे। शरीरनो आत्यंतिक नाश ए मोक्ष। अहंकारनो आत्यंतिक नाश जेनामां थयो छे एतो सत्यनी मूर्ति थई रहे छे। एने ब्रह्म कहेवामां ए बाध न होय। तेथीज ईश्वरनुं रुडं नाम तो दासानुदास छे।

स्त्री पुत्र मित्र परिग्रह बधुं ए सत्यने आधीन रहेवुं जोइए। सत्यने शोधतां ते बधानो सर्वथा त्याग करवा तत्पर रहीये तोज सत्याग्रही थवाय।

आ धर्मनुं पालन प्रमाणमां सहज थई जाय एवा हेतुथी हुं आ प्रवृत्तिमां पड्यो छुं ने तमारा जेवाने होमतां अचकातो नथी। तेनुं बाह्य स्वरूप हिंद स्वराज छे। तेनुं खरुं स्वरूप तो ते व्यक्तिनुं स्वराज छे। हजु

एक पण एवो शुद्ध सत्याग्रही नथी पाक्यो तेथी ढील थाय छे। पण तेथी गभराबानुं जराए कारण नथी। ते तो वधारे प्रयत्ननुं कारण छे।

तमे पांचमा पुत्र तो थयाज छो। पण हुं लायक बनवा प्रयत्न करी रह्यो छुं। दत्तक लेनारनी उपर जवाबदारी कंई जेवी तेवी नथी। ईश्वर मने सहाय थाओ ने हुं तेवो लायक आ जन्मे ज बनुं।

बापुना आशीर्वाद

: १८ :

साबरमती जेल,
१८–३–२२

भाइ जमनालाल,

केवल आर्थिक दृष्टि से में कह सकता हुं की यदि विदेसी सुत और कपडों का व्यापार करने वाले अपना व्यापार को नहि छोडेंगे और जनता विदेसी कपडा का मोह को नहि छोडेंगे तो मुलक की महाबिमारी भूख हरगीज् हट नहिं सकती है। मेरी उमेद है सब बेपारी खद्दर और चरखा प्रचारमें पूरा हिस्सा देंगे।

आपका

मोहनदास गांधी

: १९ :

ता. ४–१०–२२,
आ. शु. १३

पूज्य बापूसे यरवडा (पूना) जेलमें मुलाकातके नोट—

२–३५ के करीब बापूको ऑफिसमें बड़े दरवाजेके पास लाये। हम पांच जन याने पूज्य बा, रामदास, किशोरलालभाई, पुंजाभाई और मैं, इतने तो कायदेके अनुसार मिलने वाले थे ही। इसके सिवाय मणिलाल कोठारी, इमाम साहब, दास्ताने (भुसावल), रामनिवासकी माता सुवटाबाई, किशनलाल गोयनका भी आये थे, दूरसे दर्शन होनेकी उम्मीदसे। लेकिन जेलकी कृपासे इनको बापूके दर्शन तथा पैर छूने और थोड़ी बात करनेका मौका मिल गया।

बापू और हमलोग २–४० को ऊपर ऑफिसमें आये। सब जने कुर्सियोंपर बैठे। रामदासको बापूने अपनी कुर्सीपर (गोदमें) बैठाया। उस समय वहां कुर्सियां कम थीं। बापू पहले तो सबके साथ जनरल

(सर्वसाधारण) वार्ता करने लगे। बादमें मैंने प्रत्येकसे निवेदन किया कि आप एक एक सज्जन बात कर लें, जिससे आपकी बातें भी पूरी हो जांय और बापू......से भी कर सकें।

पहिले पुंजाभाईने शुरू किया। बादमें किशोरलाल भाईने। उन्होंने समय अधिक लिया। आश्रम,......काका, मगनभाई, सुरेन्द्र आदिके संदेश कहे।

स्वामी आनंद, काका कालेलकर, नवजीवन प्रेस का ट्रस्ट करने तथा शंकरलालका सम्बन्ध नहीं रखने एवं २५ हजार विद्यापीठको देनेके बारेमें सूचना दी।

मनसाली बीमार है, यरवडा बदल दिये गये, यह कहा। पूज्य बाने बात शुरू की। हरीलालका पत्र बतलाया। रामदासकी सगाई बहलकी चर्चा की। रामदासको आगे क्या कार्य करना चाहिये—उस बारेमें चर्चा की। रामदासने खुलासा किया कि उसका विवाहके बारेमें क्या विचार है। मणिलालका विचार....पहले...ठीक है।

रामदासने कहा—मुझे आश्रममें रहना निर्जीव सरीखा मालूम होता है। मन नहीं लगता। बापूने और बाने कहा, मेरे (जमनालालजीके) पास रहने के लिये। रामदासने कहा—मेरा राजगोपालाचार्यपर पूज्यभाव होता है। उन्हें देखकर श्रद्धा पैदा होती है। उनके पास रहनेका विचार है। बाकी इच्छा इतनी दूर रखनेकी नहीं मालूम हुई। बापूने यह प्रस्ताव भी पसन्द किया। सीखनेके लिये वहां रह सकता है। व्यवहारमें पड़ना चाहो तो मेरे (जमनालालजी के) पास। इस तरह अपनी राय दी।

इसके बाद मुझसे बातें शुरू हुई।

१. सबसे पहले मैंने गुरुका बाग, अकाली सिक्खोंका हाल बताया। उन्हें सुनकर संतोष हुआ। मार पीट, वर्किंग कमेटी. .... मालवीयजी आदिके कार्यकी सब स्थिति थोड़ेमें कही।

२. टर्कीके बारेमें थोड़ा कहा तो उन्होंने कहा—मुझे मालूम है। मॅजिस्ट्रेट आये थे, उन्होंने सब बताया है।

३. नवजीवन प्रेसके ट्रस्टके बारेमें उन्होंने कहा—मेरी रायसे इसमें शंकरलाल की सलाह भी लेनी चाहिये। किशोरलालभाईने कहा—काका और स्वामी, उनका संबंध रहा तो अपना संबंध रखना नहीं चाहते। बापूने कहा—जब स्वामी आनंद...तो वैसा करनेको कहा।

विद्यापीठका स्वामी आनन्दकी सलाहसे तुम्हारे लोगोंके......सो दे देना, बाकी देना ठीक रहेगा, ऐसा कहा ।

४. यंग इंडिया, नवजीवन और हिन्दी नवजीवनका थोड़ेमें हाल कहा। उन्हें राजगोपालाचार्य और काकाकी ओरसे संतोष हुआ।

५. रामदासका नवजीवन प्रेसके मुद्रक और नवजीवन पत्रके सम्पादकमें नाम है । रामदास निकलना चाहता है, उसका कारण कहा। बापूने कहा–मुझे रामदासके नामसे संतोष है। उसका नाम जरूर रहना चाहिये। मेरा धोरण संभालना चाहिये। रामदासने कहा–मेरी समझ थी कि आपको मेरा नाम पसन्द नहीं आया। उन्होंने कहा–यह गलत है। मुझे बहुत सन्तोष हुआ कि तुम्हें भी जेल जानेका वारसा मिला। मेरा कहना इतना ही था कि * * * की बहुत इच्छा थी, इसलिये उनसे पूछ लेना ठीक था। अब मेरी रायमें नाम बदलना जरूरी नहीं। उसने कहा–मेरी परिस्थिति बदलने वाली है। तब उन्होंने कहा–उस समय अगर तुम लोगोंको बदलनेकी जरूरत मालूम दे, तो बदल सकते हो। परंतु अभी बदलनेकी जरूरत नहीं।

६. कौंसिलके बारेमें उनसे कहा कि नागपुर प्रान्त अब हमारे ताबेमें आ गया है (हंसे)। उन्होंने पूछा–दासका क्या मत है? मैंने कहा–अभी उन्होंने डिक्लेयर तो नहीं किया है, परंतु वह जाना पसन्द करते हैं। उन्होंने पूछा–पंडितजी (मोतीलालजी) का क्या मत है? मैंने कहा–वह जाना पसंद नहीं करते। आपका क्या मत है? तब उन्होंने कहा–मेरा मत पहलेसे भी अब अधिक दृढ़ होता जाता है। अगर मुझे कुछ भी फेर-बदल करना आवश्यक मालूम होगा तो मैं यह खबर तुम लोगोंके पास सुपरिन्टेन्डेन्टकी परवानगीसे भिजवा दूंगा। परंतु तुम लोग अब परिस्थिति देखकर अपना विचार करो। मेरे इस विचारका प्रचार मत करो। दाससे मिलो तो उन्हें कहना, मेरा तो वही निश्चय है, जो मेरी उनसे खानगी बात हुई थी, तब था।

मैंने कहा–श्री दासको काश्मीर जानेके लिये लिखित अन्डरटेकिंग (करारनामा) सही करनेके बारेमें कहा गया। उन्होंने सही नहीं की, तथा स्वास्थ्य खराब होते हुए भी वापस लौट आये। इससे बापूको संतोष हुआ। परंतु उनके स्वास्थ्यकी ओरसे चिन्तित थे।

७. गुजरात विद्यापीठके चन्देका हाल मालूम हुआ। संतोष हुआ। पुंजाभाईके पूछनेपर उन्होंने कहा—इसे खूब अच्छे ढंगसे करना होगा। इमारत बांधनी होगी, और जमीन लेनी होगी आदि।

८. खादी डिपार्टमेंटके कार्यका थोड़ेमें हाल कहा। मथुरादास (कालीकटवाले) की प्रशंसा की, तब उन्होंने कहा—गुरुसे चेला बढ़ गया। सदानन्दके बारेमें कहा—लड़का अच्छा है, परंतु आलसी है। उन्होंने कहा—बाहर आनेपर तुम्हारी झडती ली जावेगी।

९. रामदासके विवाहके बारेमें पूछा तो उन्होंने कहा—मोढ जातिमें अच्छी योग्य कन्या नहीं मिले तो दूसरी जातिमें करनेमें कोई हर्ज नहीं। जैन जातिमें करना तो मैं पसन्द करता हूं। इसके लिये बाके तथा रामदासके विचारको विशेष महत्व देना चाहिये।

* * *

१०. मैंने कहा—वर्धा आश्रमका कार्य संतोषजनक होता है। विनोबाका स्वास्थ्य ठीक है। दूध, फल लेते हैं। बापूने कहा—विनोबा को कहना, मुझे दूध, फल लेनेसे भी सन्तोष है। अगर तबीयत बिगाड़ ली तो योग भ्रष्ट हो जायेंगे। शरीरको संभालना।

११. परशरामका संग्रह करनेके बारेमें कहा—उसमें त्रुटियां हैं परंतु संग्रह करना चाहिये। किशोरी साथ रहे तो अच्छा है। वह जिद्दी है। नहीं बनेगी तो पीहर (मायके) चली जायगी।

१२. प्यारेलालको कहना, माताजीको अहमदाबाद बुला लेवें। रहनेकी व्यवस्था कर देना।

१३. राजेन्द्रबाबूको लिखना, बापूका हुकम है कि शरीर स्वास्थ्य की पूर्ण रक्षा करें। आराम लेवें।

१४. बापूने कहा—बीचमें मैंने १५ दिन मौन लिया था। सात रोजसे एक बार बोलता था। मुझे आराम मालूम होता था।

१५. दीया रातको नहीं देते। मेरी इच्छा है, दीया मिलना चाहिये। सुबह मगन आदिको तकलीफ होती है। तुम्हें छपानेका अधिकार है, परंतु अभी मत छपाना। मैं फिर कोशिश कर देखूंगा।

१६. अखबार मुझे नहीं मिलते पर मैं चाहता हूं। सिर्फ एक मासिक पत्रिका 'सरस्वती' मिली थी। मासिक भिजवाना।

१७. सूत अब बाहर नहीं जाने देंगे। कारण सुपरिन्टेन्डेन्टने कहा कि सूतकी जाहिरात करके रुपये किये (बनाये) गये। मैंने कहा—यह बात

बिलकुल झूठ है। हमने एक तार भी नहीं बेचा या दिया। उन्होंने कहा—मैं सुपरिन्टेन्डेन्टसे बात करूंगा। परंतु अब सूत जेलमें ही रख लेवेंगे।

१८. बापूने कहा—मैं अब ज्यादा पींजता हूं, कातता कम हूं। कारण, शंकरलालको तो २ घंटा कातनेका व्रत है, मुझे तो व्रत नहीं है। इसलिये मैं ज्यादा पींजता हूं, २ घंटे। १ घंटा कातता हूं।

१९. जोसेफकी स्त्रीको २०० रु. महावार भेजा जाता है।

२०. महादेव वगैरह लखनऊ चले गये। दुर्गा पीहरमें है। उसका भाई मर गया—आदि।

२१. बापूने कहा—यह करना या यह न करना, इसबारेमें मन शंकित हो तो 'ढक नाखवो'— पैसा चितपट डालना या किसी छोटे बालकके हाथसे ईश्वरको याद कर चिट्ठी निकालना। श्रद्धा रखकर इस मुताबिक काम करना। मैंने (जमनालालजीने) कई बार ऐसा किया है—छुटपनमें।[1]

: २० :

अ आसो सुद १४, गुरुवार
(५–१०–१९२२)

(सुपरिन्टेंडन्टनी रजा मेळवी आ कागळ मोकलुं छुं।)

चि. जमनालाल,

मोहने वश थईने रामदास बाबत में उतावळे गई काले मारा विचारो दर्शाव्या। आपणे छूटा पडया पछी हुं पस्तायो ने जोयुं के पोताने खबरदार गणतो माणस पण केम मुग्ध थई शके छे ने केम बगर विचार्यु बोली शके छे। पिता तरीकेनो मारो धर्म में गई काले न बजाव्यो—मने लागे छे के ज्यांसुधी चि. रामदासे पोतानी जिंदगीनो आदर्श नथी घडी काढयो ने पोतानी इच्छा प्रमाणे ठेकाणे नथी पडयो त्यांसुधी ते परणे तो पाप करे। ते मारी आबरूथी नहीं पण पोताना गुणे करीने परणे एम ते इच्छे छे, ने आपणे बधा इच्छीये। तेथी रामदासे धंधो पसंद करी लेवो जोईए। ते उपरथी दीकरी आपनार मावाप विचारे ने कन्या पोते पण जाणे के तेने क्यां जवुं छे। तेथी आपणुं बधानुं ने हवे तो तमे जे बहार छो तेनुं प्रथम कार्य रामदासने ठेकाणे पाडवामां मदद करवानुं छे। रामदासने भणतरनो लोभ होय

१. ये नोट जमनालालजीने स्वयं लिखे थे और उनके हस्ताक्षरोंमें ही प्राप्य हैं। जहाँ मूल नोटोंमें पढ़ा नहीं जा सका वहाँ......दिए गए हैं।

तो सुखेथी भणे। जो तेनो वुढो बाप आज बाळकनी पेठे अभ्यास करी रह्यो छे तो रामदासनी जुवानी तो हजु शरू थाय छे। जो तेने वेपार-मां रोकाई जवुं होय तो रोकाई जाय अने आश्रममां के राष्ट्रीय शाळामां तेनो जीव खुंचे तो तेम करे। हरिलाल साथे रहेवुं होय तो तेम करे। मारी खास सलाह छे के कोई पण कार्यमां रामदास रोकाई एक वर्षनो अनुभव लीधा पछीज सगाईनो विचार करे।

धनिक माबापनी दीकरी चारित्रवान होय तोपण ज्यांसुधी ते पोते गरीबाई पसंद न करे त्यांसुधी रामदासे एवा लग्नमां पडवुं ए पोते दुःखी थवा जेवुं छे। अने कन्याने तथा कन्याना माबापने दुःखी करवा जेवुं छे। सहिसलामत रस्तो तो मने एज लागे छे के गरीबमां गरीब कुटुंबमांथी गुणवती कन्या शोधी काढवी ने ते शोधतां वखत जाय. तेनी परवा न राखवी।

बानी प्रत्ये पण हुं खोटा मोहमां पड्यो। तेना प्रत्ये मारे कसाइ-पणुंज वापरवामां धर्म छे एम मानुं छुं। माबापे पोताना स्वार्थ ने सारु प्रजानी गति के इच्छाने न रोकवी जोईए। बाने में उलटी घडी भर काले उत्तेजन आप्युं। बाए कडवो घुंटडो पीने रामदासनो वियोग पण संतोष राखी सहन करवो ए मारी सलाह छे। रामदास राजगोपाला-चारी जेवा चारित्रवान पासे जई सुखी थाय तेमां बाए तेने आशीर्वाद आपवो एवी मारी सलाह छे। तेमां बानुं परम श्रेय छे। तेने सद्गुणी छोकरो छे एमांज संतोष माने। तेमनो संग मळवो एज बने तेवुं छे।

तमे इच्छाए बीजा देवदास थवानुं मागी लीधुं छे। हवे जुओ के ए केवुं भारे थई पडे छे। बधा छोकराओनी गरज तमारे सारवानी रही छे। तमने ईश्वर सहाय करो। हुं तमारा प्रेमने लायक थवा प्रयत्न कर्याज करूं छुं।

तमारी धार्मिक भावना विषे —

अपवित्र विचारमांथी जे मुक्त थाय तेणे मोक्ष मेळव्यो समजो। अपवित्र विचारोनो सर्वथा नाश घणी तपश्चर्याथी थाय। तेनो उपाय एकज छे। ज्यारे अपवित्र विचार आवे त्यारे तेनी सामे तुरत पवित्र विचार खडो करवो। ए ईश्वर प्रसादी होय तोज बने। ते प्रसादी चोवीसे कलाक ईश्वरनुं नाम लेवाथी ने ते अन्तर्यामी छे एम जाणी लेवाथीज मळे। भले रामनाम जीभेज आवीने मनमां बीजा विचार आवे, जीभे रामनाम लेवुं

ए एटला प्रयत्नपूर्वक के छेवटे जे जीभे छे ते हृदयमां पण प्रथम स्थान ले। वळी मन गमे तेटला फांफां मारे छतां एक पण इन्द्रिय सोंपवीज नहीं। मन लई जाय त्यां जे माणस इन्द्रियोने जवा दे तेनो नाश जसंभवे, पण ज्यांसुधी माणस इन्द्रियोने बलात्कारे पण कबजामां राखे छे ते कोई दिवस पण अपवित्र विचारोने ताबे करशे। हुं तो जाणुं छुं के आज पण जो हुं मारा विचारो प्रमाणे इन्द्रियोने मोकळी मूकुं तो मारो आजेज नाश थाय। अपवित्र विचारो आवे तेथी बळवुं नहीं पण वधारे उत्साही थवुं। प्रयत्ननुं क्षेत्र आखुं आपणी पासे छे। परिणामनुं क्षेत्र ईश्वरे पोताने हस्तक राख्युं छे, एटले तेनी चिन्ता न करशो। ज्यारे अपवित्र विचार आवे त्यारे एम पण समजो के तमे जानकीबाई प्रत्ये बेवफा थाओ छो। अने साधु पति पोतानी पत्नी प्रत्ये बेवफा नज थाय। तमे साधु छो। प्राकृत उपायो जाणोज छो। अल्पाहारज करवो। दृष्टि केवल पोतानी सामेनी जमीन उपर राखीनेज चालवुं। आंख मलीन थवा जाय तो तेने फोडी नाखवा जेटलो तेनी उपर क्रोध करवो। निरन्तर पवित्र पुस्तकोनोज संग राखवो। ईश्वर तमारुं सर्व प्रकारे रक्षण करो।[1]

शुभेच्छक

बापुना आशीर्वाद

: २१ :

श्रीहरि

वर्धा,

का. शु. ५, बुधवार,

(१९७९)

ता. २५–१०–२२

पूज्य श्री बापूजी,

सविनय प्रणाम। आपका पत्र मुझे यथा समय मिल गया था (जो कि पता बराबर नहीं था)। भाई रामदास व पूज्य बाको आपकी लिखी हुई सूचना पसंद आई, उसके मुताबिक ही वे प्रयत्न करेंगे। मैं आश्रम दो रोज के लिये गया था। सब बातें खुलासेवार की थी। भाई रामदासका पत्र इस पत्रके साथ है। उससे आपको खुलासा हाल मालूम हो

१. जमनालालजीने अपनी रोजमर्राकी प्रार्थना पुस्तकमें उपरोक्त पत्रकी नकल कर रखी थी।

जायगा। पू. मगनलालभाईकी व मेरी इच्छा है कि रामदास अभी आश्रममें रहकर कातना, पींजना, बुनना पहले सीख ले। उसके बाद जहां उसकी मर्जी हो वहां रहे। आशा है इसमें सफलता मिलेगी।

मेरे बारेमें आपने जो रास्ते बतलाये उनका मैं उपयोग करूंगा और अवश्य उस मार्गसे लाभ पहुंचेगा। परंतु अभी तो यही लज्जा आती है कि मनकी ऐसी हालतमें मुझे आपका पुत्र बननेका क्या अधिकार था? मैंने आपपर तो जवाबदारी डाल ही दी, परंतु वास्तविक जवाबदारी मुझपर है। आपके आशीर्वादसे ईश्वर जब यह ताकत दे देगा, उस रोज शान्ति मिलेगी। बाहर मन भटके तो बलात्कारसे, इज्जतके डरसे ही रोकना भाग पड़ता है; परंतु मेरी इच्छा तो यह है कि घरमें रहकर भी मैं इससे (काम-वासनासे) हमेशाके लिये मुक्त हो जाऊं। पर अभी तो सबसे कठिन यही बात मालूम होती है। परंतु परमात्मापर श्रद्धा बढ़नेसे अवश्य कोई दिन इसका तिटकारा आवेगा ही; आप चिंता न करें। आपके पवित्र आशीर्वादसे कठिनसे कठिन कार्यमें भी अवश्य सफलता मिलेगी।

पूज्य मगनभाई, विनोबा आदिका प्रणाम स्वीकार करें। विनोबाको आपका संदेशा कह दिया है। उस माफक वह प्रयत्न रखेंगे। औरोंको भी संदेशा—स्वास्थ्य आदिके विषयमें कहे मुताबिक दे दिया है। कमलाकी माता और बच्चोंका प्रणाम स्वीकारें। शंकरलालभाईको प्रणाम कहें। इनसे मुझे खूब ईर्ष्या होती है। बाहर आनेपर इनसे लड़ाई करूंगा। दोनों आश्रमोंका कार्य संतोषकारक चल रहा है।

आपका

[signature]

: २२ :

अ

शनीवार

(जवाब दिया ६—४—१९२४)

चि. जमनालाल,

तमे कानपुर जवानो इरादो छोडी दीधो ए ठीक कर्युं छे। हजु कमजोरी शिवाय कंई छे के?

चिचवडनी संस्था तमे जाणो छो। तेओनो विरोध ठीक थाय छे। पैसानी भीड रह्याज करे छे। मने लागे छे के तेओने मदद देवानी

जरूर छे । कई रीते देवाय ते विचार कर्या करुं छु । तेओनी बधी मळीने हाजन रु. १५००० छे । एटली मदद मळे तो पछी बीलकुल नहिं जोईए ने न मागवी एवु ए लोको व्रत लेवा तैयार छे । जो तमारो अनुभव मारा जेवो होय के तेओ लायक छे तो ने तमारी पासे सगवड होय तो एटली मदद तेओने आपो एम इच्छु छु।

राजगोपालाचारीने दम पाछो शरु थयो छे । मने लागे छे के तेने नासिकनी हवा माफक आवे । जो तमारी पासे सगवड होय तो तेने सेलम कागळ लखजो के तमारी पासे थोडो वखत रहे । दवा पण पुनाना वैद्यनीज करे छे। ते वैद्य तेनी तपास पण करी शके। में तेने लख्यु तो छे के तमे त्या छो तेवामा ते नासिक रहेवा जाय तो सारुं।

तमे जाण्यु हशे के पुनाना वैद्यनी दवा वल्लभभाईनी मणीबहेन, मगनलालनी राधा ने प्रो. क्रिपलानीनी कीकी बहेनने सारुं शरु करी छे। तेम करवानी प्रेरणा करनार देवदास छे । ते वैद्यनो तमारो शो अनुभव छे ते जणावजो ।

मालवीजी काले काशीजी गया । हिंदु मुसलमान विषे थोडी वातो थई । हकीमजी आवी गया तेमणे पण एज विषे वातो करी । मोती-लालजी छे ते तो रहेशे । ते काउन्सीलनी वातो करी रह्या छे । बधु विचार्या करुं छुं ।

बापुना आशीर्वाद

: २३ :

अंधेरी, शुक्रवार
(जवाबदिया ३-५-२४)

भाई जमनालालजी,

महात्मा भगवानदिनजी अने पंडित सुंदरलालजी अहिं आव्या छे। असहयोग आश्रम संबंधे ने बीजी बाबतोनी वात करवा मागे छे। पण में कह्युं के तमने मळ्या विना माराथी कंई न थई शके। में तेमने तमारी पासे आववानी सलाह आपी छे तेथी त्यां आवे छे। तेमनुं सांभळी मने कंई कहेवुं के पूछवुं घटे तो कहेजो।

मोहनदासना वंदेमातरम

: २४ :
अ

रवीवार,
पामवन, जुहु,
(पोष्ट)—अंधेरी
(मई–जून, १९२४)

चि. जमनालाल,

तमने दुःख थयुं छे तेथी मने थयुं छे। में ए कागळमां चि. नो उपयोग तज्यो केमके ते कागळ में उघाडो मोकल्यो हतो। तेमां चि. विशेषण बधा वांचे ए योग्य के अयोग्य एनो निर्णय ए वेळा न करी शक्यो। तेथी में भाई शब्दनो प्रयोग कर्यो। तमे चि. थवा लायक छो के नहिं के हुं बापनुं स्थान लेवा लायक छुं के नहिं एनो निर्णय केम थाय? जेम तमने तमारे विषे शंका छे तेमज मने मारे विषे छे। जो तमे अपूर्ण छो तो हुं पण छुं। बाप थतां पहेलां मारे मारो विचार बधारे करवो रह्यो। तमारा प्रेमने वश थईने हुं बाप बन्यो छुं। ईश्वर मने ए स्थानने सारु लायक बनावो। तमारामां उणप रहेशे तो मारा स्पर्शनी ए खामी हशे। आपणे बन्ने प्रयत्न करतां सफळज थईशुं एम मने विश्वास छे। तेम छतां निष्फळता थई तो ए भगवान् जे भावनानो भूख्यो छे ने आपणा अंतरने जोई शके छे ते आपणी योग्यता प्रमाणे आपणो नीकाल करशे। तेथी मारामां ज्ञानपूर्वक मलीनताने हुं स्थान नहिं आपुं त्यांसुधी तमने 'चि.' ज गणवानो।

आजे एक वागता लगी मौन छे। पं. सुंदरलालने छ वागे आववा कह्युं छे। तेने मळ्या पछी तमने बोलाववानी जरूर हशे तो तार दईश।

त्यांनी हवा अनुकुल हशे। मणीबेन हजीरा गई छे। राधाने बहु ठीक छे एम कहेवाय। कीकीबहेन पण ठीक छे।

बापुना आशीर्वाद

: २५ :

श्रावण सु. १०
(१०–८–१९२४)

चि. जमनालाल,

मोतीलालजी उपर में पत्र[१] लख्यो छे ते तमे जोजो। तेनी नकल मोकलवा कृष्णदासने कह्युं छे। गोविंदबाबु ओरीसामां काम करे छे ए तपासजो न

१ यह पत्र खण्ड ३ में देखिये

तमने पसंद पडे तो तेने मदद सेवा संघमांथी आपजो। तेने आवडत ओछी छे। तेनी मागणी मोटी छे। दर मासे रु. २०० नी। एटलुं तो आपवानुं नथीज। तमारी परीक्षामां पास थाय तो रु. ५० सुधी आपजो। तपास झीणवटथी करजो।

बापुना आशीर्वाद

: २६ :

श्रा. व. ९
(२३-८-१९२४)

चि. जमनालाल,

हुं हमणां ट्रेनमां छुं। दिल्लीथी पाछो आश्रम जाउं छुं। दिल्लीमां समाधानीनी वातो चाल्या करे छे। मोतीलालजीनो कागळ आव्यो नथी। तमारा प्रांतमां शुद्ध रीते जे थाय ते थवा देवुं। आपणे तटस्थ रही आपणुं कार्य कर्या करीए एटलुंज जरूरनुं छे।

घनश्यामदास दिल्लीमां न हता। तेना तरफथी पैसा मळी गया हता। ते तमने कई रीते वगर खर्चे मोकलवा ए पूछवा लखवानुं छगनलालने कह्युं हतुं। साथे महादेव, देवदास ने प्यारेलाल छे।

बापुना आशीर्वाद

: २७ :

AHMEDABAD,
8-9-24

JAMNALAL BAJAJ,
WARDHA

Congratulate Ghatwai.[1] Send further news Nagpur.

—*Gandhi*

१. भाषणोंके कारण मध्यप्रदेशकी सरकार द्वारा की गई गिरफ्तारी पर।

: २८ :
अ

(सितंबर, १९२४)

चि. जमनालाल,

तमारो तार मळ्यो ने कागळ पण। मुंबई पुनाने सुरतनी मुसाफरीमां एक क्षणनो पण वखत लखवानो तो हतोज नहिं। आजे सवारे आश्रम पहोंच्यो।

तमने इजा[1] थई तेथी मने मुद्दल दुःख न थयुं। हुं तो मानुं छुं के आपणा जेवा घणाये कदाच भोग आपवो पडे। झेर एटलुं बधुं व्यापी गयुं छे ने अप्रमाणिकता एटली बधी प्रसरी गई छे के केटलाक शुद्ध माणसोनां बलिदान अपाया विना आ आपत्तिमांथी आपणे बचवाना नथी। झगडानी जड मळे तो शोधजो। कोई डाह्या मुसलमान के डाह्या हिंदु नथी के जे समजे ने झगडानां कारणो दूर करे?

मारा निश्चयो तो समज्या हशो। बेलगाममां वोटथी कंई पण मुद्दानी वातोनो फेसलो न करवो एवो में निश्चय कर्यो छे। वेर एटलां वधी गयां छे के अत्यारे आपणे सत्याग्रहनुं प्रचंड स्वरूप बंध राखवुंज जोईए। तेम न करीए तो आपणोज नाश थाय एम मने लागे छे। एक पण वस्तु सरखी नथी समजाती। बधानो अनर्थ, चोमेर अविश्वास, आ समये आपणे पोते कायम रही बीजाओ जे करता होय तेना साक्षी रहीये। यंग इंडीयामां तो में घणुं समजाव्युं छे। तेनां केटलानो तरजुमो नवजीवनमां आव्यो हशे अे खबर नथी।

तमारो हाथ हवे तद्दन सारो थई गयो हशे।

मो. महमदअलीनो कागळ के तार न आवे त्यां लगी तो हुं अहिंज छुं।

બાપુના આશીર્વાદ

१. जिस चोटका ऊपरके पत्रमें उल्लेख है वह जमनालालजीको नागपुरमें हिन्दू-मुस्लिम दंगेके समय लगी थी। वह ताँगेमें बैठकर आ रहे थे। रास्तेमें झगड़ा होते देखकर उसे शांत करने उतर पड़े। उसमें किसीके फेंके गये एक पत्थरकी चोट उनके बांयें हाथपर लगी और उनको अस्पताल ले जाना पड़ा था।

: २९ :
अ

भा. सु. १२
(१०–९–१९२४)

चि. जमनालाल,

तमारो हाथ हवे तो तद्दन दुरस्त थई गयो हशे। मारो आगलो कागळ मळ्यो हशे।

मारा चित्तमां अनेक फेरफारो थया करे छे तेनुं पूरुं दर्शन आ वखतना यं. इं. मां आवशे। आपणाथी वोटो लईने मेजोरीटी नज लई शकाय एवुं अत्यारे तो मने भासे छे। बेलगाममां आपणने जो एमने एम कांग्रेसमां काम करवानो संजोग न मळे तो आपणे अळगा थई बनी शके तेटलुं काम करवुं जोईए। ते विना अत्यारे व्यापी रहेलुं झेर नाबूद नहि थाय एम हुं जोउं छुं। तेने कोई पण प्रकारे पहोंची वळशुं एम तो मानुं छुं। दिल्ली जवाना तारनी राह जोई रह्यो छुं। त्यां जवुं पडशे तो हिंदु मुसलमान बाबत कंईक फडचो नीकळवानो संभव छे। त्यां हुल्लड केम थयुं ते खबर हजु नथी पडी।

धटवाईनां भाषणो हमणां जोयां जो एज मुजब बोलेल होय तो मारो धन्यवाद तो नकामो थई पड्यो। ए बोलवामां अहिंसा नथी।

बालकृष्ण आवी गयो ते ठीक थयुं। तेनी इच्छा प्रमाणे भले त्यां रहे। साथे कागळ छे ते आपजो। अक्टोबरमां तमे पण आववाना के?

बापुना आशीर्वाद

: ३० :

SABARMATI,
Dated, 14th November 1924

DEAR FRIEND,[1]

Will you please supply me, as early as possible, with the figures on the following when Non-Co-operation was at its height and now?

(a) The number of titles given up.
(b) The number of boys and girls leaving Government Schools and Colleges.
(c) The number of suspensions of practice.
(d) The number of spinning wheels at work.

१. जमनालालजी द्वारा प्राप्त एक परिपत्र (सरक्यूलर पत्र)।

(*e*) The quantity of hand-spun Khaddar produced.

(*f*) The number of hand-looms.

(*g*) The number of National Schools and Colleges with attendance of boys and girls.

(*h*) The nature and volume of work done among Untouchables.

(*i*) The nature of quantity of temperance (liquor and opium) work done.

(*j*) The number of Congress members.

Yours sincerely,
M. K. Gandhi

: ३१ :
अ

दिल्ली,
२८–१–२५

पू. भाईश्री,

अहींनुं कामकाज धीमे धीमे चाले छे। कमिटीए सब-कमिटी करी। सब-कमिटीमां एक दिवस सारी पेठे गळां खोलवामां आव्यां। एटले सबकमिटी-मांथी हवे एक खानगी सब-सब-कमिटी थई छे। ते हकीम साहेबने त्यां मळे छे। बापु, पंडितजी, मोलानाओ (बधाए झफरअली सुद्धां) अने हकीमजी एटला दररोज भेगा थाय छे, अने सांजसुधी वातो चाले छे। बापु कांईक रस्तो काढवानुं करी रह्या छे। थाय ते खरुं।

गोरक्षा समितिनुं काम सरस थयुं। बापुए पोताना गोरक्षाना भाषण अनुसार एक योजना घडी काढी, ते योजना सौने पसंद आवी छे, एटले हवे ए कार्यने स्थायी स्वरूप मळवानुं। बापुने आ कार्यने माटे सरस मंत्री जोईए छे। जुवान, उत्साही, हिंदी, अंग्रेजी वगेरे भाषा जाणवावाळो, अने सौथी उपरांत, चारित्रवान–बनी शके तो ब्रह्मचारी–गोसेवक जोईए। तमने कोई सूझे छे?

अहीं ३१ मी सुधी तो रहेवानुं थशे ज।

लि. सेवक

: ३२ :

शांतिनिकेतन,
जे. सु. ७
(२९–५–१९२५)

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो छे। तमे कमीटीने सारु आवशो एम धार्युं हतुं अने त्यारे बधी वातो करी लइशुं एम मानीने कागळ लखवानुं मुलत्वी राखेलुं। न आव्या तेनी चिंता तो नथीज। गीरधारीना कागळ उपरथी धारी लीधुं हतुंके तमे आवशोज।

कॉलेजने[१] सारु जेनी तेनी उपर नजर नाख्या करुं छुं, पण कोई नजरे चढतो नथी। जुगलकिशोर आवे तो एक रीते निकाल आवे एवुं छे। ते चरित्रवान तो छेज। तेना गिडवानी उपर ना कागळ थी मने पूरो संतोष नथी थयो। जो गिडवानी पोते आववा धारे ने आवी शके तो ठीकज छे। अत्यारे बीजो कोई नजर आगळ नथी। दक्षिणमांथी कोई मळी आवे तो सारुं एम रह्यांज करे छे।

कॉलेज खोलवानी क्रिया जुन मासमांज करवी जोईए के? जुननो छेल्लो भाग तो मारो आसाममां जवानो। पछी तुरत बिहारमां जवुं जोईए। पण जो वर्धा तुरत जवुंज जोईए तो त्यां आवीने बिहार जईश। बिहार मां एक मास चाल्यो जशे। मारुं वर्धा आववानुं लोकोए सांभळ्युं छे त्यारथी मने बीजी जग्याओमां जवानुं कह्या करे छे। नागपुरथी, अमरावतीथी, अकोलाथी कागळ छे। मने भासे छे के ज्यांथी मागणी आवे त्यां जई आववुं इष्ट छे। आ वर्षने सारु भ्रमण करी लेवुं एवो मारो धर्म समजुं छुं। जो एम करुं तो सी. पी. नी मुसाफरीनो क्रम तमेज गोठवो ने बने तो साथे फरो ए पण कदाच योग्य होय।

(१) मारे वर्धा क्यारे आववुं ?

(२) सी. पी. नी मुसाफरी करवी के नहिं ?

(३) करवी तो क्रम तमे गोठवशो के केम ? तमे साथे फरशो के केम ? आनो जवाब लखजो।

हाल तुरतमां हुं आश्रममां आवी शकुं एवुं तो जोतो नथी। बंगाल पछी

१. गुजरात विद्यापीठ।

तुरत बिहार, सी. पी. वि. (विगेरह) मां जवानुं छे। ते थई रह्या पछीज अवाय। एटले कदाच सप्टेम्बर मास थाय।

वर्किंग कमीटी तो बेठीज नहिं केमके त्रणज सभ्यो हता। जवाहरलाल, दा. नाइडु ने हुं। अणे आववाना हता पण न आव्या। एटले अजमेरनो कंई विचार न थई शक्यो। छतां ए बाबत मने मळी जवुं घटे तो मळी जजो। ए विषे आपणे गभरावानुं नथी। हुं पोते अरजुनलालजीने लखवानो छुं के तेने जे कहेवुं होय ते मने कहे।

त्यां तमे बधा ठीक तबीयत राखता हशो। मने सारुं रहे छे। आजे शनीवारे बोलपुर छुं। सोमवार सुधी रहीश। मंगळवारे कलकत्ते जई त्यांथी त्रण दीवसने सारु दारजीलींग जईश। पछीनो कार्यक्रम आजे के काले नक्की थशे एटले मोकलीश।

बापुना आशीर्वाद

: ३३ :

ग्वालगंज जतां,
जे. व. ५
(१८–६–१९२५)

चि. जमनालाल,

चि. मनहर पासे कागळ लखाव्यो ने ते तमारी पासे छे ए जाणी हुं बहु राजी थयो। वर्किंग कमिटीमां तमारी इच्छाये आवो ए बरोबरज छे। मने खास जरूर हशे त्यारे हुं तेडावीश। आचार्यनी शोधमां तो छुंज। सी. पी. ने १६ मी जुलाई पछी एक मास आपीश। मारी उपर कागळो नगर कमीटीना, अमरावतीना अने अकोलाना छे। तेनां नामनो तो ख्याल नथी। ज्यां जवानी जरूर जणाय त्यां जवानुं राखवुं। प्रथम तो वर्धामां एक अठवाडियुं शांति थी गाळवानी होंश छे। एतो दारजीलींगना करतां पण वधारे शांतिनो समय गणी लेवो। पछी मुसाफरी शरू करवी। अहिं जुलाईनी १६ मी सुधी तो छेज। १८ मीए कलकत्तेथी आसाम जईश। त्यांथी २ जी जुलाईये कलकत्ते पाछो जईश। तमे तो सूतर खूब कात्युं।

बापुना आशीर्वाद

: ३४ :

सोमवार

(पोस्टकी मुहर कालीघाट, कलकत्ता,
३०–६–१९२५)

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। अलवार विषे जुदीज रीते आ वेळां कंईक लख्युं तो छे। मारुं त्यां आववानुं नक्की करतां कंईक समय जशे एवी धास्ति छे। आगस्टनी शरुवातमांज थशे एम भासे छे। जुलाईनुं छेलुं अठवाडीयुं त्यां आश्रममां ने पछी मुसाफरी एम विचार छे। तमे १६ मीए तो आवशोज। में त्यां ने साबरमती तार कर्या ते मळया हशे।

मोहनदासना आशीर्वाद

: ३५ :
अ

आश्रम, साबरमती,
ता. २४ मी
(२४–११–१९२५)

मुरब्बी जमनालालजी,

आप जाणीने दिलगीर थशो के बापुए शाळानां बाळकोनी मलीनताने अंगे आजथी सात दिवसना उपवास आरंभ्या छे। बाळकोमां ए पाप दाखल थयेलुं छे एम तो अगाउ जणायलुं हतुं, पण आटला मोटा प्रमाणमां दाखल थयेलुं छे, एटले के बे त्रण बाळको सिवाय बधाज ए पापमां सपडायला छे—एम बापुने हमणांज खबर पडी। सौए कबूल कर्युं।

ए उपवासना रहस्यनी चर्चा आपनी साथे न करुं। एनी योग्यायोग्यता विषे पण नहीं। मात्र तमे एनुं सांभळीने दोडी न आवो एवो बापुनो आग्रह छे। एटलुंज तेमणे मने लखवानुं कह्युं अने ते मुजब आ लखुं छुं।

आ साथे लक्ष्मीदासभाईनो कागळ बीडयो छे। एमांनी सूचना विचारी जोजो।

लि. सेवक,

महादेव देसाई

: ३६ :

आश्रम (साबरमती),
ता. २९ मी
(२९-११-१९२५)

म. भाईश्री,

तमारो कागळ मळ्यो। विनोबाने तो शी रीते बोलावाय ? अने ते पहोंचे ते पहेलां तो उपवास बंध थया होय। हमणां तो बाळकोबा तेमनी गरज सारे छे। गईकाले बापुनी एकवीस दिवसना उपवास करतां पण नबळाई वधारे हती, पण तेनुं कारण एक-बे दिवसनो श्रम हतो। बे दिवसथी अखंड आराम बोलवा चालवानो अने बधा प्रकारनो आपवामां आवे छे—कोईने पण तेमनी पासे कशी वात लईने जवानी परवानगी नथी। आजे बापुना अवाजमां वधारे ताकात छे, अने काल एथीए सारुं हशे एम आशा राखीए। अने परमदहाडे तो पारणां छे। नारायण करे तो सौ सारां वानां थशे। चिंता नज करजो।

लि. स्नेहाधीन,

महादेव

: ३७ :

आश्रम (साबरमती),
ता. ३० मी
(३०-११-१९२५)

मुरब्बी जमनालालजी,

आजे सातमो दिवस छे। तबीअत सारी कहेवाय। आजे तो मौन छे एटले शांतिज होय, तेमां नवाई शी ? रेंटीओ कातवानुं तो चालुज रह्युं। बीजो कोई जातनो श्रम लेता न हता। आजे सवारे आखी गीताजीनुं पारायण तेमनी समक्ष थयुं हतुं। काले सवारे सात वागे प्रार्थना पछी पारणां थशे। पारणानो विधि गये वर्षे जेवो दिल्लीमां थयो हतो तेवोज। मात्र आ वेळा पू. विनोबा नहीं होय एटली उणप। वर्धा आववानुं तो नक्कीज रहे छे।

लि. सेवक,

महादेव

आजे हाथमां एटली ताकात छे के उपवासने विषे एक लांबो लेख पोताने हाथे लख्यो। मौन एटले बीजाने तो लखावी शकाय नहीं।

: ३८ :

SABARMATI,
30–11–25

JAMNALAL BAJAJ,
WARDHA

Bapu will see Vinoba there 10th. Condition good.

—Devadasgandhi

: ३९ :

SABARMATI,
1–12–25

JAMNALAL BAJAJ,
WARDHA

Fast broken. Condition excellent. No cause slightest anxiety.

—Bapu

: ४० :

MAHATMA GANDHI,
SABARMATI

Thank God your fast ended successfully. Wish you take complete physical and mental rest at Dumas to recoup lost weight and vitality and avoid Wardha journey. Should choose to come Wardha for rest and no other consideration.

—Jamnalal

(नक़ल परसे लिया गया)

: ४१ :
अ

आश्रम,
ता. १ ली
(१–१२–१९२५)

मुरब्बी जमनालालजी,

बापुए आज सवारे पारणुं कर्युं तेना समाचार आपने तारथी आप्या छे। बापुनी तबीयत सारी छे। नबळाई छे। उपवास पुरा थती वखतनी विधि आ मुजब हती।

सवारे ७–३० वाग्ये उपवास छोड्या। प्रथम प्रार्थना थई तेमां इमाम साहेबे कुरानमांथी फकरा वांची तेनो अर्थ समजाव्यो ते पछी मीस स्लेईडे–तेनुं नाम मीराबहेन पाड्युं छे, ए आपने खबर पड्या हशे–लीड काइन्डली लाईट गायुं अने छेल्ले बाळकोबाए उपनीषद् अने गीतामांथी श्लोको बोली ते उपर विवेचन कर्युं। आ श्लोकोनो विषय विषयात्मा अने मानसात्मा, महात्मा अने शांतात्मानो भेद ए हतो। ते पछी बापुए धीमे अवाजे दर्द अने प्रेमथी भरेला थोडा उद्‌गार काढ्या। तेमांना मुख्य वाक्यो आ हता :

'खूब चिंतन अने आत्ममंथन पछी मानुं छुं के मारी भूल नथी थयेली। संभव छे के मारी भूल मने न देखाती होय, पण शा सारु न देखाय ? मारामां ममता छे, दुराग्रह छे, मलिनता छे ? में शुं सत्य कोईवार नथी जोयुं ? ममता होय तो मात्र एक छे–ते एटली के कुदको मारीने ईश्वरने पहोंची शकातुं होय तो पहोंचवुं, अने तेमां विलीन थई जवुं। ईश्वर एटले सत्य। मलिनताने तो में खंखेरी काढी छे, त्यारे शा सारु मने मारी भूल न समजाय ?

आश्रमनी में मोटी आशाओ राखेली छे। आखुं जगत ज्यारे उंघतुं हशे त्यारे आश्रम जवाब देशे एवी मारी अभिलाषा छे। जेम फिनीक्स द. आफ्रिकामां बन्युं हतुं।

पण ए आशा केम पुरी पडे ? चारित्र्यनो पायो मजबुत होय अने संपूर्ण शुद्धि होय तो–तेने माटे सात दिवसना उपवास तो कंईज नहिं, एवा उपवास–एथी कठण उपवास भविष्यमां पण करवा पडे। अनशन पण लेवुं पडे। न तो त्यारेज करवा पडे के ज्यारे हुं जंगलमां भागी जाउं। पण जंगलमां शेनो भागुं ! हुं तो वैश्य जन्मेलो छतां कर्मे शूद्र, क्षत्रिय अने ब्राह्मण रह्यो। मारे तो शांत आत्मा थवुं छे।' इ. इ.

आ पछी सहु विखराया। पछी ६–३० वाग्ये बाळकोनी प्रार्थना थई। बाळकोने जे कहेवामां आव्युं ते तो नज संभळायुं। कारण बापुनो अवाज छेक बेसी गयो हतो पण बाळकोबा अने सुरेन्द्रने आदर्श राखीने विचरो। २४ कलाक काम थतुं होय तो २४ कलाक काम करो ए ध्वनि हतो।

पछीनी घडीनो तो शुं ख्याल आपुं। २१ दिवसनो उपवास खुल्यो त्यारनी घडी करतांए वधारे पावक हती, वधारे गंभीर अने वधारे द्रावक हती। बापुनो कंठ रुंधायो हतो। सात वाग्या पण उपवास केमे तोडवानुं मन नहोतुं थतुं। केमे खावानुं नहोतुं रुचतुं। स्तब्ध पडी रह्या। कोण जाणे शा विचारमां लीन, केटली तीव्र वेदनाथी रीबाता। देवदासने बोलाव्या।

स्थितप्रज्ञ बोलवानुं कह्युं। ए थई रह्युं। वळी पाछा शांत पडी रह्या। आखरे ७–४० कंईक स्तब्ध थई पारणाने माटे द्राक्ष, अने नारंगीनो रस मंगाव्यो अने अमारो सहुनो जीव हेठो बेठो।

आजे तबीयत सारी देखाय छे। घणुं काम कर्युं छतां थाक बहु नथी देखातो। बोलवानुं काम ओछामां ओछुं करे छे। काले बेक दिवसनी शांति माटे बापु अंबालाल शेठना बंगलामां–शाही बाग– रहेवा जशे।

लि. सेवक,

(नकल परसे लिया गया) महादेव हरिभाई देसाई

: ४२ :

AHMEDABAD,
4–12–25

JAMNALAL BAJAJ,
WARDHA

Perfect rest possible only at Wardha.

—*Bapu*

: ४३ :
अ

आश्रम, साबरमती
ता. ४ थी
(४–१२–१९२५)

मुरब्बी भाईश्री,

तमारो तार बापुने बताव्यो हतो। डुमसनी सूचना शंकरलालनी होवी जोईए एम तेमणे कह्युं। मने तो खबरज न्होती। शंकरलाले डुमसनो आग्रह कर्यो। पण मारो पक्षपात वर्धा माटे–तमारा माटे अने पू. विनोबाना सहवास माटे–नो में जणाव्यो, अने बापुए पण कह्युं, "मने जमनालालजी अने विनोबा जेटली शांति आपशे तेटली बीजुं कोई न आपे।" एटले आजे जे तार कर्यो छे तेवो करवानुं बापुए कह्युं। बापु तो कहे छे के मुंबईमां एक दिवस रोकाया विना ६ मीएज वर्धा पहोंची शकाय तो पहोंचवु।

बापुने क्यां राखवा—क्यां वधारेमां वधारे आराम अने शांति अने विनोबाजीनो सहवास मळे ते तमेज जाणो अने नक्की करो। त्यां आववाना ए नक्की छे।

तमे सुखरूप हशो। बापु आजकाल अंबालालभाईने त्यां छे। काले पाछा आश्रममां आववाना। तबीयत ठीक सुधरती जाय छे।

लि. स्नेहाधीन,

महादेवना प्रणाम

: ४४ :

अ

सोमवार

(४-१२-१९२५)

चि. जमनालाल,

विनोबा मने कहेता हता के अहिंना अपवासोथी हुं चितामां पडीश एम तमे मानेलुं। हुं चितामां मुद्दल न पड्यो एटलुंज नहिं पण तेथी मने आनंद थयो। भाई भणसालीना अपवास केवळ तेना पोताना शोखथी हता। ते हाल भारे तपश्चर्या करी रह्या छे। भाई किशोरलालना केवळ अंगत अने पोताना विकार दूर करवा सारु हता। मगनलालना प्रायश्चित रूपे हता। अने ते बराबर हता। * * * तेने छेतरेल। आनो उपाय तेनी पासे पोते दुःख खमवा उपरांत बीजो नज हतो। एनी असर ए कुटुंब उपर सारी थई छे। त्रणेनी तबीयत किशोरलाल, भणसाली, ने मगनलालनी सारी छे। हवे आमां मने चितानुं कशुं कारण न होय।

मारी तबीयत सारी रहे छे। हुं हवे चार शेर दूध पीउं छुं ने आठ बिस्किट जमनाबहेने बनावी मोकली छे ते खाउं छुं। नियमसर हरुं फरुं छुं। एटले मारे विषे मुद्दल चिता न करवी।

आ साथे चि. मणीनो कागळ तमने वांचवा सारु मोकल्यो छे। मने फरी मोकलवानी जरूर नथी।

कमळाना विवाह विषे हजु कंई खबर नथी?

बापुना आशीर्वाद

: ४५ :

गुरुवार
(साबरमती पोस्ट की मुहर,
२१–१–१९२६)

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ में मंगळवारे वांच्यो एटले चि. रामेश्वरप्रसादने बोलावी न शक्यो। पण काले ते अने केशवदासजी आव्या हता। साथे फरवा लई गयेलो। रामेश्वरप्रसादने विद्यार्थीनी प्रार्थनामां आववा नोतर्या ने आजथी शरु पण कर्युं छे। ते समये हुं भक्तराजनी यात्रा[1] संभळावुं छुं।

बापुना आशीर्वाद

: ४६ :

मंगळवार
(साबरमती पोस्टकी मुहर,
९–२–१९२६)

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। मणीबहेन विषे तमे अहिं आवशो त्यारे नक्की करशुं।

मारुं वजन पण थोडुं तो वध्युंज छे। आ अठवाडीये वधारे वधवानी आशा छे। चिंता करवानुं कशुं कारण नथी।

तमारी तरफथी संत्रां मळ्या करे छे।

बापुना आशीर्वाद

१. *Pilgrim's Progress* का भाषांतर।

: ४७ :

आश्रम, साबरमती,
रविवार
(मार्च १९२६)

चि. जमनालाल

तमारो कागळ मळयो। २२ मी तारीखे हुं अहींथी नीकळी शकीश एवो तार में तमने मोकली दीधो। तेना पहेलां नीकळवुं ए सगवड भरेलुं नथी। अने हाल तो अहीं गरमीने बदले ठंडक रहे छे एम कही शकाय। आ वखते पण मारुं वजन ०॥ रतल वध्युं। एटले हवे १०४ पर गयुं छे। आराम तो पुष्कळ लई रह्यो छुं। हकीम साहेब परना तमारा कागळनो मुसद्दो हुं वांची गयो छुं। ए बराबर छे। आ साथे पाछो मोकलुं छुं। मारी साथे घणेभागे प्यारेलाल, महादेव, सुब्बैया, प्यारअली, नूरबानुबहेन अने तेमनो नोकर हशे। प्यारअलीनो इरादो तो भाडुं आपीने नोखा रहेवानो ने पोतानी रसोई करावी लेवानो छे। जो तमारे मुंबईमां हाल रहेवानी आवश्यकता न होय तो तमे मारी साथे मसुरीमां हो ए मने अवश्य गमे। केटलुंक काम तो तमे हो तो जरूर करीए। पण जो कामने प्रसंगे मुंबई के कलकत्ता जवुंज जोईए तो हुं खास रोकवा नहि इच्छुं। एटले छेवटनो निर्णय तो तमारी सगवड विचारीने तमारेज करवो रह्यो।

गुरुकुळमां तमे ठीक फाव्या लागो छो। राजगोपालाचारीने पोताना आश्रमनी व्याधि पुष्कळ छे। एटले तेने तुरत जवुं पडशे। अब्बास तैयबजी फरवाने सारु तैयार थई शके एम छे। मणिलाल रंगुनथी आवी गया छे। पण ते तुरतमां फरवा नीकळी शके एम नथी जणातुं। तेने हवे थोडो समय रेलवेना नोकरोने सारु पण आपवो पडे एम छे। एटले हाल तुरतमां ए फरी नहि शके। अहींथी मंगळवारे नीकळशे।

बापुना आशीर्वाद

: ४८ :
अ

(आश्रम, साबरमती)
सोमवार
(दिल्लीसे उत्तर दिया,
१९–३–१९२६)

चि. जमनालाल,

मसुरी विषे आजे मने बहु उद्वेग थया कर्यो छे। त्यां के क्यांए जवानुं मनज नथी थतुं। मारी तबीयत हवाफेर नथी मागती। मने आराम जोईए ते तो बरोबर मळे छे ने थोडुं अहिंनुं काम जोई शकुं छुं ए मारे सारु दवानी गरज सारे छे। आश्रम न छोडवानां घणा कारण छे। आश्रम छोडतां आघात पहोंचे तेम छे। एटले जो मने समजपूर्वक बंधनमुक्त करो तो हुं छुटी जवा मागुं छुं। जो मसुरी जवुंज जोईए एम धारो तो जईशज। पण आजे जे मानसिक उद्वेग पाम्यो ते तमने लखवुं योग्य गणी लख्युं छे। शंकरलाल साथे पण वात चर्चीश।

सतीशबाबु काले आव्या छे। दा. सुरेश शनिवारे आवशे।

मणीबहेन तमारी साथे रहेवा नथी मागती। तेने गुजराती सारुं करी लेवुं छे। आम छतां मदालसा जानकीबहेननी पासेज रहेवी जोईए। घणो काळ आश्रममां हशे तो घणुं एमने एम शीखी लेशे।

कन्या गुरुकुळ बारिकीथी तपासी मने लखजो। तेमां केटली कन्या छे ते पण जणावजो।

बापुना आशीर्वाद

: ४९ :

आश्रम, साबरमती,
बुधवार
(२४–३–१९२६)

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। हकीम साहेबनो पण मळ्यो छे। हकीम साहेबने आजे नीचे प्रमाणे तार मोकल्यो छे :

"Thanks letter. Any arrangement you friends may make will suit."

हवे तमे जे नक्की करो ते खरुं। मसुरी जतां पहेलां मने बीजे कोई ठेकाणे राखवा धारो तो तेम करशो। बाकी हुं तो सीधो मसुरी जवाने पण तैयार छुं। त्यां ठंडी वधारे हशे एनुं कंई नहि। एटली तो सही लेवाशे।

બાપુના આશીર્વાદ

: ५० :

AHMEDABAD,
26-3-26

SETH JAMNALAL BAJAJ,
KANKHAL

If I am to fix date I should say some time after middle April. Weather here unusually cool just now.

—*Bapu*

: ५१ :

आश्रम,
२५–४–१९२६

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। गवर्नरनो जवाब आव्यो छे के हमणां मारे त्यां जवानी जरूर नथी। ए ज्यारे जून मासमां नीचे उतरे त्यारे जाउं तो बस थशे। एटले महाबलेश्वरनी जंजाळमांथी छूटया।

लालाजीनी साथे में तेमनी फरियाद बाबत थोडीक वाततो करीज हती, पण मारी पासे तो तेमणे इनकारज कर्यो। ए आवशे त्यारे रोग जाणी लीधो छे एटले दवा तो करीज लईशुं।

मोतीलालजीनी साथे प्रसंग आव्ये वात करी लईश। हुं मानुं छुं के ए बाबत कशी अडचण नहिज आवे। देवदासने हमणां अहींथी काढवानी इच्छा नथी थती। तेनुं शरीर पाछुं सारी पेठे वळे त्यारेज अहिंथी नीकळे तो ठीक;

वळी जो यूरोप जवानुं थायतो शुं करवुं अने कोने लई जवा ए विचार तो रह्योज। अत्यारे तो वृत्ति एवी छे के महादेव अने देवदास साथे आवे। ए दृष्टिए पण देवदास हाल अहीं होय ए ठीक। जवानुं थशेज तो जुलाई मासनी शरुआतमां नीकळवानुं हशे। मने हजु कशो जवाब मळचो नथी।

: ५२ :
अ

नवजीवन,
सारंगपुर, अमदाबाद,
३०–४–१९२६

प्रिय जमनालालजी,

आपनो पत्र मळ्यो।

१. ओ. इं. कों. कमिटीमां[१] आववा विषे बापु कहे छे:

"इच्छा न थाय तो न आवो। रत्नागिरी जरूर जई आवो। जो इच्छा थायज तो आवजो।"

२. बेलगामवाळानी बाबत तेमनी सलाह तेमनाज शब्दोमां जणावुं छुं:

"मने ए वस्तु पसंद नथीज। पण बेलगामवाळाने तमे मदद करी चूक्या छो, एणे ठीक भोग आप्यो छे। एटले जो तमने आमां पडवानी इच्छा थायज अने मशीनरी खरेखर एटली किंमतनी होय अने मोरगेज चोखुं मळी शके अने तमे पैसा धीरो तो हुं नाराज न थाउं, अथवा तमने ठपको तो नज दउं।

पण एनी भलामण करवा हुं तैयार नथी। एटले बधा संजोगो जोईने तमे जे निर्णय करो तेमां हुं सहमत थईश।"

हॉर्निमेनना माणसने तो जे कह्युं ते बरोबर कर्युं छे।

मगनलालभाईने आश्रमनी चीजो विषे संदेशो आपी दीधो छे।

साहेबजादा घेर गया छे। छोटुभाईनी साथे शुं थयुं ते कांई जणाव्युं नहीं।

बापुनुं फिनलेन्ड जवुं अनिश्चित छे। बापुए हा तो लखी छे, पण केटलीक शरतो करी छे। पेला स्वीकारशे तो जवानुं थाय। शरतो ए के, पोषाक पोतानीज

१. ऑल इंडिया कॉंग्रेस कमिटी।

शैलीनो राखशे, मात्र हवाने अंगे कांई फेरफार करवो घटे तो करे; खोराक बकरीनुं दूध अने फळाहार; भाषण न आपे पण विद्यार्थीओ साथे वातचीतो करे; पासपोर्टनी व्यवस्था बधी ए लोकोएज करवी रही, अने तेमां कशी शरतो न होवी जोईए। आ बधुं पेला स्वीकारे तो बापु जशे। तेमनो जवाब आव्यो नथी। साथे जनारा तो बे छे—हाल तो देवदास अने मारुं नाम बोलाय छे, आखरे जे जाय ते खरा। अने जतां पहेलां वल्लभभाई जेवा कांई चमत्कार करे ते पण ध्यानमां लेवानुं।

लि. स्नेहाधीन सेवक,

महादेवना प्रणाम

: ५३ :

आश्रम, साबरमती,
शनिवार
(८-५-१९२६)

चि. जमनालाल,

आखरे महाबळेश्वर तो जवुंज पडशे। आजे सर चुनीलाल महेतानो कागळ छे। ए गवर्नरेज लखावेलो छे, अने तेमां जो बनी शके तो गवर्नरने महाबळेश्वरमांज मळवानुं तेणे सूचव्युं छे। अने तेनी साथेज रहेवानुं पण आमंत्रण मोकली आप्युं छे, तथा आग्रह कर्यो छे। एटले अहींयांथी गुरुवारने दिवसे रवाना थवानो इरादो राखुं छुं। देवदासने एटलामां ऑपरेशन तो थईज गयुं हशे। आजे तारनी राह जोई रह्यो छुं। महाबळेश्वर जवामां बंगलानी तजवीज करवी नहि रहे। मोटरनुं शुं करवुं घटे ए अने तमारे साथे आववुं के नहि ए विचारी लेजो।

बापुना आशीर्वाद

: ५४ :

આશ્રમ, સાબરમતી
રવિવાર

ચિ. જમનાલાલ,

તમારો કાગળ મળ્યો છે. આજે કોઈ કુશળ(?) તમારો તાર આવવાની આશા રાખીશ. મને કશીએ ચિંતા છે નહિ. બાળ [illegible] કે રામીની તબિયત ઠીક આરામ છે. ~~[illegible]~~ બાળો(?) સંદેશા મને મળ્યો હતો. મણિબહેન અને બાળો ખાસ [illegible] કરે છે. આજે રામીની માસી કુમુબહેન આવેલી છે. તેને સ્ટેશન લેવા કાંતિ અને મણિ ગયાં હતાં. આ તરફની ચિંતા ન કરે.

રાજેન્દ્રપ્રસાદ, તેમાં મથુરા(?) વગેરે ગઈ કાલે આવ્યાં. આજે તે [illegible] રહેવા જાય છે. મહાબળેશ્વર જતા [illegible] મારો કાગળ તમને મળ્યો હશે. મહાદેવ તો ત્યાં જ રોકાઈ જશે, એમ માની લઉં છું. મહાદેવને કંઈ પણ કામમાં લેવાનો હોય તો મને જણાવે. કંઈ આપવાનું વિશેષ લેવું જોઈશે એમ ધારું છું. ત્યાં [illegible] રોગ(?) [illegible] એવું લાગે છે! [illegible], [illegible] અને [illegible]. [illegible] ~~[illegible]~~ [illegible] [illegible] સિંહગઢમાં [illegible] મળવું એમ પણ [illegible] છે. અને બની શકે તો [illegible] પણ [illegible]. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] [illegible] [illegible] સિંહગઢ ૧૦-૧૧ વાગે પહોંચાય. અને સિંહગઢથી તે જ દિવસે

२

[illegible] છે. [illegible]

[illegible] છે. [illegible]

[illegible] છે. [illegible]

[illegible] હોય તો સારું, એમ લાગે છે.

[illegible]

[illegible]

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

आश्रम, साबरमती,
रविवार
(मई १९२६)

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो छे। आजे सांजेकवोरो तमारो तार आववानी आशा राखीश । मने कशीये चिंता छे नहि । बाने कहेजो के रामीनी दीकरीने तद्दन आराम छे। बानो संदेशो मने मळ्यो हतो । मणिबहेन अने नानां काशी रसोई करे छे। आजे रामीनी मासी कुमीबहेन आवेली छे । तेने स्टेशन लेवा कांति अने मनु गयां हतां । आ तरफनी चिंता बा न करे।

रामेश्वरप्रसाद, तेनां मातुश्री वगेरे गईकाले अहीं आव्यां । आजे ते तरफ रवाना थाय छे। महाबळेश्वर जवा बाबतनो मारो कागळ तमने मळी गयो हशे। महादेव तो त्यांज रोकाई जशे, एम मानी लउं छुं। महादेवने कंई पण सामान त्यां लाववानो होय तो मने जणावे। कंईक ओढवानुं विशेष लेवुं जोईशे एम धारुं छुं। त्यां त्रण दिवस रोकावानुं थशे एवुं भासे छे। शनि, रवि, अने सोम । मंगळवारे त्यांथी नीकळी सिंहगढ़मां काकाने मळवुं एम पण मनमां छे। अने बनी शके तो देवलाली पण जई आववुं । आम करतां कदाच बे दिवस खोटा थाय। मंगळवारे सवारे नीकळी सिंहगढ़ १०।११ वागे पहोंचाय, अने सिंहगढ़ थी तेज दिवसे सांजे उतरी देवलाली जवाय तो जवुं, एम मनमां थाय छे । पण जो देवलाली जवानी आवश्यकता नथी एम महादेव माने तो देवलाली जवानुं मांडी वाळवानुं पण मनमां रहे छे खरुं । केमके जो देवलालीमां एक बे दिवस रहेवानुं न थाय तो त्यां जवामां कंईज नथी, एवुं पण मनमां रह्यां करे छे । हाल तुरत मथुरादासने आ बाबत कंईज नथी लखतो । महादेवनी सलाह उपर आधार राखवानो विचार कर्यो छे । पूनाथी मोटरनो बंदोबस्त तमेज करी लेशो के? सवारना १०॥ वागे पूना ट्रेन जाय छे। जो एम होय तो देवदासने[1] जोई १०॥ नी ट्रेनमां बेसी जवुं ने तेज रात्रे महाबळेश्वर पहोंचवुं ए ठीक छे । पूनाथी बे मोटरनी सगवड होय तो सारुं, एम लागे छे ।

ऑपरेशननो टेलिफोन हमणा वल्लभभाई तरफथी मळ्यो। ईश्वर कृपा ।

बापुना आशीर्वाद

[1]. श्री देवदास गांधीका अपेंडिसाइटिसका ऑपरेशन हुआ था।

: ५५ :

सोमवार,
१७-५-१९२६

चि. जमनालाल,

तमारो अने महादेवनो कागळ मळ्या। हुं तो निश्चितज हतो ने छुं। क्लोरोफॉर्ममां कंईक जोखम तो होयज। ए तो गमे ते ओपरेशनने अंगे उभुंज छे। देवदासने कहेजो के हजु दुःख थाय तो गभराय नहि। केटलाक दरदीने दुःख रहे छे। पण ते बे दीवसनुं होय। आ मळशे त्यारे तो दुःख मुद्दल न होवुं जोईए।

महादेवे मोकलेल तरजुमो मळी गयो छे। ए सुधां ने वालजीना तरजुमां सुधां अत्यारे (२॥ वागे) सत्तर कॉलम जेटलुं तैयार थई गयुं छे। एटले हवे कागळ लखवा बेठो छुं।

तमारे इंदोरनी मुलाकात मुलत्वी राखवानी हुं जरूर नथी जोतो। महाबळेश्वरमां कंईज थवानुं नथी। इंदोरमां तो काम छे। अहिंथी हुं कोने लावीश ए नक्की नथी कर्युं। एक जण हशे। घणे भागे तो सुबैयोज हशे।

हुं पहेली ट्रेनथी आवीश। मने रेवाशंकरभाईने त्यां लई जजो। देवदासनी तबीयत सारी हशे तो नहाई खाईने तेने जोवा जईश। मोळी हशे तो परबारो स्टेशनथी। पुना तो तेज दीवसे जवुं जोईए। तेमां मने कशी तकलीफ नहि लागे। तेज राते एटले शुक्रवारे ९ वागे महाबळेश्वर पहोंची जवुं एवो इरादो छे। रेवाशंकरभाईने खबर देशो।

तमने ओळखाण छे छतां महेताने मोटर बाबत न लखायुं हत तो सारुं। ते सरकार तरफथी बंदोबस्त करे तो ठीक नहि लागे। पण हवे कशो फेरफार न करशो।

तमे जोशो के शुक्रवारेज महाबळेश्वर पहोंचवाथी गवरनरने मळवाना बेज दीवस रहेशे। मंगळवारे सवारे त्यांथी नीकळी जवुं जोईए।

बापुना आशीर्वाद

: ५६ :

आश्रम, साबरमती,
रविवार
(२३–५–१९२६)

चि. जमनालाल,

मसुरी जाओ त्यारे अब्बास तैयबजीना मकाननुं न भूलो ए याद आपवानुं मने तें लखे छे। तमे त्यां हजु हो तो एमने खरखरो करी आववा मळी आवजो। एमनुं शरनामुं नीचे प्रमाणे छे:

C/o Mr. M. B. Tyabji,
French Road, Chowpatty.

ए तो ज्ञानी पुरुष छे। मारा तारना जवाबमां लखे छे के तेने कंईज मोतनो धक्को लाग्यो नथी।

भाईलालजीनुं ऑपरेशन झपाटाबंध थई गयुं अने सुंदर थयुं जणाय छे। देशबंधु फाळानो आंकडो तैयार करावजो।

बापुना आशीर्वाद

: ५७ :

आश्रम, साबरमती,
गुरुवार
(१०–६–१९२६)

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। तमे पण त्यां लांबा वखत सुधी रही शको एम हुं इच्छुं छुं, अने हरी फरीने शरीरने वधारे कसायेलुं बनावजो। चक्कर वि. आवे छे ए तद्दन नीकळी जवां जोईए। तेने सारु मुख्यत्वे खुल्ली हवा अने कसरतज खरी वस्तु छे। तमारे सारु ओछामां ओछी दस माईलनी कसरत हमेशां होवीज जोईए। ए जरायें वधारे पडतुं छे एम हुं न मानुं। चरखा संघनी समितिनी सभा २६ मीए छे। एटले त्यां सुधी तो तमारे अहीं आववापणुं नथी रहेतुं। दिल्ली अने रामपुरा आश्रममां हमणां रोकावानो लोभ न करो ए ठीक छे। मसुरीमां जेटलो वखत काढी शकाय तेटलो गाळी काढो एम इच्छुं छुं। लक्ष्मीदासने कहेजो के मने वखतो वखत कागळ लखे। तबीयतने खूब सुधारे। मणिने लईने वेलाबेन आजे सांजे आवशे।

बापुना आशीर्वाद

: ५८ :

आश्रम, साबरमती,
मंगळवार
(१५-६-१९२६)

चि. जमनालाल,

आजे तमारा कोई तरफथी कागळ नथी। देवदासनी तो जरूर आशा राखी हती। २६ मीए तमे नज आवी शको तो कंईज हरकत जेवुं नथी। पण ते तबियत नी दृष्टिए। भाई अमृतलाल शेठे आजे यादीनो कागळ मोकल्यो छे। तमे ज्यारे अहीं आवशो त्यारे चार पांच दिवस काठियावाडमां जवाना छे एतो धारीज लेजो।

बापुना आशीर्वाद

: ५९ :

आश्रम, साबरमती,
आषाड सुद ६, शुक्र
(१६-७-१९२६)

चि. जमनालाल,

जोषी गिरजाशंकरवाळी जमीन जे आपणे लेवा धारता हता ते आजे लेवाई गई हशे। जमीन बधी मळीने १९ वीघां छे। तेमांथी छेडेनुं एक वीघुं ते राखे छे। १८ बीघां अने मकान २१ हजारमां लेवाशे। पोते अथवा तो तेनुं भाडुत रहे ते आपणा कुवामांथी पाणीनो उपयोग करी शके। ए बीघुं वेचे तो पाणीनो उपयोग बंध थाय। वेचतां पहेलां पंचकयास करे तेटली किमते ए जमीन आपणने लेवानी छूट रहे। बहाना तरीके ५ हजार रूपिया आपवाना छे, अने बाकीना १६ हजार एक मासनी अंदर। कोने नामे जमीन लेवी ए खाली राख्युं छे। श्रण स्थिति मने सुझे छे: (१) आश्रमने नामे; (२) गोरक्षा खाते; (३) तमारे नामे। तमे लेवा धारो तो ए भले तमे लो। मारी वृत्ति एवी छे के ते आश्रमने नामे लेवी, अने डेरीने सारु अथवा चमार-खानाने सारु वापरवी पडे तो वापरवी। अथवा आश्रमनी कोई बीजी जमी-नमां डेरी चमारखानां वि. करवां अने आ जमीननो उपयोग रहेवा तथा खेतीना कामने सारु करवो। अत्यारे तो मकाननो ताण बहुज मोटो छे। जे रीते लेवी होय ते रीते, पण पैसानो बंदोबस्त तो तमारेज त्यां करवानो रहेशे।

जुगलकिशोरजी ने घनश्यामदासजीने आ बाबत मळवुं घटे तो मळजो। चोमासुं उतर्ये थोडांक बीजां मकानो बांधवां तो पडशेज, एम लागे छे। पैसानुं शुं करवु अने कया नामथी दस्तावेज करावववा ए विषे तार करजो। अहीं वरसाद बहु सरस पड्यो छे। पूर लगभग रोज आवे छे।

हिंदु मुसलमान विषे त्यां झगडो वधतोज जाय छे, अेनो भेद शोधी शकाय तो शोधजो। मने सविस्तर हकीकत लखजो।

बापुना आशीर्वाद

: ६० :

सोमवार
(जुलाई, १९२६)

चि. जमनालाल,

तमारो तार मळ्यो छे। तेथी आ कागळ काशीथी लखुं छुं। गये अठवाडिये एक कागळ कलकत्ते तो लख्यो। गीरजाशंकर जोषीवाळी जमीन २१००० मां लीधी छे। परचुरण सामानना १००० थी अंदर बीजा थशे। जमीन १९ वीघां छे तेमांथी एक बीघुं तेने सारु राखवानुं छे। रू. ५००० बहानाना आपी दीधा छे। एक मासनी अंदर रू. १६००० आपवा जोईए। हवे प्रश्न ए छे जमीन कोना नामे नोंधाववी? तमारा, आश्रमना के गोरक्षाना? मने लागे छे के आश्रमने नामे लेवी। पछी जे कार्यने सारु वापरवी होय ते कार्यने सारु वापरीये। पण आमां तमारी इच्छाने अनुकुल थवा इच्छुं छुं। गमे ते नामे लेवाय पण पैसानो बंदोबस्त तमारे करवो रह्यो छे। बिरलाभाईओनी साथे वात करवानी होय तो करजो। शुं करवुं तेनो तार करजो। पैसा जेम वहेला देवाय तेम देवानुं में कह्युं छे। तेथी तेनो पण बंदोबस्त तुरत थाय तेम करजो।

कलकत्ताना झगडानुं सांभळी जानकीबहेन कंईक गभराय छे। में शांत कर्या छे।

बापुना आशीर्वाद

: ६१ :

साबरमती आश्रम,
अषाड वदी २।८२
(२७–७–१९२६)

चि. जमनालाल,

गीरजाशंकर जोशीने जमीनना पैसा चुकववानी छेल्ली तारीख १५ मी छे ए याद राखशो। पंदरमीना पहेलां मारी पासे अवेज होवो जोईए।

गईकाले हिसारना लाला श्यामलाल पोताना पत्नीनी साथे आव्या। आश्रममां अत्यारे दंपतीओने राखवा जेवी जग्या छेज नहीं तेथी तेमना पत्नीने जानकीबेननी साथे राखेल छे। लाला श्यामलाल तमने सारी पेठे ओळखता होय एम लागे छे। ओम मांदी पडी गयेली तेथी अहीं आवेली छे। हवे मजामां छे।

बापुना आशीर्वाद

: ६२ :
अ

अ. व. ६

चि. जमनालाल,

तमारो देवदास उपरनो कागळ वांच्यो। जे वादळ आव्युं छे तेनी हुं आशा नहोतो राखतो। पण भले आव्युं। तेमांज धर्मनी परीक्षा छे। तमारी उपर तहोमत नामुं आवे त्यारे ते मोकलजो। तेनो जवाब हुं घडी दईश। तेमां फेरफार करवा होय ते करजो। मतलब तो एटलीज के आपणे पूरो विनय वापरवो छे। नातने अधिकार छे के जे व्यक्ति तेना नियमनुं उल्लंघन करे तेनो बहिष्कार करे। तमे जे जे कर्युं छे तेमां नथी शरम जेवुं के नथी पस्तावा जेवुं। ज्ञातिमां तमारी असर ओछी थशेज, द्रव्य मेळववानी तमारी शक्ति ओछी थशेज तेनी हुं कशी फिकर मानतो नथी। तमारे भीख मागवानो समय आवे तोए भले। धर्म रहे ने भिक्षुक थवुं पडे तो ते वधावी लईये। छेवटे ज्यारे नात तमारो धर्म ने तमारो विनय ओळखशे त्यारे पोते नम्र बनशे। ज्ञातिओमां सुधारा तो थवाज जोईशे। ते सहेजे थई शकशे।

अन्नाने प्रेस लेवा सारु बीजा ८००० हाल मोकलवानी जरूर छे। ते अहिं आवी गया। तेने प्रेस लेवानी सगवड करी आपवी जोईए। जो घनश्यामदासे पाछा रू. ५००० न मोकल्या होय तो तेमने याद देजो। ए आवे तो एज मोकली देजो। ने बीजा ३००० उमेरजो ने बीजा मासमाथी कापजो।

बापुना आशीर्वाद

: ६३ :

आश्रम, साबरमती,
श्रावण सुद २, मंगल
(१०–८–१९२६)

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। घनश्यामदासनो पण मळ्यो। तमारो तार पण मळ्यो हतो। सीकर गया ते ठीक थयुं। हवे त्यांथी अहीं आववानो विचार कर्यो छे ए कायमज राखजो। तमारी तबियत पण सारी नथी एम घनश्यामदास लखे छे। ए वांची हुं भडक्यो छुं।

बीजुं मळवाथी।

बापुना आशीर्वाद

: ६४ :

SABARMATI,
20-9-26

JAMNALALJI BAJAJ,
SHREE, BOMBAY

Thank God. Anxiously awaiting particulars.

—Bapu

: ६५ :

SABARMATI,
16-10-26

SHREE,
BOMBAY

Kamala has no typhoid simple malaria. Getting better. No anxiety.

—Bapu

: ६६ :

आ. सु. ११।८२
(१७–१०–१९२६)

चि. जमनालाल,

गिरधारी कहे छे के हजु तमारी तबीयत सारी नथी थई। आ ठीक नथी। तमारे क्यांक पण जईने सारा थवुंज जोईए। तमारे एकांतमां जवुं जोईए। सारी हवा जोईए ने साथे योग्य साथी होवो जोईए। त्यांथी शारीरिक

तेमज मानसिक छे। कामनो बोजो बहु न उचकवो जोईए।

कमळानी कशी चिंता करवानुं कारण नथी। एने बीजाओने छे एवो ताव छे। ते तो वर्धा मुंबई बधे जवा तैयारज छे। पण ज्यां लगी तेनी तबीयत सारी नथी थई त्यांसुधी मोकलवानी इच्छा नथी ने जरूर पण नथी। हुं तेने मळतो रहुं छुं। चिंता तो कमळानी सासुने विषे रहे छे। केमके ते बहु गभराय छे पण ते सारां तो थईज जशे।

फरवानुं बरोबर राख्युं छे के? सवार ने सांज बन्ने वखते नीकळवुंज जोईए।

बापुना आशीर्वाद

: ६७ :

(साबरमती)
आ. मु. १२।८२
(१८-१०-१९२६)

चि. जमनालाल,

मारो कालनो कागळ मळ्यो हशे। जो तमने वखत मळे तो प्रताप पंडितनी टेनरी जोई लेजो, ने तेने पूछजो के ते पोतानो माणस क्यारे मोकलशे?

कमळाने दा० रजबअलीये खूब तपासी छे। कंई चितानुं कारण नथी। तेनीज दवा आपवानुं राख्युं छे।

बापुना आशीर्वाद

: ६८ :

गुरुवार
(साबरमती पोस्ट की मुहर,
४-११-१९२६)

चि. जमनालाल,

पत्र मीला है। वैजनाथजीकी हुंडी भी मीली है। उनको उत्तर भेज दीया है। सोनीरामजी यहां है। उनकी तबीयत अच्छी नहि है। कमलाने अपना निश्चय आखरमें बदल दीया और मेरे साथ ही वर्धा आनेका निश्चय कीया। मैं तो राजी हुआ। तबीयत तो अब अच्छी है। मैं एक दिनके लीये मुंबई गया था। सर गंगाराम, कामठ, गंगुली, सर चुनीलाल के साथ बातें हुइ। परिणाम जो हो सो।

बापुके आशीर्वाद

: ६९ :

का. सु. ३।८३
(८-११-१९२६)

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो छे। इलेक्शन बाबत हुं तो भूलीज गएलो। तमने जेम ठीक लागे तेम करवामां कंई अडचण नथी। माराथी तो एमां कशो भाग नज लेवाय तेथी में बधाने नाज लखी छे। तमारे घणे ठेकाणे फरवा जवुं पडे ए तो हुं पसंद न करुं। तेमां तमारी तबीयतने धक्को पहोंचे।

बानी तबीयत तो तद्दन सारी थई गई छे। एटले चिंतानुं कारण नथी। मारा आववाने वखते शुं थाय छे ते जोउं छुं। उमेदवार तो घणा हशे। लक्ष्मीदासने खास हवाफेर अर्थे साथे लाववा इच्छुं छुं।

बापुना आशीर्वाद

: ७० :

सोमवार
(१५-११-१९२६)

चि. जमनालाल,

तमारा कागळ मळ्या करे छे।

कमलानी तबीयत अने स्थिति बन्ने हाल तो ठीक छे।

चर्खा संघनी सभाने सारु खास आववानी कशी जरूर नथी।

पण त्यां आराम मळे तो सारुं। न मळे तो कोई बीजी जग्याये भागवुं जोईए।

तारो वांची गयो। जे जवाबो आप्या ते बधा मने तो बरोबर लाग्या।

भणसाळीना ४० उपवास आजे पूरा थशे। काले सवारे उपवास खोलशे। शक्ति घणीज सरस रही छे। कोईनी पासेथी सेवा जेवुं लीधुं नथी।

बीजी डीसेंबरे अहिंथी नीकळीश एवी उमेद छे। कोण कोण साथे हशे ए हजु निश्चय नथी थयो।

देवदास मथुरादासने सारु पंचगनी गयो छे। प्यारेलालने तेनी बहेनने सारु पंजाब जवुं पड्युं।

सोनीरामजीने ओपरेशननी जरूर हती अने रंगुन शिवाय बीजे ओपरेशन कराववा तेनां माताजी वि. तैयार न हता।

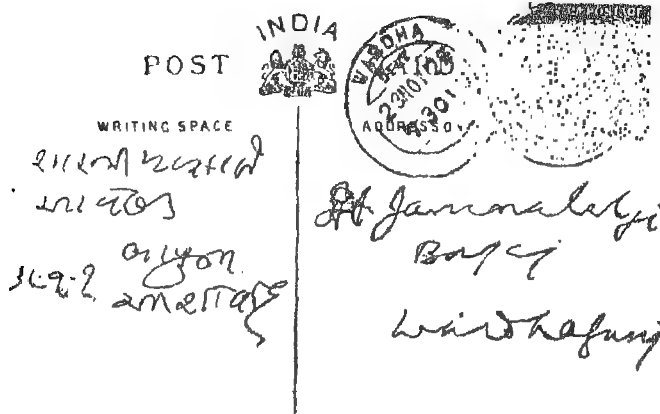
चंपाबहेन अहिंज छे। हजु कंई जवाबदारी सोंपी नथी।

बापुना आशीर्वाद

: ७१ :

अ

[illegible]



(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

(साबरमती)
फा. व. १
(२१–११–१९२६)

चि. जमनालाल,

तमारो पत्र मळ्यो। तमे दीर्घायु थाओ अने तमारी पवित्रतामां वृद्धि थाओ। आ जगत्मां दूषण विना तो कोईज नथी। आपणे तो तेने दूर करवानेज मथी शकीयें। ते प्रयत्न तमे करी रह्या छो। प्रयत्नशीलने दुर्गति नथी एवो भगवाननो कोल छे।

हवे तो ४ थीए मळशुं। टाप्टीवेलीमां थईने आववानो विचार करी रह्यो छुं। शास्त्रीयार काले आवेछे।

बापुना आशीर्वाद

: ७२ :

मौनवार,
पो. सु. १४
(१६–१–१९२७)

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो छे। गोंदीया अने अमरावतीना भंडार बाबत तमने तार आप्यो छे। मारे गोंदीया आववानुं होय तो त्यां आवी शकीश। ता. ३१ मीनी राते पटना छोडवानुं छे। पहेलीये मुंबई मेल मुगलसराईमां मळे छे। तेज दहाडे जबलपुर......पहोंचवानुं थाय छे। एटले बीजीये गोंदीया पहोंचातुं हशे। बीजीये सवारे भुसावळ तो मळेज छे।

हवे मणीलालनुं। में ए बाबत किशोरलालने कागळ लख्यो छे ते तमने वंचाववानुं लख्युं छे। मारी तात्कालिक सूचना ए छे के मुशीलाने नाम आप्या वगर गोमती अथवा विजयालक्ष्मी पूछे के तेनो परणवानो विचार छे के नहिं। किशोरलालना कागळ उपरथी जोउं छुं के कोई बहेन हजु परणवा तैयार होय एमज लागतुं नथी। जो एमज होय तो आपणे तेने केम ललचावीये ? जो कोई तैयार होय तो कदाच सुशीला होय एम किशोरलाल माने छे। तेथीज विवाह विषेनी तेनी इच्छा जाणी लीधा पछी आगळ वधाय एम लागे छे। दरम्यान हुं ते तरफ तो आवीशज। त्यारे वळी वधारे सूज पडशे।

अहिं तीव्र वेगे मुसाफरी चाली रही छे।......ठीक थाय छे। वधारे प्रबंध......थाय। आजे राजेंद्रबाबुना गाममां छीये।

जो के जानकीवहेनने मसा पाछा हळवा थया छे तो पण तेने देखाडी दाक्तर कहे तेम करवुं एज उचित लागे छे। दाक्तरने देखाडवामां विलंब न करो एम इच्छुं छुं।

विनोबानी तबीयत सारी हशे। शीवाजीनी तबीयतना खबर पण जाणवा इच्छुं छुं।

बापुना आशीर्वाद

: ७३ :

CALCUTTA,
1-2-27

JAMNALAL BAJAJ,
WARDHA

Only those necessary will remain Gondia others Wardha.

— *Gandhi*

: ७४ :

अ

अंबोली,
सावंतवाडी पासे, कोंकण,
सोमवार
(एप्रिल १९२७)

चि. जानकीबहेन,

तमारी पासेथी देवदासने नीकळवुं पडचुं ए मने गम्युं नथी पण तेनाथी न रहेवाय ए हुं समजी शक्यो। हवे कदाच थोडा दीवसमां त्यां आवशे।

तमारी तबीयत केवी रहे छे? त्यां कंई शक्ति आवे छे? कंई तकलीफ पडे छे?

चि. कमळानो अभ्यास कंई चाले छे? तमे न लखतां मने लांबो कागळ कमळा पासे लखावजो।

मारी तबीयतनी चिंता होय नहि। मने हमणा तो ठीक रहे छे। पण घरडा तो मरण किनारेज बेठां होय ना? एटले कंई ने कंई बहाने तेणे पुराणा मंदीर तो छोडवांज जोईए ने मरजी होय तो नवा मंदीरमां वसे ने बंदीखानु छोडवुंज होय तो स्वतंत्र रहीने वायुमांज वास करे। पण घणा काळ सुधी केदमां रहेलाने जेम केदखानुं गमे छे ते आपणुं पण छे। देहाध्यासने लीधे देह छोडवो नथी गमतो। मने गमे छे के नहि ए तो हुं नथी जाणतो। मारी बुद्धिने तो एमां कशुं गमवा जेवुंज जोवामां नथी आवतुं। पण आवरण आगळ बुद्धि बिचारी रांकडी थई जाय छे। एटले खरी खबर तो प्रयाण-काळे पडशे।

तमारी पासे हाल कोण छे?

બાપુના આશીર્વાદ

: ७५ :

सोमवार

चि. जमनालाल,

आ साथे राजेन्द्रबाबुनो कागळ छे। में तो तेने लख्युं छे के पेलो केस लेवो होय तो भले लेय। पण वैजनाथजीने एकवार हा लख्या पछी हवे ते खेंचायज नहि। मने आ कागळथी दुःख थयुं छे।

બાપુના આશીર્વાદ

: ७६ :

(१९२७) ?

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो छे। भाई घनश्यामदासना बन्ने कागळ पाछा मोकलुं छुं। तेना वचन उपर मने विश्वास छे एटले ते पुनर्लग्न करे एवो भय नथी।

तमे बेलगाम २५–२६ हाजरी भरो ने तेज रीते आश्रममां ११ मीये हाजरी भरो ए इच्छुं छुं। बन्ने ठेकाणे घणां कामो छे। आश्रममां ९ थी १३ सुधी रही शकाय तो रहेवा जेवुं छे। पछी घनश्यामदास गुरुकुल वेळा रहेवा मागे छे ते वखते पण रहेवुं होय तो रहो। वधारे तमारां बीजां कामोनी सगवड उपर आधार राखे छे।

कमळा शुं करे छे? तेने विषे मने चिंता थाय छे। आनो अर्थ ए नथी के तमे चिंता करता थई जाओ। पण तेना भणवानो कंईक प्रबंध थाय तो कदाच ते ठेकाणे पडे। भले इंग्रेजी पेटभरीने शीखे।

बापुना आशीर्वाद

: ७७ :

गुरुवार
(१०–२–१९२७)

चि. जमनालाल,

तुलसी महेरजी कहे छे के तेना रुने सारु मारो अभिप्राय हुं तमने लखुं ते प्रमाणे तमे करवा धारो छो। हुं स्टेशने जाउं छुं एटले आटलुंज लखुं छुं।

मारो अभिप्राय एवो छे के घाटाना जे पैसा आवे ते चर्खा संघमांथी दईये अथवा तो आश्रममांथी। जो तमने योग्य लागे के चर्खा संघमांथी दई काउंसीलनी सम्मति पाछळथी लेवी तो तेम करवुं। नहिं तो आश्रमने खाते मांडी रु अपावी देजो।

तेनी पासे ३०० रूपीया छे। ते एक रेलनो डब्बो भराय एटलुं रु बोरामां पेक करेलुं मागे छे। तेटलुं जो तेमां ८०० रूपीया करतां वधारे खर्च न थाय तो अपावी देशो। रू. ३०० जुदा गणवा।

जो ओछुं रु मोकलवाथी रेल किरायामां बचे तो ओछुं मोकलवुं दुरस्त समजुं छुं। तुलसी महेरजी ५० बंगाली मण मागे छे केम ते माने छे के ५० मणनुं के २५ मणनुं रकसोल सुधीनुं भाडुं एकज पडशे। जो एमज होय तो ५० मण देवुं एज योग्य लागे छे। आमां हवे कंई लखवानुं रही जतुं होय तो जेम ठीक लागे तेम करजो। तमे धारो ते मारो अभिप्राय समजी लेजो।

मुंबई जाओ त्यारे मारो जे सामान पुस्तको कपडां वि. छे ते लेता जजो। जईने दाक्तरनी सलाह पडे तो ओपरेशन तुरत करावी नाखजो।

बापुना आशीर्वाद

: ७८ :

बुधवार
(फरवरी १९२७)

चि. जमनालाल,

तमारुं पत्तुं मळ्युं छे। हुं मुंबई ४ थीये कोई वखते अथवा ५ मीये सवारे पहोंचीश। दास्ताने ४ थी पुनाने सारु मागे छे। जयसुखलाल महेताये थोडा कलाक सांताक्रुझने सारु माग्या छे। जो तें ५ मीनी सवारथी संतोष माने तो पुनाने ४ थीनी सांज दई तेज राते नीकळी ५ मीये मुंबई आवी त्यांथी अकोला जवा नीकळीश।

चि. गोमती त्यां आवी गएल छे एटले हवे तेने अने किशोरलालने पाछुं अकोला आववापणुं नथी रहेतुं। नाथ त्यां होय तो जाणी लेजो के ते विवाह विधि[1] न करे? तेने हाथेथी विधि थाय ने तेने तेमां कंई अडचण न होय तो मने ते गमशे।

जानकीबहेनने शस्त्रक्रिया थई होय अथवा बीजा कारणथी पण तमे न आवी शको तो कशी हरकत नथी एम हुं मानुं छुं।

अहिंथी आजे रातेज संगमनेर जवानुं छे।

बापुना आशीर्वाद

१. श्री. मणिलाल गांधी व श्री. सुशीला मश्रुवालाका विवाह १९२७ में हुआ था। इसमें उसीका उल्लेख है।

: ७९ :

शनीवार
(फरवरी १९२७)

चि. जानकीबहेन,

तमे शस्त्रक्रिया[१] घणीज हिम्मतथी करावी एथी मने आश्चर्य नथी थयुं। जो तमे हारी जात तो आश्चर्य थात। तमारामां में हमेशां हिम्मतज भाळी छे। ते सदाय टको। जलदी साजा थई जजो ने पछी नियमो नुं खूब पालन करी मांदा पडताज नहिं। मारे घणी शरीरे ने मने मजबूत बहेनोनुं काम छे।

बापुना आशीर्वाद

: ८० :

शनीवार
(फरवरी १९२७)

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो छे। लालाजीनी मागणीनो स्वीकार करवानी तमारी इच्छाने रोकवानुं मारी पासे कशुं कारण न हतुं तेथी तार नथी कर्यो।

जानकीबहेनना खबर मने हमणा नित्य एक पत्ताथी मळे एम इच्छुं छुं।

सतीशबाबुनो दीकरो अनील गुजरी गयो। ते गिरिडि छे। तेनुं ठेकाणुं Home Villa, Giridih छे। पण खादी प्रतिष्ठानमांज लखो ए बधारे सहीसलामत होय। बन्नेनी उपर आघात सखत पहोंच्यो छे एवो तार छे। में आश्वासननो लांबो तार मोकल्यो छे।

मुंबई हुं ५मी तारीखे पहोंचीश एम हवे तो निश्चय थयुं।

बापुना आशीर्वाद

१. श्री. जानकीदेवीका मस्सोंका ऑपरेशन ११-२-२७ को हुआ था।

: ८१ :

TRICHINOPOLY,
20-?-?

JAMNALAL SETH,
CARE RAMNARAYAN,
MANGALDAS RD., POONA

Tell Miraben if still there not be hasty. Am perfectly well. Gods voice often indistinguishable from echoes of our fear. In this rapid marching in heat her presence in her delicate health hindrance. If she wants come despite my warning she is welcome.

—*Bapu*

: ८२ :

NANDI, MSR,
5-5-27

SHREE,
BOMBAY

Jivrambhai here. He wishes consult you.

—*Mahadev*

: ८३ :

BERHAMPUR,
5-12-27

JAMNALALJI BAJAJ,
ASHRAM,
SABARMATI

Mohanlal did meet. Sent him home before wires from you Jayadayalji.

—*Bapu*

: ८४ :

SABARMATI,
3-3-28

JAMNALAL BAJAJ,
WARDHA

May go Delhi if necessary. Health excellent. Began taking milk from yesterday for moral reasons.

—*Bapu*

: ८५ :

BARDOLI,
6-8-28

JAMNALALJI,
CARE PRATAP,
CAWNPORE

Practically finished satisfactory. Am staying here.

—*Bapu*

: ८६ :

श्रीहरि

वर्धा,
पौह वदी १३।८५,
ता. ८-१-२९

पूज्य श्री बापूजी,

हम सब लोग कल शामको यहां पहुंच गये। चि. कमलको डा. कर्नल चोपडाने जो रिपोर्ट दी है उसमें मलेरिया और Chronic dysentery बतलाई है। उनकी इच्छा इन्जेक्शन देकर इलाज करनेकी थी। आपने इन्जेक्शनके लिये मनाई की थी। अब एक इच्छा तो यह होती है कि उसका इलाज यहां करा लिया जावे; दूसरे आपके बताये मुताबिक उसे मद्रासकी ओर ले जाया जाय। खाली डर इस बातका है कि अगर वहां उसे ज्वर वगैरह हो गया तो थोड़ी चिंता रहेगी; दूसरोंको कष्ट होगा।

काँग्रेसकी वर्किंग कमेटीने जो प्रस्ताव पास किए वे आपके पास आवेंगे ही। दारू-निषेधकी कमेटी श्री राजगोपालाचारी व जैरामदासकी बनाई गई है।

अस्पृश्यता निवारणमें श्री राजगोपालाचारी, राजेन्द्रबाबू व मेरा नाम रक्खा है।

विदेशी कपड़ेके बहिष्कारका भार आपके ऊपर छोड़ा गया है।

काँग्रेस संगठनमें श्री पंडितजी, जवाहरलाल व मेरा नाम रक्खा गया है।

स्वयंसेवक दल:—श्री जवाहरलाल।

राजपूताना काँग्रेस कमेटी रद्द (खारिज) कर दी गई है। फिरसे चुनाव—श्री मोतीलालजी जिसे मुकर्रर करें उसकी निगरानीमें—करनेका निश्चय किया है।

वर्किग ट्रेज़रर—वर्किंग कमेटीने कॉंग्रेसका वर्किग ट्रेज़रर मुझे बनाया है। किस परिस्थितिमें मुझे यह काम स्वीकार करना पड़ा उसका हाल उचित समझें तो रेवाशंकरभाईको लिख देवें जिससे उनके मनमें कोई गैरसमझ न हो।

चर्खा संघकी यू. पी. की एजन्सीके बारेमें बात करनेके लिये भाई जवाहरलालसे कलकत्तेमें मैं मिला। अभी तो एजन्टकी जगह उनका नाम रहे और इस कामके लिये जहांतक हो सकेगा, वे सहायता भी देते रहेंगे। Organiser श्री कृपलानीजी रहें। इस आशयका एक तार भाई शंकरलालजी को दे दिया था। आज खुलासेवार पत्र भी लिख दिया है। एजन्सी संबंधी बातों के साथ Independence League के संबंधकी भी बातें चल पड़ीं। उनकी बातोंसे मालूम पड़ता था कि अपनी पार्टीसे वे थोड़े असन्तुष्ट हैं। उनके साथ किस-किस तरहके आदमी हैं और किन-किन कारणोंसे वे साथ दे रहे हैं यह सब परिस्थिति थोड़ेमें मैंने उनको कही थी। इसपर उन्होंने कहा कि वे इलाहाबाद जाकर इस बारेमें और अधिक विचार करेंगे।

श्री घनश्यामदासजीसे भी मेरी बातें हुईं थीं। उन्होंने एक लाख रुपये देनेका जो वादा किया था उसके संबंधमें उनका कहना है कि यह रकम एक साथ देनेमें उन्हें सुभीता नहीं रहेगा। ३०,००० जनवरीमें, २०,००० फरवरीमें, २५,००० मार्चमें और २५,००० अप्रेलमें, इस तरहसे वे रकम भेजेंगे। इनमेंसे जनवरीके ३०,००० तो मैं अपने साथ लेता आया हूँ। यह रकम गांधी सेवा संघके खातेमें जमा कर ली जायगी और जैसा कि निश्चय हो चुका है, इसमेंसे १५,००० तो चर्खा संघकी मारफत श्री गांधी आश्रम मेरठको दे दिये जावेंगे और बाकी १५,००० राजपूतानेमें खादी कार्यके लिये earmark रहेंगे। फरवरीके २०,००० भी गांधी सेवा संघके खातेमें जमा कर लिये जावेंगे। बाकी ५०,००० की रकम या तो गांधी सेवा संघके खाते जमा करके आपकी इच्छानुसार काममें लाई जाय या सत्याग्रह आश्रमके खाते जमा की जाय। जैसा आप लिखेंगे वैसी व्यवस्था कर दी जावेगी।

मुझे ता. २० को मद्रास पहुंचना है। बीचमें एक बार बंबई भी जाना है। मेरा इरादा १५ या १६ के करीब यहांसे निकलकर २—३ रोज बंबई रहकर २० को मद्रास पहुंच जानेका है।

जमनालाल बजाज

(नकल परसे लिया गया)

: ८७ :

आश्रम, साबरमती,
ता. २-६-२९

चि. जमनालाल,

रुखीने विषे में संतोकनी साथे वात करी लीधी छे। गुजराती गणत्री प्रमाणे वर्ष दीवालीए पूरुं थाय एटले जो आ वर्षे विवाह करवाना होय तो अषाढ महिने करवा जोईए केमके पछीथी लग्न होयज नहिं एम संतोक कहे छे। अषाढ महिनामां करवां एतो बहु वहेलुं गणाय। वळी संतोकनो एटलो आग्रह छे के बनारसी विवाह पहेलांज गुजराती सीखीले। एटले ए कहे छे के जो आवते वर्षे विवाह होय तो आवता जेठ मासमां विवाह करवा। एटले ए एक वर्षनी वात थई। रुखी एटला दरमियानमां वधारे अभ्यास करीले ए पण संतोकनो लोभ तो खरोज। अने ए सारो लोभ छे। एटले मने लागे छे के हवे आ वातने आपणे वधारे न छेडीए। आवता वर्षे लग्न छे के नहिं ए जाणी लेवानी हुं तजवीज करुं छुं। आजे तपास करतां मालम पडे छे के आवता वर्षे विवाह छे।

बापुना आशीर्वाद

नक़ल परसे लिया गया)

: ८८ :

MUSSOORIE,
21-10-29

JAMNALAL BAJAJ,
395, KALBADEVI ROAD,
BOMBAY

Doctor Rajabali's scheme approved. Hope you well.

—*Bapu*

: ८९ :

२–५–३०

चि. जानकीबहेन,

मदालसानो कागळ आजे मळ्यो छे। तमारो कागळ मळ्यानुं मने याद नथी। मने रोष शाने चढे? त्यां तमे कामे वळगी गया लागो छो एटले त्यां पेरीनबहेननी साथे काम करो ए मने गमे छे।

बापुना आशीर्वाद

: ९० :
अ

य. मं.[1]
२७–७–३०

चि. जानकीबहेन,

तमारो कागळ मळ्यो। हवे उत्साह कां न होय? हवे तो भाषणो करो छो, छापे चड्यां छो? छापामां वखतो वखत जानकीबाई बजाजनुं नाम जोउं छुं ते उपरथी एमज थाय ना के जमनालाल ने अमे बधा भले जेलमां गया ने रहीये? मने तो विश्वास हतोज के तमारा देखाता अविश्वासनी पाछळ पूरतो आत्मविश्वास हतो। ईश्वर तेमां वृद्धि करो। कमलनयने उतावळ नथी करवानी। खादी उत्पन्नमां हमणा भले रहे। टुकड़ी[2] बहार नीकळे एटले वालजीभाईने लखे।

बापुना आशीर्वाद

: ९१ :
अ

२१–९–३०

चि. जानकीबहेन,

तमे बहु लुच्चा लागो छो। जेम तेम करीने कागळ लखवामांथी छटकी जवुं? ने वळी भाषण करतां करतां हाकेम 'डिक्टेटर' बनशो तो तो मारा जेवाना वारज वाग्या ना? जमनालाले पोतानो धंधो नासिकमां ठीक जमाव्यो लागे छे। हुं धारतोज हतो। एना पंजामांथी कोई छटकीज नथी शकतुं। मदू पहेलां तो कागळ लखती हती हवे तमारा जेवीज आळसु थई गई छे। एमज आळसु रहेशे तो तमारी पासेथी खेंची लेवानो हुकम काढवो पडशे। हवे शरीर केवुं छे? ओम तोफान करे छे के?

बापुना आशीर्वाद

(नक़ल परसे लिया गया)

1. यरवडा मंदिर याने यरवडा सेंट्रल जेल, पूना।
2. धारासना नमक डीपो पर धावा करने वालोंकी टुकड़ी।

: ९२ :

कलकत्ता,
२५-१२-३०

पूज्य श्री बापूजी,

बिहारमें काम अच्छा है। चंपारणके कुछ भागोंमें करबंदीमें सहन कर रहे हैं। अब कलकत्ते रहके कुछ बंगालमें जाते-आते रहना, मारवाड़ियोंमें प्रवेश, खद्दर, पड़दा वहिष्कार आदिका काम करना। कृष्णदासजी, आपके सेक्रेटरी, कहते थे दममें दम रहेगा काम करना है, कर सके तो। कहते थे बापूजीको लिखना ठीक है कि नहीं। मैंने कहा—अपनी भाषामें लिखते हैं। यहांके व्यापारी अच्छी परीक्षा ले रहे हैं। नासिकमें तबीयत अच्छी है, मन लग रहा है। कमला, मदू बिहारमें मेरे साथ थीं—३० दिन ४० गांव। घनश्यामदासजी मुसाफरी छोड़, नियमित कातते हैं। इधर आजावे तो बहुत हो सके। मेरी तबीयत संभालती हूं।

जानकी का प्रणाम

: ९३ :

१८-१-३१

चि. जानकीबहेन,

तमे घणे दहाडे कागळ लख्यो एटले कृपा करी एमज कहेवुं जोईए ना ? कलकत्तानुं काम मुश्केल छे पण तमारे माटे मुश्केल नथी। घनश्यामदासजी ठीक फाळो कामनो आपी रह्या छे।

बापुना आशीर्वाद

(नक़ल परसे लिया गया)

: ९४ :

बोरसद,
८-५-३१

चि. जमनालाल,

कर्नाटकके भाई बहनोंसे कहो कि उन्होंने युद्धमें तो अच्छा हिस्सा लिया ही है, ऐसे ही अब रचनात्मक कार्यमें भी करें। खद्दरमें बहुत करनेका बाकी है, विदेशी वस्त्रका बहिष्कार खद्दर हीके लिये है। यदि बहिष्कारसे गरीबोंकी सेवा हेतु नहीं है तो कमसे कम मैं तो उसमें ऐसा तन्मय न बन सकता, जैसा आज हूं।

कर्नाटक एक अलग सूबा बनना चाहिये, इस बारेमें कुछ कर्नाटकी भाई बहुत फिकर करते हैं। वे क्यों फिकर करते हैं? महासभाने तो कानडी भाषा बोलने वालोंका एक सूबा बना ही रक्खा है और पूर्ण स्वराज्यमें ऐसा ही होगा।

लिंगायत इ. सब इकठ्ठे हुए हैं इसलिये धन्यवाद, और ऐसा ही होना चाहिये।

(नकल परसे लिया गया) मोहनदास

: ९५ :
अ

बोरसद,
१८–६–१९३१

चि. जमनालाल,

शा. मंगलदास हरिलाल गांधी ठे. फणसवाडी २ जी गली, दादीशेठ अगीयारी लेन, हरिलाल माणेकलाल गांधीनो माळो। आ भाई शा. हरिलाल माणेकलाल गांधीना दीकरा। भाई हरिलालने सुरजबहेनना धर्मना बापने नामे ओळखाव्या। एमनी पासे सुरजबहेनना बधां नाणां छे। एमनी स्थिति हाल बहु सारी न गणाय। एक वेळा बहु सारी हती एम सुरजबहेन कहे छे। में भाई हरिलालने लख्युं के विधवा बाईना पैसा कोई खानगी पेढीमां नज राखवा घटे। तेथी तेमणे इंडिया बँकमां भरी तेनी पहोंच सुरज-बहेनना नामनी मोकली देवी। तेनो जवाब साथे छे। संभव छे के पैसा मुद्दल जोखममां न होय। पण हुं चितामां पड्यो छुं। भाई मंगळदासने तमारी पासे तेडावजो अथवा मळजो ने पूछजो। बधी हकीकत जाणी लेजो ने पैसा बँकमां मुकावी शकाय तो मुकावी देजो। सुरजबहेनना नामे मुकाववाना छे। एमने त्यां सुरजबहेनना दागीना वि. पण छे तेनो कबजो पण लई लेजो। अथवा तेनी पहोंचो सेइफ डेपोझिटनी छे ते लई लेजो। अब घडी तो तमने सुरजबहेनना कागळनी जरूर नहिं पडे। पण जरूर जणाय तो मने तार करजो एटले मोकली दईश। पण भाई मंगळदासने मळवानुं तो तुरत करजो।

पेला इंग्रेजी भाईओने मळवा त्यां २४ मीए आववानुं छे। वल्लभभाई साथे हतो।

बापुना आशीर्वाद

: ९६ :

अ

बोरसद,

२०–६–३१

चि. जमनालाल,

तमे भगतसींघ बाबत मोकलेलो ठराव वांची गयो। देवे पण तमारा कहेवाथी मोकल्यो हतो। मने ए ठराव मुद्दल पसंद नथी पडचो। 'आज' शब्दथी ए ठरावनी किम्मत बदलाई गई। 'आज' उमेरवाथी आज पण सभाने अहिंसामां विश्वास नथी एवो ध्वनि नीकळी शके। जे अहिंसाने शाश्वत धर्म न माने तेने पण 'आज' उमेरवानी आवश्यकता न होय।

त्यां २४ मीए नहि पण २५ मीए गुरुवारे आववानुं छे। हुं तो गुजरात मेलथी आवीश। ते वखते आ बाबत वधारे चर्चवी होय तो चर्चजो।

आ साथे चुंडे महाराज विषे कागळ छे ते वांचजो ने कंई तपास करवा जेवुं होय तो करजो।

राजेन्द्रबाबुए हमणा बिहार जवानो विचार छोडी देवो जोईए। राधिका त्यां आवी छे?

બાપુના આશીર્વાદ

: ९७ :

अ

मुंबई,

ता. ९–८–१९३१

व्हाली बहेन जानकीबहेन,

में सांभळचुं छे के हजु तमारी तबीयत सारी नथी। हजु तो तमारे घणुं काम करवानुं छे एटले हवे जल्दी सारां थई जाव। अने तबीयतने अंगे फ्रुट विगेरे लेवुं पडे ते पण लेवुं जोईए। आ कंई मोजशोखने खातर नथी खावानुं। जो तमारी तबीयत नहि सुधारो तो मने दिलगीरी थशे। जोईता उपचारो करीने हवे जल्दी सारां थई जाव।

बेन कमळा परम दिवसे अहिं आवी हती। [illegible] साथे आवी हती। एनी तबीयत सारी छे। अमारुं [illegible] कशुंए नक्की नथी। बधां मझामां छे।

બાપુના આશીર્વાદ

: ९८ :

ता. १०-८-३१

पूज्य श्री बापूजी,

आपके पास जिन तीन बहनोंकी दयाजनक हालतकी खबर आई है, यानी जो Absconder हैं, उनके बारेमें बातचीत हुई वह मैं प्रश्नोत्तरीके रूपमें यहां लिखता हूं । अगर यह बराबर न हो तो आप सुधार दें।

प्रश्न १ :-- क्या आप इन तीनों बहनोंको या तीनोंमेंसे जो आना चाहे उसको आपके साबरमती आश्रममें रखनेको तयार हैं ?

उत्तर :-- हां, खुशीके साथ मैं उन्हें आश्रममें रखनेको तयार हूं। परंतु आश्रममें आनेके पहिले उन बहनोंको मेरा विचार बराबर समझ लेना चाहिए।

प्रश्न २ :--आपका क्या विचार है ?

उत्तर :-- मेरा पहिला यह कर्तव्य होगा कि इन बहनोंके आश्रममें आनेके साथ ही मैं सरकारको इत्तला दूं और उसमें जो बहनें आवेंगी उनका नाम, परिचय लिख भेजूं।

प्रश्न ३ :--अगर आप सरकारको इत्तला देंगे तो वह उन्हें उसी वख्त गिरफ्तार कर उनपर मुकदमा चालू कर देगी ।

उत्तर :-- हां, यह भी हो सकता है। बहनोंको इस बातके लिए--जोखमके लिए तयार होकर ही आश्रममें आना चाहिए ।

प्रश्न ४ :--तब आश्रममें आनेसे उन बहनोंको क्या लाभ हो सकता है ?

उत्तर :-- संभव है शायद सरकार मेरे लिखनेपर ये जहांतक आश्रममें रहेंगी और अपना भविष्यका व्यवहार आश्रम जीवनके साथ मिलाने की कोशिश रखेंगी, तुरन्त उनपर कारवाई न भी करे।

प्रश्न ५ :--क्या सरकार उनसे जो-जो मामले बने हैं उनकी बातें जाननेको मजबूर नहीं करेगी ?

उत्तर :-- सरकार जरूर जानना चाहेगी, परंतु मैं सरकारसे भी कहूँगा और बहनोंसे भी कि वह दूसरे किसीका नाम न बताकर अपने हाथसे जो गुनाह या भूल हुई हो वही कबूल करें।

प्रश्न ६ :--याने बहनें सब प्रकारकी जोखम उठानेकी तयारी करके आवेंगी तो ठीक रहेगा ।

उत्तर :- हां, अगर बहनें सब प्रकारकी जोखम उठानेकी तयारी करके ही आवेंगी तो ठीक रहेगा।

यह ठीक है । (जमनालाल बजाज)

मोहनदास गांधी

१०-८-३१

: ९९ :
अ

अमदावाद,
पो. बो. २६,
२२–८–३१

चि. जमनालाल,

तमने कागळ लखाववानो समय रहेतो नथी। हजी जमणा हाथने तकलीफ नथी आपतो एटले लखवानुं थोडुं थाय छे। डाबे हाथे लखी शकाय एटलुं लखुं छुं। गई काले कागळ मोकल्या छे ते मळ्या हशे।[1] अस्पृश्यता विषे कोंग्रेसे, कांग्रेसवाळाओए, अने तेओनी मारफते अथवा प्रेरणाथी जेटला पैसा खर्चाया होय तेनो आंकडो काढवानी बहु आवश्यकता छे। केटलुंक तो मने मोढेज छे। तमने पण होवुं जोईए। आ बोजो तमारी उपर नाखवो छे। ज्यांथी मंगाववा जोईए त्यांथी मंगावीने आंकडा भेगा करजो। तेमां पछी कंई रही गयुं हशे तो हुं याद करी लईश। में बीस लाखनी गणत्री करी छे। ए मारी धारणा प्रमाणे तो ओछी छे, वधारे नथी। तिलक फंडमां केटलाक तो आ बाबत ईअरमार्क हता। ए तो तिलक फंडनो आंकडो तमारी पासे छे तेमांथीज मळी रहेशे।

आलमोडानी जमीन बाबत कंई थयुं के? न थयुं होय ने जल्दी थई शके एवुं होय तो करी लेवानी आवश्यकता जोउं छुं।

जानकीबहेन अने बालकृष्णने केम छे? छापाओमां घणी गेरसमजुती थई अने अनेक प्रकारनी वातो आववा लागी तेथी काले वाईसरॉय उपर तार कर्यो छे। एनो जवाब नथी फरी मळ्यो। ए तारनी नकल आ साथे मोकलुं छुं। पट्टणीजी काले आवे छे। कंई हशे तो जणावीश।

बापुना आशीर्वाद

: १०० :

अमदाबाद,
२२–८–३१

चि. जानकीबहेन,

मारी दया खाईनेज तमे कागळ नथी लख्यो ने मृदुने तथा ओमने लखवा नथी दीधो? मारे दया न जोईए, कागळ जोईए। हवे तबीयत सुधरी? खोराक शुं चाले छे?

बापुना आशीर्वाद

१. ता. २१–८–१९३१ का गांधीजीका श्री. सट्टरको लिखा हुआ पत्र खंड ३ में देखिये।

: १०१ :
अ

KINGSLEY HALL,
BOW, E. 3,
25th September, 1931

MY DEAR JAMNALALJI,

Things have not moved much since I wrote to you last, except for Bapu's second speech in the F. S. Committee which created a flutter both in the British circles and ours. Sadanand wired the speech almost entire and you must have read it already. If not, you will see it in "Young India" to which I am sending the full text. He has had full talks with the Ruling Chiefs and has made no secret of what he wants them to do. The speech had to be of a general nature and couched in the form of an appeal because it is Bapu's way. But we had frantic telegrams from some Native States friends. The other part containing a reference to the indirect form of election was not appreciated by our friends, but that there was nothing alarming or compromising in it may be seen from what Sastri said : "So he wants your wonderful Congress Constitution to serve as a pattern for the Indian Constitution ! "

Bapu has had a long talk with Irwin today, but I have not had a minute with him and am not likely to see him before I post this and leave for Manchester this evening. What with the F. S. Committee, where sitting and listening to the speeches is a weariness of the flesh, and with numerous engagements, Bapu remains here busier than ever and it is sometimes impossible to have even a minute with him. He is feeling very tired and would be thankful for a little bit of rest, but I do not know when it is coming. That it is coming soon I am certain, for he is feeling quite isolated and does not have any hope of getting support from any of the parties. For instance on the Rupee question and the statement of the Secretary of State in that behalf, he had to plough his solitary furrow. Sapru was there, Rangaswami

Iyengar was there, Jinnah was there, but everyone seemed to be convinced by the persuasive eloquence of Sir Samuel Hoare. What can one expect in these circumstances?

And then the Musalmans. He has had two most disappointing interviews with Shaukat Ali and the Aga Khan. The latter's insincerity was even patent to Shaukat Ali. Jinnah was better, but he thought Bapu would have no difficulty with his friends. He has no objection personally to Ansari, but how can we wait another fifteen days for his coming. And if you are going to concede all that the Musalmans want, why wait for Ansari? Let him come and ratify. As though Bapu did not want really to concede anything, but was making a scape-goat of Ansari! They do not really want Ansari, and Bapu is adamant that he will do nothing over the head of Ansari. He would try and persuade Dr. Ansari to accept the Muslim demands, but if they cannot have him here he will not accept the demands on his behalf. So there seems to be very little chance of success in this matter.

So far as the main question is concerned, they would try to break on the independence issue and make us look ashamed before the whole world, but Bapu is determined to have the safeguards discussed first and have independence discussed in terms of those safeguards.

He has had two meetings with the Labour M. P.'s and with the M. P.'s of the three parties, from the latter of which all the [illegible] Conservatives were absent. But there was a [illegible] at the end of the talk which created a good impression. Mr. Horrabin is arranging to take him to Scarborough for the Labour Party's Conference meeting there next week, and there is to be a reception at the National Labour Club. The Labour Members—many of whom have had interviews with Bapu—are most sympathetic; the common working man has genuine regard for him and is most friendly wherever he meets him, but the middle-class Britisher's mentality is still unaffected.

With love,

Yours,

Mahadev

: १०२ :
अ

88, KNIGHTSBRIDGE, S. W. 1,
13th November, 1931

MY DEAR JAMNALALJI,

Bapu has had his final talk with Sir Samuel Hoare who is now completely disillusioned about Bapu. He agreed that the provincial autonomy that Bapu was contemplating was never in his own mind, it was something synonymous with complete independence and it was unthinkable. "We must part as friends. You will keep me informed and as I shall always have the official version I should also like to have your version of events. But today we must agree to differ." It was after that that Bapu made that smashing speech in the Minorities Committee. Even Ramsay Macdonald looked quite small under those hammer blows and for once pocketed his pride and forgot his inclination to bluff and insult. It had such a thoroughly wholesome, and let us hope, a cleansing effect.

But the result? Well the result is that the fellow cannot now lay the blame at our door. Read the fine article in the *New Statesman*. The editor had a talk with Bapu for an hour some days ago and he has evidently profited by the talk.

General Smuts had an interview with Bapu. He was uncommonly nice, said that Bapu had made out his case so well that it would be [illegible]" he had to go away empty-handed. That [illegible] proved their right to govern themselves and nothing can now be allowed to stand in the way. He offered to help too. He saw the Prime Minister twice after this, came with some communal solution which appealed to him as a good *via media* and after getting Bapu's approval to it took it to the Prime Minister. There is nothing much in it and nothing is going to come out of it, but his gushing friendliness and offer to help came as an agreeable surprise.

Several friends are trying desperately hard to bring about something—among them Wedgwood Benn, Lothian, some Church dignitaries and others. Bapu sent a telegram to Irwin today to say that as the Conference seemed to be ambling to pieces he had decided to go, unless Irwin would advise otherwise. Within an hour came a reply to say that he was coming to see Bapu tomorrow.

(One paragraph deleted)

We hope to sail from Marseilles on the 27th or from Genoa on the 29th. I do hope you are not worried by the nightmare of the provincial autonomy stunt raised by the papers here to discredit Bapu. Bapu could never lend himself to anything of that kind and he has, to ease the nervousness of friends here, addressed a letter to the Prime Minister and given a long interview to the *News-Chronicle*.[1]

Yours sincerely,

(नकल परसे लिया गया) *Mahadev*

: १०३ :

अ

88, KNIGHTSBRIDGE, S.W.I,
13-11-31

मुरब्बी जमनालालजी,

राउन्ड टेबलना गपाटा रोजनां छापामां एटला बधा आवे छे अने राउन्ड टेबलनी बहारनी बापुजीनी प्रवृत्ति विषे हुं यं. इं. मां एटला विस्तारथी लखुं छुं के तमने जूदा कागळ नथी लख्या। केटलाक वल्लभभाईने अने जवाहरलालने लखेला कागळ तमने जोवाने मळ्या हशे एम मानी लीधुं छे। आजनुं बापुनुं जबरदस्त भाषण तो त्यांना छापामां आवी गयुं हशे। यं. इं. माटे आखुं मोकलुं छुं। हवे तो राउन्ड टेबलनी उत्तरक्रिया करवानी बाकी रही छे एम कहुं तो चाले।

बमनजी बापुने मळ्या हता। एनी पासे नीकळती रकम लगभग दोढेक लाख थवा जशे। ए हवे चरखा संघ अने देशनेत्रिका संघने आपवाने कबूल थया छे। एने तमे जरूर मळजो अने बन्ने संस्थानो खूब नातो करजो अने

१. महादेवभाई द्वारा भेजा गया परिपत्र।

वाकेफ करजो। एने एनी कमिटीमां आववानो लोभ छे। बापुए कह्युं के कमिटीमां आववाने लायकात जोईए ते लावो। चर्खा संघने माटे तो लायकात मेळववी एने माटे अशक्य छे, पण देशसेविका संघनी प्रवृत्तिमां एने चालक बनावी शकाय एम बापुने लागे छे। एमने मळीने बधी वातो करजो अने एनी रकमनुं ठीक करी लेजो।

पूज्य बापुनी तबीअत, अहींना अतिशय कामनो बोजो जोतां, असाधारण रीते सारी रही कहेवाय। ठंडी ठीक पडे छे पण सिमलाना करतां जराय वधारे नहीं। बधा कहे छे के बापुने पगले आ वखते इंग्लंडमां हिंदुस्ताननी हवा आवी छे!

बापुनो यूरोपमां मुसाफरी करवानो [१]

: १०४ :

लंडन,
१४-११-३१

प्रिय जमनालालजी,

आ भाईने[२] पूज्य बापुजीए आश्रममां लेवानुं ठराव्युं छे। एमने एक दिवस मुंबईमां रहेवुं पडे तो घेर राखजो अने आश्रममां जवाने माटे जे सूचना आपवी घटे ते आपजो। एने में पैसा तो आपेला छे।

महादेव देसाई

:१०५:

य. मं.,
२९-१-३२

चि. जानकीबहेन,

तमारी सामेज जोई शक्यो। एक शब्द पण बोलवानो समय न मळ्यो। भला हवे लखवानो वखत तो छेज। हवे तमे पण छुट हो त्यां लगी लखजो। कमलनयन कई जेलमां छे। तेना शा खबर छे? मदालसा, ओम कागळ लखे। तमारी तबीअत केवी रहे छे?

सरदार मारी साथे छे ए तो जाणोज छो। मजा करीये छीये। खावुं सुवुं फरवुं।

बापुना आशीर्वाद

१. श्री महादेवभाईका यह पत्र अधूरा इतना ही मिला है।
२. बहुत करके यह श्री. ब्यूटी (एक परदेशी भाई) के बारेमें लिखा गया है।

: १०६ :

(१९३२) ?

चि. जानकीबहेन,

तमारो कागळ पाछो नथी एम केम? गोमतीने मारो कागळ मळ्यो के नहि। जमनालाल तथा किशोरलालने केम रहे छे ए लखजो।[1]

बापुना आशीर्वाद

: १०७ :

यरवडा मंदिर,
मौनवार
(जनवरी-फ़रवरी, १९३२)

चि. जानकीबहेन,

केम? हिम्मतमां छो के? मदालसा केम छे? कमलनयननी चिंता न करतां। कशी चिंताज न करवी एटलुं तो विनोबानी पासेथी गीता सांभळीने शीख्या छो ना?

बापुना आशीर्वाद

(नक़ल परसे लिया गया)

: १०८ :

य. मं.,
२६-३-३२

चि. जमनालाल,

तमने अने बीजा साथी केदीओने लखवानी छुट आजे आवी छे। एटले मने उत्तर आपवानी छुट तमने मळवी जोईए।

तमारी तबीयत अने तमारा खोराकनी विगतवार खबर तुरत आपजो। अमे बधा कंईक चिंता भोगवीये छीए। बीजा साथी कोण छे केम छे? दा. सुमंत केम छे? दीवान मास्तरने मारी जेम दांत नथी एम सरदार कहे छे। तेनुं केम चाले छे? बीजा कोण छो ते तो खबर नथी। पन्नालाल छे तेना खबर गंगाबहेने आप्या।

बधा साथीओने अमारा वंदेमातरम। महादेव अहिं पहोंची गया छे ते तो तमे जाण्युंज हशे।

बापुना आशीर्वाद

१. यह जेलमें लिखा हुआ पत्र है।

: १०९ :

धुलिया मंदिर,
ता. ४–४–३२

पूज्य बापूजी,

आपका पत्र २६-३ का वीसापुरसे लौटकर मुझे यहां दो तारीख को मिला। मैं वीसापुरसे २४ तारीखको ट्रान्सफर होकर यहां आ गया। मैं तो वहीं रहना चाहता था; अधिकारियोंसे संबंध ठीक बंध रहा था।

मेरे कानका इलाज यहां ठीक चल रहा है। सुपरिन्टेंडेंट श्री कॉन्ट्रेक्टर खास ध्यान रखते हैं। अपने हाथसे दवा करते हैं। पहलेसे बहुत फायदा मालूम होता है। बंबईमें डा. मोदीको भी बताया था। उसने भी कहा था कि अंदरकी सूजन पहलेसे बहुत कम है। यहां भी डा. मोदीका ही इलाज जारी है। इस तरह नियमित इलाज तो शायद बाहर नहीं कर सकता। इसलिये इस बारेमें आप चिंता न करें।

भोजनमें प्रातःकाल कांजी और दोपहर और शामको साधारण 'सी' वर्गका खुराक लेता हूं। वह मुझे अनुकूल पड़ा है। जरूरत पड़ने-पर स्वास्थ्यके लिये खुराकमें मामूली सुविधा हो सकती है। परन्तु इसकी आवश्यकता नहीं पड़ेगी, ऐसा विश्वास है। 'सी' वर्गका अनुभव प्राप्त करनेकी बहुत दिनोंकी मेरी इच्छा इस बार सरकारने अपने आप पूरी की। इससे मुझे ठीक मानसिक शांति है। मैं ठीक उत्साहमें हूं और आपके आशीर्वादसे इस कसौटीमें सफलतापूर्वक उत्तीर्ण होऊंगा, ऐसी आशा है।

श्री जानकीदेवीका स्वास्थ्य बीचमें नागपुर जेलमें बिगड़ गया था। इससे कुछ चिंता रहती थी। परन्तु अब सुधरनेकी खबर मिली है। उनको 'ए' वर्ग दिया गया है। चि. कमलनयन 'सी' वर्गमें हरदोई जेलमें हैं। वजन कम होनेकी खबर मिली है। झाड़ू इ० निकालनेका काम उसने लिया है। मेरी बहन केसरबाई, गुलाबचंद और गुलाबचंद की भोजाई तथा अन्य लोगोंको भी जेलका अनुभव मिला है। मुझे बाहरकी कोई चिंता नहीं है। मैं तो वीसापुर भी रहनेको तैयार था, और वहां रहना पसंद भी करता। मैंने यह बात वहांके अधिकारियोंसे

भी की थी। परन्तु कानकी बीमारीको निमित्त बनाकर मुझे यहां भेज दिया गया है। मुझे वीसापुरकी जेलका दृश्य कॉंग्रेस केम्पकी याद दिलाता था—याने चारों ओर जेलकी दीवारोंकी जगह पानी, पहाड़ इत्यादि दिखाई देते थे। खान-पानकी व्यवस्था वहां ठीक है। गरमी और धूपमें कामकी बड़ी तकलीफ थी। अधिकारियोंसे इस बारेमें बातचीत हुई थी। इस बारेमें मेरी सूचना उन्होंने स्वीकार की थी। वहां होता तो आशा थी कि तकलीफें दूर करनेमें सफलता मिलती। कमसे कम दोपहरको धूपके वक्त अंदर चर्खा, तकली, पिंजण आदिका काम दिलानेकी आशा तो थी ही। अधिकारियोंसे जो बातचीत इस बारेमें हुई थी, वह आते समय मित्रोंको बता दी थी। संभव है कि कुछ फैसला हो गया हो।

वीसापुरमें मुझे आराम देनेके लिए और कानके इलाजका कारण बताकर बैरकमेंसे अस्पतालमें ले गए थे। परिणाममें सुधारका एक और क्षेत्र मुझे मिला। कई एक सुधार सुपरिन्टेंडेंटने मंजूर किये थे। आशा है अब वे अमलमें लाए गए होंगे। सुपरिन्टेंडेंट मि. क्विनको तो आप जानते ही हैं। डिप्टी जेलर मि. सेक्सटन पिछले साल नासिकमें थे। जेलर मि. एलिस पिछले साल रत्नागिरिमें थे। वीसापुर रहता तो वातावरण सुगम बनानेमें उसका सहकार हासिल करके अपनी कसौटी करता। परन्तु वह बात तो अब होने से रही। डा. सुमंतके बारेमें आपने पूछा है। उनको पीछेसे 'बी' क्लास मिला था, इसलिये वह नासिक भेजे गए थे। मुझे मिले थे। दूध इ. का खुराक उन्हें मिलता था। उनका स्वास्थ्य ठीक था। दीवान मास्तरसे मिलना जुलना होता था। गोकुलदास तलाटी, फूलचंद शाह, मामा फड़के भी वहीं थे। आश्रममेंसे गोडसे, पन्नालाल झवेरी, विट्ठल आदि थे। विद्यापीठसे त्रिकमलाल शाह और कई एक विद्यार्थी थे। वैसे ही दरबार साहबके दोनों पुत्र, ललितमोहन, रोहित, श्री. सरलादेवीके भाई आदि भी वहां थे। बंबईसे एस. के. पाटिल, ईश्वरभाई पटेल आदि थे। प्रायः सब आराममें हैं।

यहांपर विनोबा, प्यारेलाल, गोपालराव, और उनकी पत्नी शांताबहन, दास्ताने, मीर जफरुल्ला, द्वारिकानाथ हरकरे, गुलजारीलाल, खण्डुभाई, राजाराव, पुरुषोत्तमदास त्रिकमदास, ककलभाई, वर्धा आश्रमसे भाऊ, दत्तु और साबरमती आश्रमसे पांडुरंग हैं। वैसे ही अहमदाबाद

और पूर्व खानदेशके भी कई एक कार्यकर्ता हैं। उनसे ठीक परिचय हो रहा है। यह परिचय तथा भाईखला और वीसापुरमें बंबईके मित्रोंसे हुआ परिचय जीवनमें ठीक उपयोगी होगा, ऐसी आशा है। ५० के करीब बहनें यहां हैं। विनोबाके कारण नैतिक वातावरण सुंदर बना है। अधिकारियोंका व्यवहार ठीक है। विनोबा व मेरे साथ ठीक प्रेम और सहकारका व्यवहार है। हम सब ठीक तौरपर समयका उपयोग करते हैं। जेल नियमके मुताबिक यथावश्यक सुधार सहकारसे धीमे-धीमे हो रहे हैं। विनोबाको 'बी' वर्ग दिया है। उनका घी दूध आदिके त्यागका प्रयोग जारी है। वजन कम होकर...... रत्तलसे ९० रत्तल हुआ था। वजन बढ़ानेके लिये प्रयत्न कर रहे हैं। आजकल माधवजीकी खुराक एक रत्तल दूध, चार छोटे केले, और एक पपीता है। गुलजारीलालकी तबीयत सुधर रही है। आजकल उसे गेहूंकी रोटी और एक पौण्ड दूध मिलता है। तकली और पींजणकी व्यवस्था है। व्यक्तिगत तौरपर दो-एक चर्खे भी चलते हैं। रिषभदास वीसापुर गया है।

आपकी खबर यहांके कमिशनर मि. क्लेटनसे शुक्रवारको मिली थी। उससे भी जेलके संबंधमें एक आध सुधारकी बात हुई थी। मेरी ओरसे आप तथा सरदारजी चिंता न करें। हम सब लोगोंका आप और आपके साथियोंको प्रणाम।

(नकल परसे लिया गया) जमनालाल बजाजके प्रणाम

:११०:
अ

यरवडा मंदिर,
९ मी एप्रिल, ३२

चि. जमनालाल,

तमारा कागळनी अमे बधा राह जोई रह्या हता। कागळ संपूर्ण छे। त्यांनो खोराक माफक आवी गयो छे ए बहु संतोषनी वात छे। जालकीबेन विषे अने कमलनयन विषे मने खबर मळी चूक्या हता।

विनोबा व्रत लईने न बेसी गया होय तो मने लागे छे के तेने दूध लेवानी जरूर छे। त्यां पण तेनी प्रवृत्ति तो आकरी जणाय छे। ए प्रवृत्ति नभाववाने सारु दूधनी जरूर होय एम भासे छे। मारो दृढ विश्वास छेज के वनस्पतिओमां एवी वनस्पति छे के जे दूधनी गरज सारे छे अने दूधना दोषोथी मुक्त छे। पण ए वनस्पति शोधवानी जेनामां विद्वत्ता छे एवा वैद्योने तेनो ख्याल नथी। आपणा जेवाना गजा उपरांत ए वात छे, अथवा ए एकज वस्तुनी पाछळ पडवुं जोईए। एम न करी शकाय, एवो मारो दृढ अभिप्राय छे एटले जे धर्म सहज प्राप्त थयो छे ते धर्मनेज वळगी रहेवानुं कर्तव्य छे। विनोबाए एटलुं बधुं ओछुं वजन न थवा देवुं जोईए एम लाग्याज करे छे।

त्यां तमारी पासे सुंदर समाज जाम्यो लागे छे। तमारा 'क' वर्गनो मने द्वेष थाय छे। ज्यारे तमने ए वर्ग मळेलो त्यारे हुं तो बहुज राजी थयो हतो। तमारी तबीयतने तेथी कांई नुकसान थशे एवी मने धास्ती लागीज न हती। तमारी पोतानी अने तमारा पाडोसीओनी तबीअतनुं जतन करवानी तमारी शक्तिने विषे मने कदि शंका आवीज नथी, अने जे अनुभवो तमने मळी रह्या छे ते बीजी रीते तमे पामीज न शकत।

प्यारेलालने कहेजो के कुसुमनी मारफते तेणे लखेला कागळनो पूरो जवाब हुं आपी चूक्यो छुं एटले अहीं कांई नथी लखावतो। ए जवाब कदाच आना करतां वहेलो तेने मळशे। न मळे तो मने खबर देजो। अमे त्रणे जणा मजामां छीए। हाल बे मास थयां हुं रोटी, बदाम, खजूर, एक शाक अने लींबु लउं छुं। तेथी सारुं रहे छे। रेच पिचकारीनी मुद्दल जरूर रहेती नथी। आश्रमनो इतिहास लखी रह्यो छुं। घणो वखत कागळो लखवामां जाय छे। आ नानकडा मंडळमां तमारे विषे तो दिवसना केटलीये वार वातो थती हशे। बधाने अमारा बधाना यथायोग्य कहेजो। ज्यारे ज्यारे लखी शकाय त्यारे त्यारे लख्या करजो।

बापुना आशीर्वाद

: १११ :

ચિ. જાનકીબ્હેન,

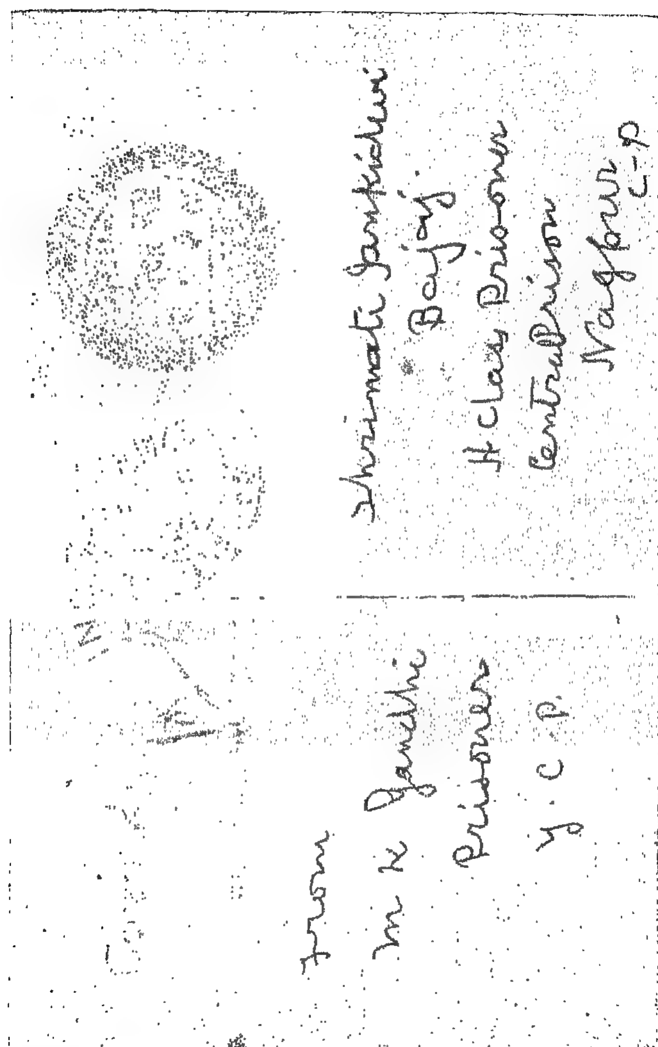
મને કાગળ લખજો. તમારી
તબીયત કેમ ખરાબ રહે છે?
શું ખાઓ છો? ફળ બરાબર
લેવાં જોઈએ. તબીયત સુધારવી
જોઈએ. જમનાલાલની કે કમલ
નયનની કે બીજા કોઈની
ફિકર કરવાની હોયજ નહિ.
કંઈ વાંચવાનું છે કે? સાથે કોણ
છે?

અમે તો રોજ મનમાં છીએ.
તમને ઘણીવાર સંભારીએ
છીએ.

ય. મં. બાપુના
આશીર્વાદ

૨૪-૯-૩૨

नोट:—गांधीजीकी सहीके नीचे जेल अधिकारीने सही की है।



Shrimati Janakibehn
Bajaj
H class Prisoner
Central Prison
Nagpur
C.P.

From
M K Gandhi
Prisoner
Y. C. P.

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

य. मं.,

चि. जानकीबहेन २४–४–३२

मने कागळ लखजो। तमारी तबीयत केम खराब रहे छे? शुं खाओ छो? फळ बराबर लेवां जोईए। तबीयत सुधारवी जोईए। जमनालालनी

के कमलनयननी के बीजा कोईनी फिकर करवानी होय नहि। कंई वांचवानुं छे के? माथ कोनी छे?

अमे त्रणेय मजामां छीये। तमने घणीवार संभारीये छीये।

बापुना आशीर्वाद

: ११२ :
अ

१५-८-३२

चि. जानकीबहेन,

केटलुं अभिमान? जेलमां जई आव्या एटले कागळज न लखवा? केम जाणे तमे एकज जई शकता होय नहि। तबीयत केम छे? कमलनयन क्यां छे? तेने में कागळ लख्यो छे ते पहोंच्यो होय एम लागतुं नथी।

बालकृष्ण क्यां छे? तेनो कागळ हमणा मुद्दल नथी। मदालसा पण भुई गई लागे छे। शिवाजी राधाकृष्णनुं लखजो। छोटेलालने कागळ लख्यो छे तेनो पण जवाब नथी। आ बधानी आशा तमारी पासेथी राखुं छुं।

अमे त्रणेय मजामां छीये।

बापुना आशीर्वाद

: ११३ :
अ

य. मं.,
२०-८-३२

चि. जानकीमैया,

वाह! आखरे सीसापेननी बे लीटी लखवानी तस्दी लीधी खरी? जेलमां जईने पण आळस नज गयुं केम? 'अ' वर्ग आपवामांज भूल करी। 'क' वर्ग आपी बरोबर काम करावबुं जोइतुं हतुं। आळस तो आळस पण हवे शरीरने बरोबर ठेकाणे लावजो। विनोबाना साणसामां ठीक आव्या छो। कागळ बरोबर नहि आवे तो सजा थशे। तमे जीर्ण थई गएली धावळी, खादी उपर सीवीने फरी बनावी हती (ए) राजमहेलमां[1] जई आवी ए वात में करी हती के? अहि तो छेज। हजु तो खूब चालवानी छे।

बापुना आशीर्वाद

१. बकिंघम पेलेस, लंडन।

: ११४ :

वर्धा
(अगस्त १९३२)

पूज्य बापूजी,

आपका कार्ड ता. १५–८ का मिला था। उसमें आपने शिवाजी वगैरह की खबर मंगवाई थी। उसका उत्तर पहुंच गया होगा।

आपका पत्र ता. २०-८-३२ का मिला। ओम कहती है कि बापूजीको विशेष काम नहीं होगा जिससे बड़े बड़े विशेषण लगाते हैं। मेरा 'ए' क्लास आपको खटकेगा यह मैं जानती ही थी। आप 'क' वर्गके लिये इच्छा रक्खें या उससे भी नीचेके वर्गके लिये। अगर आप मुझे रसोई सिखाना चाहते हों, तो यह तो हो सकता नहीं। और यहां वर्धा तहसीलकी १०० बहनें होनेके कारण दूसरी मेहनत करना चाहूं तो भी आलस्यमें ही समा जाती हूँ। लेकिन मुझे तो एक ही भय था कि कहीं 'क' की खुराकसे मर जाती तो?

आप आलस्य आलस्य कहते हैं, पर २० पुस्तकें जो जिंदगीमें नहीं पढ़ी थी सो ५ मासमें पूरी की। यहां आते ही दूसरी जेलमें फंस गई। ता. ४-८-३२ को छूटी और ता. ७-८ को हिंदी साहित्यकी प्रथमा परीक्षाका फार्म भर दिया। ओम, प्रल्हाद, उसका छोटाभाई श्रीराम परीक्षामें बैठनेवाले थे ही। कमलको भी फंसा दिया। मुझे तो आप वहींसे आशीर्वाद दें जिससे मैं तो पास हो जाऊं।

आप दूसरोंको कहते हैं कि दया करो और अपने बीमार हाथसे कितना काम लेते हैं। आपने विनोबाके संड़सेमें आनेका लिखा सो तो ये आपहीके कांटे बोये हुए हैं। लेकिन एक नई खबर सुनाती हूं कि विनोबाजी भी अब मेरे संड़सेमें आने लगे हैं। वे भी आज आपको पत्र देनेवाले हैं।

आपने जीर्ण कमलीकी याद कराई सो ऐसे काम तो बिना आलस्यके ी होसकते हैं ना!

राधाकृष्ण, मदनमोहन ता. १३ तक छूटने वाले हैं। आप मरने के सिवाय मुझे चाहे जो सजा करें।

मेरी तबीयत ठीक है। कमलका वजन बिना कोशिशके ही सपाटेसे बढ़ रहा है। ४४ पौण्ड गया था, सो ३५ तो भर आया। अब न बढ़े तो अच्छा है।

(नकल परसे लिया गया)

जानकीका प्रणाम

: ११५ :
अ

ચિ. જાનકીમૈયા,

[illegible]

[illegible]

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

य. मं.,
१९–९–३२

चि. जानकीमैया,

'क' वर्गनो खोराक खाईने मरवानी धास्ति तमारा जेवीने लागे छे तेथीज वगर खाधे जीववानो रस्तो में पकड्यो छे। ए कालथी जोई लेजो। खातां खातां तो आखुं जगत मरे छे। 'अ' वर्गनुं खाईने केटलुं जीवशो ए जोई लईशुं। पण अनशन करतां करतां जीवी जवानी कळा केवी? एक शरत छे खरी। बधी मैयाओए जोगणी थईने बहार नीकळी पडवुं पडशे ने अस्पृश्योने स्पृश्य बनावी पोते ईश्वरनी शक्ति होवानो दावो सिद्ध करवो पडशे। एटलुं करजो ने पछी 'अ' वर्गनोज खोराक खाधा करजो। पण जो कोई 'अ' वर्गनो न आपे तो 'क' वर्गना खोराकथी संतोष मानजो।

पण धारोके जोगणीओनुं ये कंई न चाल्युं तो भले आ माटीनुं पुतळुं हमणाज पडी भागे। हुं तो जीववानोज छुं। ज्यांसुधी एक पण मैया मारुं काम करती हशे त्यां लगी कोण कहेशे के हुं मरी गयो? आपणे भले गीतानुं तत्त्वज्ञान आत्मानी अमरता विषेनुं छोडी दईए। में बतावी ए अमरता तो आपणी चामडानी आंखे पण जोई शकाय एवी छे। एटले खबरदार जराये गभराटमां आवी पड्या तो। शोभजो शोभावजो। तन मन धन ईश्वरने सोंपी सुखी थजो ने सुखी रहेजो। नखरांखोर ओमने ने ज्ञानी मदालसाने आज न लखी शकाय।

आ तमारे बधाने सारु छे एम समजी लेवुं। अखंड सौभाग्य भोगवजो।[1]

बापुना आशीर्वाद

: ११६ :
अ

(य. मं.)
२७–९–३२

चि. जमनालाल,

तमे कांई मुंझाता नहि हों। तमारे तो नाचवुंज जोईए के तमे जेने बाप निरधार्यो ते तमारा प्रिय कामने सारु पूर्णाहुति आपे ए तमारे सारु तो उत्सवज होय।

१. हरिजनोंके लिये सरकारके खिलाफ किये गए उपवासका इस पत्रमें जिक्र है। उपवास २० की जगह २२ सितम्बर को शुरू हुआ था।

जानकीमैयानी साथे मारो विनोद चाली रह्यो छे। सरदार, महादेव तमने संभारे छे।

(नकल परसे लिया गया) बापुना आशीर्वाद

: ११७ :

POONA,
2-11-32

JAMNALAL BAJAJ,
DISTRICT JAIL, DHULIA

Wire exact condition health especially ear.

—*Bapu*

: ११८ :
अ

यरवडा मंदिर,
२-११-३२

चि. जमनालाल,

तमारा कान विषे डरावनारी खबर मळवाथी आजे तार कर्यो छे ए मळयो हशे एवी उमेद राखुं छुं। जवाबनी अमे राह जोई रह्या छीए। तमारो विगतवार कागळ पण आववो जोईए। डा. मोदी पासे खबर तो मंगावी छे। तमारा खोराकमां थोडो फेरफार सूचवुं। केळांनी कशीए जरूर नथी। पपीतानी पण अत्यारे जरूर नथी जोतो। तमारा खोराकमांथी हाल दाळ काढी नांखवी जोईए अने लीली द्राक्ष अथवा मोसंबी संतरां उमेरवां जोईए। दूध वधारे लई शकाय तो सारुं खरुं। हमणां घणा वखत थयां तमारो कागळ नथी। तब्रीयतनी बधी वीगत आपजो।

मणीलाल केम छे? बीजा साथीयो विषे पण लखजो। अमारुं गाडुं चाली रह्युं छे। मणीलाल, सुशीला, तारी, सुरेन्द्र, सीता, काले आवी गयां। सुशीला हवे ठीक थई छे। थोडो वखत डोसीबाईनी इस्पि-तालमां रहेवुं पड्युं हतुं ए तो खबर हशे।

बापुना आशीर्वाद

: ११९ :
अ

य. मं.,
८-११-३२

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ हमणांज मारा हाथमां आव्यो सांभळ्यो अने जवाब लखावी रह्यो छुं। तमे इच्छो छो ए बधा आशीर्वाद टोपलाओ भरीने तमने जन्मदिवसने दहाडे मळो। जे मृत्यु गमे त्यारे नाना मोटा, काळा धोळा, मनुष्य जीव के बीजा बधाने आववानुंज छे एनो डर शो होय एनो शोक पण शो होय? मने तो घणीवार एम थाय छे के जन्मना करतां मृत्यु वधारे सारी वस्तु होवी जोईए। जन्मना पहेलांनी माना गर्भमां जे यातना भोगववी पडे एने तो जवा दउं छुं, पण जन्म्या त्यार-थीज जे यातना शरु थाय छे एनो तो आपणने प्रत्यक्ष अनुभव छे। ए वखतनी पराधीनता केवी अने ए पराधीनता बधाने सारु एक सरखी। ज्यारे मृत्युमां जीवन स्वच्छ होय तो पराधीनता जेवुं कांई न मळे। बाळकने न होय ज्ञाननी इच्छा अने न ज्ञान कोई पण रीते संभवे। मृत्यु समये तो आवी स्थितिनो संभव छे एटलुंज नहीं पण एवी स्थितिमां घणाने मृत्यु थाय छे एम आपणे जाणीए छीए। जन्म ए दुःखमां प्रवेश छेज ज्यारे मृत्यु ए संपूर्ण दुःखमुक्ति होई शके एम मृत्युना सौंदर्य विषे एना लाभने विषे आपणे घणुंये विचारी शकीए छीए अने आपणा जीवनमां शक्य पण बनावी शकीए छीए। एवा प्रकारनुं मृत्यु तमने थाओ एवा आशीर्वाद अने एवी इच्छामां जे कांई पण इष्ट होय ए बधुं आवी गयुं। आ इच्छामां बंने साथीओ छे एम समजो। तमारी तबीअत विषे बधुं जाण्या पछी पण जे विचार में बताव्यो छे एने वळगी रहुं छूं। तमने घरखर्चेथी खोराक मेळववानी रजा मळे तो ए मेळववामां हुं कशोय दोष जोतो नथी। शरीरने अमानत तरीके समजीने यथासंभव रक्षा करवानो रक्षकनो धर्म छे। भोग भोगववाने अंगे गोळनी एक कांकरी सरखीए न मागो न ल्यो पण औषधी तरीके मोघामां मोघी द्राक्ष पण लभ्य होय तो मेळवीने लेवामां कशो दोष जोतो नथी। एटले एवो खोराक लेतां उद्वेग पाम-वानीये आवश्यकता नथी। एवीज स्थितिमां बीजाने पण एवो खोराक अपावी शकाय तो अपावीए। मारी दृष्टिए जेटला घउं मळे छे एटला

खावानी जरूर नथी। गोळने तद्दन रजा आपवी इष्ट मानुं छुं। तमारा शरीरने गोळनी कंईज आवश्यकता नथी। एने बदले निर्दोष मध लेवुं ए वधारे सारुं छे, पण मीठां फळ मळी शके त्यां लगी तेनी जरूर नथी। दूधमां कोई पण प्रकारनी मीठाश नांखवी ए दूधने पाचन थवामां हानिकर छे। दूधनी मात्रा वधारवी ए सारुं छे, ओलिव ओइलने बदले माखण लो छो ए बरोबर छेज। अहीं मळतुं ओलिव ओइल ए हमेशां शुद्ध होतुं नथी, ताजुं तो नज होय अने माखणमां जे 'वीटेमीन' छे ते ओलिव ओइलमां नथी। शाकमां लीलोतरीज होवी जोईए। पटेटां विगेरे लगभग रोटलीनुं स्थान ले छे, एमां स्टार्च होय छे। तमने स्टार्चनी ओछामां ओछी आवश्यकता छे अने जेटली हशे ते वधी घउंमांथी मळी रहेशे। दाळ तो नज लेवी। माखण पूरतुं लेवाय तो बे रतल दूध बस छे। ए वधवा घटवानो आधार वजन उपर छे। वजन स्थिर थाय त्यां लगी अने हजम थाय त्यां लगी माखणनी मात्रा, अथवा दूधनी, अथवा बंनेनी वधार्ये जवी जोईए। लीलोतरीमां दूधी, कोळुं, जूदाजूदा प्रकारनी भाजी, कोबी, कोलीफ्लावर, दाणा विनानी पापडी, बेंगण, ए बधां सारी लीलोतरी गणाय। घउंनो आटो थूलीनी साथे होवो जोईए। जो घउंने तद्दन साफ करीने दळेला होय तो तेमांनो कांई पण भाग रद्द न थवो जोईए। फळमां अंगुर लीलां, मोसंबी, संत्रां, दाडम, सफरजन अनेनास लेवा योग्य छे। हमणां जे प्रयोगो अमेरिकामां थई रह्या छे ते उपरथी जणाय छे के एकज वखते घणी वस्तु भेळववी न जोईए। फळ एकलुंज खावाथी तेनो गुण वधारेमां वधारे मळे छे अने ए भूखे पेटे लेवुं उत्तममां उत्तम छे। अंग्रेजीमां कहेवत पण छे के सवारनुं फळ ते सोनुं छे, बपोरनुं रुपुं छे, एटले पहेलुं खाणुं एकला फळनुं होवुं जोईए। सवारना पहोरमां गरम पाणी पीधुं होय एनी हरकत नथी। तमने चोवीसे कलाक खुल्ली हवामां रहेवानी रजा मळी शकती होय तो ए लेवा जेवी छे। धीमेथी रोज खुल्ली हवामां प्राणायाम करी शकाय तो सारुं। रातना टाढथी मुद्दल डरवानी आवश्यकता नथी। गळा लगी बरोबर ओढेलुं होय, माथा उपर कान पूर्दाने कपडुं वींटाळ्युं होय तो कांई हरकत न आवे। चोवीसे कलाक शुद्धमां शुद्ध हवा श्वास-वाटे फेफसामां जाय ए अति आवश्यक छे। सवारनो तडको सहन थाय एवी रीते उघाडा शरीरने जेटलो अपाय तेटलो आपवो जोईए। आ बधुं डा. कंट्राक्टरनी साथे चर्चजो अने पछी जे योग्य लागे ते करजो।

माधवजीनुं गाडुं तो सरस चालतुंज हशे। त्यां जे साथीओ रहे अने होय तेने आशीर्वाद अने अमा त्रणेना यथायोग्य। अस्पृश्यता बाबत अहीं जे चाली रह्युं छे ते कदाच तमे जाणता हशो। तमने जे विचार सुझे ए मोकली शको छो। ए मोकलवानी तमने त्यांथी छूट मळी शकशे।

બાપુના આશીર્વાદ

: १२० :

POONA,
16-11-32

SETH JAMNALAL BAJAJ,
PRISONER, DISTRICT JAIL, DHULIA

Wire received. Keep me informed if necessary daily by wire.

—*Bapu*

: १२१ :

यरवडा मंदिर,
२२-११-३२

चि. जानकीबेन,

तमारा कागळना जवाबमां विनोद तो घणोय करवो हतो पण अत्यारे वखतज क्यां छे। कमलनयननी वात कहेवी भूली गयो ए लखुं छुं। कमलनयनने अंग्रेजी भणवानी बहु होंश छे। एने शिक्षानुं वातावरण जोईए छे। एथी मने लागे छे के एने कोलंबो जवा देवो। त्यां इंग्रेजी पेटभरीने शीखशे। पासेनो पासे अने दूरनो दूर। छोकरांओने संघरवाथीज सारा रहे के थाय एम मुद्दल मानवुं नहीं। आश्रमनो स्पर्श जेटलो लागवानो हतो तेटलो लाग्यो मानी लेवुं जोईए। लंकामां न्यूरेलीआमां रहे तो त्यां तेना हवापाणी सुंदर मळशे। अने हुं मानुं छुं के भणवानी सगवड त्यां सारी छे। तमारे चिंता जराय करवानुं नहीं रहे। आ विषे मने लखवुं होय तो लखजो।

जमनालालनी बाबत मुद्दल चिंता न करशो। खबर आवे ते मने आप्या करजो। मारो पत्रव्यवहार ए बाबतमां चाली रह्यो छे। मदनमोहनने नोखो कागळ नथी लखतो।

બાપુના આશીર્વાદ

: १२२ :

य. मं.,
२६-११-३२

चि. जमनालालजी,

तमारा अहीं पहोंची जवानी वधामणी हमणांज आवी।[1] मुसाफरीनो लोताड नही लाग्यो होय। अहीं तो दाक्तरो जे फळफळादि खावा आपे ते खावां। खांसी केम छे? मळवानी रजा मेळववानो प्रयत्न करी रह्यो छुं। अमे बधा मजामां छीए।

बापूना आशीर्वाद

: १२३ :
अ

यरवडा मंदिर,
७-१२-३२

चि. जमनालाल,

तमारी तबीयतना खबर आजेज आपजो। तमने मळवानी तजवीज करी रह्यो छुं। अप्पानुं प्रकरण हाल तो उकल्युं छे।[2] अर्ध उपवास अने पूर्ण उपवास मुलतवी रह्या छे। आखा प्रश्ननो निकाल थशे। में बे रतल वजन पाछुं मेळवी लीधुं छे। "आश्रमवासी प्रत्ये" गोतीने मोकलीश। बीजां कांई जोईए तो मंगावजो। कमलनयनने सीलोन मोकलवानी पूरी आवश्यकता छे। कमलनयन लखे छे के जानकीदेवी पण हवे तो अनुकूळ छे। त्यां हवापाणी तो तेने अनुकूळ रहेशेज, अंग्रेजीनो शोख पूरो पडशे, हिंदुस्थाननुं वायुमंडळ अत्यारे तेने शांत नहीं राखे, सीलोनमां शांत रही शकशे। ए घरनुं घर अने बहारनुं बहार छे। इच्छामां आवे त्यारे पाछो आवी शके छे। अंग्रेजी अभ्यास सुंदर मळी शकशे। अनेक रीते मने तो आ प्रयोग बहु गमे छे। तमारो विचार जणावो त्यार बाद तेने मोकलवानी तजवीज करुं। एक बे ठेकाणे लखवुं पडशे।

घनश्यामदास काले गया। तमने मळाय एम तो हतुंज नहीं। देवदास हजी अहींज छे। राजेन्द्रबाबुनी तबीयत सारी न कहेवाय।

बापूना आशीर्वाद

१. जमनालालजीको भी यरवडा जेलमें ही तबादला करके लाया गया था। चूंकि उनको गांधीजीसे अलग रक्खा गया था, अतः वहां भी उनका पत्रव्यवहार चलता रहा।

२. अप्पासाहेब पटवर्धनने जेलमें भंगीका काम मांगा था। उस समय कुछ समझौता होकर उनका उपवास स्थगित होगया था। पर बादमें अप्पासाहेबकी मांग पूरी न होने पर गांधीजीने भी उनके साथ २२ दिसंबरको उपवास शुरू किया। वह दो दिन तक चला। बादमें मांग पूरी होनेका आश्वासन मिलने पर पूरा हुआ।

: १२४ :
अ

यरवडा मंदिर
(मिला ११–१२–३२)

चि. जमनालाल,

तमारा बंने कागळो मळ्या। मारी भीडनो कांई पार नथी, अने कमलनयननी बाबतमां मारा विचार जूदा होवाथी उतावळ न्होती एटले पहेली तके लखवानुं थायुं हतुं। आजे लखवुंज हतुं तेवामां तमारो बीजो कागळ आव्यो। बीजा कागळ उपरथी एम लागे के कांईक तबीयत लथडी होय पण मने एवो भय नथी। रसी पाछी नीकळी ए तो सारुंज थयुं छे। कृत्रिम उपायोथी रसी बंध थाय एमां कांई लाभ नथी। पेटमां आंव जेवुं लागे छे एनुं कारण तो कांई वस्तु विशेष खवायली होय एवुं बने। हमणा एक बे दिवस रोटी बरोबर न्होती। तमे रोटी टोस्ट करेली खाओ तो कदाच वधारे सारुं। दांत तो मजबूत छेज। रोटी खूब चाववी जोईए ए तो जाणताज हशो। अहींथी टोस्ट करीने मोकली शकाय, कारण के रोटी अमारा वाडामांथी त्यां आवे छे, अने रोटी पकाववामां यत्किंचित मारो हाथ छे, एटले टोस्ट करवामां कांई मुश्केली आवे एम नथी। त्रण वखत खाता होय तो ताजो टोस्ट करीने पण मोकली शकाय।

वेपारशाही मुलाकातोमां घणो वखत आपो छो ए पण अत्यारे न करवा जेवुं छे। दाक्तर मोदीना कहेवा प्रमाणे पूर्ण आरामनी आवश्यकता छे। घणुं बोलवुं ए पण सारुं नथी एटले अहींनी हवानो पूरो लाभ लेवाने सारु आराम लेवो, ओछुं बोलवुं, अत्यावश्यक छे।

तमारे विषे कर्नल डोईले ठीक वखत लगी वात करी छे–परम दिवसेज वात करी। यूरोप जवानीज तेनी सलाह हती। मने तो एवुं कांई लागतुंज नथी। आ देशमां मळती मददथी जे कांई थई शकतुं होय तेटलुं करीने शांत रहीए, पण तमारी इच्छा विलायत जवानी थती होय तो मने अवश्य जणावजो। तमने वारंवार मळवानी मागणीनो जवाब पण आजकाल आवी जवो जोईए।

हवे कमलनयन विषे। कमलनयनने दक्षिण आफ्रिका मोकलवा खास रजा लेवी जोईए। त्यां तेने सारु अभ्यासनं कांईज साधन नथी।

अंग्रेजी निशाळके कोलेजोमां तेने स्थान न मळे। हिंदीओने सारु कोलेज करी छे। एमां आपणी दृष्टिए कांईज न होय। खानगी अभ्यासनी सगवड पण ओछामां ओछी। फीनिक्स तो जंगल छे। त्यां जाय तो एने छापखानामांज रोकाई जवुं पडे, एटले कोई पण दृष्टिए द. आ. नो विचार करवा जेवुं नथी। ज्यारे सीलोन एथी उलटुं छे। त्यांनी जेटली शाळाओ छे तेमांनी गमे ते शाळामां कमलनयन जई शके। हवा न्युरालीआमां तो उत्तमोत्तम छे। सृष्टि सौंदर्य एनाथी भाग्ये क्यांय चढी शके। त्यां ओळखीता पण सारी पेठे मळी शके। बर्नार्ड आलोविहारी तो घरनोज माणस छे, अने ए बहु विद्वान छे, चारित्र्यवान छे। मारी साथेज विलायतथी आव्यो अने सीलोनना प्राचीन महा कुटुंबोनो छे। त्यां तेने ठीक न पडे तो तरत बोलावी पण शकाय छे। वखतोवखत पत्रव्यवहार थई शके छे। एटले मारी दृष्टिए कमलनयनने इंग्रेजी अभ्यासनी धगश पूरी पाडवाने सारु आपणा सिद्धांतोने अनुकूळ एवी जग्या सीलोनज छे। कमलनयनने पोताने ठीक लागे छे। पण जो ए तमने न गमे तो अत्यारे तो वर्धाज भले रहे। वर्धाथी तेने संतोष होय तो तो कहेवा जेवुं छेज नहीं, नथी एम तेनी वात उपरथी जाण्युं, तेना कागळ उपरथी जाण्युं एटले आ प्रश्न उभो थयो।

मणीलालनुं बुधवारे जवानुं मुलतवी रह्युं छे। एटले हवे तो पाछो २९ मी तारीखे जई शके एम छे।

छगनलाल जोषी मने मदद करवाने सारु गई काले अहीं पहोंची गया छे। आथी मारुं काम हळवुं नहीं थाय, पण हमेशां अधूरुं रह्या करतुं हतुं एमां फेर पडशे।

बापुना आशीर्वाद

: १२५ :
अ

य. मं.,
१५–१२–३२

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। कमलनयननुं समज्यो। पूनामां एनी गोठवण नहीं थई शके। वकीलनी साथे एने विषे वात थईज हती। एवडा मोटा जुवानने त्यां राखता नथी, सगवडज नथी। विशेष वात एने

विषे मळशुं त्यारे। तमने फाउन्टन पेननी शाही जोइती हती ते अमारी पासे स्वदेशी शाही हती एनी भाई कटेलीने खबर हती एटले तेमांथी तमारे साह एक खडीओ मोकल्यो छे। अमारी पासे भंडार भर्यो छे।

अहींनी रोटीमां जे खांड आवे छे ए खांड स्वदेशी होवानो संभव छे, केम के पूनामां परदेशी खांड बहु ओछी आवे छे। पण विलायती होय तो पण हुं एमां दोष न मानुं, केम के ए खांड खमीर बनाववाने साह नांखवामां आवे छे। एटले के खमीरनी साथे भळीने तेमांथी एक नवो पदार्थज पेदा थाय छे--जेम अमुक गॅस अमुक प्रमाणमां मळीने पाणी पेदा थाय छे. एटले रोटी खानार घउं अने खांड एम त्रे पदार्थ खाय छे एवं नहीं कही शकाय। खमीर बनाववाने साह त्रण चीज वापरवामां आवे छे। महुडां, खांड अने मीठुं। महुडां परदेशी होय छे। एटले मारी दृष्टिए परदेशी खांडनो त्याग करनारने साह पण रोटी निर्दोष गणाय। एम छतां आटलुं जाण्या पछी छेवटनो निर्णय तो तमारेज करवो रह्यो। अहीं जे चपाटी बने छे ए तमने माफक आवती होय तो मारे रोटीनो आग्रह करवापणुं न होय।

तमने मळवा बाबत हजी कांई जवाब फरी वळ्यो नथी।

ओपरेशनने साह हाल विलायत न जवा विषे समज्यो छुं। मने पोताने तो एवी दहेशत लागती पण नथी। हजारो माणसना कान वहे छे अने तेओने कंईज बीजो उपद्रव नथी थतो। ए बधा भाग मगजनी पासे रह्या एटले छेवटनां परिणामो आवी शके। एना विचारथी दाक्तरो पोते भडके अने दरदीने भडकावे। एटले आ देशमां जे मदद मळी शकती होय तेटलाथी संतुष्ट रहेवामां मने संकोच न थाय। पण आ वात अत्यारे तो अप्रस्तुत छे। शांति थये मार्ग एनी मेळेज सूजी रहेशे।

मारी कोणी हती तेवीज छे। वजन १०३ छे। तबीयत एकंदर सारी छे।

आ साथे जानकीबहेननो कागळ मोकलुं छुं। एमां कमलनयन विषे लख्युं छे ते जोशो। में जवाबमां लख्युं छे के कमलनयननी साथे मास्तर अने रसोईओ जाय ए हुं तो कबूल नज करुं। एम करवाथी बहार जवानो फायदो ए गुमावी बेसे। साथे एम पण लख्युं छे के तमारी साथे ए बाबत वातचित चाली रही छे।

बापुना आशीर्वाद

: १२६ :

यरवडा,
ता. १-१-३३

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। स्टेटमेन्टनुं छेल्लुं पानुं टाईप थयुं तेवीज (प्रत) तमारी पासे मोकलवामां आवी हती। छापावाळाओने तो ते वखते अपाई रही हती। तमारा हाथमां ए परम दिवसे आवी। छापामां काले आवी। उपवास मुलतवी रह्यो एटलीज खबर स्टेटमेन्टने आगले दिवसे नीकळी। अने स्टेटमेन्ट तैयार थयुं एवुं मोकलायुं। एटले ढील थई नहिं गणाय। गुजराती थशे के तरतज मोकलीश।

कागळो तो बीजा थता जाय छे तेम मोकलाता जाय छे। स्टेटमेन्टनी नकल करवानी कांईज जरूर न्होती। जेने नकल जोईए ते हुं पूरी पाडी शकीश।

राजा अने बा तथा शंकरलाल आजे मुंबई जवा उपडी गया हशे। राजाजी आजनी रातनी ट्रेनथी मद्रास जशे।

मणिलाल अने सुशिलाए तमने मळवानो प्रयत्न तो कर्यो पण निष्फळ गयो। तेओ बुधवारे रवाना थया।

आवती काले १० वागे आपणे मळशुं। मारुं तो मौन हशे एटले तमारे कहेवानुं होय ते कहेजो। कलाक सवा कलाक आपणे बेसी शकशुं। जवाब आपवापणुं हशे ते चीजो हुं नोंधी लेतो जईश।

बापुना आशीर्वाद

: १२७ :

य. मं.,
१५-२-३३

चि. जानकीबहेन,

* * * *

जमनालालनो अभिप्राय एमज छे के ओमने नोखी पाडवीज जोईए। एमनी बीजी सूचना एवी छे के ओमने वाल्ताई पासे मूकवी। वाल्ताई

सारी संभाळ राखनार छे। पण जो एमां तमने बाध होय तो तमारी इच्छा प्रमाणे आश्रममां अथवा शारदा मंदिरमां मूकवी। आम त्रणमांथी एक जग्या तुरत पसंद करी जे करवुं होय ते करीने खबर आपजो । त्रणमां वास्ताईवाळुं तमने वधारे गमशे एम जमनालाल माने छे ने मने पोताने तो ए वधारे गमे छेज।

केसरबहेनने विषे तो नोखुं करी देवानो प्रबंध जमनालाल नीकळीने तुरत करवा धारेज छे।

आवी बाबतोमां कर्तव्य पालन विषे ढील न करशो।

बापुना आशीर्वाद

: १२८ :

शनीश्चर,
२५–२–३३

पूज्य बापूजी,

श्री. पूनमचंद रांकाकी स्त्री श्री. धनवतीदेवीका यह पत्र आप पढ लेवें।[1] आप एक तार सिवनी व एक तार नागपुर उचित समझें तो दे देवें। सिवनीमें मेरा नाम डालना संभव हो तो डाल देवें। सिवनीसे तार मंगा लेवें कि वह फास्ट नहीं करेंगे।

ज. ब.

२५–२–३३

पूज्य जमनालालजी,

आ बाबतमां करवुं घटे छे ए बधुं करी दीधुं छे। आ बाबत विगतवार कागळ बापु उपर परम दिवसे आव्यो हतो। कदाच आजे कांईक जवाब सिवनीथी आवशे। राघवेन्द्ररावने पण तार कर्यो छे।

लि.

महादेव

१. श्री. पूनमचंदजी रांका सिवनी जेलमें अनशन करने वाले थे, इस विषयमें श्रीमती धनवतीदेवीका पत्र आया था। जमनालालजीके पत्र पर ही श्री. महादेवभाईने अपना जवाब लिख भेजा था

: १२१ :
अ

ચિ. [illegible],

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

લખાયું. [illegible]

[illegible]

[illegible]

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

२६–३–३३

चि. जानकीमैया,

वाह! मारा कागळनो जवाब सरखो ये न देवो? एटलो बधो मारो डर छे के? हरिजनने देतां अकळामण थतुं होय तो तेम लखवुं। मने संत्रां मोकलतां कोथळी छुटे छे पण हरिजनने सारु बंध रहे छे के?

बापुना आशीर्वाद

काले जमनालाल मुंबई गया। त्यां डा० मोदी तपासशे। शरीर सारुंज छे। तमारा ने तेना पोताना संतोषने खातरज गएल छे।

: १३० :

अ

(य. मं.)
८-४-३३

चि. जमनालाल,

शेठ पुनमचंद रांकाने मळी शकाय तेटली झडपथी मळो ए इष्ट छे। तेमने कहेजो के तेमना अपवास सत्याग्रहनी नीतिथी विरुद्ध छे अने मने तो लागे छे के तेनो कोई पण रीते बचाव न थई शके। केदीओना वर्गीकरणथी विरुद्ध बधा माणसो नथी। जे केदीओने अ, ब वर्ग मळे छे तेओ बधा क वर्गनीज स्थितिमां जता नथी। ऊंचा वर्गमां जेने मूकवामां आवे ते कंई ते वर्गनी सगवड भोगववा बंधाएल नथी। जेओ ए सगवड भोगवे छे तेओ पोतानी इच्छाए भोगवे छे। तेने तेनो त्याग करवानी फरज शेठ पुनमचंद कई रीते पाडी शके? तेने सारु अपवास केम करी शके? पोते गमे ते सगवडनो त्याग करे ए नोखी वात छे। वर्गो मने पोताने पसंद नथी पण तेमां फेरफार करावानो मार्ग अपवास नथीज। मारी आशा छे के शेठ पुनमचंद पोतानी हठ छोडी देशे। तेमणे ए पण जाणवुं जोईए के ज्यां लगी तेओ पोताने सत्याग्रही माने छे त्यां लगी तेओ तेनी मर्यादानुं पालन करवा बंधाएला छे। सत्याग्रहना प्रणेता तरीके तेनी मर्यादा आंकवानो मने कंईक अधिकार होवो जोईए। ए दृष्टिये पण तेमणे मारी सलाह मानवी घटे छे। ईश्वर तमने सफलता आपो।

बापुना आशीर्वाद

: १३१ :

(य. मं.)
१२-४-३३

चि. जमनालाल,

कमलनयननो कागळ वांच्या पछी मने लाग्युं छे के वर्धामांथी मुक्त थई शकाय तो तमारे एकदम पहाड उपर जवुं जोईए। मने तो वधारे सारुं महाबळेश्वर लागे छे। दोढ मास पाको मळी शके। पछी पंचगनी उतराय अथवा बीजे जवुं होय तो जवाय। वहेले काने नीचे नज रहेवाय।

बापुना आशीर्वाद

: १३२ :

(य. मं.)
१६–४–३३

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। होमीयोपेथी उपर मने बहु विश्वास नथी। पण तेने मारु पहाड जवानुं मुलत्वी न रखाय। आल्मोडानो विचार मने पसंद छे। आल्मोडामां पण होमीयोपाथीना दाक्तर रहे छे। पण आ दरदने सारु पहाडी हवा ने दूध माखण फळ आखा घउंना आटानी रोटी शाक उपरांत दवानी जरूर घणी ओछी रहेशे। आल्मोडा जईने घणा काममां न रोकाई जवुं। छोटेलाल साथे आवी शके तो लई जजो। पेला हरिजनभाईनुं करीश।

बापुना आशीर्वाद

: १३३ :

POONA,
8–5–33

SETH JAMNALALJI,
SHAILA ASHRAM, ALMORA

You must not disturb programme rest for impending fast. Hope progressing.

—*Bapu*

: १३४ :
अ

(य. मं.)
७–५–३३

चि. जमनालाल,

तमारा बे कागळ साथे मळ्या। तार पण मळ्यो। तमे त्यां रही गया छो ए मने बहु गम्युं छे। एमज निश्चितपणे रहेजो। हुं मानुं छुं के अपवास निर्विघ्नपणे पार उतरी जशे।

तमारा दरदने सारु कोई वैद्य अथवा हकीमने पूछवुं ए पण योग्य लागे छे। कानमांथी पीप घणाने नीकळीने बंध पण थई जाय छे। एथी डरवानुं कंई कारण नथी ; ग्यायमांनी संभाळ राखशो तो बस छे। सामे गाय राखी ने आंचळ साफ करीने साफ हाथे दोवाय तो ते दूध ताजुंज पीवुं। खावामां

संभाळ राखवी। काचर कुचर कंई न खावुं। दाळ नहिं, मसाला नहिं, कंईक पण काची भाजी जोईए। टमाटा, सेलड सारी वस्तु छे। काची प्याज खावानो दाक्तर देशमुखनो बहु आग्रह छे।

जानकीबहेन बखत कई रीते गाळे छे? फरे हरे छे? ओम कंई शीखे छे? प्रभुदास शुं करे छे?

शांति रुईयाने खरखरानो कागळ लख्यो छे। राधाकृष्णे खबर आप्या हता।

तमने कागळ मोकलाया करशे।

બાપુના આશીર્વાદ

: १३५ :

२६–६–३३

चि. जमनालाल,

जो केशु तमारा कबजामां आवे तो मारा आशीर्वाद तो छेज। मारी चिंता पण एक ओछी थाय। ते हाल अहिं छे। राधा पण छे ए विषे मथुरादास लखशे। कमळाने खातर तमारे अहिं आववानी जरूर न होवी जोईए। अपवासनी सांकळनो[1] विचार तमारे करवापणुं नथी।

બાપુના આશીર્વાદ

: १३६ :
अ

२–७–३३

चि. जमनालाल,

शान विषे तार कर्यो ते मळ्यो हशे। छगनलालनो कागळ आ साथे छे। ए उपरथी मानुं छुं के शान त्यां नथी आवी। शाने हा पाडी ए केवी रीते थयु ए जो तमे जाणी शक्या हो तो जणावजो।

१. हरिजन सेवकोंकी नैतिक अशुद्धि दूर करनेके विचारसे गांधीजीने २१ दिन का उपवास शुरू किया था। इतनी तपस्यासे सारे समाजकी शुद्धि नहीं होगी, इसलिए एकका देहपात होने पर दूसरा उपवास करे, उसका देहपात होनेपर तीसरा करे, ऐसी उपवासकी शृंखला चलाकर हिंदू समाजका पूर्ण रूपसे हृदयपरिवर्तन करनेका गांधीजी सोच रहे थे।

१२ मीनी मीटींगने सारु तमारे तणाईने आववानी मुद्दल जरूर नथी जोतो। तमारो अभिप्राय मोकलवो होय तो मोकली देजो। जरूर जणाशे तो ते वांचीश। मारु ए के ते अगंजीने मोकलजो।

कमळाने सारु पण आववानी जरूर नथी। वनती तजवीज थयाज करशे। हुं तपास कर्या करुं छुं। कमलनयन आवजा करे छे। जानकीदेवीने पण मळ्यो हतो। कमळा पण मळी गई। ते हजु बाळकज छे। पूरा लाडमां उछरी छे। एटले पोतानी जवाबदारीनुं भान ओछुं छे। तेमां एनो वांक नथी। जेवा आपणे तेवी आपणी प्रजा। आपणामां उत्तरोत्तर फेरफार थयां करे तेने प्रजा न पहोंची शके। हरीलालनो दाखलो सचोट छे। ए तो बधी हद ओळंगी गयो। ए प्रत्यक्ष रीते ओळंगी गयो। में मनमां भोगो भोगव्या ने बाह्येंद्रियो उपर धीमें धीमें काबू मेळव्यो। जो मनने पण छेवटे वश न करी शक्यो हत तो मिथ्याचारीमां मारी गणतरी सहेजे थात। पण मारामां थएला फेरफारो हरीलालने केम स्पर्शी शके? आ तो वच्चे व्याख्यान अपाई गयुं।

तमे शरीरने संभाळीने वधुं काम करजो। प्रभुदास त्यां आव्यो होय तो तेनी शी स्थिति छे? हवे शुं सोधशो?

विनोबा, बाळकृष्ण अने छोटेलालनी प्रकृति केवी रहे छे?

राधिका आवी गई। हवे देवलाली छे। केशु हजु अहिं छे शांत छे। हजु निश्चय उपर नथी आवी शक्यो। आवशे। तेने सारी पेठे वखत आपुं छुं।

लक्ष्मीनिवासनी पत्नी सुशीलाए रू. ५००० हरिजन सेवा अर्थे आप्या तेनो निवेडो तमे शो कर्यो?

देवदास लक्ष्मी रणछोडदासना बंगलामां रहे छे। राजाजी घनश्यामदासनी साथे। मने सारु थतुं आवे छे। रोज त्रण कटके ४५ मिनिट चालुं छुं। वजन ९७ रतल लगी पहोंच्युं छे। हजु वधशे। मारी चिंता करवा जेवुं हवे कांई नथी रहेतुं।

नारणदासनो परषोत्तम घणे भागे अहिं आवशे ने दीनशाजीने त्यां नैसर्गिक उपचारोनी तालीम लेशे।

त्यांनुं तमारुं कार्य क्यारे पूरुं थशे?

गिरधारी पाछो आजे पकडाशे। काले छुट्यो हतो। तेनी उपर हैदराबाद जवानो हुकम छे। तेनो तेणे अमल नथी कर्यो।

तमारो खोराक वि. बरोबर चाली रह्यां हशे। मने विगतवार लखजो।

बापुना आशीर्वाद

आजे १०-११-३० लगी हरिजन सेवको साथे वातो करी।

: १३७ :

अ

१७-७-३३

चि. जमनालाल,

मने क्षणवार पण रहेती नथी। तेथी लखवानी इच्छा छतां नथी लखी शकतो। आश्रम लखेल कागळनी नकल आ साथे छे। मारा विचारो एम उडया करे छे। छेवटे क्यां जईने उभशे ए खबर नथी। मारुं आजकालमां ठेकाणे पडशे तो आवा विचारनी आपले नहि करी शकाय। पण तमे तो विचारता थईज जशो। जे ठीक लागे ते सलाह नारणदासने आपजो। मारो कागळ विनोबा वांचशेज। तेने लखवानो समय मळ्योज नथी। ने आज मळे तेम नथी।

कमळाना अपवास चाल्या करे छे। कदाच आजे छोडशे। महेता संभाळ राखे छे। मने रोज रिपोर्ट आपे छे। अपवास खूब हिम्मतथी लीधा छे।

तमारुं शरीर ठीक रहेतुं हशे।

तमारे झंपलाववानुं तो छेज। पण उतावळ न करशो। शरीरने वधारे ठेकाणे मूकीने आवजो।

बापुना आशीर्वाद

: १३८ :

KIRKEE,
18-7-33

JAMNALAL BAJAJ,
WARDHA

Reaching ashram tomorrow. Reva leaving tomorrow. Gangadharrao will be Bombay two days.

—*Bapu*

: १३९ :

अ

अमृत भवन,
एलिस-ब्रिज,
ता० २१-७-३३

चि. जमनालालजी,

तमारी तरफथी हमणां कागळ नथी। आशा राखी हती। पूनाथी लखेलो मारो कागळ मळ्यो हशे। आश्रमनी आहुति आपवा विषे वातो

चलावी रह्यो छुं।[1] लगभग नक्की थई गया जेवुं छे। आजे निश्चय थशे। ए आहुति अपाय तेनी नक्कल करवापणुं नथी। एने आदर्श गणीने जेने पोतानुं वर्तन बांधवुं होय ते जरूर बांधशे। वर्धाना आश्रम विषे पण हाल तुरतमां साबरमतीनुं अनुकरण करवानी आवश्यकता नथी। वखत मळशे तो विशेष लखीश।

अब्दुल गफार खाननो दीकरो जे विलायत हतो विलायतथी अमेरिका गयो हतो, ए मने पूना मळी गयो। हाल मुंबईमां छे। ए अमेरिकामां खांडना कारखानामां काम शीखी आव्यो छे। केटलुं शीख्यो छे ए तो दैव जाणे। खुरशेदबेन वि. नी सलाह एवी छे के ए कोई खांडना कारखानामां हाल तुरत काम करे तो सारुं। तमारा कारखानामां तेने अजमावी जोशो। मारी उपर एणे होशियारीनी छाप नथी पाडी। भलमनसाईनी पाडी छे। 'तमे कहो तेम करीश' एम हाल तो कहे छे। अवघडी तो तेने पगार आपवापणुं नथी। एक महिनाना अनुभव पछी जो ते काममां कुशलता बतावे तो पगार ठरावाय। हालतो तेने रहेवा खावापीवानुं आपवुं पडे।

मारी तबियत ठीक छे। रणछोडभाईने त्यां उतर्यो छुं। आश्रम रोज जाउं छुं। आजे मीराबेनने मळवानी आशा राखुं छुं। परवानगीनो तार कर्यो हतो ते मळी गई छे।

બાપુના આશીર્વાદ

पू. बा आशीर्वाद लखावे छे।

केशव

: १४० :
अ

२२–७–३३

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। प्रश्नो तो बधा बरोबर छे। बन तेटलो जवाब आपुं छुं। आश्रम सोंपी देवामां मतलब ए छे के जे वस्तु छेवटे तेने लेवानीज छे ते सोंपी देवामां वधारे सारुं छे। दरेक वर्षे विघोटीने सारु माल उपाडी जाय तेना करतां भले जमीन आखी लई लेय। वळी हजारो लोको वगर इच्छाए

1. सविनय अवज्ञा आंदोलनके सिलसिलेमें साबरमती सत्याग्रह आश्रमका क्या किया जाय, इस बारेमें गांधीजी विचार कर रहे थे।

बरबाद थई गया तो सत्याग्रहने नामे ओळखातुं आश्रम पोतानी मेळे बधो त्याग करे ए इष्ट छे–ए धर्म पण लागे छे। पण आनो अर्थ ए नथी के हमणाज त्यांना आश्रमे पण एमज करवानुं छे। एथी उलटुं मने लागे छे के त्यांतो जे जे व्यक्तिओ नीकळी शके एथी संतोष मानवो। विनोबाथी तो हवे नज नीकळाय। तेणे हरिजन सेवाने सारु रहेवानुं छे। महिला आश्रमनो उपयोग पूरो करवा धारुं छुं। त्यां बाळको पण आवे के? केटलीक बहेनो तो त्यां आवशेज। नीलानागिनी अने अमलाबहेननो प्रश्न छेज। तेने त्यां मोकल्या शिवाय बीजो छुटको नथी जोतो। बन्नेनी पासेथी हरिजन सेवानुं काम लेवानुं छे। हाल तो बन्नेने तैयार थवानुं छे। नागिनीदेवीने पुरुषोनो संबंध ओछो होवो जोईए। जंगम मिलकत जो सरकार नहि लेय तो अहिं क्यांक उघाडी रिते राखशुं। गायोनो प्रश्न मोटो छे। विचारी रह्यो छुं।

तमारे हमणा झंपलाववानी उतावळ नथी करवानी समय आव्ये झंपलावजो। आटली विगत हमणा बस छे ना? घणी भीडमां लखी रह्यो छुं।

बापुना आशीर्वाद

: १४१ :

MAHATMA GANDHI, ?-?-?
AHMEDABAD

Laxmibai reaching tomorrow morning. Boys also welcome here. Wire arrival number boys girls sisters.

—*Jamnalal*

(नक़ल परसे लिया गया)

: १४२ :

POONA,
24-8-33

JAMNALAL BAJAJ,
WARDHA

Keeping very well. No nursing assistance required.

—*Bapu*

: १४३ :

पूना
(मिला २६-८-३३)

चि. जमनालाल,

तमारो तार मळ्यो। तमे मानता हशो के मारे वहु मावजतनी जरूर पडशे। वात एवी छे के खावानुं आपवा सिवाय वहु मावजत करवापणुं नथी रहेतुं। आ वखते शक्ति खवाई नथी गई। आठ दिवसमां खवाय पण नहि। जेटली गई छे तेटली तुरत आवी जशे। एटले छोटालालने मोकलवानी कांई जरूर न्होती पण हवे आवे छे तो छोटालालने भारे संतोष थशे। एटली वातथी हुं संतोष मेळवी लईश। वळी मीराबहेन मारी पासे छे ए तो जाणता हशो। व्रजकृष्ण तो ज्यां होय त्यांथी आवीने हाजर थईज जाय। एटले ए पण छे। बीजी मदद पण घणी। तमारी तबियत सारी हशे। नवाओ आव्या छे ए लोकोना तमने जे अनुभव मळ्या होय ते लखजो। तमारो केस पूरो थई गयो? रामदासनुं केम चाले छे? केशुनुं केम छे?

बापुना आशीर्वाद

छोटालाल अवघडी आवी पहोंच्या छे।

: १४४ :

२८-८-३३

चि. जमनालाल,

मने शक्ति ठीक आवती जाय छे। ज्ञानने मळवानी तीव्र इच्छा छे। ए मने मळी जाय तो सारुं। तेनुं ठेकाणुं लखजो।

कमळाने तो सरस लाभ थयो लागे छे। मरकीनो डर न राखीने हमणां अहिंज रहेवानुं जानकीबहेनने सूचव्युं छे।

बापुना आशीर्वाद

: १४५ :

POONA,
30-8-33

JAMNALAL BAJAJ,
WARDHAGANJ

Am anxious visit Wardha but not possible reach before last week September.

—*Bapu.*

: १४६ :

३०–८–३३

चि जमनालाल,

तमारा तारनो जवाब आप्यो छे। तुरत आववुं तो बहु गमे पण तुरत नहिं अवाय। मुंबई थईने आववुं ठीक लागे छे। त्यांनुं वातावरण जाणवुं छे। त्यांनुं हरिजन काम पण जरा मंद जेवुं छे तेमां तेजी लावी शकाय तो लाववी छे।

मारी तबीयत ठीक थती जाय छे। ठीक खोराक लेवाय छे। तमारी तबीयत साचवजो। नीला अने अमलाना कागळो साथे छे। नीला जरा अव्यवस्थित थई लागे छे।

बापुना आशीर्वाद

: १४७ :
अ

(मिला ४–९–३३)

चि. जमनालाल,

नीला पाछी पाटेथी उतरी छे। तेना कागळोमांथी तेनी अव्यवस्था तरी आवे छे। आटला दहाडा लगी हिंदु धर्मनी लत हती हवे खिस्ती धर्मनी लागी छे। तेमांय जो निश्चय होय तो तो सारुंज छे। पण मने तेवुं नथी लागतुं। तेनी कल्पनाशक्ति तेने आमतेम अफाळ्या करे छे। मौन लेवाथी तेनुं मन वधारे चगडोळे चढ्युं जणाय छे। साथेनो कागळ वांचजो ने तेने आपजो तथा फुरसद मेळवी शको तो वातो करजो। अथवा विनोबा करे। द्वारकानाथथी कंई थई शके तो ए आश्वासन आपे।

मारो तार तमने मळ्यो हशे। तमारी साथे वातो करवानी छेज पण तमने अहिं घसडवा नथी मागतो। प्रथम तो एमज लागतुं हतुं के हुं मुंबई थोडा दीवस रही आवीने वर्धा जाउं। बे त्रण दीवसथी जरा अनिश्चित थयो छुं। कदाच त्यां आवीने मुंबई जवुं ठीक होय। पण जोउं छुं। जवाहरलाल छूटेल छे तेथी तेने मळवानी पण जरूर छे। पण ते मेळाप तो वर्धामांये थाय। छेवटे तो जे थनारुं हशे तेज थशे। एटले हुं कंई योजनाओ घडतो नथी।

मारुं शरीर ठीक थतुं आवे छे। बे रतल दूध, शाक ने फळ लेवाय छे।

बापुना आशीर्वाद

: १४८ :

POONA,
6–9–33

JAMNALAL BAJAJ,
WARDHA

Going Lucknow Benares unnecessary. Do take ten days hill stations at once. Jawaharlal reaching here probably Saturday. I go Bombay next week staying one week. Reaching Wardha not earlier twentythird. Am keeping quite well. Distrust newspaper report.

—*Bapu*

: १४९ :

१७–९–३३

चि. जमनालाल,

छापाओमांथी बधुं जोयुं हशे। जाणी जोईने तमने विगतो नहोतो लख्या करतो। तमारी उपर कंई पण बोजो मूकतां हमणा संकोच थाय छे। चाखलदा[1] थी झट उतरवुं पड्युं ए पण सारुं नथी लाग्युं। हवे तो मळशुं त्यारे वातो करशुं। मने पण आराममां जरूर ठीक रहेवानी छे। गजाननी वहु गोपी घणे भागे मारी साथेज हशे अने किसन करीने एक बहु सरस बाई छे एने पण साथे आववा नोतरी छे। एनुं शरीर सारुं हतुं पण हमणा जरा लथड्युं छे। आ बधानो बोजो तमारा स्वभाव प्रमाणे तमे उचकशो ए जाणुं छुं पण बोजा रूप न थाय एम करवानी कोशीश करीश।

बापुना आशीर्वाद

जवाहरलाल आजे राते लखनउ जाय छे कदाच पाछळथी वर्धा आवे। जान आवी गई हशे।

: १५० :

वर्धा,
ता. १६–१०–३३

पूज्य बापूजी,

चित्तकी बड़ी दुविधामें यह खत आपको लिख रहा हूं। कानूनके सविनय भंगके ऊपर और काँग्रेसके कार्यक्रम पर पुरा विश्वास होते हुए भी मैं अभी तक जेलमें पहुंचा नहीं हूं। इसका मुझे बहुत रंज है। मैं ता. १९-४-३३ को जेलसे

१. चिखलदा, मध्य प्रांतका एक "हिल स्टेशन।"

छूटा, तब मेरे कानकी व्याधि खतरनाक गिनी जाती थी। उसका यथासंभव इलाज करके मैं शरीर स्वास्थ्य ढूंढता अलमोड़ा गया। इधर आपने २१ दिनके उपवास किये, जिसके साथ सत्याग्रहका आन्दोलन कुल तीन महीनेके लिये स्थगित रहा। उन्हीं दिनों मुझे एक अत्यंत जरूरी कौटुम्बिक प्रकरणमें बहुत दिनों तक गवाही देनी पड़ी। आपने भी मुझे आज्ञा दी थी कि अच्छा शरीर लेकर ही जेल जाना चाहिये। इन्हीं दिनोंमें पूनाकी खानगी कॉन्फरेन्स हुई और सामुदायिक सत्याग्रहका रूपान्तर व्यक्तिगत सत्याग्रहमें हुआ।

मैं जानता हूं और मानता भी हूं कि ऐसी हालतमें, जिनका सविनय भंग पर अटल विश्वास है, ऐसे लोगोंको तो इस वक्त अन्य कामोंका लोभ छोड़कर खसूसन जेलमें ही जाकर बठना चाहिये। मैंने ऐसा निश्चय भी किया था। लेकिन शरीर और मानस स्वास्थ्य जितना चाहिये उतना नहीं सुधरनेके कारण दिलमें कुछ कमजोरीसी आ गयी और इसी कारण मैंने गुरुजन और मित्रगणोंके कुछ दिन ज्यादा बाहर रहनेके आग्रहको कान दिया और १२ नवम्बर तक बाहर रहनेकी अवधि निश्चित की।

डॉ० मोदीने हालहीमें मेरा कान देखकर कहा कि हालांकि प्रगति अच्छी हुई है, तो भी रोग निर्मूल होनेके लिये और भी उसकी संभाल लेना अनिवार्य है; तब ही खतरा दूर होगा।

मेरा विश्वास मुझे कहता है कि व्यक्तिगत सत्याग्रहके आजके दिनोंमें जिसका शरीर कुछ भी चलता है उसको तो जेलमें ही जाना चाहिये। लेकिन जेलमें कानका दर्द फिर बढ़नेका डर रहता है। जेल जाकर 'ए' या 'बी' क्लासमें रहना इस बातको मैं पसंद नहीं करता। क्योंकि वर्गोंका भेद देशको नुकसान पहुंचाता है। लेकिन मिला हुआ क्लास छोड़कर फिर तबीयतके वजहसे फिर वही सुविधायें मांग लेना, यह भी अच्छा नहीं लगता। इस कमजोरी की हालतमें मैं शरीर और मानसिक स्वास्थ्यकी ओर ध्यान देनेका विचार कर रहा हूं।

मेरे जैसी हालतमें मुझे वर्किंग कमिटीसे त्यागपत्र कभीका देना चाहिये था। मैं मानता हूं कि जिसका विश्वास सविनय भंग पर और कांग्रेसके प्रोग्राम पर नहीं, उन कांग्रेसमें कोई जवाबदारीका स्थान नहीं लेना चाहिये। इसी तरहसे इन दोनोंपर पूरा पूरा विश्वास होते हुए भी मेरे सरीखे जो लोग केवल तबीयत सुधारनेके कारण जेल जाना टालते हैं उनको भी जवाबदारीका स्थान छोड़ना चाहिये। मैं देखता हूं कि तबीयत सुधारनेके वास्ते मुझे और भी कुछ समय देना चाहिये। ऐसी हालतमें वर्किंग कमिटीका मेम्बर और कांग्रेसका

खजानची रहना सर्वथा अनुचित है। मुझे इस्तीफा देना ही योग्य था। इसलिये अभी मेरा यह इस्तीफा आपकी सेवामें भेज देता हूं।[1] तुरन्त कोई दूसरा खजानची न मिले तो नया खजानची नियुक्त होने तक मैं वह काम वर्किंग कमिटीका सदस्य न रहते हुए करूंगा।

इसका मायना यह नहीं कि कांग्रेसके कार्यक्रमको यथाशक्ति पार पाड़नेके मेरे कर्तव्यसे मैं मुक्त हूं।

मेरे इस्तीफेसे कांग्रेसवालोंमें कुछ गैरसमझ फैल जानेका सम्भव है, सो मैं जानता हूं। लेकिन देशके कामोंमें स्वच्छता रखनेकी आवश्यकता अधिक है और अन्तमें उससे लाभ ही होगा।

जमनालाल बजाजका प्रणाम

(नकल परसे लिया गया)

: १५१ :

वर्धा,
२५–१०–३३

प्रिय भगिनि,[2]

आप बहनोंसे परदा तुड़वानेके लिए कलकत्ता जा रही हैं इसलिए धन्यवाद। परदा वहम ही नहीं है उसमें मुझे पापकी बू आती है। परदा किससे रखें? क्या पुरुषमात्र विषयासक्त रहते हैं? क्या स्त्री अपनी पवित्रता बगैर परदा नहीं रख सकती है? पवित्रता मानसिक बात है, सभी पुरुषमें सहज होनी चाहिए। यदि इस बुद्धि प्रधान युगमें स्त्री धर्मकी रक्षा करना चाहती है तो उसे दरिद्रनारायणकी सेवा करनी होगी, शिक्षण लेना होगा। दरिद्रनारायणकी सेवा करनेका अर्थ खादी प्रचार, कातना इत्यादि, हरिजनसेवाका अर्थ अस्पृश्यतारूप कलंक धोना ये दो बड़े भगवानके कार्य (हैं)। और विद्या पानेका कार्य परदा रखनेके साथ कभी नहीं चल सकता है।

परदा रखकर सीता रामजीके साथ जंगलोंमें भटकी होंगी? सीतासे बड़ी पवित्र स्त्री जगतमें कभी हुई है? बहनोंसे कहो परदा तोड़ो, धर्म रखो।

आपका
मोहनदास गांधी

१. इस बारेमें गांधीजीने सरदार वल्लभभाई पटेलको ता. २३–११–३३ को रायपुरसे लिखे पत्रमें निम्न उल्लेख किया था : "जमनालालजीनुं राजीनामुं तेनी शांतिने सारु पण अनिवार्य हतुं। बीजाओने सारु पण योग्यज हतुं। तेथी हवा बहु साफ थई छे। जमनालालजी [illegible] बधारे तो न लखुं। [illegible]"

२. श्री. [illegible] गांधीजीने [illegible] भेजा था। यह पत्र कलकत्ताके [illegible] ता. २९ अक्टूबर १९३३ के अंकसे लिया गया है।

: १५२ :

१५-११-३३

चि. जमनालाल,

श्री सालपेकरजीना स्मरण विषे भाई हरकरे मने मळ्या छे। सालपेकर स्मरण हरिजन सेवा निधि नामे फंड खोलाय अने तेमां द्रव्य एकठुं करवामां आवे तो तेने विषे मारुं नाम वपराय। पण तमारी आमां सम्मति अने मदद होय तोज आवी रीते करवुं एम में कह्युं छे। आमां ओछामां ओछा रू. ५००० मळवा जोईए। आ पर्स रूपे मने चिंदवारामां अपाय। तेनी एक नानी कमिटी कराय ने ते पैसानो उपयोग हरिजन सेवा कार्यमां मने पूछीने करे। आ बरोबर लागे तो भाई हरकरेने दोरजो।

बापुना आशीर्वाद

: १५३ :

रायपुर,
२६-११-३३

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो।

लक्ष्मीदास लखे छे ते आनंदीना कहेवा उपरथी होय एम लागे छे। तमने याद छे ना के आनंदीने नामनी पण खबर पडी गई हती। पण तेनी चिंता नथी। लक्ष्मीदास कशी वस्तुनो अनर्थ करे तेम नथी। हुं तो जाणुं छुं के तमे नाम नथी काढ्युं।

मध विषे द्वारकानाथने लख्युं छे। सथवारा जोग ज्यांनो सथवारो मळे त्यां बाटली मोकले एम लख्युं छे।

जबलपुरमां ५ मी तारीखे वरकिंग कमिटीनुं मळवानुं थशे एम जवाहरलाल लखे छे। तमारी हाजरीनी ते आशा राखता जणाय छे। आववानुं मन थाय छे? न ज थाय तो नभावी लईश। इच्छा थाय तो आववुं। एनो ए अर्थ थाय छे के ७ मीने बदले त्रीजी के चोथीये त्यांथी छुटवुं रह्युं। एटला दीवस त्यांना खोवा ए मने गमतुं नथी एम खरुं।

मथुरादास काले अहिं आवे छे। केम ते खबर नथी।

ओमनी बुद्धि बहु तीव्र जोउं छुं। सादी तो छेज, शरीर सरस छे। तेने बधुं गमतुं लागे छे। थोडुं थोडुं लखवानुं पण सोंपुं छुं। सुवे छे मारी पडखेज। उंघवानी शक्ति सारी छे। बधाने प्रिय थई पडी छे।[1]

जानकीमैयाने कंई शांति थई के? कमळानुं बरोबर चाले छे? फरे छे? मदालसा वत्सला कई रीते काळ गाळे छे? आ साथे मणीलालनो अगत्यनो कागळ मोकलुं छुं। ते फाईल करजो। तेमां गोसेवा संघनुं छे ने दागीनानी नोंध छे।

બાપુના આશીર્વાદ

: १५४ :

अ

३१–१२–३३

चि. जमनालाल,

कलकत्तेथी लखेलो तमारो कागळ मळ्यो छे। सतीशबाबुने मळ्या हता के नहीं ए कागळमांथी नथी समजी शक्यो। मळ्या तो हशो। तमारी तबियत केम रहे छे ए पण नथी लख्युं। हवे लखजो। शिवप्रसाद बची गया एज भारे वात गणाय। मुसाफरी सरस रीते चाली रही छे। मारुं शरीर धार्या करतां वधारे काम आपी रह्युं छे। एटले जराये चिंता करवानुं कारण नथी। ओमनुं गाडुं ठीक चाली रह्युं छे। ए पोताने विषे कोईने चिंता करवा दे एवी छे नहीं। मन्त्रीपदने सारु धीमे धीमे तैयार थई रही छे। मने पूरो संतोष थाय एटली जागृति नथी आवी पण शरीरने जोखमे तेनी उपर चाप चढाववा नथी मागतो। ते सहेजे जेटलुं काम करी शके छे एटलुं लउं छुं। किसन मारी साथे छे। ए तो तमे जाणताज हशो। बहु भली छोकरी छे। ओमनी साथे खूब भळी गई छे। एनुं शरीर जेलमां घसाई गयुं। नहीं तो ठीक मजबूत हती अने मन चंचल हतुं। मुसाफरीथी तेने फायदो थयो जणाय छे। आ वखते मारी साथे मलकानी छे एने विषे तो पूछवुंज शुं होय। महेनत करी रहेल छे। दामोदर बरोबर काम आपी रहेल छे। ए नीवडेल छे। अंत्यज खातामांथी दिल्ही पैसा मोकलवाना हता ते मोकलाया? गोसीबहेनने दर मासे थोडुं आपवानुं रहेशे। ते पण कोई खातामांथी काढीने आपजो। मथुरादास कहे तेटला आपवाना छे। मुंबईथी पूरी रकम तेने मळवी जोईती हती पण

१. गांधीजीका हरिजन दौरा ७–११–३३ को वर्धासे शुरू हुआ और २९–७–३४ को बनारसमें पूरा हुआ। जमनालालजी की तीसरी लड़की, ओम, इस दौरेमें उनके साथ थी।

ते ए लोकोए नथी आपी। हवे हुं पत्रव्यवहार चलावुं तेटलामां तेने तो मळवीज जोईए।

बापुना आशीर्वाद

ता० क० बुधवार सवारना प्रार्थना पूर्व

जानकीबहेन तमारा क्रोध विषे लखे छे ए शुं? एमां तथ्य होय तो ए काढी नाखजो। ओमने पूछतां ए पण कहे छे खरी के मदनमोहनने पण कोई वार रडावो छो।

तारा तो सरस काम देनारी छेज। तेनुं शरीर सारुं रहेशे तो ते नीवडशेज। दा. शर्मा (दिल्लीना) नो तार छे। तेणे पोतानी मिलकत १०,००० मां वेची छे ने कर्ज मुक्त थयेल छे। हवे ते आश्रममां आववा मागे छे। तेनी पत्नी सहित आवशे। तेने तमने लखवा सूचव्युं छे। तेने संघरवानी जरूर जोउं छुं। नीवडे तो सारुं। नहिं नीवडे तो जशे।

तमारुं शरीर संभाळीने काम करता हशो। जानकीवाई सोमण त्यां रहेवा मागे छे। तेने ज्यां विद्या वि. हता त्यां जग्या अपाय के?

: १५५ :

२२-१-३४

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो।

देवीप्रसादने तार कर्यो छे। कागळ पण लख्यो छे। लेस्टरने मळवा बोलावी छे।

सतीशबाबुने पुरी जवा विषे लखी नाख्युं छे। तमारुं शरीर बरोबर थई जवुं जोईए।

मिदनापुरमां चाली रह्युं छे ए मने व्याकुळ बनावे छे।

ओम किसन भारे जोडी बनी गएल छे। खुश रहे छे। गमगीन थवुं शुं हशे ए ओम जाणतीज नथी। बार कलाक सुई शके छे। एमां हुं हरकत नथी जोतो। कोई जातना खास शोख नथी लागता। खावामां तो होय ते खरुं। जोईए केवी थाय छे।

मारुं तो चाली रह्युं छे।

जवाहरलालने रू. ४००० साथीओना भरणपोषण सारु मोकल्या न होय तो मोकली देजो।

बापुना आशीर्वाद

: १५६ :

MADURA SOUTH,
27-1-34

JAMNALAL BAJAJ,
GONDIA

Telegram just received. If Patna requires your presence[1] interrupt programme not otherwise.

—*Bapu*

: १५७ :

PODANUR,
29-1-34

SETH JAMNALALJI,
WARDHA

Sent reply Wardha. Unnecessary interrupt work unless Rajendraprasad requires your presence. Specially sending Patna released Sabarmati men. Rajendraprasad wants them.

—*Bapu*

: १५८ :
अ

३०-१-३४

चि. जानकीबहेन,

जो मगजनी कमजोरीने लीधे जमनालालने गुस्सो आवतो होय तो एमां फरीयादनुं शुं कारण होय। दर्दीनी चीडनी उपर ध्यान देवाय के? दर्दीनी चीड हमेशां पीई जवानीज होय छे। के मने गम्मतने खातर कागळ लख्यो छे? मदालसाने कहेजो ने मने भूलीज गई जणाय छे। एम नहिं चाले। ओम मजामां छे।

रामकृष्ण केम छे? तमने केम छे? बाळीनी खबर राखजो।

बापुना आशीर्वाद

१. बिहार भूकंपके समय पीड़ितोंकी सेवाके लिए।

: १५९ :
अ

कूनूर,
३०–१–३४

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळचो। में गोंदीया तार कर्यो हतो ने वर्धा पण कर्यो छे। राजेन्द्रबाबु तमारी हाजरीनी खास मागणी न करे त्यां लगी लीधेलुं काम छोडवानुंज नथी। राजेन्द्रबाबु वगर विचारे मागणी नहिं करे। में पण मारे विषे एवी वृत्ति राखी छे। तमे लीधेलुं काम झट नज छुटे ए विषे मने शंका नथी। ज्यां तमारी हाजरी विना नज चाले एवुं बने त्यांज जवाय। एवुं अत्यारे हुं जोतो नथी। रा. बा. नी मागणीथी आश्रमना छूटेलाने मोकल्या छे। केटलाक गयानो तार आजे आवी गयो। तेमां पण सुरेन्द्रने नथी मोकलतो केम के तमारी पासे ते काम आपी रहेल छे। जो तेनी जरूर न होय तो तेने मोकली शको छो। जाय तो गरम कपडां साथे लई जाय। पण तेनो खप होय तो हमणा तेने जवानी जरूर नथी। स्वामीने जवानो तार आप्यो छे।

ओमनुं चाली रह्युं छे।

बापुना आशीर्वाद

: १६० :

२–२–३४

चि. जमनालाल,

कमलनयन विषे कागळ ने तेनुं लखाण वांच्या। ते अहिंनो क्रम पूरो करवा मागे छे अने हिंदीनी मध्यमा पूरी करवा मागे छे। हुं आटलो सुधारो इच्छुं छुं। हिंदीनो बधो क्रम पूरो करे ने आखरनी परीक्षा आपे। इंग्रेजी वधारे पाकुं करे संस्कृत शीखी लेय ने पछी इंग्लांड नहिं पण अमेरीका जाय। त्यां शीखवानी सगवड तो सरस करीज अपाय। अमेरीकामां थोडो समय गाळी बधेय मुसाफरी करी लेय। आम मेळवेलो अनुभव तेने खूब उपयोगी थशे। तेनी बुद्धि वधारे परिपक्व थतां ते वधारे शीखशे। परीक्षानो एने मोह नथी ए सारुं छे। मतलबमां पश्चिम जोवानी एनी इच्छाने रोकवा हुं नथी इच्छतो। अहिंथी वधारे भातुं लईने जाय ए आवश्यक मानुं छुं।

सुरेन्द्रने शा काममां रोकेल छे?

अमलाबहेनने साबरमती मोकलवानो निश्चय करी लीधो छे। त्यां नहिं फावे तो जोई लईशुं।

બાપુના આશીર્વાદ

: १६१ :

MADRAS,
19-2-34

JAMNALALJI,
WARDHA

Hope you quite well. Date my reaching Bihar uncertain but not likely before fourteenth March.

—*Bapu*

: १६२ :
अ

२१–५–३४

चि. जमनालाल,

एलविननो कागळ वांची गयो। ते नोखो पाछो मोकलुं छुं। टीकट खर्च चलाववा मारु। एनी संस्था जोया पछी एने मदद आपवी जोईशे एम जणाय छे। जे पैसा आवे छे ए क्यांथी आवे छे। ए गावानुं शीखवे छे ए कई रीते। तेनी साथे शामराव उपरांत कोण छे?

तेणे मांसाहार कर्येज छुटको लागे छे। एनी श्रद्धा एवी नथी के ए दूध फळ उपर नभी शके। पण ए गमे ते खाय तेथी तेने मदद बंध करवानुं कशुं कारण नथी। पण कांतवानुं बंध अथवा मोळुं थाय ए सहन करवा जेवुं नथी लागतुं। कांतवामां श्रद्धा न होय तो ए छोडवुं जोईए। ए कांते तोज मदद मळे एम नथी कहेतो। पण सत्य जाळवे एम कहेवानो आशय छे। काम बधुं चोख्खुं होय एटलुंज जोवानुं छे। एलविन भोळा होई पोताने छेतरी शके छे। एटले मित्रोए चोकी राखवानी आवश्यकता छे।

डा. अनसारीनी पारटीनुं[1] नक्की थई गयुं हशे। एनुं साफ थाय तेटले लगी तो तेमां रस लेजोज। राजा पण तेमां रस लेय। मालवीजीने अंदर लाव्या पछी मदद पण देवी रही अने ते नुकसान न करे ए पण जोवुं रह्युं। विलंब करीने के उतावळ करीने नुकसान करी शके।

जुलाई लगीनो कार्यक्रम जोयो ना? ए प्रमाणे करतां घणे ठेकाणे मळनारा मळी शकशे।

બાપુના આશીર્વાદ

१. डॉ. अन्सारीकी अध्यक्षतामें कांग्रेसने कौंसिल प्रवेशके लिए पार्लमेंट्री बोर्ड बनाया था।

: १६३ :

२७–५–३४

चि. जमनालाल,

दा. सुरेश बेनरजीनुं तमे संभाळी लेशो एम में मानी लीधुं छे।

तमारा कागळनो ने तारनो जवाब आपी चुक्यो छुं। तमारी पासे मुसाफरीनो क्रम तो छेज। वर्धा उतरवानुं तो बहुए मन थाय पण न उतराय एवुं छे। मुसाफरीनो क्रम गोठवाई गयो छे ने ए प्रमाणे करी लेवुं बरोबर लागे छे।

तमारी तबीयत सचवाई रहेती हशे। एल्विन विषेनो मारो कागळ मळ्यो हशे।

मालवीजी पुनामां वर्किंग कमिटी भरवानुं लखे छे। मारी तारीखो दरम्यान थाय तो मने तो बन्ने सरखां छे। मुंबईमां स्ट्राईक चालतो हशे तो मने मुद्दल त्यां रहेवुंज गमवानुं नथी। पण ए तो अप्रस्तुत वात लखी नाखी। मुंबई १४–१८ लगी रहेवानुं तो छेज।

ओमनुं गाडुं चाले छे। ते अनुभव ज्ञान तो पुष्कळ लेय छे। पण भणवानुं आळस ठीक ठीक छे।

बापुना आशीर्वाद

: १६४ :

३१–५–३४

च. जमनालाल,

द्वारकानाथ उपर बोजो वध्यो छे। तेनी पासेथी बधुं समजी हळवो करजो। मनोहर अने केशु विषे ते कहे ते सांभळी उंडा उतरी करवुं घटे ते करजो। मनोहर एकाएक बगीचामां केम रहेवा गया? शर्म्मा बहु बोजो माथे लेता होय तो ते पण तपासजो। मुंबईमां आ विषे वात करवानो वखत काढवो छुटको छे।

बापुना आशीर्वाद

: १६५ :

१७–७–३४

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। तमारी उपरनी जवाबदारी एक तरफ ने एक तरफ कानना व्याधि। आ बेथी हुं गभराई जाउं छुं। हवे वल्लभभाई छूटथा

छे एटले महिना मासमां भार कांईक हळवो थशे। थाय तेटलुं करीने निश्चित रहो शको तो बस छे। विहारनुं जे थाय ते करवुं। केटलुंक तो एमज चालवानुं। हुं मळीश त्यारे वधारे चोक्खट करशुं। महेंद्रबाबुना वहीवटमां तो तमेज जे करी शकशो ते खरुं। तेमां मारी चांच नहिं डुबे। विहारना हिसाबमां खबर पडशे।

आश्रमनी निंदानो लेख मोकल्यो ने वांची गयो। तेनो जवाब होय नहिं। आश्रमने सुरक्षित राखीशुं तो बधुं कुशळज छे। एनो निकाल करशुं। गंगाबहेन तथा प्रेमाने भले लखो। भाग्येज ते आवे। एने हवे नवा रस पेदा थया छे। बहु ताण करीने खेंचवामां माल न होय।

व्युटोना कागळ आव्या करे छे। ने तमने मळवा मथी रह्यो छे।

मने ठीक छे। मारा अपवासनो भय पामवानुं नथी। ए विना चाले नहि ए तो स्पष्ट छे।

બાપુના આશીર્વાદ

: १६६ :

जानकीबहेनने कहे एवी खोटी हठ न करे। घणे भागे तो हुं ओपरेशन वखते त्यां पहोंची जईश। त्रे चार दहाडामां शक्ति आवी जशे। मारुं नज जवानुं थाय तो कंई नहि पण लंबाववा जोखम नज खेडाय। मारे तो आजेज तार करवो छे। ईश्वर कृपा हशे तो आपणे बन्ने त्यां हाजर हशुं। पण एने खातर ओपरेशन नज रोकवुं।[१]

: १६७ :

WARDHAGANJ,
13-8-34

JAMNALALJI,
POLYCLINIC, QUEENS ROAD,
BOMBAY, 8

Am quite fit. Listened letter reported. Am definitely opinion operation should be performed on date fixed by doctors irrespective other conditions. Wire fixed date.

—*Bapu*

१. जमनालालजीके कानके ऑपरेशनका तय करनेके बारेमें मौनवार ता. १३-८-३४ को गांधीजीने उपरोक्त सूचना लिखकर दी थी।

: १६८ :

WARDHAGANJ,
14-8-34

JAMNALALJI,
POLYCLINIC, QUEENS ROAD,
BOMBAY, 8

Midst prayerful rejoicings of all Bapu broke fast[1] with hot water honey at hand of Jankiben after prayers led by Vinoba singing Tukarams hymns celebrating fulfilment of all his spiritual aspirations followed by Shivaji with another hymn and Balkoba singing Harinomarag. Then followed doctor Datta with verses from Corinthians on matchless power of love. Amtulsalam read suras from Koran. Aney with verses of his composition. Your telegram was then handed to Bapu. After Ramdhun fast was broken. Bapu was too much moved to speak anything. He had very uncomfortable night accompanied by nausea. Blood pressure now highest recorded during fast 190 and 100 pulse 72 temperature 98 weight 94.

—*Mahadev*

: १६९ :

WARDHA,
15-8-34

JAMNALALJI BAJAJ,
POLYCLINIC, QUEENS RD.,
BOMBAY, 8

Bapu heard your letters. Uma accompanying.

—*Mahadev*

१. अजमेरमें अस्पृश्यता निवारणके संबंधमें हुई सभामें एक सनातनी स्वामी लालनाथ पर किये गये हमलेके कारण दुःखी होकर गांधीजीने यह उपवास किया था। इस सभामें गांधीजी उपस्थित थे। यह उपवास वर्धामें ७ से १४ अगस्त तक हुआ था।

: १७० :

अ

ચિ. જમનાલાલ,

ઉપવાસ પછી

આજ પહેલો કાગળ

લખું છું. તમારી

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

એટલે હૃદયમાં
રામને અંકિત
કરીને ક્લોરોફોર્મ
લેજો. સહુ કુશળ
છે. ઈશ્વરને તમારી
પાસેથી હજુ ઘણી
સેવા લેવી છે. ઘણું
અર્પણ કરાવવું છે

૧૫-૮-૩૪ બાપુના
આશીર્વાદ

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

१५-८-३४

चि. जमनालाल,

उपवास पछी आ पहेलो कागळ लखुं छुं। मजामां छुं। आजे दूध लीधुं छे। ब्लड प्रेशर सुंदर छे। एटले मारी चिंता न करशो। जानकीबहेनने रहेवुं होय त्यां लगी रहेवा देजो। ओमने लांबी मुदत त्यां राखवानी कदाच जरूर न होय। महादेव अने मदनमोहन भले आवे छे। तेओनुं जवुं मने आवश्यक लाग्युं छे। छो कालेज अवातुं होय तो पाछा आवे। अहिं मुंझवण नहिं आवे। एटले हृदयमां रामने अंकित करीने क्लोरोफोर्म लेजो। सहु कुशल छे। ईश्वरने तमारी पासेथी हजु घणी सेवा लेवी छे। घणुं अर्पण करावबुं छे।

बापुना आशीर्वाद

: १७१ :

WARDHA,
16-8-34

JAMNALALJI,
SHREE, BOMBAY

Thank God. Hope restful. Love from all.

—*Bapu*

: १७२ :

१६–८–३४

चि. जमनालाल,

हमणाज ओपरेशननो तार मळ्यो। जानकीमैयानी उपरथी चितानो पहाड उतर्यो। मारी फिकर न करशो। मने आराम छे। सवाय छे। हुं त्यां उतावळे दोडी आवुं तेम नथी। बीजे क्यांय पण पूरी शक्ति आव्या विना नहि जाउं। एटले निश्चिन्त रही साजा थजो।

बापुना आशीर्वाद

: १७३ :

WARDHA,
18-8-34

JAMNALALJI,
SHREE, BOMBAY

Mahadev gave good news about you. No talking allowed. Parliamentary Board meeting postponed. Am gaining strength.

—*Bapu*

: १७४ :

१९–८–३४

चि. जमनालाल,

तमारुं गाडुं ठीक चालतुं जणाय छे। हजु आववानी उतावळ न करशो। एने समये ए आवी रहेशे। काम करवानी चितामां नज पडशो। वातचित नज कराय। कंई खास कहेवुं होय तो लखीने कहेवाय। आ नियम जाळववाथी खूब फायदो थवानो संभव छे।

अहिंनी चिंता तो मुद्दल न कराय। मने कोई तकलीफ नथी आपतुं। बहु काम नथी करतो। वजन ९६ लगी गयुं छे। आश्रमनी चिंता करवानुं तमारे नज होय। मदनमोहन त्यां रहे।

बापुना आशीर्वाद

आ तो सवारे ४ वाग्या पहेलां लखायुं हतुं। त्यार बाद कमलनयन आव्यो। जे पडखे जखम छे ते पडखे न सुवाय तो सारु एम दाक्तरो कहे तो सुखे दुःखे एकज पडखे पडी रहेवुं अथवा चता सुई रहेवुं सारु छे।

: १७५ :
अ

२०–८–३४

चि. जमनालाल,

काले विनोबा रवाना थया पछी दा. जीवराजनो सुंदर तार मळ्यो। तेथी जाण्युं के पाछो लोहीनो उपद्रव न हतो ने दुःख पण ओछुं थयुं हतुं। तोय विनोबा भले त्यां डुबकी मारी जवा गया। तेना आववामां कारण कमलनयन छे ए तो जाण्युं हशे। कमलनयन पोते तमारुं शनीवारनुं दुःख जोई गभराएलो एटले अहिं पहोंचतांज महादेवनी मारफत मने कहेवराव्युं। में सूचना वधावी विनोबाने खबर मोकली ने विनोबा तुरत तैयार थया। मदालसाए इच्छा करी। पण ए तो भक्त रही एटले विनोबानी इच्छा जाणी रही गई। एनो संयम एने फळशे। भले रही। हवे जो दुःख शम्युं होय ने चित्त शांत होय तो विनोबाने वहेला मुक्त करी मूकजो। पण जरूर होय त्यां लगी तो छो रोकाय। अहिंनुं तंत्र गोठवाई रह्युं छे। रात दिन तेमांज विनोबा गुंथाएला रहे छे।

विद्याभ्यासने विषेनी तमारी प्रतिज्ञानुं पालन थशेज। आटलुं तमारा आश्वासन सारु लखी नाख्युं छे। एनी चर्चा विनोबानी साथे करवामां न पडशो। तमारी अत्यारनी साधना शरीर झट सारुं करी मूकवानी छे। अहिंनी के बीजी एक पण चिंता व्होरवानी नथी। मारी तो नहिंज केम के मारुं गाडुं बरोबर चाली रह्युं छे। राधाकिसन अने शीवाजी चोकी सरस रीते करी रह्या छे। तमे बहु नहिं बोलता हो। दाक्तरो छूट आपे तेनो उपयोग कंजुसाईथी करवामां हित छे। दाक्तरो इच्छे ते धर्म विरुद्ध न होय तो करीए आपणी इच्छाने वश थई कंई छूट आपे ते नोखी वात छे।

बापुना आशीर्वाद

जाजूजी गळी गया। खबर आपी गया। मदनमोहनने मोकलवानी जलद उतावळ न करशो। अहिं कोईने कशी तकलीफ नथी। ए खचीत मानजो।

: १७६ :

२१–८–३४

चि. जमनालाल,

तमारे विषे काले तो सुंदर खबरज मळता रह्या। सांजना दा. जीवराज अने रजबलीनो संयुक्त तार मळ्यो। हवे जो एम प्रगति चाल्या करे तो

झपाटा बंध सारु थवुं जोईए। पण उतावळ नथी करवी। जेम चालतुं होय तेम भले चाले। कामोमां खूंचवानी उतावळ न करशो। ओमने कहेजो आजे बिल्कुल त्यांथी टपाल नथी। कदाच आजे तार आवशे।

दा. रजबअलीने मारा वंदेमातरम् वि. कहेजो। तेनी चीवटने सारु हुं शुं कहुं ? दा. जीवराजने सारु एक कापली साथे छे।

बापुना आशीर्वाद

: १७७ :
अ

२३-८-३४

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ, ओमनो ने जानकीमैयानो तथा मदनमोहननो मळ्या। विनोबा पासेथी खबर सांभळ्या ने हमणा दा. शाहनो तार मळ्यो। एटले हवे तो एमज धारीये के थोडा दीवसमांज बधुं रूझाई जशे। पण हवाई किल्ला न बांधशो। धीरजथी त्यांनुं पूरुं करजो। कोई जातनी उतावळ नथी। फिकर नथी। अहिंतो राधाकिसन बधी वस्तुने पहोंची वळे छे। ने मारी रखेवाली तो ते अने बीजा घणा करी रह्या छे।

जे वाक्यनी पाछळ 'विनोद' लखवुं पडे ए विनोद कहेवाय के? बाकी जानकी-मैया बराडां पाडे ए सारुं के तमे मनमां बधुं दबावीने स्वप्नां सेवो ए सारुं। जानकीमैया बराडां पाडे एटले तो समजीये के दुःख भोगवे छे। तमे मनमां समजी लो एटले छेतराई जईए। कहो हवे कोण चडे ?

बापुना आशीर्वाद

: १७८ :

२५-८-३४

चि. जमनालाल,

तमारुं काम ठीक घोडा वेगे चाली रह्युं जोउं छुं। मांदा बधा बादशाही भोगवेज ना ? एटलो मांदगीनो स्वाद छे। पण बिचारा दरिद्रनारायणने भागे ज्यारे मांदगी आवे त्यारे तेने भागे तेनो स्वाद नथी आवतो।

आ साथे दा. शाहनो कागळ छे। ओमनो तो छेज।

अहिं बधुं बरोबर चाली रह्युं जणाय छे।

बापुना आशीर्वाद

: १७९ :

वर्धा,
२६-८-३४

पूज्य जानकीबेन,

तमारा कागळो बे अहीं आवीने पडेला, पण हुं तो अल्लाहाबाद गयो हतो त्यांथी काले आव्यो एटले त्यारेज बधा कागळो जोवाने मळ्या। भाई मदनमोहनना कागळनुं पण एमज थयुं। शेठजीनी तबीअत घोडा वेगे सारी थती जाय छे ए जाणीने अपार आनंद थाय छे। तमारा जेवां ज्यां सेवामां होय त्यां बीजुं शुं परिणाम आवे? वेपार अने शादीमां हाल लक्ष न आपे तो सारुं। संपूर्ण आराम थई गया पछी वेपार अने शादी तो पड्यां छेज, भागी जवानां नथी। विनोबाजीने एम लागतुं लागे छे के एमनो फेरो नकामो हतो। मने तो लागे छे के ए त्यां आवी गया ए सारुं थयुं। एमने मोकलवानी इच्छा कमलनी हती पण कमलनी इच्छा उपरथी आग्रह बापुने में करेलो। मारा अनेक प्रणाम शेठजीने कहेशो अने मारा तरफथी आग्रह करजो के चारथी पांच विझिटरने मळवानो जे समय राख्यो छे तेमां पण केवळ तबीअत सिवाय बीजी वातो न करे, अने मात्र छापां वांचे पण छापांनी वातोनी चर्चा न करे।

तमारे पोते पण बरोबर जेलर बनवुं जोईए अने शादी अने वेपारवाळा "वेपारी" ओने ताकीद करवी जोईए के एवी वातोनी चर्चा करशो तो रजा आपवामां आवशे। एटलुं करवानो तो तमने 'नर्स' तरीके पण अधिकार छे।

जवाहरलालने हुं टांकणेज मळी आव्यो। एक दिवस मोडो गयो होत तो न मळी शकत। कमळा नेहरूनी तबीअत तो हती तेवीने तेवी छे। ए कांई बहु दहाडा काढे एम लागतुं नथी। जवाहरलालनी हिंमतनो तो पार नथी। एमनी साथे मारे खूब वातो थई, पण ए विषे शेठजीने हमणां कशुं नहीं कहुं। सारा थाय त्यारे।

मदनमोहनने अने ओमने जुदो कागळ लखवानो समय नथी।

लि.

तमे बे ओरडा राख्या छे ए जाण्युं। पण तेथी त्यां नाहकनो गडबडाटो न करशो, अने हाट न भरशो। घणा सेवक सेविकाओ थई जाय तो तेथी पण दरदीने त्रास थाय ए तमने कहेवानी जरूर न होवी जोईए।

: १८० :

अ

वर्धा,

८–९–३४

चि. कमलनयन,

तमारा कागळ आव्या करे छे ने खबर तो मळयाज करे छे। ईश्वरनो पूरो अनुग्रह लागे छे के दाक्तरोनी धारणा करतां पण जलदीथी रूझ आवी रही छे। मुद्दल उतावळ करवी नथी। साव रूझ आवी जाय त्यारेज खसवानुं छे। सिंहगढनो विचार मने गमे छे। महेतानी मदद पण मळया करशे। सिंहगढनी हवा तो उत्तम छेज। पाणी खूब हळवुं छे। एटले पूरो लाभ मळशे। दूर पण न कहेवाय।

वातो बहु न करशो। करवी पडे ते पण पूरो अवाज काढीने नहिं पण खूब धीमे सादे। अवाज करवानी असर कान उपर थया विना रहेतीज नथी।

दाळ अने भात छोडवां एथी घणो लाभ थशेज। दूध उपर आधार वधारे राखजो। दहिं खाटुं मुद्दल न होवुं जोईए। रजा मळती जाय तेम कसरत खूब वधारजो। चिंता तो मुद्दल न वेठवी। आम करवाथी कानना फायदानी साथे मगज पण ताजुं थई जशे।

मालवीजी आज आव्या। राधाकांत पण छे। असफअली ने खलीक आव्या। बीजाओ काले आवशे।

खानभाई खुश रहे छे। रोज सवारे फरती वखते ने सांजे बेसीने ४–५ नो वखत आपुं छुं। धीमे धीमे वातो थाय छे।

मारे विषेनी पगलीनी वात तो सांभळी हशे। ते विषे तमने उतारवा नथी मागतो पाछळथी साव सारा थाओ त्यारे टीका करवी होय ते करजो। मने तो लागे छे के तमने वधुं गमशे।

ओम मारी पासेज रहे छे। जोईती मदद करे छे। चार खरुं जोतां पांच छोकरीओ वच्चे एक छोकरी के बेनुं काम वेचाई गयुं छे एटले सहुने भागे थोडुं दोडुं आवे छे। प्रभावती थोडुंज बीजीओने घणुं करवा देय एम छे वळी मदालसा नो काम लेवा आवेज छे।

राधाकिसन तमारी भलामणोने लीधे एवो चिंतित रहे छे के मारी उपर चोकी बरोबर राखतो छतां गभराया करे छे। हुं वहेलो तो उठुं छुं। वधारे सुवानी जरूर नथी रहेती ने मारुं काम उकले छे तो हळवो रहुं छुं। वजन हवे धीमेज वधशे। खोराकमां वधारो करवानी स्थिति नथी। छे तेथी धीमुं वधशे। तेज सारुं छे। शक्ति वध्या करे छे। दीवसना उंघी लउं छुं। राते ८-४५ मोडामां मोडो ९ वागे खाटलामां होउंज। एटले मने मारी तबीयत बाबत कंई कहेवापणुं नथी राख्युं। तमे आवशो त्यां लगी ने त्यार पछी पण अहिं पडयोज छुं। विना कारणे अहिंथी चसवानुं नथी।

एंडरूझ पाछा रविवारे आवे छे।

कुमारप्पा २० दीवसनी रजा लईने आव्या छे। पाछा तुरत एने मोकली दईश। अहिं मंगळवारे आवशे।

कन्याओनुं ठीक चाली रह्युं जणाय छे। विनोबाज बधुं जोया करे छे। एटले मारे कशामां हाथ नाखवापणं छेज नहिं।

बापुना आशीर्वाद

आसाम बाबत रही गयुं। कांग्रेसना माणसोने जाणता हो तो तेने आसामना पैसा मोकली देजो। जो तेने न जाणता हो तो ज्वालाप्रसादने मोकलो। मारवाडी रिलीफ त्यां काम करे छे। तेमां आ रकम भळे। तमने जेम ठीक लागे तेम करजो।

: १८१ :

२१-९-३४

चि. जमनालाल,

भूमित्रानी आंखने विषे (अहिंना) दाक्तरे हाथ धोया ने मुंबई तुरत मोकलवानी भलामण करी तेथी नर्मदाबहेन साथे तेने मोकली दीधी छे। मणिभुवनमां उतरवानुं कह्युं छे। दाक्तरनी ओतनो बोजो सरदार उपर नाख्यो छे। तमारे चितानुं कारण नहिं रहे। पण तमने तओ मळी जशे।

तमारुं आववानुं लंबाय छे तेनी फिकर नथी। दाक्तर सान निर्भय करे त्यारेज आवजो। त्यां लगी अहिंनो बोजो कंईज न देखशो।

मदनमोहन घणे भागे तो आजेज नीकळशे। खानभाईओनुं बरोबर चाले छे। नानाभाई रंटीयो शीखी रह्या छे। मोटाभाई जोन्स अने काकानी खबर राखे छे। कशी चिंता तेने विषे करवापणुं नथी। राधाकिसन काम करवामां बहु जबरो छे।

खावामां सूचवेलो नियम जाळवता हशो। वजन केटलुं रहे छे? घनश्यामदासनुं ओपरेशन बंध रह्युं शुं?

बापुना आशीर्वाद

: १८२ :

(सितंबर, १९३४)

चि. जमनालाल,

माधवदास बाना भाईने रू. ५०० (आप्या) हता ए तमने याद हशे। तेने तो ए मळी गया। तेमांथी ३२५ ठ. बा. पासेथी ए वखते अपाव्या हता। बाकीना दुकानेथी उपडचा जणाय छे। हवे आ रू. ३२५ ठ. बा. ने पहोंचाडवा जोईए। आ हुंडी तेने मोकलावजो। विगत 'गांधीने ३२५ मुंबईमां आपेला ते चुकते हिसाबे'।

हवे मदनमोहन विषे। मारा मनमां हतुं ए आजेज तमारी तरफ आवशे। हवे एम नहिं बनी शके। विनोदमां तो खरुं पण खानभाईओए मदनमोहननी हाजरीनी जरूरत मानी जणाय छे। तेनी पासे कंई लखाववानुं करावे। अने ज्यां जवुं पडे त्यां जाणीतुं कोई होय तो तेने गमे। जो त्यां मदनमोहननी जरूर खास न होय तो हमणा ते भले अहिंज होय अथवा तमने कोई बीजुं ध्यानमां आवे तो जणावजो। नहिं जणावी शको तोय अने मदनमोहननी त्यां जरूरज होय तो मोकली दउं। काले तेओनी साथे वात तो करीशज। मनहरसिंह विषे तमने राधाकिसने लख्युं हशे।

बापुना आशीर्वाद

राजेन्द्रबाबु सोमवारे अथवा मंगळवारे आवे छे। एंडरूझ पण त्यारेज।

: १८३ :

अ

वर्धा,

२७-९-३४

चि. जमनालाल,

बल्लभभाई खबर आपे छे के तमे ... मां कापडनी मिलनो सोदो करवा ्च्छो छो।¹ तमे एटले पेढी। मने तेनो आघात तो पहोंच्योज। जे आटले उंडे ादीमां उतर्या छे ते मिलना मालेक थाय ए अणघटतुं लाग्युं। छतां कंई लखवुं ्म निश्चय न करी शक्यो। तेटलामां काले जानकीमैया आव्यां। मध्यमानी रीक्षा आपी छुटयां छे एटले मन मोकळुं थयुं छे। तेणें सांभळ्युं छे त्यारथी ाने चेन नथी पडयुं। 'आ वला कोने सारु हशे?' एम पूछे छे। छोकरांओ ण पसंद नथी करता। नोकरो कहे छे 'चालो हवे तो घरनी मिल थशे एटले वे शेठ थोडाज खादी पहेरवानुं कहेशे?' आ पगलुं कोईने गम्युं नथी एटले मल मांडी वाळजो। लेवाई होय तो भागवलाथी करजो। भागीदारोने ्वी होय तो सुखेथी लेय। तमारे धंधोज जोईए तो घणाय बीजा पडया े। अने परोपकारने अर्थे वधारे कमाणी जोईए तो ए परोपकार विना ालावशुं। ओम कहे छे, 'तमारे कांगरेस सारु पैसा जोईए छे एटले काकाजीने मल लेवा प्रेरो छो कां?' आ बधाने जवाब शो दउं? तारथी देवाय तो मांडी ाळयाना खुश खबर तारथी देजो।

बापुना आशीर्वाद

१. जमनालालजी कई कारणोंसे (जिनमें एक मुख्य कारण यह भी था कि जदूरोंकी स्थिति गांधीजीके आदर्शके अनुसार रखकर मिलका संचालन क्यों न किया ाय) अपनी कंपनीकी तरफसे एक कपड़ेकी मिलका सौदा करनेको किसी प्रकार जी हो गये थे। पर उनके मनमें दुविधा बनी रही। जमनालालजीकी डायरीसे ता चलता है कि मिल न लेनेका अंतिम निर्णय इस पत्रके पहुंचनेसे पहले ही वे र चुके थे।

: १८४ :
अ

Replied

ચિ. જમનાલાલ,

તમારા કાગળો મળ્યા છે.

મિલની ઉપાધિમાંથી છૂટ્યા એ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

અહિંનું ચાલી રહ્યું છે
કમલાને કાગળ લખ્યા કરતી હશે.
હમણાં તો ત્યાં ખુરશેદબેન છે.
તેને લખો તોય ચાલે.
૫/૧૦/૩૪ વર્ધા બાપુના આશીર્વાદ

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

वर्धा,
५–१०–३४

चि. जमनालाल,

तमारा कागळो मळ्या छे। मिलनी उपाधीमांथी ठीक बच्या। ए बाबनी धास्तिथी जानकीमैयाना अने छोकरांओना मानसनो सुंदर अनुभव मळ्यो। बधा व्याकुळ थई गयां ए मने अत्यंत सुंदर लाग्युं। ए वृत्ति कायम रहे ए आपणे सदाय मागीये।

त्यांथी दाक्तर साव मुक्त न करे त्यां लगी चसवानुंज नथी।

थशे एटली वातो अहिं करशुं। बाकी कांग्रेसमां ने त्यार बाद। कांग्रेस बाद तुरतमां तो वर्धाज पाछा आववानुं थशे। कांग्रेस पछी तुरत कंई नवुं करवानुं विचारी मूक्युंज नथी। एनो विचार तो अहिंज थशे।

अहिंनुं चाली रह्युं छे।

कमलाने कागळ लख्या करता हशो। हमणा तो त्यां खुरशेदबहेन छे तेने लखो तोय चाले।

बापुना आशीर्वाद

: १८५ :

७–११–३४

चि. जमनालाल,

तमारी चिट्ठिओ आव्या करे छे। कानमुं काम पती गयुं न गणाय। मने वधारे विगत मोकलजो। सारुंज थयुं के तमे त्यां देखासर पहोंच्या छो।

मगज उपर कामनो बोजो पडवा न देशो। कामनी दृष्टिए तमारुं मुंबईमां रहेवुं मने गमतुं नथी। सेंकडो माणसो त्यां आवजा करता हशे। चिंता तो कशी नज वेठशो।

महिलाश्रमनो विचार न करशो। ए बाबत हुं विचारी रह्यो छुं। राधा-किसन तो तेमां परोवाई रहेल छेज। भागीरथीनी साथे वातो करी छे। फर्गा करीश। तेने (संस्थाने) पडवापणुं नथी।

ओमने विषे हुं थोडी चिंता वेठी रह्यो छुं। जे करो ते तेने पूछीने करजो। आ साथे तेनो कागळ छे।

सतावीसमीए गांधी सेवा संघनी सभा हजु कायमज छे के? तेमां फेरफार करवो होय तो करजो। जो त्यां वधारे रोकाण थाय ने दाक्तर एक अठवाडीयानी रजा आपे तो अहीं आवी ते मीटींग करी लेजो।

फरवा जवानुं राखो छो के? खावामां सावधानी छे? काचर कुचर खाता हो तो ते छोडजो। ए हजम करतां मगजनी शक्तिनो सारी पेठे क्षय थाय छे। खुल्ली हवा ने कसरतनी बहु आवश्यकता मानजो। निद्रा तो बरोबर लेवाती हशे।

खानसाहेबना दीकरा गनीने शुगर फेक्टरीमां काम करवानी इच्छा थई छे। हमणा पगारनी वात नथी। तेने घडवानीज वात छे। कोई ठेकाणे तेने अनुभव आपी शकाय तो आपवानी जरूर छे। विचारीने लखजो।

बापुना आशीर्वाद

: १८६ :

वर्धा,
११-११-३४

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो छे। कान......रहेल छे। हवे कंई बाकी न रहेवुं जोईए।

त्यां मळवा आवनारने बंध करवाज जोईए। मगजने खाली नज करवुं घटे। तेने अंगे मौन लेवुं घटे तो मौन लेवुं। वात करवी ते मात्र दाक्तरने अंगे। सेवकोने पोतानी हाजत पूरतुं। आवुं कंईक कर्या विना मुंबईमां तमारे शांति जाळववी मुश्केल छे। अने उपचार तो त्यांज थई शके। आ वात न भूलाय तो सारुं। * * * * * *

मदालसा ठीक छे।

गनीने बरोबर वात करीनेज मोकलीश। खानसाहेबने तमारो कागळ वंचाव्यो हतो। ए तमारा मतने मळे छे। एटले गनी निष्फळ जशे तो तमारो वांक नहीं काढे। गनी साथे वात करीने ... ... लीधी छे। ए सम ... ... हमणा पगार आपवानी ... नथी।

मीराबहेन त्यां २१ मीए ईटालीयन बोटमां पहोंचे छे। २२ मीए अहिं आवशे। खानसाहेबनी दीकरी एनी साथे आवे छे। रामदास ने बा जाजुजीवाळा मकानमां छे। आशा तो छे के ठीक थई जशे। आजथी तेने ईंडां देवानुं शरु कर्युं छे। दुबळो तो सारी पेठे थई गयो छे।

कुमारप्पा ने शीवराव आव्या छे। आजे वातो शरु करी छे। हमणा तो मेरीने नथी बोलावतो। तमारी एने विशे शी कल्पना छे?

बापुना आशीर्वाद

: १८७ :

१२-११-३४

चि. जमनालाल,

तमारुं काननुं लंबायुं ए गमतुं नथी। में दाक्तरोने कागळ लखाव्या छे।

जयप्रकाश मांदो लागे छे। ते प्रभावतीने अहमदनगर लई जवा इच्छे छे। जो ते जाय तो हमणाज जाय ए आश्रमनी दृष्टिए वधारे ठीक छे। एटले जो जयप्रकाश इच्छे ने तमे रजा आपो तो विनोबानी रजा लईने तेने त्यां मोकली दउं। आजे पण ते पूरी काममां रोकाई गई छे।...........

....

बापुना आशीर्वाद

: १८८ :

वर्धा,
१२-११-३४

मान्यवर जमनालालजी,

आज बापूजीने प्रभावतीके बारेमें आपको एक पत्र लिखा है। उसमें वह लिखना यह चाहते थे कि अगर जयप्रकाश प्रभावतीको मुंबई बुलाना चाहे और आपकी सहमति हो तो आपसे खबर पाने पर प्रभावती विनोबाजीकी इजाजत लेकर बंबई रवाना हो सकेगी। परन्तु यह बात अहमदनगर जानेको लागू नहीं पड़नी थी। अगर उनके पत्रमेंसे कुछ दूसरा मतलब निकलता

हों तो उसमें सुधारकी आवश्यकता है। उनका ठीक हेतु वह है जो मैंने आपको लिखा है।

भवदीय

[signature]

: १८९ :

वर्धा,
१८–११–३४

चि. जमनालाल,

तमारा काननी चिंता फीकर .... तेने विषे विचार करवो पडे छे एटलुंज । ए शुं थयुं छे ए समजातुं नथी । दुःख नथी फिकर नथी । अंधारुं लागे छे । ते वीखराय एटले संतोष । बाकी तो जे थवानुं होय ते थाओ । बन्ने डाक्तरोने कागळ लखाव्या एना उत्तर सरखाय नथी ए केम ?

हवे वात उद्योग संघ......। मारुं स्मरण एवुं छे के मगनलाल स्मारक सारु तमे जे (नीमीत्ते) मकान निरधार्यां हतां ए विषे हाल तमे शुं इच्छो छो–ते हुं जाणतो नथी । ...... ए स्मारक आ कल्पना साथे योग्य...... एम जोउं छुं। दरेक गामडे......केम के वर्धामां घणे .... प्रदेशमां गामडांज, वहुज ....हवा सारी छे । हिंदुस्ताननुं मध्य भूगोलनी दृष्टिए छे । रेलनी सगवड छे । आ दृष्टिए वर्धा गमे छे । तमे अहीं छो। ए लालच पण खरी । तमने वचमां नथी राखवा। छतां तमे बधा तो छोज । एम गणी वरतीं रह्यो छुं। आ दृष्टिए विचारी जे धारो ते लखजो ।

गनी बाबत रामेश्वरनो तार छे। ....

[signature]

मारा कागळ ....

: १९० :

१९–११–३४

चि. जमनालाल,

तमारो जन्मगांठनो कागळ मळ्यो । तमारुं कुशळज छे। तमारे घणुं जीववुं छे ने घणी सेवा करवीज छे। वर्धाना बगीचाने[1] बदले राधाकिसन पासेथी सस्ती जग्यानी खबर मेळवी छे। ते चाले एवी छे।

[signature]

१. मगनवाडी।

: १९१ :

अ

वर्धा,

२२-१२-३४

चि. जमनालाल,

तमारा कानने विषे हजु केम खबर नथी ? किशोरलाल ने गोमती खाटले पड्या छे। गोमती ठीक छे। किशोरलालने हजु ताव छे। छतां उतार उपर छे। उद्योग संघने बगीचे लई जवानी तैयारीओ थई रही छे। मकान उपर बे कोटडीओ बांधवानी योजना छे। एक बांधवानी वात राधाकिसन लाव्यो हतो। हवे बेनी चाले छे। लगभग रू. २००० खर्चवानो सवाल छे। ए करवुंज जोईए एवुं कंई छे नहीं। एनो खरो उपयोग चोमासामां होय। दीवसना तो हुं नीचे पड्यो रही शकुं। राते अवश्य उपर सुवा जाउं। उपरनी कोटडीओ भविष्यनी दृष्टिएज बंधाय। वात नीकळी एटले हुं हा पाडवाने ललचायो। तमे ना पाडी देशो तो काम पती जशे ने रू. २००० बची जशे। हवे क्यां तमारा रह्या छे ? आ लखतांज विचार आवी जाय छे के मारेज दृढतापूर्वक उपर बांधवानी हाल तो मनाईज करवी जोईए। एमज थशे। एटले आ लखेलुं रद समजजो।

सरूपराणीनी वती कृष्णा पाछी प्रभानी थीमी मागणी करे छे। में तो लख्युं छे के प्रभा एवी रीते गोठवाई गई छे के एने एम मुक्त न करी शकाय। पण त्यांथी बीजी कोई सारी बाईने मोकली शकाय। एने साथी जोईए एवी कोईक मळी रहे एम मानुं छुं। तमारी हिम्मत चाले तो तमे सरूपराणीने संतोषजो। नहीं तो मारी पासेज वात रहेवा देजो।

बापुना आशीर्वाद

: १९२ :

वर्धा,

२४-१२-३४

चि. जमनालाल,

गंगाधरराव बाबत तमारो कागळ मळ्यो छे। ए प्रश्न मुश्केल छे। एम पैसा न अपाय एम मने लागे छे। पण गंगाधरराव साथे वात कर्या विना निर्णय न आपी शकुं। एमने हुं लखुं छुं। आवी मतलबनोज कागळ जशे।

गंगाधरराववनो कागळ आ साथे पाछो मोकलुं छुं।

कान साव दुरस्त कराव्वी लेजो।

कमलनयनने कोलंबो जवा देवानी वातथी तो वाकेफगार हशोज।

अबदुल गनी विषे खानसाहेब साथे वात करी छे। तेओ गनीने लखशे। खर्च जे थशे ते पोते आपवानुं कहे छे। गनीने तेना काकडा सारु दिल्ली बोलाव्यो छे। खानसाहेब त्यां जई शकशे के नहीं ए नक्की नथी। पंजाबमां पण न जवाय एवो हुकम छे। दिल्ली जतां कंई पंजाबनां स्टेशनो वच्चे आवे छे एमां थईने जवाय के नहीं ए सवाल छे। पंजाब सरकारने तार कर्यो छे।

मदनमोहन होय तो कहेजो के सरहदना तेना अनुभव लखी मोकले। मारी साथे वातज न थई शकी।

बापुना आशीर्वाद

ए हुकम रद थई गयो एवो तार आजे आवी गयो।

: १९३ :
अ

२६–१२–३४

चि. जमनालाल,

तमे हमणा बे कोटडी चणवानो आग्रह न राखो। में समजपूर्वकज ना पाडी छे। बधुं ट्रस्टज छे ना? कोडी कोडी करीने बचावीये त्यारेज बरकत रहे। भले खानगी पेढी हो के दरिद्रनारायणनी। द. ना. नी पेढीमां तो वळी वधारे सावधानी जोईए। मगनलाल स्मारकने विषे नथी घडी शक्यो। बनता लगी तो घडीश।

अभ्यंकर बची जाय तो बहु सारु थई जाय। तेने मळो त्यारे कहेजो तेने खूब याद करुं छुं।

खानसाहेब मारी साथे दिल्ली आवे छे। महेर तो हशेज। महेरनुं पण ठीक चाले छे। हमणा अंहि आनंदना बाप अने वैकुंठ महेता छे। आनंदना बाप दुनियानी मुसाफरी करी आव्या छे। उद्योग संघमां खूब रस लेशे।

बापुना आशीर्वाद

: १९४ :

दिल्ली,
२९-१२-३४

प्रिय जमनालालजी,

आजे सवारे दिल्ली पहोंच्या। बापुने अहींनुं झुंपडुं तो महेल जेवुं लाग्युं अने ठीक उकळचा। पण हवे नभावी लईशुं।

आ तो खास अभ्यंकरने माटे बापुनी सूचना छे। डा. पुरुषोत्तम पटेल अहीं मळवा आव्या हता। तेमणे कह्युं के एमने ओपरेशन विना ट्रीट करवा ए मुश्केल वात नथी अने ए पोते बधुं करवा तैयार छे, पण डा. देशमुख कहे नहीं त्यां सुधी शुं थाय? बापु कहे छे के तमेज पुरुषोत्तमने लईने अभ्यंकर पासे जजो। देशमुखने पण वात करजो अने उपचार थई शके तो करजो। संभव एवो छे के एमनुं ओपरेशन थाय तो एमना जीवनुं जोखम थाय। हवे एवी वात नथी के ओपरेशन न थाय तो मृत्यु निश्चित छे अने ओपरेशनज एने बचावी शके एम छे।

जे करवुं घटे ते करशो। डाक्टर पुरुषोत्तम आजे अहींथी नीकळे छे।

लि. सेवक

महादेव देसाई

: १९५ :

दिल्ली,
७-१-३५

चि. जमनालाल,

दिल्लीनी टाढ वधारे काम करावावाने बदले थोडुं करवा देय छे ने आवी पड्युं छे सारी पेठे। अभ्यंकरनुं तमे लखो छो एमज थयुं छे। एनी खोट जणाशेज।

तमारा कानने साव सारो थतां ठीक समय जतो जणाय छे। नज सावो शकाय तो कंई हरकत नथी। कानना सारा थवामां हरकत नज आववी जोईए। कमलनयनने हमणा ज्यां लगी सीलोनमां मलेरियानुं जोर चाले छे त्यां लगी न मोकलाय।

ओमनो कान वह्या करे छे। में गये अठवाडीये मुंबई जई बतावबानो तार कर्यो हतो। ए हजु त्यां आवी नथी लागती। एने तेडावीने देखाडो तो सारुं।

लालीनुं तो चाल्युं।

महेरनुं कठिन छे। आवी ते दीवसथी दा. अनसारीने त्यां छे। एक दिवस मोटुं देखाडी गई हती। आश्रम प्रति घृणा पेदा थई छे। अहींज राखी जवी पडशे। ठीक छे के दा. खानसाहेबनी धर्मपत्नी आवे छे। तेनी साथे कदाच रहेशे। मारी इच्छा तो २२ मीए वर्धा पहोंचवानी छे। २९ मीए तो जरूर। आज शंकरलाल अने गुलझारीलाल आव्या छे।

बापुना आशीर्वाद

पोताना कागळीआ वि. तपासवा लाववा रामदासनो विचार बारडोली लखनर जई आववानो छे। भाडा वि. ना पैसा आपजो।

बापु

देवशर्मा मळी गया छे। ते कहे छे के जे खर्च आजे शैल आश्रममां थाय छे तेटलुं तेने मळे तो ते कबजो लेवा तैयार छे। आ बाबत लखजो।

: १९६ :

DELHI,
12-1-35

JAMNALAL,
BIRLA HOUSE,
MOUNT PLEASANT ROAD,
BOMBAY

Just learnt Swaruprani unconscious. Send full details.

—*Gandhi*

: १९७ :
अ

दिल्ली,
१४-१-३५

चि. जमनालाल,

तमे नहीं आवी शको ए समज्यो। दाक्तर न रजा आपे त्यां लगी त्यांज रहेवु सारुं छे। बहु उपाधि नहीं व्होरता।

रामदासने मणी भुवनमां राखवानी मणीलालनी इच्छा मोळी छे, एम रामदासने लाग्युं छे। एटले त्यांथी ते नीकळे ए बरोबरज छे। हवे ए नोखी कोटडी लई रहेवा इच्छे छे। तेनुं भाडुं रू. २५ लगी बेसे ते मागे छे। मने लागे छे के ए तेने लेवा देवुं। बधुं अयोग्य तो गणाय। पण रामदासनो रोगज एवो छे के तेना केसमां अयोग्य योग्य जणाय छे। आमां बापनो मोह क्यां लगी मने आडे दोरतो हशे ए कहेवाय नहीं। रामदासनी आ मागणीमां तमने दोष लागे तो ते प्रमाणे तेने कहेवानो तमे अधिकार वर्षो पहेलां मेळवी चुक्या छो। जेम ठीक जणाय तेम करजो।

सरूपराणीनुं[1] समज्यो। सरूप[2] तार मोकल्या करे छे।

मारे अहीं २५ मी लगी तो रहेवुंज पडशे। २८ मी तो अहींथी रवाना थवानी छेल्ली तारीख छेज।

राजाजी काले लक्ष्मीने लईने आवे छे।

जयप्रकाशने मळो छो के?

बापुना आशीर्वाद

: १९८ :

२६-१-३५

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। खानसाहेब आज अहीं छे तमारो तार वंचाव्यो। ए उपरथी आशीर्वादनो लांबो तार मोकल्यो ते मळी गयो हशे। तमे विवाह योजवानी विशेषता ठीक केळवी रह्या जणाओ छो। आ विवाह तो इतिहासमां रही जशे। बिचारी सुफीआए कदी नहीं धार्युं होय के ते पठाणने परणशे। नहीं धार्युं होय सादुल्लाए के ते खोजीने परणशे। तमारी पसंदगी मने तो बहु गमी छे। बन्ने सुखी थशे ने सुफीआ धारे तेटली सेवा करी शकशे। अमे बधा मंगळवारे वर्धा पहोंचशुं। साथे कोई नवा तो नहीं होय। चंद्रत्यागीना बळवीरनी साथे सगाई थएली। एक भली छोकरी छे। बन्ने मेरी तो बेतुल उतरी जशे।

सरदार, राजाजी, राजेनबाबुने आठ फेबरवारी लगी रोकावुं पडशे एम जणाय छे। एटला लगीमां बिल उपरनी चर्चा थई जशे।

कमलनयन सीलोन जवा अधीरो थयो छे पण जरा थोभवानी जरूर छे।

बापुना आशीर्वाद

१. श्री. स्वरूपरानी, श्री. मोतीलाल नेहरूकी पत्नि।
२. श्री. विजयालक्ष्मी पंडित।

: १९९ :

दिल्ली,
२६-१-३५

पू. जमनालालजी,

सार्येनो कागळ लखाया बाद बापुए केटलुंक लखवानुं कह्युं ए लखुं छुं। आजे बनारसथी सुमंगल प्रकाश आव्या हता, एणे बापुजीने खबर आपी के * * ए हवे परणवानो विचार कर्यो छे। एना बापनी पण एवी इच्छा छे के एणे वैश्य ज्ञातिमां विवाह करवो, अने * * ए एम जणाव्युं छे के बापुना आशीर्वाद मळे तो * *नी साथेज ए विवाहमां जोडाय। बापु तो अगाउ आ संबंधनी विरुद्ध हता ते एटलाज कारणे विरुद्ध हता के * * मोटा आदर्शो सेववावाळी हती, पण हवे ज्यारे ए पोतेज कबूल थई छे त्यारे एमां बापुने कशो वांधो होयज नहीं। अहीं वल्लभभाई हता तेओ पण इच्छे छे के आ संबंध तुरत जोडी देवामां आवे।

हवे बापु तमारो अभिप्राय मागे छे। मने, देवदासने पण लागे छे के आ जोडी देवाय तो सारुं। तमारो कागळ आव्ये बापु * *ने लखशे। अमे २९ मी सांजे ग्रांड ट्रंक एक्सप्रेसमां वर्धा पहोंचशुं।

लि. सेवक
महादेव देसाई

: २०० :

२७-१-३५

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो छे। कानमां केम आम थया करे छे? दाक्तर शुं कारण बतावे छे? सुकी हवामां जवानी जरूर छे? खावापीवामां ने कसरत आराममां नियम जाळवो छो के? मने वर्धा विगतवार लखजो। हमणा वर्धा न अवाय तो कंई हरकत नहीं। कागळथी काम चलावशुं।

वल्लभभाई, राजा वि. ए हमणा अहीं रहेवुं पडशे एटले तमारी बे सभाओ मुलत्वी रहेशे। चर्खा संघने सारु शंकरलालने बोलावी जरूरनुं काम उकेलजो।

बापुना आशीर्वाद

: २०१ :

३०-१-३५

चि. जमनालाल,

तमारा कागळो अहीं पहोंचतां मळ्या छे। तमारो कान तो बहु कनडगत करी रह्यो छे। अहीं सहु चिंतित छे। घनश्यामदास पण चिंता वेठे छे। एने एना कलकत्ताना यहुदी दाक्तर उपर भारे विश्वास छे। एनुं ऑपरेशन नीवडच्युं जणाय छे। तेथी पण ते आग्रह करी रह्या छे के जो कान झट सारो नज थई शके तो तेना दाक्तरनी सलाह लेवी। में तो दा. जीवराजने खुलासा-वार पुछच्युं छे। तमे पण विचारी लेजो। मुदतो पडचा करे छे ए गमतुं नथी। तमे पोते इच्छो छो के जानकीदेवी त्यां आवी जाय? तेनी इच्छा काले राते थोडी घणी जणाई। तेने एम पण लाग्युं के कदाच तमे तेनी हाजरी इच्छता हो। एम होय तो ते आववा इच्छेज। में तमारा आ कागळना जवाबनी वाट जोवानुं सूचव्युं छे। आना जवाबमां तार करवो होय तो करजो। दरदनी बधी विगत जणावजो।

हमणा तो हुं अहींज छुं। तमे हमणा अहीं आववानो विचार मांडी वाळजो। ज्यारे दाक्तर निश्चित पणे रजा आपे त्यारे आवो।

खावानी बाबतमां मारुं मानो तो सारुं छे। दूध, फळ, थुलावाळा आटानी रोटली, भातनो, पटेटां वि. नो त्याग, भाजीओनुं सेवन। गमे त्यारे काचर कुचर न खावुं। नीमेला वखत बहार खावानो आग्रहपूर्वक त्याग। एकी वखते होजरी उपर जेम ओछो बोजो पडे तेम सारु। खावानी बाबतमां दाक्तरोनो अभिप्राय बहु मानवापणुं नथी। तेओनो अनुभव पण आ बाबतमां घणोज ओछो होय छे।

दुर्गाप्रसादना पैसा तो हमणां हुंज मोकलुं छुं। में तो मोकली देवानुं कहीज दीधुं हतुं। मने मुद्दल खबर न हती के तेने मुंबई जवाना पैसाना सांसा हता।

बापुना आशीर्वाद

मेहरताज नज आवी। लाली कदाच देहरादून जशे।

: २०२ :

३०-१-३५

चि. जमनालाल,

सवारना पहोरमां लख्यो ते पछी जानकीदेवीने मळ्यो। तेनो जीव त्यां

आववा उत्सुकतो थयोज छे। एटले काले तार करजोज। हा अथवा ना नो।

(यहां एक पेरेग्राफ छोड़ दिया गया है)

दा. खानसाहेबनो जेलमांथी कागळ छे। तेना तरजुमानी नकल तो आ साथे जशेज।

बापुना आशीर्वाद

खानसाहेबना कागळनो तरजुमो आ साथे जाय।[1]

: २०३ :

वर्धा,
३०-१-३५

मु. प्रिय जमनालालजी,

आपनी तबीअतनी सौने खूब चिंता थाय छे। मने लागे छे के पू. जानकी-बेनने त्यां आववा दो। नाहकनां ए जीव बाळशे अने अहीं पोतानी तबीअत खराब करशे। त्यां हशे तो ए निश्चित रहेशे। अने तमारी सेवा पण करशे।

पेला दुर्गाप्रसादने तो बापुएज मोकलेलो एटला हेतुथी के तमारे एने कशुं पूछवुं होय तो पूछी शको अने एनेज होम मेम्बर पासे चिठ्ठी लईने मोकलवा धारो तो मोकली शको। हवे एना भाडाना पैसा तो अहींथी मोकलाशे।

आजे सोफीआनो कागळ बापु उपर आव्यो छे। ए तो बहु खुश लागे छे अने बापुनी पासे आशीर्वाद माग्या छे। तमारुं रजीस्टर हवे बहु मोटुं थतुं जाय छे। हवे तो मात्र अंग्रेजोना अथवा "गेर हिंदी"ओना विवाह करावबा तमारे बाकी रह्या!

लि. स्ने.

महादेव

: २०४ :

२-२-३५

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ अने तार मळ्या छे। जानकीदेवी आजे नीकळे छे तेनी साथे आ कागळ जशे।

खादीनी बाबत एमने पण समजाव्युं छे। एनी मदद तो मळशेज ए विषे मने शंकाज नथी।

1. यह सूचना पत्र-प्रेषकके लिये लिखी है।

ओमनी चिंता राखवापणुं नथी। मारी पासे राखीश।

जानकीदेवीनुं हृदय नवळुं छे। तेनी तपास करावी लेजो। दवा तो ए नहीं लेय पण शुं छे ए जाणीये। ट्रीटमेंट शी आपवा इच्छे ए पण खबर पडे।

रणछोडभाईवाळा पैसानी रिसीट उद्योगमंदिरवती नारायणदासना नामनी अथवा जे ट्रस्टी होय तेना नामनी कढावजो। ट्रस्टीना नाम हुं भूली गयो छुं।

मारुं तो हमणा अहींज रहेवानुं छे। मच्छरनी मने कशी कनडगत नथी। अगाशी उपर तो कंईज नथी। काल्हे राते वरसाद होवाथी नीचे सुतो हतो। त्यां पण हरकत नथी आवी।

बापुना आशीर्वाद

जानकीदेवीनी साथे मोकळवो।[1]

:२०५:
अ

वर्धा,
६-२-३५

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो छे। डा. जीवराजना कागळथी मने संतोष छे। खोराकनो फेरफार ए सूचवे छे। माखणनुं प्रमाण वधारवानुं कहे छे। तेनी साथे वात करीने वधारवुं घटे तो वधारजो। मने बीक छे के तमे वातो बहु करता लागो छो ने कसरत ओछी। एम होय तो तमारे बन्नेमां सुधारो करवानी जरूर छे। मने विस्तारथी लखजो।

कमलनयन साथे वातो करी छे। मारो दृढ अभिप्राय छे के जो ते राजी थाय तो तेणे विवाह करीनेज विलायत जवुं घटे छे। पण तेनी वहुने ते नज लई जाय। वहुने लई जाय ने अभ्यास करे ए लगभग असंभवित छे। विलायतमां घर संसार मांडवो ए पण अनुचित छे। बन्ने मात्र सहेल करवा जाय तो ए जुदी वात होय। पण अहीं सहेलनो प्रश्न तो छेज नहीं। मारो अभिप्राय आ छे। हमणा सगाई करे। मलेरीया शांत थये कोलंबो जाय। एक परीक्षा तो पास करेज। पछी विलायत जाय। जतां पहेलां लग्न करे। थोडो समय संसार भोगववो होय तो भोगवे। पण विलायत तो एकलोज जाय। विलायतथी आवजा करवी होय ना करे। कमलनयनने कोलंबोनो अनुभव ठीक काम आवशे। तेनुं जीवन हजु अभ्यासी नथी थयुं। ए थई जाय तो कशी मुसीबत नथी रहेवानी।

1. यह सूचना पत्र-प्रेषकके लिये लिखी है।

उद्योग संघमां कायमी छ ट्रस्टी नीम्या छे। तेमां तमारुं नाम नाख्युं छे। ए आवश्यक हतुं। तेथी तमने ऑरडिनरी सभ्य नीमवानी जरूर छे। एनुं फोर्म आ साथे छे। ते भरीने वळती टपाले मोकलजो। एमां संकोचनुं कशुं कारण नथी।

બાપુના આશીર્વાદ

कृष्णदासनी सगाईनो समय आव्यो छे। तमे कोई बाळा ध्यानमां राखी छे? होय तो लखजो।

બાપુ

सभ्यनुं फोर्म आ साथे छे।

: २०६ :

WARDHA,
7-2-35

JAMNALALJI,
SUREE, BOMBAY

If you have confidence may accept Bank offer.

—*Bapu*

: २०७ :

अ

वर्धा,
९-२-३५

मुरब्बी भाई,

आपनो बीजो पत्र काल सांजे पू. बापुने मळ्यो। बापुए लखाव्युं छे के चालतां चक्कर आववानी धास्ती होय तो मोटरमां फरवा जवानुं राखवुं। खुल्ली हवामां मोटरमां बेसीने फरवा जवुं ए चक्कर माटे पण सारुं छे।

ग्रा.उ.सं.[1] ना सभ्य थवानी प्रतिज्ञा विषे पू. बापुए लखाव्युं छे के में तमारे विषे पूरेपूरो विचार करीनेज तमने एना पर सही करवा सलाह आपी छे। म बधाने कह्युं पण छे के हुं तमारी सही मेळवी शकीश। हवे न करो तो तेनी असर खराब थशे। तमारे सही करवामां जराये धर्मभिरु थवानुं कारण छे एम एमने नथी लागतुं। तमे मानसिक त्याग पूरेपूरो करेलोज छे। तमारी mentality गामडानीज छे। एटलुंज आजे एमने माटे बस छे। माटे एमणे आग्रहपूर्वक लखाव्युं छे के हाल तो तमे एना पर सही करीने मोकली देशो।

१. ग्राम उद्योग संघ, वर्धा।

अहीं आव्या बाद तमे ए विषे मारी जोडे पेट भरीने चर्चा करजो अने तमे जो मने समजावी शको अथवा तमने हुं न समजावी शकुं तो मेंबरशिपनुं राजीनामुं आपवामां हुं वांधो नहि उठावुं। मेंबरशिपनुं राजीनामुं आपवानी गमे त्यारे पण आमां छूट छे। तमारा विना आतुं ट्रस्टी मंडळ बनाववुं एमने बराबर लागतुं नथी।

चि. कृष्णदासने संदेशो कहीश।

बाकी बाबतो कालना कागळमां छे। एज लि.

बापुना आशीर्वाद

:२०८:

१४-२-३५

चि. जमनालाल,

राजाजी आवी गया। तमने में केशु विषे लखेलुं तेनो जवाब तमे भूली गया जणाओ छो। मारो पत्रव्यवहार तो चालीज रह्यो छे।

कृष्णदास विषे निश्चित छुं।

रमीबाईनो कागळ आ साथे छे। ठीक लागे तो तेने आपजो।

२०मीनी आसपास तमे आवी जशो तो मने गमशे। पण दाक्तरनी रजा मळे तोज आवजो।

कान साव सारो थई जवोज जोईए।

बापुना आशीर्वाद

गनीना खर्च विषे लखवानुं हुं भूली गयो छुं। तेणे ६० रू. नुं कहेलुं। खानसाहेबे ३० थी चलावे एम इच्छ्युं हतुं। रामेश्वरनो तेने विषे शो अभिप्राय छे? ते कंई काम आपे छे के? तेनी साथे भळे छे?

:२०९:

वर्धा,

२३-३-३५

चि. जमनालाल,

आ साथे बधा कागळीया पाछा मोकलुं छुं। पाटिलनी उपर कागळ पण साथे छे। तमने ते न गमे तो न मोकलशो।

सुचेता भले आवी। मरजीमां आवे त्यारे लई आवजो। आजे प्रार्थना नाम क. आ.[1] जवानुं छे।

बापुना आशीर्वाद

: २१० :

वर्धा,
२४–३–३५

चि. जमनालाल,

मदालसा तमारी साथे काठगोदाम जोडाई जाय ए ठीक लागे छे। मुदलामां एना गुमडानी खबर पण पडी जशे।

राजेन्द्रबाबु विषे व्यवहारिक चीजज करजो। गिरो अथवा वेचाण खत करजो। व्याज राखजो। ओछामां ओछुं राखजो।

भवालीमां तबीयत सारी न रहे तो तुरत छोडजो। कमलाने शाकनी पार-सल ** मोकळता हता। कमला लखे छे ते सारु न होवाथी बंध कर्युं छे। शाक फळनुं तपासजो।

तमारा जवानी खबर सरुपने आपजो।
मारी बाबत जे कहेवुं घटे ते कहेजो।
मदालसानो खोराक ते पोते गोठवी लेशे।

बापुना आशीर्वाद

: २११ :

कँप लखनऊ,
१–४–३५

चि. जमनालाल,

हिन्दी साहित्य सम्मेलनके इंदौर अधिवेशनके 'थैली' मेंसे जो धन संग्रह हुआ हो उसमेंसे रु. १५००० (पंद्रह हजार) मात्र श्री. मंत्री दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा मद्रासको भिजवा देवें।

बापु

[1] कन्या आश्रम।

: २१२ :

वर्धा,
३-८-३५

चि. जमनालाल,

कमलनयन अने पेली कुमारी बन्ने पूर्ण रीते राजी होय, सादाईमां रहेवा तैयार होय तोज संबंध करजो। उतावळ करवानी कंईज जरूर नथी। विवाह कर्या विना कमलनयन पश्चिममां नहीं जाय ए आश्वासन आपणे सारु बस जणाय छे। कमलनयनने घडावापणुं पुष्कळ छे। एने के बाळाने पाछळथी जरा पण दुःख न थाय ए जोवानुं आपणुं काम छे।

जो भवालीमां कमला तमारी हाजरी खास न मागे तो सिंहगढ जाओ ए कदाच वधारे ठीक होय। छतां जोजो। तमारा शरीरनो प्रथम विचार करवानो छे। रस्तामां ...... रह्यो हशे।

कमलनयन इंदोर तो आवशेज त्यारे बधी खबर पडी रहेशे। जो सिंहगढ जवानुं नक्की थाय ने ते पण सम्मेलननी तारीखनी आसपास होय तो इंदोर थईने जाओ ए मने गमशे।

मदालसानुं ठीक चाली रह्युं छे। गंगा शांत छे।

बापुना आशीर्वाद

: २१३ :

वर्धा,
१०-४-३५

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। बधुं बरोबरज थयुं लागे छे। अवश्य ते प्रदेशमां रही जाओ। सगाई बाबत हुं जानकीदेवीने वात करी लईश।

** ना पिता लखशे त्यारे योग्य करीश। तमारो कान तकलीफ नथी देतो ना?

हमणा वधारे नहीं।

कमलाने आशीर्वाद।

बापुना आशीर्वाद

: २१४ :
अ

वर्धा,
१८–४–३५

चि. जमनालाल,

तमारा बेउ कागळ मळ्या। कुमारप्पाने पूछ्युं। ज्यारे आ फॉर्म छपाव्यां त्यारे कांई प्रमुख नहोता निमाया। खजानची तो हताज तेनुं नाम आपवुं जरूरनुं लाग्युं एटले छपाव्युं। मने तो कंई खबर न हती। कागळ पण तमारो कागळ आव्या पछी मंगावीने में जोयो। हवे जे फॉर्म छपावे तेमां फेरफार करवानुं सूचव्युं छे। आमां कंई वधारे नथी।

कमलनयन ठीक छे के सरहदमां पहोंच्यो। तेने वागी गयानुं छापामां छे। पण तेमां कंई लागतुं नथी।

कमलानुं समज्यो। कमलानी इच्छा छे के ते जाय त्यारे मारे तेने मुंबईमां मळी आववुं। हवे तमे त्यां छो एटले मने दोरशो।

कान केम रहे छे ए प्रश्ननो जवाब नथी। आजे ठ. बापा आव्या छे।

बापुना आशीर्वाद

: २१५ :

२३–४–३५

चि. जमनालाल,

कमलनयननी साथे में ठीक ठीक वातो करी लीधी छे। संबंध बांधतां पहेलां जो * * वर्धा आवी जाय तो हुं पण एने थोडी तपासी लउं एम लागे छे। कमलनयनने पण आ वात गमी छे। एटले * * उपर में ए प्रकारनो कागळ लखी आप्यो छे।

तमारो तार मळ्या पहेलांज राधाकिसनने सीकर मोकली चुक्यो हतो एटले तार नथी कर्यो।

काननुं केम?

मदालसाने केम छे?

बापुना आशीर्वाद

: २१६ :

वर्धा,
२७-४-३५

चि. जमनालाल,

कमलनयन अहिंथी अल्लाहबाद तरफ रवाना थयो छे। में * * ने लख्युं छे के ते जो अहीं आवी जाय तो सारुं। संबंध जोडाय ते पहेलां हुं तेने मळी लउं। रामकृष्ण मारी साथे इंदोर आव्यो हतो। तेने त्यांज बे त्रण दीवसने सा रु गुलाबे रोक्यो छे। उज्जेन वि. आसपासनो भाग जोई लेशे। आजे ए बन्ने आववा जोईए।

प्रभावतीनी उपर ब्रजकिशोरबाबुनो कागळ छे। तेणे लख्युं छे के ते कहे त्यारे तेणे बिहार जवुं। एटले रजाना दीवसनी बहार पण जवानुं थाय। प्रभावतीए लखी नाख्युं छे के ते बोलावे त्यारे जवा तैयार रहेशे।

चोधुरी अहीं आव्या छे........तमारी वच्चे शी वात थई...मने खबर नथी। तेना अने वालुंजकरना कहेवाथी समज्यो छुं के तेनी बहुने मेटरनिटी होमनुं काम करवा सारु तेने सो रूपैया आपवा तमे तैयार छो। आ विषे तमारी साथे मने वात थयानुं याद नथी। चोधुरीए मने कहेलुं याद छे। ते वातने आधारे तेनी बहुए पुना सेवा सदनमांथी राजीनामुं आप्युं छे। चोधुरी अहीं आवी गया छे। हवे तेनी बहु आववानी अणी उपर छे। तमारा वाळुंजकरना पत्ता उपरथी एम जणाय छे के तमे कशो निश्चय नथी कर्यो। ए बाईने तमे तो ओळखता पण नथी। हवे आ बाबत तमे शुं इच्छो छो ए लखजो। एनी बहुने हाल तुरत तो बगीचामां राखी शकाय। ......सारु समास कदाच न थाय। मेटरनिटी होम तो बांधवुं पडे। अने ते बगीचामां बांधवानी योग्यता विषे कदाच आपणे विचारवुं पडे। जो ए बाईने राखवीज होय तो हमणा तो सुवावड सारु कां तो जुना बंगलानो कोई उपरनो भाग काढी आपवो जोईए। अथवा नवा बंगलानो ज्यां तमे रहो छो त्यां। ए करतां पहेलां ए सामान्य केसो लोकोने घरे तपासे ने बहेनोनी दवा करे, गामडानी बहेनोने मळे वि.। होम शरु करवा सारु तो खाटला वि. नुं खर्च पण करवुं जोईए। आ बधुं तो तमे आवीने विचारी जुओ त्यारेज थाय। मूळ वात तो ए बाईने राखवी छे के नहीं ए छे। चोधुरीने सो रूपैया ज. संघमांथी न अपाय। संघ तेने वधारेमां वधारे दर मासे रू. २५ आपी शके। केम के तेनी किम्मत कागळोना प्रयोगोज करवा पुरती होय।

कमलाने मळवा मुंबई डोकीयुं करी आवीश। रस्तामां मळवा जवुं मुश्केल जोउं छुं।

मदालसा त्यां पहोंची हशे। मोटर रेलनो थोडो समय त्याग करो ए तो मने गमे।

बापुना आशीर्वाद

: २१७ :
अ

वर्धा,
२८–४–३५

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो।

मदालसा भले उकाळेलुं दूध पीए अने रोटली पचे तो खाय। एनुं शरीर साचवीने मरजीमां आवे ते खाय। चार करतां वधारे वार नहीं। वचमां पण कंई नहीं। त्यां कसरत करशे तेना प्रमाणमां खावानुं वधे ए समजी शकाय।

चोधुरी बाबत काले लखी चुक्यो छुं। एने घर क्यां आपवुं। कांतो जुना बंगलामांथी बे कोटडी अथवा नवामांथी। बगीचामां बन्ने रही शके एवुं जोतो नथी। चोधुरीनी छाप मारी उपर सारी पडी रही छे। ए काम कर्या करे छे। तेनी हाजत बन्ने वच्चे १००नी छेज। तेनी वहुना ७५ बीजेथी ने तेना २५ अहींथी एम करीने १०० अपाय। मकान विषे लखजो।

काननी रसी बंध थई? राजेन्द्रबाबु ने राजा आवी गया। राजाने भारे थाक लाग्यो छे तेथी हमणा नीकळशे।

प्रोफेसर पण आवी गया।

बापुना आशीर्वाद

प्यारेलाल बाबत तारादेवीने लखी चुक्यो छुं।

: २१८ :

WARDHAGANJ,
29–4–35

SETH JAMNALALJI,
BHOWALI

Madalsa should have boiled milk and cream whole meal bread or chapati if digestible.

—*Bapu*

: २१९ :

वर्धा,
३-५-३५

प्रिय जमनालालजी,

आपनो कागळ बापुजीने मळ्यो। **नी हकीकत जाणी। हुं पोते तो बहु राजी थयो, कारण मारो ए छोकरीने माटे पक्षपात छे। अक्षयतृतीयाये संबंध थवानुं नक्कीज समजवुं ना हवे तो? कमलनयनना सीलोनना प्रोग्रामनुं शुं थयुं? डा. जवाहरलालनी मांदगीना खबर सांभळीने बहु दिलगीर थयो।

प्रभावती विषे तमे लखो छो ए ठीक छे, पण ब्रजकिशोरबाबु पोते लखे छे के ए ज्यारे बोलावे त्यारे जवानुं छे। घणुं खरुं तो रजा पूरी थया पछीज एमनो कागळ आवशे त्यारे प्रभावती जशे।

पेला चौधुरीने विषे बापु आपने लखी चूक्या छे। एनी स्त्री तो सेवा सदननी पोतानी नोकरी छोडी चूकी अने थोडा दिवसमां अहीं आवशे पण। ए बंनेने बापु तपासशे तो खराज पण दरम्यान एमने रहेवानी व्यवस्था तो थवी जोईए ना? तमे जे मकान विषे रजा आपशो ते मकानमां एमनी गोठवण करशुं। माणस तो मने बहु सारो लागे छे।

अमारुं काले अहींथी बोरसद जवा नीकळवानुं थाय एम लागे छे। ६ ठीथी १५ मी सुधी त्यां रहीने पाछा १८ मीए अहीं आववानुं। १८ मीए अहीं साहित्य संमेलननी स्थायी समितिनी सभा छे। ए पछी कमला नेहरुने जोवाने माटे मुंबई जवानुं थशे। कमलाजीनो प्रोग्राम हजी चोक्कस जाण्यो नथी। एओ कई तारीखे त्यांथी नीकळी केटला दिवस मुंबई रहेशे ते जणावशो। एमनी उपडवानी तारीख तो छापामां २३ मी मे लखेली छे, पण एमना तरफथी कशा खबर नथी।

रामदासनुं हवे कोई परमार साथे गोठवाय एवुं किशोरलालभाई लखता हता। एमने त्यां एक महिनो उमेदवार तरीके रहेशे अने पछी पेलाने अनुकूळ पडे तो भागीदारीमां लेशे।

रामकृष्ण मजा करे छे। अभ्यास पण करे तो छे, अने एने परीक्षा आपवानी लगनी लागी होय एम पण लागे छे, एटले हमणां तो अहींज रहेशे। फुटबोल मेच जोवा जाय त्यारे रात्रे मोडा मोडो आवे छे, सवारे हवे अमारी साथे लटारीमां नथी आवतो। पण प्रफुल्लित रहे छे। चिंता न करशो।

पू. जानकीबहेनने प्रणाम।

लि. से.

महादेवना [illegible]

: २२० :

वर्धा,
१३–५–३५

चि. जमनालाल,

तमारो राधाकृष्ण उपरनो कागळ मळ्यो छे। मारी खात्री छे के तमारे आ जातना काममां पडवानी कशी जरूर नथी। ए काम लगभग हवे पती गयुं जणाय छे। तमारुं कर्तव्य त्यां रही शरीर साव सुधारी लेवानुं छे। जुननी आखर लगी नीचे उतरायज नहीं। जे थयुं छे ए विपरीत तो थयुंज छे पण तेमां एवी आंटीधुंटीओ छे के वच्चे पडवाथी बहु सार काढवानो नथी। थई रह्युं छे ए थवा देवामांज ठीक छे। दूर बेठा जे सलाह आपी शकाय ते आपीए।

इंदोरथी कंई नथी मळ्युं ए लखी चुक्यो। हवे तमारे जेने लखवुं होय तेने लखजो।

* * नुं समज्यो। मारो कागळ तेनी उपरनो मळी गयो हशे।

हिंदी साहित्य सम्मेलननी स्थायी समिति अहिं १८ मीये मळशे। सभ्योने बंगले उतारवानुं राधाकिसनने कह्युं छे।

एंड्रूझ अहिं छे। मगनवाडीमां उतार्या छे। मलकानी पण छे। तेने साप डंख्यो हतो। पण ठीक छे। इलाज तुरत लेवाई शकायो।

बापुना आशीर्वाद

मदालसाना नियमित कागळ जोईए।

: २२१ :

(भवालीमें मिला,
१४–५–३५)

चि. जमनालाल,

तमारा कागळो मळ्या छे। महादेव वल्लभभाईना बोलाववाथी बोरसद गएल छे। बे चार दीवसमां पाछा आवशे। मेरीबहेन सारी पेठे बीमार पडी गई हती। इटारसीनी इस्पीतालमां हती। तेनुं रू. ८७ नुं बिल चुकव्युं छे। कदाच क्षय लागु पडे। इटारसीनी दाक्टरनी कहे छे तेने मीरज मोकलवी जोईए। हाल ते बेतुल छे।

मारे कदाच २४ मीए बोरसद जवुं पडशे। कमलाने मळवा मुंबई तो जवुं पडशेज। एटले २१ मीए अहींथी नीकळीश।

किशोरलाल— गोमती काले आव्या। गोमतीने थोडो ताव आवी गयो तेथी नबळी पडी गई छे।

हिंदी साहित्य सम्मेलननी स्थायी समितिनी बेठक १८ मीए अहीं राखी छे।

रामकृष्णनुं चाली रह्युं छे।

ओम तेना काममां खूंची जणाय छे।

बापुना आशीर्वाद

सम्मेलनमां एक लाख मळ्या नथी ए तो जाणो छो ना? लखवुं घटे तेने लखजो।

: २२२ :

वर्धा,
१४–५–३५

चि. जमनालाल,

तमने इंदोर बाबत त्यां बेठा पजवणी करवी पडे छे। त्यांथी कंई आवे एम लागतुं नथी। साथेनो कागळ वांचजो।[1] मारा जवाबनी नकल मोकलुं छुं। हुं तो कोईने ओळखतो नथी। तमारी उपर ढोळ्युं छे। तेमां पण कंई न थई शके तो उकल्युं गणशुं। तमारे ए बाबत उचाटमां नथी पडवानुं। त्यां बेठा कंई थई शके कोईने लखी शकातुं होय तो लखीने काम करजो। अत्यारे एवुं न संभवे तो भूली जजो।

बापुना आशीर्वाद

: २२३ :

वर्धा,
१६–५–३५

प्रिय मु. जमनालालजी,

आपनो पत्र—बापुजी उपरनो—हमणांज मळ्यो। हुं वल्लभभाईए बोरसद बोलाव्यो हतो त्यांथी कालेज आव्यो।

मेरीबेन विषे बधी व्यवस्था तमारी इच्छा मुजब थई गई छे। एमने मुंबई जईने पछी मीरज जवानी सलाह बापुए आपी छे।

१. गांधीजीका अ. भा. हिन्दी साहित्य सम्मेलनके प्रधान मन्त्रीको लिखा हुआ ता. १४–५–३५ का पत्र खंड ३ में देखिये।

कमलनयन हवे जल्दी कोलंबो जाय छे जाणीने आनंद थाय छे। हुं त्यांना मित्रोने हवे लखी दउं छुं के कमल आवे छे।

संमेलन विषे तो बापु तमने लखी चूक्या छे। लाख तो न मळ्या पण हजारो पण न मळ्या। हजी तो कशुंज नथी मळ्युं एम कहेवाय।

बापु २१ मी तारीखे नीकळीने २२ मीए मुंबई पहोंचशे। वल्लभभाई पण बोरसदथी कमलाने मळवा आववाना छे।

सीकरने विषे तमे जे कहो छो ते बरोबर छे। एज विचार उपर मक्कम रहेशो। एमां पडवाथी कशो लाभ नथी।

स्थायी समितिनी पूरी व्यवस्था राधाकृष्ण करी लेशे। काले घनश्यामदासजी पण आवे छे। तेमने पण बंगलेज उतारवानी गोठवण छे। एंडरूझ पण शांतिनी खातर त्यां जाय छे, रात्रे अहीं आवे छे।

गंगाब्हेन धुळीआवाळां काले इस्पितालमां गयां, बपोरे बाळकी अवतरी, आजे बिचारी बाळकी ईश्वरना धाममां पहोंची पण गई!!! एवी परमात्मानी लीला छे।

गिरजाबाई चोधरी विषे लखी चूक्या छीए। राधाकृष्ण एने कया बंगलामां रहेवुं ए बतावशे। एकाद अठवाडीआमां ए आवी जशे।

नवीन गांधीने विषे आप बापुनो अभिप्राय पूछो छो ते शी बाबतमां? ए तो आजकाल जीवणलालभाईनी नोकरीमां छे।

लि. स्ने.

[signature]

: २२४ :

बोरसद,
२४–५–३५

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो छे। इंदोरनी वातने बोजा रूप न थवा देशो। नीचे उतरो त्यारे जरूर त्यां जई आवजो।

गंगादेवीना खबर मळ्या करता हशे। बोरसदमां बधुं ठीक छे।

[signature]

: २२५ :

(भवालीमें मिला,
९–६–३५)

चि. जमनालाल,

तमे नैनीताल बधाने ठीक मळी आव्या। तमे जून आखो पहाडमां रहो एम इच्छुं छुं। जे प्रोग्राम १५ मी पछीनो घड्यो छे ते ३० जुन पछीथी करो। कान हजु साव साफ नथी थयो ए ठीक नथी लागतुं। मुंबई खबर दीधा करो छो? न दीधा होय तो हवे पूरुं वर्णन मोकलो। ते शुं कहे छे ते जाणवुं जोईए। हाथ धोवा होय तो भले हाथ धुए। कानमांथी नीकळतुं बंध थवुं जोईए।

ओगिलवीने कागळ लखवामां कदाच उतावळ थई होय। ते शरीर दृष्टिए। तेनी हा आवे तो मने मळीने तेने मळवा जशो एम मानुं छुं।

पेला डेनमार्कना मित्रनी उपरनो पत्र आ साथे छे। एणे तो पोतानु ठेकाणुं मुंबईनुं आप्युं छे।

मेरीबहेन काले आवे छे। मदालसानी प्रगति विषे तमे चुप छो।

कमलनयन गयो। उत्साह तो ठीक हतो। गंगादेवी बगीचे आवी गई छे। खानसाहेबने खूब मळ्या। तेमनी तबीयत नरम तो खूब छे। पण मजामां हता। तेने मळ्या ए बहु गम्युं। बधाने खूब संभाळला हता। तेने नासिक अथवा यरवडा फेरववानुं लख्युं छे। हवे थाय ते खरुं। अबदुल गनी विषे कंईक चिंता हती खरी।

उद्योग संघनुं धीमे पण नियमित चाले छे। घडातुं जाय छे। बाकी बधुं ठीक छे।

एंड्रूझ सीमलामां छे। पोतानुं पुस्तक लखी रहेल छे। अमलदारोने आ वखते मळवानुं बंध राख्युं छे।

बापुना आशीर्वाद

: २२६ :

वर्धा,
९–६–३५

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। दासनी उपर पहोंच साथे छे।

वाइसरॉयनी उपर बे कागळ लख्या तेनी नकल साथे छे। 'मा' नो

जवाब आवी गयो छे। अने हवे ज्यारे बधाने क्वेटाथी नीचे मोकली दीधा छे त्यारे उतरेलानी संभाळ राखवा उपरांत कंई करवापणुं रहेतुं नथी।

तमे नीचे उतरवानी उतावळ न करशो। आ महीनाना अंत लगी तो त्यां रहेजोज। हजु अहीं तो भठ्ठी मळगे छे।

मा. दुना आशीर्वाद

: २२७ :

WARDHA,
13-6-35

SETH JAMNALALJI,
BHOWALI

Remain there till end month if possible.

—*Bapu*

: २२८ :

वर्धा,
२०-६-३५

मु. प्रिय जमनालालजी,

तमारा कागळमां तमे बे लीटी लखो छो ते पण वांचवी कोकवार कठण पडे छे।

बापु लखावे छे के हवे भले तमारो प्रोग्राम कायम राखो। घोडे बेसीने आल्मोरा न जाओ ए सारुं। ए माटे तार पण कर्यो छे। आ तार तमारा कागळनी एक लीटी बरोबर न वंचाई एटले तमारे खाते उधारवो जोईए।

वल्लभभाई ठीक बीमारी भोगवी रह्या छे। हवे कांईक ठीक छे।

सुशीला २७ मीए आवशे ए जाण्युं।

कमल पहोंची गयो। सोमसुन्दरम् अने आलुविहारी बंनेना मारी उपर कागळ आव्या छे। तेओ एने विषे बधुंज करशे। जराय चिंता न करशो। कमलनो पण कागळ आव्यो छे।

लि. से.

महादेव

: २२९ :

वर्धा,
२१–७–३५

चि. जानकीबहेन,

तमारो कागळ सरस छे। तमे जे इच्छो छो ते मदालसा पासे धीरजथी करावजो। खीजाईने कंई करावववानो समय गयो समजो। हमणा तो बन्ने त्यांज रहेजो। वंचाय तेटलुं वांचजो, लखाय तेटलुं लखजो।

रणजीत अने सरूपने पोताना छोकरां जाणी रहेजो। बाकी तमारी स्वतंत्रता उपर कोई तडाप मारी शके एम नथीज।

अहीं बधुं ठीकज छे। ओम पोतानामां पडी छे ने रामकृष्ण टीकटो एकठी करे छे ने मजा करे छे। हवे तो मारी पडखे सुतो नथी। ए बरोबरज छे।

बापुना आशीर्वाद

: २३० :

वर्धा,
३–८–३५

चि. जमनालाल,

तुम थैलीके लिए द्रव्य एकत्र करने इंदौर जा रहे हो। इस सिलसिलेमें तुमने मुझसे तीन बातें जानना चाही हैं (१) यह रुपया किस प्रकार खर्च किया जायगा? (२) कोई अंकित दान इसमें लिया जाय या नहीं? और (३) इसके खर्चके लिए कोई ट्रस्ट या कमिटी आप बनाना चाहते हैं या क्या व्यवस्था सोची है?

इनके संबंधमें मेरा खुलासा यह है कि मेरी मांग मुख्यतः दक्षिण भारतमें हिन्दी प्रचारके लिए है; किन्तु आवश्यकता देखकर दूसरे प्रांतोमें भी जैसे बंगाल, आसाम, सिन्ध, गुजरात, पंजाब, आदि जहां हिन्दी भाषाका प्रचार या प्रवेश नहीं है मैं इस रकमको लगाना चाहता हूं। इनमेंसे किसी प्रान्तके कार्यके लिए अथवा इस कार्यके लिए आवश्यक प्रचारक तैयार करनेके लिए कोई दाता अंकित रकम देंगे तो थैलीके लिए उसे स्वीकारनेमें कोई आपत्ति न होनी चाहिए।

अब रहीं बात ट्रस्ट या कमिटीकी। सो सब रुपया मिलजाने पर ट्रस्ट या कमिटी बनाकर अथवा किसी रजिस्टर्ड संस्थाके द्वारा मेरी देखरेखमें रुपया खर्च करनेका मेरा इरादा है।

बापुके आशीर्वाद

: २३१ :

वर्धा,
३–९–३५

प्रिय मु. जमनालालजी,

आ तार हमणांज आव्यो। बापुए एने आ प्रमाणे तार कर्यो छे।

"Please wire Shethji yourself. Have written him."

बापु कहे छे के आने मदद करवा जेवुं लागे छे एटले कांई थई शके तो करजो। टपाल जाय छे एटले बीजुं कशुं नथी लखतो।

लि. सेवक

: २३२ :

वर्धा,
८–९–३५

प्रिय मु. जमनालालजी,

हुं तमारे माटे रोकायो पण तमारो तो पछीथी टेलीफोन आव्यो के तमे नहीं आवो! एटले तमारी पासेथी जवाहरलालनी साथेनी वातो सांभळवानी मळत ते पण न मळी अने जवाहरलालने मळायुं पण नहीं! २० रूपीया भाडुं मफतनुं गयुं ते जूदुं।

तमारा बधा कागळो मळी गया। तमे आल्मोड़ा सुखे जजो अने त्यांथी उतावळे आववानो ख्याल सरखो न करशो। बापुजी तो कहे छे के अक्टोबरनी आखर सुधी रहो अने वधारे रहो पण तबीअत सारी करीनेज नीकळो, अक्टोबरमां थनारी मीटिंगोमां न आवी शको तो कशी अडचण नथी। चर्खा संघने विषे तमारे जे विचारो बतावबाना होय ते लखीने मोकलशो।

पेली छोकरीने विषेना कागळनी बाबतमां बापु तपास करे छे।

लि. सेवक

: २३३ :

वर्धा,
१९-९-३५

प्रिय मुरब्बी जमनालालजी,

सफीआव्हेनने कागळ मळ्यो। बापु कहे छे के खानसाहेबने पाछा मळो त्यारे तेमने आटली खबर आपजो। गनीनी साथे बापुनो पत्रव्यवहार चाली रह्यो छे। एनुं काम कठण छे, पण पहोंची वळाशे। हाल एनी तबीअत सारी नथी। कलकत्तामां सारवार थाय छे अने तेना दाक्तरी बिलना पैसा अहींथीज मोकल्या छे। श्री निर्मलकुमार बोझना तरफथी एना नियमित रिपोर्ट आवे छे। ए सारा थाय के तुरतज अहीं एने बोलाववामां आवशे। अहीं खोरशेदव्हेन पण छे। एनी साथे एने गमी जशे। एम आशा राखीए। गमे तेम हो खानसाहेब ज्यां सुधी जेलमां छे त्यां सुधी एमणे गनीनी चिंता छोडवी जोईए। वळी आप अहीं आवशो त्यारे आपनी साथे मसलत कर्या पछी एने विषे शुं करवुं एनी वधारे खबर पडशे।

आप सौ मजामां हशो। बिरलाजी अने सरदार अहीं छे। बिरलाजी थोडा दिवस रहेशे। सरदार आजे जाय छे। मीरांव्हेननो ताव हवे उतरी गयो छे।

कमलनयनना आजकाल कागळ नथी। त्यां नियमित आवता हशे।

लि. स्ने.

: २३४ :
अ

मगनवाडी, वर्धा,
ता. २०-९-३५

चि. जमनालाल,

सांभळुं छुं के तमारी आववानी तारीख लंबाय छे। आलमोरामां रहेवानी खातर लंबाया करे ए मने गमे तेम छे। तमारे आराम लेवानी जरूर छेज। त्यां बेठा बेठा पण तमे पूरो आराम तो लई शको एम तो नथीज। कागळो तो लखवा पडेज। माणसो पण त्यां मळवा आवेज, अने त्यांनुं काम तो होयज। एम छतां जे हाडमारी अहींयां भोगववी पडे ए तो त्यां नथीज, एटले तमे शियाळो बेसता लगी त्यां रहो तोय मने गमे। वळी त्यांनो शियाळो वखणाय छे, एवो

य बधारे शियाळो सीमलानो गणाय छे, अने शियाळामां सीमलानी रहेणी बधाथी पण सस्ती होय छे। बंगलाओ मफतनी जेम भाडे मळे छे, भाजी पालो, फळो विगेरे ढगलाबंध अने सस्ता मळे छे, अने दूध्य उत्तममां उत्तम होय छे। थंडी लोकोनी कल्पनामांज होय छे। लाहोरमां शियाळानी थंडी लागे एना करतां त्यां ओछी लागे, एटले हुं तो तमने शियाळाने मारु पण छुट्टी आपुं। ज्यां बेठा हशो त्यांथी काम तो आपशोज। एक वर्ष पूरुं शांतिथी पहाडमां गाळी नांखो तो हुं मानुं छुं के तमारा काननुं दर्द शांत थई जाय। मदालसानुं शरीर बिलकुल तैयार थई जाय, अने जानकीमैया पण हाडकां न भांगे तो सरस घोडेस्वार थई जाय। चर्खा संघनी सभामां तमारी हाजरी हुं इच्छुं खरो पण जो तमने संतोष रहे तो हुं तमारी हाजरी विना चलावी शकुं। नवी नीतिनी बाबत चर्चा तो खूब करी लीधी छे। तमारे जे कहेवुं होय ते तमे त्यांथी लखी मोकली शको छो। खादी प्रतिष्ठान मीरत ने काश्मीरना भंडार विषे विचारवानुं रहे तो मारा विचार आने विषे पण घडाई गया छे। ए बाबतमां पण तमारो अभिप्राय तमे मोकली शको छो, अने पछी जे थाय ते सहन करो।

पछी रही कॉंग्रेस कमिटीनी मीटींग। एमां पण न जाओ तो चाले। आ बधी मुक्ति एज शरतेज आपुं छुं के तमारे कोई पण पहाडमां ए बधो वखत गाळवो। उतरो तो तो बन्ने मीटींगमां हाजर रहेवानो तमारो धर्म थई पडे। तमे जलंधर जवाना हता ते शुं नहि गएला? राधाकृष्ण अने सरदार एम माने छे। सरदारने त्यां जवुं पडशे। अहिं बधुं ठीक चाली रह्युं छे। बाळकोबा गौरीशंकरनी देखरेख नीचे केवळ दूधनो प्रयोग करे छे। हवे सारुं छे। आ साथे भगवानजीनो कागळ छे। तमे लख्युं छे ए माणसने मळवानुं कही दीधुं छे।

बापुना आशीर्वाद

: २३५ :

वर्धा,
१७–१०–३५

पूज्य जानकीमैया,

तमने तो कोई वार कागळ लखवानो प्रसंग आवतो नथी। काम विना तमारा जेवाने तस्दी केम आपी शकाय? आ साथेनो कागळ वांचजो अथवा मदालसानी पासे वंचावजो। ए भगवानजी सत्याग्रह आश्रमना एक जूना सभ्य छे। एने थोडो समय आराम लेवो छे अने [illegible]

तमारे त्यां मकानमां आटला एक माणसनी सगवड थाय के? ए जो रहे तो तमारुं थोडुं घणुं कामकाज पण करशे। बहु भलो, नम्र, अने परगजु माणस छे। ए पोताने माटे तो फळ दूधज लेशे अने ते पोताने खर्चे मेळवी लेशे। एने माटे रहेवानीज सगवड जोईए छे। उत्तर लखशो अथवा लखावशो।

चि. मदालसानुं वजन तो एटलुं वधतुं हशे के अहीं आवशे त्यारे ओळखी पण नहीं शकीए। रामकृष्णने आशीर्वाद। बाबलाने एना विना सूनुं सूनुं लागे छे।

लि. से.

: २३६ :

वर्धा,
१०-११-३५

चि. जमनालाल,

कागळो वांची गयो। कमलनयने दा. जवाहरलालने कागळ लखवानी जरूर नथी जोतो। तमेज तेने लखी नाखो ए बस छे।

: २३७ :

(?-?-३५)

प्रिय जमनालालजी,

आ साथे पेला पॉलनो[1] कागळ आव्यो छे ते मोकलुं छुं। ए लोको तो आववानाज। पण हुं एने लखुं छुं के महात्माजी हाजरी नहींज आपे एवी गणत्री राखीने आवजो। पण ख्रिस्तीओ आ बाबतमां मुसलमानो जेवा छे— हीरा-भाईनुं नाडुं पकडायुं के पकडायुं, छूटेज नहीं अने आवशे एटले बापुने तकलीफ आप्या विना पण नहींज रहे।

जीवराजनो तार आव्यो छे के तेओ काले नहीं पहोंची शके। एने बापुनी तबीअतना खबर आपुं छुं अने नहीं आववानुं लखुं छुं। डाक्टर शहानीने पण लखी दउं छुं।

लि. स्ने.

१. इंटरनेशनल फेलोशिप संस्थाके मंत्री। इस संस्थाकी मीटिंग वर्धामें २७ से ३१-१२-३५ तक हुई थी।

: २३८ :

KHERVADI, G. I. P.,
17-1-36

SETH JAMNALALJI,
WARDHA

Excellent journey made more so by Sardars jokes and doctors care.

—*Mahadev*

: २३९ :
अ

नाशिक पहोंचतां,
१७–१–३६

प्रिय मुरब्बी जमनालालजी,

आ कागळ तो नाशिक पहोंचतां लखुं छुं। बापुनी तबीयत सरस छे। वातचीत करतां तो मांदा होय एम लागतुंज नथी। सरदारनी मश्करी ट्रेन चाली त्यारथी शरु थई। दाक्तरने कहे, "ल्यो गाडी चाली, हवे बत्तीनी स्विच बंध करो।" एटले दाक्तर स्विच शोधवा गया, अने सौ खडखडाट हस्या। एटले कहे, "थर्ड क्लासमां स्विच न होय, दाक्तर।" सवारे बापु पोणात्रारे उठ्या, पोतेज प्रार्थना एकले एकले करी अने सूई गया। हुं अने मणीबेन चार वागे उठ्यां अने एम मानीने के बापु उंघे छे, बंने प्रार्थना करी सूई गयां। सवारे खबर पडी के बापु अमारा पहेलां प्रार्थना करी चूक्या हता। प्रार्थना करीने तुरत सूतेला ते ५॥ वागे उठ्या। पाछा सूता। सरदार ६॥ वागे बापुने कहे, "मांदा तमे के अमे? तमे तो पाटीओ उपर पण उंघी शको छो, तमने मांदा कोण कहे? अमे पाटीआं उपर न सूई शकीए एटले अमेज मांदा ना?" आम गम्मत चाली रही छे। डबो तो रिझर्व जेवोज छे, कारण नाशिक सुधी कोई आव्युंज नथी। पण हवे तो नाशिक आव्युं अने आ कागळ तमने काले पहोंचे एवी रीते नाखुं तो नाशिकमांज नाखवो जोईए।

लि. स्ने.

महादेवना प्रणाम

: २४० :

देहली,
१९-१-३६

प्रिय जमनालालजी,

दुर्गाप्रसादजी जो चिठ्ठी लेकर आये हैं इसके साथ भेजता हूं। बापूजी कहते हैं कि तात्कालिक उपाय जो लेने योग्य हो लेना। मसलन Home Member को लिखना इत्यादि। अखबारोंमें लिखनेकी कोई जरूरत नहीं है।

आपका

[signature]

आज आपकी चिठ्ठी मिल गई है। बापूजी पीछे लिखेंगे।

: २४१ :

गुजरात विद्यापीठ,
अमदाबाद,
२४-१-३६

प्रिय मुरब्बी जमनालालजी,

तमारो कृपा पत्र मळ्यो। तमने कागळ तो रोज लखत पण तमारी हील-चालनुं ठेकाणुं न्होतुं, एटले महोदय ने किशोरलालभाईने तेमने लखेला कागळो तमे त्यां हो तो वंचावी जवानुं कह्युं हतुं।

बापुनी तबीयतमां सरस सुधारो चाली रह्यो छे। ब्लड प्रेसर अहीं आव्या त्यारे कांईक वधेलुं हतुं, पण ते मुसाफरीना श्रमने अंगेज। कारण शक्ति खूब आवती जाय छे, विद्यापीठनी विशाळ अगाशीमां लगभग अगाउनी गतिथी ४० थी ४५ मिनिट वे कटके फरे छे। खोराक वधु ले छे। अने आवती काले अंबालालने घेर हाथना दळेला लोटनी बनेली ब्राउन ब्रेड लेशे एवी वक्की छे। तमे चिंता जराय न करशो। आराम तमे जेटलो वर्धामां आपता हता एटलोज अपाय छे, मात्र कोकवार जे अपवाद तमे कदि न करो एवा अपवाद सरदार करी नांखे छे खरा! लखवा लखाववानुं तो हजी बंधज छे, पण मने काले नोटीस आपी दीधी के, "वर्धा अने मुंबईना दाक्तरोनी सलाहनो अक्षरशः में अमल कर्यो, अने मारा मनने साव खाली राख्युं। हवे हुं एम करी शकुं एम नथी. मन काम करतुं थई गयुं छे अने वखतो वखत मारे सूचना आपवानुं मन थाय तो आपना जवुं पडशे।" हजी लखवानुं साधन तो नथी मळ्युं एटलो प्रभुनो पाड।

पंडितजीनी साथे थोडी वातो थई। ए तो पोतेज कहेवा लाग्या, "में तमारा कागळनो जवाब नथी आप्यो ते एटलाज कारणे के जमनालालजी कदाच आ तरफ आवशे। मने योगाने जमनालालजी पासे लई जवामां कशीज अडचण नथी। २८ मीए मने बोलाव्यो छे, पण जवा आववामां चार दिवस बगडे एटले हिंमत थती नथी। अहीं एमनुं आववानुं थाय त्यारे योगा साथे वात करे तो केवुं? छतां हुं एमने कागळ लखीने पुछावीश।" बीजी घणी वातो थई, पण ते विषे आ कागळमां नथी लखतो।

लि. स्ने.

: २४२ :

अमदावाद,
२८–१–३६

प्रिय मुरब्बी जमनालालजी,

बापुनी तबीयत घणी सरस चाले छे। ब्लड प्रेसर तो लीधुं नथी कदाच काले लेवाशे। पण एमनी चालवानी गति पण वधी रही छे, रोज ३० मिनिट सवारे अने ३० मिनिट सांजे चाले छे, खोराकमां दूध, घी, डबल रोटी (चार औंस जेटली), शाकभाजी अने लसण ले छे। शक्ति पण सारी रीते आवती जाय छे। शंकरलालनो कागळ हतो के ८ मीए वर्धा मीटिंग राखी छे। सरदार इच्छे छे के मीटिंग अहीं राखो के जेथी तमे बापुने मळी पण शको अने एमनो प्रोग्राम नक्की करी शको। उर्मिलादेवीना दीकराना लग्नमां मारे कलकत्ता जवुं पडशे। ७ मी तारीखे सवारे हुं वर्धाथी पसार थईश। राधाकृष्ण अनसूयाना लग्ननी कांई प्रसादी कोई स्टेशने पहोंचाडशो तो राजी थईश।

लि. स्ने.

: २४३ :

अमदावाद,
१–२–३६

प्रिय मुरब्बी जमनालालजी,

काले तमने कागळ लख्यो हतो। आजे ब्लड प्रेसर लीधुं। ए १४५/१५० अने ९०/९५ थयुं। छापामां तो आ पहेलांज तमे मारो तार जोशो। अगाउ जे वध्युं हतुं तेनुं पण कारण तो हतुंज, ओछुं थयुं तेनुं य कारण छे। पण ए गूढमां तो मळशुं त्यारे। तमे आवशो त्यारे हुं नहीं होउं ए दुःख छे, अने कदाच हुं वर्धाथी पसार थाउं त्यारे पण तमे नहीं हशो, पण राधाकृष्ण अने अनसूया तो मळशे एवी आशा राखुं छुं। जो के एटलां

बधां माणसो आवशे अने रेलवेने घणी कमाणी थाय ए पण असह्य छे। हुं ७मी तारीखे वर्धाथी पसार थईश। कलकत्ता मारे ८ मीए पहोंचवानुं छे।

लि. सेवक

: २४४ :

अमदावाद,
४-२-३६

प्रिय मुरब्बी जमनालालजी,

मीरांबेनने तमे न समजावी शक्या के ए समजवाने तैयारज न्होतां? बापुए प्रेसर उतर्यानो तार कर्यो त्यार पछी ए नीकळवानुं मांडी वाळशे एवी आशा बापु सेवता हता, आजे पण तमारो तार आव्या पछी पाछो एनो न नीकळवानो तार आवशे एवी आशा राखी हती। पण ए तो नीकळ्यांज। बापु कहे छे के "ए सेगांव छोडशे तो मारे सेगांव जवुं पडशे।" तमारी युक्ति तो बापुने जोवा आववा माटेनी होय पण सेगांव छोडी देवानी तो होयज नहीं। कदाच आवती कालेज बापु एने पाछी विदाय करे तो आश्चर्य नहीं।

तमारा भत्रीजानी[1] तो भारे थई। ए शिकारे नीकळ्या होय एम तो मनातुं नथीज। बहार फरवा नीकळ्यां होय अने वाघे अणधार्यो हुमलो कर्यो होय एम लागे छे। विवाहित न्होता के? गंगाबिसनजीने जूदो कागळ लखुं छुं ते एमने पहोंचाडशो जी।

बापुनी तबीअतमां तो आश्चर्यकारक सुधारो छे। दाक्तरोज मानता न्होता के आटलुं ओछुं प्रेसर शी रीते थाय? पण त्रण यंत्रो वडे तपास्युं अने एनुं एज नीकळ्युं। आना कारणो घणां छे पण ते तो मळशुं त्यारे। तमे आवशो त्यारे हुं अहीं नहीं होउं ए मने गमतुं नथी। पंडितजीनी साथे तो वात करी लईशज, अने तमे योगानी साथे बरोबर वात करशो-तमने वात करवानी पूरी तक आपशे एम एओ मने कही चूक्या छे। एटले जरूर वात करी लेजो। हुं बहु वातो नथी करी शक्यो, पण तमे वातो करी लो पछी कदाच वधारे मार्ग खुल्लो थाय।

लि. स्ने.

મહાદેવ

१. नागरमल बजाज। यह जमनालालजीका चचेरा भाई था और बड़ा दिलेर युवक था। गांवमें शेर आजानेसे उत्सुकतावश उसे देखने चला गया। शेरने उसपर हमला किया, तब बहादुरीसे बिना हथियारके उसका मुकाबला किया और उसे भगा दिया। इस लड़ाईमें वह घायल हुआ और अस्पतालमें उसकी मृत्यु होगयी।

: २४५ :
अ

[illegible]

[illegible]

[illegible] રહેવું.

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

3

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

બાપુના આશીર્વાદ
[illegible]

[illegible]

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

दिल्ली,
१९–३–३६

ग्राम निवास विषे मारी कल्पना

सेगाममां बा इच्छे तो तेने लईने अथवा न इच्छे तो मारे एकलाए एक झुंपडी बनावी रहेवुं।

मीराबहेनवाळुं कदाच मने पूरुं न थाय।

झुंपडामां खर्च ओछामां ओछुं करवुं। रू. १०० थी उपर नज जवुं जोईए।

मने मदद जोईए ते सेगाममांथी मेळवी लेवी।

जरूर जणाय तेम मारे मगनवाडी जता रहेवुं। तेम करवा सारु जे वाहन मळे तेनो उपयोग करवो।

... नीज पासे मीरां... ... ...रहे। मारी सेवामां वखत न आपे पण गामना काममां मदद करी शके।

जरूर जणाय तो महादेव कांती वि. ते गाममां रहे। तेओने सारु सादी झुंपडी बनाववी।

आम करतां बहारनी जे प्रवृत्तिमां हुं भाग लेतो होउं ते तो चलाव्याज करुं।

खास जरूर विना सेगाममां मने मळवा बहारना माणसो न आवे। मगनवाडीमां जवाना दीवस नीम्या होय तेज दीवसे त्यां मळे।

बहार भ्रमण करवानी जरूर सिद्ध थये ... ...

मारो पूर्ण वि ... ... करवाथी खास ... ... लाभ थवानो छे अने ग्राम उद्योगनुं काम वधारे वेगे चालशे, लोकोनुं ध्यान ग्राम उद्योग तरफ वधारे वळशे।

आम करवाथी मीराबहेननी भारे शक्तिनो पूरो उपयोग मळशे। अने महादेव कांती वि. ने पण नबोज अने सारो अनुभव मळशे।

मारा ग्राममां वसवाथी मारी कल्पनामां दोषो हशे ते तरी आवशे। बीजाओने प्रोत्साहन तो मळशेज।

सेगाममांज वसवानो ... ...नथी पण ए प्रवाह पतित जणाय छे। पण बीजुं गामडुं वधारे उचित जणाय तो ते विचारवा हुं तैयार छुं। [1]

बापु

: २४६ :

३–५–३६

चि. जमनालाल,

श्रीमन्नारायण साथे वातो करी। मने ए गमेल छे। तेनी काव्यशक्ति सारी छे। हजु वधवानी होंश छे। कुटुंब सारुं लागे छे।

पेली समाध जोई। हवे तेमां शुं काम थई रह्युं छे ए समज्यो नथी। जाणवा इच्छुं खरो।

समाधवाळा बगीचानी संभाळ धर्माधिकारी राखशे। एने अहीं गमी गयुं जणाय छे। बीजाने संतोष आपे छे। काममां रोकाई रहे छे।

बापुना आशीर्वाद

१. सेवाग्राममें रहनेके लिए जानेसे पहले गांधीजीने उपरोक्त सूचना जमनालालजीको विचारार्थ लिख भेजी थी।

: २४७ :

सेगांव,
५-५(?)-३६

चि. जमनालाल,

आ साथे अकर्तेनो कागळ छे। शुं साचुं छे ए समजवुं मुश्केल छे। बुवाने जाहेर खबर आपतां संकोचावानी जरूर जोउं छुं। तेनी ओळखाण करवी ठीक छे। वधारे अनुभव विना तेनो जाहेर उपयोग अनुचित जोउं छुं। वखत मळशे हुं एमां उंडो उतरीश।

बापुना आशीर्वाद

: २४८ :
अ

नंदी हिल,
बेंगलोर थईने,
१३-५-३६

प्रिय मु. जमनालालजी,

पू. बापु अने सरदार बंने मजामां छे। आजे कुमारप्पा पहोंची गया। बापु आखी टेकरी, दिवान अने दाक्तरनी मनाई छतां, खुरशी न वापरतां पगेज चढ्या। पांच माईलनुं चढाण २। थी २॥ कलाकमां करी शक्या, पण थाक जराय लाग्यो नहीं। अहींनी शांति तो अपार छे, अने अहींनी स्वच्छता अने निर्जनता आकर्षक छे। बापुने बहु शांति अने आराम मळशे एमां शंका नथी। राज्ये बधो प्रबंध पण आपणने रुचे एवी रीतनो करेलो छे।

पेला चीतलीआ केटलांक फरफरीआं मोकलेलां तेमांनुं एक आपने माटे हतुं ते आ साथे मोकलुं छुं। हजी भगिनी सेवा मंदिरनो कबजो तो छोड्यो नथी, अने तेने अंगे आ आखी योजनानी इमारत चणी रह्यो छे। बापुए एने लखाव्युं छे के सेवा मंदिरनो कबजो छोड्या पछी योजनानो विचार थई शके, अने ते पण ट्रस्टना हेतुओने अने बापुनी विचार श्रेणीने अनुरूप छे के नहीं ते विचारवा जेवुं छे।

दा. अनसारीना मृत्युथी बापुने सख्त आघात पहोंच्यो छे। अनेक कागळोमां एमणे लख्युं छे के मरणो मने हलावी नथी शकतां, पण

आ मरणथी मने बहु आघात पहोंच्यो अने एकलो बनी गयो होय एम लागुं छुं; एनी साथेनी मैत्री ते एक राजकीय मैत्री न्होती पण गाढ अंगत मैत्री हती। "हरिजन"मां पण बापुए पोतानुं बधुं दुःख ठालव्युं छे।

पेली जे व्हेन विषे डा. झाकीर हुसेन साहेबनो कागळ तमने लखनौमां आवेलो अने जेनो जवाब आपना तरफथी में तेमने आपेलो ते व्हेननो आवेलो कागळ आ साथे मोकलुं छुं। ए व्हेनने हवे हुं लखी दउं छुं के तमारी साथे पोताना आववा विषेनो पत्रव्यवहार सीधो करे।

तमे कुशल हशो। सौने यथायोग्य। किशोरलालभाईने प्रणाम। जानकीव्हेन, गोमतीव्हेन वि. ने पण।

लि. सेवक

महादेवना प्रणाम

: २४९ :

NANDI,
15-5-36

JAMNALAL BAJAJ,
WARDHA

Wire particulars Tarabens[1] death.

—*Bapu*

: २५० :

नंदी दुर्ग,
२१-५-३६

चि. जमनालाल,

खरेज ताराबहेन असाधारण बाई हती। तेनी एकनिष्ठा, दृढता, पवित्रता, उदारता, हिंदुस्ताननो प्रेम अवर्णनीय हतां। महादेवीए पण बहु सरस सेवा करी अने हिम्मत पण बतावी।

मीरांबहेननो कागळ तेनी मांदगीनो छे। ए बाईना दोष नजीवा छे। तेना गुण अनुकरण करवा योग्य छे। ईश्वर तेने बचावे।

१. एक युरोपियन बहिन जो महिलाश्रम, वर्धाकी छात्राओंके साथ हिमालय यात्राके लिए गई थीं। लेकिन रास्तेमें हैजेसे उनकी मृत्यु हो गई थी।

मदालसा ओम मजामां ...... बन्ने कागळो पाछा मोकलुं छुं।

तमारा शरीरनी संभाळ राखता हशो। खोराकनुं में लख्युं छे ते प्रमाणें चाले छे? आराम पुरतो लेवाय छे? नित्य फरवानुं थाय छे? पेडुने सारु पट्टो लेवानी जानकीबहेनने सूचना नाखी देवानी नथी।

अहीं बधुं कुशळ छे। बापुना आशीर्वाद

: २५१ :

नंदी दुर्ग,
२५-५-३६

चि. जमनालाल,

आ साथे गोपालनो कागळ तमने वांचवा मोकलुं छुं। ताराबहेन जतां ए खूब गभराएलो लागे छे। एनामां दोष छे तेम गुण पण छे। एने दोरवानुं हवे मारे माथे आवे छे। एमां मुश्केली नथी जोतो। छेटें बेठां बताव्या करवानुं छे। हमणां तो बीमाना कामने वळगी रहेवा अने ग्राम सेवा सारु तैयार थवानुं सूचव्युं छे।

सुमित्रा अने सुभद्रानुं अटपटुं छे। एने ताराबहेन हरिद्वार लई गई हती एम ख्याल छे। हुं तपास करुं छुं। तेनो विचार पण जाणवानो प्रयत्न करुं छुं। जो गोपाल कहे छे तेम सुमित्रा सुभद्रानो कबजो सोंपी देय तो तेने महिलाश्रममां राखवी एम मने लागे छे। सुमित्राने तो खेडामां मेरीबहेन पासे रहेवानुं सूचव्युं छे। तेने खर्च जोगुं कदाच आपवुं पडे। तमारो अभिप्राय जणावजो। तमे आराम लेजोज।

बापुना आशीर्वाद

३० मे लगी नंदी। ३१ मे – १५ जुन लगी बेंगलुर सिटी।

: २५२ :

BANGALORE CITY,
२-६-३६

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो।

जुहुमां बरोबर आराम मळतो होय कसरत करता हो अने खोराकना नियम पाळता हो तो मने संतोष छे। पेडुने सारु पट्टानी जरूर लेज। छतां डाक्टरनी सलाह लेवी होय तो लेजो।

अमे वर्धा १५ मी तारीखे पहोंचशुं। मदालसाए बे लीटी लखीने टीक वेठ उतारी छे। त्यां आवीने वजन वधार्युं होय ने मानसिक व्यथा दरीयामां नाखी दीधी होय तो भले ते कागळ न लखे।

ओम क्यां छे। श्रीमननुं हिंदी तो मारी पासे छेज। हुं थोडुं लखी मोकलीश। हरीलालनुं जोयुं हशे।

बापुना आशीर्वाद

: २५३ :

वर्धा,
२५–६–३६

पू. बापूजी,

आपके जानकारीके लिये साथका (श्री. वी. कुर्मय्याका) पत्र भेजा है।

आप यहां कब आनेवाले हैं? श्री. शंकरलालभाई, तुकडोजी बुवा, शंकरराव टीकेकर आदिने कहा है कि बापूजीने बुलाया है। मैंने आपकी शर्तें इन सबोंको साफ कह दी थीं तो भी व्यवस्था करना भाग पड़ा।[1]

[illegible]

: २५४ :

(जबाब दिया १५–७–३६)

प्रिय मुरब्बी जमनालालजी,

(१) आ साथे ब्हेन महादेवीनो कागळ जोवाने मोकलुं छुं।

(२) पेली पुरुलीआवाळी ब्हेनने परवानगी आपी ?

(३) आजे बापुए गांधी सेवा संघनुं संमेलन हुदलीमां राखवानी परवानगी गंगाधररावने मोकली छे, अने बापुए त्यां जवानुं कबूल कर्युं छे। किशोरलालभाईने खबर आपवा कृपा करशो ?

१. गांधीजीको लिखे उपरोक्त पत्रका श्री. महादेवभाईने निम्न उत्तर उसी पत्र पर लिख भेजा :—

इसको (श्री. कुर्मय्याको) क्या जवाब दिया यह तो लिखा नहीं। बापुजीने इसके बारेमें कुछ भी सिफारिश नहीं की थी। जब उन्होंने कहा "जमनालालजीको लिखना चाहता हूं," तब शायद उन्होंने कहा होगा "लिखना हो तो लिखो," इतना ही।

(४) श्रीमन्नारायणना शा खबर छे ? अहीं छे खरा के बीजे क्यांय गया छे। में परम दिवसे एमने काम सोंपेलुं तेनो कशो जवाब आव्यो नथी।

(५) पू. जानकीबेन पासे गायनुं घी कांई स्टॉकमां छे के ? अमे पंजाबथी मंगावीए छीए ते आव्युं नथी अने हाल घी विनाज चलावीए छीए। थोडुं घणुं मळे खरुं ?

लि. सेवक

महादेव

: २५५ :

मगनवाड़ी, वर्धा,
२९–७–३६

प्रिय मु. जमनालालजी,

हुं सवारे तमारी साथे वात करवाना इरादाथी आव्यो, पण तमे तो नागपुर गयेला। बापुजीनी पासे पेली बाबतमां परवानगी लई आव्यो छुं। एने विषे केटलीक सूचना बापुए करी छे ते तमने मळीश त्यारे करीश। दरम्यान खबर ए आपवानी के तमारा महेमान राजकुमारी काले सवारे ७ वागे ग्रांड ट्रंकमां आवे छे। आपणे काले स्टेशन उपर मळशुं। माराथी सवारना पहोरमां सेगाम तो नज जवाय। राजकुमारी ज्यारे जशे त्यारे जईश। स्टेशनथी सीधो हुं तमारे त्यां आवीश एटले ते वेळा बधी वातो करीश।

लि. सेवक

महादेवना प्रणाम

: २५६ :

सेगांव,
३१–८–३६

चि. जमनालाल,

तमारी साथे त्रण वात करवानुं भुलाई गयुं।

बाबाराव हरकरेनुं शुं थयुं ? मने लागे छे के तेने दर मासे रू. २५ मोकलवा सारु छे।

तेना भाईनी लायकात वधारेनी होय तो तेने वधारे आपवुं घटे।

शंकरराव टीकेकरनी स्थिति दयामणी लागे छे। तेनी उपर १५०० नो समन्स छे ने ते बेकार छे। तेने माफ कंई करवानुं विचार्युं छे।

आ बधी बाबतमां तमे वधारे विचारी शको।

मथुरादास त्रिकमजी

: २५७ :

(मिला १७–२–३७)

प्रिय मु. जमनालालजी,

मने माफ करजो। आ बाईने बेंकमां जवुं हतुं एटले बेंकमां लाव्यो अने पछी एटलुं बधुं मोडुं थयुं के माराथी त्यां न आवी शकायुं। नागपुर जवानुं एटले मारे मारी बधी टपाल पूरी करवी। त्यां आववा जवामां घणो वखत जाय।

पेली बाईने बापु जोवा इच्छे छे। एने विषे करेली सूचना हुं आपने मळीश त्यारे कहीश।

हुं तमने बे वागे मळीश ते वेळा तैयार थई रहेजो। मोटर मोडी आवशे एम हुं धारतो हतो पण ए तो अत्यारनी आवी गई छे। एटले आपणे बे वागे सेगांव जशुं, अने पाछा फरतां नालवाडी सुधी तमे आवजो। बापु नालवाडी जवाना छे।

लि. सेवक

महादेव

: २५८ :

(मिला १९–२–३७)

मुरब्बी जमनालालजी,

हमणां आपने मळवुं अशक्य थई पड्युं छे। ए स्वाभाविकज छे। ए तो इलेक्शन पूरां थाय त्यारेज मळाय ना? मिसिस नाइडुने में कह्युं हतुं के तमे छूटा होत तो अवश्य मळत, पण बनी शके एम न हतुं। एणे संदेशो आपेलो के डा. महोदयने २५० रूपीआ मदद मळे तो एने जीतवामां अडचण न आवे। आपने आवीने आ वात कहेवी हती पण ज्यारे तमारा घर आगळथी जवानुं थाय त्यारे आप न हो।

श्रीमती मुथुलक्ष्मी रेड्डी बापुने मळवा आववानी छे। एनी तारीख नक्की नथी। पण बापुए कह्युं छे के एने तमारे त्यांज उतारवानी छे। तमारी गेरहाजरीमां उतारूं ना?

१६ मी तारीखे सांझे मिसिस फ्यूलोप मीलर करीने एक बाई आवे छे। एना पतिए बापुने विषे ओस्ट्रीअन भाषामां सरस पुस्तक लख्युं छे, अने तेनुं भाषान्तर अंग्रेजीमां 'गांधी एन्ड लेनीन' नामना पुस्तकमां थयुं छे। ए बापुने मळवा आववानी छे। एने पण तमारे त्यां उतारवानी छे। त्यारे तमे हशो के?

लि. सेवक

महादेव

: २५९ :

ALLAHABAD,
30-4-37

SETH JAMNALALJI,
WARDHA

Regret inability personally bless bride bridegroom. Please apologise Rameshwardas.[1] Reaching Saturday noon. Inform Maganwadi Shegaon.

—*Bapu*

: २६० :

तीथल,
वलसाड थईने,
१५-५-३७

प्रिय मुरब्बी जमनालालजी,

अहीं पू. बापुने खूब शांति अने आराम मळे छे। आखो दिवस सुंदर हवा वाया करे छे।

१. धूलियाके रामेश्वरदास पोद्दारके लड़के श्रीराम व जानकीदेवी बजाजके भाई पुरुषोत्तमदास डालमियाकी लड़की लक्ष्मीके विवाह पर।

आ साथे पेला मूळचंद पारेखना पुत्रनी श्री. दालमीआने करेली अरजी मोकलुं छुं। ए तमारी मारफतेज मोकलवा मागे छे। एने विषे घटतुं लखशोजी। ए बहु लायक युवक छे। ए विषे शंका नथी। सारी first class career छे।

लि. सेवक

महादेवना प्रणाम

केसनुं[1] शुं थयुं? पूरो थयो के नहीं? तमारी तबीअत मजामां हशे।

: २६१ :

तीथल,
वलसाड थईने,
२८–५–३७

प्रिय जमनालालजी,

एंडरूझनो कमलनयन विषे आवेलो कागळ आ साथे मोकलुं छुं। तमे शुं धारो छो?

वर्धामां प्रेस करवानो विचार हतो तेनुं शुं थयुं? बापु पूछे छे के ए संबंधी तमे तपास करवाना हता ते करेली खरी के? आजकाल कागळो मोंघा थया छे एटले हरिजन सेवक अने हरिजन बंनेनी छपाई मोंघी थई छे। हवे ए जो आपणे वर्धा लावीए तो कांई सस्तुं पडे के केम ते पण जोवानुं छे।

हवे तो अमे १० मी तारीख सुधी अहीं रहेवाना एटले तमे अहीं एक दिवस आवी जाओ तो सारुं एम बापुजी लखावे छे। काले सांजे राजा अहीं आवे छे। त्रण चार दिवस तो रहेशे एम मानीए। ए पछी खेर आवशे। तमे सौ मजामां हशो। तमारे पण १४ मीए तो केसने माटे वर्धा पहोंचवानुं रहेशेज। अमे १० मीए नीकळी १२ मीए वर्धा पहोंचशुं। जो तमने मुंबई वे त्रण दिवस काम न होय तो ७ मी ८ मीना अरसामां आवो अने आपणे सौ साथे वर्धा जईए। उत्तर लखशो।

लि. सेवक

महादेव

१. 'चित्रा' और 'सावधान' दो मराठी पत्रोंपर जमनालालजीने मानहानीका मुकदमा चलाया था। उस समय वे कांग्रेसके खजांची थे और ये पत्र उन पर ऐसे झूठे और निराधार आरोप लगाते थे कि जिससे उनकी साखको आंच आती थी। मुकदमेमें वकील, मुनीम आदि कोई भी असत्यतासे काम न लें इसकी वे पूरी सावधानी रखते थे। अंतमें मुकदमेमें उनकी जीत हुई और मुलाजिमोंको ६–६ माहकी सजा हुई।

: २६२ :

तीथल,
६–६–३७

चि. जमनालाल,

* * बाबत मारी मति मुंझाएली छे। एनी साथे पत्रव्यवहार चाली रह्यो छे। पण अबघडी तो आम लखवानुं मन थई जाय छे। जेम घणा भिक्षुक तमारी पासे आवे छे तेने आपतां न आपतां मारा अभिप्रायनी जरूर नथी रहेती तेम आमांय गणो ने तमने ठीक लागे तेम करो। मारो अभिप्राय जोईएज तो तमारे राह जोवी जोशे।

तमे आराम लई शकता हशो। खूब फरता हशो। खावामां परेजी पाळता हशो।

१० मी सवारे के ९ मी सांजे अहींथी रवाना थवानुं छे। आ रस्तेथी जाओ तो साथे जईए, पण जेम सवड पडे तेम करजो।

बापुना आशीर्वाद

: २६३ :

(?–६–३७)

चि. जमनालाल,

* * ने खर्च आपवानुं कह्युं होय तो १००० तारथी मोकलो। संघ तरफथी जवाब नीचे प्रमाणे।

Wiring thousand cover travelling. Regret inability advance loan.

तमे उछीना देवानुं आश्वासन नथी आप्युं, एम हुं समज्यो छुं। एटले उछीना आपवानी जरूर हुं तो नथी जोतो।

शंकरनो तमारी उपरनो कागळ पाछो मोकलुं छुं। एने चोपडीओ मोकलवी सारुज छे।

बापुना आशीर्वाद

हरजीवननो पण पाछो मोकलुं छुं।

: २६४ :

(सेगांव)
१५–६–३७

चि. जमनालाल,

यदि खानसाहेब राजी हैं तो जायँ। बियानीको तार देना कि खानसाहेबसे व्याख्यान न करावे। खानसाहेब जायँगे तो महर और लालीका क्या ? कल यहां आनेवाले थे।

कमल पहोंच गया सो अच्छा हूआ।

बापूके आशीर्वाद

: २६५ :

(सेगांव)
१९–६–३७

चि. जमनालाल,

यह तार भेज दो।[1]

Khansaheb has no independent zest. If need his presence urgent come and discuss with him.

—Gandhi

यदि यह उत्तर उचित माना जाय तो भेजो। मैं हुकम निकालकर भेजना नहीं चाहता हूं।

बापूके आशीर्वाद

: २६६/अ :

सेगांव, वर्धा,
१७–९–३७

चि. जमनालाल,

उद्योग संघना एटला बधा सभ्यो अहिं आव्या एथी हुं काले शरमायो अने दुःखी पण थयो। आवा कामने सारु मारे त्यां आववुं जोईए। एथीज खर्च विगेरे वधुं बचे छे। मारा शरीरने तो एटली

१. यह तार विदर्भ कांग्रेस कमिटीके अध्यक्ष श्री. ब्रिजलाल बियाणीके लिए था।

हरफर करवाथी कशुं नुकसान थाय एम नथी, पण त्यां न आववाथी अने सौने अहिं घसडवाथी मने तो वहु धक्को पहोंचे । एटले मने मोटर अथवा रेंगी जे कंई होय ते वखतसर पहोंचाडजो जेथी हुं त्यां मोडामां मोडो १॥। वागे पहोंची शकुं। वधाने बंगलेज बोलावजो । ने जो बंगलामां न थई शके तो सुखेथी मगनवाडीमां लई जजो । चर्खा संघनुं जे सीधुं काम होय अथवा अटपटुं होय ते बनी शके तेटलुं तमेज आटोपी लेजो । जेथी आपणे अत्यंत अगत्यनीज वातो करी शकीए ।

बापुना आशीर्वाद

: २६७ :

(सेगांव,
१७–९–१९३७)

प्रिय जमनालालजी,

बापुको तो आना ही पड़ेगा क्योंकि दोनों संघके सदस्योंको Ministers से लेनेके कामके बारेमें उन्हे कुछ कहना है। इस कामके लिये तो बापुको आना ही चाहिये।

ग्रा. उ. संघके सब सदस्य वहां पहुंच जायंगे। आप पू. बापुको १॥ बजे कार भेजें।

आपका

महादेव

: २६८ :

मगनवाडी, वर्धा,
११–१०–३७

प्रिय मु. जमनालालजी,

एटलां कामोमां गुंथायो छुं के कागळ नथी लखी शक्यो। पण तमारा तरफथी करवानुं वधुं करुं छुं । श्रीमनने रोज बे वार जोउं छुं । केटलीक भूलो थती अटकाववानो प्रयत्न करुं छुं, काले थानुं एने जोवाने माटे अने खास करीने जानकीबहेनने हसता राखवाने माटे अने अधीरा न थवाने समजाववाने माटे लाववानो छुं । महेमानोनुं पण जोई रह्यो छुं । बहादुरजीनुं बराबर जोई लईश । निश्चिंत रहेजो।

कोन्फरन्स' बंध कराववानो मारो अनेक कारणे विचार हतो। एक तो श्रीमननी मांदगी अने तमारी चिंता। बीजुं बापुने कलकत्ता पहेलां थोडो आराम मळे, कारण आ परिषदमां ठीक वखत अने श्रमनो खर्च थशे। पण आर्यनायकमे न मान्युं अने कह्युं "जवाबदारी बधी मारी।" पण हजी एने समजावी रह्यो छुं। काले जे थाय ते खरुं। तमे श्रीमननी के महेमानोनी कशीज चिंता न करशो। श्रीमननी पासे घणो समय आपवानो प्रयत्न करीश। कशुंज complication नथी अने चिंतानुं कारण नथी।

आ कागळ उतावळमां स्टेशन उपर लखी रह्यो छुं। आवनारा जनारा माणसोज एटलो वधो वखत लई रहे छे के जराय नवराश रहेती नथी।

लि. स्ने.

महादेवना प्रणाम

: २६१ :
अ

सेगांव, वर्धा,
१२–१०–३७

चि. जमनालालजी,

तमारो कागळ मळ्यो।

बहादूरजी भले आवे।

श्रीमनना तावने विषे में जाण्युं छे। एनो ताव खराब छे। हठीलो लागे छे। आजे तेने जोई आववानी आशा सेवी रह्यो छुं। आ तो सवारनी प्रार्थना पछी लखावी रह्यो छुं। श्रीमननी मांदगीने लीधे केळवणी परिषद[1] मुल्तवी राखवानी सूचना मारी पासे महादेवे अने किशोरलाले मूकी। मने ते गळे न उतरी। सौ माणसोनो समावेश करवानी जवाबदारी तमारी उपर नज होवी जोईए। पैसा तमारा हशे ए मानी लउं छुं। एनी मने चिंता नथी, पण कारभारना बोजा तमारी मदद विना बीजा माणसो न उंचकी शके तो आवा काम नज करवा जोईए एम हुं मानुं छुं। अने एटली शक्ति बीजाओमां आवी होय तोज कामो दीपे। तेथी में

१. शिक्षा परिषद, जिसमेंसे 'बुनियादी तालीम' का जन्म हुआ।

आर्यनायकमने कहेवडाव्युं छे के एनी पोतानी श्रद्धा अने आवडत होय तोज परिषद थवा दे । नहि तो ए भले मुल्तवी रहे । आ विचारज श्रीमननो हतो, में आधार श्रीमननी उपरज राख्यो हतो। अने ए तंदुरस्त हतो त्यां लगी हुं निश्चिंत हतो। एने विषे में मानेलुं के ए तो मांदो पडेज नहि। एटले ज्यारे एनी मांदगीनुं सांभळ्युं त्यारे हुं व्याकुळ बन्यो। श्रीमननी तमारी शोध अत्यंत अजायबी भरेली में मानी छे। एनामां विद्वत्ता, पीढता ने नम्रतानुं असाधारण मिश्रण छे। एनी हाजरी विनानी परिषद मने अळखामणी लागशे, पण आदरेलां काम अधूरां न मूकाय ए न्याये नायकमनी श्रद्धा न खूटे त्यां लगी ने तमारो विरोध न होय तो परिषद भरवानो में आग्रह राख्यो छे। तमे विरोध करो ते स्थाने होय एम हुं समजुं। केम के तमारी व्यवहारबुद्धिने विषे मने श्रद्धा छे। तमारा विना, तमारा बंगलाना उपयोग विना परिषदनुं काम सांगोपांग उकेली शकाय के नहि एनुं विशेष ज्ञान तमनेज होय। एथीज जो तमे इच्छो के परिषद मुल्तवी राखवी जोईए तो मने तुरत तारथी खबर देजो। अने परिषद मुल्तवी राखीश।

तमारी तबियत तो सारी हशे। सावित्रीनुं चाली रह्युं हशे।

बापुना आशीर्वाद

: २७० :

वर्धा,
१२–१०–३७

प्रिय मु. जमनालालजी,

बापु श्रीमन्‌ने जोई गया। बहु खुश छे, अने तावनुं जोर पण ओछुं छे। चिंता करवा जेवुं कशुंज नथी। तमे शुक्रवारे तो आववाना छोज। आर्यनायकमनी साथे वातो करी तेने तो बापुए कह्युं के "जमनालालजी उपर जरा पण बोजो नांख्या विना बधा महेमानोनो भार उठाववाने तैयार हो तो राखो।" एणे कह्युं के "हुं भार उठावीश।" छतां बापुए तमने लखवुं तो योग्यज धार्युं। एटले आ कागळ जाय छे।

बहादुरजीनुं हुं जोई लईश।

लि. सेवक

महादेव

: २७१ :

सेगांव,
१३–१०–३७

चि. जानकीबहेन,

आचार्य रामदेवनो मारी उपर कागळ छे के तमारे देहरादून जवानो स्वीकार करीज लेवो। तारीख मारी पासे नथी। श्रीमन तो सारो थईज जशे। जो न जई शको तो तेने तार करजो। जई शको तो सारुं छेज। पतिदेवने पूछवानी जरूर खरी के ?

बापुना आशीर्वाद

: २७२ :

CALCUTTA,
2-11-37

JAMNALAL BAJAJ,
WARDHA

Temporary setback Bapus health necessitates stay here week atleast. Frontier visit indefinitely postponed. No anxiety. Inform Segaon.

—*Mahadev*

: २७३ :

मगनवाडी, वर्धा,
६–१२–३७

प्रिय. मु. जमनालालजी,

आ माणस बनारसथी चाल्यो आवे छे। बंगाळनी वीरामपुर जेलमां interned हतो। तेने एक मास उपर छोडीने extern कर्यो। त्यां एनी पासे कशुं खावापीवानुं पण साधन (न) मळे। Home Minister ने अनेक अर्जी करी छे पण एने कोईए दाद नथी दीधी एटले मोहनलाल सक्सेनाए एने अहीं धकेल्यो छे। हवे मारे बंगाळना Home Minister साथे पत्रव्यवहार करवो रह्यो। अने एने बंगाळमां रहेवानी परवानगी मेळवी देवी रही। त्यां सुधी एने पडी रहेवा दो, एने कंईक काम सोंपशो। माणस तो ठीक लागे छे। एने विषे लखवाने माटे मारे बापुनी जरा सूचना लेवी रही। मोटर मळी शके के ? जो मोटर न मळे तो साथेनी चिठ्ठी बापुने कोई साईकलवाळा साथे मोकली आपशो ?

बीजी कंई सूचना होय तो आपशो ? बापुनुं मुंबई जवानुं जराय मन नथी लागतुं। हरि इच्छा। एमनी मरजी विरुद्ध कांई करवामां सार हशे? पण जे थयुं ते थयुं।

लि. सेवक

महादेवना प्रणाम

: २७४ :

जूहु,
२३-१२-३७

प्रिय मुरब्बी जमनालालजी,

काले रात्रे दाक्तरो आव्या हता। एमणे हृदयना धबकाराना फोटोग्राफ लीधा। ब्लड प्रेसर जे फरवा जता पहेलां १६० हतुं ते १९० थयेलुं हतुं। आजे सवारे १८८/१०८ हतुं। आनो अर्थ ए थयो के सर्पगंधानी असर पण तात्कालिक छे, कायमनी नथी। दाक्तरो पण मुंझाया तो छेज, पण बे त्रण दिवस जोया पछी सर्पगंधानो डोझ वधारवो के नहि तेनो ए लोको विचार करशे।

बाकी संपूर्ण शांति छे। कोई आव्या गया नथी। पट्टणी साहेबनो कागळ हतो के "रजा विना मळवा नहि आवुं।" हुं एने ताज महाल होटेलमां मळी आवीश एटले संतोष थशे। माणसोने आववा देवामां हुं तमारा जेटलीज कडकाई राखुं छुं।

प्यारेलाल तो शांत लागे छे। मने लागे छे के काळे करीने घा रुझाई जशे, अने आ तावणीमांथी नीकळीने ए वधारे शांत अने वधारे दृढ मनना थशे।

आवती काले सांजे पागनीस भजन संभळाववा आवे छे। तमे आवशो त्यारे पाछा एक वार बोलावशुं।

लि. स्ने.

महादेव

: २७५ :

मगनवाडी,
वर्धा,
२७–१२–३७

प्रिय मुरब्बी जमनालालजी,

तमारो कागळ मळेलो। हुं मानतो हतो के तमने सुशीला तो नियमित लखती हशेज। एटले में न लखेलुं।

बापुनी तबीयत तो तमे गया त्यारे हती तेवीज छे। १४० सुधी उतरे पण २०० सुधी चढे। काले दाक्तर गिल्डर भरूचा दाक्तरने लाव्या हता। दा. पुरुषोत्तम पटेल पण हता। ए लोकोए बापुने दवा आपवानो निश्चय कर्यो। बापुए 'हा' तो पाडी, पण पछी आजे सवारे पाछी ना पाडी। अने सर्पगंधा शरु करी। हवे ए चालु राखशे।

प्यारेलालनुं तो सारुं चाले छे। साव शांत छे। भाई व्हेन वातो खूब करे छे खरां पण तेनी मने शी रीते खबर पडे? पण हाल तो बधुं कुशळ लागे छे, अने कशोज डर नथी। एटले तमे चिंता मुक्त रहेशो।

लि. स्ने.

महादेवना प्रणाम

: २७६ :

७–३–३८

पूज्य बापूजी,

सुभाषबाबू कल फिर आपसे मिलने आना चाहते हैं। आप अपना समय लिख भेजें। मैं भी परसों उनके साथ टाटानगर तक जाऊंगा। वहांसे रांची चला जाऊंगा।

ज. ब.

सुभाषबाबू कल एक बजे या तत्पश्चात जब चाहे आवें। साथका तार भेज दिजीये। पैसे महादेवसे लिजीये।

बापु

Gladys Owen,
Vinona Bungalow,
Sholapur

Come anyday before twelfth. Love. —Bapu.

: २७७ :

वर्धा,
१०–३–३८

प्रिय मुरब्बी जमनालालजी,

बाळकोबायी हवे एमनी कोटडीमां रही शकाय एम नथी एम बापुने लागे छे। कारण गरमी असह्य छे। अने एने जूहु जवुं नथी एटले तमारी रजा होय तो ते हमणां तमारा वाळा घरमां सेगांवमां आवी जाय। जेवी रीते प्रथम तेओ रहेता हता। आमां तमने वांधो तो न होवो जोईए। पण तमने पूछावी लेवुं सारुं एटले पूछाव्युं छे। जो आ बाबत तार करवो घटे तो तार करशो। एटले बाळकोबाने तमारा घरमां लई जवामां आवशे।

लि. सेवक

महादेवना प्रणाम

: २७८ :

सेगांव,
२३–४–३८

चि. जमनालाल,

लीलावती मुनशीने ना लखी छे। २८ मीए सवारे मारी राह जो जो। खानसाहेबने तार कर्यो ते जोयो हशे। आ साथे वल्लभभाईनो कागळ छे। ते वांचजो ने तेने देजो। त्यां न होय तो ज्यां होय त्यां पोस्ट करजो। स्वस्थ थई जजो। तमने मोकलेला भाषणमां[1] जे फेरफार करवा होय ते करजो।

बापुना आशीर्वाद

: २७९ :

PESHAWAR,
3–5–38

SETH JAMNALAL BAJAJ,
JAIPUR

Forgot tell you Vallabhbhai cannot go Jaipur. He has to go Mysore. Health well climate excellent but tour programme cancelled as too heavy.

—*Bapu*

१. जयपुर राज्य प्रजा मंडलका अध्यक्षीय भाषण जिसका मसविदा जमनालालजीके लिए गांधीजीने खुद बनाया था।

: २८० :

BOMBAY,
12–5–38

JAMNALAL BAJAJ,
SIKAR

Hope your appeal to Sikar people will be listened. You should stay there till required.

—*Bapu*

: २८१ :

(सेगांव, सोमवार,
२३–५–३८, १॥ बजे)

कुछ कहनेका नहीं है। जाजूजीको भेजना अनावश्यक है। वहां जाकर बैठना है। जब कुछ करनेका मौका मिले तब हिस्सा लेना। अन्यथा मौन धारण करना। वहां जानेका धर्म है इसमें मुझे संदेह नहीं है, अगर गंदकी दूर नहिं हो सकती है तो प्रांतिक समितिको छोडना होगा।[1]

: २८२ :

२३–५–३८

चि. जमनालाल,

गोसीबहेननो तार छे। तेनी मा मरी गयां। में तार दीधो छे। तमे तार के कागळ मोकलजो। राजेंद्रबाबु मजामां हशे। टेम्परेचर कोई आवतुं होय तो मोकलजो।

બાપુના આશીર્વાદ

: २८३ :
अ

सेगांव, वर्धा,
११–६–३८

चि. जमनालाल,

महादेव उपरनो तमारो कागळ जोयो। तमारी व्यथा समजी शकुं छुं। मारुं पगलुं ए व्यथा दूर करवामां थोडे घणे अंशे पण मददगार

१. मौनवार होनेसे गांधीजीने जमनालालजीके प्रश्नोंका जवाब लिखकर दिया था।

थाओ। में छापाने सारु एक अंग्रेजी लेख घडी तो काढचो छे हजी छपाव्यो नथी। तमारी सूचना विचारवा लायक छेज। मारा स्वभावने अनुकूळ बीजी वस्तु छे। एवी वस्तु हुं ज्यारे जाहेर करुं छुं त्यारे मने वधारे शांति मळे छे। तमारा कागळमां रहेलो भय व्यावहारिक वस्तु छे। विचारपूर्वक अने धर्म समजीने एक पगलुं हुं भरुं तो तेने वळगी रहेवानी शक्ति हुं खोई बेठो छुं एम नथी लागतुं। छतां उतावळे नहीं छापुं। ए मुलतवी रहेशे तोये जेओ गुजराती नथी समजता तेमने सारु तो गुजरातीना जेवुं निवेदन अंग्रेजीमां होवुंज जोईए।

सावित्रीने पुत्र जन्मवाना खबर काले गोर्धनदास तरफथी मळी गया। लक्ष्मणप्रसादने एक पत्तुं लखी मोकलुं छुं।

बापुना आशीर्वाद

: २८४ :
अ

मगनवाडी (वर्धा),
१२–६–३८

प्रिय जमनालालजी,

तमारो कागळ बापुजीने वंचाव्यो हतो। तेमनो जवाब आ साथे छे। हुवे तमने अहींनी परिस्थितिथी वाकेफ करुं। बापुना आ ठरावनो'

१. "जब पू. बापूजी शामको घूमनेके लिए जाया करते थे तब अनेक लोग उनके साथ जाते थे। उनमेंसे किसी न किसीके कंधे पर हाथ रखकर बापूजी चलते थे। इसमें लड़कियोंकी होड चलती थी कि 'आज मैं बापूजीकी लकडी बनूंगी'......'आज मैं बनूंगी'। वर्धाके लोगोंमें एक बार इसकी चर्चा होने लगी और एक दो मित्रोंने यह भी कहा कि बापूजीको देखकर और लोग भी इसका अनुकरण करनेकी संभावना है। इस लिए बापूजीने अपना यह रिवाज छोड देनेका ठराव किया और इस बारेमें अपने साप्ताहिकके लिए लेख भी लिखा।

हममेंसे चंद लोगोंने बापूजीके इस ठरावका विरोध किया। हमारी दलील यह थी कि बापूजीके लिए जो चीज बिलकुल स्वाभाविक थी उसे छोडनेसे ही सारा वायुमंडल कृत्रिम हो जायेगा। बापूजीका असाधारण अधिकार सब जानते हैं। उनका अनुकरण करनेकी कोई हिम्मत नहीं करेगा। और जैसा कि महादेवभाईने लिखा है, हम ऐसे उदाहरण जानते थे कि बापूजीके पवित्र व वात्सल्यपूर्ण स्पर्शसे कई बहनोंको आश्वासन व शान्ति मिलती थी। बापूजीके ठरावका विरोध हुआ यह ठीक ही हुआ, किन्तु उनको इस विषय पर अपने विचार विस्तारसे लिखनेका मौका नहीं दिया गया यह अच्छा नहीं हुआ।"

—काका कालेलकर

मीरांबेन सिवाय बधां बेरांओए सखत विरोध कर्यो छे। राजकुमारीनो विरोध बधारेमां बधारे सख्त छे। पुरुषोमां सुरेंद्रजी, बलवंतसिंहजी जेवाए एनो सत्कार कर्यो छे। विरोधीओमां मारा जेवा छे। में तो अनेक कारणे विरोध करीने नीचे प्रमाणे सूचना करी हती।

१. जो बीजा जे छूट न भोगवे ते पोते पण न भोगवी शके ए बापुनो सिद्धांत तत्वत: स्वीकारीए तो बापुए पोताने माटे तेमज पोताना तमाम साथीओ माटे बहेनोना तमाम खानगी अथवा एकांतना स्पर्शो निषिद्ध गणवा।

२. जाहेरमां पण दरेक अनावश्यक स्पर्श निषिद्ध गणवो।

आनी सामे बापुनुं कहेवुं एवुं छे के नैष्ठिक ब्रह्मचारी सिवायना बधा माटे आ बे नियमो पर्याप्त छे पण जेने नैष्ठिक ब्रह्मचर्य पाळवुं होय तेने माटे स्पर्श मात्र वर्ज्य होवो जोईए। हुं आ वस्तु स्वीकारतो नथी। पण ए क्षेत्र मारा जेवाना अधिकारथी बहार छे। हुं तो एटलुं समजुं छुं खरो के, अनेक बहेनो बापुना स्पर्शथी पवित्र थई छे। अने पोताना अनेक आधि व्याधिमां आश्वासन मेळवी शकी छे। ए सेवाथी बापुए बहेनोने वंचित नहीं राखवी जोईए।

गये अठवाडिये आ ठरावने समजावनारो लांबो लेख हरिजनने माटे लखाव्यो हतो, ते में सबळ कारणो बतावी रोक्यो। आ आठवाडिये पण रोकवानी पूरी उम्मेद छे। पछी तो जे थाय ते खरुं।

तमारा कागळथी हुं जरा गभरायो। बापु अमुक करे तो आपणो मार्ग सरळ थाय ए कहेवुं मने जरा वसमुं लाग्युं। जेनो जेटलो अधिकार तेवो तेनो मार्ग। मने लागे छे के में जे उपर मर्यादाओ वर्णवी एटली आपणे सहु साथीओ स्वीकारीने बापुने निश्चित करीए तो बापुने कोई नवो ठराव करवापणुं रहेज नहीं। आ वस्तुनी जाहेर चर्चामां तो हमणां हुं लाभ करतां हानि वधारे जोउं छुं। वधु शुं लखुं? प्यारेलाल, सुशीला बे दिवस थयां आव्यां छे। सुशीलानी सेवा तो निषिद्ध नथी गणी। पण ए बीजी बहेनोने खटके छे। अमे शुं एना करतां ओछी पवित्र छीए एम ए लोको पूछे छे। ब्लड प्रेसर आवा ठंडकना दिवसोमां पण १८०–१०८ जेटलुं रहे छे। ए चिंताकारक तो कहेवायज। पण आवा विषयोनी चर्चामां ज्यां २४ कलाक जता होय त्यां ब्लड प्रेसर ओछुं केम होई शके?

आपका

महादेव

आ अक्षर कोना छे,[1] कहेशो ? केटलाक दिवस थयां ओम (उमा) मारी सेक्रेटरी बनी छे। मारी पासे कागळोनो ढगलो एटलो बधो थयो के में एनी पासे मागणी करी। ए आववा लागी अने एने अने मने बंनेने लाभ छे। ए गुजराती, मराठी, हिंदी, त्रणे भाषामां तो घणुं लखी शके छे, एटले ए त्रण भाषाना कागळो एने लखावुं छुं। अंग्रेजी बहु काचुं छे, ते ए बाबलानी साथेज बेसीनें भणे छे। रोज सवार सांज बे कलाक आवे छे। तमारी रजा विना एनी सेवा लेवा मांडी, ए माफ करशो ना ?

महादेव

: २८५ :

४(?)—७—३८

चि. जमनालाल,

आज बालकृष्णने इस्पीताल लई जवा सारु मोटर ९ वागे आववानी हती। न नीकळी होय ने मोटर मोकली शकाय तो मोकलजो। इस्पीताल पण चिठ्ठी जाय छे। जो एओने हजु वखत हशे तोज मोटर जोईए।

बापुना आशीर्वाद

: २८६ :

३०—७—३८

चि. जमनालाल,

तमारी अहीं रहेवा आववानी इच्छा छे एम तमे अहीं कोईने कही गया छो। आवो तो बधुं तैयारज छे। पण जो न आववाना हो तो मारो विचार किशोरलालने थोडो समय अहीं राखवानो छे। पण तेनो अर्थ एटलो ए नथी के तमारे आवतां रोकाई जवुं। तने गम आवी शके तोज किशोरलाल आवे। महर्षि रमणनी पासे जेम बने तेम वहेला जई आवो एम मारी इच्छा छे।

बापुना आशीर्वाद

१. यह पत्र उमासे लिखवाया था। इसमें नोंध महादेवभाईने शुरु लिखी है।

: २८७ :

श्रीहरि

बजाजवाडी,
वर्धा,
ता. १८-१०-३८

पू. बापूजी,

श्री. द्विवेदीका आपके नामका पत्र देखा। मेरे पास भी उनका पत्र आया है। ग्वालियर राजमें इन्होंने कुछ अर्सेसे ग्राम सेवाका कार्य प्रारंभ किया है। बीच बीचमें मुझे इनके कामकी रिपोर्ट मिली है। श्री. हरिभाऊजी इनके कामके बारेमें प्रत्यक्ष रूपसे अधिक जानते हैं। आप इन्हें संदेश या आशीर्वाद भेजना चाहें तो कोई खास आपत्ति नहीं है।

आप आपका प्रोग्राम लिख भिजावें। यहां किस तारीखको पहुंचेंगे? श्री. भणसालीजीकी व्यवस्था ठीक है। आप चिन्ता न रखें। डॉ. नर्बदाप्रसाद पूरा ख्याल रखते हैं।

जमनालाल बजाज

(नक़ल परसे लिया गया)

: २८८ :

मनोरविला,
सिमला वेस्ट,
२२-१०-३८

प्रिय मुरब्बी जमनालालजी,

मैं तो यहां आ पड़ा हूं। स्वास्थ्य आस्ते आस्ते सुधर रहा है। पूर्वकी शक्ति आनेमें काफी देर लगेगी, परंतु अधीर होनेसे थोड़ा लाभ है? राजकुमारीजीके प्रेम और सेवाकी तो मैं क्या बात करुं? ऐसे प्रेम और सेवाके अधिकारी होनेके लिए दूसरा जन्म लेना पड़ेगा।

आपका स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं है ऐसा मीराबहनसे सुना है। आपको भी आरामकी बहुत आवश्यकता है। पर आप ऐसे बड़े आदमीको कौन कहे? आप कहीं चले जायं तो अच्छा होगा। यहां आवेंगे? यहां ठंडी तो काफी है, परंतु मैं बरदास्त कर सकता हूं। आप नासिक

या और कोई स्थान जायं तो शायद हम भी शामिल हो जायं। क्योंकि मुझे अधिक आराम लेना पड़ेगा और यहां तो ९ नवेंबरके बाद नहीं रहना है। बापुका दौरा ९ को पूरा होता है। परंतु बापु फंटीअर कब छोड़ेंगे नहीं जानता हूं। उनका फंटीअर छोड़नेका इरादा बहुत कम है।

नये सालके मेरे, दुर्गाके और बावलाके आपको प्रणाम और सबको प्यार।

आपका

[signature]

: २८९ :

22-10-38

MAHATMA GANDHI,
KOHAT

Mahodaya met Dr. David. Accordingly gold treatment continues. Bhansali satisfactory. Balkoba slowly progressing.

—*Jamnalal*

(नकल परसे लिया गया)

: २९० :

(अक्टूबर ३८)

प्रिय श्री. महादेवभाई,

आपका ता. २२–१०–३८ का पत्र मिला। आपके स्वास्थ्यकी खबर मैं इधर उधरसे निकाल लिया करता हूं। बहन राजकुमारी-जीकी सेवाके बारेमें जो आपने लिखा है वह पढ़कर सुख मिला। उनकी सेवा, त्यागवृत्ति तथा पू. बापूजीके प्रति भक्ति देखकर मेरे जैसे शुष्क आदमीके मनमें भी उनके प्रति पूज्य भाव व आदर रहता है। मेरी इच्छा उनके साथमें रहनेकी हुआ करती है, परन्तु अभीतक मौका नहीं मिला।

मेरे स्वास्थ्यके बारेमें आपने पूछा, तो मुझे तो शारीरिक आरामसे भी मानसिक आरामकी ज्यादा जरूरत है। इस लिए मैं अपनी जवाबदारी कम करनेकी कोशिश कर रहा हूं। पू. बापूजी तो मुझे मदद कर रहे हैं।

आनेका प्रोग्राम आपके तथा पू. बापूजीके यहां आनेपर ही बनानेकी कोशिश करेंगे।

आपके स्वास्थ्यके समाचार तथा प्रोग्राम चि. बावलाके जरिए लिखवाना।

श्री. राजकुमारीबेन तथा दुर्गाबेनको प्रणाम कहना। आपके साथ कहीं रहनेको मिलेगा तो खुशी होगी।

जमनालाल बजाज

(नक़ल परसे लिया गया)

: २९१ :

श्रीहरि

पौनार, वर्धा,
का. शुक्ला १२–९५,
४–११–३८

पूज्य बापूजी,

आज मिति व तारीखके हिसाबसे मुझे ४९ वर्ष पूरे हुए हैं। पचासवां वर्ष चालू हुआ है। आपका आशीर्वाद तो सदैव ही रहता है, परंतु मैं जब विचार करता हूं तो मुझे इन दो अढ़ाई वर्षोंमें ऐसा साफ दिखाई देता है कि मैं आपके आशीर्वादका पात्र नहीं हूं। मेरी कमजोरियोंका जब मैं विचार करता हूं तब तो इन वर्षोंमें खासकर छोटेलालजीकी घटनाके बाद मेरे मनमें आत्महत्याके भी विचार आये, जिसे मैं कायरता व पाप समझता आ रहा था, बुद्धिसे तो अभी भी समझता हूं। मुझे दुःख इस बातका विशेष रहता है कि मेरी उन्नतिके बदले अवनति विशेष होती दिखाई दे रही है।

इसके कई कारण हो सकते हैं, परंतु उन सबकी जिम्मेवारी तो मेरी ही है। देहलीके पहले तक तो विचारोंका जोर मेरे मनमें चलता रहा। एक तो मैं सब सार्वजनिक कामोंसे, अगर संभव हो तो खानगी

कामसे भी, अलग हो जाऊं। अगर यह संभव न हो तो ज्यादह जिम्मेवारीका काम लेकर उसमें रात दिन फंसा रहूं। परंतु अब तो निकलनेमें ही अधिक समाधान मिलना संभव है। मेरी कमजोरी मुझे इस प्रकार दिखाई दे रही है।

अहिंसा व सत्यका आचरण कम होता दिखाई दे रहा है। डर है कि कहीं इस परसे श्रद्धा भी कम न हो जावे। इसी कारण असहनशीलता भी बढ़ रही है। क्रोधकी मात्रा भी बढ़ती जा रही है। कामवासना बढ़ती हुई मालूम हो रही है। लोभकी मात्रा भी। इतने सब दुर्गुण या कमजोरी जो मनुष्य अपनेमें बढती हुई देख रहा है फिर उसे जीनेका मोह कैसे रह सकता है? याने मानसिक कमजोरीके विचार तक ही बात होती तो भी फिर प्रयत्नके लिये उत्साह रहता, परंतु जब शरीरकी इन्द्रियोंको भी मैं काबूमें न रख पाता हूँ याने प्रत्यक्ष शरीरसे पाप होते दिखाई देता है तब लाचार बन जाता हूँ। ऊपरी हिम्मत तो बहुत ज्यादह रख रहा हू, रखनेका प्रयत्न भी करता रहूँगा। परंतु मुझे आज यह अनुभव हो रहा है कि कहीं यही दशा रही तो या तो पागलकी स्थिति पर पहुंच जाना संभव है या पतनके मार्ग पर जानेका भय है। इस लिये आज अगर स्वाभाविक मृत्युका -निमंत्रण आए तो मेरी आत्मा कहती है कि मुझे समाधान, शांति मिलेगी, क्योंकि मेरा भविष्य अंधेरेमें दिखाई दे रहा है। मुझे आज यह विश्वास हो जावे कि मरा पतन कभी नहीं होवेगा, मैं सत्यके मार्गसे नहीं हटूंगा तो मुझमें फिर नवजीवन उत्साह आना संभव है। मुझे इन वर्षोंमें बहुतसी मानसिक चोटें लगी हैं। कुटुम्बियों द्वारा, मित्रों द्वारा, जिसके लिये मेरी तैयारी न थी। अगर इसी प्रकार चोटें लगती ही रही तो पागल होनेके सिवाय दूसरा क्या होवेगा? मृत्यु तो मेरे हाथकी बात नहीं है। आत्महत्यामें तो कायरता व पाप दिखाई देता है। क्या करूं कुछ समझमें नहीं आता। मेरे दिलका दर्द किसे कहूं? कौन ऐसा है जो प्रेमसे मेरी मानसिक स्थितिको सुधार सकता है? मेरा भरोसा तो आप पर व विनोबा पर ही था। परंतु आपसे तो अब आशा कम होती जा रही है। विनोबासे अभी आशा है। शायद कोई समाधानकारक मार्ग निकल आए।

इन वर्षोंमें मैं आपके पास कई बार हृदय खोलनेके लिये आया, परंतु आपकी मानसिक, शारीरिक व आसपासकी स्थितिके कारण पूरी तौरसे

खोल नहीं सका। इसका मेरे मनमें दुःख रहा और ऐसा लगता रहा कि मैं आपको व अन्य मित्रोंको धोखा तो नहीं दे रहा हूं। क्योंकि मैं धोखेसे बढ़कर पाप या नीच कृत्य नहीं मानता आया। इस लिये मैंने मेरी स्थिति कई मित्रोंको, घरवालोंको कहनेका प्रयत्न किया, परंतु उसमें पूर्ण सत्य न रहनेके वजहसे या अन्य कई कारणोंसे उसका जो परिणाम आना चाहिये था वह नहीं आया। अब आप कोई राजमार्ग बता सकते हैं। मुझे तो लगता है कि अभी तक मेरी बुद्धि काम दे रही है। मेरेमें जो जो कमजोरियां हैं व वे जिन कारणोंसे घुसी हैं वह भी मालूम है, उनको निकालनेकी इच्छा भी है। यह इच्छा तीव्र बनाई जा सकती है। परंतु मेरे पास याने मेरे साथ कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसमें प्रेम, सेवा व उदारता भरी हुई हो, जिसके पवित्र चरित्र व प्रेममय वातावरण या सेवासे मेरे मनको शांति मिले। क्या इस प्रकारकी बहिन या भाई आपकी निगाहमें है? अगर निगाहमें है तो क्या उसका मेरे साथ रहकर मेरी सेवा करना संभव है? सार्वजनिक कार्यकर्ताके पाससे काम छुड़ाकर उससे अपनी सेवा लेनेकी हिम्मत नहीं होती। मैंने जिन कमजोरियोंका वर्णन किया है, उसका यह अर्थ नहीं है कि मेरेमें पहले कमजोरियां नहीं थीं, इन वर्षोंमें ही आई हैं। वे पहलेसे ही थी, परंतु मुझे लगता था कि वे जोरसे निकल रही हैं। परंतु आज ऐसा नहीं मालूम हो रहा है, यही खास बात है।

आप कोई ऐसा मार्ग निकाल सकें तो निकालें जिससे मेरी मामूली मनुष्योंमें गिनती हो। लोग अधिक पवित्र व उच्च न माने तो शायद इससे भी मेरा कल्याण हो। आप मेरी इस अवस्थासे दुःखी तो होंगे ही परंतु मैं क्या करूं? समझमें नहीं आता। मुझे तो आपको प्रणाम करनेमें भी संकोच होता है।

मेरे मनमें जिस प्रकार विचार आये आज जन्मदिनके निमित्त लिख दिये हैं। आप जब यहां आवेंगे तब समय निकालकर जो कहना हो सो कहें, वहां तक मैं विनोबासे मदद लेनेका प्रयत्न करूंगा।

जमनालाल बजाज

(नकल परसे लिया गया)

मैंने यह पत्र पू. विनोबा, चि. राधाकृष्णको तो दिखा दिया है। जानकीदेवी व कमल आदिको फिर बता दूंगा। नक़ल रख ली है।[1]

: २९२ :

सेगांव, वर्धा,
२१-१२-३८

चि. जमनालाल,

तमारा बन्ने कागळ मळया हता। पेलानो अमल कर्यो हतो। बीजाने सारु आग्रह शा सारु? जलीयांवाला बाग मीटींगमां तमारी हाजरी नहीं होय तो चालशे। भले केशवदेवजी हाजरी आपे। वोटनी तो जरूर नहीं रहे। तमे तबीयत खराब छे एवो निश्चय न करी बेसता। तबीयतने आरामज जोईए छे। ए मळे तो ठीक थई रहेशे। तमे हिंदुस्तानमां अथवा सीलोनमां थोडी मुसाफरी करो तो बस थई रहे। काम मात्रनी चिंता छोडो।

रजबअलीनो वहीवट ठीक छे के? जानकीबहन केम छे?

बापुना आशीर्वाद

१. यह पत्र लिखनेके बाद २७-११-३८ को जमनालालजीका गांधीजीसे मिलना हुआ। तब पता चला कि उपरोक्त पत्र गांधीजीको नहीं मिला है। जमनालालजीने तब अपना हृदय मंथन गांधीजीको बताया। कोई १। घंटे बातें हुईं। उसके बाद गांधीजी और जमनालालजीको और कामोंमें लग जानेसे बात करनेका समय नहीं मिला। २६-१२-३८ को जमनालालजी फिर गांधीजीसे मिले और अपने ४-११-३८ के पत्रकी नक़ल गांधीजीको दिखाई। उस दिन मौन होनेके कारण गांधीजीने अपने निम्न विचार लिख दिये :—

"काले थोडो समय आपणे वात करीये अथवा एक बे दिवस रही शकाय तो रही जाओ। तमारा दरदनुं औषध मने सहेलुं लागे छे। गभरावानुं कंई कारण नथी। तमारो विनाश तो छेज नहीं। पण तमारा दोषोनो स्वीकार हुं तो करुं छुं। केमके मने तो एवा बधा अनुभवो थई चुक्या छे। अहीं गूंच उकेलीने जवुं एटलुंज अत्यारे तो कहुं।"

गांधीजीने चाहा कि जमनालालजी एक दो दिन ठहर जायं, पर जयपुर सरकारने जमनालालजी पर जयपुरमें प्रवेश करने पर जो पाबंदी लगाई थी उसके विरोधमें वे जयपुर जाना आवश्यक समझते थे। इस कारण वे रुक न सके। अतः उसी दिन (२६-१२-३८ को) गांधीजीने अपने विचार पत्र द्वारा भी विस्तारसे लिख भेजे। वह पत्र आगे दिया है।

: २१३ :

अ

सेगांव,
२६–१२–३८

चि. जमनालाल,

हमणाज इंग्रेजीमां शुभाषित आव्युं हतुं । तेनो अर्थ आ छे । मनुष्ये पोताना दोषोनुं चिंतवन न करवुं, गुणोनुं करवुं । केम के मनुष्य जेवुं चिंतवन करे छे एवो थाय छे । एनो अर्थ ए नथी के दोष न जोवा । जोवा तो खराज । पण तेनो विचार कर्या करी गांडा न बनवुं । आवुंज आपणा शास्त्रोमां मळी रहे छे । एटले तमारे आत्मविश्वास राखी निश्चय करवो के तमारे हाथे कल्याणज थवानुं छे। थयुं तो छेज।

तमारे अति लोभ छोडवो घटे छे । परोपकारार्थे पण खानगी व्यापार काढी नाखवो जोईए । नज नीकळे तो सखत मर्यादा बांधवी। राजद्वारी क्षेत्रमांथी नीकळी जवानो प्रयत्न करवो। जो तेमां रहेवुंज घटे तो तमारी शरते रही शकाय तो केवळ सी. पी. ने घडवानुं कार्य करवुं। पण तमारुं क्षेत्र पारमार्थिक व्यापार छे। तेथी तमे फरी चर्खा संघमां सर्व-शक्तिनो उपयोग करो। ए प्रवृत्ति तमारी बुद्धि, तमारी नीति, तमारी व्यापार शक्तिनो पूरो उपयोग लई शके छे। राज्यप्रकरणमां पुष्कळ गंदकी आव्या करे छे। तेमां तमने संतोष मळवानो थोडोज संभव छे। चर्खा संघनी पूर्ण सफलता थाय तो सहेजे पूर्ण स्वराज मळे एम छे। आमां तमे झंपलावो तो ग्राम उद्योग, अस्पृश्यता निवारण वि. मां तमे थोडुं घणुं माथुं मारी शको छो। पण ए तमारी इच्छा प्रमाणे। आ तो अतिलोभने रोकवा ने तमने पेट पूरती, मनगमती प्रवृत्ति सूचववा।

बीजी वस्तु विकार छे। ए जरा मुश्केल छे। हुं जो तमने बरोबर समजी शक्यो होउं तो मने लागे छे के तमारे स्त्री परिचर्या रोकवी घटे छे। बधाय तेने जीरवी नथी शकता। आपणा मंडळमां स्त्री परिचर्या करनारो घणे अंशे हुं एकलो छुं एम कही शकाय। मारी सफलता निष्फल-तानो आंक मारा मृत्यु पछी नीकळी शकशे। मारे सारु ए हजु प्रयोग रूपे छे। हुं पोते सफळज थयो छुं एवुं छाती ठोकीने नज कही शकुं। मारी झंखना शुकदेवजीनी स्थितिए पहोंचवानी छे। ते स्थितिथी हुं घणा योजन दूर छुं। जो तमने आत्मविश्वास होय तो मारे कंईज कहेवानुं नथी। पण जो ते न होय ने मारी समज बरोबर होय तो तमारे ऊंडे उतरीने घटतो फेर-फार करी नाखवो घटे छे। स्त्री सेवा छोडवानी अहीं वात नथी।

आमांथी एकेय वस्तुनो पडघो तमारा हृदय उपर न पडे तो नथी करवानुं। विचारनी आप ले करजो। निराशाने क्यांय स्थान नथी। तमे पतित नथी, तमे सत्यनिष्ठ छो। सत्यनिष्ठनुं पतन संभवतुं नथी।

फरी नथी वांच्युं।

बापुना आशीर्वाद

: २९४ :

बिडला हाऊस,
न्यू दिल्ली,
३०-१२-३८

पूज्य श्री बापूजी,

मैं कल फ्रण्टियर मेलसे सवाई माधोपुर पहुंचा। उतरते ही जयपुर राज्यकी लाइनके स्टेशन पर जयपुर राज्यके नीचे लिखे अधिकारी उपस्थित मिले।

(१) रा. ब. लाला दीवानचन्द, डिप्टी इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस
(२) श्री. डी. एन. चक्रवर्ती, सुपरिन्टेंडेंट पुलिस
(३) हसनअली, सब-इन्स्पेक्टर पुलिस
(४) श्री. लक्ष्मीनारायण, तहसीलदार, सवाई माधोपुर

दस मिनिट बाद मि. यंग, इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस भी आगये थे। सबकी मौजूदगीमें मुझपर जो नोटिस तामिल किया गया उसकी नक़ल इसके साथ है।[1]

१. जमनालालजी पर निम्न नोटिस तामिल किया गया था :—

To
SETH JAMNALAL BAJAJ
of WARDHA (C. P.)

Whereas it has been made to appear to the Jaipur Government that your presence and activities within the Jaipur State are likely to lead to a breach of the peace, it is considered necessary in the public interest and for the maintenance of public tranquillity to prohibit your entry within the Jaipur State.

You are, therefore, required not to enter Jaipur territory until further orders.

By order of the Council of State
M. Altaf A. Kherie
Secretary, Council of State, Jaipur

मि. यंग मुझसे कोई १॥ घण्टे तक बातचीत करते रहे। वैसे तो मैंने ऐसी किसी रुकावटको न माननेकी ही तैयारी कर ली थी, परन्तु उस दिन आपने जो अपना दृष्टिबिन्दु मुझे बताया वह मुझे जँच गया था और इसलिए मैं इस मनाहीको मानकर दिल्ली चला आया। जयपुर प्रजा मंडलके मित्रोंसे मिलकर उनकी स्थिति जान लेना जरूरी थी।

प्रजा मंडलके मित्रोंका मत था कि मुझे तुरंत ही इस आज्ञाको भंग कर देना चाहिए था; परन्तु यहां श्री. हीरालालजीको जब मैंने आपके विचार बताये तो उन्हें वे पसंद आये। मेरी इस रोकके संबंधमें आज एक बक्तव्य मैंने अखबारोंमें दिया है उसकी भी एक प्रति इसके साथ भेज रहा हूं।

कलसे ज. प्र. मंडलकी कार्यकारिणीकी मीटिंग जयपुरमें होगी। उसमें मुझपर लगाई गई रोकसे उत्पन्न परिस्थिति पर विचार तथा प्रजा मंडलकी राजनैतिक मांगका कच्चा ढाँचा तैयार किया जायगा। उसे लेकर मैं तथा श्री. हीरालालजी ३/४ दिनमें बारडोली आजायेंगे और आपकी राय तथा सूचना जानकर उसे पक्का बना लेनेका विचार है।

मुझपर यदि रुकावट लगाई जाय तो उसके बारेमें आपने एक चिठ्ठी लिखनेका कहा था। वह यदि मेरी तरफसे भेजनी हो तो उसका मसविदा बनाकर श्री. सागरमलके हाथ भेज दीजिए। यदि आप खुद इस विषयमें किसीको पत्रादि लिखना मुनासिब समझें तो उसकी भी सूचना मुझे इनके साथ भिजवा दीजिएगा।[1]

१. इस पत्रके मिलतेही गांधीजीने श्री. राधाकृष्ण बजाजको लिखा :—

"यह तार भेजो। खत भी साथमें है।

Wire. No worry about order. If possible come Bardoli.

—Bapu."

लेकिन उपरोक्त तार भेजनेसे पहले ही जमनालालजीका नई दिल्लीसे भेजा हुआ ता. ३१-१२-३८ का निम्न तार मिला :—

"Sagarmal not coming. Wire Bapus approval meeting Bardoli fourth with Jaipur friends."

इस तारकी पीठ पर गांधीजीने श्री. प्यारेलालके द्वारा श्री. राधाकृष्णके लिए लिखवाया कि पहले भेजे गये तारकी जगह नीचे लिखा तार भेजो :—

"Your wire. Will gladly meet you Jaipur friends Bardoli fourth. —Bapu."

: २९५ :

(९-१-३९)

चि. जमनालाल,

घ. नो तार आवी गयो छे। रजा आपी छे।[1] रजिस्टर गयुं।

बापुना आशीर्वाद

: २९६ :

जानकी कुटिर,
जुहू, बम्बई,
१६-१-३९

पूज्य श्री बापूजी,

इस पत्रके साथ मि. यंगकी ओरसे श्री. देशपाण्डेजी (गोविन्दगढ़) को भेजे हुए पत्रकी[2] नक़ल भेज रहा हूं। श्री. देशपाण्डेजीने श्री. शंकरलालभाईको भी उसकी नक़ल भेजी है। उन्होंने आपको लिखा ही होगा। इसका जो जवाब आप उन्हें भेजेंगे वह कृपया मुझे भी सूचित कर दें। वैसे तो अन्डरटेकिंग देनेमें हर्ज नहीं था, परन्तु वर्तमान स्थितिमें प्रश्न विचारणीय हो जाता है। मेरे कार्यक्रमकी नक़ल भी आपको भेज रहा हूं।

जमनालालका प्रणाम

: २९७ :

जानकी कुटिर,
जुहू, बम्बई,
१७-१-३९

प्रिय बहन राजकुमारीजी,[3]

कल पू. बापूजीका तार मिलने पर यहांसे मैंने जयपुर दरबारकी स्टेट कौन्सिलको जो पत्र लिखा था उसकी नक़ल व वहांके नोटिफिकेशनकी नक़ल

१. गांधीजीने श्री. घनश्यामदास बिरलाको ७-१-३९ को पिलानी निम्न तार दिया था, जिसके जवाबका उल्लेख यहां किया गया है:—

"In Jamnalalji's letter Jaipur State there is reference to your telegram dated October twelfth advising that remaining Sikar prisoners will be released thirteenth. Your name not mentioned but may have to be if challenged. Have you any objection. Wire Bardoli."

२. इस पत्रमें राजस्थान चरखा संघके सदस्योंसे राजनीतिमें भाग न लेनेकी अन्डरटेकिंग मांगी गई थी।

३. राजकुमारी अमृत कौर। वे उस समय गांधीजीके सेक्रेटरीका काम करती थीं।

उन्हें भेज दी है। इस पत्रके साथ Extract from the Jaipur Gazette No. 4518 की नक़ल भेज रहा हूं। शायद बापूजीको इसकी जरूरत पड़े।

कल जो कागजात बापूजीने मंगवाये हैं, उस परसे मालूम होता है कि इस हरिजनमें वे इस विषय पर कुछ लिखेंगे। यदि बापूजीके इस लेखकी एक नक़ल आप मुझे वर्धाके पते पर भिजवा देंगी तो जयपुर राज्यमें प्रचार करनेके लिए मैं उसका उपयोग करना चाहता हूं। जिस समय हरिजन प्रकाशित होगा उसी समय उसे पत्रिका रूपमें छपानेका विचार है। इस लिए यदि उसकी नक़ल पहिले ही मिल जायगी तो इस काममें सुविधा होगी। मैं कल यहांसे वर्धा जानेवाला हूं।

[illegible]

Replied. No copy available. Sent copy of letter to Sir Beauchamp.[1]

18-1-39 A. K.

: २९८ :

BARDOLI,
28-1-39

JAMNALAL BAJAJ,
CARE KANORIA,
CALCUTTA

Time reserved.

—*Bapu*

: २९९ :

BARDOLI,
28-1-39

JANKIDEVI BAJAJ,
WARDHA

Dont go Jaipur now till certified by doctors and me as perfectly fit and cheerful.

—*Bapu*

१. यह नोंध राजकुमारी अमृत कौरने जमनालालजीके पत्र पर लिखी है।

: ३०० :

AGRA,
3-2-39

MAHATMA GANDHI,
WARDHA

Hope you saw my statement after release. Planning enter Jaipur earliest on foot. Ghanshyamdasji pressing delay re-entry.[1] Myself disagree unless Govt. communicate in writing. Think Beauchamps correspondence[2] should now be published. Anxious. Wire health programme care Lakinsure. My phone sixtysix.

—*Jamnalal*

: ३०१ :

NEW DELHI,
4-2-39

MAHATMA GANDHI,
CARE JAMNALAL BAJAJ,
WARDHA

Inasmuch as police officer in charge Jamnalalji verbally requested him give authorities time reconsider may I ask Jamnalalji address letter to authorities mentioning police

१. श्री. घनश्यामदास बिरलाने गांधीजीको इस संबंधमें नई देहलीसे ता. ३–२–३९ को निम्न तार भेजा था:–

"Jaipur affairs likely take satisfactory turn. Am suggesting Jamnalalji to give further one fortnight before returning Jaipur. Meanwhile working hard for lifting ban. Please advise Jamnalalji accordingly. Also feel a good statement from you about Jaipur this stage would help."

इस तारकी पीठ पर गांधीजीका निम्न मजमून मिलता है, पर कहा नहीं जा सकता कि यह तार बिरलाजीको भेजा गया या नहीं:–

"Jamnalal must not wait but........request for........Have made statement about Jaipur........................"

इस बारेमें जमनालालजीकी डायरीमें ता. ३–२–३९ को लिखी निम्न बात मिलती है:—"बापूका तार आगया, मुझे जाना चाहिए, उससे संतोष हुआ। बापूको क्या होवेगा मैंने देर क्यों की, परन्तु सारा हाल उन्हें मालूम होनेसे संतोष मिलेगा।"

२. देखिये खंड ३।

officer's request absurdity of communique and giving them time until eighth. Am sending him draft suitable letter If you agree advise him send letter.

—*Mahadev*

: ३०२ :

(WARDHA)

MAHADEV DESAI,
BIRLA HOUSE,
NEW DELHI

Though do not like your suggestion not knowing fully am advising Jamnalal follow your instruction. Health good.

—*Bapu*[1]

: ३०३ :

JAIPUR,
6-2-39

MAHATMA GANDHI,
WARDHA

Accompanied Jamnalalji till arrest yesterday afternoon. Sethji brought in special train containing military armed police to Jaipur West with us whence taken in cars unknown destination with son secretary servant. Despite promise Inspector General Police while arresting to inform whereabout within two hours no information given inspite repeated requests. Authorities now definitely refusing information. All extremely anxious. Wire instructions care Rajasthan Stores.

—*Chandrabhal Johri*

१. गांधीजीके नाम ता. ४–२–३९ को दिये गये महादेवभाईके तारके पीछे गांधीजीके हाथका लिखा तारका यह मजमून है।

जमनालालजीकी डायरीमें इस बारेमें ता. ४–२–३९ को लिखी निम्न नोंध मिलती है:—"वर्धा दो बार फोन। आखिर बापूकी इजाजत मेरा मन हो उस मुताबिक करनेकी आगई। सुख मिला। लड़ाईके प्रोग्रामकी योजना, चर्चा। जाट नेताओंसे, [illegible], कार्यकर्ताओंसे बातें।"

: ३०४ :

Jamnalalji is safe wherever he is. Trying issue statement. Keep me informed.[1]

: ३०५ :

७–२–३९

चि. जानकीबहन,

तमारे चिंता नथी करवानी। चिंता करे ए लडवैया न कहेवाय। जयपुर जवामां तो कंई माल नथी। एटले अहीं बेठा धर्म पालन करवानो छे। ईश्वरने करवुं हशे ते थशे।

टेलिफोनथी आवेलुं मारी पासे राखुं छुं कंईक स्टेटमेंट करवानी इच्छा छे। मोटर नथी रोकतो।

तमारी आजनी हालतमां अहीं शा सारु आववुं छे?

बापूना आशीर्वाद

: ३०६ :

AGRA,
9–2–39

MAHATMA GANDHI,
WARDHA

Saw statement. Much version regarding Young incorrect owing confusion telephonic message. Correct version appears Hindustan Times eighth ninth dak edition. Hope do needful. Entering again Sunday.[2]

—*Jamnalal*

१. श्री. चंद्रभाल जौहरीके ६–२–३९ के तारके उत्तरमें गांधीजीने उपरोक्त तार श्री. जौहरीजीको भिजवानेको लिखाया था। यह मजमून उस तारकी पीठ पर लिखा हुआ है।

२. जमनालालजीको जयपुर पुलिसने ५ फरवरीको गिरफ्तार किया था और ७ फरवरीको जयपुरकी हदके बाहर, भरतपुर राज्यकी हदमें ले जाकर छोड़ दिया था। इसके बाद जमनालालजीने दूसरी बार १२–२–३९ को जयपुर हदमें प्रवेश किया। तब [illegible]में उनको गिरफ्तार करके मोरांसागर डाक बंगलेमें कैद रखा था।

: ३०७ :

JAMNALALJI,
SAINIK, AGRA

Your telegram. Send definite corrections my version. Will then publish revision. Quite clear you should cross border if possible on foot with small party without giving notice. Jankidevi must not leave Wardha. She is unfit physically and Kamalas approaching delivery makes it dangerous for her leave Wardha. If she went she must throw herself into struggle and can never come back before struggle over. Am convinced time has not arrived for her to do so. Even if she was well and otherwise free to leave Wardha I should discountenance her leaving but would reserve her future when struggle in full swing.[1]

: ३०८ :

RAJKOT,
26-2-39

RADHAKRISHNA BAJAJ,
JAIPRAJA, AGRA

No hartal Jaipur City.

—*Bapu*

(नक़ल परसे लिया गया)

: ३०९ :

AGRA,
27-2-39

MAHATMA GANDHI,
FIVE DOWN, STATION VANKANER, K.

Received. Jaipur hartal spontaneous and continues in connection Viceroy visit. We favour hartal. Wire if you disapprove.

—*Radhakrishna*

१. जमनालालजीके गांधीजीको ९-२-३९ को दिये गये तारके पीछे यह तारका मजमून लिखा हुआ है।

: ३१० :

Hartal should be abandoned when Viceroy enters. But you must be final judges.

—*Bapu*[1]

: ३११ :

(फरवरी १९३९)?

(श्री. जानकीदेवीको लिखे गये निम्न पत्रका पहला पृष्ठ नहीं मिल पाया है)

सोजो हजु उतर्यो नथी। तेमां वळी मी. केलनबेक मांदा पडी गया। विजयालक्ष्मी आव्यां छे ते तमारे त्यां उतर्यां छे के?

वल्लभभाई काले आवी गया हशे। आजे तो जवाहरलाल पण आवशे। हवे तो वर्किंग कमिटी बेसवानी। तमारे त्यां वर्किंग कमिटी बेसवानी ने?

बच्चे तो सुवाश पण बापुजीने मळवा आवी गया।

राधाकृष्ण क्यां छे। एनुं कंई हमणां संभळातुं नथी। अनुसूया सारी हशे।

जमनालालजीनी तबियत सारी हशे। ए पण मारी पेठे भोळाज छे। दुख पडे तो पण बिसारे वात पडी जाय।

कमलनयन तमारी पास छे के मुंबई? चि. रामकृष्ण बारडोली आव्यो हतो जमनालालजी साथे त्यारे जोयो हतो। एनी तबियत सारी हशे।

लि जानकी(?)

१. यह तथा पिछले दो तार जयपुर सत्याग्रहके समयके हैं। यह तारका मजमून राधाकृष्ण बजाज, जो कि जमनालालजीकी गिरफ्तारीके बाद जयपुर सत्याग्रहका कामकाज देखते थे, के ता. २७–२–३९ के तारके पीछे गांधीजीके हस्ताक्षरमें लिखा हुआ है।

जमनालालजीके मनमें इस बारेमें जो विचार उठे वे उनकी ता. २५–२–३९ की डायरीमें निम्न रूपमें लिखे हैं:—"कई दिनोंसे विचार हो रहा था कि वाइसरायके जयपुर आनेके बारेमें कौंसिल ऑफ स्टेटको पत्र लिखूं, कि उनका आना इस समय प्रजा व राज्यके हकमें ठीक नहीं रहेगा। जयपुर राज्यमें भयंकर अकाल पड़ रहा है। उधर तरफ वाइसरायके स्वागतमें लाखों रुपयोंका नाश होगा—रोशनी आदिमें। मैंने तो यह भी सोचा कि वाइसराय जब तक जयपुरमें रहें मैं निराहार उपवास रखूं। परन्तु बादमें कई कारणोंसे पत्र नहीं भेजा।"

: ३१२ :

दिल्ली,
१६–३–३९

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। जाणी जोईने वधारे नथी लखवा मागतो। मारो दृढ अभिप्राय छे के आपणे मागणीमां वधारो न करवो। प्रजा मंडळने विना शर्त स्वीकारे अने सिविल लिबर्टी आपे एटले सविनय भंग बंध्ध थई शकाय। केदी तो छोडेज।[1]

तमारी तबीयत सारी रहेती हशे। मानसिक स्थिति पण उत्तम हशे। कंई वांचन राख्युं छे? कांतो छो? वजन केटलुं छे? फल वि. खावांज जोईए। एमां हठ करवी मोह छे। स्वाद न करवा पण शरीर मागे ते औषध रूपे देवुं।

बापुना आशीर्वाद

: ३१३ :

मीरां-सागर (जयपुर),
१५–४–३९

पूज्य बापूजी,

पू. बाके बीमारीके समाचार पढ़कर चिन्ता हो रही थी। बादमें ठीक होनेके समाचार पढ़े हैं, आशा है बा अब बिलकुल ठीक होंगी।

राजकोटके मामलेकी रिपोर्ट संतोषजनक नहीं आ रही है। ईश्वर ठाकुर साहेब व उनके सलाहगारोंको सद्बुद्धि प्रदान करे। आपको तो शायद अभी राजकोट ठहरना पड़ेगा।

रामदुर्ग स्टेट (कर्नाटक) में जो घटना हुई उसे पढ़कर दुःख पहुंचना स्वाभाविक था।[2] इस घटनासे तो आपने स्टेटोंमें सत्याग्रह स्थगित कर दिया यह बहुत ठीक किया, ऐसा विश्वास हो गया। परमात्मा जो कुछ करता है व कराता है वह ठीक ही कराता है।

१. इसके बाद ही गांधीजीके हुकुमसे जयपुर प्रजा मंडलकी सत्याग्रह कौंसिलने २२–३–१९३९ को सत्याग्रह स्थगित कर दिया था।

२. रामदुर्ग प्रजा मंडलके अध्यक्ष और कुछ कार्यकर्ताओंको रियासती सरकारने गिरफ्तार कर लिया था। अपने नेताओंको छुडानेके लिए और शायद बदला लेनेके हेतुसे भी, करीब ५००० नगरवासिओंने वहां इकट्ठे होकर सरकारी कर्मचारियों पर हमला किया। इस हमलेको दबानेके लिए सरकारने गोली चलाई। इस आंदोलनके परिणाम स्वरूप रियासतमें ब्राह्मण-ब्राह्मणेतरोंमें आपसी झगड़ा भी छिड़ गया था।

मेरा स्वास्थ्य तो बहुत ठीक है। खांसी बिलकुल चली गई। पांवमें दर्द भी नहीं रहा। वजन ता. ११-४ को लिया था। ११६ करीब है। याने ११, १२ रतल कम हुआ है। मुझे वजन कम होनेकी चिन्ता नहीं है। मैं करीब पच्चीस रोजसे एक ही बार भोजन करता हूं। शामको दूध लेता हूं। यहांका पानी भारी होनेके कारण गरम कर कर पीता हूं। इससे ठीक लाभ पहुंचता है।

मेरा मन तो यहां लग गया है। शान्ति भी ठीक मिल रही है। विचार भी प्रायः ठीक चलते हैं। कई बार कमजोरियोंके खयालसे उदासीनता व रोना आ जाया करता है। बादमें विचार करनेसे, पढ़नेसे उत्साह व भविष्य ठीक दिखाई देने लगता है। भक्तिकी ओर झुकाव बढ़ रहा है। बढ़ा रहा हूं। परमात्माकी दया रही और आपका तथा विनोबाका आशीर्वाद रहा तो जीवनमें उत्साह ठीक आजावेगा। पत्र सुबह प्रार्थनाके बाद लिखा है, जैसे विचार आये वैसे ही। पू. बाको प्रणाम। सरदार वहां हों तो प्रणाम, नारायणदासभाईकी तो कई बार याद आती रहती है।

जमनालाल बजाजके प्रणाम

: ३१४ :

(एप्रिल १९३९) ?

चि. जानकीबहन,

कल तो नानाभाई और मनुभाई आते हैं। उनको सेगांव आने देना अच्छा होगा। आजकल यहां भीड़ नहीं है। और उनको लेनेके लिये मुन्नालाल जाते हैं तो खाली क्यों तुमको तकलीफ दूं ? मंगलवारको शायद पांच आदमी आवेंगे। उनको भी सेगांव लाना तो चाहता हूं। कुछ परिवर्तन करना होगा तो देख लूंगा। जमनालाल पकड़े गये सो अच्छा ही हुआ है।

बापुके आशीर्वाद

विवाह विधि[१] नानाभाई करेंगे। व्यास भी भले आवें।

१. मनुभाई पंचोली और विजयाबेन पटेलके विवाहके संबंधमें।

: ३१५ :

राजकोट,
१३–५–३९

चि. जमनालाल,

तमने जयपुर लाध्यानुं जाण्युं। तबीयत बरोबर सुधारी लेजो। वजन वधारे न घटवुं जोईए। फळ बरोबर खावांज जोईए। काचर कुचर न खाता। वैद्यनी कंई दवा खावी होय तो खाजो। मने राजकोट लखजो। हमणा तो अहींज रहेवानुं थशे। अहींनी चिंता करवापणुं नथी। महादेव साथे छे। एने ठीक रहे छे।

बापुना आशीर्वाद

: ३१६ :

सेगांव,
३–८–३९

प्रिय मुरब्बी जमनालालजी,

हरिजन आश्रमना ट्रस्ट विषेनो ठराव आ साथे मोकलुं छुं। तेनी उपर बापुनी अने मारी सही थई गई छे। आपनी सही करीने आप नरहरिभाईने मोकली आपशो।

आपनी तबीयत विषे चिंताजनक खबर सांभळ्या हता। दिल्हीथी आपने मळवा आववानो विचार कर्यो, पण कलकत्ता केदीओने जोवा जवानुं वधारे अगत्यनुं समजी बापुए मने त्यां मोकल्यो, अने कह्युं के कलकत्ताथी पाछा आव्या पछी जरूर हशे तो जई आवजो। शंकरलाले पण मळवानो तार कर्यो हतो। आप जो इच्छता हो तो तुरत आवी जाउं। वाइसरोये ५ मी तारीखे बापुने मळवा बोलाव्या हता, पण कागळमां लख्युं हतुं के कांई खास काम नथी पण घणो समय थयां नथी मळ्या माटे मळीए तो सारुं, एटले बापुए लख्युं के हमणांज दिल्हीथी आव्यो अने थाक्यो छुं, कामो पण घणां पड्यां छे एटले हमणां तो माफ करो, २० मी पछी कोई तारीख आपशो तो मळीश। स्टेट्स संबंधमां ए लोकोनी नीति जराय समाधानी करवा तरफ होय एम लागतुं नथी। २० मी पछी जो वाइसरोयने मळवानुं थाय तो त्यां शुं थाय छे ते तमने जणाववानो प्रयत्न करीश।

तमे त्यां खूब कामकाजमां दिवस गाळो छो एम श्रीमन् पासे खबर मळ्या हता। एटले तमने काममां एकलापणुं तो नहीं लागतुं होय। तबीयत सरखी नथी रहेती ए दुःखनी वात छे खरी। मुंबईथी कोई दाक्तरने जोवा त्यां न बोलावी शकाय के ?[1]

पू. बापुनी तबीयत बहु सारी रहे छे। मीरांबेन बीहारमां मांदा पडीने पाछां आवी गयां छे। सुशीला दाक्तर दिल्ली इस्पीतालमां एक मास वधु अनुभव माटे गयां छे। जानकीबेनने मळो त्यारे प्रणाम कहेशो।

लि. स्ने.

महादेवना आशीर्वाद

: ३१७ :

जयपुर स्टेट कैदी,
७–८–३९

प्रिय श्री. महादेवभाई,

आपका खत मिला। आपकी कलकत्तेकी खबर अखबारमें देखी।

* * * *

वाइसरायके इन दिनोंके व्यवहारको देखते हुए मेरी ऐसी इच्छा होती है कि जब तक वह स्पष्ट तौरसे मिलनेका कारण न लिखे तब तक बापूजी उसे मिलने न जावें। बापूजी इस समय नहीं गए यह बहुत अच्छा किया। इससे मुझे खुशी हुई। बापूजीसे कहें कि जयपुरके मामलेमें वे विशेष चिन्ता न करें। मैं यहांकी असलियतसे वाकिफ होता जा रहा हूं। भीतर बहुत ही गन्दगी भरी हुई है। प्रजाके लिए तो कोई अपनेको जवाबदार समझता ही नहीं है।

कल हीरालालजी आदि सब मित्र छूट गए हैं। समय तो लगेगा लेकिन परमात्माकी कृपासे और बापूजीके आशीर्वादसे गन्दगी जरूर दूर होगी। वर्तमान स्थितिको देखते हुए तो मुझे काफी समय यहीं देना होगा। श्री. महाराजा साहब आ गए हैं।

१. जयपुर जेलमें जमनालालजीके घुटनेमें पुराना दर्द शुरू हुआ था। उसके लिए इलाज करते समय सरकारी दाक्तरोंकी असावधानीसे उनकी टांग करीब दो इंच जल गयी थी।

मुझे उनसे कुछ आशा तो थी परन्तु वे कुछ कर सकते हैं या नहीं मालूम नहीं। मैंने उन्हें एक खत तो लिखा है। उनसे मिलना तो वर्तमान हालतमें संभव नहीं दिखाई देता है। यहां, अंग्रेजोंमें जो अच्छाई होती है वह भी कम दिखाई देती है। पर उनमें जो बुराइयां हैं उनका पद पद पर अनुभव होता है।

मेरे स्वास्थ्य आदिके विषयमें तो कमलनयनने आपसे बात की ही होगी। शंकरलालभाईका स्वभाव तो घबरानेका अधिक है, इससे आशा है कि बापूजी उनकी बातों पर अधिक ख्याल न करेंगे। मेरे स्वास्थ्यके कारण तो आपके आनेकी जरूरत नहीं है पर यदि किसी मौके पर आप २/४ दिनके लिए आ सकें व यहांकी हालतसे वाकिफ हो सकें तो अच्छा होगा, खासकर शिकारखाना व जंगलातके अमानुषिक कानूनोंसे।

नागपुर टाइम्समें (ता. ३–८ का) राधाकृष्णका आर्टिकल आपने देखा होगा। न देखा हो तो जरूर पढ़ें। उससे आपको कुछ कल्पना हो सकेगी। बापूजीका स्वास्थ्य ठीक है यह पढ़कर समाधान हुआ।

बम्बईसे डॉक्टरको बुलानेकी तो आवश्यकता बिलकुल मालूम नहीं होती।[1] यदि सुशीलाका दिल्लीसे वर्धा वापस जाते वक्त मुझे देखकर जाना संभव हो सके तो ठीक है। वह सारी स्थितिसे आप लोगोंको भी वाकिफ कर सकेगी। अधिकारियोंका व्यवहार ठीक नहीं मालूम होनेसे मेरे जले हुए घावका इलाज कलसे यहांके एक नेचरोपेथकी मददसे शुरू किया है।

हरिजन आश्रमके ट्रस्टके ठराव पर सही करके भेज रहा हूं।

जमनालाल बजाजके वन्देमातरम्

(नकल परसे लिया गया। इसमें मूलसे कुछ फरक हो सकता है।)

: ३१८ :

जयपुर,
२–९–३९,
रातको दो बजे

पू. बापूजी,

कल पत्र लिखा वह मिल गया होगा। श्री जयपुर महाराजासे कल बातें हुईं। उस परसे यह मालूम हुआ कि वे किसी ऊंचे दर्जेके

१. यह पत्र लिखनेके बाद जमनालालजीको ९-८-३९ को गांधीजीका तार मिला कि वे महादेवभाईके साथ बम्बईसे डा. मेहताको भिजवा रहे हैं। इसके जवाबमें भी जमनालालजीने तार भेजा कि फिलहाल बम्बईसे डाक्टरको भेजनेकी कोई जरूरत नहीं है।

हिन्दुस्तानीको दीवान बनानेकी इच्छा रखते हैं। उन्होंने अपनी इच्छा वाइसरायसे कह भी दी है। क्या आप भी वाइसरायको सूचित करना ठीक समझते हैं? नहीं तो मेरी इच्छा तो होती है कि मैं एक वार वाइसरायसे मिलकर जयपुरकी आजकी स्थितिमें योग्य हिन्दुस्तानी दीवान ही सफल हो सकेगा, यह कहूं। अगर यह ठीक नहीं समझा जाय या सम्भव न हो तो पत्र लिखना चाहता हूं। क्योंकि अभी तक दीवानकी नियुक्तिका फैसला नहीं हुआ है। एक बार हो जाने पर कठिनाई हो जायगी। आप अपनी राय लिख भेजें। मैं भी सोचूंगा।

हिन्दुस्तानी दीवानोंमें आप कोई खास नाम बता सकते हैं जिस पर वाइसराय भी आपत्ति न कर स्वीकार कर लेवें? मैंने कल महाराजाको कुछ नाम नोट करवाए हैं जिसमें विशेष रूपसे तो कुंअर सर महाराजसिंहजीका है। आप श्री राजकुमारीबहिनसे पूछकर लिखें कि वह कब तक भारत आनेवाले हैं? उन्हें यह जगह ऑफर की जाय तो वह स्वीकार कर लेवेंगे या? मि. शादीलालका नाम भी मैंने कहा है। आज शायद फिर महाराजा साहबसे मिलना पड़े।

जमनालाल बजाजका प्रणाम

(नक़ल परसे लिया गया)

: ३१९ :

जयपुर,

(खानगी) ५-९-३९

पूज्य बापूजी,

मैंने आज शिमला फोन करनेकी कोशिश की परंतु राजकुमारी बहिनके बंगलेके फोन नंबर नहीं मिले। दूसरे, सात आठ घंटे तक लाइन मिलना संभव नहीं था। इस लिए एक्सप्रेस तार भेजा—

Mahatma Gandhi,
Manor Villa, Simla

Arrange Mahadevbhai or Rajkumari phone tonight Jaipur 67 personal. Urge Viceroy if possible for Indian Prime Minister for Jaipur. Inform programme phone number. —Jamnalal

आपका शिमलासे दिया हुआ यह तार रातको ८॥ बजे मिला।

If easily possible you should attend meeting Wardha eighth. —Bapu

इस समय वर्किंग कमिटीके समय उपस्थित होनेकी इच्छा तो होती है परन्तु यहांका कार्य छोड़कर आनेका उत्साह नहीं हो रहा है।

श्री महाराजा साहबसे दो बार तो मिल चुका। कल फिर १२॥ बजे मिलने वाला हूं। उम्मीद तो है कि प्रजा मण्डलके बेनका प्रश्न कल जरूर तय हो जायेगा। अखबारोंका बेन, सीकर किसान कैदियोंको छोड़नेका प्रश्न भी शायद तय हो जायेगा। तब तो मैं आनेकी कोशिश करूंगा। अन्यथा इस समय श्री महाराजासे मिलकर जो परस्परमें विश्वास, प्रेम सम्पादन हो रहा है उस बल पर ऊपरके तथा अन्य कई प्रश्न हल होनेकी आशा दिखाई देती है। मेरी गैरहाजरीसे सम्भव है बीचके लोग गड़बड़ी डाल देवें। इस लिए रह जाना भाग पड़ेगा। जयपुरके लिए तो मैं आपसे यही मदद इस समय चाहता हूं कि कोई योग्य भारतवासी दीवान आ जाये तो फिर बहुतसे प्रश्न मिल जुलकर तय हो सकेंगे। आप उचित समझें तो वाइसरायको लिखें। अन्यथा यहां तो मैं पूरी कोशिश कर रहा हूं।

मुझे एक बात और लिख देनी है। कलकत्तेमें सुभाषबाबू व मौलानाके वहां न होनेके कारण उनसे तो मैं नहीं मिल सका। परन्तु श्री शरदबाबूसे मिलकर मैंने खूब साफ तौरसे बातें कीं। मेरी समझ है, उसका उनके मनपर ठीक परिणाम हुआ था। उन्होंने कहा कि सुभाषबाबूको वह समझायेंगे व आपके पास लेकर आयेंगे या उन्हें भेज देंगे। मैं भी उस समय हाजिर रह सकूं तो ठीक रहेगा। उनकी बातें सुननेके बाद आप जो मार्ग (formula) निकालेंगे वह सुभाषबाबू स्वीकार कर लेवें। अब तो सरदारजीने उनको बुलवा ही लिया है। मुझे तो पूरी आशा है कि आप चाहेंगे तो उस तरह बहुत करके वह तैयार हो जायेंगे। लड़ाईके बारेमें ब्रिटिश सरकारसे झमेलेमें जाना होगा क्या? मैं तो समझता हूं, शायद आप लोग एक आवाजसे इस समय जो वाजिब शर्त रखेंगे वह शायद स्वीकार हो जाय। रखना चाहिये या नहीं यह आपके विचारनेकी बात है। मेरी समझसे तो रखी जा सकती है।

चि. राधाकृष्णको भेजा है। आप जो उचित समझें इसके हाथ जवाब भिजवा देवें।

मैंने वह स्थान छोड़ दिया है। न्यु होटलमें रहने आया हूं।

जमनालाल बजाजका प्रणाम

(नक़ल परसे लिया गया)

: ३२० :

दिल्ली,
६–९–३९

चि. जमनालाल,

दिवानके बारेमें कठिन बात है। सीमलामें ऐसी कुछ बात हुई ही नहीं थी। अगर तुमारी दृष्टिसे तुमारा वहीं रहना अधिक लाभदायी है तो वही किया जाय। आरामसे आ सकते हो तो आ जाना।

बापुके आशीर्वाद

: ३२१ :

श्रीहरि

जयपुर,
१०–९–३९

पूज्य बापूजी,

यहांके कार्यमें मेहनत तो खूब करनी पड़ रही है। परन्तु परिणाम संतोषकारक आ रहा है। मेरी समझसे प्रायः अपनी मांगें तो पूरी हो ही जायेंगी, जल्दी ही। साथमें और भी रचनात्मक कार्यमें स्टेटकी ओरसे ठीक सहयोग मिलना सम्भव है। श्री महाराजा साहबके बारेमें मेरा ख्याल, ज्यों ज्यों परिचय बढ़ता जा रहा है, ठीक हो रहा है। उनके पास योग्य सलाहकारकी कमी है। आजके मेरे स्टेटमेन्टसे आपको आज तकके कार्यकी स्थितिका पता चल जायेगा। कल जन्मगांठ है उस समय भी कुछ बातें साफ हो जायेंगी। अगर आप मेरे स्टेटमेन्टका हवाला देते हुए जयपुरमें ब्रिटिश प्राइम मिनिस्टर न भेजकर ऊँचे दर्जेका हिन्दुस्तानी भेजनेके लिये हरिजनमें लिख सकें तो उसका शायद पोलिटिकल डिपार्टमेन्ट पर ठीक असर पड़ेगा। मैं तो कोशिश कर ही रहा हूं। मैं अभी तक तो दूध फल पर ही हूं। ता. १५ तक यहां रहूंगा। बादमें सीकरकी ओर जानेवाला हूं।

जमनालालका प्रणाम

(नक़ल परसे लिया गया)

: ३२२ :

श्रीहरि

४ मंगलदास रोड,
पूना,
२४—१०—३९

परम पूज्य बापूजी,

२१-१०-३९ का पत्र बंबई होकर आज सवेरे यहां मिला। मैं तो ता. २०-१०-३९ को ही यहां पहुंच गया था और मेरा ख्याल था चि. कमलने भी आपसे कह दिया होगा। परन्तु वर्किंग कमिटीके कामकी भीड़में शायद नहीं कह सका होगा, इसी लिए आपको चिन्ता हुई। मेरा तार भी आपने देखा होगा। मैं तो बंबईसे और भी जल्दी आता, परन्तु सभी मित्रोंने एक न एक डॉक्टरको दिखानेका आग्रह रखा, और कुछ कंपनीका भी काम रुका हुआ था। यहां आने पर ब्लड प्रेशर तो कम हो ही गया। परसों दिनशाने देखा था तब १४० और ९५ था। यहां थोड़ी शांति व आराम भी मिलनेकी उम्मीद है। आपसे बात हो ही गई थी उसके अनुसार मैं वर्किंग कमिटीकी सभाके लिए नहीं आया और न गां. से. सं.[1] के लिए आ रहा हूं। नेचर क्युअर क्लिनिकके सामने ही एक मकान किराये पर लेनेका विचार है। आज चार दांत भी दिनशाके कहनेसे निकलवाए हैं। एक दांत निकालते समय तो कुछ तकलीफ भी हुई। खानेपीनेका तो दिनशा जैसा कहता है वैसा ही चलेगा। एक तरहसे उसकी ट्रीटमेन्ट शुरू हो गई ऐसा ही मानना चाहिये। इसके लिए अब मुझे कुछ समय यहीं रहना पड़ेगा। दिनशाके पास दो चार रोजमें रहनेको चले जाने पर पूरी ट्रीटमेंट शुरू हो सकेगी।

परसों श्री. महादेवभाईके नाम पत्र भेजा था वह देखा होगा।

आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

: ३२३ :

सेगांव—वर्धा,
१५—११—३९

चि. जानकीबहेन,

दांत पडाववानुं जो दीनशा कहे तो पडाववामां भय न मानवो। पीप नीकळता दांतने काढवामांज लाभ छे। वह जड घालेला दांत

1. गांधी सेवा संघ।

होय तो कंई विचारवा जेवुं भले होय । दीनशा जे कहे तेम करी देजो। मने विगतवार खबर आपजो । मदालसा केम छे। ओमनो कागळ मळ्यो छे। महेरबानी ।

બાપુના આશીર્વાદ

: ३२४ :
अ

3-12-38
सेगांव
वर्धा (मध्य प्रांत)

MAGANWADI
WARDHA (C.P.)

ચિ. જમનાલાલ,

તમારી [illegible] હતી. તમે બીજા ૫૦ વર્ષ પૂરા કરજો ને તમારાં શુભ સંકલ્પો પરિપૂર્ણ કરજો. નિરાશ ન થતા. શાંતિથી [illegible]

બાપુના આશીર્વાદ

(उपरोक्त पत्रनी प्रतिलिपि)

सेगांव, वर्धा,
३–१२–३९

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो हतो। तमे बीजा ५० वर्ष पूरा करजो ने तमारी शुभेच्छाओ परिपूर्ण करजो। निराश नज थता। शांतिथी त्यां तबीयत सुधारजो। अहीं ठीक चाली रह्युं छे। कमलनयन लांबी वात करी गयो हतो। रामकृष्णनुं मन अभ्यासमां चोटयुं जणाय छे। ओम् मजा करे छे। श्रीमननुं तो पूछवुंज शुं। पोताना कर्तव्यमां परायण रहे छे। राजाजी आज आव्या। एंड्रूझ अहीं छे। आजे डा० झकिर हुसैन आवे छे।

बापुना आशीर्वाद

: ३२५ :

२९–१२–३९

चि. जमनालाल,

शास्त्रीजी साथे वातो करी छे। थोडो सुधारो कर्यो छे।
मदालसा बाबत टेलीफोन कर्यो छे।[1] ईश्वर करे ते खरुं।

* * *

बापुना आशीर्वाद

: ३२६ :

९–१–४०

चि. जमनालाल,

हमणा इलाज छोडीने जयपुर न जवाय। महाराजाने कागळ लखजो।

बापुना आशीर्वाद

: ३२७ :

वर्धा,
२६–१–४०

जयपुर विषे हुं हमणा लखवा नथी मागतो। आ वखतनुं मारुं दिल्ली जवुं मारी दृष्टिये बहु महत्वनुं छे। एटले हमणा मारे कशुं न

१. मदालसाके पहले प्रसवका समय नजदीक था और वह बीमार थी।

ओलवुं एज योग्य छे। त्यां तो वात करीशज। आपणने कशी उतावळ नथी। तमारा उपचार पूरा करीनेज जवानो विचार करवानो छे।[1]

: ३२८ :

श्रीहरि ६, ताडीवाला रोड,
पूना,
२९-१-४०

पू. बापूजी,

मैं परसों यहां आ पहुंचा। इलाज पूर्ववत् उसी रोजसे शुरू हो गया है। दामोदरको भी कल डाक्टरने जांचा। खून पेशाब आदि देखकर पूरी रिपोर्ट एक हफ्तेमें देनेको कहा है। चि. मदालसाको आराम है। अब उसे चलने फिरनेकी पूरी इजाजत मिल गई है।

जयपुरसे होम मिनिस्टरका जो पत्र आया था, वह मैंने आपको दिखाया था ही। उस पत्रका जो जवाब मैं देना चाहता हूं उसका ड्राफ्ट आपके पास इस पत्रके साथ भेज रहा हूं। आप उसे देखें व जो सुधार करना ठीक समझें करें। मैंने आज सुबह श्री. हीरालालजी शास्त्रीको कलकत्ता तार दिया है कि वे पूना आते समय रास्तेमें वर्धा उतर जाएं व आपसे मिललें। अभीके कार्यक्रमके अनुसार वे बुधवार शामको मेलसे वर्धा उतरेंगे। जयपुरकी वर्तमान परिस्थितिको देखते हुए मेरा विचार हो रहा है कि आपके वाइसरायसे मिलनेके बाद एक दफा मैं उनसे मिलूं। अगर आप ठीक समझें तो अपनी मुलाकातमें उनसे जिक्र करिये कि जयपुरके मामलेमें पूरी परिस्थिति वे समझना चाहते हों तो मैं उनसे मिलकर समझा दूं। यदि उन्होंने मुझे पोलिटिकल डिपार्टमेंटसे मिलनेका करा दिया तो मैं उन लोगोंको भी साफ तरहसे समझा सकूंगा। इससे बाहरसे जो खराबी व गलतफहमी होती है, उसे मिटानेमें बहुत सुभीता होगा। यदि आप उसे ठीक समझते हों तो इसका जिक्र वाइसरायसे करें। यदि आप यह ठीक समझते हों कि मैं उन्हें अलग पत्र लिखूं, तो आप मुझे उसका ड्राफ्ट बनाकर भेजें, ताकि मैं उन्हें अलग लिख सकूं।

कल शामको जयपुरसे फोन आया था, जिससे मालूम हुआ कि पुलिसने खादी भंडार, खादी आश्रम, प्रजा मंडल दफ्तर, श्री. [illegible] व

१. जयपुरके प्रश्न पर, गांधीजीने मौन होनेकी वजहसे जमनालालजीको यह जवाब लिखकर दिया था।

मिश्राजीके मकान पर छापा मारा। वहां उन्हें कोई खास चीज मिली नहीं। सिर्फ 'जयपुर रहस्य' नामकी एक किताब जप्त कर ली गई। शहरमें इससे सनसनी फैली हुई है। इस तरह पुलिसको अपना आतंक जमानेका मौका मिल रहा है, जिसका मुमकिन है लोगोंपर बुरा परिणाम हो। ऐसी परिस्थितिको देखते हुए मेरा मन यहां नहीं लगता। मेरी बहुत इच्छा होती है कि वहां जाकर रहूं व मामला सुलझानेकी चेष्टा करूं।

आज तक हुई घटनाओंपर प्रकाश डालता हुआ एक छोटासा वक्तव्य प्रेसमें देनेकी इच्छा है। यदि आप इसे समयानुकूल समझते हैं तो जिस आशयका वक्तव्य प्रकाशित करना ठीक हो वह श्री. शास्त्रीजीके साथ भेजें।

जमनालालके प्रणाम

: ३२९ :

POONA,
31-1-40

MAHATMA GANDHI,
WARDHA

Fresh Jaipur news discouraging. State tactics terrorising and unjust. Feel called upon to go Jaipur without delay. Wire permission. Shall take proper care of treatment.

—*Jamnalal*

: ३३० :

WARDHA,
1-2-40

JAMNALAL BAJAJ,
NATURECURE CLINIC, POONA

Disinclined let you go. Await developments. Take treatment without anxiety. Writing.

—*Bapu*

: ३३१ :

अ

सेगांव, वर्धा,
१–२–४०

चि. अमतलाल,

तमारो कागळ, तमारो तार मळ्यां। शास्त्रीजी साथे वातो करी।

तमारे त्यांनी मुद्दत पूरी थतां सुधी जयपुर जवानी मुद्दल जरूर नथी। वळी मारुं दिल्हीनुं पत्युं नथी त्यां लगी जवापणुं छेज नहीं। एटले सहजे १५ मी लगी पहोंची जईए छीए। पछी तो केटला दीवस बाकी रहे छे? तबीयतने सारी करवानो पण धर्म समजवो घटे छे। तमारो मुसद्दो बरोबर न कहेवाय। तमारे फरीयाद करवानी छे ते महा-राजा सामे। एने बच्चे लाववामां सार नथी जोतो। तमे फरता हरता थशो त्यारे तेने जाते मळी शकशो। पछी जे थवानुं होय ते थाओ।

वाइसरॉयनी साथे तमे इच्छो छो एटला उंडाणमां हुं नही जई शकुं। असल वातनी साथे जेटलो मेळ खाय एटलेज लगी हुं जई शकीश। तमारा मळवानी वात मारा दिल्हीथी पर्या पछी विचारशुं।

मने लागे छे आमां बधा जवाब आवी जाय छे। बाकी शास्त्रीजी कहेशे। जानकीदेवी ने मदालसा मजा करतां हशे।

बापुना आशीर्वाद

: ३३२ :

श्रीहरि

पूना,
३–२–४०

पू. बापूजी,

श्री. हीरालालजीसे जयपुरके बारेमें बातचीत हुई है। मेरा मन तो जयपुर जाकर बैठनेका हो गया था। अब आपकी आज्ञाके अनुसार फरवरी आखिर तक यहीं रहकर इलाज कराता रहूंगा।

होम मिनिस्टरके पत्रका जवाब देना मुझे ठीक मालूम देता है। वहांकी परिस्थितिका व भविष्यका विचार करते हुए जो पत्र तैयार किया गया है वह हीरालालजी आपको दिखावेंगे। आप पसन्द करलेवेंगे तो वह पत्र चला जावेगा, नहीं तो आप जैसा लिखावेंगे वैसा भेज दिया जावेगा।

जयपुरके मित्रलोग भी चाहते थे कि मेरी ओरसे कोई सार्वजनिक तौरसे बयान निकले तो ठीक रहेगा। पर आपने मुझे यह राय दी कि इस समय मुझे कोई बयान नहीं देना चाहिये, इस लिए मैंने अपने नामसे कोई बयान नहीं दिया है। श्री. हीरालालजीने मेरी सलाहसे एक छोटासा बयान दिया है वह आपको दिखावेंगे ही।

वाइसरायके साथ जयपुरके सम्बन्धमें कोई आशाजनक या अन्य प्रकारसे बात हुई हो तो आप श्री. हीरालालजीसे कह देवेंगे तो वह मुझे सूचना भेज देवेंगे। मेरा, मदालसा, जानकीदेवीका ठीक चल रहा है। दामोदरका एक्सरे लिया था। कोई खास शिकायत नहीं मालूम देती है।

जमनालाल बजाजका प्रणाम

(नक़ल परसे लिया गया)

: ३३३ :

POONA,
23-2-40

MAHATMA GANDHI,
MALIKANDA, BENGAL

Jaipur Government started adopting repressive measures. Intend reaching Jaipur after meeting you Patna.[1]

—*Jamnalal*

(नक़ल परसे लिया गया)

: ३३४ :

जयपुर,
४-४-४०

पू. बापूजी,

मेरी तथा श्री. शास्त्रीजी और पाटनीजीकी प्राइम मिनिस्टरसे[2] कई मुलाकातें हो चुकी हैं। प्राइम मिनिस्टरकी मनोवृत्ति बहुत संकुचित है। और हमारे ख्यालसे वे बड़े प्रतिगामी विचारोंके आदमी हैं। इस लिये मुलाकातोंके दौरानमें चोट पहुंचाने वाली बातें भी आईं। और

१. जमनालालजीकी डायरीसे मालूम होता है कि २९ फरवरीको वे गांधीजीसे पटनामें मिले। गांधीजीने भी उनको शीघ्र ही जयपुर जानेकी सलाह दी और कहा कि अपने होकर तो लड़ाई शुरू नहीं करना है, परन्तु स्टेटवाले लड़ना ही चाहें तो उपाय नहीं।

२. राजा ज्ञाननाथ जो सर बीचमके बाद जयपुरके प्रधान मंत्री बनाए गये थे।

ऐसे मौके भी आये जब बातचीत खतम होती हुई मालूम पड़ने लगी। वैसे प्राइम मिनिस्टर परिश्रमी और लगन वाले आदमी तो मालूम होते हैं। इनकी मनोवृत्ति कुछ ठीक रहे तो संभव है ठीक ठीक काम चल जावे।

९ मार्च ३९ के नोटिफिकेशनको वापस लेनेके लिये लिखे मेरे पत्रके उत्तरमें कौंसिलने यह जानना चाहा कि नोटिफिकेशनमें आपत्ति-जनक बात कौनसी है? ऐसी हालतमें नोटिफिकेशनके डिटेलके बारेमें बातचीत करनी पड़ी। प्राइम मिनिस्टरने यह तो शुरूमें ही जाहिर कर दिया कि प्रजा मण्डलके नामके बारेमें वे कोई आपत्ति नहीं उठायेंगे और यहांका पदाधिकारी बाहरकी किसी संस्थाका पदाधिकारी न रह सके, इस बात पर भी आग्रह नहीं करेंगे। बाकी चार बातें रहीं। उनमेंसे प्रजा मण्डलका मेम्बर बननेका हकदार कौन है, यह सवाल विशेष कठिनाईके बिना ही साफ हो गया। दूसरा महाराजके प्रति भक्तिका सवाल भी हल हो गया क्योंकि महाराजकी छत्रछायामें उत्तरदायी शासन चाहनेका अर्थ महाराजके प्रति भक्ति शामिल समझ ली गई। तीसरे प्रजा की शिकायतोंको मिटानेके लिये कानूनी उपाय काममें लेनेकी शर्तके बारेमें भी काफी झंझट होनेके बाद समझौता हो जानेकी सूरत हो रही है। इस मामलेमें प्राइम मिनिस्टरका जोर इसी बात पर रहा कि हम लोग जनताके पास न पहुंचें और सरकारसे कहकर ही शिकायतोंको मिटवानेकी कोशिश करें। जनताके पास पहुंचनेमें किसी प्रकारकी रुकावट स्वीकार करनेसे हम लोग साफ इन्कार हो गये। तब यह सवाल प्रायः ठीक होनेकी दशामें आ गया। चौथा सवाल बाहरकी संस्थाओंसे सम्बन्ध (affiliation) न रखनेका है। इस बारेमें प्राइम मिनिस्टरका आग्रह है कि यह बात विधानमें साफ होनी चाहिये। इन चार बातोंके अलावा उत्तरदायी शासन प्राप्त करनेके उद्देश्यके बारेमें बड़ी आपत्ति प्रकट की गई। परन्तु इसमें अपनी ओरसे कुछ भी परिवर्तन न करनेका निश्चय प्रकट करनेके बाद प्राइम मिनिस्टरका यह आग्रह रहा है कि object शब्दके पहले ultimate शब्द और जोड़ दिया जाय। एक आपत्ति जयपुर राज्यके बाहर रहने वाले जयपुर निवासियोंकी प्रवासी कमेटियाँ बनानेके बारेमें उठाई गई है। अब असलमें खास मत भेद तीन सवालोंके बारेमें है। अपनी ओरसे रजिस्ट्रेशनके आवेदन पत्रमें इन तीनों बातोंको साफ कर देनेकी तय्यारी है। परन्तु object के पहले ultimate

जोड़नेकी तय्यारी नहीं है। और प्रवासी कमेटियोंके बारेमें भी अड़े रहनेका विचार है। बाहरकी संस्थाओंसे सम्बन्ध न रखनेकी बात सिद्धान्ततः ठीक नहीं मालूम होती, क्योंकि व्यवहारमें विशेष हानि नहीं दिखाई देती है।

प्राइम मिनिस्टर आज बाहर गये हैं। ३–४ को वापस आयेंगे तब फिर मिलना होगा। इस समय तो यही आशा है कि मत भेदके सवाल ठीक हो जायेंगे। और अगर हो गये तो प्राइम मिनिस्टरका कहना है कि वे कौंसिलकी १०–४ की बैठकमें इस सवालका अन्तिम फैसला करवा देंगे। महाराजसे मिलना नहीं हो सका। समझौता हो जानेके बाद मिलना संभव हो सकता है। महाराजने अपनी तरफसे कुछ जोर तो लगाया मालूम होता है। कमसे कम इतना स्पष्ट है कि ये लोग लड़ पड़नेपर तुले हुए नहीं दीखते।

समझौता हो गया तब तो संभव है मैं वर्किंग कमेटीकी बैठकके लिये चला आऊं। समझौता न हुआ तब तो आनेका सवाल है ही नहीं। समझौता हो जानेकी सूरतमें भी शायद मैं १५-२० दिन इधर ही ठहरनेका विचार कर लूं।

रजिस्ट्रेशनके लिये जो आवेदन पत्र देनेका विचार है उसकी तथा विधान की नकल आपके पास भेजी है। इस संबंधमें आपको कुछ सूचना करनी हो तो मुझसे ७–४ को नं. ६७ पर जयपुर परसनल फोन करवा दें–खासकर विधानमें object के पहले ultimate जोड़ने न जोड़नेके बारेमें और बाहरके affiliation के बारेमें।

जमनालाल बजाजका प्रणाम

(नकल परसे लिया गया)

: ३३५ :

सेवाग्राम, वर्धा,
७–४–४०

भाई जमनालालजी,

आपका खत पहुंचा आजकी डाकमें और मैंने तुरंत ही पू. बापूजीको दे दिया। उन्होंने पढ़के कहा है कि कोई सूचनाकी जरूरत नहीं है। इस लिये मैं फोन नहीं कर रही हूं। पू. बापूजी अच्छे हैं, काममें

मगन है। कहते हैं जब आप आयेंगे तब बातचीत हो जायेगी।

आशा है आप स्वस्थ हैं और आपके काममें सफलता मिलेगी।

आपकी बहिन

अमृत कुंवर

: ३३६ :

WARDHA,
12-4-40

JAMNALAL BAJAJ,
JAIPUR

Congratulations.[1] Stay as long as necessary.

—*Bapu*

: ३३७ :

सेगांव,
१५-५-४०

पू. काकाजी,

पू. बापूजी लिखवाते हैं कि रामेश्वरी नेहरूका आज तार आया था कि बहुत ही आवश्यकता हो तो वह आ सकती है, नहीं तो उनका आनेका इरादा नहीं होता। बापूजीने उनको तार कर दीया है कि ऐसी आवश्यकता नहीं है।[2]

श्री. जानकी काकीको प्रणाम। सावित्री इत्यादिको नमस्ते।

सुशीला, प्रणाम

पुनश्च :— बापू कहते हैं कि हरिजनमें तो किसीके मरनेकी आमतौर पर नोंध ली ही नहीं जाती। किसी खास मौके पर ली जाती है, उसका खास कारण रहता है।

१. जयपुर सरकार और जयपुर राज्य प्रजा मंडलमें समझौता हो जाने पर।

२. जयपुरमें ११-५-४० को होनेवाले जयपुर राज्य प्रजा मंडलके अधिवेशनके अध्यक्षरूपमें श्री. रामेश्वरी नेहरूको आमंत्रित किया गया था।

: ३३८ :

WARDHAGANJ,
18-5-40

JAMNALALJI,

SHREE, BOMBAY

Have not courage ask Sarojinidevi this time. She is ill.[1]

— *Bapu*

: ३३९ :

सेवाग्राम,
२०-५-४०

चि. जमनालाल,

सरोजीनीदेवीने लखवानी मारी हिम्मत न हती। श्री. काटजु अजाण्या न गणाय। प्रसिद्ध वकील छे ने कांग्रेसमां प्रधान हता। मोटो होद्दो हतो। लोकोए आवा मांह्यो पण छोडवा जोईए।

ओम नापास थई लागे छे। एम होय तो निराश न थाय। फरी महेनत करीने पास थायज। एक प्रसिद्ध माणस २१ वार नापास थयो पण छेवटे खंतथी पास थयो।

बापुना आशीर्वाद

: ३४० :

सेवाग्राम,
१-६-४०

चि. जमनालाल,

तुमारा खत मिला। काटजुजीने मुझे लिखा था। जयपुरका तो अच्छा हो गया माना जाय। हमारे कोई कार्यकर्ता जलदबाजी न करे। भाषण देना ही पड़े तो खादी इ. पर दें। आर्थिक व सामाजिक सुधारके लिये काफी अवकाश है।

तुमारी तबीयत बिलकुल अच्छी मानी जाय? जानकीदेवी कैसे है?

1. ऊपरका पत्र (नं. ३३७) मिलनेके बाद जमनालालजीने १७-५-४० को बम्बईसे गांधीजीको तार दिया था कि वे श्री. सरोजिनी नाइडूको जयपुर भिजवानेका प्रयत्न करें। यह तार उसका जवाब है।

क्या दा. पुरुषोत्तम पटेलका देहांत हुआ? उनकी पत्नीका नाम क्या है। ... सुना हुआ है।

बापूके आशीर्वाद

दा. पटलनां पत्नीनो कागळ साथे छे।

: ३४१ :

श्री वर्धा,
१९-८-'४०

पूज्य बापूजी,

वाइसरायके नाम जो पत्र भेजा जा रहा है उसकी नकल आपके पास भेज रहा हूं। आपको इसमें कोई खास सूचना करना आवश्यक मालूम देवे तो पत्र लानेवालेके साथ लिखकर भिजा देवें।

जमनालालका प्रणाम

: ३४२ :

(सेवाग्राम)
१९-८-'४०

चि. जमनालाल,

आ साथे कागळ सुधारीने पाछो मोकलुं छुं।

बापुना आशीर्वाद

: ३४३ :

सेवाग्राम,
वर्धा, सी. पी.
७-९-'४०

चि. जमनालाल,

साथका खत क्या है? जो उचित समजा जाय किया जाय

राजेंद्रबाबू अच्छे होंगे। तुम्हारी तबीयत कैसे रहती है। हरिभाउने लिखा है। उस बारेमें मैं ह. से.[1] में लिखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

: ३४४ :

ॐ

ट्रेनमां,
२५—३—४०

चि. जमनालाल,

तमारो जेपुरवाळो आजेज वांच्यो। हरिजन सारु लखवा बेठो पण विचार्युं के हमणां न लखवुं। लखवाथी तमे वधारे आंखे चडशो एम धारी मांडी वाळ्युं। पण जो तमे धारो के मारा लखवाथी फायदोज थाय तो हुं लखवा तैयार छुं। तमारी ने राजेन्द्रबाबुनी तबीयत केम छे? हुं सीमला जाउं छुं। सेवाग्राम रविवारे के सोमवारे पाछो वळीश।

त्यांनुं काम तमने संतोष थाय तेम चालतुं हशे।

बापुना आशीर्वाद

: ३४५ :

WARDHA,
5-7-41

SETH JAMNALALJI,
BIRLA AROGYA MANDIR,
NASIK ROAD

Simla wire received welcoming you. Come.[2]

—*Bapu*

१. "हरिजन सेवक" साप्ताहिक।

२. शिमलासे राजकुमारी अमृत कौरने गांधीजीको तार भेजा था कि वे जमनालालजीको स्वास्थ्य सुधारके लिए शिमलामें उनके साथ रहनेके लिए भेज देवें। यह तार गांधीजीने इस पत्रमें जमनालालजीको भेजी है, और उनको शिमला जानेसे पहले यहां आनेके लिए लिखा है।

: ३४६ :
अ

सेवाग्राम,
१६–७–४१

चि. जमनालाल,

मारो जीव तमारामां रह्या करशे। त्यां धारेलो लाभ मळे तो मने भारे शांति मळवानी छे। घणो आधार तो राजकुमारीना निर्मळ प्रेम उपर रहेवानो छे। पण तमारी मानसिक दृढतानो पण भाग तेमां हशे। खावामां के शेमांय फेरफार करवा होय तो मने लखवुं के तार करवो।

मदालसा आजे मीरांबहेन साथे रही गई छे। एनी भावनाओ तो बहु ऊंची छे। एनुं शरीर सारुं थई जाय ने निर्विघ्ने सुवावड थई जाय तो ए नीवडशे एम मानुं छुं। विनोबानुं शिक्षण फळवुं जोईए।

बापुना आशीर्वाद

खानसाहेबना बधा दांत पाडी नाख्या छे।

: ३४७ :

मनोर विला,
शिमला,
१७–७–४१

पू. बापू,

मैं यहां सकुशल पहुंच गया। ट्रेन कालका दो घंटे लेट पहुंची, तो भी मैं बहनके पास ११ बजेके पहले पहुंच गया। स्नान, भोजन, हो गया। आपका पत्र बहन व डाक्टर साहबने[1] विचारपूर्वक पढ़ा — मेरे खानपानके बारेमें। यहां तो रजवाड़ेसे भी ज्यादा बादशाही आराम मिल रहा है। मैं कोशिश तो यह करूंगा कि बहनको कम तकलीफ देकर मैं ज्यादा आराम ले सकूं। देवदासभाई, ठक्कर बापा देहलीमें मिले थे। राजी हैं।

[illegible]

१. ले. क. कुंवर डा. शमशेरसिंग, राजकुमारी अमृत कौरके बड़े भाई।

: ३४८ :

शिमला वेस्ट,
१८-७-४१

पूज्य बापूजी,

कल भेजा हुआ तार व पत्र तो मिल गया होगा। आपका पत्र बहनके पत्रमें मिला। मेरा ठीक जम रहा है। मैं इस बातका पूरा ख्याल रखता हूं कि यहां बोझरूप न होने पाऊं। घरके सब ठीक प्रेम करते हैं। कल शामको राजकुमारीबहनके साथ घूमने गया था। आज सुबह मुन्शीजी व तोफाबाई (उनका कुत्ता) व उसके दो अर्दलीके साथ घूम आया। मैं तो ज्यादा घूमना चाहता था परन्तु तोफाके कारण २॥। माईल अन्दाज घूमना हुआ। शामको इतना और हो जायगा। घूमना तो मैं बढ़ा लूंगा। आज तीन दिन बाद पहिले कसरत बादमें मालिश हुई। मेरा खानेका चार दफा रखना पड़ेगा ऐसा मालूम देता है। सुबह घूमकर आने पर दूध, थोड़े फल, आम या दूसरे, सेब, आड़ू, वगैरह; ११। बजे साग, फल, दही (अन्न नहीं); ४ बजे चायके समय पांच तोले अन्दाजके टोस्ट, साग (सेलेड डाले हुए) व टमाटरका रस, फल। शामको साढ़े सात बजे घूमकर आनेके बाद सागका रस, साग, दूध, फल। इस तरह अभी चलाकर देखना है। अगर भविष्यमें तीन बारमें व्यवस्था ठीक बैठ जायगी तो वैसा कर लूंगा। साग बहुत ही अच्छी तरहसे स्टीम किये हुए– सिजाये हुए मिलते हैं। फल भी आड़ू (पीच), नासपाती, सेव, आम मिल जाते है। दूध घरकी गायोंका उत्तम मिलता है। दाल, चावल, मिठाई, केले वगेरहका सम्बन्ध तो नहीं आया है। आलूके कल थोड़ेसे टूकड़े ले लिये थे। आजसे बन्द कर दिये हैं। मटर भी बन्द कर दी है। यहां सलगम आदिके साग भी बनाते हैं। जमीकन्द तो मुझे पसन्द नहीं है। इस बारेमें सूचना करना हो तो कर दीजिएगा। हां, आज छोटी छोटी सूखी भिंड़ी बहुत थोड़े घीमे भुंजी हुई (तली हुई) दी थी। स्वाद तो लगती है। इस बारेमें, आप ज्यादा घीमें तली हुई तो पसन्द नहीं करते हैं, यह मैंने कह दिया है।' खान-पानका मैं व बहन मिलकर सुन्दर तरहसे जमा लेंगे। मानसिक दृढ़ताके बारेमें तो कुछ समय बाद ही मालूम हो सकेगा। आपका आशीर्वाद तो है ही। बहनका प्रेम भी दीख रहा है। मुझे पूरा विश्वास होने पर ही लिख सकूंगा। आप विशेष चिंता न करें रोज आशीर्वाद प्रदान

करते रहें। चि. मदुसे तो मुझे भी बहुत आशा है, शरीर ठीक हो जावे तो। खानसाहबको आखिर मेरे माफक होना ही पड़ा। अब ठीक होंगे। आते समय मिलना नहीं हुआ। मैं अब ज्यादा नहीं लिखूंगा। बहन रोज लिखती ही हैं। बहनके साथ सुबह करीब १ घंटा कातता भी हूं।

जमनालालका प्रणाम

(नकल परसे लिया गया)

: ३४९ :

सेवाग्राम

(जवाब दिया २७-७-४१)

चि. जमनालाल,

तमारा तारनुं वांची कंईक गभराट तो थयो। पण तारथी निरांत वळी छे। त्यां तबीयत साव सारी थई जवी जोईए। सेवाथी डरवानुं कारण नथी। प्रभु प्रीत्यर्थे लेनी ने आशा सेववी के वधी सेवानो बदलो ईश्वर सो गणो बीजी सेवामां देवडावशे। ए कुटुंबज सेवाभावी छे। एना पिता पण एवाज सादा हता। खरुं जोतां तो एज कपूरथलाना राजा थवा जोईता हता पण क्रिस्ती कहेवाया एटले बीजाने गादी मळी।

बापुना आशीर्वाद

: ३५० :

शिमला,

२७-७-४१

पू. बापूजी,

आपका पत्र अभी बहन राजकुमारीके पत्रम मिला। मेरा जुकाम व ज्वर तो तीन रोजमें ही चला गया था। मैं परसों तो आठ माइलसे भी ज्यादा-दोनों समय मिलकर-घूमा था। कल पांच माइल। क्योंकि शामको सर बाजपेई मुझसे मिलने आ गये थे। बहुत देर तक बातचीत होती रही। खासकर मुझे तो जयपुरकी स्थितिपर ही बात करनी थी। इनके पिता सर शीतलाप्रसाद जयपुरमें चीफ जस्टिस हैं। इनकी रायसे जबतक महाराज वापस न आजाएं सर बार्ग्लीसे मिलकर विशेष लाभ नहीं होगा। मुझे भी यह राय ठीक मालूम देती है, कोशिश करके

मिलनेका मोह छोड़ दिया है। मेरी इच्छा यहां ता. १०-१२ अगस्त तक रहनेकी है। बादमें दो चार रोज हरिद्वार, गुरुकुलमें (अभयजीके पास) रहनेकी है। हरिद्वार गये भी मुझे बहुत वर्ष हो गये। वहां मुझे गंगाके कारण अच्छा मालूम देता है। वहांसे, अगर संभव हुआ तो, देहरादूनमें जवाहरलालजीसे मिल आऊंगा। बादमें चि. ओम, राजनारायणके पास नैनीताल एक सप्ताह रहनेका इरादा है। ओम बराबर लिखती रहती है। बादमें अगर आपकी इजाजत मिल जाएगी तो एक महीना सीकर रह आऊंगा। अगस्तमें वहां मौसम ठीक हो जाता है। ज्यादा समय यहां रहनेसे जो लाभ व प्रेम मुझे मिला है, उसमें कम होनेका मुझे डर बना रहेगा। मैंने मेरा यह प्रोग्राम बहनको बता दिया है। आप इजाजत देंगे तो निश्चय कर लूंगा। दूसरी बार फिर कभी आना हुआ तो ज्यादा समय तक भी रह सकूंगा। क्योंकि फिर तो मैं इस कुटुम्बका ही व्यक्ति बनकर आऊंगा। वैसी हालतमें मुझे भी संकोच नहीं रहेगा और कुटुम्बकी भी थोड़ी बहुत सेवा कर सकूंगा। मेरा तो अब यह मानना होता जा रहा है कि इस आदर्श कुटुम्बका परिचय आपकी अपेक्षा मेरा ज्यादा हो जाना सम्भव है। आशा है आपको ईर्ष्या तो नहीं होगी। रायजादा हंसराजजी अभी मिलने आये हैं। आपको प्रणाम लिखाते हैं। स्वास्थ्य इनका ठीक है।

[signature]

: ३५१ :

सेवाग्राम,
२७-७-४१

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। मारी प्रार्थना तो चालेज छे। अने तमारा प्रयत्न उपर मारी श्रद्धा छे। राजकुमारीनो सत्संग छे ने बीजी रिते पण त्यांनुं वातावरण साफ छे एटले में तो त्यांना रहेठाणनी मोटी आशा बांधी छे। मदालसा खूब खुश छे। ए सारी रीते खाय छे। कुंवारनो पाक तेने भावे छे। ए खावानी छुट आपी छे। जे खाय छे ते बरोबर स्वादथी। जानकीदेवी पण ठीक आनंदमां रहे छे एटले आ तरफ तो बधुं कुशळ छे।

घनश्यामदास परम दीवस गया।

[signature]

: ३५२ :

सेवाग्राम,
३०-७-४१

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। तमने गमे त्यां लगीज त्यां रहेवानुं छे जो मारा करतां वधारे सारो संबंध ए कुटुंब साथे बांधो तो मने गमे ईर्ष्या नहिं आवे। पण आजथी त्यां रहेतांज डरो छो ए क्यांथी मारा जेवां संबंध बांधवाना? ज्यां लगी रा. कु. त्यां रहे त्यां लगी रहेवामां हरकत न होय। पण जेम तमने ठीक लागे तेम करजो। जवाहरलालने मळो ए तो सारुंज छे। मळवानी वात छापामां न आववा देशो। देहरा-दून पासे आनंदमयी देवी रहे छे। ते कमलानी गुरु हती। सारी बाई कहेवाय छे। मळी शकाय तो मळजो। बहु दोडधाम न करता।

बापुना आशीर्वाद

: ३५३ :

सेवाग्राम,
१४-८-४१

चि. जमनालाल,

तमारी तबीयत त्यां सारी थती जती जणाय छे। डा. मॅकल्ना कहेवा परथी जणाय छे के गोठणनी अडचण तो रही जशे। जो त्यांज अटके तो कंई हरकत हुं नथी जोतो। त्यां मानसिक शांति मळे त्यां लगी न खसशो।

बाईलीने मळवानो आग्रह न राखवो। सहजे मळातुं होय तो हरकत नथी पण प्रयत्नथी मळाय तो सारुं नहिं।

रामकृष्णने मळीने बहु संतोष थयो। ए जेलनो पूर्ण लाभ उठावी रह्यो छे।

बापुना आशीर्वाद

: ३५४ :

सेवाग्राम,
१७–८–४१

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। अहीं आवी जजो। पछी मीकर वि. नुं विचारशुं। आज श्राद्धमां[1] पड्यो छुं। मृदु आवी छे। एटले वधारे नहि। ओम अने तेना पतिदेवने आशीर्वाद।

बापुना आशीर्वाद

: ३५५ :

(मिला २१–८–४१)

JAMNALALJI,
SIVALAYA,
DEHRADUN

Glad. Stay at will.

—*Bapu*

(जमनालालजीकी डायरी परसे लिया गया)

: ३५६ :

WARDHAGANJ,
22–8–41

JAMNALALJI,
SIVALAYA,
RAIPUR, DEHRADUN

Mahesh well but requires observation. Gives Madalsa good company. Allow stay unless you need badly.

—*Bapu*

: ३५७ :

सेवाग्राम,
२४–८–४१

चि. जमनालाल,

तमारा तारनो जवाब आप्यो छे तेनो जवाब पण फरी वळ्यो। महेशने विषे निश्चितता नथी। घणा वर्षनुं दर्द शांत छे पण जडमूळथी

१. गुरुदेव रवींद्रनाथ टागोरका निधन ७-८-४१ को हुआ था। यहां उनके श्राद्धका उल्लेख है।

गयुं न मनाय। खास खोराक वि. पर छे । थाक पण चढे । आ स्थितिमां खास काम विना न काढवो जोईए। तमने कंई मददनी जरूर छे के ? छे तो शी ?

शांताने त्यां बोलाववामां मने कंई अर्थ नथी लागतो । जो तेना हितार्थे होय तो तमे त्यां पूरो अनुभव लो पछी तेने स्वतंत्र मोकलाय । जो तेनी सेवानी जरूर होय तो मने लागे छे के ते विषे संयम राखवाथीज त्यांनो पूरो लाभ मळे। आ मारो अभिप्राय छे । एम छतां तमे इच्छशो ते हुं करीश । शांताने पूछवानुं तो बाकी छे।

वल्लभभाई छुटया छे। तेमने पोलीपस नथी एटले घणो डर हतो एतो शांत थयो।

बापुना आशीर्वाद

: ३५८ :

WARDHA,
25-8-41

SETH JAMNALALJI,
SIVALAYA,
RAIPUR, DEHRADUN

Shanta has no desire. Willing do as you desire. My opinion she had better be sent there later. Do you need any (?) service. Wrote fully yesterday.

—Bapu

: ३५९ :
अ

सेवाग्राम,
२५-८-४१

चि. जमनालाल,

आ साथे शांतानी चिठ्ठी छे। अक्षर त्यां पहोंचतां झांखा पडी जशे न उकले तो वांचवानी तकलीफ न भोगवता । एनो सार में आजना तारमां आप्यो छे। शांताने इच्छाए नथी अनिच्छाए नथी । ए तो तमारामां समाई गई छे । एटले तमारी इच्छा ए एनी इच्छा । ए छे पण बरोबर । तेथी सवाल केवळ तेना हितनो रह्यो । तमे त्यां बहु लांबा

वखत रहेता हो तो शांता त्यां आवी कदाच कंईक मेळवे। मारी दृष्टिए तेणे त्यां तमारी गेरहाजरीमां रहेवुं जोईए। कदाच तेने त्यां रहेवानी जरूर पण न होय। भक्ति तो तेनामां छे। त्यांनुं वातावरण तेने काम करती करे के नहि ए विचारवानुं रह्युं। ते आ भवे बीजाने गुरु नहि करे। तेना गुरु तमे छो एटले तमारे तो तेने आज्ञाज करवी रही। आ कागळ वहेवारमांज तमारो त्यां रहेवानो काळ पूरो थशे। जो तमने त्यां पूर्ण शांति मळती होय ने जे मागो छो ते मळी रहेतुं होय तो त्यांथी न खसता। जो त्यां रहेवानो निश्चय करो अथवा गमे ते करो, पण शांतानी हाजरी इच्छो तो तार करजो एटले एने रवाना करीश। तमारा तारमां विचारने अवकाश हतो एटलेज तारनी आप ले करी छे। महेश अने शांता बन्ने बाबत विचारवा जेवी तो हतीज। में अर्थ एवो कर्यो छे के बन्नेने तेमने खातर बोलाव्या छे तमारी सेवा खातर नहि। जो सेवाज हेतु होय तो नोखो विचार करवो घटे।

सरदारना आजे विशेष खबर नथी। कालनो कागळ मळ्यो हशे। मदालसा मजामां छे।

बापुना आशीर्वाद

: ३६० :

श्री

रायपुर-ग्रान्ट,
देहरादून,
२६-८-४१

पू. बापूजी,

मेरा स्वास्थ्य और मन बहुत ठीक है। यहां स्वाभाविक जीवन बितानेको मिल रहा है। मां[1] का प्रेम भी मुझे चाहिए जैसा मिल रहा है। मां अहिंसा व प्रेमकी मूर्ति मालूम होती है। वातावरण भी हरिस्मरण, कीर्तन व मौनका रहता है। मां पढ़ी लिखी न होते हुए भी जटिल प्रश्नोंको भी बहुत सुन्दर तौरसे समझाती है। सदा आनन्दमें रहती है। इनके बारेमें बंगलामें काफी लिखा गया है। अंग्रेजी, हिन्दीमें लिखा हुआ तो है परन्तु अभी छपा नहीं है। मांके एक भक्त ज्योतिशचन्द्र राय, जिन्हे यहां भाई कहा जाता था, उन्होंने आपसे

१. माता आनंदमयी।

पत्रव्यवहार भी किया था। उनका स्वर्गवास हो गया है। मांके पति भोलानाथजी, जिन्होंने मांके उपदेशसे संन्यास ले लिया था, कहते हैं पहले बहुत क्रोधी थे। बादमें धीरे-धीरे क्रोध कम हो गया बतलाते हैं। उनकी सेवा भी मांने खूब की थी। उनका स्वर्गवास भी यहीं किशनपुर आश्रममें हो गया। मां गृहस्थी होते हुए भी बाल ब्रह्मचारिणी बताते हैं। सत्यका ठीक आग्रह रखती हैं। यहांका जीवन भी सीधा सादा है। कई विद्वान व सज्जन पुरुष मांके भक्त हैं। मां तो अपना सम्प्रदाय या गुरुकुल फैलाना नहीं चाहती परन्तु भक्त व पुजारी लोग जैसा दस्तूर है आडम्बर थोड़ा बहुत रचते ही रहते हैं। यहांका सृष्टि सौंदर्य भी अच्छा है, झरनेका पानी भी स्वास्थ्यके लिये लाभकारक है। इन सब बातोंका विचार कर करीब एक एकड़ जमीन मांके हालके स्थानके पास ही लेनेकी बात की है। उस पर दो तीन हजार रुपये लगाकर छोटासा मकान बनानेका विचार किया है। जब कभी मन उठ गया या आरामकी जरूरत हुई, छुट्टी मिली तो, यहां कुछ रोज आकर रह जानेसे शरीर व मनकी थकावट कम होना सम्भव है।

मेरा विचार ता. २ या ३–९ को यहांसे दो रोजके लिये हरिद्वार जानेका हो रहा है। वहांसे नैनीताल। शायद भाई जवाहरलालसे दुबारा दो चार रोजमें मिलना हो जायेगा। वर्धा ता. २१ सप्टेम्बर तक तो पहुंचना है ही। क्योंकि मैं जेलमें रहता तो इस तारीखको छूटता, सादी सजाके कारण।[1] इस लिये इस तारीखको आपकी सेवामें हाजर हो जाऊंगा। बादमें आप मेरी शारीरिक मानसिक स्थिति समझकर जेल जानेकी आज्ञा देंगे तो वहां चला ही जाऊंगा, अन्यथा आपकी सलाहसे कार्यक्रम बनाऊंगा। मुझे शिमला–देहरादूनकी मुसाफरीसे ठीक अनुभव व शांति लाभ हो रहा है। मुझे अब यह तो विश्वास होता जा रहा है कि मेरे घुटनेका दर्द जड़से तो जैसा डॉ. दास कहते थे, वैसे जानेका नहीं है। टट्टी बैठनेमें तो जो तकलीफ पहले होती थी प्रायः अभी भी होती है। यहां तो मैं दोनों समय मैदानमें जाता हूं, खुरपी व फावड़ी लेकर। कई बार दो पत्थर रखकर कमोडके माफिक बैठनेका कर लिया करता हूं। अन्यथा जमीन पर हाथ टेककर उठना पड़ता है। स्नान भी झरने पर ठंडे पानीसे करता हूं। सुख मिलता है। सोना भी जमीन

१. जमनालालजी नागपुर जेलसे बीमारीके कारण २०-६-४१ को रिहा हुए थे। उन्हें व्यक्तिगत सत्याग्रहमें ता. २१-१२-४० को ९ मासकी सजा

पर ही करता हूं। तेल-मालिश वगैरेको छुट्टी दे रखी है। यहां व्यवस्था होनेमें भी कठिनाई है। वातावरणमें भी इतना समय निकाला नहीं जाता। भोजनका जरूर ख्याल रखता हूं। वजन बढ़नेका तो ज्यादा डर नहीं मालूम देता, क्योंकि भूख प्रायः बनी ही रहती है। ताकत कुछ तो बढ़ी मालूम देती है। परन्तु जेलमें ट्रीटमेंट शुरू करनेके पहले जितनी मालूम देती थी उतनी नहीं है। घूमना, फिरना दोनों समय करता तो हूं, परन्तु घूमनेका शिमलामें जितना उत्साह था उतना यहां पर नहीं है, शायद यहां गर्मी पड़ती है–शिमलामें ठंड ज्यादा रहती थी इससे। मेरी इच्छा तो हो रही है कि श्री आनन्दमयी मांकी आपसे भेंट हो। आपकी भी इच्छा होगी तो फिर प्रयत्न करके इन्हें वर्धा लानेकी व्यवस्था करूंगा। मुझे 'सेठजी' कहा जाना अच्छा नहीं लगता था इस लिये 'भैया' या 'भैयाजी' कहना शुरू हो गया है। मांको भी यह पसन्द आया है।

आपसे वहां आने पर इतने विषयों पर मुझे बातें करनी है–मां आनन्दमयीजी, सुभाष बोस, इन्दू जवाहरलाल, सर फ्रान्सिस, व मेरा भावी प्रोग्राम। यह आपको पहलेसे सूचना दे रखता हूं कि जिससे आप मेरे लिये ठीक तौरसे समय रख सकें। कुछ बातें बिलकुल खानगीमें ही करनी होंगी। जवाहरलाल व इन्दूसे भी ठीक बातें हुई है, घरबारकी। आपको बहुतसी बातें तो शायद मेरे पहुंचनेके पहले ही मालूम हो जाना सम्भव है। पू. राजकुमारीबहनके पत्र आते रहते हैं। इनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है। आप उन्हें सेवाग्राम बुला रहे हैं, परन्तु मेरी समझ है कि इन्हें सेवाग्राम स्वास्थ्य बिलकुल ठीक हो जाने पर ही बुलाया जाना चाहिये। इनकी व इनके भाई, भाभी सबोंकी यही इच्छा मुझे मालूम हुई थी। इस लिये आपको सूचना रूपसे लिख देता हूं। बाकी आप उचित समझें वैसा करें।

Jhamnalal Bajaj

यह पत्र चि. मदु आपको सुना देगी व वह अपने पास आपकी इजाजत होगी तो रख लेगी।

तार आपका अभी मिला। चि. शान्ताको अभी भेजनेकी जरूरत नहीं। पीछेसे वह तथा जानकीदेवी आना चाहेंगी तो आ जावेंगी। मैंने तार इसी प्रकारका आज भेजा है। जा. ब.

: ३६१ :

WARDHAGANJ,
30-8-41

SETH JAMNALALJI,
CARE HARNANDRAY SURAJMAL,
KANKHAL

All well. Come Mataji.

—*Bapu*

: ३६२ :

२१-९-४१

बापूजी,

मेरा कार्यक्रम

१. स्वास्थ्य

शारीरिक–वजन १५५ अन्दाज, व्हायटेलिटी कम हो गई, नागपुरमें ज्वर आनेके बाद शिमला व काठगोदाममें भी ज्वर आया, निकल तो जल्दी गया। घुटनेमें दर्द है ही, नैनीतालमें ज्यादा मालूम दिया। थकावट जल्दी मालूम होती है।

मानसिक–पहिलेसे अच्छी स्थिति होनी चाहिये। भक्तिकी ओर मनको ज्यादा लगाना चाहता हूँ, उससे सन्तोष मिलता है। रायपुर ग्रान्टमें ठीक शान्ति मिली, वातावरण भी ठीक लगा। पू. आनन्दमयीजीके प्रेम व शान्त स्वभावसे भी लाभ मिला।[1]

१. देहरादूनसे लौटनेके बाद गांधीजीको दिखानेके लिए जमनालालजीने ऊपरकी रिपोर्ट बनाना शुरू किया था। लेकिन जमनालालजीकी डायरीसे मालूम होता है कि यह रिपोर्ट पूरी हो जानेके पहले ही उसी दिन वे गांधीजीसे सेवाग्राममें मिले और उस समय उन्होंने अपने भावी कार्यक्रमके बारेमें उनसे बातचीत की। इस विषयमें जमनालालजीकी डायरीमें निम्न नोंध है :—

"बापूसे प्रणाम—बातचीत। मेरे प्रोग्रामके बारेमें मैंने ४ प्रस्ताव रखे।

१. सत्याग्रह करके जेल जाना — बिलकुल नहीं।

२. जयपुरका कार्य करना — नहीं।

३. पौनार या अन्य स्थानमें चर्खा व भजन, वाचनसे समय बिताना — यह भी ठीक नहीं।

[अगले पृष्ठ पर चालू]

: ३६३ :

वर्धा,
२–१०–४१

पू. बापूजी,

चि. इन्दुका पत्र व फिरोजका पत्र व तार आया हुआ भेज रहा हूं। मैंने फिरोजको तार तो भेज दिया था कि ता. १२ के बाद आए क्योंकि मैं बम्बई, पंचगनी जा रहा हूं। वह तो कल आ ही जाता दिखता है। उसे बम्बई तक साथ ले जाऊं या यहां आपसे मिलने छोड दूं ?

मैंने आपका तार तो श्री. मथुरादासभाईको भेज दिया है।[1] उसमें इतना बढ़ा दिया है कि इतवार को पहुंचूंगा। डा. जीवराजको भी लिख रहा हूं, कि मैं सीधा जाऊँ या बम्बई होते हुए। कल तार मिल जाएगा। मथुरादासका तार आवे तो सूचित करें।

Jamnalal Bajaj

: ३६४ :

(सेवाग्राम)
२–१०–४१

चि. जमनालाल,

खत मिला। मुझे लगता है कि फिरोझको तुम्हारे साथ हि जाना

[पिछले पृष्ठसे चालू]

४. गो सेवाका कार्य, यदि आप उपयुक्त व जरूरी इस समय समझते हों तो करना — यह कार्य मुझे पसन्द है, अवश्य किया जावे।"

इसके बाद तुरन्त ही जमनालालजी गो सेवाके काममें जुट पड़े। ९ दिन बाद ही उन्होंने वर्धामें अखिल भारत गो सेवा संघकी सभा बुलाई जिसका उद्‌घाटन गांधीजीने किया और जमनालालजीकी नई जिम्मेदारीकी सफलताके लिए आशीर्वाद दिया। नालवाडीके पास ही, जहां श्री. विनोबाजीकी देखरेखमें एक गोशाला भी चलती थी, जमनालालजीके रहनेके लिए एक कच्ची कुटिया बनाई गई, जिसका नाम गोपुरी रखा गया, और वे वहीं रहने लगे।

१. गांधीजीने निम्न तार भिजवानेके लिए जमनालालजीको दिया था:—

"Mathuradas Trikamji,
Homi Villa, Panchgani
Jamnalalji leaving tomorrow see you Sunday. God's will our law. Wire condition. —Bapu."

अच्छा होगा। वह खुद रहना चाहे तो मुझे कुछ हरज नहिं है। कल आओगे तो अधिक बात कर सकेंगे।

मदालसा ठीक होगी।

बापूके आशीर्वाद

: ३६५ :

४-११-४१

चि. जमनालाल,

आ बाबतमां तो तमेज दोरी शको।[1] जे लखवुं होय ते लखजो। में तार कर्यो छे के जमनालालजीने पूछाव्युं छे।

बापुना आशीर्वाद

: ३६६ :

सेवाग्राम,
६-११-४१

चि. जमनालाल,

खु. बहनसे[2] बात करुंगा। कोटीजी पर पत्र इसके साथ है। मौनसे तो फायदा होना हि है। वजन लेते हो ?

बापूके आशीर्वाद

: ३६७ :

स्वराज्य आश्रम,
बारडोली,
२१-१२-४१

प्रिय जमनालालभाई,

कल मौलाना सा. और जवाहरलाल यहां पहुंच गये। ए. आइ. सी. सी. के बारेमें चर्चा हुई। यह तय पाया गया है —अभी तक— कि यह मीटिंग वर्धामें हो। पू. बापूके बनारस जानेके पहले—याने जनवरी १२ से १९ के बीचमें। वर्किंग कमिटी अकसर पहले और ए. आइ. सी. सी. के बादमें भी बैठती है। सो ए. आइ. सी. सी. यदि १५ को हो तो बापू १९ या २० को बनारसके लिये रवाना हो सकेंगे।

१. रिषभदास रांकाने अपने भावी कार्यक्रमके बारेमें गांधीजीसे पूछा था।
२. खुरशिदबहन नवरोजी।

बापू कहते हैं कि आपके लिये उचित होगा यदि आप तुरन्त तारके द्वारा एक निमन्त्रण यहां पर मौलाना सा. को भेजें कि ए. आइ. सी. सी. वर्धामें हो।

बापूका स्वास्थ्य ठीक है। पू. बा भी आज अच्छी है, लेकिन कमजोरी तो है ही। मुझे कुछ सर्दी हो गई है। बाकी सब अच्छा चलता है। दुर्गाबहिन उनाई पहुंचते बीमार हो गई। इस लिये महादेवभाई वहांसे अभीतक वापिस नहीं आ सके। शायद आज आ जाए। सरदारकी तबीयत धीरे धीरे सुधर रही है।

आज और लिखनेका समय नहीं। आप अच्छे होंगे। प्यार।

आपकी बहिन,

अमृत कुंवर

: ३६८ :
अ

स्वराज्य आश्रम,
बारडोली,
२१–१२–४१

चि. जमनालाल,

भाई जुगलकिशोरना कागळ प्रमाणे चर्खा संघ मार्फत काम लेवुं। कांगडामें बन सके इतना पैसा तो अवश्य खर्चीशुं तेमज पिलानी विषे।

मारा विचार प्रमाणे ए. आइ. सी. सी. नी सभा वर्धामां थाय एज सारुं कहेवाय। तमने पण ए बरोबर लागे तो तारथी निमंत्रण मोकलजो। सभा मारा आव्या पछीनी तारीखे ने १९ मी तारीख पहेलां पूरी थवी जोईशे।

इंदु अहिं आवी छे।

मदालसा सारी हशे। बाळकनी वृद्धि चालती हशे।

तमारी गेरहाजरी मने पोताने तो चर्खा संघमां बहु जणाई ने हवे व. क.[1] मां जणाशे। पण तमने आग्रह न करवामांज में श्रेय जोयुं छे।

मारी तबीयत सारी रहे छे। तमारी ठीक हशे।

१. कांग्रेस वर्किंग कमिटी।

२७ मी जानेवारी पछी गो सेवा संघनी सभा राखी शको छो।

બાપુના આશીર્વાદ

जानकीमैया आवी गई ? तबीयत बगाडी नथी ना ?

: ३६९ :

गोपुरी, वर्धा,
२४–१२–४१

पूज्य बापूजी,

आपका ता. २१–१२ का पत्र अभी मिला। पू. राजकुमारीबहनका पत्र यहां कल आ गया था, परंतु मैं पू. विनोबाके साथ भानखेड़ गया था। आज सुबह १० बजे वापस आते ही उन्हें तार कर दिया था कि वह समय वर्धाके लिये अनुकूल नहीं रहेगा, क्योंकि उस समय इमारतें वगेरह खाली नहीं रहेंगी। तीन सौ आदमियोंके लिये कैम्प वगेरहकी व्यवस्था करनेमें समयकी कमी भी है, तथा खर्चा भी बहुत ज्यादा आयेगा। अगर नागपुर, अकोला, करनेका विचार हो तो पूनमचन्द, ब्रिजलालजीसे[1] पूछवाकर निमन्त्रण भिजवाया जा सकता है।

श्री. जुगलकिशोरजीको पत्र आपने या पू. जाजूजीने वहांसे भिजवा दिया होगा ?

चि. मदु व बेबी खुश हैं, श्री. जानकीदेवी व पू. मां अभी सीकरसे नहीं आये हैं।

क्या चि. इन्दू आपके साथ यहां आनेवाली है ?

गो सेवा संघकी कॉन्फ़रेंस ता. १,२,३,४ फरवरीको रक्खी गई है। सर दातार सिंह भी उस समय आवेंगे ही। और भी कुछ व्यक्तियोंको बुलवा रहा हूं।

मुझे अपने काममें, गो सेवा संघमें व पू. विनोबाके साथ या अकेले ही देहातोंमें घूमनेसे ठीक शांति व उत्साह मिलता जा रहा है। मेरा गाड़ा ठीक चल रहा है। मेरा पत्र तो श्री. मौलाना सा. को समयपर मिल ही गया होगा।

जमनालाल बजाजका प्रणाम

(नक़ल परसे लिया गया)

१. श्री. पूनमचंद रांका और श्री. ब्रिजलाल बियाणी उस समय क्रमशः नागपुर और विदर्भ कांग्रेस कमिटीके अध्यक्ष थे।

: ३७० :

Vallabhbhai Patel
President.



SWARAJYA ASHRAM,
BARDOLI.

Date [illegible]

चि. जमनालालजी

मैं कैसा बेवकूफ और स्वार्थी भी हूं। तुमारी तबीयत का कुछ ख्याल नहीं किया. सिर्फ मेराही किया. तुमारी इजाजत मांगी और मैंने राह भी न देखी. और कमिटि में आग्रह किया कि मिटींग वर्धा में रखनी जाय. उसमें मैंने हिंसा की और वह भी मामुली नहीं. ममताका, तुमारी उदारता का दुरुपयोग किया. तुमारे पास माफी मांगते

ऐसा प्रायश्चित्त नहिं होता
है। ऐसा प्रायश्चित्त तो
भी होता। सिर्फ मैंने
तुम्हारे प्रति भी निर्दयता
बताई है ऐसी कभी
न हुआ था तुम्हारे प्रति
या अन्य कोई के प्रति
बताई।

तुम्हारे प्रति तो अत्यन्त
हि है। तुम्हारे हित की बात
करने की तुमने हिम्मत
बताई और अपनी मर्यादा
का उल्लंघन किया यह
छोटी बात नहिं है।

ऐसा ही मैं मानता हूं। तुम्हारे दिल साफ करो।
आशा और प्रेम करता हूं - अगर बुद्धि को पहुंचा सको
बापुके आशीर्वाद

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

स्वराज्य आश्रम,
बारडोली,
२४–१२–४१

चि. जमनालाल,

मैं कैसा बेवकुफ और स्वार्थी भी हूं? तुमारी तबीयतका कुछ ख्याल नहि किया। सिर्फ मेरा हि किया। तुमारी इजाजत मांगी और मैंने राह भी न देखी। और कमिटीसे आग्रह किया कि मिटींग वर्धामें रखी जाय। उसमें मैंने हिंसा की और वह भी मामुली नहि। मित्रताका, तुमारी उदारताका दुरुपयोग किया। तुमारे पास माफी मांगनेसे प्रायश्चित्त नहि होता है। सच्चा प्रायश्चित्त तो वही होगा जिसे मैंने तुमारे प्रति जो निर्दयता बताई है ऐसी कभी न दुबारा तुम्हारे प्रति या अन्य कोईके प्रति बताउं।

तुमारे प्रति तो धन्यवाद हि है। तुम्हारे दिलकी बात कहनेकी तुमने हिम्मत बताई और अपनी मर्यादाका स्वीकार किया यह छोटी बात नहि है। जरासी भी चिंता न की जाय। तुम्हारे इनकारसे मेरा आदर और प्रेम बड़ा है— अगर वृद्धिकी गुंजायश थी तो।[१]

बापुके आशीर्वाद

: ३७१ :

स्वराज्य आश्रम,
बारडोली,
२७–१२–४१

चि. जमनालाल,

तुम्हारा खत मिला। मैंने पुनमचंदजीका कहना इस भरोसे पर कबूल किया है कि तुमको वह कुछ भी तकलीफ नहीं देंगे और उनमें

१. यह पत्र जमनालालजीको २७–१२–४१ को वर्धामें मिला और उसे पढ़कर उन्हें बड़ी मानसिक वेदना हुई। इस संबंधमें निम्न नोंध उनकी डायरीमें मिलती है :—

"२७-१२-४१—पू. बापूजीका २४ का लिखा हुआ पत्र मिला। उससे मुझे दुख ही पहुंचा। मैंने इसका जवाब तो लिखा परन्तु संतोष नहीं हुआ। इस लिए भेजा नहीं। किशोरलालभाईसे सेवाग्राममें मिलकर भेजना निश्चय किया।"

"२८-१२-४१—किशोरलालभाईको बापूका पत्र दिखाया। उनको महादेवभाईने टेलीफोनसे बापूके दुःखके समाचार कहे थे। उन्होंने बापूको पत्र लिखा उसीमें मैंने थोड़ासा लिख दिया। मैंने जो दो पत्र लिखकर रखे थे वे फाड़ डाले।"

इस कामको अंजाम देनेकी शक्ति है।[1] तुम्हारे इस बारेमें कुछ भी तकलीफ उठाना मेरे ख्यालके बहार है।

इंदु ए.आइ.सी.सी. के मौके पर आयगी तो सही। यहां खुश रहती है।

स्टेटस पीपल कानफरन्सके बारेमें जैसे हमारी बात हुइ थी मैंने तो अभिप्राय दिया है कि आफिस वर्धा आनी चाहिये।[2]

इसे बापू खतम नहीं कर सके हैं तो भी जितना लिखा है उतना भेज देनेको कहते हैं।

जल्दीमें,

અમૃત કુંવર

: ३७२ :

स्वराज्य आश्रम,
बारडोली,
२८–१२–४१

पूज्य जमनालालजीनी पवित्र सेवामां,

प. पू. बापुजीनी आज्ञाथी आ साथे एक कापली मोकलुं छुं। प. पू. बापुजीए तो आ वांच्युं नहोतुं। गई काले सांजे फरता फरता श्री. प्रताप शेठे आ कापली वांचीने गभराता गभराता आपनी तबियत विषे खबर पूछी। बापुजी तो कंई जाणताज न हता। प्रताप शेठे कह्युं के ए खबर 'जन्मभूमि' मां नीकळी छे।[3] तेथी बापुए ए छापुं मंगाव्युं ने खबर वांची। बापुजीए तो आवा हेडिंगथी (मथळांथी) एम छापवानो शुं हेतु छे ते कल्पीज लीधेल छे, पण आप पण आ हेडिंग वांचीने शुं कल्पी शको छो ते जाणवा मागे छे। जो कंई कल्पी शको तो बापुजीने लखशो अने जो कंई न कल्पी शको तो बापु त्यां आवे त्यारे एओने याद करावशो जेथी आपने कहेशे।

१. अन्तमें ए. आइ. सी. सी. की सभा वर्धामें ही १५ जनवरीको रखी गई। पर उसकी पूरी जिम्मेदारी नागपुर कांग्रेसके अध्यक्ष श्री. पूनमचन्द रांकाने अपने ऊपर लेली थी।

२. यहां तक गांधीजीने खुदने लिखा है। किसी कारणसे वे इस पत्रको पूरा नहीं कर सके।

३. जन्मभूमिके २७–१२–४१ के अंकमें श्री. जमनालालजीका फोटो 'श्री. जमनालाल बजाजनी गंभीर बीमारी' हेडिंग देकर छापा गया था।

प. पू. बापुजीने काम तो बहुज रहे छे। तबियत सारी गणाय।

आपनी तबियत सारी हशे।

लि. सेवक,

(हस्ताक्षर)

: ३७३ :

गोपुरी, वर्धा,
३०–१२–४१

पू. बापूजी,

आपका ता. २७–१२ का पत्र व आज कनुभाईका पत्र मिला।

श्री. पूनमचंद रांका ठीक कोशिश कर रहे हैं। मुझसे तो मामूली सलाह मसलत ले लिया करते हैं। मेरे मन पर मैंने कोई बोझ नहीं रक्खा है। आपके आशीर्वादसे सब काम ठीक हो जायगा।

स्टेट्स पीपल्सके बारेमें श्री. हरिभाऊजीने मुझे थोड़ा कहा है। अगर जवाबदार, पूरा समय देकर काम करनेवाला मंत्री मिलना सम्भव हो तो ही ऑफिस सेवाग्राममें या वर्धामें रक्खी जावे, अन्यथा नहीं। श्री. हरिभाऊजीने तो चर्खा संघके विद्यालयका काम करनेका निश्चय कर लिया है। पू. जाजूजी, देशपांडे, राधाकृष्णकी सलाहसे मैंने भी मेरी स्वीकृति दे दी है। मेरी तो साफ राय है कि क्या तो आपको व सरदारजीको पूरी तौरसे जंच जावे तो श्री. बलवन्तरायको यहां आपके पास रखकर उनसे काम लें। * * * * मेरी खुदकी राय तो अब यह होती है कि श्री. बहन राजकुमारीजीको जनरल सेक्रेटरी बनाया जावे। सहायक बलवन्तराय या और कोई प्यारेलाल सरीखेको बनाया जाय तो शायद काम ठीक तौरसे याने आपके संतोषकारक तौरसे चलना सम्भव है। मैं तो कोई पद लेना नहीं चाहता। हां, वर्धा या सेवाग्राममें कार्यालय रहनेका निश्चय हो जाएगा तो मैं सलाह मसलतमें व थोड़ी आर्थिक व्यवस्थामें भाग ले सकूंगा। अन्यथा वह भी लेनेका उत्साह वर्तमान स्थितिमें तो बिलकुल है ही नहीं।

जन्मभूमिवालेने क्यों इस प्रकार मेरे बारेमें छापा इस बारेमें भली प्रकारसे तो समझ नहीं सका। पहले तो मेरी समझ हो गई थी कि मामूली सुनी सुनाई बात पर व मेरा वर्किंग कमेटीकी मीटिंगमें आना नहीं बना वगेरेके कारण मन गढंत कल्पनासे ऐसा किया हो। परंतु मैंने श्री. केशवदेवजीको बम्बई लिखा है कि वह इसका पता लगा कर मुझे लिखें। मेरा ख्याल तो उन्हें नोटिस देनेका भी हो रहा था। कई जगहोंसे फोन आदि आये। बिना कारण मित्र परिवारमें चिन्ता पैदा की गई। मैंने सुना है उन्होंने कलके पत्रमें क्षमा या खेद प्रगट किया है। मैंने अभी नहीं देखा। मेरा मन स्वास्थ्य और काम ठीक चल रहा है।

जमनालाल बजाजके प्रणाम

(नक़ल परसे लिया गया)

: ३७४ :

बारडोली,
२–१–४२

चि. जमनालाल,

तुम्हारा खत मिला। भाई हरिभाउसे कहो उनका निश्चय मुझे पसंद है। अब खादी विद्यालयसे न हटे।

देशी संस्थानोके बारेमें मेरे आने पर बातें करेंगे।

पुनमचंदजीको बहूत खर्च करनेसे रोके जाय।

खानेमें ठीक खबरदार रहते होंगे।

जवाहरलाल एक दिन पहले पहोंचेंगे।

बापूके आशीर्वाद

: ३७५ :

२५–१–४२

चि. जमनालाल,

मैं सब पढ़ गया। ओफिस यहां आनेके पहले ऐसी कोई रकम नहि दीखती जो आज हि देनी हि चाहिये। मेननका दरमाया हर हालतमें देना चाहिये। ऐसे हि वझेका और आर्यभूषणका बिल। वझेका तो बंध होगा न? मेरी राय है कि मेननको लिख दिया जाय कि सामान भेज देवें। वर्धा हि भेजेगा। वहांसे तो गड्डेमें यहां आवेगा।

वार्षिक बजेटके बारेमें विचार करनेकी बात है और रु. १५०० के बारेमें भी। ये तो बादमें करेंगे।

बापूके आशीर्वाद

बलवंतरायको लिखुंगा।

: ३७६ :

[illegible]

सेवाग्राम
२-२-४२

चि. जमनालाल,

तुम्हारा प्रश्न विचारणीय है. गो. से. संघ हिंदु धर्मकी संस्था है कि सार्वजनिक? सार्वजनिक है तो पारसियोंको मुसलमानोंको कबूल कर सकते हैं क्या? अगर धर्मसंस्था नहीं है तो धर्मको क्यों घसीटना पडता है.

तुम्हारी नामावलीमें अभी प्रांतके कोई हिस्से नहीं आते. दक्षिणमें भी सिंधका नाम नहीं नहीं बंगालमें आसाम पंजाब वहांसे किसीका नाम नहीं देखता हूं,

* * महाराजके संबंधमें ज्यादा कुछ नहीं जानता हूं.

सबका अनुभव कुछ अलग
नहीं है। उनको भाषा एक हो आदमी
है वे अच्छे हैं। मेरी वृत्ति तो यह
है कि वे गलती करते हैं
न करें हम तो उनको याद
अपनी तरफसे है। हमें
हमारा द्वेष नहीं होना चाहिये।
एक दूसरेके हम विश्व-
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

दुबारा नहिं पढा ।

(सेवाग्राम)
मौनवार,
२–२–४२

चि. जमनालाल,

तुमारा प्रश्न विचारणीय है । गो. से. संघ[१] हिंदू धर्मकी संस्था है कि सार्वजनिक? सार्वजनिक है तो गो सेवाको सब धर्मी कबूल करते हैं, करेंगे ? अगर धर्म संस्था नहिं है तो सब धर्मीको खींचनेका प्रयत्न करें ।

तुमारी नामावलीमें अन्य प्रांतके कोई देखे नहिं जाते दक्षिणमें गो सेवाका नाम नहिं, नहिं बंगालमें या पंजाबमें । वहांसे किसीको नहिं लेना है ?

* * महाराजके संबंधमें आजकल नहिं आया हूं । लेकिन मेरा अनुभव कुछ अच्छा नहिं है । उनके साथ एक दो आदमी हैं वे अच्छे हैं । मेरी वृत्ति तो यह है कि वे जितनी सहाय दे सकें हम लें । उनके पास अपनी संस्था है । इसमें हस्तक्षेप नहिं होना चाहिये । एक दूसरोंसे हम सीखें–भ्रातृभाव रखें ।

हां कोई भी औरत तो होनी चाहिये । मणीबहनको अवश्य लो । राजकुमारीके लिये बडी मुश्केली है । अपने घरमें वह गाय बारेमें नियम पालन नहिं कर सकेगी । सहायक या मित्र वर्ग निकाले उसमें रा. कु. जैसे आ सकेंगे । पुराने संघके पैसेके बारेमें देख लूंगा ।[२]

बापुके आशीर्वाद

१. गो सेवा संघ ।

२. इस पत्रके बारेमें जमनालालजीकी डायरीमें निम्न नोंध है:—

"२ फरवरी ४२,–गोपुरी, वर्धा—सुबह पू. बापूको गो सेवा संघके बारेमें पत्र लिख कर सेवाग्राम भेजा। जवाब मिला। समझमें नहीं आया।"

गांधीजीका जमनालालजीको लिखा गया यह अन्तिम पत्र है। ११–२–४२ को जमनालालजीका देहान्त हुआ।

: ३७७ :

निमंत्रण[1]

सेवाग्राम,
१४–२–४२

प्रिय भाई/बहन,

आप जानते हैं कि जमनालाल और मेरे बीचमें कितना घनिष्ठ संबंध था। कोई काम मैंने नहीं किया जिसमें उनका पूरा सहयोग तन मन और धनसे न रहा हो। जिसको राजकाज कहते हैं वह न मेरा शौक था न उनका। वे उसमें पड़े क्योंकि मैं उसमें था। लेकिन मेरा सच्चा राजकाज तो था रचनात्मक कार्य। और उनका भी राजकाज यही था। मेरी आशा थी कि मेरे बाद जो मेरे खास काम माने जांय उन्हें वे संपूर्णतया चलावेंगे। उन्होंने मुझे ऐसा आश्वासन भी दे रखा था। लेकिन मनुष्यकी इच्छाकी पूर्ति तो ईश्वर ही करता है। हमारी इच्छा सफल न हुई। मेरी श्रद्धा मुझे सिखाती है कि इस निष्फलतामें ही सफलता मिलेगी। जो भी हो अब मुझे सोचना है कि जमनालालजीके बदलेमें उनके कार्य कौन करेंगे, और कैसे? इस प्रश्नकी चर्चा, और हो सके तो उसे हल करनेके लिये आपको कष्ट दिया जाता है। किसीको आनेका आग्रह तो इसमें हो नहीं सकता है। जिन कामोंमें जमनालालजीने खास दिलचस्पी ली है उसकी फेहरिस्त वक्तके क्रमसे इसके साथ है। इन कामोंमें आप हिस्सा लेना चाहते हैं और आप आ सकते हैं तो अवश्य आइये। नहीं आ सकते हैं तो भी विवेकके खातिर आना चाहिये ऐसी कोई बात नहीं है।

आपको दिलचस्पी होते हुए भी आप किसी कारणवश नहीं आ सकते हैं तो आप लिखें कि किस काममें किस तरह आप सक्रिय हिस्सा लेंगे। चर्चा और मंत्रणा ता. २०–२–४२ शुक्रवारको दिनके २ बजे होगी। यदि आ सकें तो कृपया तारसे खबर देंगे तो सुविधा होगी। जिनको निमंत्रण भेजा है उनकी फेहरिस्त भी इसके साथ है। जिनके नामका स्मरण हम लोगोंको आया उनके नाम दिये हैं। कोई

१. जमनालालजीके देहान्तके बाद चौथे दिन ही उनके सारे मित्रोंको गांधीजीने यह निमंत्रण भिजवाया था। यह नागरी और उर्दू दोनों लिपिमें लिखा गया था।

रह गये हों तो भूलसे ही रहे हैं ऐसा समझकर वे निमंत्रण मंगवा सकते हैं।

आपका,

[signature]

जमनालालजीके कार्य—वक्तके क्रमसे

१. गो सेवा	७. खादी
२. नई तालीम	८. देशी राज्य
३. ग्रामोद्योग	९. राष्ट्रभाषा (हिन्दी और उर्दूका संयुक्त प्रचार)
४. महिला सेवा	१०. सत्याग्रह आश्रम तथा ग्राम सेवा
५. हरिजन सेवा	११. मारवाडी शिक्षा मंडल, सन १९१०– नव भारत विद्यालय तथा कालेज
६. गांधी सेवा	

: ३७८ :

सेवाग्राम,
वर्धा, सी. पी.,
७–३–४२

ज्यों ज्यों मैं विचार करता हूं तो मैं देखता हूं कि देशहितकी कोई प्रवृत्ति नहीं थी जिसमें जमनालालजीका हाथ नहीं था तो सस्ता साहित्य मण्डलमें तो होना ही था। वे जिंदा साहित्य थे।[1]

[signature]

: ३७९ :
अ

पंचगनी,
३१–७–४४

चि. जानकीबेन,

तमारी हाजरी लेवा ईश्वरनी कृपा हशे तो श्रीजीए पहोंचुं छुं।

१. यह पत्र गांधीजीने जमनालालजीकी मृत्युके बाद जीवन-साहित्यके 'जमनालाल स्मृति अंक' के लिए संदेश रूपमें भेजा था।

'कृपा' तो भूलथी लखायुं। ईश्वरनी तो हमेशां कृपाज होय। आपणे ते कृपाने न ओळखीये ए आपणी मूर्खाई पण एनी इच्छाने तो आपणे ईच्छाए के अनिच्छाए आधीन छीये। एटले एनी इच्छा हशे तो त्रीजीए मळशुं। मदालसा ने ओम त्यां हशे एटले ठीक छे। सावित्रीनी गेर हाजरी कठशे। कमळानुं कहेवुं शुं? ए तो बहु जंजाळी। हवे बीजा नामो भरवा बेसुं तो बीजी कटकी लेवी जोईए ने वखत?

બાપુના આશીર્વાદ

: ३८० :

૧૦-૭-૪૫
પંચગની(?)

ચિ. [illegible],

હવે તો [illegible],
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
બાપુના
આશીર્વાદ
૨૨-

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

सीमला,
१०—७—४५

चि. जानकीमैया,

हवे तो रामकृष्ण छुटयो ने राधाकिसन पण। तमने ने दादीने शांति वळी ना? जोउं छुं हवे गो सेवा केवी करो छो?

बापुना आशीर्वाद

: ३८१ :

POONA,
4–11–45

JANKIDEVI BAJAJ,
BAJAJWADI, WARDHA

Your two wires announcing birth of son to Madalsa. Hope mother baby progressing well.

—*Bapu*

भाग २

महात्मा गाँधी व श्री. महादेव देसाई
के पत्र--बजाज परिवार के
अन्य लोगों के नाम

: १ :

वर्धा,
पो. शु. ३
(१८-१२-२६)

भाई केशवदेवजी,

चि. कमला और चि. रामेश्वरकी शादी साबरमतीमें करना मुझको ज्यादह अच्छा प्रतीत होता है। दूसरोंके पर असर डालनेके प्रलोभनसे मैंने बम्बईमें शादी करनेमें संमति चार मास पूर्व दी थी। परंतु विचारनेके बाद मुझे ऐसा लगता है कि हमारे केवल वरकन्याके भलेकी दृष्टिसे ही ऐसी बातोंका निणय करना चाहिये। विवाह धार्मिक विधि है। वर-कन्याके लिये एक नया जन्म है। उसको जितनी शांतिसे और जितने धार्मिक वायुमें किया जाय इतना उनके लिये बेहतर है। ऐसा वायु तो जब हम आडंबरको छोडें और शांतिमय रहें तब ही पैदा हो सकता है। संभव है कि स्त्री वर्गको कुछ क्लेश होगा। इस क्लेशको क्षणिक समझ कर जो उचित है उसीको करना हमारा कर्तव्य है ऐसी मेरी मति है। इसलिये मैं चाहता हूं कि आप भी साबरमतीमें विवाह करनेमें सम्मति दें। मुझको वहां विवाह होनेमें न कोई उपाधि है न कष्ट है।

आपका,
मोहनदास गांधी

(नक़ल परसे लिया गया)

: २ :

23-7-30

SETH LAXMANPRASADJI PODDAR,
2 HASTINGS PARK ROAD,
ALIPORE, CALCUTTA

Both Kamalnayan and Savitri have my blessings. May this connection be fruitful of good for them and for country.

—*Gandhi*

: ३ :

य. मं.,
४–१–३१

चि. राधाकृष्ण,

तुमारे खत लिखते रहना। उसमें जो खबरें मैं चाहता हुं मिल जाती हैं। जानकीबहन आजानेसे लिखनेका कहो।

विनोबाको पकड़ना चाहें तो भले पकड़े। छोटेलालके कुछ खबर है? उसकी तबीयत कैसे है?

बापूके आशीर्वाद

: ४ :

य. मं.,
२५–१–३१

चि. राधाकृष्ण,

छोटेलालजीको कागज लिखनेकी इजाजत मिले तो लिखनेका कहो। शायद १६० में वह भी छुट गये? आवश्यक रेशमका अर्थ खद्दर में किनार इ. में चाहीये वह या ऐसा कोई हिस्सा जिसके सिवाय खद्दर भी न बिकी जाय। सिद्धांतका प्रश्न हल होनेसे बाकीके बारेमें संजोगके अनुकुल किया जा सकता है।

बापूके आशीर्वाद

: ५ :

यरवडा,
२४–१–३३

चि. राधाकृष्ण,

जमनालालजी उपरनो कागळ हुं वांची गयो छुं। महिलाश्रम के महिला विद्यालय अथवा वनिता विश्राम के वनिता विद्यालय एने आश्रमना आश्रय तळे न राखी शकाय केम के ए अत्यारे हरिजन बाळाओने लेवाने तैयार न रहे। तेनी उपर ए बोजो न लादी शकाय। बहारथी हरिजन बाळा आवे तेने भणावे एटलुं हाल तुरतज सारु बस गणवुं जोईए, पण एवी संस्थाने आश्रमनो आश्रय पण न मळी शके। विनोबानो अभिप्राय मने बरोबर लागे छे अने महिला विद्यालयने सारु पण मर्यादा अनिवार्य लागे छे।

जानकीबहेनने कहेवुं के जमनालालजीने डा. मोदीनी पासे तपासावानी हाल कांई आवश्यकता हुं जोतो नथी। शरीर सारुं छे, कान सारो छे, खोराक ठीक छे हजम थाय छे, वजन वध्युं छे, कोई पण प्रकारनी चितानुं कारण नथी। मोदी अत्यारे कांई पण नवुं कही शके के करी शके एवुं पण लागतुं नथी। जरा पण आवश्यकता जणाशे अथवा जमनालालजी पोते इच्छशे त्यारे बंदोबस्त करवामां अडचण न आवे ढील पण न थाय। अत्यारे तेमने मुंबई लई जवा ए पण मने सारुं नथी लागतुं। अहींनी हवा अनुकूळ आवेली छे तेमां वळी थोडा दिवसने सारु बदली शी करवी?

मने माताजीए[1] कांतेला सुतरना बे थान मळयां छे। एमना तरफनी प्रसादी गणीने उपयोग करीश।

कमलनयन आव्यो छतां मने मळी नहीं गयो। मळी जवुं जोईतुं हतुं, मने मळी शकत। हवे ज्यारे आवे त्यारे मळे। तेना अभ्यासनुं शुं थयुं? ते पाछो केम लखतो नथी?

बापुना आशीर्वाद

: ६ :
अ

य. मं.,
२८-१-३३

चि. राधाकिसन,

एक कागळ महिलाश्रम विषे लख्यो छे ए मळयो हशे। जमनालालने मळया करुं छुं। एमनी तबीयत सारी रहे छे। लक्ष्मीनारायण मंदिरमां[2] दर्शन करनारनी संख्या घटी गई छे एवुं काले सांभळयुं। आ वात बरोबर छे? हाजरीनी कंई नोंध लेवामां आवी छे? बीजां मंदिर जे हरिजनोने सारु खुल्यां छे तेने विषे पण जाणी लेजो।

बापु

१. जमनालालजीकी माताजी।

२. वर्धाका लक्ष्मीनारायण मंदिर जिसे जमनालालजीके दादाजीने बनवाया था। १९-७-२८ को आचार्य विनोबाजीके हाथों यह हरिजनोंके लिए खोला गया था। देशमें हरिजनोंके लिए खोले गये मंदिरोंमें यह पहला था।

: ७ :

२२–१०–३६

चि. राधाकिसन,

विनयना खबर सांभळ्या।[1] कमळाने मळवानुं मने बहु मन छे। ते अहीं आवे तो सारु। काले हुं तो अहीं छेक पांच वागा लगी काममां रहीश एटले त्यां आवुं तोय बे चार मिनिटमां भागी जवुं पडे। कमळाये त्यां गोंधाई रहेवा पणुं नथी। आ कागळ तमने बरोबर लागे तो कमळाने बंचावजो ने मोकलजो अथवा लावजो।

बापुना आशीर्वाद

: ८ :

सेगांव,
७–१२–३६

चि. राधाकिसन,

यह ज्वर मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगता। न तुमारे बीमार होना चाहीये न अनसूयाको। बुखार होते हुए भी बाथ ले सकते हैं। पाणी गरम नहीं ठंडा ही होना चाहीये। मैं मिट्टीकी पट्टी लगानेका भी कहा है। यदि कल बुखार न आवे तो मेरे पास आकर समझ जाओ।

बापुके आशीर्वाद

: ९ :

७–८–३८

चि. राधाकृष्ण,

कल सोमवारको १२ बजे मुझे मोटर चाहीये, अगर बारिस न हो तो। बालकृष्णको नागपुर भेजना है।

कल मोटर सारा दिन रही उसमें अपराध मेरा ही है। कल किशोरलाल न आये उसका विशाद हूआ। हृदय रोया और मुझे स्मृतिभ्रंश हूआ। क्या करुं?

बापुके आशीर्वाद

१. श्री. कमला नेवटियाके लड़के विनयके गुजर जाने पर।

: १० :

(३१-१२-१९३८)

चि. राधाकृष्ण,

यह तार[1] कल भेजो। खत भी साथमें है।

Jamnalalji
(ठेकाणुं भरवुं)
Delhi

Wire. No worry about order. If possible come Bardoli. —Bapu

बापूके आशीर्वाद

म्युरिअल लेस्टरके बारेमें प्रबंधका संदेशा मिला होगा। उनको ३ बजे कल यहां भेजो।

: ११ :

अबोटाबाद,
१२-७-३९

चि. राधाकृष्ण,

तुमारा खत मिला है। जमनालालजीको जेल अनुकुल तो नहीं है लेकिन जो हो सो। वहीं दुरस्त होना है। अपने आप छोड देवे तो ठीक ही है। मेरा लेख देखोगे। खाने पीनेमें कुछ कहेना नहीं है। हजम हो सके इतना दूध फल लेवे। स्टार्च कम। सोडा जिस चीजमें जितना ले सके अच्छा ही है। ६० ग्रेन तक जा सकते हैं।

मुसलमानोंका समजा।

बापूके आशीर्वाद

: १२ :

सेगांव-वर्धा,
८-८-३९

चि. राधाकिसन,

तुमारा खत मिला है। मेरा लेख तो देखो।[2] कमलनयनमें मुझको थोड़े

१. इस संबंधमें पृष्ठ २०८ पर दी गई नोंध देखिये।

२. गांधीजीने जयपुर व जमनालालजीके बारेमें ता. १७-७-३९ को हरिजनमें लेख लिखा था। संभवतः यहां उसीका उल्लेख है। यह लेख खंड ३ में देखिये।

कागज दिये हैं उसमें हिंस्र जानवरोंका आधा वर्णन है आधा बाकी है। मुझे पूरा चाहीये।

अब जमनालालकी तबीयत कैसी है?

कमलनयन सावित्रीकी प्रसूती नजदीक होनेके कारण कलकत्ता गया है।

बापूके आशीर्वाद

: १३ :

२९–३–३६

चि. गोदावरी,

तुमारा खत मिला। तुम कब उठती है यह नहिं बताया। साखर अनावश्यक वस्तु है और ज्यादा खानेसें हानिकर है। साखरके बदलेमें मोसममें गंडेरी खाना अच्छा है। साखरसे गुड़ अच्छा।

बापूके आशीर्वाद

: १४ :

वर्धा,
११–११–३४

भाईश्री रामेश्वरदासजी,

वि. पू. बापुजीए नीचे मुजब लखाव्युं छे।

अब्दुल गफारखान साहेबना भाई डा. खानना पुत्र गनी अमेरिकाथी साकरनुं काम शीखीने आव्या छे। एमने हवे हिंदुस्तानमां थोडुं शीखीने अनुभव लेवो छे। एमने तमारे त्यां मोकलवा विचार कर्यो छे। एमने हाल कशुं आपवानुं नथी। एमनो खर्च पणए पोतेज करशे। मात्र तमारा एक्सपर्टे एमने बधी वातमां वाकेफगार करवा अने बधुं मन दई शीखववुं, अने जे काम ते आपी शके ते एनी पासेथी लेवुं एवी अपेक्षा छे। तमारे एने भाई जेवा समजी एनामां रस लेवो, ए प्रसंगोपात्त भले तमारी साथे जमे, पण सामान्यरीते एने कोई मुसलमान कुटुंब के रसोइया के सारी होटल होय तो तेमां जमवानी व्यवस्था करी आपवी। एणे निरामिष भोजननो शांतिनिकेतनमां प्रयत्न कर्यो हतो, पण एथी एनी तबियत जळवाई नथी, एटले एने मुसलमानी मांसाहार मळे ए व्यवस्था आवश्यक छे।

जो आ रीते एने लेवामां तमने कोई जातनी मुश्केली आवे एम न होय, अने तमारी तैयारी होय तो बापुजीने तारथी खबर आपजो, एटले तेओ एमने

मोकली देशो। ए भाई हाल अहींज छे। श्री जमनालालजीए तमने परभारा लखवानुं जणाववाथी तमनेज लख्युं छे।

भाई रसिक आवी गया ? ए शरमाळ छे अने तबियत नाजुक छे पण मिलनसार छे एटले तमने फावशे एम आशा छे।

शेठजीने मुंबईमां वधारे दिवस रोकावुं पडशे एम जणाय छे। कानने पाछो जरा जरा रोज कोरवो पडे छे, अने परु नीकळता भागोने सुधारवा पडे छे। तमे कुशळ हशो। अहीं सौ कुशळ छे।

एज लि.

बापुना*

: १५ :
अ

वर्धा,
६–१२–३४

प्रिय रामेश्वरदासजी,

चि. आ साथे एक भाईए गोळना पृथक्करणनी विगतो आपी छे ते मोकली छे। पू. बापुजीए कहेवडाव्युं छे के तमारा एक्सपर्टने पूछी जोशो के ए बराबर छे के केम ? एनुं quantitative पृथक्करण थयेलुं छे, अथवा थई शके एम छे? जुदी जुदी जातना नमुना मेळवी एनुं quantitative पृथक्करण थई शके तो कढावी तेनो रिपोर्ट मोकली शको तो सारुं।

आ पैकी गामठी अने मिलनी सौथी शुद्ध साकरमां, तेमज शुद्ध अने अशुद्ध साकरोमां शुं फरक पडे छे ते पण जाणवानी इच्छा छे।

साकर बनाव्या पछी जे molasses (एने माटे देशी शब्द शुं छे ?) रहे छे, तेमां कया पदार्थो रहे छे।

Glucose अने fructose बनाववानी कोई घरगतु रीत अथवा कामचलाउ रीत छे ? एमां शुं क्रिया करवी पडे छे ?

जो आ बधी बाबतो कोई पुस्तकमांथी मळी शके एम होय तो ते पुस्तकोनां नाम पण मोकलवां। कुशल हशो। अहीं सौ कुशल छे।

एज लि.

बापुना*

* किशोरलाल (मशरूवाला) ना वंदे मातरम्।

: १६ :

वर्धा,
१०–१२–३४

चि. रामेश्वर,

मुझे गनीके बारेमें सब खबर दे दो। उसको रु. ३० तो देही देना। कल ज्यादा लिखा जायगा। गनीके खानेका क्या प्रबंध है? कोई स्वच्छ मुसलमान नहीं मिल सकता है? खीस्ती पकानेवाला मिले तो भी चलेगा। यदि कोई बडा रेल्वे स्टेशन नजदीकमें है तो वहां जाकर एक वखतका खाना खा सकता है। वहांकी आबोहवा कैसी है? आबादी कितनी है?

बापूके आशीर्वाद

: १७ :

बिरला मिल्स,
दिल्ली,
३१–१२–३४

चि. रामेश्वर,

तुमारा खत मिला था। विस्तारपूर्वक लिखा सो अच्छा किया। ऐसे ही मुझे लिखा करो। यथा संभव सादगीका पाठ भाई गनीको दिया करो। अगर वह यहां आना चाहता है तो आने दो। उसके टानसिल डा. अनसारीको बता देंगे। स्वामीके मार्फत मैंने एक खत शक्करकी मिलके मजदूरोंके बारेमें भेजा है उसका उत्तर भेज दो। तारीख २० तक मैं दिल्लीमें हूंगा। बिरला मिल्स ठिकाना करो। मैं तो नयी जमीन हरिजनोंके लिये ली गई है उस पर रहता हूं।

बापूके आशीर्वाद

: १८ :

य. मं.,
१८–९–३०

चि. कमळा (रामेश्वरदास),

तारो कागळ छेवटे मळ्यो। मारा कागळनी उघराणी तुं ठीक समजी गई। हवे आळस न करती। तारुं शरीर केम रहे छे? मने लख्या करजे। मने

लखवाने निमित्ते पण तुं आळसने काढी शकशे। करांचीमां कीकीबहेन, गंगाबहेन वि. ने मळी हती के?

બાપુના આશીર્વાદ

: १९ :

य. मं.,
२-८-३०

चि. कमलनयन,

तारो कागळ मळ्यो। मारा गूजराती अक्षर वांची शके छे के? न वांची शके तो हिंदीमां लखीश। जेम आ वखते पत्र लख्यो छे तेम लख्या करजे। पिताजीने मळवा जाय ने कहे के वजन वधारीने बहार नीकळे।

तारे अक्षर सारा ने स्पष्ट लखवा जोईए। तारुं शरीर खूब सुधारजे।

काकासाहेबना आशीर्वाद।

ओम क्यां छे? मदालसाने कहेजे लखे। कमळाने अने रामेश्वरने कागळ लखवानुं लखजे।

બાપુના આશીર્વાદ

राधाकिसन क्यां छे? केम छे?

: २० :
अ

चि. कमलनयन,

तारा अक्षर रुपाळा लागे छे खरा पण स्पष्ट नथी। द अने ह एक सरखा होय छे। 'अच्छा' मां 'अ' अधुरो छे 'च्छा' मां च अलग पड्यो छे ने ट जेवो वंचाय छे। 'छा' 'ध्य' जेवो वंचाय छे। अक्षर लखनारना...[1]

: २१ :

य. मं.,
१२-८-३०

चि. कमलनयन,

तारो कागळ मळ्यो छे। हमणा तारो धर्म शरीर बांधवानो छे। खोराक ठीक छे। कसरत बरोबर करजे। थाय एटलुं खादी कार्य करजे। मने कागल लख्या करजे। कमळा केम छे? मदालसा शुं करे छे? जानकी

१. यह नकल परसे लिया गया है। नकल अधूरी ही मिली है और इस पत्रकी तारीख भी नहीं मालूम हो सकी।

बहेनने कहेजे कागळ लखे। पिताजीनो खोराक शुं छे? तुं रोज केटलुं कांते छे? कंइ वांचवानो समय मळे छे?

बापुना आशीर्वाद

काकासाहेब आशीर्वाद भेजते हैं।

: २२ :

य. मं.,
मौनवार

चि. कमलनयन,

तुं पोते कागळ लखजे। दूध न गमे तो दहिं लेवुं फळोनो फेरफार करवो। मन मारशे तो गमी जशे। छतां बीजुं जोईएज तो आश्रमनी रोटी लेजे। शुं करे छे? वजन केटलुं छे?

बापुना आशीर्वाद

: २३ :

यरोडा महेल,
मौनवार

चि. कमलनयन,

तारी तबीयत हवे तो सरस रहेती हशे। तुं मने कागळ लखजे। शुं करे छे? दीवस आखानो कार्यक्रम आपजे।

बापुना आशीर्वाद

: २४ :

य. मं.,
६–९–३०

चि. कमलनयन,

तेरा खत मिला। अच्छा लिखा गया है। यदि वहीं काफी काम है तो अजमेर जानेकी आवश्यकता मुझे प्रतीत नहीं होती है। अजमेरमें ज्यादा जरूरत किसीकी है तो जाना चाहिये सही। यहांसे निश्चयपूर्वक अभिप्राय देना मुश्केल है। माताजी क्या कहती हैं? धार्मिक निर्णय तो टुकडीका सरदार हि दे सकता है। आजकल सुरेन्द्रजी हैं उनसे पूछना।

मराठीमें खत लिखना मेरे लिये प्रायः अब तक तो असंभवित है। पढ़नेका मुझको समय भी कम मिलता है। जानकीबहनको कहो मुझे लिखे।

का. सा. के आ.[1]

बापूके आशीर्वाद

(नक़ल परसे लिया गया)

: २५ :

य. मं.,
२२–९–३०

चि. कमलनयन,

तारो कागळ मळ्यो। तारे अक्षर साफ लखवा जोईए। घडाएला छे पण स्पष्ट नथी। आजथी नहिं सुधारे तो पछी सुधरवाना नथी। तुं अजमेर सुखेथी जजे। त्यांथी पण कागळ लखतो रहेजे। शरीरने बगडवा न देजे।

बापुना आशीर्वाद

(नक़ल परसे लिया गया)

: २६ :

सीमला,
१९–७–३१

चि. कमलनयन,

तारे विषे काकासाहेब साथे वातो करी हती। तुं ठीक अव्यवस्थित थयो छे। खानगी शिक्षक राखवानी वात तो अमने कोईने गळे नथी उतरती। जो विद्यापीठमां शिक्षणनुं वातावरण न लागे तो पुनामां एक निशाळ छे ज्यां तने मोकली शकाय। तुं विचार करे तो तजवीज करुं। काकासाहेब साथे चर्चा करजे। मारो पोतानो अनुभव एवो छे के जेने खरेखर भणवानो शोख थाय छे ते गमे त्यां पोतानी इच्छा पूरी पाडी शके छे। एम छतां तने रोकवानो विचार मुद्दल नथी, बने तेटले लगी तने अनुकुळ थवुं छे।

बापुना आशीर्वाद

१. काकासाहेबके आशीर्वाद।

: २७ :

२१-८-३२

चि. कमलनयन,

तुमारा धर्म मुझको जेलसे निकलते हि लिखनेका था। मैंने खत लिखा था वह मिला था? तुमने तो खूब अनुभव लिये। विलायत जानेके पहेले तुमारा पत्र था ऐसा कुछ स्मरण आता है। मैंने प्रश्नका उत्तर दिया था ऐसा भी कुछ ख्याल रह गया हैं। अब तो प्रश्न भूल गया हुं। मुझे दोबारा लिखो।

नर्मदा बेडोल चित्र देकर ठीक निकल गई। यह आलस्यकी निशानी है।

बापुके आशीर्वाद

: २८ :
अ

(फरवरी १९३४)

चि. कमलनयन,

पिताजीए मोकलेलो इंग्रेजी कागळ काले मळ्यो ने तेनो जवाब पण मोकली दीधो। तारो कागळ आजे मळ्यो।

में एवी सलाह आपी छे के तारे हिंदीनी उत्तमा परीक्षा आपवी जोईए ने इंग्रेजी उपर सरस काबु मेळववो जोईए। आम तुं परिपक्व थाय ने अभ्यासी तरीके घडाई जाय पछी पश्चिम तरफ जाय तो पूर्ण लाभ उठावे। ज्यारे जवानो समय आवे त्यारे प्रथम अमेरिका जवानी मारी भलामण छे। त्यारबाद इंग्लंड अने पछी युरोपना बीजा प्रांतो। छेवटे जापान अने चीन।

परीक्षानो तने लोभ नथी ए मने गमे छे। अमेरिकामां तारे एक वर्ष रही सूक्ष्म अनुभव लेवो, इंग्रेजी अभ्यास वधारवो ने पछी बीजी जग्याओमां इच्छा प्रमाणे रहेवुं। बहार बधा मळी बे वर्ष गाळवा। आमां तने खूब अनुभव मळी रहे ने तारुं भविष्य तुं घडी शके। आ मान्यतामां अनुभवे जे फेरफार करवा पडे ते करी शकाय। मुख्य वात ए छे के हाल तुरत पश्चिममां जवानो विचार छोडवो घटे छे। हिंदी पूर्ण करवा सारु ने इंग्रेजी पाकुं करवा सारु हुं चार वर्षनी जरूर गणुं छुं। हिंदीने खातरज संस्कृत अभ्यासनी जरूर जोउं छुं। चार वर्षनी राह जोवी हुं वधारे पडतुं नथी मानतो। रामकृष्णने आशीर्वाद। तेने संभाळतो हशे।

बापुना आशीर्वाद

(नकल परसें लिया गया)

:२९:
अ

ચિ૦ મનુ,

૧ મારું [illegible]

૨ બધાંનું સાંભળવું. બાકી બુદ્ધિ ઉપયોગ કરવો.

૩ દરેક મિનિટનો હિસાબ રાખવો ને તેનો [illegible] તે તે ક્ષણે કરવો.

૪ ગીતાજીનો [illegible] [illegible] દિવસનું [illegible] [illegible] [illegible] કરવો.

૫ પૈસે પૈસાનો હિસાબ રાખવો

૬ [illegible] [illegible] [illegible] કરવો

૭ [illegible] [illegible] કરવો નિયમિત [illegible] રહેવું

૯ [illegible] [illegible] [illegible]

૧૦ બુદ્ધિની [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

બાપુના આશીર્વાદ

વર્ધા
૩-૫-૩૪

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

वर्धा,
३–६–३५

चि. कमल,

१. थोडुं बोलजे
२. बधानुं सांभळजे पण शुद्ध होय तेज करजे।
३. दरेक मिनिटनो हिसाब राखजे ने ते ते क्षणनुं ते ते क्षणे करजे।
४. गरीबनी जेम रहेजे। धननुं अभिमान कदी न करजे।
५. पैये पैनो हिसाब राखजे।
६. अभ्यास ध्यानपूर्वक करजे।
७. तेमज कसरत करजे।
८. मिताहारी रहेजे।
९. रोजनिशि लखजे।

१०. बुद्धिनी तीव्रता करतां हृदयनुं बळ करोडो गणुं वधारे किम्मती छे एटले ते केळवजे। ते केळववा सारु गीतानुं तुलसीदासनुं मनन आवश्यक छे। भजनावली रोज वांचजे। प्रार्थना रोज बेयवार करजे।

११. हवे सगाई करी छे एटले तुं खीले बंधायो। मनने बीजी स्त्री प्रत्ये कदी न जवा देतो।

१२. मने दरेक अठवाडीये एक कागळ तारा कार्यना हिसाबनो दीधा करशे तो तारुं कल्याण छे।[1]

बापुना आशीर्वाद

१. अध्ययनके लिये सीलोन जानेके पहले श्री. कमलनयन गांधीजीके पास उनके आशीर्वाद लेने गये थे। उस दिन गांधीजीका मौन था। इसलिये आशीर्वाद मांगने पर गांधीजीने उनको उपरोक्त पत्रके रूपमें अपने आशीर्वाद लिख दिये। इस सिलसिलेमें एक मजेदार प्रसंग उल्लेखनीय है :—

जब गांधीजीने वह पत्र लिखा तब श्री. महादेव देसाई भी वहां उपस्थित थे। गांधीजीके आशीर्वाद लेकर कमलनयन महादेवभाईके आशीर्वाद लेनेको उनकी तरफ फिरे। उन्होंने उपरोक्त पत्र कमलनयनसे लेकर पढ़ा और कहने लगे: "सचमुच ही तुम अपने साथ एक बड़ा खजाना ले जा रहे हो! बापूने संक्षेपमें सभी कुछ कह दिया है! तुम बेशक इस पर गंभीरतासे विचार करोगे ही! यदि तुम तुम्हारे भविष्य जीवनके मार्गदर्शनके लिये सिर्फ इसे याद रखोगे तो फिर तुमको और किसी बातकी चिंता करनेकी जरूरत नहीं रहेगी!"

[अगले पृष्ठ पर चालू]

: ३० :

WARDHA,
6-6-35

MY DEAR KAMAL,[1]

Your letter and your telegram. You should get vaccinated if Dr. J's argument appeals to you, but if your instinct is against it and your reason also revolts against it then you will prefer 'the Rail Route.'

I enclose a note for Seth Shantikumar Narottam Morarji. His address is Scindia Steam Navigation Co., Sudama House, Wittet Road, Ballard Estate. Do see him and tell me what happens.

I am writing to Somasundaram and Bernard. Bernard's address was not quite clear. You ought to have sent a copy in your letter.

Yours affly,

Mahadev

Remember me to Dr. Jawaharlal. You perhaps do not know that I was with him in jail in 1921 and have known him since then.

: ३१ :

वर्धा,
१२–६–३५

प्रिय कमल,

तारो कागळ मळ्यो। तें भले सोमसुंदरमने अने बर्नार्डने तार

[पिछले पृष्ठसे चालू]

इसके बाद हंसी हंसीमें महादेवभाईने कुछ और भी हिदायतें दीं: "तुम और तो सब कुछ समझते हो पर तुम्हे अंग्रेजी नहीं आती। अंग्रेजी रीतिरिवाजसे भी तुम अनभिज्ञ हो। लेकिन अंग्रेजी भाषाके दो शब्द हमेशा याद रखना—'थेंक्स' और 'सॉरी'। दोनों शब्द हमेशा तुम्हारी जबान पर रहने चाहिए। इनमेंसे किसी भी शब्दके उपयोगका मौका आने पर उसके उपयोग करनेमें मत चूकना। यदि तुम इस सलाहको मानोगे तो तुम्हें अंग्रेजी रीतिरिवाजके बारेमें कोई फिक्र करनेकी जरूरत नहीं होगी। उन्हे तुम धीरे धीरे स्वयं ही सीख लोगे।"

१. श्री. कमलनयनको अंग्रेजी सिखानेके लिए श्री. महादेवभाई कभी कभी उन्हें अंग्रेजीमें पत्र लिखा करते थे।

मोकल्या। तारमां kindly के please न मळे ए तारुं मारवाडीपणुं के अज्ञान ? तारे रीतभात बरोबर शीखवी जोईशे। Thanks नो उपयोग करे छे तेना करतां वधारे करवो जोईए अने if you please नो पण। एटलुं नोंधी राख।

मारा उपर सोमसुंदरम अने बर्नार्डना कागळो आव्या छे ते तने जोवाने मोकलुं छुं। बर्नार्ड जे चोपडीना भाषान्तरनी वात करी छे ते मारी बापुना जीवन चरित्रनी संक्षिप्त आवृत्ति जे में तने पूनामां आपी हती तेनो उल्लेख छे। ए चोपडीनो तुं त्यांना विद्यार्थीओमां प्रचार करजे। Gandhism नो प्रचार करजे अने बापुनो अने जमनालालजीनो योग्य प्रतिनिधि थईने फरजे ए मारा तने आशीर्वाद छे।

लि.

बर्नार्डनी पत्नी बिमार छे। कदाच ए पोताना पिताने जोवाने विलायत पण जवानी हशे। बर्नार्डनी स्थिति केवी छे ए पण तने एना कागळमांथी जोवानुं मळशे एटले बधुं समजीने तुं वर्तजे।

: १२ :

WARDHA,
30-6-35

MY DEAR KAMAL,

I had your letter written on arrival in Colombo and also one a couple of days ago. I am glad you [illegible] I share your letters with Bapu who w[illegible] that you ought to improve your hand-[illegible] And if you don't mind I shall try to teach you a little English through correspondence, and that by rewriting your letters to me, whenever I have time. I enclose herewith your first letter rewritten and I want you to study every correction I have made. I should love to do so with regard to every letter coming from you, but you know my hands are full.

I shall write to Bernard as soon as possible.

Yours affectionately,

: ३३ :
अ

वर्धा,
१६–७–३५

चि. कमलनयन,

पिताजीनी पासेथी सांभळयुं के * * हवे तने परणवा मागती नथी। तेथी गईकालेज तेने मुक्ति आपी दीधी छे। आपणने एज शोभे। तुं स्वस्थ हशे। तारां नशीब सारांज छे। एटले तने योग्य स्त्रीज मळशे। अत्यारे तो तुं तारा अभ्यास पाछळ अने तारा चारित्रना घडतर पाछळ भेख लेजे। मने कागळ लखवानुं बाकी तो छेज। तारुं इंग्रेजी सुधारजे। रसपूर्वक अभ्यास करजे, शरीर कसजे। मजुरी करतां कंटाळतो नहीं, शरम तो होयज केम ?

बापुना आशीर्वाद

: ३४ :

WARDHA,
16-7-35

MY DEAR KAMAL,

I have your dear letter. As soon as I find time I shall make corrections in the letter itself and send it on to you. But in order that I may be able to do it effectively, you should leave more space between the lines.

Kakaji has just now told me that your betrothal has been shortlived * * *
Whilst you have my sympathy * * *
* * * *
Let me have a line from you to assure me that * * * * you have taken it in a sportsmanlike spirit.

Yours
Mahadev

P.S.

Here is a letter for Bernard, also one for the other friend—Robin Rutnam. Kakaji's letter to Bernard is also enclosed herewith. Also Bapu's for you.

: ३५ :

वर्धा,
२०-७-३५

चि. कमलनयन,

आ कागळ भूलथी गुजरातीमां शरु कर्यो एटले भले गुजरातीमांज जाय। मारी तो सलाह एवी छे के तुं बर्नार्डनी साथेज रहे। ए कहे छे के ५० रुपीआ मासिक तारे एने आपवा। काकाजी कहे छे के ५० ने बदले ६०-७० पण आपी शकाय। एने भलेने आपणाथी थोडी मदद थाय। ए नानकडुं घर लेवानो होय तो तेमां भाडुं अर्धुं तुं भर, एटले खुशीथी साथे रहेवाय। सिवाय के तें बीजे व्यवस्था करवा धारी छे त्यां तारी अभ्यासनी सगवड बरोबर जळवाती होय। तो तने जेम गमे तेम करजे।

* * हाथमांथी गई तो कांई शोक न करतो। बीजी कोई * * मळी रहशे।

लि.

बापुना

: ३६ :

WARDHA
25-7-35

MY DEAR KAMAL,

I have your letter. I have already anticipated you, as you will see from my letter which you must have had by now. There is nothing particular to write this week. I enclose Bapu's letter which I hope you will treasure and try to carry out in practice. I hope you are keeping well.

My love to Bernard.

Yours,

Mahadev

: ३७ :

वर्धा,
२५-७-३५

चि. कमलनयन,

तुमारा स्वच्छ खत मुझे मिला है। अपने दोषोंका स्वीकार कर लेता है सो तो बहुत अच्छा है। अब कदम आगे जाओ। दोषोंको दूर

करनेका बड़ा प्रयत्न करो। रोजनिशिमें नित्य कर्म दे सकता है। प्रार्थना दो बार तो कर ही सकता है। रामधुन तो है ही। आलस्य छोडनेके लिये सबसे अच्छी बात यह है कि नित्यके नियम बना लेना और उसपर कायम रहना। भले कम काम हो। व्यायामको नित्यकर्मका अनिवार्य हिस्सा माना जाय।

बापुके आशीर्वाद

: ३८ :

(अगस्त १९३५)

MY DEAR KAMAL,

Just a brief note today. I am glad that your English shows some improvement as the few corrections I have had to make will show and I am almost sure that you are growing physically and intellectually every day. I want you one day to give me pen pictures of life in Colombo. Does Bernard read much? Is he a lover of books? I sometimes feel like asking you to send me books, if there are good bookshops—books, I mean, which you too may read and pass on to me. For the rest, everything is going on well. Give my love to Bernard.

Yours,

Mahadev

: ३९ :
अ

वर्धा,
४-९-३५

चि. कमलनयन,

तारो कागळ मोडो पण मळ्यो एटले सारुं थयुं।

अरे रामजपन पण अचूक करशे तो तारुं भलुं थशे।

तुं त्यां[१] गामठी कागळ नथी वापरतो तेनी चिंता नथी। एम करवा सारु तारामां उत्साह अने गरीबोनी अत्यंत दाझ होवां जोईए। ए तारा

१. इंग्लेंडमें।

स्वभावमां पेदा थाय त्यारे तुं तारी मेळे आवी वस्तुओ करीश। जे तुं तारा मनना उत्साहथी करशे तेज साचुं, तेज तने फळशे।

त्यां बेठो तुं ब्रिटिश अने बीजा परदेशीना भेदमां न उतरतो।

कपडांनी बाबतमां एक वात कही दउं। त्यां तुं खादीनो आग्रह स्वेच्छाये न राखी शके तो ते छोडजे। तने जेमां सगवड लागे ते पोषाक पहेरजे ने सगवड लागे ते कपडानो पोषाक करजे। आटलामां तारा बधा प्रश्नोनो जवाब आवी जाय छे। एम मानुं छुं।

एटले विदेशी के मीलना कपडानो ओवरकोट पहेराय, मोजां पहेराय। कसरतनुं बनियान पहेराय। आमांनी बधी चीज हाथनीज मेळववानो प्रयत्न करे तो खोटो नहीं गणाय। ते नहीं करे तो कंई पाप नहि गणाय।

त्यां तारुं मुख्य काम तारो अभ्यास पाको करवानुं छे। निर्भयता, वीरता, दृढता, उद्यम, उदारता, दया, प्रेम केळववानां छे। सादाई अने नम्रता वधारवानां छे। त्यांना जीवननुं निरीक्षण करजे। क्षणेक्षणनो सदुपयोग करजे। रोजनिशि राखजे।

तारो कागळ पाछो मोकलुं छुं।

कंई रही जतुं होय तो पूछजे।

बापुना आशीर्वाद

(नक़ल परसे लिया गया)

: ४० :
अ

सेगांव,
६–७–३६

चि. कमलनयन,

आ साथे त्रण कागळ[1] मोकलुं छुं। ए त्रीसनुं काम करशे। वुडब्रूक बरमिंगहाममां छे। ए संस्था सुंदर छे। एओना प्रसंगमां वहेलोज

१. गांधीजीने कमलनयनके लिए चार परिचय पत्र भेजे थे। उनमेंसे एक श्री. हेनरी पोलकके नामका मिला है, वह नीचे दिया जाता है:—

Segaon, Wardha,
6-7-36

DEAR HENRY,

This will be presented to you by Kamalnayan Bajaj the eldest son of Jamnalalji. However much we may fight Great Britain

[अगले पृष्ठ पर चालू]

आवजे। आ लखतां लागे छे के प्रो. होरेस एलेकझांडरने पण पत्र मोकलुं एटले चार थया। एओ वुडब्रूकना छे। मने नियमसर लखजे। सांभळजे बधानुं करजे तारुं धार्युं ने जे आशाओ बंधावी जाय छे तेने अनुसरतुं। त्यांना प्रलोभनो पार नथी। तारुं नाम शोभावजे ने तेना गुण संभारी कमळनी जेम कीचडमां तेने जोतां छतां अलिप्त रहेजे। एटले बधु कुशळज थशे। तारी शक्ति प्रमाणेज डुबकीओ मारजे। कोईनी हरिफाईमां न उतरजे प्रत्येक क्षणनो सदुपयोग करशे तो तारी शक्तिओ खीली शकती हशे एटली खीलशे। रामायण अने गीतानो उंडो अभ्यास करजे। रोज भणजे। मूळ गीता तो वांचशेज पण Edwin Arnold नुं Song Celestial पासे राखजे।

बापुना आशीर्वाद

: ४१ :

वर्धा,
७–७–३६

प्रिय कमलनयन,

आ साथे पू. बापुए लखेलो कागळ अने तेनी साथेना बीजा कागळो मोकलुं छुं। म्युरिअल उपरना अने बीजा कागळो में घेर मोकल्या हता ते तने बीजी टपालमां मळशे।

आखरे तुं चाल्यो। एक दिवस तो तें मारी साथे लांबी वातो करी, पण पछी तो तें मारी साथे वातो करीज नहीं। पछी तो तुं तारी

[पिछले पृष्ठसे चालू]

London is increasingly becoming our Mecca or Kashi. Kamalnayan is no exception. I have advised him to take up a course in the London School of Economics. Perhaps you will put him in touch with Prof. Laski who may not mind guiding young Bajaj. Muriel has undertaken to mother him.

Please treat this also as acknowledgment of your letter received some time ago. I am trying to become a villager. The place where I am writing this has a population of about 600—no roads, no post office, no shop.

Love to you all,

Bhai*

* हेनरी पोलक दक्षिण आफ्रिकामें गांधीजीके साथ काम करते थे। वहां गांधीजीको सब लोग 'भाई' कहा करते थे।

मेळे कलकत्ता गयो, त्यां बहुनी पसंदगी करी आव्यो, अने बधुं नक्की थयुं त्यां सुधी तें तो मने कशा खबर नज आप्या। भले। मारे पराणे तारा मुरब्बी नथी बनवुं। मने जे खबर आपवा घटे तेटलाज आपजे। तारामां interest लेतो हुं बंध नथी थवानो। त्यां पण तारी प्रगतिनी शुभेच्छा राखीश, अने तुं तारी बधी मनोवांछना पूरी करी आवे एम जोवाने इच्छीश।

सीलोनमां हतो त्यारे तो तारा अंग्रेजी कागळो कोकवार सुधारीने मोकळतो। हवे तो कदाच तुं मारा कागळो विलायतथी सुधारीने मोकले। तो पण मने तारी इर्ष्या न थाय। एटले सुधी प्रगति करी आवे एम हुं इच्छुं। पण अंग्रेजी तो ठीक, अंग्रेजीना करतां बीजुं घणुंय वधारे विलायतथी शीखवानुं छे, अने पण जळ कमळवत, अथवा बापुए कह्युं छे तेम कीचड कमळवत रहीने शीखवानुं छे ते शीखीने तुं आव अने "बापथी सवायुं" कमा अने कीर्ति मेळव।

हवे business। बापुनी साथे जे letters of introduction छे तेमां प्रथम एगेथानो छे। एनुं शिरनामुं Agatha Harrison, 2 Cranbourne Court, Albert Bridge Road, London, S. W. 11। बीजो कागळ Henry नो छे। एनुं शिरनामुं Henry S. L. Polak, Danes Inn House, 265, Strand, London, W. C. 2। त्रीजो कागळ Horace नो छे। एनुं शिरनामुं Prof. Horace Alexander, Woodbrooke, Selby Oak, Birmingham। चोथो म्युरिअलनो छे। एनुं शिरनामुं तो तुं जाणे छे, छतां अहीं आपुं छुं: Muriel Lester, Kingsly Hall, Powis Road, Bow, London East।

आमां पोलाक लंडनमां छे। ए माणस बहु व्यवहार कुशळ छे, Indian Politics मां Liberal जेवो छे, पण बापुनो भक्त छे। एनी पत्नी सरस बाई छे। अभ्यासना संबंधमां एजो Prof. Laski नी ओळखाण करावे तो एनी सलाह तुं अक्षरे अक्षर मानी शके छे। Horace Alexander बहु भलो माणस छे, तुर्त मित्र थई जाय एवो छे, एने बर्नार्ड सारी पेठे जाणे छे। एनी पासे तो दरेक detail मां सलाह मेळवी शकाश: क्या नाटको जोवा, क्या सीनेमामां जवुं, कई संस्थाओ जोवी, शुं शुं वांचवुं, क्यां छापां साप्ताहिको वांचवां, केवा माणसोथी परिचित रहेवुं वि. वि.। एने पण तुं वखतनी तके मळी लेजे।

हवे मारो कागळ पूरो करुं। तने तो उपडवा पहेलां घणा कागळो आवशे अने घणा लखवाना हशे एटले आने पण केम लांबो करुं?

मने कोई वार हुं मंगावुं ते चोपडी मोकलीश के?

बीजुं कांई नहीं तो आ कागळनी पहोंच तो लखजेज।

लि. शुभेच्छक

[illegible]

: ४२ :

२३—७—३६

KAMALNAYAN BAJAJ,
INDIAN CONTINGENT,
OLYMPIC VILLAGE, BERLIN

Engagement made announced. God be with you. Love.

—*Bapu*

(नक़ल परसे लिया गया)

: ४३ :
अ

[illegible]

[illegible]

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

(१९३६)

१. ४ वर्ष अथवा कमलनयननो अभ्यास पूरो थाय त्यां लगी विवाह न करवो ।

२. सावित्रीये हवे पछी जे केळवणी लेवी होय ते हिंदुस्तानमांज लेवी । विवाह थया पछी बन्ने प्रवासे के बीजा कारणसर गमे त्यां जाय ।

३. क. सा.[1] वच्चे पत्रव्यवहारनी पूरी छुट होवीज जोईये। पत्रो छुपा होवानी आवश्यकता हुं नथी मानतो।

४. सावित्रीये विवाह पहेलां पण वखतो वखत वर्धा अथवा ज्यां जानकीबहेन वि. होय त्यां आव जा करवी जोईये।[2]

१. कमलनयन-सावित्री।

२. कमलनयनकी सगाईके बाद उनके विवाहके संबंधमें जमनालालजीको दी गई गांधीजीकी सूचनायें।

: ४४ :
अ

सेगांव,
२६-२-३७

चि. कमलनयन,

तारो कागळ मळ्यो। तुं उंडे उतरी रह्यो छे अने अहिं आ बधा तने जल्दी पाछो बोलाववानी वात करी रह्या छे। तारा ससरा उतावळ करे छे। जानकीबेन पण एमज इच्छे छे। पिताजीनो पण लगभग एज अभिप्राय छे। हुं पोते तटस्थ छुं। जो के हुं मानतो नथी के त्यांथी तुं बहु लाववानो छे। पण तने पोताने त्यांनो मोह रहे त्यां लगी तने अहिं लाववानुं मने बरोबर नहिं लागे। जो तारे वेपारमां उतरवुं होय तो डिग्रीनो मोह छोडवो घटे छे। बेरिस्टर थईने शुं करशे ? ग्रेजुएट थईने शुं करशे ? तने हुं समजुं छुं ते प्रमाणे तो तारे कमावुं छे, पिताना धन उपर रहेवुं नथी। साधु पण नथी थवुं। ए बरोबर होय तो तारो पुरुषार्थ वेपारमां रह्यो छे। आटलुं कबूल करे तो तुं बेरिस्टरनो अथवा डिग्रीनो लोभ छोड। तारुं इंग्रेजी हवे ठीक ठीक थयुं होवुं जोईए। पण जो तारे डिग्री लेवीज होय, केम्ब्रीज के ऑक्सफर्डमां रहेवुं होय तो तुं दीनबन्धु एंड्रूजने मळजे। हुं ऑक्सफर्ड अने केम्ब्रीजमां जेने जाणुं छुं एओने एंड्रूजनी मारफते जाणुं छुं एटले तुं एमने मळजे। ए तने जोईतो बन्दोबस्त करावी देशे। ए केम्ब्रीजमां रहे छे। एमने तो तुं ओळखे छे। छतां हुं एमने लखुं छुं। एटले तुं एने लखवो त्यारे एना स्मरणमां हशे। एनुं ठेकाणुं Pembroke College, Masters' Lodge, Cambridge छे। जे करे ते पूर्ण विचार करीने करजे। मने लख्या करजे। लखवामां तुं कांई आळस करतो लागे छे खरो।

बापुना आशीर्वाद

: ४५ :

२५-६-३७

चि. कमलनयन,

मि. केलनबेक मने पजवी रह्या छे के विवाह प्रसंगे तने कांईक भेंट मोकले। ते सोथी बधारे रूपैया खरचवा मागे छे। तेणे तो २५ पाउंड कह्या। में साफ ना पाडी। मने पूछ्युं शुं आपवुं ? में कह्युं 'चोपडीओ'

एटले कहे 'कई चोपडीओ' हुं निश्चय न करी शक्यो। तुंज कहे तने कई चोपडीओ गमशे ?

वळतां जवाब मोकळजे।

बापुना आशीर्वाद

: ४६ :

सेवाग्राम
वर्धा सी.पी.

سیواگرام
وردھا - سی - پی
१५-६-४५

चि. कृष्णचंद्र,

फूल गंगामें पधरा दिये अच्छा हुआ माताजी का चित्त शांत हुआ। हरिद्वारमें दिन अमनसे कटता होगा। मदनको भेजनेमें कोई हरज नहीं है। आना चाहे तो आवे।

बापुके आशीर्वाद

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

सेवाग्राम,
वर्धा, सी. पी.,
१५–६–४२

चि. कमलनयन,

फूल[१] गंगामें पधरा दिये अच्छा हुआ माताजीका चित्त शांत हुआ। हरिद्वारमें दिल लगे तब तक रहें।

मदनको भेजनेमें कोई हरज नहीं है। आना चाहे तो आवे।

बापुके आशीर्वाद

: ४७ :

SIMLA,
10–7–45

KAMALNAYAN BAJAJ,
CARE SHREE, BOMBAY

Glad about Ramkrishna.[२]

—*Bapu*

: ४८/अ :

सेवाग्राम,
२२–११–४५

चि. कमलनयन,

तुं तो हुं जाउं त्यारे अहिं आव्योज नहि होय एटले आ कागळ लखी मोकलुं छुं। तारे जाणवुं जोईए के नागपुर बेंक ए जमनालालनी छे, एणे परोपकारार्थे काढेली छे, गरीबोने सारु ए सेविंग्स बेंक थई शके ए कल्पना हती अने आजे होवीज जोईए। एटले ए बेंक खुटवीज न जोईए, एटले ज्यारे बेंक ऑफ इंग्लंड, इम्पीरियल बेंक खूटे अने अहिया कांईक उल्कापात थाय त्यारेज नागपुर बेंक खूटे। एटले ए छेल्ली खूटे पहेली नहि। एवी एनी शाख पडवी जोईए। तुं जमनालालजीनो वारस छे एनो खरो अर्थ तो आज

१. जमनालालजीकी अस्थि।
२. रामकृष्णके जेलसे छूटने पर।

के तुं ए शाखनो वारस छे अने एम समजीने में तो जलियानवाला ट्रस्टने सलाह आपी छे के त्यांना पैसा त्यांज राखे ने वधारे मोकलवानी चेष्टा करे। एज सलाह में कुमारप्पाने आपी छे। ग्रामोद्योगना पैसा त्यांज मूकें। ए विश्वास खोटो नहि ठरवो जोईए। छतां काले आवतां वेंतज स्टेशन उपर मने भारतने उल्टी वात करी। एणे तो प्रेमपूर्वक वात करी अने हुं एनो प्रमुख छुं एटले मने प्रमुख तरीके पूछ्युं। कुमारप्पाए मने लखेलुं के ** बेंकमां ग्रामोद्योगना पैसा मूकवा के नहि? वैकुंठभाईए ए सलाह आपेली एटले एणे मानी लीधेलुं के हुं हाज पाडीश। पण में तो शंका उठावी, अने हा न पाडी। अने कुमारप्पा ए बेंकमां पैसा तो मूकी चूकेला। हवे तो पाछा उठावीज लेवा जोईए। तो व्याज खोवुं पडे--व्याज खोतां पण उठावी न शकाय तो? एटले भारतने मारी सलाह मांगी। कुमारप्पा हाल अहिं नथी। पण में कह्युं जो ए लोको बांधो उठावे तो लडीने पण रू. पाछा उठावीज लेवा जोईए, नहि तो ए पैसा जोखममां छे एम हुं मानुं। अने वाघरीने सारु भेंस मार्या जेवुं थाय। ** बेंक शुं छे ते हुं आजे पण बरोबर जाणतो नथी। झांखो ख्याल छे खरो। पण नवी बेंकोनो मने अणगमो ने अविश्वास। एटले हुं झट तेमां पैसा मूकवाने तयार थाउंज नहि। पछी सवाल ए थयो के जो ** बेंकमां नहि तो नागपुर बेंकमां शा सारुं? ए पण प्रमाणमां नवीज कहेवाय ना? ए पण प्रमाणमां साचुं। अने भारतने उमेर्युं के नागपुर बेंक तो १-२ मासमांज बंध थई जवानी वात संभळाय छे कारण के एणे खोट खाधी छे ने लोकोना पैसा डूबवानी धास्ती छे. एटले पहेलेथीज आटोपी लेवुं। में ए वात मानी नहि अने मनमां मक्कम रह्यो, पण ए अफवानो पायो जाणवानी इच्छा थई। आ वखते राधाकृष्ण साथे हता। एने में पूछ्युं। मने समजाव्युं। मने धीरज आवी, अने में भारतनने कही दीधुं के पैसा नागपुर बेंकमांज मूकवा छे। छतां मने लाग्युं के मारे तने जणाववुंज जोईए, एटले आ कागळ लख्यो छे। तुं विचार करजे ने सावधान रहेजे। जमनालालना वारस थवुं ए जेवी तेवी वात नथी। तुं एना दीकरा तरीके वारस छे। हुं एना दत्तक लीधेला एटले एणे मानी लीधेला बाप तरीके वारस छुं। मारो स्वार्थ एनुं नाम अखंडित रहे। एणे उंचकेलां काम नभी रहे एटलुंज नहि पण वधारे शोभी शके त्यारे तुं अने हुं खरा वारस गणाईए।

तुं पैसा कमाशे, मोटो शेठ गणाशे ए तो बनवाजोग छे पण एना उत्तर जीवनना पारमार्थिक कामनुं शुं, उत्तर जीवनमां काढेली बेंकनुं शुं? गरीब गायनुं शुं, खादीनुं शुं, ग्रामोद्योगनुं शुं? एनी इच्छाथी हुं वर्धामां वस्यो छुं ना--

सरदारनो मीठो क्रोध वहोरीने। ए मने दस बगीचा एकनी सामे वगर महेनते अपावी शकता हता पण ए जमनालाल नहोता अपावी शकता एटले में दस बगीचा जेतां कर्या, पण हवे हुं जमनालालने खोई बेठो एवो हुं, आभास सरखो पण मारा मनमां नथी थवा देवा इच्छतो। एनी कुंची तो तारा हाथमां, राधाकृष्णना हाथमां ने जानकीदेवीना हाथमां छे। जानकीदेवी तो निरक्षर छे। अने जे विकासनी में आशा राखी हती ते जमनालालजीना गया पछी सूकाईज गई छे। एटले बेंकनी बाबत हुं एने समजावी पण न शकुं। समजाववानी कोशीश सरखीये नथी करी। राधाकृष्ण बहु चतुर छे, गण्यो छे पण भण्यो तो नज कहेवाय ना ? तुं तो विलायत जई आव्यो छे। वळी वेपारी तरीके थोडी घणी नामना काढी छे। तने आत्मविश्वास तो जोईए तेनां करतां वधारे छे। गमे तेम होय, वारस तरीके तो, अने गादी नशीन तरीके तो मारे तारी सामेज जोवापणुं रह्युं। एटले कहुं छुं के तुं बापनुं नाम परोपकार तरीके उज्वळ करवा पाछळ मरी छूटजे। एम करवानी तारी शक्ति तुं न भाळतो होय तो नम्रतापूर्वक मने चेतवी देजे। बधा दीकरा कंई पोताना परोपकारी बापनी पाछळ पाछळ जई शकता नथी अथवा जता नथी। एटले तुं जो ए न करे तो कोई आंगळी चींधी शके एम नथी। अने हुं तो आंगळी चींधवावाळो कोण ? पण दादा तरीके तने सलाह तो आपुं, चेतवणी तो आपुं। पछी तुं जे करे तेनो मुंगे मोढे स्वीकार करी लउं। आमां तो में तने घणुं लखी काढ्युं। एनो पुख्त विचार करजे ने नागपुर बेंकने विषे में जे भारतनने सलाह आपी छे ए बराबर आपी छे के नहि एनो जवाब तो मने पहोंचाडी देजे।

बापुना आशीर्वाद

: ४९ :

नई देहली,
२४–५–४६

भाई कमलनयनजी,

कल लाहोरसे लौटने पर बापूजीने आपका खत दिलवाया। क्या ऑप्रेशन हुआ वह सब उन्हें समझानेको कहा। मांका ऑप्रेशन [1] अच्छी तरहसे हो गया इससे वे खुश हुए हैं, हम सबको खुशी हुई है। आपका तार भी मिल गया है। भाई प्यारेलालजीने आपको लिखा भी था। वह मिला होगा। आशा है पूज्य मां बिलकुल अच्छी हो जायेंगी।

१. श्री. जानकीदेवीके मसोंका ऑपरेशन हुआ था।

पूज्य बापुजीकी तबियत ठीक है। मगर अब थकान होने लगा है। पता नहीं कब तक यहां रुकना पड़ेगा।

पू. मांकी प्रगतिकी खबर देते रहें। उन्हें मेरा प्रणाम कहें।

आपकी बहिन

सुशीला

जानकीमाईनुं सारुं थई गयुं एनो यश तमेज घटे छे। हवे एटलुं याद आपजे के जे ते खाईने फरी शरीर न बगाडे।

बापुना आशीर्वाद

: ५० :

सेवाग्राम,
२६-५-४१

चि. सावित्री,

तू प्रथम विभागमें आई है[1] इस लिये तुझे तो बहुत मुबारकबादीयां मिली होंगी। मेरे तरफसे चाहिये तो ले सकती है। तेरे प्रथम विभागमें आनेसे मुझे कोई आश्चर्य नहि है। क्योंकि जो विषय सीखनेके थे वे तेरी बुद्धिके लिये कठिन नहि थे। कठिन परीक्षा और हमारे मुलकके लिये कामकी तो चर्खा संघकी है। उसमें सर्वांगीणता चाहिये। और मैं जिस परीक्षाका उल्लेख करता हूं वह प्रथमा परीक्षा है। रसपूर्ण तो है हि। तू वचनका पालन करती होगी।[2]

यहां तो अंगार झरता है।

बापुके आशीर्वाद

: ५१ :

(मार्च-अप्रेल १९४२)

मुझे तो ऐसी दवा बच्चोंको देना अच्छा नहीं लगता है। बच्चे यों ही अच्छे हो जाते हैं लेकिन मैं दखल देना नहीं चाहता हूं। खून आया उसका अर्थ

१. इंटरमीजियटकी परीक्षामें।

२. खादी पहननेके बारेमें।

तो यह हुआ कि डिसेंटरी है। मैं तो थोड़ा एरंडीका तैल दूं। दाक्तरको बुलालो। मैं उनसे बात करूंगा। बादमें जो देना सो देंगे। गभराहटकी कोई जरूरत नहीं है। अच्छी हो जायगी।[1]

: ५२ :

३–१–४८

चि. सावित्री,

तुझे बच्चा पेदा हुआ है सो तो मुझे चि. कमलनयनने कहा था। बादमें तुझे थोड़ा बुखार हो गया था वह मिट गया होगा और तुम दोनों अच्छे होंगे।

बापुके आशीर्वाद

: ५३ :

सेगांव,
१३–७–३६

भाई श्रीमन,

तुमारा खत ही आज अभी पढ़ सका। सब डाक आती है ऐसे नहीं पढ़ पाता।

'रोटी का राग'[2] भेजता हूं। अच्छा, काकासाहेबके लिखनेके बाद मुझे पुस्तिका वापिस करो। बात यह है मैं समजा था मैं तुमको मेरा अभिप्राय लिखुं तुमारे संतोषके कारण। पुस्तिकामें छापनेके हेतुसे क्या लिखुं वह सुझता ही नहीं। फिर भी देखो क्या संभव है। दिल चाहे तब आ जाओ। मेरा समय कहां लेना है? महादेव मांगे वह 'हरिजन' काम दो।

बापुके आशीर्वाद

१. श्री. कमलनयनकी लड़की सुमनको पेचिश होने पर गांधीजीने मौनवार होनेसे सावित्रीदेवीको यह लिखकर दिया था।

२. श्री. श्रीमन्नारायण अग्रवालकी कविताओंकी पुस्तक।

: ५४ :

सेगांव,
२५-९-३६

भाई श्रीमन,

'नये युगका राग'[1] मैं पढ़ गया हूं। कविताएं मुझको अच्छी लगी है। हेतु स्पष्ट और निर्मल है। काव्यकी दृष्टिसे मैं कुछ भी अभिप्राय देनें योग्य अपनेको नहीं मानता हूं। तुमारी कृतिको प्रगट करनेके बारेमें तो कवि लोग ही अभिप्राय दे सकते हैं।

बापूके आशीर्वाद

इतना लिखनेमें मैंने कितना समय लिया? क्योंकि मैं जानता ही नहीं था क्या लिखुं।

: ५५ :

सेगांव,
२०-१२-३६

चि. श्रीमन्,

तुमारा लेख पढ़ गया हूं। हरिजनमें नहीं छप सकता है। कहीं छपने लायक नहीं हैं। तुमारे पास जो योजना है उसे प्रकट करो। तुमारा प्रस्ताव तो सर्वमान्य है। लेकिन लिटरसीका अर्थ क्या किया जाय? यह प्रश्न बहुत विवादग्रस्त है।

बापूके आशीर्वाद

: ५६ :

सेगांव,
१०-१०-३७

चि. श्रीमन,

कल ही सूना कि तुमको चार दिनसे अविछिन्न बुखार आ रहा है। यह सब कैसे? क्या शादी की इसलिये? मैंने ऐसे ही मान रक्खा था कि तुम्हें कभी बिमारी हो ही नहीं सकती। यह सब बात कहां गई? आशा करता हूं कि आज ही अच्छी खबर मिलेगी। यह खत तो

१. श्रीमनजीकी कविताओंकी दूसरी पुस्तक।

प्रातःकालकी प्रार्थनाके बाद पांच बजे लिखवा रहा हूं। याद रक्खो कि तुम्हारी प्रेरणासे तुम्हारे पर विश्वास रखकर मैंने परिषद[1] भरने दी है और मैंने सभापतित्वका स्वीकार किया है।

इतना बड़ा बोझ उठानेकी मेरी बिलकुल शक्ति नहीं थी, लेकिन तुम्हारे उत्साहसे उत्साहित होकर मैंने स्वीकार किया। अब मुझको धोखा नहीं दोगे। निश्चित होकर जल्दी अच्छे हो जाओ। क्या परिषदके बोझने तो तुम्हें बिमार नहीं कर दिया है? यदि यही कारण है तो गीता माताका आश्रय लेकर अनासक्त और निश्चित बनो। अंतमें जो कुछ होता है वह ईश्वरसे ही।

बापूके आशीर्वाद

: ५७ :

सेवाग्राम,
२८-४-४१

भाई श्रीमन्,

तुमारी सूचना[2] अच्छी है। आज राजेंद्रबाबु आते हैं। देखुंगा क्या शक्य है। जानते होंगे की मदालसा खूब आगे बढ़ रही है। काफी चलती है आशा तो है कि बिलकुल अच्छी हो जायगी।

बापूके आशीर्वाद

: ५८ :

१५-१०-४१

चि. श्रीमन्,

मैंने तुमारे निवेदनमें सुधारणा की है। यदि अच्छी लगे तो करो। नहिं तो जैसे लिखा है ऐसे हि जाने दो।

बापूके आशीर्वाद

: ५९ :

(सितंबर १९४४)

मैं यह पत्र पढ गया हूं। भदंतजीका निवेदन सुना। तुम्हारा खत जल्दीसे लिखा गया लगता है। नाणावटीजीके उत्तरकी प्रतीक्षा करनी

१. अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा परिषद, जिसमें बुनियादी तालीमका जन्म हुआ।

२. पाकिस्तान संबंधी समस्याके बारेमें कांग्रेसकी भूमिका स्पष्ट करनेके लिए एक विस्तृत वक्तव्य तैयार करनेके बारेमें श्रीमनजीने गांधीजीको लिखा था।

चाहिये थी। कुछ स्मृति दोष या जल्दी हुई है तो सुधारणा करना धर्म हो जाता है। नाणावटी जो बताते हैं उसमें तो कुछ दोष नहीं पाता हूं।

मैं वहां १ ली तारीखको पहुंचनेकी आशा करता हूं।[१]

बापूके आशीर्वाद

: ६० :

(सितंबर १९४४)

चि. श्रीमन्,

तुमारी पोथी[२] मिलि है। पढनेकी कोशीश करुंगा।

हिंदी–उर्दुके बारेमें तुमने जो लिखा है उससे काफी अशांति फेल गई है ऐसा मगनभाई कहते हैं। मेरा खत मिला होगा मैं ३० तारीखको रवाना हूंगा। उससे पहले हो सकता है।

बापूके आशीर्वाद

: ६१ :

मौनवार,
१६–१०–४४

चि. श्रीमन,

यह मेरी प्रस्तावना[३] या जो कुछ माना जाय। अगर इसके अलावा कुछ चाहते हो तो कहीये। बहुत महेनत की लेकिन पूरी पुस्तिका नहीं पढ़ सका। कमसे कम चार घंटे चाहिये कहांसे निकालुं?

बापूके आशीर्वाद

१. हिंदुस्तानी प्रचार सभाके मार्फत हिंदी और उर्दूकी परिक्षाओंके बारेमें श्रीमनजीने श्री. भदन्त आनन्द कौशल्यायनको २६-६-४४ को लिखा था जिससे यह प्रगट होता था कि सभा सिर्फ उर्दूकी ही परिक्षा चलावेगी। इसके स्पष्टीकरणके लिए श्री. मगनभाई देसाईने २२-९-४४ को श्रीमनजीको पत्र लिखा। उसे उन्होंने गांधीजीको बताकर भेजा तब गांधीजीने यह नोंध उसी पत्र पर लिख दी थी।

२. 'गांधियन प्लेन' की पांडु लिपि।

३. 'गांधियन प्लेन' की प्रस्तावना जो कि पुस्तिकामें छप चुकी है।

: ६२ :

सेवाग्राम,
३०-११-४४

चि. श्रीमन्,

तुम्हारा खत मिला। टंडनजीको लिखनेकी कुछ आवश्यकता नहीं। मुझे प्रस्ताव मिल गया है।

केदारबाबूकी नोंध अच्छी है। इसके साथ एक नकल भेजता हूं। मैं चाहता हूं इस बारेमें मदालसाको दो। शांताबहनसे बात करना है तो करो। मुझको खत[1] अच्छा लगा है। कुछ न कुछ तो होना ही चाहीये। सब अध्यापकोंको मिलनेके लिये भी मैं तैयार हूं। लेकिन यह बोज मुझपर नहीं होना चाहीये। थकानके कारण ३ तारीखसे ३१ तक काम छोडना चाहता हूं।

बापुके आशीर्वाद

: ६३ :

सेवाग्राम,
१-१२-४४

चि. श्रीमन्,

तुमारा खत बहुत स्पष्ट और अच्छा है।[2] मेरा व्रत[3] खतम होनेपर हम सब चर्चा करेंगे। तुमारे कोलेज कार्यका महत्व मैं बराबर समझता हूं। उसमें विद्यार्थी संगठन और महिला आश्रमका बोज तुमारा सब समय ले लेगा। इसलिये जहां तक हो सके हिंदुस्तानी प्रचार कार्यसे तुमको मुक्त करनेमें मदद दूंगा। देखता हूं क्या हो सकता है।

तुमारा स्वास्थ्य बिलकुल अच्छा होना चाहीये। सेवा कार्यके लिये शरीर रक्षाका धर्म नहीं भूलोगे।

बापुके आशीर्वाद

१. वर्धाके महिलाश्रमके बारेमें गांधीजीको लिखा गया वहांके अध्यापकोंका पत्र।

२. इस पत्रमें श्रीमनजीने इच्छा प्रकट की थी कि उन्हे हिन्दुस्तानी प्रचार कार्यसे मुक्त कर दिया जाय।

३. थकावटके कारण कुछ दिन काम न करनेका व्रत गांधीजीने लिया था।

: ६४ :

३-१२-४४

चि. श्रीमन्,

तुमारा खत अभी मिला।[1] उसमें तुम दोनोंका प्रेम भरा है। लेकिन इसी समय स्थानांतरकी आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। देखता हूं ख़त दरम्यान क्या होता है। तुमारे साथ थोड़ा समय भी रहना मुझे प्रिय लगेगा। तुम अच्छे होगे।

बापूके आशीर्वाद

: ६५ :

से. ग्रा.,
२५-१-४५

चि. श्रीमन्,

तुम दोनोंका प्रेम अवर्णनीय है। प्रेमके खातर भी तुमारे यहां जानेका दिल होता है। शिबिर चलता है तब तक तो यहांसे छुट नहीं सकता। मौन तो रुचिकर है मैं बच जाता हूं। कामपर तो चढ गया हूं ऐसा मानो। तो भी तुमारे यहां जानेका दिल रहेगा ही।

बापूके आशीर्वाद

: ६६ :

मेरा आनेका समजमें आया न? जलदीमें जलदी २३ को आ सकता हूं। २५ तो है ही। पीछे देखूंगा कहां तक ठेर सकुंगा। यहां काम काफी पड़ा है। तुमारे यहां आनेके खातिर ही आना है। मुझे यह बात प्रिय है।

सुंदरलालजीसे खूब बातें कर लो। कुछ नाम दा.[2] के बताये। मैंने कहा श्रीमनको बताओ वे कहेगा वही मैं मंजुर करुंगा। एक भाई या बहन कहते थे तुमारे पुस्तकने[3] उनको मदद दी।[4]

१. श्रीमनजी व मदालसाने गांधीजीको आरामके लिए वर्धामें अपने मकान जीवन कुटीर में कुछ दिन रहनेके लिए आमंत्रित किया था।

२. दाखला तरीके यानी उदाहरणार्थ।

३. 'गांधियन प्लेन'।

४. यह श्रीमनजीको मौनके दिन लिखकर दिया था। इसके बाद गांधीजी कुछ दिन उनके घर रहे थे। इन्हीं दिनों वर्धामें गांधीजीकी अध्यक्षतामें हिन्दुस्तानी प्रचार सम्मेलन हुआ था।

: ६७ :

सं.
७–२–४५

चि. श्रीमन्,

महिला आश्रमके बारेमें जो तुमने लिखा है पढ़ गया। अच्छा है। उद्देश दो तीन लाइनमें लिख सकते हो, लिखो।

इसमें जमनालालजीने दिये हुए वचनका ख्याल करना। हो सके वहां तक हम उसका विचार व अमल करें।

बापूके आशीर्वाद

: ६८ :

मुझको यह सब पसंद है। महिलाश्रमके विभाग कर लेना अच्छा है। मैं नहीं जानता कि सब विभागका एक कोई उपरी रहेगा या रहेगी या नहीं। अगर सब विभाग तुमारे मातहत रहे और शांताबहिनको तुम जिम्मेदार रहो तो मेरा ख्याल है सब ठीक हो जायगी। तीनकी कमिटी भले रहे लेकिन शांताबहिन तो तुमको ही पूछे और तुम ही सब जिम्मेदारी ले लो तो सब सरल हो जायगा।[1]

: ६९ :

सेवाग्राम,
६–३–४५

चि. श्रीमन्नारायण,

मैंने कुछ सुधारणा की है।[2] उसे समजानेकी जरुरत नहीं है। ११ वीं कलम निकाल दी है। उसे देना पडेगा तो अलग देंगे। इतना याद रक्खो कि हमने तय कर लिया है हम एक कौम बननेकी कोशीश करेंगे। लेकिन न बन सके वहां तक स्वराज आंदोलन रुका नहीं रहेगा। भाषाके प्रश्नको उस क्षेत्रसे हटाना है। दोनों रुप मिल जानेसे ऐक्य बडेगा वह ठीक है।

बापूके आशीर्वाद

१. महिलाश्रम संबंधी श्रीमनजीकी योजनाके बारेमें मौनवारको लिखा गया गांधीजीका जवाब।

२. श्रीमनजीने गांधीजीको हिन्दुस्तानी प्रचार संबंधी एक योजना बनाकर दी थी।

: ७० :

महाबलेश्वर,
२३-४-४५

चि. श्रीमन्नारायण,

साथमें डा. ताराचंदका खत है।[1] उसे पढ़ो और अपना अभिप्राय भेजो। मुझे लगता है कि खर्च पश्चीमी ढंगका बहुत है। अगर वर्धामें करें तो हमारे पास सब सरंजाम है। छपाई तो नवजीवन प्रेस अपने ही आप कर सकता है।

मुझे स्वतंत्र रूपसे तो कुछ करनेका अखत्यार नहीं है? हमारे कार्यकारिणीके सामने रखना होगा ना?

बापूके आशीर्वाद

: ७१ :

महाबलेश्वर,
१-५-४५

चि. श्रीमन्नारायण,

हुमायुं कबीरना 'इंडिया'ना मार्चना अंकमां सिकंदर चोधरीए करेली तमारी पुस्तिकानी[2] टीका छे ते जोई जजो।

मदालसा मजामां हशे।

आ गूजरातीमांज चाल्युं एटले चालवा दीधुं।

बापूके आशीर्वाद[3]

: ७२ :

म'श्वर,
८-५-४५

चि. श्रीमन्,

तुमारी सूचना सही है। हम कैसे निकलें सोचनेकी बात है।[4] तुमको आवश्यकता होगी तो बुलाउंगा।

१. हिन्दुस्तानी कोषकी योजना संबंधी।
२. 'गांधियन प्लेन' की।
३. यह पत्र गुजरातीमें होते हुए भी सही हिन्दीमें ही की है।
४. श्रीमनजीने हिन्दी साहित्य सम्मेलनसे हटनेके बारेमें लिखा था।

मदालसाने कटी स्नान छोड़ा है सो अच्छा नहीं है। दरीयाका पानी 'टबमें' भरकर ले सकती है।

सबको आशीर्वाद। रसगुल्ला[१] को मीठी बुची।

बापुके आशीर्वाद

: ७३ :

PANCHGANI,
2nd June, 1945

Question [२]

To my mind, one of the greatest problems confronting us at the present moment is that of combating the systematic plan of economic exploitation by flooding the Indian market with foreign consumers' goods. This is bound to spell disaster to Indian industrialisation, whether small-scale or large-scale. And the pity of it is that our own business men and industrialists seem to be vying with one another in becoming glorified agents of foreign manufacturers. Don't you think, therefore, that an urgent need of the hour is the rousing of public conscience against the menace of foreign goods? I think the constructive workers should take up this programme immediately. A countrywide propaganda for the use of village manufactured and Swadeshi goods can also prove to be a very effective "economic sanction" against foreign domination. What is your opinion and advice?

Answer

The difficulty cannot be met by carrying on propaganda however wide and intensive. The first thing is to demonstrate its economic fallacy. Let us recognise that the industrialists are not conscious traitors. They honestly believe that their plan will bring prosperity to the masses. They are wrong. But how to show that they are

१. श्रीमनजीका बड़ा लड़का भरत।
२. श्रीमनजी द्वारा गांधीजीसे पूछा गया प्रश्न तथा उसका उत्तर।

wrong save by patient study and publication thereof and by working so as to show that the masses respond to the work and actually prosper?

This demands hard thinking, hard study and harder constructive work among the masses. They have to manufacture for their own use. [Just picture to yourself every village producing and manufacturing everything for its own use. This must mean some surplus for the cities of India going from the villages. This means also automatic stoppage of all exploitation and prosperity without India having to exploit the outer world.][१]

: ७४ :

२४-७-४५

चि. श्रीमन्,

खत भेज दिया लगता है। मैंने सोचा था कि मस्विदा बताओगे। कैसा भी हो। मेरा मत है कि पद[२] छोडनेका एक ही कारण बताना था। हिन्दुस्तानी शब्द प्रयोग गौण वस्तु है। राष्ट्रभाषाका अर्थ बड़ी बात है। सुधारणा करके भी भेजना ठीक होगा। ऐसा करना है तो मस्विदा बताकर ही बादमें भेजो।

बापूके आशीर्वाद

: ७५ :

१८-८-४५

चि. श्रीमन्,

मैंने पढ़नेका शुरु तो किया लेकिन पूरा न कर सका।[३] तुम्हारे तो कल सबेरे जाना है उसके पहले नहीं भेज सकुंगा। पुना या मुम्बईसे भेजुंगा। तुम तुरतमें पुना आजाओगे तो ठीक ही है।

बापूके आशीर्वाद

१. यह ब्रेकेटवाला अंश गांधीजीने अपने हाथसे लिखा है।
२. वर्धा की राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका मंत्रीपद।
३. श्रीमन्नजीकी लिखी एक दूसरी पुस्तक 'गांधियन कॉन्स्टिट्यूशन'।

: ७६ :

कलकत्ता जाते ट्रेनमें,
१-१२-४५

भाई श्रीमन,

आज तुमारी पुस्तिका[1] और मेरे दो शब्द भेजता हू।

मैं कल रातके ९-३० बजे सब खतम किया। बीचमें खानेकी और कातने की ही फुरसद ली। दो शब्दके बारेमें कुछ सुधारणाकी दरकार है तो कहो।

पुस्तिकामें मैंने जो दुरस्ती की है सो ठीक न लगे तो पूछो।

तुम देखोगे कि तालुका, जिल्ला वि. पंचायतोंको मैंने अनिश्चित कर दी है। वे सलाहकार ही हैं। ऐसे मंडलको कानूनी प्रबंधमें स्थान क्यों दें? उसकी आवश्यकताके बारेमें शक है। जब ग्राम सचमुच जिन्दा हो जाते हैं तब सलाहकार मंडलोंकी आवश्यकता कम रहनी चाहिये। प्रान्तकी पंचायत यह सब काम कर लेगी और जो तालुका व जिल्लाके मार्फत करवाना होगा, करवा लेगी। इसमें कुछ विचार दोष है तो मुझे बताओ। मैंने तो शीघ्रतासे पढ़ सकता था वैसे पढ़ लिया।

पाकीस्तान और राजाओंके बारेमें मेरी कल्पनामें स्थान हो सकता है या नहीं विचार योग्य है। याद रखो कि गांधी योजना तब ही शक्य हो सकती है जब अहिंसाके मार्फत वहां तक पहूंचे।

बापुके आशीर्वाद

पुस्तिका व प्रस्तावना अलग बुकपोस्ट रजिस्टरसे भेजे हैं।

: ७७ :

सोदपुर,
९-१२-४५

चि. श्रीमन,

तुमारा खत आज मिला। मैंने थोड़ा ही फेरफार किया है। वापिस करता हूं।

१. 'गांधियन कॉंस्टिट्यूशन'

मदालसा अच्छी है सुनकर बहुत खुश हुआ। उसे कहो रोज उसका ख्याल करता हूं।

मेरी शरदीकी बात निकम्मी समजो। थोडी थी लेकिन मैं 'महात्मा' हूं न ?

बापूके आशीर्वाद

: ७८ :

सोदपुर जाते जहाज परसे,
३-१-४६

चि. श्रीमन्,

तुम्हारा खत मिला। मैंने तो जिस रोज तुम्हारा खत मिला उसी रोज सफाई करके भेज दिया था। आज ३०-१२-४५ के खतका जबाब दे रहा हूं। जहाज पर हूं। सोदपुर जा रहा हूं।

मेरे आनेकी तारीख मुकर्रर करना दुश्वार है। पुना पहले जाऊं या वर्धा यह सवाल थोडा विचारणीय हो गया है। तब भी ८ फरवरीको मैं वर्धा पहुंचनेकी भरसक कोशीश करूंगा। १२ तारीखको अगर सोमवार नहीं है तो वह रखो, नहीं तो ११ तारीख २ बजे रखो।[1] स्थल सेवाग्राम ही रखा जाय।

प्रान्तिय एसेम्बलीके बारेमें मेरी उदासीनता समजो। लेकिन झुकाव उसी ओर है, योग्यता है और सब राजी हैं तो अवश्य जाओ।

बापूके आशीर्वाद

: ७९ :

सीमला,
१४-५-४६

चि. श्रीमन्,

तुम्हारा खत और अदबीबोर्ड[2] की किताबोंका कुछ हिस्सा मिला। किताबोंका हिस्सा पर नजर तो डाल गया हूं। उसमें मैं कुछ नहीं कह सकूंगा। उसकी नकलें सबको तो नहीं भेजोगे? जब सभा होगी तब पढ़ेंगे? अगर अगस्तमें बैठक बुलाई जाय तो मैं हाजिर हो सकुंगा। पुनामें या उरलीमें तो नहीं बुलाओगे?

बापूके आशीर्वाद

१. हिन्दुस्तानी प्रचार सभाकी बैठक।

२. हिन्दुस्तानी प्रचार सभाकी 'साहित्य-समिति'।

: ८० :

मसुरी,
५–६–४६

चि. श्रीमन्,

डॉ. बृजमोहनका खत हिंदोस्तानीके बारेमें आया है वह इसके साथ भेज रहा हूं। मैंने उत्तर ह. सेवकमें दिया है उसे देखोगे। लेकिन अच्छा होगा कि तुम उनको लिखो क्योंकि कितनी हकीकत मैं नहीं जानता हूं वह तुम्हारे ख्यालमें होगी।

मेरे लेखकी नकल भी इसके साथ भेजता हूं।

बापुके आशीर्वाद

: ८१ :

SODEPUR ASHRAM,
May 7th, 1947

Question 1 [१]

The British Cabinet Mission in their statement of May 16th had definitely rejected Pakistan. They had done so after patiently hearing all that Janab Jinnah Saheb had to say in the matter. The British Prime Minister, even in his latest pronouncements, has promised to stand by the statement of 16th May which rules out the division of India into two or more sovereign states. But now the partition of the Punjab and Bengal is being demanded by the people because they seem to be cowed down by recent communal disturbances and regard Pakistan as inevitable. Does this not betray a defeatist mentality?

Answer 1

I have no manner of doubt that the demand for partition betrays frustration on the part of the Hindus. If there were no cowardice there would be neither Pakistan nor partition, because, from my point of view, both are wrong.

१. श्रीमनजी द्वारा गांधीजीसे पूछे गये प्रश्न तथा उनके उत्तर।

Question 2

People admit that non-violence has succeeded wonderfully well against British rule in India. But they seem to feel helpless against the menace of organised communal goondaism. What concrete non-violent measures should be suggested for facing the menace?

Answer 2

The same courses of action as were adopted against the British Government can be used today. It is a matter for regret that even after thirty years' experience we have not been able to comprehend the sublime power of non-violence. *Ahimsa* is the only weapon that gives man the strength to face the opposition of the whole world. I, therefore, fail to understand why the Hindus should be afraid of the Musalmans, whatever be their number, and *vice versa.*

Question 3

What, in your opinion, are the main reasons for the withdrawal of British rule from India?

Answer 3

[One reason I know, viz., our non-violent strength.][1]

: ८२ :

सोदपुर,
१३–८–४७

चि. श्रीमन्,

तुम्हारा स्वच्छ खत मिला। मैंने काका सा. और नाणावटीसे बातें की हैं। तुम्हारे लिखनेके मुताबिक तुम्हारे मंत्रीपद[2] छोड़ना ही अच्छा होगा। कार्यकारिणीमें तो रहना ही और जो कर सकें किया करो।

मेरी दृष्टीसे हमारा काम किसीके विरोधमें नहीं है, पूर्तीमें है। हमें क्या कोई हमारा काम पसंद करे या नहीं। अगर हमारी बात सही होगी तो वही चलेगी। उर्दु कभी राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती न हिंदी। भले हिंदी पर युनियनकी म्होर भी लगे। राष्ट्रभाषा वही हो सकती है जो दोनों कोम लिख सकें और बोल सकें।

१. यह ब्रैकेटवाला अंश गांधीजीने अपने हाथसे लिखा है।
२. हिन्दुस्तानी प्रचार सभाका।

मदालसा अच्छी रहे और रसगुल्ला बिलकुल अच्छा हो जाय।

सभा दिल्लीमें करो मेरा पहूंचना मुश्कील है।

बापुके आशीर्वाद

: ८३ :

(१९३०)

चि. मदालसा,

तें तो मने कामसरज कागळ लख्यो। ए बरोबर नथी। मने त्यांना बधा खबर लखजे।

जानकीबहेनना कागळमां लखतां भूली गयो के कमलनयनने बरोबर न रहेवाथी में तेने विद्यापीठमां मोकल्यो छे।[1] त्यां पण काम तो सोंपाशेज।

आखो दहाडो तुं शुं करे छे?

तकली बनावे छे? कांते छे?

बापुना आशीर्वाद

: ८४ :

य. मं.,
२१–३–३२

चि. मदालसा,

वत्सलाना कागळमां तने पण थोडा जवाब मळी रहे छे। दूध अहिं मने सदतुं नहोतुं लागतुं तेथी में लख्युं। शांत जीवनमां दूधनी आवश्यकता न होवानो संभव छे।

बधुं अनाज काचुं न खवाय। लीलां पांदडां गाजर वि. काचां खवाय। ते रांधवाथी तेमांनुं एक प्रकारनुं सत्व हणाई जाय छे।

बापुना आशीर्वाद

१. कमलनयन दांडी यात्रामें गांधीजीकी टुकडीमें थे। वहां बीमार हो जानेसे उन्हें गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद भेज दिया था।

: ८५ :
अ

य. मं.,
१३–३–३२

चि. मदालसा,

अभिमान खराब अर्थमां वपराय छे। स्वाभिमान सारा अर्थमां। तुं मोटा माणसनी दीकरी छे एम मानी फुलाय तो तुं अभिमानी गणाय। पण तारुं कोई अपमान करे ने तेना डरथी तुं डरी न जाय तो तें स्वाभिमान अथवा स्वमान जाळव्युं कहेवाय। ओम केम कागळ न लखे?

कमळा तो लखेज शानी?

बाबु[1] हवे तो बहु मोटो थई रह्यो हशे। हजु एने मीठाई बहु जोईए के?

कागळ लखवानुं आळस न करजे। बाळकृष्णने लखवानुं कहेजे।

बापु

: ८६ :
अ

(यरवडा मंदिर)
२०–८–३२

चि, मदालसा.

तारो कागळ मळ्यो। तारामां ईर्षा, अभिमान वि. भर्यां छे एम तुं भले माने हुं नथी मानतो। ए दोषो तें क्यांथी लीधा होय? जमनालालमां तो ए नथीज नथी जानकीबहेनमां। नथी तने कुसंग थयो। नथी तने कोई प्रकारनी मणा। हा क्रोध छे ते तो हुं पण जोतो हतो। ते जानकीबहेनमां ये छे। वळी तारुं शरीर नबळुं। पण तुं डाही छो एटले विचार पूर्वक ए क्रोधने काढजे। जेवा आपणे एवा सहु छे। बधामां एकज जीव आत्मा रहेलो छे। तो कोईनी उपर क्रोध करवो ते आपणी उपर कर्या बरोबर छे। अने जेनामां जीवमात्रनी सेवावृत्तिनी धगश पेदा थाय छे तेनामां दोषो रहीज नथी शकता। तुं तारी सेवावृत्ति वधारजे।

मने नियमसर लखे तो सारु।

बापुना आशीर्वाद

1. मदालसाका छोटा भाई रामकृष्ण।

: ८७ :
अ

यरवडा मंदिर,
२२-११-३२

चि. मदालसा,

तारा अक्षर तो बहु सुधरता जाय छे। तारो अभ्यास क्रम पण सरस छे। गजा उपरांत महेनत न करजे। शरीर बगडवा दईने अभ्यास करवाथी बंने बगडवानां। क्रोध खराब छे एम तुं जाणे छे एटले धीमे धीमे ते नीकळीज जशे। एज प्रमाणे अभिमाननुं तुं समजजे। हालतां चालतां रडवुं आवी जाय छे ए नबळाईनी निशानी छे। तुं जो रमत गमतमां पडे तो रडवानुं बंध थई जाय। जरा पण रडवानुं थई आवे ते वखते उंचे सूरे गीता पाठ करवा मंडी जाय तो रडवानुं सुझेज नहीं ए तपासी जोजे।

तुं केम कहे छे के मंदिरमां[1] कोई रात दिवस न रहे? मंदिरना पुजारी तो रहेज छे।

बापुना आशीर्वाद

: ८८ :
अ

य. मं.,
११-१-३३

चि. मदालसा,

तारुं गाडुं ठीक चालतुं लागे छे। आमज चाल्या करशे तो थोडाज समयमां तारो क्रोध अने तारुं रुदन शमी जशे। खोराक लेय छे ते पची जाय तो बस छे।

जे प्रश्नो तने उठे छे एवा बधा जिज्ञासुने उठे। वांचन ने विचारथी उकली जाय छे। जगत् आपणेज छीये। आपणे तेमां छीये ते आपणामां छे। ईश्वर पण आपणामां छे। आपणामां हवा भरी छे ते आंखे तो नथी देखता पण जाणवानी इंद्री आपणी पासे छे। ईश्वरने जाणवानी इंद्री केळवी शकाय। ए केळवीये तो तेने पण ओळखीये। ए तने विनोबा आपी रह्या छे। धीरज राखजे।

जानकीमैयाने कहेजे के जमनालालने वारंवार मळुं छुं।[2] तबीयत सारी छे।

बापु

१. जेलसे मतलब है।
२. जमनालालजी भी उस समय यरवडा जेलमें ही थे।

: ८९ :

२७-८-३३

चि. मदालसा,

हुं लखुं नहि त्यां लगी तुं नहिज लखे के? तारे विषे खबर तो मळ्याज करे छे। पण हवे तुंज लांबो कागळ लखजे।

बापुना आशीर्वाद

: ९० :
अ

९-९-३३

चि. मदालसा,

तारो कागळ मळ्यो। विनोबा उपर तुं बोजारूप थई पडशे एवी धास्ति न रखाय। शिक्षकनुं कार्य छे के शिष्यानी अपूर्णताओने दूर करे। जो तुं संपूर्ण होत तो तारे शा सारु कोई शिक्षकनी मदद जोईए?

वाळ कापी नाखवामां आटलो भय शो? वाळ तो पाछा घासनी जेम उग्याज करे छे। घणी छोकरीओना वाळ कापेला ते पाछा हता तेना करतां लांबा उगेला में जोया छे। एटले जो वाळनो मोह न होय तो कढावी नाखजे।[1] पोषाकमां चड्डी शिवाय बीजो बहु फेरफार करवापणुं नथी रहेतुं। तारा जेवी बाळानो पोषाक सहेजे सगवडवाळो करी शकाय। पण हवे तो आपणे थोडा समयमां मळशुं।

बापुना आशीर्वाद

: ९१ :

२२-१-३४

चि. मदालसा,

हुं न लखुं त्यां लगी मने नज लखवानो नियम कर्यो छे के? एम करीने मारी परीक्षा लेय छे के मारी उपर दया खाय छे?

तारी मानसिक हालत अने शारीरिक जणावजे। वत्सलाने लखवानुं कहेजे। अभ्यास शो चाले छे? खावा पीवाना वखतो जाळवे छे के?

ओम मजा करे छे? जाडी थती जाय छे?

बापुना आशीर्वाद

१. बाल रखने न रखनेके बारेमें गांधीजीकी यह दलील मदालसाको जंच गई और शीघ्रही रूपचौदसके दिन गांधीजीके हाथों उसने अपने बाल कटा लिए।

: ९२ :

१६-१-३५

चि. मदालसा,

तारो कागळ मळ्यो। वजन वधतुं नथी ए आश्चर्य छे। पण हरकत नथी। बीजी रीते बरोबर छे एटले भले चाल्या करे। तें गाय दोवानुं शरु कर्युं छे एतो बहु सरस काम छे। दोवायुं तेवुंज पीई जाय छे ना?

वासण खूब साफ रहे छे? आंचळ लाल पाणीथी ने पछी साफ पाणीथी धुए छे के? तारा हाथ तद्दन साफ राखे छे के?

गायने साफ गुणपाटथी खरेरो करे छे? तेने तारे हाथे खवरावे छे? तारो आ आरंभ बहु सुंदर छे। मने फरी लखजे।

बापुना आशीर्वाद

: ९३ :

वर्धा,
१४-२-३५

चि. मदालसा,

तुं ठीक कागळ लखी रही छो। त्यां रही गई छो ए तो मने गमेज छे। मारे तो तारुं शरीर सुवर्णमय जोवुं छे। शरीर अने मननी वच्चे एवो निकट संबंध छे के एकनी चोख्खाईनी साथे बीजानी घणे भागे जडाएली होय छे। इंग्रेजीमां आना समर्थनमां एक कहेवत पण छे। उपनिषद्‌मां खोराकने लगती छे। जे खाय छे तेवो मनुष्य थाय छे। अन्नमांथी भूतो थाय छे। ए गीता वाक्य पण एज सूचवे छे ना? एटले तुं साव निरोगी थई जा, थई शके छे। आने पण तारा अभ्यासनो एक क्रम समज।

ओम सुवे छे मारे पासे ने दीवस कन्याश्रममां गाळे छे।

बापुना आशीर्वाद

: ९४ :

वर्धा,
२८-४-३५

चि. मदालसा,

तारा कागळ मळ्या छे। खावा बाबत तार काले करीश। तबीयत सरस करजे।

बापुना आशीर्वाद

: ९५ :

बोरसद,
२३–५–३५

चि. मदालसा,

तारो कागळ लांबो भले होय। मने बधी खबर पडवीज जोईए। जानकीबहेनने कहेजे ए घोडे न बेसे। ए पडी जाय तो साजा थतां वार लागे। तारी एटली धास्ती न रहे। अने घोडे चडे ते पडे एवो रीवाज तो छेज ना?

तारा गुमडानो उपाय शोध्येज छुटको छे। मीठुं जरूर खाई जोजे जोके हुं नथी मानतो के तेनी साथे कंई संबंध होय। तुं लीमडानुं सेवन करी जोजे। हुं तेना प्रयोग करी रह्यो छुं। बे वार खाधा पछी अरधो तोलां पांदडां चाबी जोजे। तेथी भूख वधारे लागशे ने रक्त शुद्ध थशे। परीणाम जणावजे।

बापुना आशीर्वाद

: ९६ :

वर्धा,
२१–७–३५

चि. मदालसा,

तारा कागळमां कशुं अघटित नथी। तारो कार्यक्रम मने गमे छे। वांचवानुं भले छोडयुं। तने जे गमे ते वगर संकोचे खावानो नियम बरोबर छे। तेमांथी तुं योग्य खोराक शोधी लेशे।

जानकीबहेनना गुस्साथी न गभरावुं। तेमां तथ्य होय ते तरफ ध्यान देवुं।

शरीर गरम रहेवुंज जोईए। प्रार्थना वखते अभ्यास वखते लखती वखते टटारज बेसवुं। माथु झुकाववानी क्यारेय जरूर नथी। त्यां[1] जोईतां कपडां पहेरवांज जोईए।

आ बधी वस्तु उपर ध्यान देजे। हवे तो न्याय मळयो ना?

रणजीत पासे शीखे छे ए सारुं छे। गमे त्यां लगी त्यांज रहेजो।

बापुना आशीर्वाद

१. बिनसर, आल्मोडा।

: १७ :

वर्धा,
२१–८–३५

चि. मदालसा,

तारो कागळ घणे दहाडे मळ्यो। तुं मांदी न पडे ए शरते मरजी पडे ते खाजे। जे संयम पाळवाना होय ने स्वाभाविक पणे पळावा जोईए। कशी उतावळ नथी। क्रोध छोडवो, वाळक थईने रहेवुं, आश्रम जीवन गाळतां स्वतंत्रता आवे उद्धताई, अविनय, मोटाई कदी नहीं।

बापुना आशीर्वाद

१८ :

(अक्तूबर १९३६)?

चि. मदालसा,

तुं गभराती नहीं। जेनी तेनी दवा न कराय। दाक्तर कहे तेमज करवुं।

खोराक नज अपाय। फळना रस, ग्लुकोझ, पीचकारी, माटीना पाटा, साव शांति आटलुंज थाय तो दरदी साजो थायज। काले आववानी आशा सेवं छं।

बापुना आशीर्वाद

: १९ :
अ

२२-३-३९
वर्धा (मध्य प्रांत)

MAGANWADI
WARDHA (C.P.)

ચિ મદાલસા,

[illegible]

પામીને તારે તેને અને જમનાલાલને
શોભાવવા છે. ઘણાં પુણ્ય કર્યાંથીજ
શ્રીમન જેવો પતિ મળે. ઈશ્વર
તને જલ્દી સારી કરો

બાપુના
આશીર્વાદ

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि) सेगांव,
३-१२-३९

चि. मदालसा,

तें टंको पण सरस कागळ लख्यो छे। जानकीबहनने भय छोड्यो ए ठीक थयुं छे। खूब आनंदमा रहीने तारुं शरीर सरस करजे। श्रीमन जेवा पतिने पामीने तारे तेने अने जमनालालने शोभाववा छे। घणां पुण्य कर्याथीज श्रीमन् जेवो पति मळे। ईश्वर तने जल्दी सारी करो।[1]

बापुना आशीर्वाद

: १०० :

२९-१२-३९

चि. मदालसा,

शुं पराक्रमो करी रही छे? जे थवानुं होय ते थाओ। चिंता न करती। तुं एटला अभंगो शीखी छे ने विनोबानी पासेथी ज्ञान पान कर्युं छे तेनो बरोबर उपयोग करजे। दाक्तरो कहे तेम करजे।

बापुना आशीर्वाद

: १०१ : सेगाव,
५-१-४०

चि. मदालसा,

तुं केवी गांडी छे? हवे श्रीमन आवे छे तो जल्दी सारी थई जजे। रामनाम हृदयमां राखजे। ए बधुं ठीकज करशे। हिम्मत न हारती। तारे जवाब देवानो नथी। जवाब श्रीमन आपशे।

बापुना आशीर्वाद

१. यह पत्र गुजराती भाषा किन्तु नागरी लिपिमें लिखा गया है।

: १०२ :

सेगांव,
१३-२-४०

चि. मदालसा,

तुं पाछी तावमां पटकाई छो के? हारती नहीं। जलदी साजी थई जजे। मांदगीनो सारामां सारो उपयोग ए छे के भगवान उपरनी आस्था वधारवी ने स्वभावने काबूमां राखवो। आ रीते तुरत साजा पण थई जवाय छे।

बापुना आशीर्वाद

: १०३ :

१३-११-४०

चि. मदालसा,

तारो कागळ मने मळी गयो छे।
सरदारने जवाब आपीश।

बापुना आशीर्वाद

: १०४ :

१४-८-४१

तमे बन्ने कवि। फेर आटलो खरो के पेलो कवि छतां पृथ्वीने वळगी रह्यो छे एटले पोताना काममां मस्त रहे छे। तुं गगनगामिनी एटले विचारोमां मस्त रहे छे। तेथी तारो असंतोष नोकरो साथे रह्या करे छे। ए रहे त्यां सुधी तुं गृहिणी तरीके घरने केम दीपावी शकशे? ले आटलो लांबो।[1]

बापुना आशीर्वाद

१. मदालसा इन दिनों गर्भवती थी और गांधीजीकी देखरेखमें सेवाग्राममें ही रहती थी। उसने कवितामें पत्र लिखकर गांधीजीसे आशीर्वाद मांगा तब उन्होंने यह आशीर्वाद दिया। आगेके पत्रोंमें गांधीजी समय समय पर बच्चेकी मांको किस प्रकार रहना व बरतना चाहिए यह बताते रहे।

: १०५ :

न्यू दिल्ली,
१७-८-४१

चि. मदालसा,

तारो कागळ मळ्यो। पहेलां पण तारो कागळ मळ्यो हतो। पण हुं मांदो हतो एटले लखी शकी न हतो।

तुं भले मारा ओरडामां रहे। मारुं घर छे ने तारुंज छे ने? तारे मारी साथे रहेवुं छे तो हवे हुं त्रण चार दिवसमां नीकळवानो छुं। मारी तबियत हवे सारी छे।

जमनालालजीनी मांदगीना खबर छापामां वांचीने चिंता थाय छे। भगवान एमने सारुं करी दे एटले बस। तारी बाने मारा आशीर्वाद।

लि.

बापुना आशीर्वाद

: १०६ :

२-१०-४१

चि. मदालसा,

तुं मजामां हशे। मुंझाती होय तो मने लखजे। दाक्तर दास त्यां आवे ने काम देय ए न बनवा जेवुं थई पडयुं छे। आशा तो छे के हवे बहु करवापणुं नथी रहेतुं। खावामां बरोबर सावचेती राखजे। दाळ, मसाला, घीमां रांधेल वस्तुओ न लेती। स्वाद पछी करजे। हमणा तो बाळकने खातर संयम पाळजेज।

बापुना आशीर्वाद

: १०७ :

३-१०-४१

चि. मदालसा,

में तने काले कागळ लख्यो ते पछी तारो कागळ मळ्यो। हवे तो तारा कागळनो जवाब नथी आपवानो रहेतो। तें सरस पराक्रम कर्युं।[1] दाक्तर तारी पासे आवे छे। मने तो माफ करशे ना? तारा आवीने दर्शन देवाना छे। खुश रहेजे। खावामां खूब ध्यान राखजे। दाक्तर आवे छे ए मने बधुं कहेशे।

बापुना आशीर्वाद

१. मदालसाकी पहली प्रसूती अच्छी तरहसे हो जानेपर।

: १०८ :
अ

फरी नथी वांचतो

१५-१०-४१

चि. मदालसा,

तारे विषे विचार रह्याज करे छे एटले मनें स्वप्नां भाग्येज आवे तेमां तारे विषे आव्युं। ते उपरथी लखवा प्रेरायो छुं। स्वप्नु त्रण दीवस पहेलां आव्युं। पण लखवानो वखत आजेज मळे छे।

बाळकने पेटमां राखतां जेटली काळजी राखवी पडे छे तेटलीज उछेरतां। तारा दूधनो गुण तारा खोराक नें तारी रहेणी उपर आधार राखे छे। जेम तारा खोराकनी असर तारा दूध उपर थाय तेमज तारा स्वभावनी अने विचारनी पण थाय। आ अनुभवनी वात लखुं छुं एटले मानजे। तेथी तुं आग्रहपूर्वक खोराक मात्र औषध समजीने लेजे। स्वादने सारु नहिं। औषधमांथी जे स्वाद नीकळे छे ते खरो स्वाद छे ने पोषक छे। औषधनें रूढ अर्थमां लईनें सुग न राखती। दूध औषध रूपे लेवाय नें स्वादने सारु पण। एकथी शरीर वधे बीजाथी घटे। बाळकनें कसरत, हवा, मर्दन वि. बरोबर मळवां जोईए। आ बाबतमां कोईनुं न मानती। घणा लाड लडाववा तैयार थशे। ते गमे ते होय छतां तुं तारा मनने वळगी रहेजे।

मारा स्वप्नानी मतलब पूरी थई। तुं मजामां हशे, बाळक वधतो हशे। मा दीकरी कजीया नहिं करता होय। तुं रडती नहिं होय। तुं पथारीयेथी उठे पछी थोडा महिना अहिं रहे ए कदाच इष्ट होय।

बापुना आशीर्वाद

: १०९ :

२५-१०-४१

चि. मदालसा,

राधाकृष्णने कह्या पछी आनी जरूर नथी। आ तो मात्र तने हसाववा खातरज। वधारे पापड मोकलुं?

तुं रडे छे शाने? तारा रडवानी असर पण बाळक उपर थाय ए जाणे छे?

अहिं क्यारे आवे छे? बापुना आशीर्वाद

: ११० :

१२-११-४१

चि. मदालसा,

आ तो तने रमाडवा। तारा खबर तो मळ्याज करे छे। मारा संदेशा मळता हशे। हवे कंई फरे छे के नहिं? फरवा नीकळवुं जोईए। पण दाक्तर कहे तो।

वसाणा जेटलां ओछां लेवाय तेम सारु।

बाळक वध्या करे छे ना? दा. दास आजे आववाना हता।

बापुना आशीर्वाद

: १११ :
अ

(सेवाग्राम)
२१-११-४१

चि. मदु,

तुं घेली छो ने घेलीज रहेवानी के? पहेली तके तुं अहिं आवी जा। रहेवाने सारु नहिं पण मळवाने तो खरुं! ने पछी जेटलुं तारा हृदयमां होय ते ठालवजे ने पेट भरीने रडी लेजे। अने रडवानी आवी सुंदर तक आपुं छु एटले त्यां रडवानुं बंध राखजे। बाकी तो जे नियमो बताव्यां छे ते पाळजे एटले सदाय सुखी रहेशे।

तमने बन्नेने,

बापुना आशीर्वाद

: ११२ :

(सेवाग्राम)
१-१२-४१

चि. मदालसा,

हवे तो तुं साव छुटी छो एम दाक्तर कहे छे। एटले ज्यारे इच्छे त्यारे आवी जजे। मारे ९ मीए बारडोली एक महिना सारु जवानुं छे एटले ९ मी पहेलां आवे एम इच्छुं। तुं मजा करती हशे। वच्चु[1] पण बराबर गति करी रहेल छे एम दाक्तरे कह्युं।

बापुना आशीर्वाद

साथेनी पहोंच ओफिसमां दई देजे।

१. मदालसाका बड़ा लड़का, भरत।

: ११३ :

(सेवाग्राम)
४–१२–४१

चि. मदालसा,

तारो कालनो कागळ आजे १०-३० वागे मळ्यो। तें काले आववानी रजा मागी हती। ए रजा हवे नकामी। हवे ज्यारे इच्छे त्यारे डोकीयुं करी जजे।

तुं खुश रहे त्यां लगी खेंचाईने मारी पासे न आवती। ९ मीए हुं तो डोकीयुं करीज जईश। पण तारुं मन अहीं आववाथी वधारे मोकळुं थाय तो आवी जजे।

बापुना आशीर्वाद

: ११४ :

बारडोली,
२–१–४२

चि. मदालसा,

तारो कागळ मळ्यो। बहु राजी थयो। एमां तारो आनंद तरी आवे छे। तारुं श्रेयज छे। संयममांज सुख छे। एटलुं याद राखजे वधी बहेनो साथे छो ने एटला आनंदथी रहो छो ए अत्यंत खुशीनी वात छे।

बापुना आशीर्वाद

: ११५ :
अ

सेवाग्राम,
१५–६–४२

चि. मदालसा,

सुरेन्द्रनारायणजीने[1] विषे दुःखनी वात छे। हमणा तो सादोज खोराक लेता हशे। दूध, दहीं, फळना रस, भाजीना रस, खवाय। बीज के छिलका पेटमां न जाय। पेडु पर माटीना पाटा फायदो करे, करांजवुं न जोईए। दस्त मळ कर्या विना न आवे तो हळवी पीचकारी लेय। पहेली तके मुंबई जवुं जोईए। त्यां गये सो दाक्तरो कहे तेज करवुं रह्युं। एवुं बने के में बताव्यो छे ए खोराक लेवाथी जो मात्र सोजोज हशे तो दर्द शमी पण जाय। रोटी

१. मदालसाके देवर। इनको अपेंडिसाइटिसकी बीमारी हो गई थी।

बरोबर चावीने लई शके छे। दाळ छोडवी जोईए। जोर करवुं पडे एवी कसरत न कराय। कटी स्नान बहु फायदो करे। घर्षण स्नान पण।

बच्चाने सारु कंई दवा खवरावती नहि। तेने भाजीनुं पाणी, फळोनो रस दवा रूप थशे। कसरत तो करेज। बीजुं अहीं आव्ये। श्रीमन अल्लाहबाद जाय ने बधुं पतावी लावे।

बापुना आशीर्वाद

: ११६ :

महाबलेश्वर,
२३-४-४५

चि. मदालसा,

तारुं केम चाले छे? शरीर खूब साचवे छे के?

बापुना आशीर्वाद

: ११७ :

सीमला W.,
१०-७-४५

चि. मदालसा,

तुं केम छो? मने केम लखती नथी? हुं गमे ते काममां होउं तो पण तारो कागळ तो वाचुंज। ओम मसुरी गई के?

बापुना आशीर्वाद

: ११८ :

सेवाग्राम,
२३-७-४५

चि. मदालसा,

'जीवन कुटीर'[1] नाम तो सार्थक थशे जो बहारथी मरेली जेवी आवी त्यां मीठुं जीवन मेळवती रहेशे तो। तुं सारी छो ए जाणी बहु राजी थयो छुं। वळी हवे तो विनोबा छे ने राम[2] पछी शुं जोईए? खबरदार हवे पाछी निराशा कूपमां पेठी तो।

बापुना आशीर्वाद

१. मदालसाके घरका नाम।
२. मदालसाका छोटा भाई रामकृष्ण।

: ११९ :

पुना,
८–१०–४५

चि. मदालसा,

तने लख्या विना केम चाले? निराशानी वातज मनमांथी काढी नाखवी। निराशा केवळ आपणी कल्पनामां वसे छे।

मने ताव बेज दीवस आवी गयो। हवे सारुं छे। रसगुल्ला तो हुं आवुं त्यारेज चखाशे। हवे तो खूब मोटो लागतो हशे।

तमने ग्रणेने
बापुना आशीर्वाद

आ महीनाना छेल्ला अठवाडियामां त्यां आववानी आशा छे।

: १२० :

पुना,
४–११–४५

चि. मदालसा,

हवे तो तुं बे दीकरानी मा थई। जानकीबेननो हर्ष एवो थेलो के मने बे तार कर्या। एनो तार न हत तो खबर न पडत। में जवाबमां तार आप्यो छे ते तेमने मळी गयो हशे।

तारो कागळ मळयो वांचीने खुशी थयो। हुं मुसाफरीमांथी पाछो आवुं त्यारे मने तारे घेर लई जजे।

तारी सासुमा तारी पासे छे ए बहु सारी वात छे। तमे बन्ने खुश हशो।

तमने बधाने
बापुना आशीर्वाद

: १२१ :
अ

२३–११–४५

चि. गांडी मदालसा,

तारो कागळ मळयो। हवे श्रीमनजी आव्या छे एटले ए कहे तेम करजे। तारा सलाहकार घणा छे। ए खराब छे। एटले एक जेनी उपर

नजर ठरे एनीज वात सांभळवी ने ए प्रमाणे वर्तवुं। बीजी वात सांभळवीज नहीं। अने करवा आवे तो काम बंध करवा। तो तुं झपाटाबंध सारी थई जईश। चितामां तो नज पडवुं। बाळकने जन्म आप्यो छे तो हवे तारे तेने सरस रीते उछेरवोज छे। तेने खातर पण गांडी मटीने ज्ञानी न थाय तोय डाही था एटले बस छे।

बापुना आशीर्वाद

: १२२ :

सोदपुर,
६-१२-४५

चि. मदालसा,

तने तो जवाबनी जरूर नथी, पण मने छे। तने फरी पाछो ताव आवी गयो ए गमतुं नथी। तडकामां सुवानी टेव पाडजे। भले धीरे धीरे वधारती जाय। पहेलेथीज तडकामां ओढीने सुवुं अने जेम जेम तडको गरम लागतो जाय तेम तेम ओढेलुं उतारता जवुं। ए एटले सुधी के छेवटे नग्न सुई शकाय। एथी छातीए तो सारुं थईज जशे, पण मारा अभिप्राय प्रमाणे शरीर पण रोगमुक्त थई जशे।

बापुना आशीर्वाद

: १२३ :

सोदपुर,
१७-१२-४५

चि. मदालसा,

तारुं बीजुं ओपरेशन थई गयुं ए सारुं थयुं। तुं मजामां हशे। टीक पाठ शीखी रही छे। लखवा जेवी थाय त्यारे लखजे। रामकृष्ण मजा करे छे। सेवा करे छे। कमलनयन आजे आवी गयो। बाळक ठीक हशे। वधे छे ना?

बापुना आशीर्वाद

: १२४ :
अ

फरी नथी वांचतो

सेवाग्राम,
२८-८-४६

चि. मदु,

तारी उपर दया आवे छे। ने खीज पण। दया आववा जेवी तें वातो करी। खीज एटला सारु के आटला वहाडा तें संघरी।

आपणे बीजानो वांक न जोईए, पोतानोज जोईए एमांज जीवन सुखी थाय छे ने आपणे स्वच्छ रहीए छीए। तने कह्युं छे के तारे कोई पण प्रवृत्ति शोधवी के जे तने तारो विचारज न करवा देय। एवी प्रवृत्ति महिलाश्रम नो हतीज। ए न फाव्युं। तो तारे एकले के कोई खासनी साथे सेवा काम शोधी काढवुं। कंई न सुझे तो रेंटीयानी बधी क्रिया हाथ करवी। नैसर्गिक उपचारना पुस्तको वांचवा। गूजरातीमां छे। हिंदीमां पण छे।

मने दर मंगळवारे लखजेज।[1] अने बिगतवार लखजे। रोष तो कोईनी उपर न करवो, तारी पोतानी उपर पण नहीं। भजन ऊंचेथी गातां शीखी लेजे।

बापुना आशीर्वाद

: १२५ :

भंगी निवास,
नवी दिल्ली,
१–९–४६

चि. मदु,

तारो कागळ मळ्यो। जेवो उत्साह ए कागळ बतावे छे ते हमेशां रहो। मंगळवारे लखवानुं नज चूकवुं। मारो जवाब आव्यो के न आव्यो होय। उत्साह जाळवावामां एकज वस्तुनुं काम छे। ईश्वर उपर जीवतो विश्वास। श्रीमन् साथे छुटथी पण शांत चित्ते ने विनयथी वातो करजे। तेमज मानी साथे। बधायनी साथे मन मोकळुं राखवुं ने कोईनुं माठुं न लगाडवुं।

मारे अहीं १० मी तारीख लगी तो रहेवुं पडशेज।

रसगुल्लाओने चुंबी।

तमने बन्नेने
बापुना आशीर्वाद

१. मदालसाको इन दिनों काफी मानसिक अशांति रहती थी। २६-८-४६ को गांधीजीसे उसने खूब बातें कीं और अपने मनका भार हलका किया। इससे उसे बहुत शांति व समाधान मिला। उसी समय गांधीजीने मदालसाको कहा था कि वह उनको हर मंगलवारको नियमित रूपसे पत्र लिखा करें।

: १२६ :
अ

न. दि.,
११–९–४६

चि. मनु,

तारो कागळ मळ्यो।

तुं तारा दोषोज जो ने बीजाना गुणोज जोशे तो तुं झपाटाबंध आगळ वधशे, ने सुखनो अनुभव करशे, दुःख जेवुं कंईज नही लागे। आपणने कोईनी पासेथी कशी आशा राखवानो अधिकार नथी। आपणे देणदार छीए तेथी तो जन्म लईये छीये। लेणदार नथीज। आ तुं गळेथी नीचे उतार एटले आखुं जगत तने सरळ लागशे। आ ज्ञानवार्ता नथी पण जीवन प्रवाह सरळ वहेवाववानो धोरी मार्ग छे।

रसगुल्लाने वणी बुचीओ।

बापुना आशीर्वाद

: १२७ :

न. दि.,
१६–९–४६

चि. घेली मनु,

तारो घेलो कागळ मळ्यो। छतां मने मीठो लागे छे। तुं घेली रही। तारो कारभार बधो श्रीमन् चलावे छे एटले तुं डाही केम थाय? कमलनयन तो लाखोना वेपारमां पड्यो। बहेनो पोताना संसारमां। एटले ए पोतानामां पड्यो होय तेमां नवाई शाने? सावित्री भले गई। तुं मजा करजे ने खुश रहेजे। बधुं रामजीना खोळामां मूकी देजे। कमलनयनने पण। एने भगवान बचावशे त्यां लगी तेने कंई नथी थवानुं। कशी चिंता न करती।

बापुना आशीर्वाद

: १२८ :

न. दि.,
२२–९–४६

चि. मनु,

तारो कागळ मळ्यो। आ वखतनो गमे छे। तें आटला वखत सुधी खरेखर लीधेज राख्युं होय तो तो तारे ऋणनुं करज चूकववानुं रह्युं एटले

तारे तो करज भरता जवुं ने हरखाता जवुं जोईए। हुं वर्धा पहोंचुं एटलामां तुं आवशे के?

બાપુના આશીર્વાદ

: १२९ / अ :

न. दि.,
ता. १६—१०—४६

चि. मदु,

तारी प्रतिज्ञा न तोड ए इच्छुं।[1] काम होय तो पत्तुं ज लखवुं।

रजत सारो थई गयो ए ईश्वरनो पाड।

पतिपत्नीमां जे प्रेम होय ते गाढ मित्रोना जेवो, ते सर्वथा निर्विकार होय। ते दुःख सुखना साथी होय। बन्नेमां एक बीजानुं सहन करवानी शक्ति होवी जोईए। एक बीजा प्रत्ये उदारता होय, बे वच्चे संपूर्ण निखालसता होय। वहेम कदी नहीं, एक बीजाथी कंई छानुं नहीं।

मने लागे छे आटलुं बस। दृष्टांतो मळीये त्यारे पूछजे।

तमने वधाने

બાપુના આશીર્વાદ

: १३० :

रेलमां,
२८—१०—४६

चि. मदु,

मने तो ख्याल छे के में तारा लांबा कागळनो जवाब तुरत आपेलो। पण टपालनी नोंधमां तारुं नाम नथी जडतुं। हवे काल तारो बीजो कागळ नवा वर्षनो मळ्यो।

आपणुं नवुं वर्ष आवे त्यारे वात।

तें रामने विषे लख्युं छे[2] तेनी वात में तो न करी पण जानकीबहेने पोतानो विचार बताव्यो मारा पूछवाथी। बधुं रामनी उपर मूकवुं जोईए। ए बाळक नथी। एने गमे तेज करवुं जोईए।

१. मदालसाके एक मंगलवारको पत्र न भेज सकने पर।

२. रामकृष्णके विवाहके बारेमें।

तुं मजामां हशे। बंगाळथी क्यारे पाछो आवीश ए नथी जाणतो। आजे आटलुंज।

બાપુના આશીર્વાદ

: १३१ :
अ

हीरापुर,
२६-१-४७

चि. मदु,

तारा कागळ अनियमित थया छे। ए तारा अनियमितपणानुं प्रतीक तो नही होय ने? जे होय ते; तुं कल्लोल कर अने शांत चित्त था। तने ने रामने अहीं आववा देवा गमे तो खरुं। पण ए खोटुं प्रलोभन गणुं छुं। जे छापामां आवतुं होय तेमांथी ओछामां ओछा ५० टका बाद करीने वांचशे तो कंईक ताळो मळी रहेशे। डुंगरा दूरथी रळियामणा लागे ए सांभळ्युं छे ने? अने ज्यां रोज गामडां बदलातां होय त्यां तमाशगीर तरीके पण माणसो भारे पडे। घणायने ना पाडुं छुं। अने तमने बेने केम रजा आपुं? हुं जाणुं छुं के तमे कोई रीते भारे पडो तेम नथी। छतां संयम जाळवजो। अने त्यां बेठां जे सेवाकार्य करशो एटले अंशे आ यज्ञमां भाग लीधो गणीश। छोकरांओने साचवजे। तारुं शरीर सारुं राखजे। राम मजामां हशे। एणे पोताने विषे निश्चय कर्यो?

બાપુના આશીર્વાદ

: १३२ :

३०-१-४७

चि. मदालसा,

तारो कागळ मळ्यो। गुलबेन पासे जई आवे ए मने तो गमे छे। केम के गुलबेननो संग ए सत्संग छे। वळी पूनानी हवा पण तारे सारु ने बाळको सारु बहु सारी। तुं पूना जाय तो उरुलीकांचन[1] पण जई आवजे। मारो आगलो कागळ मळ्यो हशे।

બાપુના આશીર્વાદ

१. पूनाके पास गांधीजी द्वारा खोला गया प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र।

: १३३ :

अ

रायपुर,
१५-२-४७

चि. मदालसा

तारो कागळ मळ्यो। तें तो मारी पासेथी नथी माग्यो। पण हुं तो लखुं केम के तुं हजु बहु प्रपंचमां पडी छो। * * * * * *। तारे श्रीमनमां समाई जवुं जोईए। में तो जोयुं छे के श्रीमन तने पूजे छे। तुं एने पूजे छे पण श्रीमनने जे ज्ञान छे ते तने नथी। वासंतीने बधुं कहे एमां हुं कंई दोष नथी जोतो। ए डाही छे, पण हुं नथी मानतो के वासंती तने दोरवा जेटली शक्ति राखे छे। तारुं सुख श्रीमनमां समाई जवामांज छे। ए विषे मने शंका नथी। जो तुं ज्ञानी होत तो हुं कही शकत के श्रीमन साथे लडजे। तुं एवुं ज्ञान तो धरावती नथी एम कबूल करे छे। जो तने आ वातनो घुंटडो उतरी जतो होय तो हुं कहुं छुं तेनो पूरो अनुभव करजे। जरा जेटली पण शंका होय तो विनोबानी पासे आ कागळ मूकजे। ए कहे तेम करजे। नहि तर पण विनोबा पासे तारे आ कागळ मूकवो तो खरो। वासंतीने पण बतावजे। रामनी सगाईनुं समज्यो। में एमां माथुं मार्युं नथी। बंने सुखी थाओ अने शुद्ध सेवा करीने बंने पिताजीना नामनी उज्वळतामां वधारो करतां थाओ ए मारी अभिलाषा। आटलुं रामने कहेजे।

तारो बीजो कागळ मळ्यो।

बापुना आशीर्वाद

: १३४ :

पटना,
२१-४-४७

चि. मदु,

तारो कागळ मळ्यो। राधाकिसन, जाजूजी अहीं छे। चर्खा संघनी सभा हती ना?

तारी अस्थिरता ने गांडपण छेक काढी नाखजे। श्रीमन्मां तुं तने खोशे तो तुं तने जोशे। ए शिवाय तारे सारु बीजो मार्ग नथीज। जेणे कोरे पाने तने सही करी आपी[1] तेने तुं ओळखे छे?

बापुना आशीर्वाद

: १३५ :
अ

न. दि.,
९-६-४७

चि. मदालसा,

तारो कागळ मळ्यो।

श्रीमन् १२ मी तारीखे अहीं आवे छे। हवे हुं हरिजनमां लखतो थयो छुं। एटले तारी गूचवणो ते वाटे दुरस्त करावजे। तारुं कहेवुं बरोबर समजी नथी शक्यो। मारा कोई लखाण के वर्तनमांथी छटकी जवानी बारी नज शोधती। ज्यां मुश्केलीओ नडे ते दूर करवी घटे छे। मारा लखाणमां स्वच्छंद होवोज न जोईए। मारुं जीवन संयमने सारु व्रतो छे। एमां पार न उतरुं ए बने। पण हुं कदी स्वेच्छाचारने सारु दरवाजा नहीं शोधुं एवो भरोसो छे।

बापुना आशीर्वाद

: १३६ :

न. दि.,
७-७-४७

चि. मदु,

तारो कागळ मळ्यो। मारो तार तने मळ्यो हशे। हवे तो भरत घोडा जेवो थई गयो हशे। एने रखडवा न देती।

हुं तो इच्छुंज छुं के तुं महिलाश्रममां गुलतान थई जा। ए जमनालालनां घणां कामोमां मोटुं काम छे। तने तेनी पडखे राखी तेनां पण ए आशा के तें

१. एक प्रसंग पर मदालसाने श्रीमनजीसे रुपया मांगा। इसपर श्रीमनजीने कोरे कागजपर सही करके दे दिया और कहा कि जो चाहो, उसपर भर लो। इसमें मदालसाने रु. १९०० लिखा। सहीवाला वह कागज गांधीजीको दे दिया। गांधीजीने रुपये तो हरिजन फंडके लिए रख लिये और सहीवाला कागज वापस कर दिया।

तेमां मशगुल थई जशे। हवे तमे बेय जणा संयम राखी शको तो छोकरां उत्पन्न करवानुं बंध राखजो के जेथी तुं बेनी उपर ध्यान आपी शके ने महिलाश्रमनुं काम संभाळी शके। महिलाश्रमने तारा जेवी सेविकानी जरूर तो छेज। तुं तेमां पडशे तो श्रीमन् तेमां वधारे रस लेशे।

सुशीला आजे वर्धाथी आवी।

बापुना आशीर्वाद

: १३७ :

जगतपुर,
११–७–४७

चि. मदु,

तारा बे कागळो मळ्या। सवारना ३ वाग्यानो उठ्यो छुं एटले आ पत्तुं तो तने लखावी दउं। तुं साव शांत थई जा अने पोताना काममां परोवाई जा। बीजानो विचार छोडीने पोतानोज करवो। अने पोतानो करतां हवामां नही उडवुं। पण झीणुं मोटुं जे कर्तव्य हाथ आव्युं होय तेनुं पालन करी शांत रहेवुं।

बापुना आशीर्वाद

: १३८ :

कलकत्ता,
१७–८–४७

चि. मदालसा,

तारो कागळ मळ्यो।

भणसाळीभाईने लई गई ए ठीक कर्युं। भरते झंडो बरोबर चडाव्यो हशे।[1] तुं साव शांत थई हशे।

बाकी मनु लखे ते।[2]

तमने बधाने
बापुना आशीर्वाद

१. १५ अगस्त १९४७ को भरतके हाथों घरपर झंडा फहराया गया था।

२. मदालसाको गांधीजीका लिखा यह अंतिम पत्र है। क्योंकि इस पत्रके मिलनेके बाद मदालसाने उनको लिख दिया था कि उसको अब पूरा मानसिक संतोष मिल गया है। उसने उनका बोझ कम करनेके लिए आगेसे हर मंगलवारको उनको पत्र न लिखनेकी भी इजाजत मांग ली थी। इसके बाद मदालसा श्री. मनुबेन गांधीसे पत्रव्यवहार करती रही। मनुबेन गांधीजीके साथ रहती थीं और मदालसाके पत्र उनको बताकर उनकी सलाहसे जवाब दिया करती थीं।

: १३९ :

३–२–३१

चि. ओम,

इतना गूजराती जानती थी सब भूल गई क्या? तुमारे लिये तो हिंदी गूजराती मराठी मारवाडी सब एक सा होने चाहिये। अबकी बार गूजराती या मराठीमें लिखो और कहो कितनी कातती है कितना धुनती है तकली पर कितनी गति है। खानेका बहोत लेकर छोड़ देती है कि गरीबोंके जैसे जितना चाहिये इतना हि लेकर थाली साफ करती है। गीताजी पढ़ती है?

बापूके आशीर्वाद

: १४० :

य. मं.,
२०–८–३२

चि. ओम,

तारो कागळ मळ्यो। तारा अक्षर तो खूब सुधर्या। तारुं वजन छे ए बधुं नक्कर शरीरने लीधे होय तो तेने घटाडवानी शी जरूर छे? तुं कदावर ने जोरावर थाय तो वधारे सेवा करवा लायक थशे जो साथे साथे मन पण जोरावर थशे तो। जो रोगने लीधे शरीर फुल्युं होय तो जरूर वजन ओछुं करवानो प्रयत्न करवो जोईए। कंई रोग छे? मने कागळ लख्या करजे।

बापुना आशीर्वाद

: १४१ :

२७–११–३२

चि. ओम,

तुं भारे लुच्ची छोकरी लागे छे। झीणुं कांतवुं नहि एटले जाडा सूतरने परोपकारमां गणावी देवुं। आ बधुं तने विनोबा शीखवे छे के जानकीमैया?

बापु

: १४२ :

१९–८–३४

चि. ओम,

तारा कागळ मळ्या छे। तुं आळस न करती। रोज अमुक कलाकज राखवो के ज्यारे कागळ लखवो। एटले ते कलाके बीजुं काम थायज नहिं। धीरज राखीने सरस अक्षरे लखवुं। शुं खवाय छे, पीवाय छे, केटली ऊंघ आवे छे, दुःख केटलुं थाय छे, रुझ केम आवे छे, कोण कोण मळवा आवे छे ए बधुं विगतवार लखवुं। वातो न कराववी बीजा करवा आवे तो न करवा देवी। आवा नियमो पाळवाथी रुझ वहेली आवशे।[1]

तारा वखतनो हिसाव आपजे। तमारुं बधानुं सुवानुं क्यां थाय छे? इस्पीतालनुं वर्णन आपजे। बीजा कोण दरदी छे?

गोपी हजु अहिंज छे। मांदली जेवी तो रहेज छे। एने कागळ लखजे। मदालसा रोज सेवाना कलाक भरे छे। तारा कागळ तेने आपुं छुं।

अत्यारे सवारना चारनो वखत हवे थवा आव्यो छे। दातण करीने आ लखवा बेठो।

जानकीमैयानो कागळ वांची राजी थयो। हवे तो खुश हशे।

बापुना आशीर्वाद

:१४३ :
अ

२०–८–३४

चि. ओम,

तुं अक्षर गमे तेवा काढीने मात्र वचन पाळवा खातर वेठ उतारीने कागळ लखे तो मने तारा कागळ न जोईए। वचन पाळवुं तो मन अने कर्मथी। मनमां पाळवानी चोरी होय ने कर्म पाळयानुं पुण्य मेळववुं ए न बने एवी वात छे। मने ए जराय न गमे। में ए नथी शीखव्युं के जे करवुं ते बरोबर अने सुघडताईथी करवुं? नाना के मोटा कोई काममां वेठ न उतारवी।

एकेय पळ नकामी न जवा देती।

बापुना आशीर्वाद

१. जमनालालजीका कानका ऑपरेशन बम्बईमें हुआ था, उस बारेमें गांधीजीने पूछा है।

: १४४ :

२३–८–३४

चि. ओम उर्फे सोती सुंदरी,[1]

तें ठीक कागळ मोकल्यो कहेवाय। अक्षर हजु वधारे सारा होवा जोईए। तुं सुवामांथी सीववा तरफ जाय छे एटले बिचारा दरजीओ हवे शुं करशे? पण एओने भयनुं कारण नहिं रहे केम के थोडाज दीवसमां तु संचा उपरज सुती जोवामां आवशे।

तारा कलाक मदालसा रोज हजु भर्या करे छे ने बीजो धंधो तो हवे शो होय एटले माखीओ उडाडे छे।

कागळो बरोबर लख्या करजे। हजु वातो वहु करवा न देती। आवे एओने जानकीबहेन वातो करावे। एने वातो कर्या विना तो चाले एम छेज नहिं। ने तेमांतो तुं सहेजे भळी शके पछी काकाजीनी साथे वातो करवानुं शुं होय?

मारुं वजन आजे राधाकिसने लीधुं ९८ थयुं एम वध्या करशे तो क्यां लगी जवाशे ए तो कोण जाणे?

तुं रामायण बरोबर गाय छे के? सुमित्रा लक्ष्मणना संवाद खरेज हृदयद्रावक छे। पण एवा संवादो तो रामायणमां खूब भरेला छे।

तुं केटले वागे उठे छे?

गोपी आजे वळेवने खातर जबलपुर गई। पाछी जलदी आववानुं कह्युं तो छे। गजाननना कागळ पण आव्या करे छे।

बापुना आशीर्वाद

: १४५ :

२५–८–३४

चि. ओम,

तारा कागळ मळे छे। अक्षर मने जोईए एवा तो नहिंज पण ठीक छे। किसन मळी जाय छे के?

१. १९३३ में गांधीजीके हरिजन दौरेके समय ओम उनके साथ थी। उस समय उसकी उम्र १३ वर्षके लगभग थी। स्वभाव व शरीरसे मस्त होनेके कारण यात्रामें जब कभी समय मिल जाता वह झटसे सो जाती। इसीसे गांधीजीने उसका नाम 'सोती सुंदरी' रख दिया था।

रोज लखवानुं तो घणुंए मळे। में क्यां नथी सूचव्युं ? कोण कोण आवे छे ? खावानुं शुं आपवामां आवे छे ? ऊंघ केटली लेवाय छे ? ओछी होय तो तारी शक्ति तुं आपे छे के नहिं एवुं वधुं तो लखीज शके। रोज रामायण वांचती होय तो शुं वांचे छे ए पण लखाय।

बापुना आशीर्वाद

: १४६ :
अ

२९–८–३४

चि. ओम,

तुं जबरी छो। मारवाडी तो सरस लखती जणाय छे। मारवाडीमां ने गूजरातीमां बहु फरक नथी। कोई तो कहे छे के गूजराती मारवाडीमांथी नीकळी छे ने हवे मारवाडीने आंटी देय छे। तेथीज तें मने दत्तक बाप[1] बनाव्यो छे ना ? मदालसा उभी उभी तारी टीका करे छे के तें मारवाडी सरस नथी लख्युं। पण जेवो परीक्षक तेवीज परीक्षा होय ना। ने वळी मदालसा क्यांनी मारवाडी शिक्षिका के परीक्षिका बनी छे ? एटले मारवाडीमां तुं पास छो।

बापुना आशीर्वाद

: १४७ :
अ

२–९–३४

चि. पंडिता[2] ओम,

आ वखतना कागळमां तो तें सरस बोध आप्यो छे। पण तारा बोध प्रमाणे तुं चाले छे खरी के? जो हुं आराम न लेतो होउं जतन न करतो होउं तो दर रोज अरधा रतलने हिसाबे वधुं के? जे रीते काम

१. गांधीजी ओमसे खूब मजाक किया करते थे। ओम भी गांधीजीके साथ बिना किसी झिझकके मजाक करती। ऐसे ही मजाकमें ओमने कहा था कि गुजराती मारवाडीमेंसे निकली है और इसलिए गांधीजीको अपना 'दत्तक बाप' भी बनाया था।

२. 'परोपदेशे पांडित्यम' के अर्थमें गांधीजीने ओमको यह पदवी दी है। उसने गांधीजीको लिखा था कि उनको पूरा आराम लेना चाहिए, वजन बढाना चाहिए, आदि आदि। गांधीजी बच्चोंकी भी सलाह कई बातोंमें लिया करते थे और अपनी अक्लके मुताबिक सलाह देनेमें ओम कभी आगापीछा नहीं करती थी। इसलिए ही गांधीजी ओमको पंडिता कहा करते थे।

करतो तें मने जोयो छे एनी साथे अत्यारनी तुलना करे तो तुं मने आळसु ने उंवणसी गणे। साचुंज छे ना के तुं त्यां बेठी हेंगिग गार्डनमां आंटा मारे छे ने चापडा मारे छे। ने बदलामां थोडी काकाजीनी सेवा करे छे। हेंगिग गारडननी कथा तुं जाणे छे? आपणा जेवा गरीबने फरवानी ए जग्या नथी एवो मारो अभिप्राय छे। त्यां तो फक्कड माणसो जाय छे। हवे तुं जाय त्यारे जोजे ने मने लखजे के त्यां तें केटला गरीब माणसोने भाळ्या। हुं तो त्यां एक के बे वार जईने धराई गयो।

मारी पासे तो तें भले तारुं ज्ञान ठलव्युं। दत्तक बापना तो एज हाल थाय। पण काकाजीने भडकाव्या नथी ना?

तारा लखवामां भूल छे। काकाजीनुं वजन तुं १०४ बतावे छे। एने तो हुं चार दीवसमां कदाच आंटी दईश। तुं २०४ तो नथी सूचवती? रामायण तुं वांचे छे?

बापुना आशीर्वाद

: १४८ :

हरिजन आश्रम,
साबरमती,
१४-९-३४

चि. ओम,

तुं बापुजी पासे आवी गई एम प्रभावती लखती हती अने तुं वासीदुं, पाणी अने बापुजीनो मावो करवानुं एटलां काम तें लीधां छे एम पण प्रभावती लखती हती। वसुमतीबेन शाक करे छे, ते पण जाण्युं। अम्तुलसलाम तो छेज अने हुं जाणुं छुं के ते उपरनुं वासीदुं वाळे छे। अने निमु पासे पण जतां हतां।

तुं निमु पासे बे वखत सतार वगाडवा जाय छे। पण निमु तो लखे छे के हुं बे त्रण वखत बापुजी पासे जाउं छुं पण तुं एने शीखववा जती हशे।

मने तो अहिं श्री जमनालालजीनी कशी खबर नथी पडती। मने आशा छे के एमनी तबीयत सारी हशे। बापुजी लखता हता के ता. २० मीए ते वर्धा पहोंचवाना छे तो तेमनी तबीयत केवी छे ते तुं मने लखजे।

सौ. जानकीबेन मजामां हशे। सौ. गोमतीबेन तथा किशोरलालभाईनी तबीअत केवी रही ते लखजे। बधाने मारा आशीर्वाद। प्रभा लखे छे के गोमतीबेन बापुजी पासे आवे छे।

भाई रामदासने त्रण दिवसथी ताव नथी। आजे नबळाई पण स्हेज ओछी लागे छे। अहि गरमी पडे छे। वर्धानी जेवी हवा अहि नथी। सांजे ठंडक थाय छे।

लि.

बापुना आशीर्वाद

: १४९ :
अ

७–११–३४

चि. ओम,

तारा कागळनी आशा राखवी फोकट गणाय। में तने नथी लख्यो पण मारा स्मरणमां तुं रहेलीज छो। आ वखते तारुं आचरण मने मुद्दल नथी गम्युं। तारो कागळ पण नज गम्यो। तेमां खोटो बचाव हतो। मारी साथे आटला महीना फरीने तें शुं मेळव्युं? एनो हिसाब करीश? मने लखीश? कांग्रेसना समयमां एक छेडेथी बीजे छेडे जती तुं मने जणाई। ते दीवसनो तारो वेश? मारा दुःखनो ने मारा क्रोधनो पार न हतो। तें आपेलुं वचन पाळजे। कृत्रीम कदी न थजे। जेवी हो तेवी देखाजे। तारी सगाईनी वात चाली रही छे। तेमां तुं स्वतंत्रपणे तारा विचार जणावजे। साची रहेजे, साचुं विचारजे साचुं बोलजे। आटलुं तारा गजा उपरवट होय तो मारो त्याग करजे।

चोख्खे अक्षरे लखाएला तारा सविस्तर कागळनी राह जोईश।

बापुना आशीर्वाद

: १५० :

११–१–३५

चि. ओम,

तारुं आळस क्यारे काढशे। तारा कागळमां मोतीना दाणा जेवा अक्षर नथी। लांबा कागळमां खबर तो कंईज नथी आपी। मने हजु लागे छे के कान मुंबई जई एक वार देखाडी दीधो होय तो सारु। अहीं टाढ ठीक पडे छे। अमे तो वगडामां पडघा जेवुं लागे छे। सरस छे। लोकोने मळवानुं बहु रहे छे तेथी काममें पहोंचातुं नथी।

मदालसाने कहेजे ए लखे। एनो खोराक शो चाले छे? वजन शुं छे?

बापुना आशीर्वाद

महेरताज तने मने बधाने भूली गई छे। दा. अनसारीने त्यां मजा करे छे।

: १५१ :
अ

(तारीख ?)

चि. ओम,

आ खातां खातां लखुं छुं एटले सीसापेन थी।

खातां लखवुं कुटेव छे। सीसापेनथी लखवुं पण कुटेव छे। एनी नकल न करती।

कान तने हजु पीडतो लागे छे। तारे मुंबई जवुं जोईए।

तार करवा धारुं छुं। मदालसानुं पण लखजे।

बापुना आशीर्वाद

: १५२ :
अ

मगनवाडी, वर्धा,
८-११-३५

चि. ओम,

तारो कागळ घणा दिवस राह जोवडाव्या बाद आव्यो खरो। तने ठपको थोडोज लखी शकाय एम छे? तुं जेटलुं आपे तेटलुं स्वीकारी लउं छुं। आनंद मानवो रह्यो। तारे विषे अंबुजम पण वारंवार खबर आपे छे।[1] त्यां तने सुंदर अनुभव मळी रह्यो छे, तेनो पूरेपूरो लाभ लेजे। अंग्रेजी तो उत्तम करशेज। त्यांनुं संगीत पण बहुज सरस गणाय छे। ए बरोबर शिखी लेजे। तामील तो शिखशेज एवी आशा राखुं छुं, अने त्यां हिंदीनो प्रचार करशे एवी पण आशा राखुं छुं। चरबी पण ओछी करजे। टुंकामां एटले दूर जईने बेठी छो तो मोटुं पण एकाक्षरी नाम राखे छे तेने शोभावजे। जेना

१. ओम दक्षिण भारतमें मदनपल्लीमें वियोदया स्कूलमें पढने गई थी। श्री. अंबुजम्मा वहांकी मुख्य अध्यापिका थीं।

नामथी कल्याण थाय छे एम शास्त्रो कहे छे, ए नाम राखीने तुं बेठी छो तो एनो कंई अर्थ हशे ना? एटले ए अर्थ तुं साचो पाड एम हुं इच्छुं छुं। एने लगता केटलाक गुणो तो तारामां छेज। थोडा वधारे आवी जाय एटले जग जीत्या। तने एक बीजी खबर न होय तो आपुं। जेम महाराष्ट्रमां तेम तामीलनाडमां संस्कृतना उच्चार घणा शुद्ध करवामां आवे छे। महाराष्ट्रमां उच्चार छे पण एटलुं उत्तम संगीत नथी। तामीलनाडमां तो मंत्रो विगेरे मधुर अवाजथी अने सूरमां गवाय छे। अंबुजमनी मारफते ए तुं मेळवी शकशे। आ बधुं स्हेजे मळे एवुं छे। एनी पाछळ घणो वखत आपवो पडे एवुं कशुं नथी। आ वर्ष तारे सारु मंगळदायक निवडो। आरंभ कर्यो छे एटले कागळ वखतो वखत लख्या करजे।

बापुना आशीर्वाद

: १५३ :

वर्धा,
२७–११–३५

चि. ओम,

तारो कागळ मळ्यो। शिक्षिकाओ छोकरी साथे अंग्रेजी सिवाय बोलीज न शके ए मने तो असह्यज लागे छे। ए विषे तारे विनयपूर्वक संचालकोनी पासे थोडुं निवेदन करवुं जोईए। एम शा सारु ए लोको करे छे? तारो कागळ ठीक छे। तने तो एवी वस्तुथी टेवाई जतां वार नथी लागती। त्यां जे कंई सारुं छे तेनो संग्रह करजे, त्याज्य छे एनो त्याग केळवजे।

बापुना आशीर्वाद

: १५४ :
अ

लखनऊ,
३०–३–३६

चि. ओम,

हुं जाणुं छुं के मारी मांदगी- तने नहीं लखवानुं सरस बहानुं मळ्युं छे। पण तुं जाणे छे के तारा कागळ मने बोजारूप नज थाय। एम कागळो लखती थाय तो तुं 'सुती सुंदरी' मटी जाय ना?

आ कागळ लखवानुं कारण तो ए छे के त्यां तुं आनंदमां नथी रहेती, घर सांभरे छे ने कोईवार आंसु पण ढाळे छे। एवी नाजुक क्यारथी थई? आपणे तो ज्यां रहीये त्यां घरज छे। छेवटे तो आ जगतमां 'चंदरोज' ना मुमाफरज छीये ना? में तो ए भाग नथी जोयो पण कहे छे के हवा सरस छे ने सुंदर पण तेवोज छे। श्री. डंकनने मळी हशे। त्यांनुं वर्णन आपजे।

काकाजी, मदालसा बधा साथेज लखनऊमां छीए। त्रीजी तारीखे अल्लाहबाद जईशुं ने पाछा आठमीए घणा भागे आवशुं। १५ मीनी आसपास वर्धा पहोंचवानी आशा छे।

मारी तबीयत हवे सारी गणाय। हरिजन सेवक मेळवे छे? हवे तो इंग्रेजी पण बरोबर समजती हशे।

बापुना आशीर्वाद

: १५५ :
अ

सेगांव, वर्धा,
११-७-३६

चि. ओम,

मारे अहिंया नानकडी पुस्तकशाळा काढवी छे तेमां मराठी पुस्तको जोईए। तारी पासे, मदालसा पासे के हरकोईनी पासे नाना मराठी पुस्तको जेनं त्यां हाल काम न होय एवां होय ते मने मोकली देजे। शिखवाना अने वांचवाना। अहियानुं काम चालशे नहि तो ए पुस्तको जेनां हशे तेने पाछां मळशे। अहियानुं काम चालशे तो अमुक मुदत पछी ए पुस्तको पाछां मळशे। ओछामां ओछी मुदत ए छ महिना। अने जे पुस्तको आपी शकाय ए आपी देवाना छे। आपी देवाना होय एनी मने यादी मोकलवी। दस रुपीयाथी वधारेनी लायब्रेरी मारे नथी करवी। एटले तने ख्याल आवी जशे के मारे कई जातना पुस्तको जोईए। मराठी छापां कोईनी पासे रहेता होय तो ते पण त्यां उपयोग थई गयो होय त्यार पछी जोईए। आमां मोटा दाननी वात नथी। मोटेरांओने डोळवानी पण वात नथी। पण तारा जेवा थोडीक गामडिया प्रति दृष्टि राखे तो ते आवां आवां काम सहेजे करी शके। आटलुं चीवट राखीने करजे। एमां रस न आवे तो बेधड़क थईने ना लखी मोकलजे। एटले वळी बीजे ठेकाणे करशरीश।

बापुना आशीर्वाद

: १५६ :

सेवाग्राम 1-11-40 سیواگرام
वर्धा होकर (मध्यप्रांत) براہ وردھا (سی۔ پی۔)

चि. ओम उर्फ सोती सुंदरी
खत लिखकर बड़ी महेरबानी
की? मेरे नामसे भी नन्दादेवी इ.
को प्रणाम करना. अब तो तू
पहाड़ोंमें रहनेवाली बनी! हम
लोगोंको याद करती है यह कुछ
छोटी बात नहीं है; तुम सब खुश
रहो. बापूके आशीर्वाद

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

सेवाग्राम,
१–११–४०

चि. ओम उर्फ सोती सुंदरी,

खत लिखकर बड़ी महेरबानी की? मेरे नामसे भी नन्दादेवी इ. को प्रणाम करना। अब तो तू पहाड़ोंमें रहनेवाली बनी![1] हम लोगोंको याद करती है यह कुछ छोटी बात नहीं है; तुम सब खुश रहो।

बापूके आशीर्वाद

: १५७ :

सेवाग्राम,
२–९–४१

चि. ओम,

आखरमें खत लिखनेकी तकलीफ उठाई सही। अब तो काकाजी आहि जांयगे। और कितना और कैसा नया अनुभव लेकर। तेरी जगह ऐसा वर्णन

१. ओम शादीके बाद इन दिनों नैनीतालमें रहने लगी थी।

देती हैं कि दिल चाहता है कि मेरे सब मरीजोंको तेरे पास भेज दूं। सिर्फ जानकीदेवी और मदालसा नहिं? क्यों?

दोनोंको

बापुके आशीर्वाद

: १५८ :

पूना,
१२-१०-४५

चि. ॐ,

तारो कागळ मळ्यो। अक्षर अस्वच्छ करीने माफी शाने मागवी? अक्षर खराब नज करवा।

बेबीनो मूक संदेशो मळ्यो। 'एमनां' कोण? नाम लेवामां शरम राखे ए तो अबलापणनी सीमाज कहुं ना? भामो तुं मोकल तो कोई पसंद करुं।

सुशीलाबहेन आवी गई छे। एनुं काम सरस थयुं।

बापुना आशीर्वाद

: १५९ :

सेवाग्राम,
८-७-४२

चि. जगदीश और चि. चन्द्रमुखी,

चि. कमलनयनने जानकीबहन मार्फत तुम्हारे लिये आशीर्वाद मांगे हैं। मैं कैसे इन्कार करूं? मैं सुनता हूँ कि तुम्हारे विवाहमें अमर्यादित खर्च हुआ है। मुझे तो यह पसंद नहीं है। बहुत जीओ, सुखी हो और साथ साथ हर कार्यमें गरीबोंका ख्याल करो और उनकी सेवा करो।

बापुके आशीर्वाद

नक़ल परसे लिया गया)

: १६० :

चि. रामकृष्ण,

दीर्घायु होना

और पिताजीका

नाम रखना।

बापुके

२२ ९/३९ आशीर्वाद

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

सेगांव,
२२-९-३९

चि. रामकृष्ण,

दीर्घायु होना और पिताजीका नाम रखना।[1]

बापुके आशीर्वाद

१. सोलहवें जन्म दिनपर आशीर्वाद।

: १६१ :

SEVAGRAM,
WARDHA (C. P.),
12-4-41

DEAR SIR,

Shri Ramkrishna Bajaj, ex-student, son of Seth Jamnalal Bajaj will offer C. D.[१] on Tuesday 15th instant at 8 a.m. from Gandhi Chowk, Wardha, by reciting the usual anti-war slogans.[२]

Yours sincerely,
M. K. Gandhi

DEPUTY COMMISSIONER,
WARDHA

(नक़ल परसे लिया गया)

१. Civil Disobedience.

२. रामकृष्णने १९४१ में व्यक्तिगत सत्याग्रहमें भाग लेनेके लिये गांधीजीसे इजाजत मांगी थी। उसकी उम्र १८ वर्षसे कम होनेसे गांधीजीने तीन दिन तक उसकी पूरी परीक्षा लेनेके बाद उसको सत्याग्रह करनेके लिये विशेष अनुमति दी। इसीसे उसके बारेमें वे बराबर विशेष दिलचस्पी लेते रहे। बल्कि डी. सी. को भी उपरोक्त पत्र उन्होंने खुद ही लिख भेजा। सत्याग्रह करनेके पहले दिन उन्होंने रामकृष्णको अपने पास सेवाग्राममें ही सुलाया। सोनेके पहले उन्होंने उसे बुलाया और उसके पकड़े जानेपर कोर्टमें देनेके लिये एक वक्तव्य जो उन्होंने खुद ही बनाया था उसे पढ़कर सुनाया और विस्तारसे समझाया। बादमें यह भी कहा कि यदि तुम इसमेंसे कोई बात नहीं समझे हो या किसी बातसे सहमत नहीं हो तो बताओ जिससे उसे बदल दूं। गांधीजीका बनाया हुआ यह वक्तव्य नीचे दिया जाता है :—

Sir,

Mine is a case somewhat out of the ordinary. I am an ex-student. It is necessary to mention this fact in these days of anarchy that prevails in the student world. Though I am under eighteen I have known enough of the student world and the world outside to realise the necessity of discipline in everything. In the step I have taken I have therefore obtained the blessings of my parents and other elders. Under my parents I have had practical training in non-violence in

[आगे पृष्ठ पर चालू]

: १६२ :

21-6-41

DEAR SIR,

With reference to your letter of 16th instant, I have to state that my sons are no longer members of a joint family. Each has his own means. But since there are funds with me belonging to my son Ramkrishna, I send you herewith notes for Rs. 300 being the total fines inflicted on him. [1]

१. यह पत्र वर्धाके डिस्ट्रिक्ट मेजिस्ट्रेटके जमनालालजीको लिखे १६-६-४१ के पत्रका उत्तर है। डिस्ट्रिक्ट मेजिस्टेटने लिखा था कि रामकृष्णको डिफेंस ऑफ इंडिया एक्टके मातहत ३०० रुपया जुर्मानेकी सजा हुई है। इसकी वसुलीके लिए दुकान परसे कुछ सामान उठा लिया गया था। पर यह उज्र किये जाने पर कि वह सामान रामकृष्णका नहीं है सरकारने उसे लौटा दिया। अंतमें यह चाहा गया था कि जुर्मानेका रुपया अदा कर दिया जाय। उपरोक्त पत्रका मजमून जमनालालजीके लिए गांधीजीने स्वयं बनाया था। मजमून बनानेके बाद मार्जिनमें गांधीजीने यह शंका प्रकट की:—

"आ पैसा मोकलवानुं परिणाम ए तो नहिं थाय के रा० कृ० छुटी जशे ?"

[पिछले पृष्ठसे चालू]

every detail of life. I have just finished my matriculation examination. I began school work rather late in life. My parents had stopped our regular school work during the non-co-operation days of 1920 when I was not even born. My parents have brought us all up in a free atmosphere. And so when I was minded to go to school and go through the ordinary training, I was permitted to do so. When however the present struggle was started, my mind began to waver and I felt that the practical experience I should gain in the pursuit [illegible] of far greater value than [illegible] [illegible] of the masses [illegible] go through that course it is because it is the only one that has been in vogue for so many years and which serves the purpose of providing a status in life. Such is the fate to which we have been reduced through foreign domination. I have been attracted to the present struggle more for its moral worth than the political. I know that if India can present a completed example of non-violence India will have made a unique contribution to human progress. It is a vision that holds my youthful mind and I would count no suffering too great to achieve an end so noble and glorious.

: १६३ :

सेवाग्राम ३/२

चि. रामकृष्ण,

तुम्हारे मातापीता के पत्र सुंदर आते हैं। बारंबार पढ़ता हूं। तुम्हारी प्रगति के समाचार तो मिलते ही रहते हैं। मुझे आनंद होता है। आज समझा कि मैंने तुमको जीवन कहा था! इतना भी भी रहता है. तुम्हारे सवाल पूछे हैं। तुमने अंडरवेअर मंगाया है. मेरी सलाह है उसे छोड़ो। हमारी हवामें कोई नुकसान नहीं है लेकिन आदत है

गई है और छूट नहीं सकती है तो अवश्य रखो. हमारा धर्म तो है ना कि हम इच्छा पूर्वक कमसे कम खर्च करें और जीवन उच्चतम रखें. तुम्हारा सर्व प्रकारसे विकास किया करो.

बापुके आशीर्वाद
मो. क. गांधी

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि) सेवाग्राम,

चि. रामकृष्ण, २३-३-४५

तुम्हारे माताजी पर खत आते हैं बाझदफा पड़ लेता हूं। तुम्हारी प्रगतिके समाचार तो मिलते ही रहते हैं। मुझे आनंद होता है। आज समजा कि मैं भी तुमको लिख सकता हूं। इसलिये लिख रहा हूं। तुम्हारे खतसे मैंने देखा तुमने अंडरवेयर मंगाया है। मेरी सलाह है उसे त्यागो। उसकी हमारी हवामें कोइ जरुरत नहीं है। लेकिन आदत हो गई है और छूट नहीं सकती है तो अवश्य रखो।[1] हमारा धर्म तो है ना कि हम इच्छा पूर्वक कमसे कम खर्च करें और जीवन उच्चतम रखें। तुम्हारा सर्व प्रकारसे विकास किया करो।

बापुके आशीर्वाद
(मो. क. गांधी)[2]

[फुटनोट अगले पृष्ठपर देखिये]

: १६४ : शीमला,
१०-७-४५

चि. रामकृष्ण,

कोईना छुटवाथी मने अंतरमां हर्ष नथी थतो। तारा छुटवाथी थयो छे। तने तो लाभज थयो छे। सहुथी वधारे जेल तनेज सदी छे। जे अभ्यास तुं जेलमां करी शक्यो छे ए भाग्येज बहार करी शकत। मारो हर्ष तो जानकीबहनने खातर ने दादीने खातर। तेओ तारा विना ने राधाकिसन विना झूरतां हतां। मने बधी विगत साफ अक्षरे लखजे।

बापुना आशीर्वाद

: १६५ : पूना,
२३-१०-४५

भाई रामकृष्ण,

तुम्हारा पोस्टकार्ड बापूजीको मिला है। तुमने अखबारोंमें देखा होगा कि उनका बंगाल जाना आगे पड़ गया है। शायद नवम्बरके अखिर तक जाना होगा। वह समय तुम्हें अनुकूल होगा या नहीं, इसका पता नहीं। तुम आना चाहो तो तुम्हें बापूजीकी तरफसे इजाजत है। मांको मेरा प्रणाम कहना।

सुशीला ना
वं. मा.

: १६६ : सेवाग्राम,
१६-५-४६

चि. रामकृष्ण,

तुम लोग पश्चिममें जा रहे हैं।[३] उसका लाभ मुझे स्पष्ट नहीं है। लेकिन धोध चल रहा है उससे कौन बच सकता है? सोचो यहांसे क्या ले जाओगे और वहांसे क्या लाओगे। विद्यार्थी जीवनकाल विचार विकासका है।

बापूके आशीर्वाद

[फुटनोट १ और २ पिछले पृष्ठके हैं]

१. रामकृष्ण उस समय नागपुर जेलमें था। वहां वह सिर्फ अंडरवेयर पहनता था।

२. गांधीजीने सहीके नीचे ब्रेकेटमें अपना पूरा नाम भी लिखा है क्योंकि वे चाहते थे कि जेल अधिकारी रामकृष्णको यह पत्र पूरी जानकारीके बाद ही देवें कि यह उनका लिखा हुआ है।

३. रामकृष्णके अखिल भारतीय विद्यार्थी कांग्रेसकी तरफसे प्रतिनिधि होकर आंतरराष्ट्रीय विद्यार्थी कांग्रेसमें भाग लेनेके लिए प्राग, झेकोस्लोवेकिया, जाते समय।

: १६७ :

(नवाखाली यात्रामें)
१–१२–४६

चि. राम,

तू तो खूब अनुभव लेकर आया है।[1] अब उसका लाभ मुल्कको दे और निजी कामको भी दे। मैं यहांसे मुक्त हुआ तो मिलेंगे। यहां आनेसे कुछ लाभ नहीं है। माताजीको भी मैं नहीं बुलाना चाहता हूं। मैं अंधेरेमेंसे प्रकाशमें आ जाउंगा तब माताजीको बुला सकता हूं। वह बिलकुल अच्छी होगी और सावित्री।

बापुके आशीर्वाद

: १६८ :

नई देहली,
२७–१२–४७

प्रिय भाई रामकृष्ण,

तुम्हारा पत्र बापू अभी सुबहकी प्रार्थनाके बाद पढ़ सके। पीछे मुझे जवाब लिखनेको कहा। वे कहते हैं अब पूछ पूछ कर कहां तक चलोगे। जिस समय जैसे हृदय कहे वही उस वक्तका धर्म है। विलायती कपड़े उन्हें तो खटकेंगे। जो खादीका अर्थ और महत्व समझते हैं वे तो न विलायती इस्तेमाल करेंगे, न मिल या अप्रमाणित खादी। मगर हरेक व्यक्ति अपने लिये खुद सोचे। माता पिताका धर्म भी लडकोंका धर्म होना आवश्यक नहीं।[2]

तुम और विमला कुशल होंगे। बहुत शक्कर नहीं खाना।

दोनोंको मेरा स्नेह स्मरण।

सुशीला

१. विलायतसे लौटने पर।

२. आजादीके बाद राष्ट्रीय सरकार खुद विलायती कपड़ा मंगाती है ऐसी हालतमें खादी, अप्रमाणित खादी, मिल व विलायती कपडोंमें क्या अंतर है यह पूछने पर। गांधीजीने इस पत्रका जवाब ११-१-४८ के हरिजनमें भी दिया है।

भाग ३

महात्मा गांधी तथा जमनालालजी संबंधित अन्य पत्र-व्यवहार

: १ :

ON WAY TO BHUSAVAL,
May 20 (1921)

DEAR FRIEND,

I had six interviews with H. E. the Viceroy[१]. There was nothing new said by us. I put before him the three questions, and suggested three Committees for finding a solution of the three questions. He is not likely to adopt the suggestions just yet. But I think we should assist him to understand the situation.

I suggested to him that he should see other non-co-operation leaders as he had seen me. He liked the idea, and said that he would gladly give appointment to all who asked for it. Lala Lajpat Rai has already waited upon H.E. He gave him the reason for his having joined the movement and dealt chiefly with the Punjab question. Will you apply for an interview and place before the Viceroy the reasons for your being a non-co-operator? If you propose to seek an appointment you may mention if you like that I had made the suggestion and told you that the Viceroy would be glad to see you if you would seek an interview.

My suggestion does not necessarily mean that you should yourself go. You may select anyone else you like or send in another name with yours. Nor is this letter to be taken to mean that I want you necessarily to go. You shall be the sole judge.[२]

Yours sincerely,
M. K. Gandhi

(नक़ल परसे लिया गया)

१. लार्ड रीडिंग।

२. गांधीजीने कुछ खास व्यक्तियोंको, जिन्होंने असहयोग आंदोलनमें भाग लिया था, यह गश्ती पत्र भेजा था। इसकी एक प्रति उन्होंने जमनालालजीको भी भेजी थी।

: २ :

SABARMATI,
August 9, 1924

DEAR MOTILALJI,

I promised to write to you an important letter, but I have not been able up to now. I was ready four days ago when I received Mrs. Naidu's letter informing me she was coming here. I therefore stopped the letter pending her arrival. I wanted to say that I was prepared to facilitate your securing the Congress machinery actually assisting you to do so. In no case will I be party to vote-catching in the sense it is being understood at the present moment. I would be prepared to work outside the Congress but not in opposition to it. I have no interest in anything but promoting a peaceful atmosphere, Khaddar and Hindu-Moslem unity and removal of untouchability. In all this I know I should get your assistance. I would naturally have an organisation for that work but not with any desire whatsoever to capture the Congress ultimately. I would not like to waste the nation's time in wrangling over getting a majority in an atmosphere such as is prevalent today.

If you are not prepared to take over the whole of the Congress machinery I am quite prepared to facilitate your taking over those provinces where you think you have no difficulty in running it.

Sho..........................ing into your programme, I would like to place myself at....................

............of the Congress President. .... ing the of...........Vallabhbhai and Shankerlal app........... accepting. Jamnalalji is neutral and so is pe................. Mrs. Naidu.......................to say that Shaukat Ali too is insistent that I should accept the office. The only condition that will make me reconsider my position would be your desire that I should accept. Will you please consult Messrs. Das, Kelkar and others and let me know what you

will advise me to do in both the matters referred to by me?

I have read this letter to Mrs. Naidu.[1]

Yours sincerely,
M. K. Gandhi

(नक़ल परसे लिया गया)

: ३ :

WARDHA,
15th Dec., 1925

DEAR FRIEND,

I am glad to inform you that Mahatmaji has come here and is having complete rest as desired by you. He proposes to stay here till the 21st inst. and then to proceed to the Congress. I hope he will profit by his stay here as perhaps he would not have done elsewhere.

१. पंडित मोतीलाल नेहरूके नाम लिखे गये इस पत्रकी नक़ल गांधीजीने जमनालालजीको भी भिजवाई थी।

पं. मोतीलालजीका उत्तर मिलने पर गांधीजीने साबरमतीसे ता. १५–८–१९२४ को फिर उन्हें लिखा :—

"I thank you for your letter.

I am sharing with you my whole soul.

The more I think of it the more my soul rises against a battle for power at Belgaum. But I do not want to be mixed up with the *Councils programme*. This can only happen by Swarajists manning the Congress or their not acting upon the Congress. I am quite willing to follow whichever course commends itself to you and our friends. With me in the Congress, the Councils, etc., should remain out of it. Then I can assist you. Or, with them in the Congress, I must be practically out of it. I would then gladly occupy the place I did from 1915 to 1918. My purpose is not to weaken the power of the Swarajists, certainly not to embarrass them. Show me the way and I shall try my best to suit you. If there is anything not quite clear in this, please ask.

I am off to Delhi tomorrow in reply to Mahomed Ali's wire."

I have begun to feel that it is essential for Mahatmaji to stay in the Ashram at Sabarmati for about 6 months or even a year after the Congress for the following reasons:–

1. He must repair his dilapidated constitution. I am strongly of opinion that the country should take no work from him until he sits down for a while for some rest and completely recuperates himself. I would personally insist on his prolonging his stay at Wardha for three months more and directing the work of the A. I. S. A. from here by correspondence and consultations. If necessary thereafter he might go to Sabarmati.

2. The stay at Sabarmati is essential for obvious reasons. The A. I. S. A. is in its infant stage and I believe that the direct guidance of Mahatmaji is very necessary for the efficient organisation of the Association which can best be secured by Mahatmaji staying at the place of the Head Office.

3. Tours in the different Provinces by Mahatmaji have, no doubt, their own value but we may no longer tap that source. Otherwise we might exhaust it without doing much good to ourselves. We must remember that the programme before us today is the production and sale of Khaddar on a large scale which is not possible without concentrated action. I think that *we workers* should take to this programme more seriously and should achieve some concrete results before asking Mahatmaji to tour in the Provinces. He should be invited to inspect the results of our concentrated efforts and to give further guidance if necessary. During the period of concentrated work, we can have his suggestions by communications with him at Sabarmati.

4. There remains the important consideration of the Deshbandhu Memorial. I dare say Mahatmaji's tour would get more funds for this Memorial than anything else. But even in this matter I think we had better begin to learn to depend more on ourselves. Mahatmaji of course is always worrying about the Memorial but we should be able to assure

him that we would leave no stone unturned to collect as much as we can. The following persons including myself should begin that work in right earnest immediately after the Congress:—

(1) Syt. C. Rajagopalachariar
(2) ,, Vallabhbhai Patel
(3) ,, M. Kothari
(4) ,, Gangadharrao Deshpande
(5) ,, S. Banker
(6) Babu Rajendra Prasad
(7) Pandit Jawaharlal Nehru

I have had a talk with Mahatmaji on these points and he is agreeable to staying at the Ashram if he gets the approval of the workers.

You will kindly send an early reply to this here so that Mahatmaji may be able to decide his further programme and announce it after the Congress.[1]

Yours sincerely,
Jamnalal Bajaj

(नक़ल परसे लिया गया)

: ४ :

SATYAGRAHASHRAM,
SABARMATI,
Jan. 18th, 1926

MY DEAR BROTHER,

(As we have the same Father, you will allow me to call you brother?)

Many thanks for your post card. I will gladly write to you once a fortnight and give you news of Bapu. But

१. जमनालालजीने साथी कार्यकर्ताओंको कानपुर कांग्रेस (१९२५) से पहले यह गश्ती पत्र भेजा था।

just at present don't ask me to write in Hindi ! I cannot write a letter in Hindi so quickly as in English and as I have very little spare time it is best that I should write in the quickest way possible.

I am glad to say Bapu is now much better. When we first returned here he had a bad cold, and during the first week he made very little progress in his health. But this second week has been much better. The first week he gained only 1/2 pound in weight, but this week he has gained nearly 2 pounds.

He is very strict with me, now that we are back here, and will not let me do anything for him personally except look after his spinning wheel ! He says I must get on as fast as I can with my own work, and I shall not be allowed to help him any more until I know Hindi, Spinning, Cooking, etc., thoroughly well. So of course I am working as hard as I can ! I have now started doing all my own cooking, so you can imagine how busy I am.

It is very nice having Vinoba here, and I am sure it is a help to Bapu. Devadas and Krishnadas are both away, and it makes us very short-handed. Vinoba is giving Bapu spinning lessons, and he has reached the record of 121 yards in half an hour. I am also having lessons, and am improving in consequence.

I hope you are keeping well, and I look forward to seeing you here before very long. Please give my greetings to all the good friends in the Ashram, and my kindest regards to your wife.

Always sincerely yours,

Mira

: ५ :

ALLAHABAD,
7-12-1926

JAMNALALJI BAJAJ,
WARDHA

Your telegram. Please save Congress. Persuade Mahatmaji yourself attend with Rajagopalachari and other friends by whatever route you choose.

— *Motilal Nehru*

: ६ :

P. & O. S. N. Co.,
S. S. RANPURA
(1926-27)

MY DEAR MAHATMAJI,

I had a long talk with Seth Jamnalal. I confess that I have at times felt grieved and have expressed my differences of opinion with you rather clumsily. You know my faults very well and I also know them quite well. All the same it is literally true that of all the public men in India I honour and love you the most. I have full faith in your friendly love and trust you as I trust no one else. In fact I shall consider it an honour if you will occasionally rebuke me for my mistakes and shortcomings. I shall never take them in any but a friendly spirit. The two days I had at Bombay I was miserable. I still feel very much tired. It is awfully warm here on board the steamer. I am doing no work and am taking life easy.

With love,

Yours sincerely,

Lajpat Rai

My address in London is:
C/o H. S. L. Polak, 265, Strand, W.C. 2.

: ७ :

"KUMARA PARK",
BANGALORE,
August 9, 1927

DEAR FRIEND,

I have your letter. I am sending it to Seth Jamnalalji and asking him to go into the matter carefully and do whatever he thinks just and possible. Beyond that, I must not influence him.[1]

Yours sincerely,
M. K. Gandhi

Copy forwarded to Seth Jamnalalji together with the original letter for favour of disposal.

A. Subbiah

(नक़ल परसे लिया गया)

: ८ :

[गांधीजीसे मालवीयजीके बारेमें किसीने शिकायत की थी कि वे कांग्रेसके निर्णयके विरुद्ध कार्य कर रहे हैं। इस विषयमें स्वामी आनंदको साबरमतीसे २५–१–३० को लिखे गये गांधीजीके पत्रका निम्न अंश जमनालालजीके लिए था जो उनको स्वामी आनंदने २९-१-३० को भेजा था।]

"तमारो कागळ मळ्यो छे। मालवीजी कया प्रकारनुं आंदोलन करी रह्या छे ए हुं जाणतो नथी। पण जो ए कांग्रेसनी विरुद्ध आंदोलन करता

१. नागपुर तिलक विद्यालयको सहायता देनेके लिए उसके अध्यक्ष श्री. ई. एस. पटवर्धनने जमनालालजीको लिखा था। पर उनके पास सफलता न मिलने पर श्री. पटवर्धनने गांधीजीको लिखा कि वे जमनालालजीको इस विषयमें कहें। उपरोक्त पत्र इसके उत्तरमें लिखा गया है।

होय तो अस्पृश्यता समितिमां ए कोई पण होद्दो न राखी शके ए विषे मने मुद्दल शंका नथी। मालवीजीनुं कांग्रेस विरोधी भाषण वांचीने जमनालालजी तेमने मोकले अने पुत्र जेम पितानी पासे शंकानुं निवारण मागे तेम समितिमां तेमना रहेवा विषेनी योग्यतानी शंकानुं निवारण मागे। मालवीजीने आवा प्रश्नोथी दुःख थतुं नथी अने थतुं होय तो तेने दबाववानी एमनामां भारे शक्ति छे। मारी समज एवी हती के तेओ कांग्रेसनी विरुद्ध तो आंदोलन नहिज करे। आ बाबतनो फडचो तुरत करी लेवानी आवश्यकता छे।"

: ९ :

[साबरमती आश्रममें गांधीजी बहनोंका वर्ग लेते थे। श्री. जानकीदेवी भी उस वर्गमें जाती थीं। गांधीजी उनसे शुद्ध लेखन आदि लिखवाते थे और उसे खुद ही दुरुस्त करके रोज नंबर भी दिया करते थे। इस प्रकार दुरुस्त की गई नोट-बुकमेंसे एक पृष्ठ यहां दिया जाता है।]

(१९३०) ?

देवयज्ञ — देवयज्ञ जहाँ देवकी प्रार्थना हो देवचर्चा जिस कार्यमें देवकी भावना हो देवताओंका गुणानुवाद हो नकि मनबांधरण

पितृयज्ञ — पुर्वजोंके गुणोंका आचरण लेनापिओंके मादृशके अनुयायी गुणग्राहि नकी सराध वगैरे

भूतयज्ञ — प्राणी मात्र पर दया और प्यार सहित नकि एकको सुख करे दूसरेको दुःख हो

मनुष्ययज्ञ — सम और अतिथिसेवा जैसे रति रेम का व्यवहरण नकि धूर्तोंकी सेवा

ब्रह्मयज्ञ — वेदाध्ययनसे ब्रह्मको जानना नकि पाखंडी मोहित

अक्षरो अच्छे होने चाहिये

३०

: १० :

SATYAGRAHASHRAM,
SABARMATI,
March 9, 1930

DEAR RAJAJI,

Anna and Sjt. Satyanarayana arrived here the day before yesterday to ask for a grant of Rs. 15,000 from Bapuji for Hindi work: Rs. 6,000 for the press and Rs. 9,000 for meeting other expenses for the current year. They say that they have been sent here by you. Both Jamnalalji and Bapu strongly feel that having once agreed not to depend for funds for carrying on their work on the North, Anna and Satyanarayana have now no right to ask for the grant. But Bapu thinks that under the existing circumstances a grant of Rs. 15,000 may be made, in case you consider it to be necessary, on the strict understanding that this is to be regarded as the very last grant of its kind. Both Jamnalalji and Bapu are positive that Hindi propaganda work in the South must be placed on a self-supporting basis. While laying out plans for future work, therefore, they would like the conditions accompanying the present grant to be constantly kept in mind and the programme to be so regulated that it should be capable of being managed without outside support.[1]

Yours sincerely,
Pyarelal

P. S. The amount will be remitted to you by Jamnalalji on hearing from you.

(नक़ल परसे लिया गया)

१. इस संबंधमें पृष्ठ ५७ पत्र-संख्या ६२ भी देखिये।

: ११ :

BORSAD,
June 13, 1931

MY DEAR BHUPEN,

I have your letter. I am glad you have written to me so frankly and freely. It is difficult for me to find the assistance that you need. I thought you had attached yourself to the Abhoy Ashram. In any case I would advise you to see Jamnalalji when he comes there which he expects to do next month.

You must make up the lost weight. 30 lbs is a big drop.

Yours sincerely,
M. K. Gandhi

SRI BHUPENDRA NARAYAN SEN,
BARADONGOLE, HOOGLY

(नक़ल परसे लिया गया)

: १२ :

AHMEDABAD,
August 21, 1931

DEAR FRIEND,

I have your letter for which I thank you.

I did not say to Dr. Ambedkar that Congress had spent 20 lacs of rupees on behalf of the depressed classes. But I did say that about that sum was spent on behalf of the Congress or by Congressmen. He challenged this statement and I then promised that I would have the figures collected and published, which I propose to do as soon as I have collected them. As monies were distributed by different agencies it may take a little time. The public will be astonished when they see the figures. I was never in doubt as to the amount of work done through the Congress agencies in this matter and so I never troubled to collect statistics. But Dr. Ambedkar's disbelief naturally set me thinking.

Your letter enforces the necessity of publishing them. I enclose herewith a pamphlet issued by the Anti-Untouchability Committee of its activity.[१]

Yours sincerely,
M. K. Gandhi

SYT. L. M. SATOOR
99, MAIN STREET, CAMP POONA

Copy to Seth Jamnalal Bajaj

(नक़ल परसे लिया गया)

: १३ :

मार्सेल्स,
१०–९–३१

पू. वल्लभभाई,

शौकत पोर्ट सेडथी भेगो थयो। एनी साथ वातो घणी थई, पण एनुं परिणाम नहीं जेवुं आव्युं छे। ए माणसे तो सरकारने पूरेपूरा हाथ कापी आप्या छे एवुं स्पष्ट बापुने जणाई गयुं छे। अमुक तो तमाराथी नज मागी शकाय, अमुक safeguards तो स्वीकारवाज जोईए, independence नी तो वात नज करवी जोईए, नहीं तो मुसलमानो तमारो साथ नहीं दे इ. इ. वातो बापुने संभळावी! वळी बापुने कहे तमे, मोतीलाले अने जवाहरलाले अमने गण्याज नथी, अमारा विना चलावी लेवाशे एमज वात करी छे अने एमें कह्युं छे के अली-भाई न आवे अने गमे ते बे मुसलमान मारी साथे हशे तो पण चालशे। एना वहेमो अने शंकाओनो पार नथी। एटले संघ शी रीते गोदावरी जशे तेनी खबर पडती नथी।

१. उपरोक्त पत्रकी नक़ल जमनालालजीको भेजते हुए स्वामी आनंदने, जो उस समय कांग्रेसकी अस्पृश्यता-निवारण समितिके मंत्री थे, लिखा था:—

"अस्पृश्यता निवारणके कार्यके निमित्त अब तक कांग्रेसकी ओरसे या कांग्रेस-वादियोंने जो २० लाखके लगभग रकम खर्च की है, उसके बारेमें पूज्य बापूजी एक स्पष्टीकरण प्रकाशित करना चाहते हैं। इस संबंधी जानकारी हमें इकट्ठी करनी चाहिए। हम कौन-कौनसी बातें इकट्ठी करें इस बारेमें आपको कोई सूचना करनी हो तो कीजिएगा। आप भी जो कोई जानकारी इकट्ठी कर सकें कीजिएगा। अन्य मित्रोंसे भी मैं कहूंगा।"

इजीप्तवाळाओए बहु मान आप्युं। यं. इं.[1] मां वधुं जोशो। जाणी जोईने यं. इं. मां में लांबा कागळ लख्या छे। न. जी.[2] मां भाषान्तर ठीक थाय तो सारुं। मने न. जी. माटे स्वतंत्र लखवानो समय नथी रहेतो।

आवती काले मार्सेल्स। त्यां कोई ब्रिटिश जनरल बापुने माटे आवकारनो खरीतो लईने आववानो छे एवुं सांभळ्युं छे!

लंडनथी वधारे बीगतो सोमवारे मोकलीश। आ कागळ जमनालालजीने मोकलशो? जूदो नथी लखतो।

लि. से.

महादेवना प्रणाम

: १४ :

88, KNIGHT'S BRIDGE,
LONDON,
Dec. 2, 1931

पूज्य जमनालालजी,

यहां पूर्णाहुति हो चुकी है। आज पार्लमेंटमें बहस होगी। कल बापूजी दुनियाको अपनी राय सुना देंगे।

अब नया काम मुसलमानोंको संतोष देनेका है। उनके यहांके कृत्य ऐसे हैं कि उसके लिए किसी दूसरे देशमें उनको सजा मिलती। लेकिन पूरी कौमकी कौमको सजा नहीं दी जाती। मैं तो समझता हूं कि अब हिंदुओंको – और बापूजीको खास – उनकी मांगोंको स्वीकार कर लेना चाहिए और इस प्रकार उनको पूरा संतोष दे देना चाहिए। इसका असर कभी बुरा न होगा। यहां मालवीजीने इस मामलेमें कमजोरी दिखलाई। बापूजी कहते थे कि अगर सिक्खोंने और मालवीजी तथा डा. मुंजेने सब कुछ उनके हाथमें छोड़ दिया होता तो वे समझौता करा लेते। समझौतेका असर चमत्कारिक होता। लेकिन अब भी आप जैसे लोग मुसलमानोंको संतोष दिलानेका वायुमण्डल पैदा कर सकते हैं। जुगलकिशोरजी बिरलाके कई तार बापूजीके पास आये कि आप जैसा चाहें समझौता मुसलमानोंके साथ कर डालिए, हिंदू आपके साथ रहेंगे। लेकिन नहीं हुआ :

१. यंग इंडिया। २. नवजीवन।

अंग्रेज तो जहां तक हो सकेगा अपनी हुकूमत जारी रक्खेंगे। लेकिन आम अंग्रेजों पर बापूजीका बड़ा प्रभाव पड़ा है। यहां भी प्रार्थनाके समय वैसी ही भीड़ रहती है जैसी देशमें। अंग्रेज मर्द औरत बड़ी भावनासे आते हैं और प्रार्थनामें सम्मिलित होते हैं। इसका बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ता है। बापूजीके साथ पुलिसवाले तो रहते ही हैं—सादे वेशमें। जेबमें पिस्तौल रखते हैं। एक पुलिसवाला बापूजीकी मोटरमें आगेकी तरफ बैठता है और दूसरे दो पुलिसवाले अलग मोटरमें रहते हैं। उनकी गाड़ी आगे-आगे रहती है। लन्दनमें सड़कों पर कभी-कभी बहुत देर तक गाड़ियां रुकी पड़ी रहती हैं। लेकिन पुलिसकी गाड़ियोंमें एक खास घण्टी रहती है जिसको बजानेसे सड़कका पुलिसवाला फौरन तमाम रास्ता खोल देता है। बापूजीके लिए इस घण्टीका काफी उपयोग किया जाता है। यह पुलिसवाले भी प्रार्थनामें शामिल होते हैं और कभी कभी अपने कुटुम्बके लोगोंको भी ले आते हैं। उनको भी बापूजीके लिए बड़ी भक्ति है।

यहां आनेके पहले हफ्तेमें मीरांबेन और बापूजीके नाम कई गुस्सेसे भरे खत आए थे – कुछ तो बहुत ही खराब थे। कुछ लोगोंने गंदी-गंदी कई पुरानी पतलूनें भेजी थीं। लेकिन उसके बाद वायुमण्डल साफ हो गया और अब एक भी अपमानजनक पत्र नहीं आता।

लेकिन हम सुनते हैं कि देशमें हालत बिगड़ रही है। बापूजीको उसीकी ज्यादा चिन्ता है। अगर वहां हालत न सुधरी तो जाते ही सत्याग्रह शुरू कर देंगे। बंगालमें जो नया ordinance हुआ है उसके जवाबमें बापूजी बड़ा आन्दोलन उठाना चाहते हैं। यहींसे उसको रद्द करानेकी मांग शुरू कर दी है। उसकी जडें अभीसे हिलने लग गई।

एक चित्र मेरा और प्यारेलालका भेजा है। दूसरा एक चित्र बापूजीका भी भेजा है। वह चित्र कई मित्रोंको भेजा है। उसका दाम श्री. घनश्यामदासजीने दिया है। आपने उन्हें चित्रोंके लिए लिखा था। उन्होंने मुझसे कहा है, मैं और भी भेजनेका यत्न कर रहा हूं। श्री. जानकीबाईको प्रणाम। यह पत्र चि. मदालसा इ. को दिखा दीजिएगा। एकाध बात उनके मतलबकी भी है।

आपका

દેવદાસ

: १५ :

य. मं.,
५–३–३२

चि. कृष्णदास,

तारो स्पष्ट कागळ मळ्यो। तारी पासे कंई खास काम हाल न होय, बालकृष्ण के जे तंत्री होय ते तने बचावी शके। तारी पण इच्छा होय ने जमनालालजीए विरुद्ध इच्छा न बतावी होय तो तुं विजापूर जाय ए सारुं होवानो संभव छे। बाकी तो मारी शिखामण जेलना झांपा लगीज समजवी। बहारना काममां जीव घालवानो केदीनो धर्मज नथी।

मदालसा ओम केम छे?

बापुना आशीर्वाद

: १६ :

यरवडा जेल, पूना,
२४–९–३२

पू. जानकीदेवी,

पूज्य बापूजीकी इजाजत मिल जानेसे मैं आज यहां आ गया। अभी उन्हींके पास बैठकर यह पत्र लिख रहा हूं। वे कमजोर तो काफी मालूम देते हैं, लेकिन चेहरा तथा शरीर तेजसे चमकता है। चेहरेपर खूब तेज है। खूब हंसते हैं। बातचीत भी करते हैं। श्री. सरोजिनीदेवी कुछ न कुछ हंसीकी बात करती ही रहती हैं। पू. वल्लभभाई व महादेवभाई भी यहीं हैं। पू. बा भी यहीं हैं। वे बहुत कमजोर हो गई हैं। पू. बापूजीसे आपके बारेमें बात हुई। मुझसे उन्होंने पूछा, "जानकीबहन नहीं आई?" मैंने उत्तर दिया, "नहीं।" वे बोले, "हां, वह कैसे आ सकती है?" मैंने कहा, "बुला लूं क्या?" पूज्य बापू, "क्या जरूरत है? हां, अगर उससे नहीं रहा जाय तो आ जावे।" इसके थोडी देर बाद ही पूज्य बाने पूज्य बापूजीसे आपका जिक्र किया। पूज्य बापूजीने उनसे भी कहा, "वह आती कैसे, डरती है।" और पू. बासे पूछा, "तुमको मालूम है कि वह हिंदीकी परीक्षा देने वाली है?" पूज्य बाने उत्तर दिया, "नहीं।" फिर मैंने उनसे पूछा कि अगर आप कहें तो बुला लूं। इसपर पूज्य बापूने कहा, "अगर उससे न रहा जाय और तबीयत घबडावे तो

आ जाय, नहीं तो वहीं काम करे।" यह आपके सम्बन्धकी बातें हुईं। अगर आपको आना हो तो Silko पर तार देकर मुझे खबर कर देना।

पू. बापूजीने पू. सेठजीको जब चाहे तब पत्र देनेकी इजाजत ले ली है।

समझौता आंख मिचौलीका खेल नजर आता है। रातको पू. बापूकी तबीयत थोड़ी ज्यादा व्याकुल थी।

आपका,
मदनमोहन चतुर्वेदी

समझौता हो गया है। आशा है पू. बापू उसे मंजूर कर लेंगे। उपवास लंडनसे मंजूरी आनेपर छूटेगा।

(नकल परसे लिया गया)

: १७ :

यरवडा मंदिर,
२-११-३२

भाई मदनमोहन,

नारणदास पर तुम्हारा खत था। मैंने वह पढ लिया है। डाक्टर मोदी क्या कहते हैं वह मुझको तारसे लिख भेजो और उन्हींको कहो मुझको पूरे हाल लिखें।[१] मुझको हाल लिखते रहो। सुना है कि बालकोबाकी तबीअत अच्छी नहीं हुई है। बोलते हुए भी परिश्रम लगता है। बालकोबासे कहो मुझे लिखे। जानकीबहनसे भी यही कहो। हम सब अच्छे हैं।

बापुके आशीर्वाद

: १८ :

POONA,
1-5-33

JAMNALALJI,
SHAILASHRAM, ALMORA

Bapu decided 21 days fast from 8th May Harijan cause. My pleadings unavailing. Rajaji coming Wednesday. Situation desperate.

—*Devadas*

१. उन दिनों जमनालालजीके कानका आपरेशन हुआ था और वे डॉ. मोदीके इलाजमें थे।

: १९ :

POONA,
11-5-33

JAMNALALJI,
SHAILASHRAM, ALMORA

Night little restless insufficient urination but much better. Cheerful today. Ansari arriving tomorrow.

—*Devadas*

: २० :

POONA,
12-5-1933

JAMNALALJI,
SHAILASHRAM, ALMORA

All interviews darshan strictly prohibited., General condition excellent today. No jaundice.

—*Devadas*

: २१ :

१७-७-३३

चि. नारणदास,

वाईसरोयनो नन्नो आवी गयो छे। एटले मने बे घडीनो मेमान मानो। हुं तैयारी करी रह्यो छुं। आ छेल्ला बलिदानमां आखुं आश्रम होमाई जाय एवी मारी तीव्र इच्छा खरी। आश्रमनी जंगम मिल्कत अंबालालभाई अथवा एवा कोई मित्र जाहेर रीते साचवे ए इच्छुं। स्थावर मिल्कत सरकारने सोंपी देवानो मारो विचार थया करे छे। पछी जेओ जवाने इच्छे ते भले जाय। ने बाकी रहे ते इच्छा प्रमाणे समाई जाय। आ विचार तमने पसंद न पडे तो मारे बलात्कार नथी करवो। आश्रमनी ने तेना उद्देशनी रक्षानी जवाबदारी पाछळ रहेनार उपर होय। तेओ पोतानी शक्ति प्रमाणे वर्ते। हुं तो केवळ दोरीज शकुं। एवुं थाय तो नीला ने अमलानुं शुं करवुं ए विचारवानुं रहे। कोई हरिजन सेवामां

१. इस संबंधमें जमनालालजीकी डायरीमें १२–५–१९३३ को लिखी निम्न नोंध है:–

"देवदासको तार भेजा – बापूसे श्री. रामस्वामीको पंद्रह मिनिट क्यों बात करने दी? आगेसे ऐसी गलती न करनेकी गॅरंटी मांगी।"

अमला रोकावा तैयार थाय तो रोकाय। नीलानी जवाबदारी जमनालालजी ले तो ते वर्धा जाय। बीजी गुंचो हशे ते अत्यारे मने एका एक नहि सूझे। डंकननुं नाम नथी लेतो केम के डंकन तो पुरुष छे। अहिंना वसनार छे। हरिजन सेवामां रही जाय तो तेनो समास स्हेजे थाय।[1]

बापु

(नक़ल परसे लिया गया)

: २२ :

वर्धा,
३०—९—३३

आ पैसा हरिजन फंडने सारु दिल्ली सर्वन्ट ओफ अनटचेबल्स सोसायटीने मोकली देवाना छे।[2]

: २३ :

SATYAGRAHA ASHRAM,
WARDHA,
16th October, 1933

MY DEAR JAWAHARLAL,

Herewith the resignation of Jamnalalji.[3] If you think that it must not be sent and is likely to cause embarrassment, you need not take any action upon it. You may then return

१. इस संबंधमें पृष्ठ १११-११३, पत्र नं. १३७, १३९, १४० भी देखिये।

२. यह नोंध गांधीजीने जमनालालजीके सेक्रेटरीको भेजी थी। साथमें ३०० और २५ रुपयेके दो चेक थे।

३. जमनालालजीने १६ अक्तूबर १९३३ को कांग्रेसके तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री. जवाहरलाल नेहरूके नाम, कार्यसमितिसे अपना नीचे लिखा त्यागपत्र गांधीजीके पास भेज दिया था। गांधीजीने यह त्यागपत्र उपरोक्त पत्रके साथ श्री. जवाहरलालजीके पास भेजा।

"Of late, the fact that I am not still in gaol has very much oppressed me. I believe that, except for utter incapacitation, a person, who like me, has full faith in civil resistance and the Congress programme, may not hold a responsible post if he avoids imprisonment, as I have done, for the purpose merely of improving his health. I feel that I still

[अगले पृष्ठ पर चालू]

it with your reasons after you are free from the wedding arrangements. If, however, you think that the resignation may be accepted, you may publish it forthwith. I know that the treasurer can only be appointed by the All-India Congress Committee. Therefore, the treasurership may remain in Jamnalalji's hands, for the time being. The chief thing is that he ceases to be a member of the Working Committee. I think that the step is a wise and necessary one. Constituted as he is, it is risky for him to seek imprisonment just now, that is without taking the rest that the specialist considers necessary. But, ordinarily, fighters can't consult their health to the extent that Jamnalalji's temperament demands and as he shares the same view of a civil resister's duty that I have, he is ill at ease, so long as he holds a responsible office in the Congress organisation.

I have given you my reasoning which decided my acceptance of Jamnalalji's proposal to resign.

M. K. Gandhi

(नक़ल परसे लिया गया)

: २४ :

कुंबकोणम्,
१५–२–३४

मु. श्री जमनालालजीनी सेवामां,

आ साथे बे कागळ छे[1] ते बापुनी आज्ञाथी मोकल्या छे। बापु लखावे छे के आपनी आगळ जे खातां होय एमांथी ठीक लागे तेमांथी १०० अंके एक

[पिछले पृष्ठसे चालू]

need some more time to recuperate myself, physically and mentally. This does not become me as Treasurer and Member of the Working Committee. I must, therefore, tender my resignation of both the offices, as I do hereby. But, if it is not possible just now to appoint another Treasurer, I would retain that responsibility without being a member of the Working Committee. Of course, I need hardly say that this resignation does not absolve me from the duty of carrying out the Congress programme to the best of my ability. It, however, does remove an oppressive burden from my mind."

१. गांधीजीके नाम लिखे श्री. वेस्टके पत्र। श्री. वेस्ट गांधीजीके दक्षिण आफ्रिकाके पुराने साथी थे और उन दिनों द. आफ्रिकामें ही रहते थे। वे बड़े अर्थ संकटमें होनेके कारण गांधीजीने उपरोक्त रकम भिजवाई थी।

सो पाउंडनो ड्राफ्ट रजिस्टर करीने Albert H. West, 204 West Street, Durban, Natal (South Africa) आ सरनामे मोकलजो। बापुनी तबियत सारी छे। परम दिवस तोल १०८ ने ब्लड प्रेशर १६०-११५ थयुं हतुं। आपनी तबियत मजामां हशे। हुं थोडा दिवसथी अहीं आवेल छुं।

एज लि. से.

बालुभाई मेहता

: २५ :

भावनगर,
२-७-३४

पूज्यश्री जमनालालजी,

अमदावाद थी लखेलो मारो कागळ आपने मळ्यो हशे। देशी राज्योने विषे श्री. केळकरे लखेला कागळनी ने बापुजीए आजे लखेला जवाबनी नकलो आ साथे मोकलुं छुं। ज्युबिली डे वि. विषे आपनी मुलाकात छापांमां आवेली ते बापुजीने वंचावी छे।

लि. सेवक

[signature]

: २६ :

२०-१०-३४

बा,

तने मुंबई नथी बोलावी ए ठीकज कर्युं मानजे। ज्यां पेरिनबहेननुं अपमान थयुं छे त्यां तारे जवापणुं शुं होय? आ तो एक खास कारण छेज। रामदास त्यां छे त्यांलगी तुं त्यांज शोभे ए बीजुं छे। मारुं मन कांग्रेसमांथी उठी गयुं छे ए त्रीजुं छे। जमनालालजीने पण रोकी लीधा छे। मारे नीकळी जवुं छे ए चोक्कस जेवुं मानजे। तेमां तने शुं लावुं? नीमुनी तबीयत सरस रहे छे।

[signature]

: २७ :

[सन् १९३५ में इन्दौरमें होनेवाले अ. भा. हिन्दी साहित्य सम्मेलनका सभापतित्व गांधीजीने इस शर्त पर स्वीकार किया था कि इन्दौरवासी उनको हिन्दी प्रचारके लिए एक लाख रुपये देंगे। अधिवेशन हो जानेके बाद इस संबंधमें कुछ गलतफहमी फैल जानेसे अपने विचार स्पष्ट करनेके लिए गांधीजीने सम्मेलनके मंत्रीको निम्न पत्र लिखा था।]

वर्धा,
१४–५–३५

प्रधान मंत्रीजी,

आपका पत्र मिला है। मैंने स्वतंत्रतया ऐसे तो नहीं कहा है कि समिति बंधन मुक्त है। मैंने ऐसे कहा था कि यदि हरिभाऊ व कोतवालने आपको यह कहा कि आप इंदौरके विश्वविद्यालयका धन भी एक लाखमें गिन सकते हैं तो आप बंधन मुक्त हैं। लेकिन मैं इस बहसमें न पड़ना चाहता हूं न आपको तकलीफ देना चाहता हूं। आखरमें जिम्मेवारी तो शेठ जमनालालजीने ली है। वे चाहे सो करें। टंडनजीने जो कहा और किया उसमें उनका दोष मैंने नहीं पाया। बाहिरके आंदोलनको रोकनेकी मेरी न शक्ति थी, न इच्छा थी। अंतमें जो मैंने किया उससे दूसरा करना मेरे लिये असंभवित था।

आपका
मो. क. गांधी

(नकल परसे लिया गया)

: २८ :

(जुलाई १९३५)

पू. बापूजी,

पू. बा कहा करती थी मदूकी सिगडी कभी दूर नहीं होती है सो खुश खबर है कि इस मासमें पट्टा सिगडी पास नहीं आये हैं। पर इस घरके लोग कोई भी सीधे नहीं बैठ सकते हैं। आठ बखत नीची मुंडी करके प्रार्थना करती है फिर सारे कार्यमें कमर व मुंडी सीधी नहीं हो सकती। केमेरा लेवे तो मालूम होवे। उसकी आंखें भी नीचे झुक गई हैं सो पेट और छाती सीधे कैसे रहेंगे? एक लकड़ा कमरमें बांधकर सिर भी सीधा रखे तब इसके शरीरकी ८ बांक निकले। नाक रूका ही रहता है। बाकी सब ठीक है। मानाजी (मदालसा) बीमार नहीं पड़े वहा तक।

दो रुपयेके कोलसे जलाकर नाक-कान सेकेंगे पर एक रुपयेका कपड़ा पहनकर सुखी होना पाप, ऐसे ज्ञानियोंको कौन समझावे ?

अष्टवक्राके ८ बांक:–

१. डेढ़ पैर होनेसे शौचादिको जमके नहीं बैठ सकती।

२. कमरका आगे झुकाव।

३. गर्दनकी हड्डी बी.ए. के अभ्यासियोंके माफक टेढ़ी, छाती फेफड़ा बीचमें।

४. सीधे हवा कैसे लेनी ?

५. खाना खाकर भी पेट झुकाके बैठती है।

६. आंख आपने ध्यानसे नहीं देखी।

७. दांतोंकी दशा सुधरती है, पर आगे झुके हैं।

८. हाथ छोटेपनमें उतरा था सो पूरा काम नहीं देता। सीधे हाथको छोड़कर सब सुधर सकता है। पर शरीरको आगेके बजाय पीछे झुकानेके तनावसे सीधा होगा।

आठ प्रार्थना:–

१. बिस्तरमें, उठते ही २. शौचादिके बाद प्रातः ३. नाश्तेके समय ४. भोजनके समय ५. गतीके समय ६. शामके भोजनके समय ७. शामकी प्रार्थना ८. बिस्तरमें ध्यान।

आंख मीचकर कुछ भी कहे, पर सिर झुकानेसे सारा शरीर झुक जाता है। सो कुछ रोज दीवालसे टिककर अभ्यास करे, सीधे होने तक। यह पत्र विनोबाजी देख लें कहां तक ठीक है ?[१]

जानकीका प्रणाम

(नक़ल परसे लिया गया)

: २९ :

WARDHA,
8th March 1936

MY DEAR MAHADEVBHAI,

I am in due receipt of the copy of Mr. S. D. Khare's

१. इस बारेमें मदालसाके नाम गांधीजीका पत्र (नं. ९६) पृष्ठ ३१७ पर देखिये।

letter to Sjt. Thakkar Bapa forwarded by you to me.[1] I have been taking considerable interest in the case mentioned therein and know about it all that is necessary to know. The facts stated by Mr. Khare in his letter are substantially correct. I have no manner of doubt that the poor girl has been the victim of a most brutal and inhuman crime. I am herewith returning one of the two copies of Mr. Khare's letter with Sjt. Thakkar Bapa's letter to you.

It is indeed a great pity that some interested persons, who call themselves Muslims, are trying to give the case a communal colour. This betrays a diseased mentality and it is the duty of every citizen who believes in personal and social morality to combat it with all his might. Any attempt on the part of either community to make this case a communal question is, in all conscience, as mischievous as it is deplorable. Those who seek to shield the alleged culprits are unworthy of the great faith founded by the Great Prophet. An equally unfortunate feature of the situation is the extremely apathetic attitude of the Hindu community. In my view this is a case in which good and honest citizens of both communities should join in condemning the deed and see that justice is done. I understand that the local authorities are investigating and conducting the case with a view to secure justice. But, I am told that some interested persons are trying to get the case transferred from this place. This attitude again is most regrettable. If such an atrocious deed had been committed by a Hindu I would not have the least hesitation in calling upon all good Hindus and Musalmans to condemn it in unequivocal terms. This is not a Hindu-Muslim question at all. This is a question of our common humanity.

१. एक चमारकी करीब तेरह सालकी लड़की पर दो मुसलमान अफसरोंने (एक सब-इंस्पेक्टर पुलिस और दूसरा इंस्पेक्टर ऑफ स्कूल्स) बलात्कार किया था और इस सिलसिलेमें उनपर मुकदमा चल रहा था। श्री. ठक्कर बापा, मंत्री, हरिजन सेवक संघ, ने उस बारेमें श्री. खरे वकीलसे, जो वर्धाके हरिजन होस्टलकी देखरेख करते थे, पूछने पर उन्होंने पूरी रिपोर्ट भेजी थी। यह रिपोर्ट श्री. ठक्कर बापाने जमनालालजीके पास उचित कार्यवाहीके लिये श्री. महादेव देसाईके मारफत भिजवाई थी।

Since the case is still subjudice I refrain from expressing any definite opinion. But I think I ought to say that it is the duty of every citizen to see that justice is done in this case. The father of the poor girl is finding it difficult to get legal aid gratis while the accused being men of money have engaged certain eminent lawyers of both communities. The poor Chamar father has to depend upon such counsel as the Government may secure for this is now a Police case. But the irony of it is that but few public-spirited lawyers should come forward to help him.

The facts of the case speak for themselves and I think any further comment is needless.

Jamnalal Bajaj

(नकल परसे लिया गया)

: ३० :

SEGAON,
23–3–1936

MY DEAR BROTHER, JAMNALALJI,

Please forgive English. I have no Hindi Dictionary with me, and am therefore afraid of trying my hand at a Hindi letter!

I am so sorry you felt badly about my having written to Bapu about the farm well here.[१] Of course I have every intention of consulting you about it. I only mentioned it to Bapu as an illustration of our all-India difficulties. I was sharing with Bapu my experiences, not asking him for advice on the subject. For that I said in my letter to

१. इस संबंधमें गांधीजीने ता. २०-३-३६ को मीराबहनको निम्न पत्र लिखा था:—

"Yours this time is a revealing letter. What you say about the well on J.'s farm is disturbing. But it merely shows the tremendous difficulties we have in our way. In the midst of all these you must keep well and calm, even as I am trying to do. For you might imagine that it cannot all be plain sailing for me here. I am having difficulty about the political part as also the village settlement part."

Bapu that I wanted to wait for your and his return. Some of the people concerned are men who have been in your service since 10 to 14 years, and I don't want to force the situation without you. Probably the men will come to it. The Gond has already said he would not mind. But the complications are many. Even if the higher castes agree to have the Harijans, then the Harijans amongst themselves will not agree. The Mahars, the Mungs and the Bhangis, all refuse to take water from one another. Not only the Mahars from the Bhangis etc., but the Bhangis from the Mahars.

What I hope is that you will come here and talk to the people yourself about this question. In the mean time I will try to collect all the water — touchability and untouchability — rules of the village.

I had never realised up to now how complicated and strict the inter-Harijan rules were!

आपकी बहिन,

मीरा

: २१ :

(March-April 1936)?

Jamnalalji prepared act sole arbitrator. Has wired Narayanlal accordingly. You should nevertheless inquire whether Purshotamdas will accept nomination if required.[1]

—*Bapu*

१. यह गांधीजीके हस्ताक्षरोंमें लिखा तारका मजमून है। लेकिन यह किसको भेजा गया था इसका पता नहीं लगता।

: ३२ :

१३–८–३६

पूज्य बापूजी,

यह पत्र[1] पढकर आप जैसा उचित समझें तार लिखकर इसके साथ भेज देवें। मैंने जो वहांकी स्थिति देखी समझी है उससे तो इन्हें परवानगी देनी ठीक मालूम देती है।

ज. ब.

: ३३ :

[जमनालालजी १९३७ में मद्रासमें होनेवाले हिन्दी साहित्य सम्मेलनके अध्यक्ष चुने गये थे। उनके अध्यक्षीय भाषणके लिए गांधीजीने खुद निम्न नोट लिखकर दिए थे।]

(मार्च १९३७)

पीछले वर्षोंका हिंदी प्रांतोंके बहारके आंदोलनका इतिहास।

इस कार्यका ओरसे संम्मेलनमें महत्व।

दक्षिणमें प्रचार कार्यकी विशेषता और अन्य अहिंदी प्रांतोंसे भेद।

हिंदी और उर्दुका ऐक्य। दोनों पक्षके विद्वानोंसे प्रार्थना की वे अंतर न बढ़ावें।

लिपि शास्त्रकी दृष्टिसे देवनागरी लिपिकी शास्त्रीयताका स्वीकार करते हुए हिंदू विद्वानोंका उर्दु लिपि पढनेका धर्म और मुसलमान विद्वानोंका देवनागरी सीखनेका धर्म।

वर्धामें चलता हूआ कार्य पर दृष्टिपात।

उक्त दृष्टिसे भविष्यकी एक वर्षके कार्यकी रूपरेखा उसका बजेट।

राजाजी इ. की सूचनाका समावेश इस रूपरेखामें हो जाता है।

मैंने तो विषयोंकी यादि ही दी है। इस पर विवेचन हो सकता है।

१. श्री. प्रफुल्ल चंद्र घोषका जमनालालजीको लिखा हुआ पत्र। उस समय बंगालमें ग्रामोद्योग संघका कार्य श्री. घोषके जिम्मे था और गांधीजीने उनको उसी काम पर विशेष ध्यान देनेकी सलाह दी थी। इस बीच जमनालालजी बंगाल गये थे और वहांकी राजनैतिक स्थिति देखकर उन्होंने श्री. घोषको सलाह दी थी कि वहांकी खास परिस्थितिमें उन्हें बंगाल प्रांतीय कांग्रेस कमिटीका अध्यक्षपद स्वीकार कर लेना चाहिये।

[अगले पृष्ठ पर चालू]

: ३४ :

सेगांव, वर्धा,
६—५—३७

चि. दामोदर,

गंगाबिसनने एक हजार रुपया मोकल्या छे ए ठक्कर बापाने हरिजन निवास दिल्ली हरिजनने माटे मोकली देजो।

बापुना आशीर्वाद

: ३५ :

वर्धा,
५—१२—३७

मु. भाईश्री,

रस्तामां भाई महादेव पासेथी जाण्युं के तमारो विचार वर्धा स्टेशने पुल उपरथी चालीने गाडी पर जवानो छे। आ विशे में तमारी साथे वात नहोती करी कारण में मानीज लीधेल के, गया वखतनी माफकज आ वखते पण तमोने स्टेशन पर लई जवानी व्यवस्था थशे। सपाटी पर चालवा करतां उंचे चढवूं ते लगभग वीस गणो वधारे श्रम आपे छे, ए उपरांत जेटली शक्ति होय ते मुसाफरी माटे जाळवी राखवी ए वधारे जरूरनुं छे, तो मारी खास विनंती तेमज भलामण छे के स्टेशन पर गया वखतनी माफकज व्यवस्था करावजो।

[illegible]

[illegible]

(यह पत्र डा. जीवराज महेताने वर्धासे ही गांधीजीको लिखा था। गांधीजीने उसी पर निम्न सूचना लिख दी थी)

आ कागळ जमनालालजीने बताव। एंजिन लाववानी जरूर नथी। जो पाटा परथी चालवानी रजा नहीं मळे तो हुं खुरशी उपर जवा तैयार रहीश।

[पिछले पृष्ठसे चालू]

श्री. घोषको उसमें खास दिलचस्पी नहीं थी। पर बादमें जब श्री. किरण शंकर राय और डॉ. विधान चंद्र रायने भी उन्हें इस बारेमें आग्रह किया तब उन्होंने जमनालालजीको लिखा कि वे यह सारी परिस्थिति गांधीजीको बताकर उनकी राय लिखें।

इसके जवाबमें गांधीजीने श्री. घोषको लिखवाया कि देश हितको दृष्टिमें रखकर जो भी वे उचित समझें वैसा करें।

: ३६ :

[जयपुर प्रजा मंडलके संबंधमें बातचीत करनेके लिए श्री. घनश्यामदास बिरलाके प्रयत्नसे जयपुर राज्यके इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस मि. यंग गांधीजीसे मिले थे। उस समय गांधीजीने अपने विचार लिखकर व्यक्त किये थे। गांधीजीने जो कुछ लिखा था उसे स्पष्ट करनेके लिए श्री. घनश्यामदासजीने बादमें एक नोट बनाया था। गांधीजीके लिखे हुए हर एक पेरेग्राफके बारेमें श्री. घनश्यामदासजीकी सूचना पहले व गांधीजीका लिखा हुआ बादमें इटेलिक्समें नीचे दिया जाता है।]

24–9–1938

I first of all related the whole position to Gandhiji and then asked Young to say what he had to say. He then at great length stated the whole position and asked Gandhiji's help. The first two paragraphs are in reply to that.

(1) *All I can say is that somehow or other the authorities should be made to see that in Seth Jamnalalji and Pandit Hiralal they have men who are true as steel and who believe in non-violence as their creed.*

(2) *Surely it will be unwise to imprison them instead of holding them as willing hostages for peace. To ban the Praja Mandal is to invite trouble where there is none today.*

In reply to the first two paragraphs, Young said that there was no question of imprisoning any one. That position had not yet arrived and he hoped that it would never arrive. To this Gandhiji replied in the third paragraph.

(3) *You will reach that stage in a moment, if you have an organisation which is working constitutionally and with which they are identified. I do not think they can surrender the right to agitate for responsible government. The authorities may or may not grant it. But they should not ban an activity which is in its nature peaceful. You may take all precautions to ensure peace.*

In reply to this, Young pointed out the activities of the Mandal in enlisting Congress members. He said the Council had a suspicion that the Praja Mandal was only another name for the Congress and after having seen the

disturbances in Travancore and Mysore, they were rather afraid of Congress creating trouble in Jaipur. Could not the Praja Mandal keep itself separate from the Congress? The fourth paragraph is in reply to that.

(4) *You cant prevent natural affinities. People are drawn towards the Congress. You seek its assistance in order to promote peace as Sir Mirza did wisely and as Sir Akbar is already doing and Sir C. P. will do presently.*

In reply to this, Young said, "But what if they start trouble? If their constitution is something different, then there should be no difficulty in recognising it but with this constitution, if they start trouble, peace might be disturbed." The penultimate and the last paragraph are in reply to this.

(5) *You can ask them to meet you a long way as to how they should shape their activity. You stiffle opinion if you say they may not even ask for responsible government. You should shed the fear of the Congress.*

(6) *What I have suggested is this. Dont interfere with their objective but regulate the speed with which they move. You may, for instance, regulate the demonstrative part of their programme. You will control their language. But to ask them to change their objective is like asking a man to change his religion.*

In the end, Mr. Young profusely thanked Gandhiji and made a request for taking the notes with him as a sort of souvenir to which Gandhiji agreed subject to his being provided with a copy of the same. The last three lines are in reply to my question whether Sir Akbar had already written for help and whether C. P. also had applied for help.

I would like you to give me a copy of the notes.

I have Sir Akbar's letter [illegible].

More than a hope. He has wired to Pattabhi asking him to meet him. (This is about C. P.)

[अगले पृष्ठ पर चालू]

(1) Harlal and other men to be released if they give satisfactory assurance to Mr. Young that they would not preach "no rent" or "non-payment of cesses" in future.

(2) Mr. Young will do his best in respect of Laduram and he would tell me if he wants me to write to the Chief Justice.

(3) Mr. Young should secure full authority from His Highness and the Cabinet to talk on all the pending issues and come to an agreement, failing which he may try to get a conference of His Highness, Sir Beauchamp, any other Cabinet member whom he chooses to invite, and myself to talk over the matters.

(4) If any agreement is reached between myself and Mr. Young or between myself and the Cabinet, I would give my fullest support in execution of that decision.

(5) The important issues just now are amnesty in Sikar, re-employment of dismissed men of Sikar and the constitution of the Praja Mandal.

(6) As regards the constitution of the Praja Mandal, it has been clearly stated that there is no likelihood of its being changed. But, at the same time, Gandhiji has suggested certain safeguards which are that the State could regulate the pace, the language and the demonstrative part of the Praja Mandal's activities, but should not stop them from preaching their objective.

(7) It would be desirable to carry out famine work in cooperation with all progressive elements in the State and Mr. Young would discuss the question with me at our next meeting.

G. D. Birla

(नक़ल परसे लिया गया)

: ३७ :

२५-९-३८

जो प्रस्ताव मैंने राज्योंके बारेमें बनाया है महत्वका बन गया है। देखो पसंद न आवे तो आगे मत जाने दो। उसमें कमिटी बनाई है। नाम अच्छे न लगे तो भी रोको। वल्लभभाईको बताना।[1]

: ३८ :

[गांधीजी द्वारा चलाये गये रचनात्मक कार्योंको आगे बढ़ानेके लिए उनके जेलमें रहते हुए ही सन् १९२३ में जमनालालजीने गांधी सेवा संघकी स्थापना की थी। वह उसके संस्थापक सभापति हुए। बादमें कुछ बरसों बाद उनको लगा कि उनमें उसके अध्यक्ष रहनेकी नैतिक योग्यता नहीं है। अतः गांधीजीको राजी करके सन् १९३४ में उन्होंने संघकी अध्यक्षतासे त्यागपत्र दे दिया। बादमें भी उनका अंतर्मंथन चलता रहा। और उनको लगने लगा कि संघके साधारण सदस्यका भी जो नैतिक जीवन होना चाहिये वैसा उनका नहीं है। अतः उन्होंने संघकी साधारण सदस्यतासे भी त्यागपत्र दे दिया। इस संबंधमें संघके तत्कालीन सभापति श्री. किशोरलाल मश्रुवालासे हुआ उनका पत्रव्यवहार नीचे दिया जाता है।]

गांधी सेवा संघ, वर्धा,
८-१०-३८

मुरब्बी भाई,

चेंबरलेनने तो कोशिश करके लड़ाई तुर्तके लिए भी रोक दी। और फ्रंटियरके विषयमें एक बार जाहीर किया था कि बम फेंकनेके पहले लोगोंको पूर्व-सूचना दी जाती है। पर, आपने तो दूरसे ही एकदम बम फेंक दिया! और सीधा अध्यक्षके ऊपर ही! आश्चर्य है!

अब क्या इसलिए मैं तुरन्त कार्यवाहक समितिको बुलाऊं, ऐसा आप चाहते हैं? मामूली तौरसे नये सालके बजेटके लिए नवंबरके अंत या दिसंबरमें बैठक होगी। तभी इसका भी विचार करेंगे तो क्या ठीक नहीं होगा? पू. बापूजी भी, तबतकमें लौटेंगे। बिना उनके, न आपका सांत्वन करना आसान होगा, न दूसरोंको—अगर त्यागपत्र मंजूर करना यही मार्ग खुला हो तो—समझाना आसान होगा।

आपके इस्तीफेका संघ पर क्या परिणाम आवेगा, इसका आपको विचार कर लेना चाहिए।

१. गांधीजीने मौन होनेसे जमनालालजीको यह नोंध लिखकर दी थी।

आपके और सरदारके बीचमें मतभेद बढ़ता ही जा रहा है यह बड़े दु:खकी बात हो रही है। इसमें मैं कांग्रेस और संघ—यानी गांधी सिद्धांत—दोनोंका नुकसान देख रहा हूं।

आपकी मन:शांति अवश्य चाहता हूं। लेकिन मुझे यह डर जरूर है कि आप सही मार्ग नहीं ले रहे हैं।[1]

शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा होगा। मेरा साधारण है।

आपका सप्रेम

किशोरलाल

जानकी कुटीर,
जुहू (बंबई),
१०—१०—३८

प्रिय श्री. किशोरलालभाई,

आपका ८—१०—३८ का प्रेम भरा पत्र ठीक समय पर मिला। आपके भावोंको और आपके दर्दको मैं पूरी तरह समझ सकता हूं। आपने जो विचार पत्रमें लिखे हैं वह आपकी दृष्टिसे स्वाभाविक ही हैं। आप जब मेरी मन:स्थितिको समझ लेंगे तो मेरा ख्याल है मेरे विचारोंसे सहमत हो सकेंगे। मैं ट्रस्टी रहूं या न रहूं गांधी सेवा संघके प्रति मेरी श्रद्धा वैसी ही रहेगी और मुझसे जो बनेगा मैं करता रहूंगा यह दोहरानेकी तो मैं आवश्यकता नहीं समझता। मैं वर्धा आने पर आपसे अधिक बात करके आपका संतोष कर सकूंगा ऐसी आशा है। मैं कल यहांसे रवाना

१. इस संबंधमें जमनालालजीको श्री. राजेन्द्रबाबूने जीरादेईसे ४-१२-३८ को निम्न प्रकार लिखा था :—

"किशोरलालभाईके पत्रसे मालूम हुआ है कि आपने गांधी सेवा संघके ट्रस्टसे भी इस्तीफा दे दिया है। वर्किंग कमिटीका तो मैं जानता था और कुछ कारण भी समझता था पर गांधी सेवा संघके ट्रस्टसे अलग होनेका कारण नहीं मालूम होता। भेंट होने पर सब बातें मालूम होतीं मगर वह तो इस समय नहीं हो सकता। इसलिए मैं केवल इतना ही लिखना चाहता हूं कि आप ट्रस्टसे न हटें क्योंकि वह सारी संस्था आपकी ही कायम की हुई और चलाई हुई है और आपका न रहना ठीक नहीं होगा। आशा है आप इसपर विचार करेंगे। यों तो पू. बापू वहां हैं ही और उनसे आपकी बात होगी पर मेरी तुच्छ सम्मति यही है।"

होनेका विचार कर रहा हूं। अगर कल नहीं हो पाया तो दो रोज बाद तो आना ही है।

(नक़ल परसे लिया गया) जमनालाल बजाजका वंदेमातरम्

जयपुर स्टेट कैदी,
१५-६-३९

प्रिय श्री. किशोरलालभाई,

आप यह तो भली प्रकारसे जानते ही हैं कि मेरी मानसिक स्थिति व कमजोरियोंके कारण गांधी-सेवा-संघका ट्रस्टी व तीसरे दर्जेका सदस्य रहने लायक मैं अपनेको नहीं समझ रहा हूं। मैंने अपनी यह इच्छा कई बार प्रकट भी की थी। पूज्य बापूजीका इस समयका वृन्दावन-सम्मेलनमें दिया हुआ भाषण "सर्वोदय" में पढा।[1] बापूजीने बहुत ही स्पष्ट तौरसे कह दिया है। और मेरी नम्रता व आग्रह-पूर्वक आपसे प्रार्थना है कि मुझे संघके ट्रस्टीपदसे व तीसरे दर्जेके सदस्यत्वसे जल्दसे-जल्द मुक्त कर बाधित करें। मेरा संघसे जो प्रेम है वह तो रहेगा ही। परन्तु मेरी मानसिक स्थिति और नैतिक कमजोरियोंके कारण अब यह नैतिक भार मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता। आशा है, आप उदारतापूर्वक मुझे इस भारसे हलका कर देंगे।

[illegible]

गांधी सेवा संघ, वर्धा,
२०-६-३९

मुरब्बी भाई,

आपका पत्र मिला। मिला, इससे आनन्द हुआ, परन्तु उसमें लिखी बातोंसे आनन्द न हुआ। जयपुर दरबार आपको हैरान करे, जेलमें डाल रखे इसलिए हमसे रूठ जाना यह कहांका न्याय है? आपने कहा—मुझे एक मासका आराम चाहिये, हमने कहा—अच्छा मंजूर। आपने कहा—मुझे हिमालयमें

1. इस भाषणमें गांधीजीने कहा था—

"सत्याग्रहीकी ईश्वरमें जीवित श्रद्धा होनी चाहिए। यह इसलिए कि ईश्वरमें अपनी अटल श्रद्धाके सिवा उसके पास कोई दूसरा बल नहीं होता। और इस श्रद्धाके बिना सत्याग्रहका अस्त्र वह किस प्रकार हाथमें ले सकता है? आप लोगोंमें जो ईश्वरमें ऐसी जीवित श्रद्धा न रखते हों उनसे तो मैं यही कहूंगा कि गांधी-सेवा-संघ छोड़ दें और सत्याग्रहका नाम भूल जायं।"

किसी ठंडी पहाडी पर जाना है। हमने कहा–मंजूर। परन्तु आपने तो वहां जानेके बजाय जयपुर दरबारसे लडाई ठान ली। उन्होंने आपको निकाल दिया, तो मजबूर होकर गये। अब वहांसे सत्याग्रह करना हो तो जयपुर दरबारके गजट पढकर कीजिये। "सर्वोदय" पढकर गांधी-सेवा-संघको क्यों धमकी देते हैं?

परन्तु आपकी यह आदत बहुत बचपनकी है। जो आपको अपनाते हैं उन्हींको आप हैरान करते हैं। बच्छराज सेठने आपको गोद लिया, आपने उन्हें दादा बनाया, फिर आपने उन्हें धमकी दी कि मैं आपको छोडकर चला जाऊंगा।

बापूने आपकी मांग मंजूर करके आपको कहा कि आप मेरे चार लडकोंमें पांचवें हुए। अब आप कहते हैं कि मैं आपका पुत्र बनकर रह नहीं सकता। परन्तु अब कैसे छूट सकते हैं? कल आप जानकीबहनको भी छोडनेकी धमकी देंगे! तो क्या ऐसा हो सकता है? हिन्दू-धर्मके दत्तक और विवाह रद नहीं किये जा सकते, उसी तरह गुरु-शिष्य-भाव भी रद नहीं किया जा सकता।

एक गुरूका आसरा, एक गुरूसे आस;
औरनसे उदास है, एक आस विश्वास।

गांधी-सेवा-संघसे मुक्त होना और बापूसे मुक्त होना–यह आपके लिए एक समान है। यह अब इस जन्ममें नहीं हो सकता, अर्थात् यह शोभा नहीं देगा। जो कदम उठाया उससे अब आगे कदम उठाना चाहिये; जो किया वह असत्य हो, अयोग्य व्यक्ति या कार्यके लिए जीवनको बर्बाद किया हो, ऐसा विश्वास हो जाय तो फिर कभी भी उसे छोड सकते हैं और छोडना चाहिये। परन्तु कमजोरीका नाम तो दिया-ही नहीं जा सकता। हो हो कर आखिर बिगडेगा क्या? पैसा टका, सुख, आराम सबसे ख्वार हो जाओगे; ५० या ५०० मनुष्योंको निभानेवाले न रह सकोगे, बापू फकीर बनाकर छोडेंगे, कदाचित् फांसी पर भी चढा दें–तो भी क्या? जो कुछ है वह लडकोंको सौंप दिया है। अब आप फकीर होकर सबकी चिंता छोडकर गांधी-सेवा-संघका सेवक सदस्य बननेका निश्चय किया है, ऐसा बापूको बता दो, कमलनयनको बता दो, जानकीबहनको बता दो। देखिये, इस निश्चयके होते ही आपमें कितना जोश आ जायगा।

शूर, सती अरू गुरुमुखी ज्ञानी, पीछा चलत न कोई;
जो पीछा पग धरत कुमति कर, जीवत जनम बिगोई।

आपके एकान्तवासके फलस्वरूप इस निश्चय पर आनेकी मैं आपके पाससे आशा रखता हूं। इस रीतसे सर्वोदयको फिरसे पढोगे तो बापूकी भाषामें दूसरा अर्थ देखोगे।

आप छूटकर यहां आवें, फिर आपको सहायक सदस्यसे सेवक सदस्य बनानेका प्रस्ताव रखेंगे। इतनेमें मेरे भी पांच वर्ष पूरे हो जायेंगे। इसलिए फिर गांधी-सेवा-संघको उसकी असल स्थितिमें ले आवेंगे। तबतक आराम करिये। पढो भले ही परन्तु उसमेंसे ऊंचा उठनेका अर्थ निकालिये, निराशाका नहीं।

हिन्दी गीतामंथन सस्ता साहित्यवालोंने न भेजा हो तो मंगाकर पढियेगा।

आपको किसीका भी सहवास नहीं है यह मुझे अच्छा नहीं लगता है। पर क्या किया जाय? [1]

जयपुर स्टेट कैदी,
४–७–३९

प्रिय श्री. किशोरलालभाई,

आखिर आपका ता. २०–६ का प्रेमवश भेजा हुआ पत्र मिला। आपके सच्चे प्रेमके लिए तो जीवनभर कृतज्ञ रहूंगा। आपके प्रति मेरे मनमें जो भाव हैं वह कागज पर नहीं लिख सकता। आपने इस पत्रमें बहुत ही ऊंचे दर्जेके विनोदका उपदेश किया है, परन्तु मैं क्या करूं? मेरा मन गवाही नहीं देता—मन पर ताबा नहीं रहा। अगर आप लोगोंके सच्चे आशीर्वादसे मेरे मन पर मेरा काबू आ जावे व मुझे पूरा विश्वास हो जाय कि मेरी सद्बुद्धि स्थायी रहेगी तो शायद मुझमें आत्मविश्वास आवे। आज तो मैं अपने परसे विश्वास खो बैठा हूं। जैसे-जैसे मैं अपनी कमजोरियोंका निरीक्षण करता हूं वैसे-वैसे ही मेरा मन साफ तौरसे मुझे कहता है (पहलेसे कहता आया भी है) कि मैं गांधी सेवा संघ जैसी उच्च व पवित्र संस्थाके योग्य नहीं हूं। ज्यादा नहीं लिख सकता। एक बार तो आप मुझे मुक्त कर ही डालें। पूज्य बापूजी मेरा समर्थन करेंगे। वह मेरी स्थितिसे वाकिफ भी हैं।

१. यह पत्र मूल गुजरातीसे अनुवाद किया गया है।

मुझे अपनी कमजोरियोंका थोडा ज्ञान रहनेके कारण मैंने बापूको "गुरू" नहीं बनाया, न माना, "बाप" अवश्य माना है। वह भी इसलिए कि शायद इन्हें बाप माननेसे मेरी कमजोरियां हट जायं। बीचमें ठीक समय तक हटती मालूम भी देती थीं। परन्तु वास्तवमें हट नहीं रही थीं। इन दिनों (याने इन दो वर्षोंमें) तो मुझे काफी हैरान, बेचैन, निरुत्साही होना पडा। बापूके लडकोंमें हरिलाल भी तो है। वह बिचारा प्रसिद्ध हो गया। मेरे सरीखे छिपे हुए रहे। आपने लिखा – गांधी-सेवा-संघको छोडना याने बापूको छोडना है। यह माननेको मेरा मन तैयार नहीं है। बापूके दूसरे चार लडके भी तो गांधी-सेवा-संघमें नहीं हैं। फिर मैंने ही क्या इतना पुण्य किया, जिससे रह सकूं। उनकी गति सो मेरी गति। उनमें कई तो उच्च स्थितिमें हैं। पहले मैंने अहंकारवश मान लिया था कि बापूको व उनके सिद्धांतको मैं थोडा समझ सका हूं। परन्तु ठीक विचार करनेसे यह साफ दिखाई दे रहा है कि न समझ पाया था, न समझनेकी ताकत है। मैंने सत्य-अहिंसाकी व्याख्या मेरे विचारके मुताबिक समझ ली थी। परन्तु वह मेरी गलती अब साफ दिखाई दे रही है। मेरी लिखनेकी तो और भी इच्छा होती है। परन्तु जेलके अन्दरसे ज्यादा क्या लिखूं।

आप लोगोंकी संगतसे इतना लाभ तो जरूर हुआ कि मरनेका डर प्रायः विशेष नहीं मालूम देता है। कभी-कभी तो उसका स्वागत करनेका उत्साह भी मालूम होता है। वह ठीक भी है। अगर वर्तमान जीवनसे उच्च जीवन बनना संभव न हो तो स्वार्थकी दृष्टिसे भी मृत्यु स्वागत व श्रेयकारक ही है। यह तो मैंने वैसे ही इधरमें जो विचारधारा चलती रहती है उस परसे लिख डाला है। आप चिन्ता न करें। मुझे इस हालतमें ज्यादा शान्ति दूसरे किसी भी स्थान पर मिलनेवाली नहीं है। परमात्माकी यह बडी भारी दया ही है कि मुझे इस प्रकारका मौका मिला है। मैं अपनेको ठीक देख रहा हूं, समझ रहा हूं।

मुझे थोडा डर हो गया है कि मेरी इस बिमारीको निमित्त करके कहीं मेरा बंधन हटाकर इस शान्तिसे मुझे वंचित न कर देवें। परंतु मैं पूरा ख्याल रखूंगा। जहां तक संभव होगा ऐसे न होने दूंगा।

: ३९ :

38/2 Elgin Road,
Calcutta,
21st October, 1938

I had long talks with Jamnalalji at Bombay and again at Wardha over his resignation. I told him over and over again that I could not reconcile myself to his resignation for various reasons. Moreover, the members of the Working Committee, as far as I could judge, were of the same view as myself. My reasons were as follows :—

(1) While I agreed that Jamnalalji should have complete rest for some time, it was not necessary for him to resign, in order to obtain that rest. When members fell ill, they took the necessary rest, but they did not resign.

(2) It would be extremely difficult to find a substitute for him.

(3) Eight months had already elapsed and only four months remained. Why then resign at this stage ?

(4) Resignation at this stage would give rise to all kinds of rumours and stories, some of which may be embarrassing to the Working Committee.

At Wardha, Jamnalalji told me that a Nagpur journal had already written that he was going to resign from the Working Committee because the C. P. Ministry was not working satisfactorily and it was necessary to have Jamnalalji as Premier.

This report only confirmed my pr[illegible] I also pointed out to Jamnalalji that [illegible] rumours and gossip, the Working Committee [illegible] to make a statement as to why he was resign[illegible] say in the course of such a statement ? It would not be the whole truth to say that he was resigning because he was physically and mentally tired and needed prolonged rest. The inquisitive public would say at once that Pandit Jawaharlal was away for 5 months but did not resign.

At the end of our talk at Wardha, Jamnalalji came to appreciate the force of my arguments. I told him that we would do our best to give him complete rest for as long a period as was necessary—but that he should not embarrass us by insisting on resigning. He felt that before he could give me a final reply, he should have a talk with you. Therefore, I told him that I would request him to continue in office till your return to Wardha.

I shall be happy if you could suggest to him that in the circumstances, it is not necessary for him to insist on resignation.

With *pranams,*[1]

Yours affly,

Subhas C. Bose

१. यह पत्र श्री. सुभाषबाबूने गांधीजीको लिखा था।

इस संबंधमें कांग्रेसके तत्कालीन प्रधान मंत्री आचार्य जे. बी. कृपलानीने १८–१०–३८ को जमनालालजीको निम्न पत्र लिखा था:—

"आपका जुहुका पत्र आपके इस्तीफेके बारेमें मिला। मैं जब वर्किंग कमेटीकी प्रोसीडिंग्स लिख रहा था तो सुभाषबाबूसे पूछा कि आपके त्यागपत्रके बारेमें क्या लिखा जाय, उन्होंने मुझे कहा यह लिखा जाय कि त्यागपत्रका विचार दूसरी मीटिंगमें किया जायगा। आपके जानेके बाद इस बारेमें पूज्य बापूसे बातचीत हुई। बापूजीका यह कहना था कि त्यागपत्र तो कबूल किया जाय और आपको कामसे तब रिहाई दी जाय जब खजांचीके पदका दूसरा कोई बन्दोबस्त हो जाय। प्रेसिडेंट बंबईमें थे और अखबारोंमें है कि आपके साथ वर्धा जा रहे हैं। मुझे आशा है कि त्यागपत्रका कुछ न कुछ निर्णय आप लोगोंने किया होगा। जो कुछ फैसला किया हो मुझे लिखियेगा।"

इसके जवाबमें जमनालालजीने २२–१०–३८ को निम्नलिखित पत्र भेजा था:—

"आपका मसूरीसे ता. १८/१० का लिखा हुआ पत्र मेरे जुहुके पत्रके जवाबमें मिला। मैंने श्री. सुभाषबाबूसे बंबईमें व वर्धामें आग्रहपूर्वक प्रार्थना की थी कि मुझे मुक्त कर देवें। उन्होंने मेरे देहलीसे आनेके बाद वर्किंग कमेटीके सदस्योंसे व पू. बापूजीसे जो बातें हुई थीं वे बताईं और उन्होंने अपनी ओरसे यह भी कहा कि मेरा त्यागपत्र स्वीकार करनेसे बहुत प्रकारकी गलतफहमियां कांग्रेसके बारेमें फैलनेका डर है। इंटरेस्टेड पार्टीज इस बारेमें कई प्रकारके स्पेकुलेशन करेंगे। वे साथ ही यह भी कहते थे कि तुम्हें आराम व शान्ति तो जरूर मिलनी चाहिये। वे पू. बापूजीको पत्र लिखकर उन्होंकी राय मंगानेवाले थे। मैंने आज उन्हें भी लिखा है।"

: ४० :

[जमनालालजीकी ओरसे निकाले जानेवाले वक्तव्यका गांधीजी द्वारा बनाया हुआ मसविदा।]

I have seen many rumours regarding my resignation to the Working Committee. It is perfectly true that I have sent in my resignation. It has no connection whatever with any differences with the Working Committee. My reason is purely personal. Indeed I have sent in resignations from several positions of responsibility retaining only those which I dare not give up without injuring the institutions with which I am connected.

: ४१ :

[जमनालालजीकी ओरसे लिखे गये पत्रका मसविदा जिसे गांधीजीने खुद लिखकर दो बार दुरुस्त किया था।]

CAMP BARDOLI,
7th January 1939

To
THE PRESIDENT,
COUNCIL OF STATE, JAIPUR

SIR,

The attached order[1] dated 16th December last was served on me on the 29th of the same month at Sawai Madhopur whilst I was on my way to Jaipur.

The order came as a painful surprise to me. At the station I had over an hour's chat with Mr. F.S. Young, I.G.P., who was persuading me not to commit a breach of the order. I did not need much persuasion as in a discussion with Gandhiji, of the possibility of such an order being served on me, he had advised me not to break the order immediately but to consider the whole situation in consultation with him before taking any final step.

Accordingly I suspended my journey and proceeded to Delhi. After having conferred with friends and fellow-workers and finally Gandhiji, I have come to the conclusion

१. देखिये पृष्ठ २०७, फुटनोट।

that on the 1st of February next I should commit a breach of the order unless, before then, it is unconditionally revoked.

The authorities knew that a public appeal was issued by me on 1st November last on behalf of the Jaipur Rajya Praja Mandal, of which I am President, that as famine had overtaken Shekhawati and other areas, relief work was to be undertaken by the Mandal to the exclusion of all other activity. They were also aware that on a newspaper report having appeared to the effect that civil disobedience was to be started in Jaipur I had issued a flat contradiction.

I do not know what had happened on or before the 16th December to warrant the passing of the order in anticipation of my seeking to enter Jaipur State. I note that on the same date a notification was published in the State Gazette to the effect that " an emergency has arisen which makes it necessary to provide against instigation to illegal refusal to the payment of certain liabilities. " Seeing that the order against my entry was passed the same day, it is reasonable to assume that in the opinion of the authorities I would be connected with the feared movement of illegal refusal of taxes. Surely if the authorities had any fear of my leading such a movement, they might have at least ascertained from me as to the truth or otherwise of the information in their possession. They knew me sufficiently to feel sure that I would not conceal the truth from them.

Indeed the authorities know I rendered help to them also during the recent crisis in Sikar consistently with my obligations to the people. They know that my offices were used entirely on behalf of peace.

My surprise may therefore be better imagined than I can describe it when I learnt from the order that " your (my) presence and activities are likely to lead to a breach of the peace, " and that, therefore, " it is considered necessary in the public interest and for the maintenance of public tranquillity to prohibit your (my) entry within the Jaipur State. " I have

no hesitation in saying that the notice belies the whole of my public career.

I observe that I have been described as of Wardha. I hope this is a slip. For the Jaipur State, surely I am of Jaipur. I do not cease to be of Jaipur because I have interests in Wardha and elsewhere.

It has become a serious question for my co-workers and me to consider our position in the State.

The Praja Mandal was started in July of 1931 and reorganised in November 1936. It has a constitution. It has many distinguished men of Jaipur State as its members. It has hitherto carried on its activities within the four corners of the Jaipur law and submitted even to irksome and illiberal restrictions regarding meetings and processions.

But the order served on me has opened the eyes of the Mandal. It has come to the conclusion that it must resort to civil disobedience if civil liberty is not guaranteed and meetings and processions and forming of associations are not allowed without let or hindrance so long as they observe strict non-violence.

I should define the scope of our activity. There is no mistake as to our goal. We want responsible government under the aegis of the Maharaja. We must therefore tell the people what it is and what they should do to deserve it. But we do not propose to offer civil disobedience for it. We must, however, seek the redress of the grievances of all classes of the people; we must carry on constructive and educative activities. The Mandal has no desire whatsoever to preach non-payment of taxes at this stage. If we secure the co-operation of the State in our essentially peaceful and life-building activities and in the redress of admitted grievances there never need be any resort to non-payment of taxes. But should it unfortunately become a necessity, the Mandal will give the State authorities ample notice of its intention to do so. For the Mandal stands for open, honourable and strictly non-violent methods. Therefore, what I am pleading

for is full liberty to the Mandal to carry on its perfectly legitimate and non-violent activities without let or hindrance. If, however, this reasonable request is not granted before the 31st day of this month, I shall reluctantly be compelled to attempt to enter the State in spite of the order, and the Mandal will hold itself free to take such steps as it may deem necessary for self-expression consistent with human dignity.

I hold that to do less will be to commit civil suicide. I trust that the Council of State will not put an unbearable strain upon my loyalty and that of the members of the Mandal.

I have, etc.,
Jamnalal Bajaj

: ४२ :

[जमनालालजीकी ओरसे अखबारोंमें प्रकाशित करनेके लिए गांधीजी द्वारा बनाया हुआ वक्तव्यका मसविदा ।]

BARDOLI,
7-1-39

Rumours have been going the round as to what I am going to do about the ban on my entry into Jaipur State, my birth-place and ancestral home. The ban is as much a surprise to me as to my friends. My whole life has been passed in the interests of peace in all walks of life. Whatever else non-violence may be with Congressmen, it is my creed and I try as much as it is in my power to live up to it. I am no enemy of States. I have always maintained a friendly attitude towards them. I have always believed the States to be capable of responding to the new awakening that has taken place in India. I am now carrying on correspondence with a view to find out the secret lying behind the ban. The wording of the order in no sense applies to me. I do not wish to act in haste. I have no desire to embarrass the Jaipur State authorities. But, if every honourable effort to have the ban removed fails, the public may depend upon my doing my duty.

My present and immediate object is to afford through the (Praja) Mandal relief to the famine stricken in Jaipur State. I hope that the ban will not be allowed to disturb the would be donors. I am making arrangements for all eventualities. Indeed my main reason for going to Jaipur was to devise measures for famine relief.

My second immediate concern is to try to secure the release of the nine prisoners during the recent crisis in Sikar. One of them is convicted and eight are still awaiting trial. I had good grounds for hoping that they would come in for general amnesty. I can only assure them that I shall leave no stone unturned to secure their release while I am still free.

: ४३ :

BARDOLI,
18-1-39

DEAR FRIEND,

My first thought was to publish the accompanying letter[1] purporting to describe your attitude with regard to the ban on Seth Jamnalalji's entry into Jaipur State but on second thought I felt that my purpose would be better served by sending you a copy of Shri Chudgar's letter and inviting your opinion on it. My purpose is to promote harmony between the Princes and the people and between English officials and the people who are obliged in one way

१. गांधीजीने यहां जिस पत्रका उल्लेख किया है वह राजकोटके बेरिस्टर श्री. पी. एल. चुडगरने, जो कि सीकर राव राजाके कानूनी सलाहकार भी थे, जमनालालजीको बम्बईसे १५-१-३९ को लिखा था। वह इस प्रकार है:—

"I understand it my duty to inform you th[illegible] with Sir Beauchamp St. John, Prime Minister [illegible] with Sikar affairs on the 9th instant at about [illegible] Natanika Bagh, I had some discussion with him regarding the Jaipur situation. The following is the substance of the discussion.

I told Sir Beauchamp that the ban against your entry into Jaipur State territories came as a painful surprise to millions of people all over

[अगले पृष्ठ पर चालू]

or the other to come in contact with them, to secure justice wherever possible by friendly negotiation. And now that I have felt the necessity of writing to you, whatever may be your opinion on Shri Chudgar's letter I would like to suggest to you that the bans upon Seth Jamnalalji and his organization might be removed without endangering the peace of Jaipur State. Indeed, I feel that peace is certainly endangered by the bans.

Yours sincerely,
M. K. Gandhi

SIR W. BEAUCHAMP ST. JOHN,
DIWAN, JAIPUR STATE, JAIPUR

(नक़ल परसे लिया गया)

[पिछले पृष्ठसे चालू]

India, particularly because you are well known to be a man of peace and your mission was to supervise and direct famine relief activities in the famine-stricken parts of Jaipur State. To this Sir Beauchamp replied that he agreed that you are a man of peace but you and your men's visit, he thought, would bring you and your men in contact with the masses in the famine-stricken areas and this he did not like for obvious political reasons. I told him that you cannot be expected to submit to the order for an indefinite period and that it would be better in the interests of the State and the people, in view of the statement you have published in the press after you had been served with the order, if the order were recalled so that unnecessary trouble may be avoided. He was adamant and he said that he was prepared to meet any situation that might arise if you disobeyed the order. He said that the Congressmen are out for a revolution by means of a non-violent struggle. But non-violence, he said, was a force as powerful or perhaps more powerful than violence. He further said Indians were playing upon the humane instincts in the English race, but if there was Japan or Herr Hitler instead of the English in India we could not have succeeded so well with our non-violence.

He then said that it was his considered opinion that non-violence, however strict, must be met by violence, and his reply to the non-violent movement in Jaipur would be the 'machine-gun'. I pointed out to him that all Englishmen were not of his way of thinking and even the English race as such would not agree with him. He said, 'That may or may [illegible] opinion that there was no diff[illegible] [illegible]at there would be no[illegible]

If you or [illegible] I have no objectio[illegible]

JAIPUR,
RAJPUTANA,
D/20-1-39

DEAR MR. GANDHI,

I write to acknowledge your kind letter of the 18th inst. enclosing a copy of a letter from Mr. Chudgar to Seth Jamnalal Bajaj. Your hesitation in publishing it before you had ascertained the correctness of its contents was a wise step, which I personally much appreciate, as I am now able to inform you that its description of my views is completely erroneous. I am unable to understand how Mr. Chudgar so misunderstood me and I may say that this incident confirms me in my hesitation to grant any such interviews in future.

Now that you are aware of the facts, I am sure your reluctance to publish such a letter will be confirmed. *Should, however, you decide otherwise*, I shall be glad if you can inform me as soon as practicable so that I can take suitable action.

With renewed thanks for your consideration,

Yours sincerely,
W. Beauchamp St. John

(नक़ल परसे लिया गया)

BARDOLI,
22-1-39

DEAR FRIEND,

I thank you for your prompt reply to my letter of the 18th inst.

I had expected your version of the interview, if you repudiated Shri Chudgar's version. The matter is too important to be dropped by me. I shall gladly publish your version together with Shri Chudgar's if you so wish.

Yours sincerely,
M. K. Gandhi

SIR W. BEAUCHAMP ST. JOHN,
DIWAN, JAIPUR STATE, JAIPUR

(नक़ल परसे लिया गया)

JAIPUR,

D. O. No. 96/P.M.O. RAJPUTANA,

25th January 1939

DEAR MR. GANDHI,

Many thanks for your letter of the 22nd instant.

I am sure you will sympathise with me in my natural hesitation to make a record of an interview which was understood to be private and personal when the other party to the interview has already threatened to publish an erroneous version. Such a procedure can, as I am sure you will agree, only lead to acrimony, and so far as I can see serve no useful purpose.

Should, however, Mr. Chudgar see fit to publish his erroneous version, I am sure you will give me due warning so that, as I have already said, I may take suitable action.

Yours sincerely,

W. Beauchamp St. John

(नक़ल परसे लिया गया)

BARDOLI,
27-1-39

DEAR FRIEND,

I thank you for yours of the 25th inst.

I am afraid I cannot sympathise with you in your hesitation. The report Shri Chudgar has sent is too valuable not to be published. My concern was to see that I did not give currency to a report whose accuracy could be successfully challenged.

I am in correspondence with Shri Chudgar and if he adheres to the report he has given to Seth Jamnalalji,

I may feel compelled to publish it in the interest of the cause of the people of Jaipur.[1]

I have not understood the meaning of "suitable action" to be taken by you in the event of publication of Shri Chudgar's version.

Yours sincerely,
M. K. Gandhi

SIR BEAUCHAMP ST. JOHN,
JAIPUR

(नक़ल परसे लिया गया)

: ४४ :

(*Confidential*)

BARDOLI,
26-1-39

DEAR LORD LINLITHGOW,

Your clear reply of the 4th inst. in reply to mine of the 23rd ultimo emboldens me to bring to your notice certain happenings as I see them.

In Orissa things seem to be worst. Public opinion there is not so strong as elsewhere and the most unfortunate murder of Major Bazalgette in Ranpur has complicated the situation. The Orissa Government, as has been officially admitted, has rendered every assistance it could have. This unfortunate event apart, out of a total population of 75000 souls in Talcher, 26000 have been compelled by sufferings said to be indescribable to migrate to British Orissa.

१. गांधीजी व सर बीचम सेंट जॉनके बीच हुए उपरोक्त पत्रव्यवहारकी नकलें श्री. चुडगरको बताने पर उन्होंने जमनालालजीको २८-१-३९ को निम्न पत्र लिखा था:--

"[illegible] Jamnaji and Sir [illegible] to him dated [illegible] to you dated the 15th inst. [illegible] in that letter is a substan- [illegible] versation between me and Sir Beauchamp."

श्री. चूडगरका यह पत्र मिलने पर गांधीजीने यह सारा पत्रव्यवहार ११-२-३९ के हरिजनमें अपने संपादकीयके साथ प्रकट किया था।

I feel that it is the clear duty of the Resident to see that the cause of this migration is investigated and redress given to the people.

The Resident in Kathiawad, as far as I can see, has made the Thakore Saheb of Rajkot break his solemn pact with his people published in the form of an official Notification. The struggle has, therefore, been resumed in Rajkot.

The British Prime Minister of Jaipur is said to have vowed to crush Seth Jamnalalji, well-known banker, philanthropist and social reformer, and a socio-political organisation of which he is the President. Their crime consists in aiming at responsible government under the aegis of the Maharaja.

I take it that the Central Government cannot escape responsibility, if the information given herein is trustworthy. This means that the people of the States have to fight not only their rulers who by themselves cannot resist their people but they have also to combat the unseen and all too powerful hand of the Central authority.

I venture to present this awful problem to you. I call it awful because I do not know how far it will take both the Central authority and the Congress which has a moral duty by the people of the States. I can understand the treaty obligations of the Paramount Power to protect States against danger from without and anarchy within. Is not the corollary equally true, that if the States suppress their people, the latter have also to be protected by the Paramount Power? Can a State suppress free speech, meetings and the like, and expect the Paramount Power to help it in doing so, if the afflicted people carry on a non-violent agitation for the natural freedom to which every human being in decent society is entitled?

I do not expect any reply to my letter unless there is anything to tell me. I know how every moment of your

time is occupied. It is enough for me to know, as I do know, that my letters receive your personal attention.

I remain,
Yours sincerely
M. K. Gandhi

(नक़ल परसे लिया गया)

: ४५ :

[जमनालालजीकी ओरसे उनकी गिरफ्तारीके समय दिये जानेवाले वक्तव्यका गांधीजी द्वारा बनाया हुआ मसविदा ।]

BARDOLI,
28-1-1939

The P. M. of J. (Prime Minister of Jaipur) is reported to have vowed to crush the J. (Jaipur) Rajya (Praja) Mandal and me. In pursuance of that policy I have been put out of harm's way as they may think. Presently the same fate will overtake the members of the M. (Mandal.) But if we are true to ourselves and our self-imposed trust, though our bodies may be imprisoned or otherwise injured, our spirits shall be free.

As I go into enforced silence let me reiterate what we are fighting for. Our goal is responsible government under the Maharaja but our civil disobedience has not been taken up so as to influence the Durbar to grant us responsible government. Civil disobedience is aimed at asserting the elementary right that belongs to all societies to speak and write freely, to assemble in meetings, to take out processions, to form associations, etc., so long as these activities remain non-violent. We have been forced to resort to civil disobedience because this elementary right has been denied to us. The moment this right is restored civil disobedience should be withdrawn.

Hence there is no question as yet of mass civil disobedience or a no-tax campaign.

Seeing that the M. (Mandal) has been virtually declared an illegal body, let us regard our existing register to be abrogated. A new register should be opened if possible within the State and without if necessary. Those only will become members who know that there is risk today even in becoming members of the M. (Mandal.) It is to be hoped, however, that there will be a large number of Jaipurians living within the State or without who will become members of the M. (Mandal) and thus at least show their disapproval of the ban.

The names, addresses and occupations of these members will be registered and published from time to time.

The affairs of the M. (Mandal) will in my absence be managed by ——— and they will exercise all the powers of the Mandal and the President as if the constitution was in operation. This council of five will have the right to substitute others in their respective places. In all matters of C. D. (Civil Disobedience) the council will whenever necessary seek and be guided by the advice of G. (Gandhiji.)

: ४६ :

(4–2–39)

JAMNALAL,

CARE LAKINSURE, AGRA

Your wire.[1] Mahadev has wired you certain suggestions. Carry them out. Health good. Ba Maniben detained State guests.

—*Bapu*

(नक़ल परसे लिया गया)

१. देखिये पृष्ठ २११, पत्र संख्या २०० ।

: ४७ :

BENARES,
8-2-39

MAHATMA GANDHI,
WARDHA

Jamnalalji talked phone. Have advised him that now going again and compelling them to eject him through use of force will look childish and undignified. Mahadevbhai also talked on phone who independently agrees with me. I feel Jamnalalji should now again give Jaipur authorities ample time in writing giving them chance to retrace their steps and warning to defy again if they dont lift ban but such letter in order to be helpful must be kept private. Taking wider view I feel at this stage improvement atmosphere from your side will go long way to help Rajkot and Jaipur. Please wire me also your opinion.

—*Ghanshyamdas care Lucky*

: ४८ :

[जब जमनालालजी जयपुर सत्याग्रहके सिलसिलेमें जयपुर जेलमें थे तब गांधीजीने निम्न संदेश भेजा था।]

ट्रेनमें,
१४-३-३९

जयपुर निवासियोंसे,

सुनता हूँ कि जयपुर निवासियोंने सत्याग्रहमें शान्तिका पालन किया है। सब याद रखें कि जो व्यक्ति या समुदाय अपने कार्यके लिए सत्य और अहिंसाका पुर्णरूप पालन करते हैं उनकी सदा विजय ही होती है।

मो. क. गांधी

(नक़ल परसे लिया गया)

: ४९ :

VICEREGAL LODGE,
SIMLA,
1st July 1939

DEAR MR. GANDHI,

Thank you very much for your letter of 22nd June. It raises one or two points on which I should like to touch in my reply.

As regards Jaipur, the Durbar have, I am quite sure, no desire to detain Seth Jamnalal Bajaj any longer than is necessary. Indeed as you will remember, they were at considerable pains to avoid detaining him in the first instance. Seth Jamnalal has been made fully aware of the conditions on which the Durbar are ready to take the desired action now in regard to him and the other prisoners, and to the best of my knowledge, the position has not altered since the departure of H. H. the Maharaja.

I have read with close attention what you say in the last paragraph of your letter and I am very grateful to you for letting me know your views. I think it is fair to say that the Political Department have given no more encouragement to "anti-congress personalities" to use, if I may, your own phrase, than to pro-congress personalities to establish contacts within rulers and their subjects.

I hope you keep well.

Yours sincerely,
Linlithgow

(नक़ल परसे लिया गया)

: ५० :

जयपुर राज्य प्रजा मंडल,
जयपुर,
३०–७–३९

पूज्य बापूजी,

पांवके दर्द व जख्मके[१] बारेमें पूरी जानकारी इसके साथ है।

१. जयपुर जेलमें पैरका इलाज कराते समय जमनालालजीको जख्म हो गई थी। इस संबंधमें पृष्ठ २१८–२२०, पत्र संख्या २१६–२१७ भी देखिये।

ज्यादह आन्दोलन पहिले तो इसी लिए नहीं किया था कि उसी बिना पर छोड़ दें तो अच्छा नहीं होगा। अब आगेको आप जैसा ठीक समझें। भाई कमल तो आपको सब कहेगा ही।

शिकारखानेके मामलेके कुछ कागजात भेजे हैं। हरिजनमें कुछ आप लिखें ऐसी सेठजीकी इच्छा है। दो रोज बाद और भी मसाला भेजूंगा।

हैद्राबादके सुधार बिलकुल निकम्मे हैं। सत्याग्रह करके इसके आगे काम बढानेके लिए सरकारके हृदयमें परिवर्तन करनेकी कोशिश करनी चाहिये।

सेवक

[signature]

अभी फोनपर मालूम हुआ कि आपने यहांके प्राइम मिनिस्टरके नाम लिखा कमलका पत्र मंगाया है। वह भी साथमें है।

: ५१ :

सेगांव, वर्धा,
२९-९-३९

पू. जमनालालजीनी सेवामां,

पू. बापुजीए अहींना खबर आपवा माटे आपने लखवानुं कह्युं छे।

पू. बापूजी सीमलाथी काले रात्रे अहीं आव्या। नीकळ्या त्यारथी ते अहीं पहोंच्या ते दरम्याननी बधी रातो ट्रेनमांज गाळवी पडेली तेथी थाकेला हता पण प्रमाणमां तबियत एटला काममां अने मुसाफरीना श्रममां पण सारी रही लागे छे। फक्त सेगांवने माटेज त्रण दिवस माटे आव्या छे। १ लीए फरी दिल्ली जवा नीकळशे अने छठ्ठी के सातमीए पाछा फरवानी आशा राखे छे। महादेवभाईने लखनौ मोकल्या छे ते खबर पडी हशे। आजे आवी जवा संभव छे। राजकुमारीबेन परम दिवस राजकोट जाय छे। १३ मीनी आसपास पाछा फरशे।

A. I. C. C. नी मीटींग १० मीए अहीं थशे। वर्किंग कमीटी पण अहीं थवा संभव छे।

वाइसरोय साथे थयेली वात विषे पू. बापुजी एटलुं बोल्या के हुं तो आशावादी छुं तेथी निराशाना खास कारणो न जणाय त्यां सुधी आशा न छोडुं।

लि.

[signature]

: ५२ :

९–१०–४०

परम पूज्य बापूजी,

सीकरमें श्री. जमनालालजीके यहां जो तलाशी हुई[1] उसकी विगतवार रिपोर्ट डाकसे मिली है। आपकी जानकारीके लिए भेजी है। आप उचित समझें तो हरिजनमें भी कुछ लिखिएगा।

बालक

[signature]

: ५३ :

वर्धा,
१४–११–४०

प्रिय भाई,

कल पूज्य बापूजीने कुछ महत्वपूर्ण बातें सुनाईं। वह आपकी और आप जिन्हें योग्य समझें उन कार्यकर्ताओंकी जानकारीके लिए लिखता हूं। यह अखबार वगैरहमें प्रकट करनेके लिए नहीं है। इसमें भाषा बापूजीकी नहीं है। उनके कहनेका भावार्थ ही है।

"जैसा कि मैं लिख चुका हूं मेरे दिलमें यह बात उठ रही है कि मेरे नसीबमें एक बडा अनशन लिखा ही गया है। वर्तमान युद्ध, देशकी

१. जमनालालजीने जयपुरके बारेमें अखबारोंमें एक वक्तव्य दिया था जो १–१०–४० के हिन्दुस्थान टाइम्समें छपा था। पुलिस उसकी मूल प्रतिके लिए तलाशी लेना चाहती थी। पुलिसके पूछने पर जमनालालजीने कहा भी कि छपी हुई प्रति तो है पर मूल प्रति नहीं है और स्वीकार भी किया कि यह वक्तव्य उन्हींका दिया हुआ है। फिर भी उन्होंने तलाशी लेनी चाही इसपर जमनालालजीने उनसे तलाशीका वारंट मांगा। पुलिसके पास वारंट नहीं था फिर भी उन्होंने जबरदस्ती करीब साढे पांच घंटे तक तलाशी ली। उनको कुछ मिला नहीं, पर वक्तव्यकी छपी हुई एक प्रति और जमनालालजीकी डायरी लेकर वे चले गये।

पराधीन स्थिति, और अहिंसा द्वारा हिन्दुस्तानकी आज़ादी हो जाय तो सारे जगतके लिए उसका महत्व, इत्यादि बातें मेरे बलिदानकी अनिवार्यता मेरे मनमें सिद्ध कर रही हैं। पर साथ ही मेरा जीव उसकी संभावनासे कुछ घबडा भी रहा है। मैं चाहता हूं वह टल सके। उसके प्रति बढनेकी मैं कोशिश नहीं कर रहा हूं। लेकिन उसकी ओर मैं खिंचा जा रहा हूं।

"यह एक तरहसे ठीक ही है। क्योंकि जो समय मेरे दिलकी तैयारी होनेमें जा रहा है वह समय जनता और तुम सबको अनशनकी परिस्थितिके लिए तैयार भी कर रहा है। न मालूम लोग कितने तैयार हो जायं कि मुझे पूछने लग जायं कि अभी अनशन क्यों शुरू नहीं करते?

"अनशन किस रूपमें आवेगा यह मैं नहीं बता सकता। अगर वह मेरे बाहर रहते हुए हुआ तब तो उस वक्त तुम्हें क्या करना चाहिये वह मैं बता सकूंगा। जबतक मुझमें ताकत होगी तबतक मैं सूचनाएं देता रहूंगा। सम्भवत: अनशनके पहिले ही अपना निवेदन भी प्रकट करूं। पर मुमकिन है कि सरकार मुझे गिरफ्तार कर ले और जेलसे अनशन करना पड़े। तब न मैं निवेदन निकाल सकूंगा न सूचनाएं दे सकूंगा। और मैं कह चुका हूं कि मैं अपने पीछे किसीको मेरा उत्तराधिकारी करनेवाला नहीं हूं। तब तुम्हें अपनी-अपनी विवेक बुद्धिसे ही चलना होगा। उस अवस्थामें अगर कोई मार्गदर्शन हो गया तो वह अपने ही प्रभावसे होगा।

"'जेलसे अनशन करना पडे' इसका मतलब यह नहीं कि उस अवस्थामें मेरा अनशन करनेका निर्णय है ही। एक संभावना ही मान लीजिये। मुझे जेल मिले और बाहरकी स्थिति समाधान कारक हो तो मैं जेल ही काटलूं।

"जहां तक मैं सोच सकता हूं, यह अनशन शर्तिया ही हो सकता है। वह मुक्तिके लिए नहीं होगा। बाह्य सिद्धिके लिए होगा। आध्यात्मिक दृष्टिसे यह उत्तम पंक्तिका नहीं माना जा सकता फिर भी वह सिद्धि इतनी शुद्ध तो है ही कि उस पर एक जन्म न्यौछावर किया जा सकता है। पर सिद्धि मिले तो अनशन छूट जा सकता है। यानी एक विशेष सिद्धिके लिए अनशनके रूपमें वह एक तपश्चर्या होगी।

"लेकिन शर्तिया अनशन होते हुए भी अंग्रेज सरकारकी जो आज परिस्थिति और विचारधारा है उसकी ओर देखते हुए यह संभव नहीं कि वह मेरी मृत्यु टालनेके लिए अपनी राजनीतिमें परिवर्तन करे

उसके लिए अपने ही जीवन-मरणका सवाल इतने महत्वका है कि पचास गांधीके प्राणोंको कुर्बान करनेमें उसे हिचकिचाहट न होगी। और दूसरी नीति यानी अहिंसा और आत्मशुद्धिसे अपना सवाल हल करनेकी उसे बुद्धि उत्पन्न होना भी मुश्किल है। इसलिए वह मेरे प्रति क्रोधसे नहीं पर अपनी लाचारी समझ कर भी मुझे अपना बलिदान करने देगी। मैं अनशन करूं उसके पहिले या उसके साथ ही दूसरे साथीदारोंको भी उस बलिदानमें हिस्सा लेने दिया जाय ऐसी भी सूचना मेरे पास आई है। अब जबतक मैं जिन्दा हूं तब-तक यह विवेकपूर्ण बात न होगी। इस अनशनका उद्देश्य एक स्थानिक समस्या नहीं है। अखिल भारतीयसे बढकर दुनिया भरकी है। उसमें छोटे पचास व्यक्तियोंका बलिदान एक जगत प्रसिद्ध व्यक्तिके बलि-दानकी बराबरीका नहीं हो सकता। और अगर उससे समस्याको मिटना है तो मेरा ही बलिदान संपूर्ण हो सकता है। लेकिन मेरे अनशनके दरमियान मेरी मृत्यु हो तो उसके बाद तुम क्या कर सकते हो यह समझनेकी बात है।

"रचनात्मक कार्यक्रमकी वैसे तो तेरह बातें बताई गई हैं। उसमें और भी बढाई जा सकती हैं। लेकिन उसमें तीन महत्वकी हैं। हमारे जीवनकी वे क्रांति करनेवाली हैं। खादी, अस्पृश्यता-निवारण, और हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य। हरिजन और मुसलमानका स्थान यत्किंचित भी हमसे अलग रखनेका मानसिक भाव ही मेकडोनाल्ड निर्णय और पाकिस्तान है। याद रखें कि भिन्नता उन्होंने पहिले मांगी नहीं है। हमने ही उन्हें दी है और मांगनेको मजबूर किया है। तब सवर्ण-अवर्ण और हिन्दू-मुसलमान ऐक्य तथा खादी हमारे समग्र जीवनकी ही क्रांति है। इन्हें सिद्ध करनेके लिए अपनी सब शक्ति और जब जरूरत हो जाय तब फूलसिंह भक्त और अमतुलसलामकी तरह अपना प्राण खर्च करनेके लिए तुम तैयार रहो।

"इस वक्त जब कानूनभंगका कार्यक्रम चल रहा है तब जिन्हें रचनात्मक कार्यक्रममें लगे रहनेके कारण जेल नहीं जाना है, वे अपने-अपने काम दिलचस्पीके साथ करते रहेंगे ही। लेकिन जब दूसरे कार्यकर्ता जेल जानेके आंदोलन पर जोर दे रहे हैं उसी समय तुम्हारा रचनात्मक कार्यक्रमके लिए जोशीला आंदोलन मचाना ठीक न होगा। जनताकी मनोवृत्ति इस समय जेलकी ओर झुकी हुई है। इसलिए उसे वहीं एकाग्र होने दी जाय।

"पर जब ऐसी परिस्थिति पैदा हो जाय कि जितने लोगोंको जेलमें जाना या भेजना है, अथवा मैं अनशन कर रहा हूं, अथवा कोई स्थानिक परिस्थिति, जैसी आज सिंधमें है, पैदा हुई, तो तब तुम्हें अपना कर्तव्य और स्थान पूरी तरह संभालना होगा। उस वक्त जैसा तुम्हारा अंतःकरण प्रेरणा करे उस तरह तुम आंदोलन करो और अपने प्राण गंवाओ। मेरे मरने पर वैसी ही तुम्हारे अंतःकरणकी प्रेरणा हो तो अनशनकी परंपरा चलावें। लेकिन मैं यह नहीं कहता कि चलाना जरूरी होगा।

"एक दूसरी परिस्थितिमें भी तुम्हें अपने प्राणोंका बलिदान देनेकी नौबत आ सकती है। यह संभव है कि जनताको मजबूर करनेके लिए अंग्रेज सरकार अथवा यह हार जाय तो दूसरे विजेता हिन्दुस्तानमें भीषण दमन नीति चलावें। चन्द भागका निकन्दन भी किया जा सकता है। पर निकन्दनसे तो कुछ अंशमें काम सरल हो जाता है। लेकिन बहुत जनताका निकन्दन नहीं किया जायगा। उदाहरणार्थ— जबतक लोग विजेताकी शर्तें मंजूर न करलें, कई देहातोंको चारों ओरसे घेर लिया जायगा, कुओं पर पहरा बिठाया जायगा, उनके आसपासकी खेतीको विध्वंस किया जायगा, इस तरह लोगोंको भूख-प्याससे तंग किया जायगा। उसके सामने जनताका झुक जाना मुमकिन है। उस वक्त तुम्हें झुक नहीं जाना है। लोगोंको हिम्मत देना होगा। खुद भूखे-प्यासे मरकर लोगोंको भूख-प्यास सहन करके मर जानेकी और विजेतासे असहयोग करनेकी सलाह देना होगा।

"यदि ऐसा कोई अवसर मिल जाय कि इस प्रकारके मिशनकी मनोवृत्ति रखनेवाले कार्यकर्ताओंके साथ बैठकर मैं अपना दिल खोलकर मशविरा करूं तो मुझे खुशी होगी। लेकिन आज मैं उसकी योजना करना नहीं चाहता।"

यह पूज्य बापूजीकी बातोंका सारांश है। मैं सोचता हूं कि इस प्रकारकी मनोवृत्ति रखनेवाले व्यक्तियोंकी नामावली किसी एक जगह संग्रह कर दी जाय तो अच्छा होगा। अपने-अपने प्रांतके ऐसे कार्यकर्ताओंकी सूची बनाकर अगर गांधी सेवा संघके दफ्तरमें भेज दें तो?[१]

आपका,

(नकल परसे लिया गया) जमनालाल बजाज

१. पत्रका यह मसविदा जमनालालजीने कुछ मित्रोंको भेजनेके लिए बनाया था।

: ५४ :

[जमनालालजी व्यक्तिगत सत्याग्रहमें शामिल हो रहे थे। उस समय युद्धके विरुद्ध क्या कहकर कानून-भंग किया जाय इसका मसविदा बनाकर गांधीजीको बताया गया। उसमें गांधीजीने अपने हाथसे जो सुधार किया उसके साथ इस मसविदेका ब्लाक नीचे दिया जाता है।]

इस अंग्रेजी लडाई मे आदमी या पैसे से मदद देना हराम है। [illegible] लडाईयोंका [illegible] सही विरोध [illegible] अहिंसा [illegible] ही हो सकता है [illegible] विरोध

(उपरोक्त मसविदेकी प्रतिलिपि)

(२०-१२-४०)

इस अंग्रेजी लडाईमें आदमी या पैसेसे मदद देना हराम है। लडाईयोंका सही विरोध अहिंसासे ही हो सकता है।

नोंध:—तीसरे भागमें दिए गए निम्न नंबरके पत्र भाग १ में देने रह गये थे, इसलिए इस विभागमें दिए गए हैं:—८, १४, १८, १९, २०, २८, २९, ३२, ४६, ४७।

परिशिष्ट १

भाग १ तथा २ में आये पत्रोंमेंसे चुने हुए पत्रोंका हिंदी अनुवाद

१. भाग १ के पत्रोंका अनुवाद

: १६ :

भाई श्री ५ जमनालालजी,

आपके आदमीको टिकटके पैसे मैंने आग्रहपूर्वक चुकाये। अगर मैं ऐसा न करूं तो आपको बिना संकोचके दूसरे काम न सौंप सकूं।

यहां आकर इमारती कामका हिसाब जांचा। मेरे पास २८,००० रूपये आये हैं। ४०,००० रूपये खर्च हो गये। अतिरिक्त खर्च आश्रमके दूसरे कामोंके लिए जो रकम मिली उसमेंसे हुआ है। मेरी असली जरूरत अभी तो मकान आदि बनानेके लिए (रूपयोंकी) है। एक लाखका खर्च है। इसके लिए कुछ भेजनेकी आपकी इच्छा हो तो भेजियेगा।

मोहनदासका वंदेमातरम्

मेरी यात्राका खर्चा उठाओ उसके बजाय खास जरूरी यह है।

१९-६-१९१८] मोहनदास

: १७ :

चि. जमनालाल,

जैसे-जैसे मैं सत्यकी शोध करता जाता हूं, मुझे प्रतीत होता है कि उसमें सब कुछ आ जाता है। प्रायः यह प्रतीत होता रहता है कि अहिंसामें वह नहीं है, परन्तु उसमें अहिंसा है। निर्मल अंतःकरणको जिस समय जो प्रतीत हो वह सत्य है। उस पर दृढ़ रहनेसे शुद्ध सत्यकी प्राप्ति हो जाती है। इसमें मुझे कहीं धर्म-संकट भी मालूम नहीं होता। लेकिन अहिंसा किसे कहें इसका निर्णय करनेमें प्रायः कठिनाईका अनुभव होता है। जन्तुनाशक पानीका उपयोग भी हिंसा है। हिंसामय जगत्में अहिंसामय बनकर रहना है। वह तो सत्य पर दृढ़ रहनेसे ही हो सकता है। इसलिए मैं तो सत्यमेंसे

अहिंसाको फलित कर सकता हूं। सत्यमेंसे प्रेमकी प्राप्ति होती है। सत्यमेंसे मृदुता मिलती है। सत्यवादी सत्याग्रहीको एकदम नम्र होना चाहिये। जैसे-जैसे उसका सत्य बढ़ता है वैसे ही वह नम्र बनता जायगा। प्रतिक्षण मैं इसका अनुभव कर रहा हूं। इस समय सत्यका मुझे जितना खयाल है, उतना एक वर्ष पहले न था, और इस समय मैं अपनी अल्पताको जितना अनुभव कर रहा हूं उतना एक साल पहले नहीं कर पाता था।

मेरी दृष्टिमें, 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' इस कथनका चमत्कार दिनों-दिन बढ़ता जाता है। इसलिए हमें हमेशा धीरज रखनी चाहिये। धैर्य पालनसे हमारे अंदरकी कठोरता चली जायगी। कठोरताके न रहने पर हममें सहिष्णुता बढ़ेगी। अपने दोष हमें पहाड़ जितने बड़े प्रतीत होंगे, और संसारके राईसे। शरीरकी स्थिति अहंकारको लेकर है। शरीरका आत्यंतिक नाश मोक्ष है। जिसके अहंकारका सर्वथा नाश हुआ है वह मूर्तिमन्त सत्य बन जाता है। उसे ब्रह्म कहनेमें भी कोई बाधा नहीं हो सकती। इसीलिए परमेश्वरका प्यारा नाम तो दासानुदास है।

स्त्री, पुत्र, मित्र परिग्रह सब कुछ सत्यके अधीन रहना चाहिये। सत्यकी शोध करते हुए इन सबका त्याग करनेको तत्पर रहें तो ही सत्याग्रही हुआ जा सकता है।

इस धर्मका पालन अपेक्षाकृत सहज हो जाय इस हेतुसे मैं इस प्रवृत्तिमें पड़ा हूं, और तुम्हारे समान लोगोंको होमनेमें भी नहीं झिझकता। इसका बाह्य स्वरूप हिंद स्वराज्य है। उसका सच्चा स्वरूप तो उस-उस व्यक्तिका स्वराज्य है। अभी एक भी ऐसा शुद्ध सत्याग्रही उत्पन्न नहीं हुआ है। इसी कारण यह देर हो रही है। किन्तु इसमें घबरानेकी तो कोई बात ही नहीं। इससे तो यही सिद्ध होता है कि हमें और भी अधिक प्रयत्न करना चाहिये।

तुम पांचवें पुत्र तो बने ही हो। किन्तु मैं योग्य बननेका प्रयत्न कर रहा हूं। दत्तक लेनेवालेका दायित्व कोई साधारण नहीं है। ईश्वर मेरी सहायता करे और मैं इसी जन्ममें उसके योग्य बनूं।

[१६-३-१९२२] शुभेच्छुक बापूके आशीर्वाद

: २० :

चि. जमनालाल,

कल मैंने मोहवश होकर रामदासके विषयमें जल्दीमें अपने विचार बताये। हम जुदा हुए उसके बाद मैं पछताया और देखा कि अपनेको साव-धान समझनेवाला मनुष्य भी किस प्रकार मुग्ध हो सकता है और कैसे बिना

विचारे बोल सकता है। कल मैंने पिताके रूपमें अपने धर्मका पालन नहीं किया। मैं समझता हूं कि जबतक चि. रामदास अपने जीवनका आदर्श निश्चित नहीं कर लेता और अपनी इच्छाके मुताबिक स्थिर नहीं हो जाता, तबतक वह शादी करेगा तो पाप करेगा। मेरी प्रतिष्ठाके आधार पर नहीं, बल्कि अपने गुणोंके आधार पर वह शादी करे ऐसी उसकी इच्छा है। हम सब भी यही चाहें। इस कारण रामदासको कोई भी व्यवसाय पसंद कर लेना चाहिये। उस परसे लड़की देनेवाले मातापिता विचार करेंगे और लड़की खुद भी समझेगी कि उसे कहां जाना है। इस कारण हम सबका, और अब तो आप जो बाहर हैं उनका, पहला काम रामदासको काममें लगानेमें मदद करना है। रामदासको पढ़नेका लोभ हो तो भले पढ़े। अगर रामदासका बूढ़ा बाप आज बालकके समान अभ्यास कर रहा है, तो रामदासकी जवानी तो अभी शुरू हो रही है। अगर उसे व्यापारमें पड़ना हो तो पड़े और आश्रममें या राष्ट्रीय विद्यालयमें उसका मन लगे तो वैसा करे। हरीलालके साथ रहना हो तो उसके साथ रहे। मेरी खास तौरसे सलाह है कि किसी भी काममें एक साल रहकर अनुभव लेनेके बाद ही रामदास सगाईका विचार करे।

धनिक मातापिताकी लड़की चरित्रवान् हो तो भी जबतक वह खुद गरीबी पसंद न करे रामदासको ऐसे विवाह-बंधनमें बंधना अपनेको दुखी बनाना है और कन्या तथा उसके मातापिताको दुखी करना है। सही रास्ता तो मुझे यह प्रतीत होता है कि गरीबसे-गरीब परिवारमेंसे गुणवती कन्या खोज निकालनी चाहिये। ऐसी खोजमें समय लगे तो कोई हर्ज नहीं।

बाके प्रति भी मैं गलत मोहमें पड़ गया था। मैं मानता हूं कि उसके प्रति कसाईपन बरतनेमें ही मेरा धर्म है। मातापिताको अपने स्वार्थके लिए अपनी संतानकी गतिविधि या इच्छाको न रोकना चाहिये। इसके विपरीत कल मैंने बाको उल्टे उत्तेजन दिया, पर मेरी सलाह है कि बाको तो कड़ुआ घूंट पीकर रामदासका वियोग भी संतोष पूर्वक सहन करना चाहिये। रामदास राजगोपालाचार्य जैसे चरित्रवान्के पास जाकर सुखी हो इसके लिए बाको उसे आशीर्वाद देना चाहिये। उसमें ही बाका परम श्रेय है। उसके सद्गुणी पुत्र है इसीमें वह संतोष माने। रामदासको उनका (राजाजीका) साथ मिले यही उचित है।

तुम अपनी इच्छासे दूसरे देवदास बने हो। अब देखो कि यह कितना कठिन हो पड़ता है। सब लड़कोंकी इच्छायें अब तुमको पूरी करनी हैं। ईश्वर तुम्हारी सहायता करे। मैं तुम्हारे प्रेमके लायक बननेका प्रयत्न करता ही रहता हूं।

अब तुम्हारी धार्मिक भावनाके बारेमें :—

ऐसा समझो कि अपवित्र विचारसे जो मुक्त हो जाय उसने मोक्ष प्राप्त किया। अपवित्र विचारोंका सर्वथा नाश बड़ी तपश्चर्यासे होता है। उसका एक ही उपाय है। अपवित्र विचारोंके आते ही उनके विरुद्ध तुरत पवित्र विचार खड़े कर दें। ईश्वर प्रसादीसे ही यह संभव है। वह प्रसादी चौबीसों घंटे ईश्वरका नाम जपनेसे तथा वह ईश्वर अंतर्यामी है यह जान लेनेसे ही मिलती है। भले रामनाम जीभ पर ही हो और मनमें दूसरे विचार आते रहें। जीभसे रामनाम इतना प्रयत्न पूर्वक लें कि अंतमें जो जीभ पर हो वही हृदयमें भी प्रथम स्थान ले ले। फिर मन चाहे जितना मिथ्या प्रयत्न करे तो भी एक भी इंद्रिय उसके वशमें नहीं होने देनी चाहिये। जो मनुष्य मन जिधर ले जाय उधर इंद्रियोंको भी जाने देता है उसका नाश ही होता है। परन्तु अपनी इंद्रियोंको जो मनुष्य बलात् भी अपने कब्जेमें रखता है तो यह आशा है कि वह किसी दिन अपवित्र विचारों पर भी अधिकार कर लेगा। मैं जानता हूं कि आज भी अगर मैं अपने विचारोंके अनुसार अपनी इंद्रियोंको खुली छोड़ दूं तो आज ही मेरा नाश हो जाय। अपवित्र विचार आयें तो उससे पीछे न हटें बल्कि अधिक उत्साहित हों। प्रयत्न करनेका संपूर्ण क्षेत्र हमारे पास है। परिणामका क्षेत्र ईश्वरने अपने हाथमें रखा है। इसलिए उसकी चिंता मत करो। जब भी अपवित्र विचार आयें मनमें यह भी समझो कि तुम जानकीबाईके प्रति बेवफा होते हो। और साधु पति अपनी पत्नीके प्रति बेवफा होता ही नहीं। तुम साधु हो। प्राकृत उपाय जानते ही हो। अल्पाहार ही करें। सिर्फ अपने सामनेकी जमीन पर निगाह रखकर ही चलें। आंखें मलिन होनेकी संभावना हो कि उसे फोड़ डालने जितना क्रोध उनपर करना चाहिये। निरन्तर पवित्र पुस्तकोंका ही संग रखें। ईश्वर तुम्हारा सब प्रकार रक्षण करे।

५-१०-१९२२] शुभेच्छुक बापूके आशीर्वाद

: २२ :

चि. जमनालाल,

तुमने कानपुर जानेका इरादा छोड़ दिया, यह ठीक किया है। अभी कमजोरीके सिवाय और भी कुछ है क्या ?

चिचवडकी संस्थाको तुम जानते हो। उनका विरोध काफी हो रहा है। पैसेकी तंगी बनी ही रहती है। मैं समझता हूं कि उन्हें मदद देनेकी जरूरत है। सोचता रहता हूं कि किस तरह दी जाय। कुल मिलाकर उन्हें १५००० रू. की जरूरत है। इतनी मदद मिल जाय तो फिर उन्हें बिलकुल जरूरत न होगी और फिर न मांगे ऐसी प्रतिज्ञा करनेके लिए वे लोग तैयार

हैं। यदि तुम्हारा अनुभव मेरी तरह हो कि वे लोग इसके लायक हैं और तुम्हारे पास सुविधा हो तो मैं चाहता हूं कि उनकी इतनी मदद तुम करो।

राजगोपालाचार्यको फिरसे दमेका दौरा शुरू हुआ है। मैं समझता हूं कि उन्हें नासिककी हवा माफिक आवेगी। यदि तुम्हारे पास सुविधा हो तो उन्हें सेलम पत्र लिखो कि वे तुम्हारे पास आकर कुछ समय रहें। दवा भी वे पूनाके वैद्यकी ही लेते हैं। वे वैद्य उनकी जांच भी कर सकते हैं। मैंने उन्हें लिखा तो है कि जबतक तुम वहां हो तबतक वे नासिक रहने चले जायं तो ठीक।

तुमको मालूम हुआ होगा कि पूनाके वैद्यकी दवा वल्लभभाईकी मणि-बहन, मगनलालकी राधा और प्रो. कृपलानीकी कीकीबहनके लिए शुरू की है। इसकी प्रेरणा करनेवाला देवदास है। इन वैद्यके संबंधमें तुम्हारा अनुभव क्या है, सो लिखना। मालवीयजी कल काशी गये। हिन्दू-मुसलमानके संबंधमें कुछ बातें हुईं। हकीमजी आये थे। उन्होंने भी इसी विषयमें बातें कीं। मोतीलालजी यहीं हैं, वे अभी रहेंगे। वे कौंसिलकी बातें कर रहे हैं। सब बातोंका विचार करता रहता हूं।

जवाब दिया, ६-४-१९२४] बापूके आशीर्वाद

: २४ :

चि. जमनालाल,

तुमको दुःख हुआ उससे मुझे भी हुआ। मैंने उस खतमें चिरंजीव विशेषणका उपयोग नहीं किया क्योंकि वह मैंने खुला भेजा था। उसमें चि. विशेषण सब लोग पढ़ें यह उचित होगा या नहीं इसका निर्णय उस समय में नहीं कर सका। इससे मैंने भाई शब्दका प्रयोग किया। तुम चि. होनेके योग्य हो या नहीं अथवा मैं पिताका स्थान लेने लायक हूं या नहीं, इसका निर्णय कैसे हो? तुम्हें जैसे अपने बारेमें शंका है, वैसे ही मुझे अपने बारेमें है। यदि तुम अपूर्ण हो तो मैं भी अपूर्ण हूं। पिता बननेसे पहले मुझे अपने बारेमें ज्यादा विचार करना था। तुम्हारे प्रेमके वश होकर मैं पिता बना हूं। ईश्वर मुझे इसके योग्य बनावे। यदि तुममें कमी रहेगी तो मेरे स्पर्शकी वह कमी होगी। इसका मुझे विश्वास है कि हम दोनों प्रयत्न करते हुए अवश्य सफल होंगे। इतने पर भी यदि निष्फलता हुई तो वह भगवान, जो कि भावनाका भूखा है, और हमारे अंतःकरणको देख सकता है, हमारी योग्यताके अनुसार हमारा फैसला करेगा। इसलिए जबतक मैं ज्ञानपूर्वक अपने अन्दर मलीनताको स्थान नहीं देता हूं तबतक तुमको चिरंजीव ही मानता रहूंगा।

आज एक बजे तक मौन है। पंडित सुन्दरलालको छः बजे आनेके लिए कहा है। उनसे मिलनेके बाद तुमको बुलानेकी जरूरत होगी तो तार दूंगा।

वहांकी आबहवा माफिक आई होगी। मणिबहन हजीरा गई है। राधाकी तबीयत बहुत सुधरी है ऐसा कह सकते हैं। कीकीबहन भी अच्छी है।

मई-जून, १९२४] बापूके आशीर्वाद

: २८ :

चि. जमनालाल,

तुम्हारा तार मिल गया और पत्र भी। बंबई, पूना और सूरतकी यात्रामें लिखनेको एक क्षणका भी समय नहीं मिला। आज सुबह आश्रम पहुंचा।

तुमको चोट लगी इससे मुझे बिलकुल दुःख नहीं हुआ। मैं तो मानता हूं कि हम जैसे बहुतोंको कदाचित् बलिदान होना पड़े। जहर इतना ज्यादा व्याप्त हो गया है और अप्रमाणिकता इतनी ज्यादा फैल गई है कि कुछ शुद्ध व्यक्तियोंको बलिदान हुए बिना इस आपत्तिसे हमारा छुटकारा नहीं हो सकता। हो सके तो झगड़ेकी जड़का पता लगाना। क्या कोई ऐसे समझदार हिन्दू या मुसलमान नहीं हैं जो समझें और झगड़ेके कारणोंको दूर करें?

मेरे निश्चय तुमने समझ लिये होंगे। बेलगांवमें वोट (मतदान) से किसी भी महत्वपूर्ण बातका फैसला न करनेका मैंने निश्चय किया है। झगड़े इतने बढ़ गये हैं कि फिलहाल तो हमको सत्याग्रहका बृहत् स्वरूप बंद ही रखना चाहिये। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि अगर हम ऐसा नहीं करेंगे तो हमारा ही नाश हो जायगा। एक भी बात सही रूपमें नहीं समझी जाती। सबका अनर्थ; चारों ओर अविश्वास! इस समय तो हम खुद अपनी जगह कायम रहें और दूसरे जो कुछ करते हैं उसके साक्षी रहें। 'यंग इंडिया' के द्वारा तो मैंने बहुत कुछ समझाया है। मुझे पता नहीं कि उसमेंसे कितनेका अनुवाद 'नवजीवन' में आया होगा।

तुम्हारा हाथ बिलकुल अच्छा हो गया होगा।

मौ. मुहम्मद अलीका पत्र या तार आने तक मैं यहीं हूं।

सितंबर, १९२४] बापूके आशीर्वाद

: २९ :

चि. जमनालाल,

तुम्हारा हाथ अब बिलकुल दुरुस्त हो गया होगा। मेरा पहला पत्र मिला होगा।

मेरे चित्तमें अनेक परिवर्तन होते रहते हैं। उसका पूरा दर्शन इस समयके 'यंग इंडिया' में आवेगा। वोट लेकर हमें मेजारिटी (बहुमत) नहीं बनाना चाहिये, इतना मुझे अभी तो लगता है। बेलगांवमें यदि हमको ज्योंका-त्यों काम करनेका अवसर नहीं मिले तो हमें अलग होकर जितना बन सके उतना

काम करना चाहिये। मैं यह देख रहा हूं कि जो जहर अभी फैल रहा है वह इसके बिना नष्ट नहीं होगा। इतना तो मानता हूं कि कैसे भी हो हम उसका मुकाबला कर सकेंगे। दिल्ली जानेके लिए तारकी राह देख रहा हूं। वहां जाना पड़ा तो हिन्दू-मुसलमानके विषयमें कुछ रास्ता निकलनेकी संभावना है। अभी तक यह पता नहीं चला कि वहां दंगा कैसे हुआ।

घटवाईके भाषण अभी देखे। यदि इसी तरह बोला हो तो मेरा धन्यवाद बेकार हो गया। इस भाषणमें अहिंसा नहीं है।

बालकृष्ण आगया यह ठीक हुआ। अपनी इच्छाके अनुसार भले वहां रहे। इसके साथ जो पत्र है वह उसे दे देना। अक्टूबरमें तुम भी आवोगे न ?

१०-९-१९२४] बापूके आशीर्वाद

: ३१ :

पू. भाईश्री,

यहांका कामकाज धीमे-धीमे चल रहा है। कमेटीने सब-कमेटी बनाई। सब-कमेटीमें एक दिन लोग खूब दिल खोलकर बोले। इसलिए सब-कमेटीमेंसे अब एक खानगी सब-सब-कमेटी बनी है। हकीमसाहबके यहां उसकी बैठकें होती हैं। बापू, पंडितजी, सभी मौलाना (जफरअली सहित) और हकीमसाहब, इतने लोग रोज इकट्ठे होते हैं और शाम तक बातें चलती रहती हैं। बापू कुछ रास्ता निकालनेका प्रयत्न कर रहे हैं। जो हो जाय सो सही।

गोरक्षा समितिका काम ठीक हो गया। बापूने अपने गोरक्षाके भाषणके अनुसार एक योजना बना ली है। वह सबको पसंद आगई है। अतः अब इस कामको स्थायीरूप मिल जायगा। बापूको इस कामके लिए एक अच्छा मंत्री चाहिये। युवक, उत्साही, हिन्दी-अंग्रेजी आदि भाषाओंको जाननेवाला और सबसे बढ़कर चरित्रवान्—हो सके तो ब्रह्मचारी—गो-सेवक चाहिये। आपकी निगाहमें कोई है ?

यहां ३१ तक तो रहना होगा ही।

२८-१-१९२५] सेवक महादेवके प्रणाम

: ३५ :

मुरब्बी जमनालालजी,

आपको यह जानकर दुःख होगा कि बापूने पाठशालाके बालकोंकी मलीनताके लिए आजसे ७ दिनका उपवास शुरू किया है। बालकोंमें यह पाप प्रवेश कर गया है, यह तो पहले मालूम हो गया था, परन्तु यह इतनी बड़ी मात्रामें फैल गया है, यानी २-३ बालकोंको छोड़कर सभी इस पापमें फंस गये हैं, इसका पता बापूको अभी लगा। सबने अपना दोष कबूल किया।

इस उपवासके रहस्यकी चर्चा मैं आपके साथ नहीं करूंगा। इसकी योग्यता या अयोग्यताके विषयमें भी नहीं। अभी तो बापूका आग्रह है कि इस खबरको सुनकर आप दौड़े न आवें। मुझे इतना ही लिखनेके लिए उन्होंने कहा है और उसके अनुसार आपको लिख रहा हूं।

इसके साथ लक्ष्मीदासभाईका पत्र भेज रहा हूं। इसमें जो सूचनाएँ हैं उन पर विचार कर लें।

२४-११-१९२५] सेवक महादेवके प्रणाम

: ४१ :

मुरब्बी जमनालालजी,

बापूने आज सुबह पारणा किया। इसकी खबर आपको तारसे दे दी है। बापूकी तबीयत अच्छी है। कमजोरी है। उपवास पूरा होनेके समयकी विधि इस प्रकार थी :–

सुबह ७-३० बजे उपवास छोड़ा। पहले प्रार्थना हुई। उसमें इमाम-साहबने कुरानकी आयतें पढ़ीं और उनका अर्थ समझाया। उसके बाद मिस स्लेडने–जिसका नाम मीराबहन रखा गया है, यह आपको मालूम हुआ ही होगा– 'लीड काइन्डली लाइट' गाया; और अन्तमें बालकोबाने उपनिषद् और गीताके श्लोक कहे तथा उनका विवेचन किया। उन श्लोकोंका विषय विषयात्मा और मानसात्मा, महात्मा और शान्तात्माका भेद था। इसके बाद बापूने धीमे स्वरमें दर्द और प्रेमसे भरे कुछ वचन कहे। उनमें मुख्य वाक्य इस प्रकार थे :–

"बहुत चिन्तन और आत्ममंथनके बाद मैं मानता हूं कि मैंने भूल नहीं की। संभव है कि मेरी भूल मुझे न दिखाई देती हो, पर क्यों न दिखाई दे? मुझमें ममता है? दुराग्रह है? मलीनता है? क्या मैंने सत्य किसी समय नहीं देखा? ममता है तो सिर्फ एक बातकी और वह यह कि छलांग मारकर यदि ईश्वर तक पहुंचा जा सकता हो तो पहुंचना और उसमें विलीन हो जाना। ईश्वरका मतलब है सत्य। मलीनताको तो मैंने निकाल फेंका है, फिर मेरी भूल मेरी समझमें क्यों न आवे?

"आश्रमसे मैंने बड़ी आशाएं रखीं हैं। जब सारी दुनिया सोती होगी तब आश्रम जवाब देगा ऐसी मेरी अभिलाषा है जैसे फिनिक्स द. आफ्रिकामें हुआ था।

"पर यह आशा कैसे पूरी हो? चारित्र्यका पाया मजबूत और शुद्धि संपूर्ण होने पर। उसके लिए सात दिनके उपवास तो कुछ भी नहीं हैं। ऐसे उपवास –उससे भी कठिन– भविष्यमें भी शायद करने पड़ें। अनशन भी करना पड़े। इनसे तभी बच सकता हूं जब मैं जंगलमें भाग जाऊं। पर जंगलमें मैं क्यों भाग जाऊं? मैं जन्मसे तो वैश्य हूं, फिर भी कर्मसे शूद्र, क्षत्रिय और ब्राह्मण हुआ हूं। मुझे तो शान्त आत्मा बनना है।" इत्यादि।

उसके बाद सब चले गये। फिर ६-३० बजे बालकोंकी प्रार्थना हुई। बालकोंसे जो कहा गया वह बिलकुल सुनाई नहीं दिया, क्योंकि बापूकी आवाज बिलकुल बैठ गई थी। किन्तु, बालकोबा और सुरेन्द्रका आदर्श रखकर चलो, २४ घंटे काम होता हो तो २४ घंटे काम करो, यह ध्वनि थी।

उसके बादके समयका तो क्या वर्णन करूं! २१ दिनके उपवास छूटनेकी घड़ीसे भी वह अधिक पावन थी, अधिक गंभीर और अधिक द्रावक थी। बापूका कंठ रुंध गया था। ७ बज गये, लेकिन उपवास छोड़नेका मन किसी तरह नहीं हो रहा था। खाना किसी भी तरह नहीं रुचता था। स्थिर पड़े रहे। कौन जाने किस विचारमें लीन, कौन जाने कितनी तीव्र वेदनासे पीड़ित। देवदासको बुलाया। स्थितप्रज्ञके श्लोकोंका पाठ करनेके लिए कहा। यह हो चुका। फिर शांत होकर लेट रहे। अंतमें ७-४० पर कुछ स्थिर होकर पारणाके लिए अंगूर और संतरेका रस मंगाया और हम सबकी जानमें जान आई।

आज तबीयत अच्छी मालूम होती है। खूब काम किया फिर भी बहुत थकान नहीं मालूम देती। बोलते बहुत कम हैं। कल, दो-एक दिन शांतिसे बितानेके लिए, अम्बालाल सेठके बंगले शाही बागमें रहने जायेंगे।

१-१२-१९२५] सेवक महादेव हरिभाई देसाई

: ४३ :

मुरब्बी भाईश्री,

आपका तार बापूको दिखाया था। उन्होंने कहा कि डूमस संबंधी सुझाव शंकरलालका होना चाहिये। मुझे तो पता ही नहीं था। शंकरलालने डूमसके लिए जोर दिया। लेकिन अपना पक्षपात मैंने वर्धाके लिए—आपके लिए और पूज्य विनोबाजीके सहवासके लिए—बताया और बापूने भी कहा कि "मुझे जमनालालजी और विनोबा जितनी शांति दिलायेंगे उतनी दूसरा कोई नहीं दिला सकता।" इसलिए आज जो तार दिया है वह बापूके कहे अनुसार दिया है। बापू तो कहते हैं कि एक दिन बंबई ठहरे बिना यदि नवीं ता. को ही वर्धा पहुंच सकें तो अच्छा।

बापूको कहां रखा जाय, कहां अधिकसे-अधिक आराम तथा शांति और विनोबाजीका सहवास मिलेगा, यह तो आप ही जानें और तय करें। वहां आयेंगे यह निश्चित है।

आप आनन्दमें होंगे। बापू आजकल अम्बालालभाईके यहां हैं। कल फिर आश्रममें आ जायेंगे। तबीयत ठीक सुधरती जा रही है।

४-१२-१९२५] स्नेहाधीन महादेवके प्रणाम

: ४४ :

चि. जमनालाल,

विनोबा मुझे कहते थे कि यहांके उपवासोंसे मैं चिन्तामें पड़ जाऊंगा ऐसा तुमने समझा था। लेकिन मुझे चिन्ता बिलकुल नहीं हुई; यही नहीं, बल्कि उससे मुझे आनन्द हुआ। भाई भन्सालीके उपवास केवल उनके शौकके लिए थे। वे इन दिनों भारी तपश्चर्या कर रहे हैं। भाई किशोरलालने सिर्फ व्यक्तिगत, और अपने विकार दूर करनेके लिए किये थे। मगनलालके बतौर प्रायश्चित्तके थे और वे ठीक ही थे। ** ने उन्हें धोखा दिया। इसका उपाय उनके पास, सिवाय इसके कि वे कष्ट सहन करें, दूसरा नहीं था। इसका असर उस कुटुम्ब पर अच्छा हुआ है। किशोरलाल, भन्साली और मगनलाल तीनोंकी तबीयत अच्छी है। अब इसमें मेरे लिए चिन्ताका कोई कारण नहीं है।

मेरी तबीयत अच्छी रहती है। अब मैं ४ सेर (१ सेर=४० तोला) दूध पीता हूं और ८ बिसकिट खा लेता हूं, जो जमनाबहनने बनाकर भेजे हैं। नियमित रूपसे घूमता-फिरता हूं। अतः मेरे संबंधमें बिलकुल चिन्ता न करें।

इसके साथ चि. मणिका पत्र तुम्हारे पढ़नेके लिए भेजता हूं। उसे लौटानेकी जरूरत नहीं।

कमलाके विवाहके संबंधमें कोई खबर अभी नहीं है क्या?

४-१२-१९२५] बापूके आशीर्वाद

: ४८ :

चि. जमनालाल,

मसूरीके विषयमें आज मुझको बड़ा उद्वेग होता रहा है। वहां या और कहीं जानेका मन ही नहीं होता। मेरी तबीयतके लिए हवाफेरकी जरूरत नहीं है। मुझे आरामकी जो जरूरत है, वह तो यहां ठीकसे मिल जाता है; और यहांका जो थोड़ा कामकाज देख सकता हूं वह मेरे लिए दवाका काम दे देता है। आश्रम न छोड़नेके बहुतसे कारण हैं। आश्रम छोड़नेसे हानि हो सकती है। इसलिए यदि मुझे विचारपूर्वक बंधनमुक्त कर दें तो मैं छूट जाना चाहता हूं। यदि तुम यह मानते हो कि मसूरी जाना ही चाहिये तो मैं अवश्य जाऊंगा। पर आज जो मानसिक उद्वेग हुआ है वह तुमको लिखना उचित समझकर लिखा है। शंकरलालके साथ भी बातचीत करूंगा।

सतीशबाबू कल आये हैं। डा. सुरेश शनिवारको आयेंगे।

मणिबहन तुम्हारे साथ रहना नहीं चाहती। उसे अपनी गुजराती अच्छी कर लेनी है। फिर भी मदालसाको जानकीबहनके पास ही रहना चाहिये। काफी समय आश्रममें रहेगी तो यों ही बहुत कुछ सीख लेगी।

कन्या गुरुकुलको बारीकीसे जांचकर मुझे लिखना। यह भी लिखना कि उसमें कितनी कन्यायें हैं।

जवाब दिया १९-३-१९२६] बापूके आशीर्वाद

: ५२ :

प्रिय जमनालालजी,

आपका पत्र मिला।

१. ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटीमें आनेके संबंधमें बापू कहते हैं :—

"इच्छा न होती हो तो न आवें। रत्नागिरी जरूर हो आवें। यदि इच्छा हो जाय तभी आवें।"

२. बेलगामवालाके बारेमें उनकी सलाह उन्हींके शब्दोंमें लिखता हूं :—

"मुझे यह बात बिलकुल पसंद नहीं ; परन्तु बेलगामवालाको तुम मदद कर चुके हो। उन्होंने ठीक कुरबानी की है। इसलिए यदि तुमको इसमें हिस्सा लेनेकी इच्छा हो ही और मशीनरी सचमुच इतनी ही कीमतकी हो और मारगेज अच्छा मिल सके तथा तुम उधार रुपये लगा सको तो मैं नाराज नहीं होऊंगा। अथवा कमसे-कम तुम्हें उलाहना तो नहीं दूंगा।

"परन्तु इसकी सिफारिश करनेके लिए मैं तैयार नहीं हूं। अतः सब बातोंका विचार करके तुम जो निर्णय करोगे उससे मैं सहमत हो जाऊंगा।"

हार्निमेनके आदमीको जो कहा सो ठीक है। मगनलालभाईको आश्रमकी चीजोंके बारेमें संदेशा दे दिया है।

साहेबजादा घर गये हैं। छोटुभाईके साथ क्या हुआ सो कुछ नहीं बताया।

बापूका फिनलैंड जाना अनिश्चित है। बापूने स्वीकृति तो लिख दी है, परन्तु कई शर्तें लगा दी हैं। वे लोग मंजूर करेंगे तो जाना संभव हो सकता है। शर्तें ये हैं: पोशाक अपने ढंगका ही रक्खेंगे, सिर्फ मौसमके लिए ही कुछ फेरफार करना जरूरी होगा तो करेंगे; भोजनमें बकरीका दूध और फलाहार; भाषण नहीं करेंगे, मगर विद्यार्थियोंके साथ बातचीत करेंगे; पासपोर्टकी सारी व्यवस्था वही लोग करेंगे और उसमें किसी प्रकारकी शर्तें न होनी चाहिए। ये सब वे लोग मंजूर करेंगे तो बापू जायेंगे। उनका जवाब नहीं आया है। साथ जानेवाले तो दो हैं—अभी तो देवदास और मेरे नामकी चर्चा है, आखिरमें जो चला जाय वह सही। और जानेसे पहले वल्लभभाई जैसे कुछ नगलाार कर दें तो उसका भी खयाल करना पड़ेगा।

३०-४-१९२६] स्नेहाधीन सेवक महादेवके प्रणाम

: ६२ :

चि. जमनालाल,

तुम्हारा देवदासके नामका पत्र पढ़ा। जो तूफान आया है उसकी मुझे आशा नहीं थी। मगर आ जाने दो। उसीमें धर्मकी परीक्षा है। जब तुम्हारे पास तोहमतनामा (दोषपत्र) आ जाय तो मुझे भेज देना। मैं उसका जवाब तैयार कर दूंगा। उसमें जो परिवर्तन करना हो वह कर देना। मतलब यह कि हमें पूरे विनयका पालन करना है। जातिको अधिकार है कि जो व्यक्ति उसके नियमका उल्लंघन करता है, उसका बहिष्कार करे। तुमने जो कुछ किया है उसमें न तो शरमानेकी, न पछताने जैसी कोई बात है। जातिमें तुम्हारा प्रभाव कम होगा, पैसा प्राप्त करनेकी तुम्हारी शक्ति अवश्य कम होगी। परन्तु उसकी मैं कोई चिन्ता नहीं करता। तुम्हारे लिए भीख मांगनेका समय आ जाय तो भी हर्ज नहीं। धर्म रहे और भिक्षुक होना पड़े तो वह स्वागत-योग्य है। अंतमें जब जाति तुम्हारे धर्म और विनयको पहचान लेगी तब स्वतः नम्र बन जायगी। जातियोंमें सुधार तो होने ही चाहिए। वे आसानीसे हो सकेंगे।

अण्णाको प्रेस लेनेके लिए ८००० रुपये और अभी भेजनेकी जरूरत है। वे यहां आये थे। उन्हें प्रेस लेनेकी सुविधा कर देनी चाहिये। यदि घनश्यामदासने ५००० रु. दुबारा न भेजे हों तो उन्हें याद दिला देना। वे आ जायं तो वही भेज देना और ३००० उसमें और जोड़कर भेज देना। दूसरे महीनेमें यह काट लेना।

अ. ब. ६ (११-७-१९२५) ?] बापूके आशीर्वाद

: ७१ :

चि. जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम दीर्घायु होवो और तुम्हारी पवित्रतामें वृद्धि होवे। इस जगतमें बिना दूषणके तो कोई भी नहीं है। हम उसे दूर करनेका ही प्रयत्न कर सकते हैं। वह प्रयत्न तुम कर रहे हो। प्रयत्नशीलकी दुर्गति नहीं है ऐसा भगवानका आश्वासन है।

अब तो ४ ता. को मिलेंगे। ताप्ती व्हेली होकर आनेका विचार कर रहा हूं। शास्त्रीयार कल आ रहे हैं।

२१-११-१९२६] बापूके आशीर्वाद

: ७४ :

चि. जानकीबहन,

तुम्हारे पाससे देवदासको आना पड़ा यह मुझे अच्छा नहीं लगा। परन्तु वह नहीं रह सकता था, यह मैं समझ सकता हूं। अब कदाचित् थोड़े ही दिनोंमें वह वहां आ जायगा।

तुम्हारी तबीयत कैसी रहती है? वहां कुछ शक्ति बढ़ रही है? कुछ तकलीफ होती है?

चि. कमलाकी पढ़ाई कुछ चल रही है? तुम खुद न लिखकर कमलासे एक लम्बा पत्र मुझे लिखवाओ। मेरी तबीयतकी चिन्ता नहीं होनी चाहिये। अभी तो ठीक रहती है। परन्तु बूढ़े तो मृत्युके किनारे ही बैठे होते हैं न? अतः किसी-न-किसी बहाने उन्हें पुराना मंदिर छोड़ना ही चाहिये और इच्छा हो तो नये मंदिरमें बसें और बंदीवास छोड़ना ही हो तो स्वतंत्र रहकर वायुमें ही वास करें। परन्तु बहुत काल तक जेलमें रहनेवालेको जैसे जेलखाना अच्छा लगने लगता है वैसा ही हाल हमारा भी है। देहाध्यासके कारण देह छोड़ना अच्छा नहीं लगता। मुझे अच्छा लगता है कि नहीं, यह तो मैं नहीं जानता। मेरी बुद्धिको तो इसमें अच्छा लगने जैसा कुछ भी दिखाई नहीं देता। परन्तु आवरणके सामने बुद्धि बेचारी दीन हो जाती है। अतः सच्ची बातका पता तो मरते समय लगेगा।

तुम्हारे पास अभी कौन है?

अप्रैल, १९२७] बापूके आशीर्वाद

: ९० :

चि. जानकीबहन,

तुम्हारा पत्र मिला। अब उत्साह क्यों न होगा? अब तो भाषण करती हो, अखबारोंमें भी नाम आता है! समय-समय पर जब जानकीबाई बजाजका नाम अखबारोंमें देखता हूं तो उससे ऐसा ही लगना चाहिये न कि जमनालाल और हम सब भले ही जेल गये और वहीं रहें! मुझे तो विश्वास था ही कि तुम्हारे दिखाई देने वाले अविश्वासके पीछे पूरा आत्मविश्वास था। ईश्वर उसमें वृद्धि करे। कमलनयनको जल्दी नहीं करनी है। खादी उत्पत्तिके काममें अभी भले लगा रहे। टुकड़ीके बाहर निकलने पर वालजीभाईको लिखे।

२७-७-१९३०] बापूके आशीर्वाद

: ९१ :

चि. जानकीबहन,

तुम बहुत चंट मालूम होती हो। ज्यों-त्यों करके पत्र लिखनेसे बच निकलना चाहती हो। और यदि भाषण करते-करते हाकिम 'डिक्टेटर' बन जाओगी तो फिर मुझ जैसेके तो बारह ही बज जायंगे न? मालूम होता है जमनालालने नासिकमें अपना धंधा ठीक जमा लिया है। यह तो मैं जानता ही था। उनके पंजेसे कोई छूट ही नहीं सकता। मदू पहले तो पत्र लिखती थी, अब तुम्हारी तरह ही आलसी हो गई है। ऐसी ही आलसी बनी रही

तो तुम्हारे पाससे उसे हटा लेनेका हुक्म जारी करना पड़ेगा। अब शरीर कैसा है? ओम उपद्रव करती है या नहीं?

२१-९-१९३०] बापूके आशीर्वाद

: ९५ :

चि. जमनालाल,

शा. मंगलदास हरिलाल गांधी, ठि. फणसवाडी २ री गली, दादी-शेठ अगीयारी लेन, हरिलाल माणेकलाल गांधीका माला। यह भाई शा. हरिलाल माणेकलाल गांधीके लड़के हैं। भाई हरिलाल सूरजबहनके धर्म-पिताके नामसे प्रसिद्ध थे। इनके पास सूरजबहनकी सारी रकम है। इनकी स्थिति अभी बहुत अच्छी नहीं कही जा सकती। सूरजबहन कहती हैं कि एक समय हालत बहुत अच्छी थी। मैंने भाई हरिलालको लिखा है कि विधवा बाईके रुपये किसी खानगी पेढ़ीमें नहीं रखने चाहिए। इसलिए उनको इंडिया बैंकमें रखकर उसकी रसीद सूरजबहनके नाम भेज दें। इसका जवाब साथमें है। संभव है कि रुपये बिलकुल खतरेमें न हों। पर मैं चिन्तामें पड़ गया हूं। तुम भाई मंगलदासको अपने पास बुलवा लेना अथवा उनसे मिल लेना और पूछ लेना। सारे हाल जान लेना और रुपये बैंकमें रखे जा सकें तो रखवा देना। सूरजबहनके नामसे रखवाने हैं। इनके यहां सूरजबहनके गहने वगैरा भी हैं। उन्हें भी अपने कब्जेमें ले लेना। अथवा उनकी जो सेफ डिपाजिटकी रसीदें हैं वे ले लेना। इस वक्त तो तुमको सूरज-बहनके पत्रकी जरूरत नहीं पड़ेगी। परन्तु जरूरत हो तो मुझे तार दो तो मैं भेज दूंगा। परन्तु भाई मंगलदाससे तो तुरन्त मिल लेना।

उन अंग्रेज भाइयोंसे मिलनेके लिए २४ ता. को वहां आना है। वल्लभ-भाई साथ होंगे।

१८-६-१९३१] बापूके आशीर्वाद

: ९६ :

चि. जमनालाल,

तुम्हारा भेजा भगतसिंह संबंधी प्रस्ताव पढ़ लिया। देवने भी तुम्हारे कहनेसे भेजा था। मुझे यह प्रस्ताव बिलकुल पसंद नहीं आया। 'आज' शब्दसे इस प्रस्तावका मूल्य बदल गया। 'आज' बढ़ानेसे ऐसी ध्वनि निकल सकती है कि आज भी सभाको अहिंसा पर विश्वास नहीं है। जो अहिंसाको शाश्वत धर्म नहीं मानते हैं उन्हें भी 'आज' बढ़ानेकी आवश्यकता नहीं है।

वहां २४ को नहीं, बल्कि २५ ता. गुरुवारको, आना है। मैं तो गुजरात मेलसे आऊंगा। उस समय इस विषयमें अधिक चर्चा करनी हो तो कर लेना।

इसके साथ चुंडे महाराजके संबंधमें पत्र है, उसे पढ़ लेना और कुछ छानबीन करने जैसी हो तो करना।

राजेन्द्रबाबूको फिलहाल बिहार जानेका विचार छोड़ देना चाहिये। राधिका वहां आई है?

२०-६-१९३१] बापूके आशीर्वाद

: ९७ :

प्यारी बहन जानकीबहन,

मैंने सुना है कि तुम्हारी तबीयत अभी तक ठीक नहीं हुई। अभी तो तुमको बहुत काम करना है, इसलिए जल्दी अच्छी हो जाओ, और तबीयतके लिए फल वगैरा लेना पड़े तो लेना चाहिये। यह कुछ मौज शौकके लिए तो खाना नहीं है। अगर तुम अपनी तबीयत नहीं सुधारोगी तो मुझे दुःख होगा। जरूरी इलाज करके अब जल्दी अच्छी हो जाओ।

बहन कमला परसों यहां आई थी। मीटिंगमें भी हमारे साथ गई थी। उसकी तबीयत अच्छी है। यहांसे रवाना होनेका हमारा अभी कोई निश्चय नहीं है। सब मजेमें हैं।

९-८-१९३१] बाके आशीर्वाद

: ९९ :

चि. जमनालाल,

तुम्हें पत्र लिखानेका समय ही नहीं मिलता। अभी दाहिने हाथको तकलीफ नहीं देता हूं, इस वजहसे लिखनेका काम कम होता है। बायें हाथसे जितना लिखा जाता है, लिखता हूं। कल पत्र भेजे थे सो मिले होंगे। अस्पृश्यताके लिए कांग्रेस, कांग्रेसवालों और उनके द्वारा अथवा प्रेरणासे जितने रुपये खर्च किये गये हों उनका हिसाब तैयार करनेकी बड़ी आवश्यकता है। कुछ तो मेरी जबान पर हैं। तुमको भी याद होना चाहिये। यह भार तुम पर डालना है। जहांसे मंगाना हो मंगाकर ये आंकडे इकट्ठे कर लेना। उसमें फिर कुछ रह जायगा तो मैं याद कर लूंगा। मैंने बीस लाखका हिसाब लगाया है। मेरी समझसे यह कम ही है, अधिक नहीं। तिलक फंडमें कुछ रुपये तो इस कामके लिए 'ईयर मार्क' थे। तुम्हारे पास तिलक फंडका जो हिसाब है उसमेंसे यह मिल जायगा।

अलमोड़ाकी जमीनके संबंधमें कुछ हुआ? कुछ न हुआ हो और जल्दी हो सकता हो तो उसे जल्दी कर लेना मैं जरूरी समझता हूं।

जानकीबहन और बालकृष्णके क्या हाल हैं? अखबारोंमें बड़ी गलतफहमी हुई और अनेक प्रकारकी बातें आने लगीं तो कल वाइसरायको तार दिया था। उसका उत्तर अभी नहीं आया। तारकी नकल इसके साथ भेजता हूं। पट्टणीजी कल आ रहे हैं। कुछ होगा तो सूचना दूंगा।

२२-८-१९३१] बापूके आशीर्वाद

: १०१ :

प्रिय जमनालालजी,

पिछली बार जब मैंने आपको पत्र लिखा था उसके बाद फ़ेडरल स्ट्रक्चर कमेटीमें बापूके उस दूसरे भाषणके सिवा, जिसने कि हमारे व ब्रिटिश हल्कोंमें एक सनसनीसी फैला दी, और कोई विशेष घटना नहीं हुई है। सदानन्दने लगभग सम्पूर्ण भाषण तारसे भेज दिया था, जिसे आपने पढ़ ही लिया होगा। यदि न पढ़ा हो तो 'यंग इंडिया' में देख लें, जिसके लिए मैं भाषणका पूरा विवरण भेज रहा हूं। बापूने राजा-महाराजाओंसे पूरी तौर पर बातचीत कर ली है और उन्हें साफ साफ बता दिया है कि वे उनसे क्या अपेक्षा रखते हैं। भाषणका रूप सर्वसाधारण ही हो सकता था, और एक अपीलके रूपमें उसे पेश किया गया था, क्योंकि यही बापूका तरीका है। पर हमें कुछ देशी-राज्य-मित्रोंकी ओरसे घबराहटसे भरे तार आये हैं। भाषणका वह हिस्सा, जिसमें परोक्ष चुनावोंका जिक्र था, कई मित्रोंको पसन्द नहीं आया। पर उसमें न तो कोई डरनेकी बात थी और न सिद्धांतसे झुकनेकी, यह शास्त्रीयारके इस कथनसे जाहिर होता है: "तो गान्धीजी चाहते हैं कि उनकी कांग्रेसके अनोखे संविधानको भारतके विधानका आदर्श मान लिया जाय।"

बापूने अर्विनके साथ आज बहुत देर तक बातचीत की। मुझे तो बापूसे मिलनेका जरा भी मौका नहीं मिला और इस पत्रको डाकमें डालने और आज शामको मेन्चेस्टरके लिए रवाना होनेसे पहले उनसे मिलना सम्भव नहीं दीखता। इधर जो फ़ेडरल स्ट्रक्चर कमेटीकी बैठकें जारी हैं वहां बैठकर लम्बे लेक्चर सुनते-सुनते दिमाग थक जाता है। और बापूको बहुतसे लोगोंसे मिलना भी पड़ता है। गरज यह कि बापू बड़े ही व्यस्त रहते हैं और कई बार तो क्षणभरके लिए भी उनसे मिलना मुश्किल हो जाता है। वे बहुत थकावट महसूस करते हैं और चन्द दिनोंके आरामकी उन्हें सख्त जरूरत है। आराम कब मिल सकेगा भगवान ही जाने। पर मुझे यकीन है, यह वक्त जल्दी ही आने वाला है, क्योंकि बापू अपनेको बिलकुल एकाकी महसूस कर रहे हैं और दूसरी पार्टियोंसे मदद मिलनेकी उन्हें कोई उम्मीद नहीं रह गई है। मसलन्, रुपयेके प्रश्न पर और उसके संबंधमें स्टेट-सेक्रेटरीके वक्तव्यके मामले पर किसीने उनका साथ नहीं दिया और उन्हें अपना हल अकेले ही जोतना पड़ा। सप्रू, रंगस्वामी अयंगार, मि. जिन्ना सभी तो वहां मौजूद थे, पर सभी सर सैम्युअल होरके वाक्चातुर्यसे प्रभावित हुए मालूम देते थे। ऐसी हालतमें कोई क्या उम्मीद करे?

फिर मुसलमानोंकी बात लीजिये। बापूकी शौकत अली और आगाखांसे दो बड़ी निराशापूर्ण मुलाकातें हुईं। आगाखांकी हार्दिकताका अभाव तो शौकत अलीके लिए भी स्पष्ट था। जिन्ना कहीं बेहतर थे, पर उनका खयाल था कि

बापूको उनके मित्रोंकी ओरसे कोई कठिनाई न होगी। निजी तौर पर जिन्नाको अन्सारीके लिए कोई उज्र नहीं है। पर उनके इन्तजारमें और पन्द्रह दिन हम यहां कैसे रुकें? और यदि हमें मुसलमानोंकी सारी मांगें मान ही लेनी हैं तो फिर अन्सारीके लिए क्यों रुका जाय? बादमें आकर वे उसकी पुष्टि कर दें। मानो बापूकी कुछ देने-दिलानेकी मन्शा नहीं थी और महज अन्सारीकी आड़ ले रहे थे। सच तो यह है कि वे लोग अन्सारीको नहीं चाहते, मगर बापू तो इस बात पर तुले हुए हैं कि वे अन्सारीके पीठ पीछे कुछ नहीं करेंगे। बापू प्रयत्न करेंगे कि अन्सारी मुसलमानोंकी मांगें मान लेवें। पर अगर ये लोग उनके लिए नहीं रुक सकते तो बापू भी वे मांगें अन्सारीकी ओरसे मंजूर नहीं करेंगे। अतएव इस संबंधमें सफलताकी आशा बहुत कम दिखाई देती है।

जहां तक मुख्य प्रश्नका सवाल है, वे लोग स्वतंत्रताके प्रश्न पर इस बातचीतको तोड़कर सारी दुनियाके सामने हमें लज्जित करनेकी कोशिश करेंगे। पर बापू भी इस बात पर तुले हुए हैं कि संरक्षणों (सेफ गार्ड्स) की चर्चा पहले हो और उसीकी रोशनीमें आजादीकी बातचीत। मजदूर दलके पार्लमेन्टके सदस्योंसे बापू मिले। एक और मीटिंगमें तीनों दलोंके पार्लमेन्टके सदस्योंसे भी उनकी मुलाकात हुई। इस भेंटमें अनुदार दलके लगभग सभी प्रमुख सदस्य गैर-हाजिर थे। भाषणके अन्तमें बड़ी दिलचस्प चर्चा हुई जिसका बड़ा अच्छा असर पड़ा। मि. होरेबिन अगले हफ्ते स्कारबरोमें होनेवाली मजदूर दलकी बैठकमें बापूको ले जानेका इन्तजाम कर रहे हैं। नेशनल लेबर क्लबमें उनका सत्कार भी होगा। मजदूर दलके सदस्य, जिनमें बहुतसे बापूसे मिल चुके हैं, बड़ी सहानुभूति रखते हैं। आम मजदूरको तो बापूके प्रति सच्ची श्रद्धा है और वह उनसे जब भी मिलता है, अत्यन्त प्रेमपूर्वक मिलता है; परन्तु मध्यम वर्गके अंग्रेजोंकी मनोवृत्ति पर अभी तक कोई असर नहीं पड़ा है।

[२५-९-१९३१] सप्रेम आपका महादेव

: १०२ :

प्रिय जमनालालजी,

बापूकी सर सैम्युअल होरसे आखिरी बातचीत हो गई। अब उन्हें बापूसे कोई उम्मीद नहीं रह गई है। उन्होंने यह मान लिया कि प्रान्तीय स्वशासनकी बात, जिसके बारेमें बापू सोच रहे थे, उनके दिमागमें कभी नहीं थी। उनके हिसाबसे दरअसल उसमें और आजादीमें केवल नामका ही फर्क था। अतः उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। "अब हम मित्रोंकी तरह जुदा हों। आप मुझे समाचार देते रहिये। मुझे घटनाओंकी सरकारी तौर-पर तो जानकारी हमेशा मिलती रहेगी, पर मैं चाहता हूं कि इस बारेमें आपके

विचार भी मालूम होते रहें। पर आज तो यह मान लें कि हमारा मत नहीं मिल रहा है।" इसीके बाद ही बापूने अल्पसंख्यक कमेटीमें अपना वह धड़ल्लेका भाषण दिया। उन प्रहारोंके सामने रैम्जे मॅकडॉनाल्ड भी छोटा लगने लगा और एकबारगी उसे अपने अहंकारको पी लेना और अपनी रोब गांठने एवं अपमान करनेकी वृत्तिको भुला देना पड़ा। इसका प्रभाव बहुत ही अच्छा पड़ा और हम आशा करें कि वह दिलोंकी सफाई करने वाला भी साबित होगा।

किन्तु परिणाम क्या? परिणाम तो यह कि वह महाशय अब हमारे मत्थे दोष न मढ़ सकेंगे। 'न्यू स्टेट्समैन' के सुन्दर लेखको पढ़ लीजिये। उसके संपादकने कुछ दिन पहले एक घंटेतक बापूसे बातें की थीं और वह इस बातचीतसे स्पष्टतः बहुत लाभान्वित हुआ दीखता है।

जनरल स्मट्स भी बापूसे मिले। उनका व्यवहार असाधारण रूपसे अच्छा था। उन्होंने कहा कि बापूने अपने पक्षको इस कुशलतासे पुष्ट किया है कि यदि उन्हें खाली हाथ लौटना पड़े तो वह एक भारी विपत्तिकी बात होगी। हिन्दुस्तानियोंने स्वशासन करनेका अपना अधिकार सिद्ध कर दिया है, और अब उनके पथमें कोई बाधा नहीं रहने दी जा सकती। उन्होंने इसमें अपनी सहायता देनेकी इच्छा भी प्रकट की। इसके बाद वे दो बार प्रधान मंत्रीसे मिले भी और कुछ साम्प्रदायिक हल लेकर आये, जोकि उन्हें एक अच्छा मध्यम मार्ग जंचा, और बापूकी सहमति प्राप्त कर उन्होंने इसे फिर प्रधान मंत्रीके सामने पेश किया। उसमें कोई सार नहीं है, और उसका कोई खास नतीजा भी निकलने वाला नहीं है। पर उनकी गाढ़ मित्रता और सहयोगकी भावनाओंसे सभीको अजरच व आनन्द हुआ।

कुछ मित्र, जिनमें वेजवुड बेन, लोथियन, चर्चके कुछ उच्चपदस्थ व्यक्ति और दूसरे लोग भी हैं, कुछ-न-कुछ हल निकालनेका जीतोड़ प्रयत्न कर रहे हैं। बापूने आज अर्विनको एक तार भेजकर यह सूचना दी थी कि चूंकि सम्मेलन अब टूटने ही वाला है, उन्होंने वापस जानेका निश्चय कर लिया है, बशर्ते कि अर्विन कोई दूसरी सलाह दे। एक घंटेके भीतर ही उनका जवाब आया कि वे बापूसे मिलने कल आ रहे हैं।

(यहां एक पेरेग्राफ छोड़ दिया गया है)

हम मार्सेल्ससे २७ को या जिनोवासे २९ को रवाना होनेकी आशा करते हैं। बापूको बदनाम करनेके लिए यहांके अखबारोंने प्रान्तीय स्वशासनका जो भूत खड़ा किया है, आशा है आप उससे चिन्तित न होंगे। बापू इस प्रकारकी किसी भी बातको कभी स्वीकार नहीं कर सकते थे। यहांके मित्रोंकी घबराहटको कम करनेके लिए उन्होंने प्रधान मंत्रीको एक पत्र लिखा है और 'न्यूज क्रानिकल' को भी एक लम्बी मुलाकात दी है।

१३-११-१९३१] आपका महादेव

: १०९ :

मुरब्बी जमनालालजी,

राउंड टेबल संबंधी अटकलें दैनिक अखबारोंमें इतनी अधिक आती हैं और राउंड टेबल कॉन्फरेन्सके बाहरकी बापूजीकी हलचलोंके संबंधमें यंग इंडियामें मैं इतने विस्तारसे लिखता हूं कि आपको अलग पत्र नहीं लिखे। वल्लभभाई और जवाहरलालको लिखे कुछ पत्र आपको देखनेको मिले होंगे, ऐसा मैंने मान लिया है। आजका बापूका जबर्दस्त भाषण तो वहांके अखबारोंमें आगया होगा। पूरा भाषण यंग इंडियाके लिए भेज रहा हूं। अब तो राउंड टेबलकी उत्तरक्रिया शेष रह गई है, यह कहूं तो हर्ज नहीं।

वमनजी बापूसे मिले थे। उनके पास जो रकम लेनी बाकी है वह लगभग १॥ लाख हो जायगी। 'चर्खा संघ' और 'देश सेविका संघ' को देनेके लिए अब वह राजी होगये हैं। इनसे आप जरूर मिलें और दोनों संस्थाओंके बारेमें सारी बातें करें और उन्हें उनका परिचय दें। उनके मनमें इनकी कमेटियोंमें आनेका लोभ है। बापूने कहा है कि कमेटीमें आनेके लिए जो पात्रता चाहिये उसे प्राप्त करें। चर्खा संघके लिए तो पात्रता प्राप्त करना इनके लिए अशक्य है, परंतु बापूका खयाल है कि देश सेविका संघकी प्रवृत्तिमें इनको चालक बना सकते हैं। इनसे मिलकर सब बातें कर लें और उनकी रकमके विषयमें भी ठीक-ठाक कर लें।

पूज्य बापूकी तबीयत, यहांके अत्यंत कामके बोझको देखते हुए, कह सकते हैं कि, असाधारण रूपसे अच्छी रही है। सर्दी काफी पड़ती है परंतु शिमलासे जरा भी अधिक नहीं। सब लोग कहते हैं कि इस समय इंग्लैंडमें बापूके कदमोंके साथ-साथ हिंदुस्तानकी हवा भी आई है!

१३-११-१९३१] (महादेव देसाई)

: ११० :

चि. जमनालाल,

तुम्हारे पत्रकी हम सब राह देख रहे थे। पत्र संपूर्ण है। वहांका खानपान माफिक आगया है, यह बड़े संतोषकी बात है। जानकीबहन और कमलनयनके संबंधमें मुझे समाचार मिल चुके थे। विनोबा यदि व्रत लेकर न बैठ गये हों तो मैं समझता हूं कि उन्हें दूध लेनेकी जरूरत है। वहां भी उनका काम तो सख्त मालूम होता है। उसको करते रहनेके लिए दूधकी जरूरत है ऐसा मेरा ख्याल है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि वनस्पतियोंमें ऐसी वनस्पति जरूर है जो दूधकी आवश्यकताको पूरा करती है और दूधके दोषोंसे मुक्त है; परंतु ऐसी वनस्पतिकी खोज करनेकी योग्यता जिन वैद्योंमें है, उन्हें इसका

खयाल नहीं है। हम जैसोंकी शक्तिके बाहरकी यह बात है, या फिर इस एक ही वस्तुके पीछे पड़ जाना चाहिये। परंतु मेरी निश्चित राय है कि ऐसा नहीं हो सकता। अतः जो धर्म सहजप्राप्त हो गया है उसीको पकड़ रखना हमारा कर्तव्य है। मुझे यह खयाल बना ही रहता है कि विनोबाको अपना वजन इतना ज्यादा कम न होने देना चाहिये।

वहां तुम्हारे पास बढ़िया समाज जम गया मालूम होता है। तुम्हारे 'क' वर्गकी मुझे ईर्ष्या होती है। जब तुमको यह वर्ग मिला तो मुझे बहुत खुशी हुई थी। तुम्हारा स्वास्थ्य उससे कुछ खराब होगा ऐसी शंका मुझे कभी नहीं हुई। खुद अपनी और अपने पडोसियोंकी तबीयतका जतन करनेकी तुम्हारी क्षमताके विषयमें मेरे मनमें कभी शंका आई ही नहीं; और जो अनुभव तुमको मिल रहे हैं, वे दूसरी तरह तुम कभी प्राप्त नहीं कर सकते थे।

प्यारेलालसे कहो कि कुसुमके द्वारा उनके लिखे पत्रका पूरा जवाब मैं दे चुका हूं। इसलिए यहां कुछ नहीं लिखाता। वह जवाब कदाचित् इससे पहले उसे मिल जायगा। न मिले तो मुझे खबर कर देना। हम तीनों मजेमें हैं। अभी दो महीने हुए कि मैं रोटी, बादाम, खजूर, एक साग और नीबू लेता हूं। उससे अच्छा रहता है। रेच-पिचकारीकी बिलकुल जरूरत नहीं रहती। 'आश्रमका इतिहास' लिख रहा हूं। बहुतसा समय पत्र लिखनेमें जाता है। इस छोटेसे मंडलमें तुम्हारे संबंधमें तो दिनमें कितनी ही बार बातें होती हैं। सबको हम सबके यथायोग्य कहना। जब-जब लिख सको तब-तब लिखते रहना।

९-४-१९३२] बापूके आशीर्वाद

:११२:

चि. जानकीबहन,

कितना अभिमान? जेलमें हो आई तो अब पत्र ही नहीं लिखोगी? जैसे तुम्हीं अकेली जा सकती थी न! तबीयत कैसी है? कमलनयन कहां है? उसको मैंने खत लिखा है। ऐसा मालूम नहीं होता कि वह उसे मिला हो।

बालकृष्ण कहां है? उसका इधर कोई खत ही नहीं। मदालसा भी मानो सो गई हो। शिवाजी तथा राधाकृष्णके बारेमें लिखना। छोटेलालको पत्र लिखा है उसका भी जवाब नहीं। इन सबकी आशा तुमसे रखता हूं। हम तीनों मजेमें हैं।

१५-८-१९३२] बापूके आशीर्वाद

:११३:

चि. जानकीमैया,

खूब! आखिर पेंसिलसे दो सतरें लिखनेकी तकलीफ की तो। जेल जाकर भी आखिर आलस्य नहीं गया न? 'अ' वर्ग देनेमें ही भूल

हुई। 'क' वर्ग देकर खूब काम कराना चाहिये था। आलस्यका तो ठीक, परंतु अब शरीरकी हालत ठीक कर लेना। विनोबाके शिकंजेमें खूब फंसी हो। पत्र बराबर नहीं आयेंगे तो सजा मिलेगी। पुरानी कमली, जिसपर तुमने खादी सीकर फिरसे नई बनाई थी, वह राजमहलमें हो आई यह बात मैं कह चुका हूं न? यहां तो वह है ही। अभी तो बहुत चलेगी।

२०-८-१९३२] बापूके आशीर्वाद

: ११५ :

चि. जानकीमैया,

'क' वर्गका खाना खाकर मरनेका भय तुम जैसोंको होता है, इसीसे बिना खाये जीनेका रास्ता मैंने पकड़ा है। कलसे यह देख लेना। खा-खाकर तो सारा संसार मरता है। 'अ' वर्गका खाकर कितना जी लोगी यह देख लेंगे। परंतु अनशन करते-करते जीनेकी कला कैसी? एक शर्त है जरूर। तमाम मैयाओंको जोगन बनकर बाहर निकलना पड़ेगा और अस्पृश्योंको स्पृश्य बनाकर खुद भी ईश्वरी शक्ति होनेका दावा साबित करना पड़ेगा। इतना करना और फिर 'अ' वर्गका ही खाना खाती रहना। परंतु यदि कोई 'अ' वर्गका न दे तो 'क' वर्गके खानेसे भी संतोष मानना।

परंतु मान लो कि जोगनोंका भी कोई बस न चला तो भले ही यह मिट्टीका पुतला टूटकर अभी गिर जाय। मैं तो जीनेवाला ही हूं। जबतक एक भी मैया मेरा काम करती होगी तबतक कौन कहेगा कि मैं मर गया? भले ही आत्माकी अमरता संबंधी गीताका तत्वज्ञान हम छोड़ दें। जो अमरता मैंने बताई है वह तो हम चर्म-चक्षुओंसे भी देख सकते हैं। इसलिए खबरदार जो जरा भी घबरा गई तो! शोभित होना और शोभित करना। तन, मन, धन ईश्वरको सौंपकर सुखी होना व रहना। नखरेबाज ओमको और ज्ञानी मदालसाको आज नहीं लिख सकूंगा।

यह तुम सबके लिए है, ऐसा समझना। तुम्हारा सौभाग्य अखंड रहे।

१९-९-१९३२] बापूके आशीर्वाद

: ११६ :

चि. जमनालाल,

तुम परेशान बिलकुल न होना। तुमको तो नाच उठना चाहिए कि जिसको तुमने पिताका स्थान दिया वह तुम्हारे प्रिय कामके लिए पूर्णाहुति देता है। तुम्हारे लिए तो यह उत्सव ही होना चाहिए।

जानकीमैयाके साथ मेरा विनोद चल रहा है। सरदार, महादेव तुमको याद करते हैं।

२७-९-१९३२] बापूके आशीर्वाद

: ११९ :

चि. जमनालाल,

तुम्हारा पत्र अभी मेरे हाथ लगा, सुना, और उसका जवाब लिखा रहा हूं। तुम चाहते हो वे सब आशीर्वाद टोकरियों भर तुम्हारे जन्मदिवस पर तुम्हें मिलें। जो मृत्यु चाहेजब छोटे-बड़े, गोरे-काले, मनुष्य-पशु या दूसरे सबके लिए आने ही वाली है, फिर उसका डर क्या? और उसका शोक भी क्या? मुझे तो बहुत बार ऐसा लगता है कि जन्मकी अपेक्षा मृत्यु अधिक अच्छी चीज होनी चाहिये। जन्मसे पहले माताके गर्भमें जो यातना भोगनी पड़ती है उसे तो मैं छोड़ देता हूं। परंतु जन्मते ही जो यातना शुरू होती है, उसका तो हमें प्रत्यक्ष अनुभव है। उस वक्तकी पराधीनता कैसी है? और वह तो सबके लिए एकसी होती है। जब कि मृत्युमें, यदि जीवन स्वच्छ हो, तो पराधीनता जैसी कुछ नहीं रहती। बालकमें ज्ञानकी इच्छा नहीं होती और न उसमें किसी तरहज्ञानकी संभावना ही होती है। मृत्युके समय तो ब्राह्मी स्थितिकी संभावना है। इतना ही नहीं बल्कि हम जानते हैं कि बहुत लोगोंकी मृत्यु ऐसी स्थितिमें होती है। जन्मके माने तो दुःखमें प्रवेश है ही जब कि मृत्यु संपूर्ण दुःख-मुक्ति हो सकती है। इस प्रकार मृत्युके सौंदर्यके विषयमें और उसके लाभके विषयमें हम बहुत कुछ विचार कर सकते हैं और इसे अपने जीवनमें संभवनीय बना सकते हैं। इस प्रकारकी मृत्यु तुमको प्राप्त हो, ऐसे आशीर्वाद और ऐसी कामनामें जो कुछ भी इष्ट हो वह सब आगया। इस इच्छामें हम दोनों साथी हैं, ऐसा समझो। तुम्हारे स्वास्थ्यके संबंधमें सबकुछ जाननेके बाद भी जो विचार मैंने बताये हैं, उनपर मैं दृढ़ हूं। तुमको अपने खर्चसे भोजन प्राप्त करनेकी छुट्टी मिल सके तो उसे प्राप्त करनेमें मैं कोई दोष नहीं समझता। शरीरको एक अमानत समझकर यथासंभव उसकी रक्षा करना रक्षकका धर्म है। मौज-मजेके लिए गुड़की एक डली भी न मांगो, न लो, परंतु औषधिके तौर पर महंगेसे महंगे अंगूर भी मिल सके तो प्राप्त करनेमें कोई बुराई नहीं दिखाई देती। इसलिए ऐसे भोजनपानको ग्रहण करनेमें उद्वेग पानेकी आवश्यकता नहीं। ऐसी ही स्थितिमें दूसरोंको भी ऐसा खाना दिलाया जा सके तो दिलाना चाहिये। मेरी दृष्टिमें जितने गेहूं मिलते हैं उतने खानेकी जरूरत नहीं। गुड़को बिलकुल छोड़ देना उचित मानता हूं। तुम्हारे शरीरको गुड़की जरा भी आवश्यकता नहीं। इसके बदले निर्दोष शहद लेना अधिक अच्छा है। परंतु जबतक मीठे फल मिल सकते हैं, उसकी भी जरूरत नहीं। दूधमें किसी भी प्रकारका मीठा मिलाना दूधको पचानेमें हानिकारक है। दूधकी मात्रा बढ़ाना अच्छा है। जैतूनके तेलकी जगह मक्खन लेते हो, यह ठीक ही है। यहां जो जैतूनका तेल मिलता है वह हमेशा शुद्ध नहीं होता, ताजा तो मिलता ही नहीं, और मक्खनमें जो विटेमिन होते हैं वे जैतूनके तेलमें

नहीं होते। सागमें हरी सब्जी होनी चाहिए। आलू वगैरा लगभग रोटीका स्थान लेते हैं। इनमें स्टार्च होता है। तुमको स्टार्चकी कमसे-कम जरूरत है। और जितनी होगी वह सब गेहूंसे पूरी हो जायगी। दाल हर्गिज मत लो। मक्खन यदि काफी ले लो तो दो पौंड दूध काफी है। इसके घटाने बढ़ानेका आधार वजनके ऊपर है। वजनके स्थिर हो जाने तक, और हजम होता रहे तबतक, मक्खनकी अथवा दूधकी या दोनोंकी मात्रा बढ़ाते जाना चाहिये। तरकारियोंमें लौकी, कद्दू भिन्न-भिन्न प्रकारकी सब्जियां, फूलगोभी, पत्तागोभी, बिना बीजकी सेम, बैंगन इन सबकी गिनती अच्छी हरी सब्जियोंमें होती है। गेहूंका आटा चोकर मिला हुआ होना चाहिये। यदि गेहूं बिलकुल साफ करके पीसा गया हो तो उसका कोई भी अंश नहीं फेंकना चाहिये। फलमें ताजे अंगूर, मौसमी, संतरे, अनार, सेव, अनन्नास लेने योग्य हैं। आजकल जो प्रयोग अमेरिकामें हो रहे हैं उससे मालूम होता है कि एक ही साथ बहुतसी चीजें नहीं मिला देनी चाहिये; फल अकेला ही खानेसे उसका गुण अधिकसे अधिक हमें मिलता है। और भूखे पेट खाना तो सर्वोत्तम है। अंग्रेजीमें कहावत भी है कि सुबहका फल सोना है और दुपहरका चांदी है, इसलिए पहला खाना अकेले फलका होना चाहिये। सुबह गर्म पानी पियो तो हर्ज नहीं। तुमको चौबीसों घंटे खुली हवामें रहनेकी इजाजत मिल सकती हो तो लेनी चाहिये। खुली हवामें रोज धीमे-धीमे प्राणायाम कर सको तो अच्छा है। रातकी सर्दीसे डरनेकी बिलकुल जरूरत नहीं। गले तक अच्छी तरह ओढ़ लिया हो और सिरपर और कानपर कपड़ा लपेट लो तो फिर कोई हानि नहीं। चौबीसों घंटे शुद्धसे शुद्ध हवा श्वासके लिए फेफड़ोंमें जाय यह अति आवश्यक है। सुबहकी धूप सहन हो सके तो इस तरह शरीरको खुली हवामें जितना खुला रख सको उतना रखना चाहिये। इस सबकी चर्चा डा. कन्ट्राक्टरके साथ कर लेना और फिर जो उचित मालूम हो सो करना।

माधवजीकी गाड़ी तो ठीक चल ही रही होगी। वहां जो साथी रहते हों और जो आवें उन्हें आशीर्वाद और हम तीनोंका यथायोग्य। अस्पृश्यताके संबंधमें यहां जो कुछ चल रहा है वह शायद तुम जानते होगे। तुमको जो विचार सूझे वह मुझे लिख सकते हो। उन्हें भेजनेकी इजाजत तुमको वहांसे मिल सकेगी।

८-११-१९३२] बापूके आशीर्वाद

: १२३ :

चि. जमनालाल,

अपनी तबीयतके समाचार आज ही देना। तुमसे मिलनेकी तजवीज कर रहा हूं। अप्पाका मामला फिलहाल तो सुलझ गया है। अर्ध उपवास और पूर्ण उपवास स्थगित हो गये हैं। पूरे प्रश्नका निर्णय हो जायगा। मैंने

दो पौंड वजन फिरसे प्राप्त कर लिया है। 'आश्रमवासियोंके प्रति' खोजकर भेजूंगा। और कुछ चाहिये सो मंगा लेना। कमलनयनको सीलोन भेजनेकी पूरी आवश्यकता है। कमलनयन लिखता है कि जानकीदेवी भी अब तो अनुकूल हैं। वहांका जलवायु उसे जरूर माफिक आयगा। अंग्रेजीका शौक पूरा हो जायगा। हिंदुस्तानका वातावरण इस समय उसे शांत नहीं रहने देगा। सीलोनमें शांत रह सकेगा। वह घरका घर और बाहरका बाहर है। जब इच्छा हो तब लौट आ सकेगा। अंग्रेजीका अध्ययन बहुत अच्छी तरह हो सकेगा। अनेक दृष्टियोंसे मुझे यह प्रयोग बहुत पसंद है। अपना विचार लिखें। उसके बाद उसे भेजनेकी तजवीज करूंगा। एक दो जगह लिखना पड़ेगा।

घनश्यामदास कल गये। तुमसे मिल सकना संभव नहीं था। देवदास अभी यहीं है। राजेंद्रबाबूकी तबीयत अच्छी नहीं कह सकते।

[७-१२-१९३२] बापूके आशीर्वाद

: १२४ :

चि. जमनालाल,

तुम्हारे दोनों पत्र मिल गये। मेरी व्यस्तताकी कोई सीमा नहीं, और कमलनयनके बारेमें मेरे विचार भिन्न होनेसे लिखनेकी जल्दी नहीं थी इसलिए मौका मिलते ही सबसे पहले पत्र लिखनेका सोचा था। आज लिखना ही था कि तुम्हारा दूसरा पत्र आ गया। इससे ऐसा मालूम होता है कि तुम्हारी तबीयत गिरी है। परंतु मुझे ऐसा भय नहीं मालूम होता। मवाद फिरसे निकला, यह तो अच्छा ही हुआ। कृत्रिम उपायोंसे मवाद बंद हो जाय तो कुछ लाभ नहीं। पेटमें आंव जैसा लगता है, इसका कारण तो यह हो सकता है कि कोई खास चीज खानेमें आगई हो। इधर एक दो दिनसे रोटी ठीक नहीं होती थी। तुम रोटीका टोस्ट बनाकर खाओ तो शायद ज्यादा अच्छा होगा। दांत तो मजबूत हैं ही। रोटी खूब चबानी चाहिये, यह तो जानते ही होगे। यहांसे टोस्ट बनाकर भेज सकते हैं, क्योंकि डबल-रोटी हमारे यार्डसे ही वहां जाती है और रोटी बनानेमें थोड़ा बहुत मेरा हाथ है। अतः टोस्ट बनानेमें कोई कठिनाई नहीं आवेगी। यदि तीन दफा खाते हो तो टोस्ट ताजे भी बनाकर भेजे जा सकते हैं।

व्यापार-संबंधी भेंट-मुलाकातमें बहुत वक्त देते हो, यह भी इस समय न करना ही उचित है। डाक्टर मोदीके कहे अनुसार पूर्ण आरामकी आवश्यकता है। बहुत बोलना भी अच्छा नहीं है। अतः यहांकी आबहवासे पूरा फायदा उठानेके लिए आराम करना, कम बोलना बहुत जरूरी है।

तुम्हारे बारेमें कर्नल डोइलने काफी समयतक बातचीत की है; परसों ही बातें कीं। उनकी सलाह यूरोप जानेकी ही थी; परंतु मुझे

तो इसकी कोई जरूरत मालूम नहीं होती। इस देशमें प्राप्य सहायतासे जो कुछ हो सकता है वह करके शांत रहना। परंतु तुम्हारी इच्छा विलायत जानेकी हो तो मुझे जरूर सूचित करना। तुमसे बार-बार मिलनेकी जो मांग मैंने कर रखी है, उसका जवाब भी आजकलमें आना चाहिये।

अब कमलनयनके विषयमें। कमलनयनको द. आफ्रिका भेजनेके लिए खास इजाजत लेनी चाहिये। वहां उसके लिए अध्ययनका कोई साधन नहीं है। अंग्रेजी स्कूल या कालेजमें उसको स्थान नहीं मिलेगा। हिंदुस्तानियोंके लिए एक अच्छा कालेज है, परंतु हमारी दृष्टिसे उसमें कुछ भी नहीं है। खानगी अध्ययनकी सुविधा भी कमसे-कम है। फिनिक्स तो जंगल है। वहां जानेसे उसको छापखानेमें ही लगा रहना पड़ेगा। अतः किसी भी दृष्टिसे दक्षिण आफ्रिकाका विचार करने जैसा नहीं है। जब कि सीलोनमें इससे उलटा है। वहां जितने स्कूल हैं उनमेंसे किसीमें भी कमलनयन जा सकता है। न्यूरा-लियाकी आबहवा तो उत्तमोत्तम है। सृष्टि सौंदर्य वहांसे अच्छा शायद ही कहीं हो। वहां जानपहचानवाले भी काफी मिल सकते हैं। बर्नाड आलूविहारी तो घरका ही आदमी है और बहुत विद्वान है, चरित्रवान है। मेरे साथ ही विलायतसे आये थे और सीलोनके प्राचीन महाकुटुम्बोंमेंसे हैं। वहां अगर ठीक न मालूम हो तो तुरंत वापस भी बुला सकते हैं। समय-समय पर पत्र-व्यवहार हो सकता है। इसलिए मेरी दृष्टिसे कमलनयनकी अंग्रेजी पढ़नेकी अभिलाषा पूरी करनेके लिए हमारे सिद्धांतोंके अनुकूल जगह सीलोन ही है। खुद कमलनयनको भी अच्छी मालूम होती है। परंतु तुमको यदि वह ठीक न मालूम दे तो अभी तो भले वर्धा ही रहे। यदि वर्धामें उसे संतोष मिलता हो तो कहनेकी कोई बात ही नहीं। संतोष नहीं है ऐसा उसकी बातसे और उसके पत्रसे मालूम हुआ, इसलिए यह प्रश्न उपस्थित हुआ है।

मणिलालका बुधवारको जाना मुल्तवी रहा। अतः अब तो फिर २९ ता. को ही जा सकता है।

छगनलाल जोशी मेरी मददके लिए कल यहां आ पहुंचे हैं। इससे मेरा काम हल्का तो नहीं होगा, परंतु जो हमेशा अधूरा रहा करता था उसमें फर्क पड़ जायगा।

मिला, ११-१२-१९३२] बापूके आशीर्वाद

: १२५ :

चि. जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। कमलनयनके बारेमें समझा। पूनामें उसका इंतजाम नहीं हो सकता। वकीलके साथ उसके बारेमें बातचीत हो ही गई थी। इतने बड़े लड़केको वहां नहीं रखते। सुविधा भी नहीं। विशेष बात

लो इस विषयमें जब मिलेंगे तब कर लेंगे। तुमको फाउन्टेनपेनकी स्याहीकी जरूरत थी। हमारे पास स्वदेशी स्याही थी। भाई कटेलीको इसका पता था, अतः उसमेंसे तुम्हारे लिए एक दवात भेजी है। हमारे पास तो उसका भंडार भरा पड़ा है।

यहांकी डबल-रोटीमें जो शक्कर होती है उसके स्वदेशी होनेकी संभावना है। क्योंकि पूनामें विदेशी शक्कर बहुत कम आती है। परंतु यदि विदेशी हो तो भी मैं इसमें दोष न मानूंगा, क्योंकि यह शक्कर खमीर उठानेके लिए डाली जाती है। अर्थात् खमीरके साथ मिलकर उसमेंसे एक नया ही पदार्थ पैदा हो जाता है–जैसे अमुक गैस अमुक मात्रामें मिलकर पानी पैदा होता है। इसलिए रोटी खानेवालेके लिए यह नहीं कह सकते कि वह गेहूं और शक्कर दो पदार्थ खाता है। खमीर उठानेके लिए तीन चीजें काममें लाई जाती हैं। महुवा, शक्कर और नमक। महुआ विदेशी होता है। इसलिए मेरी दृष्टिसे विदेशी शक्कर त्याग करने वालेके लिए भी रोटी निर्दोष मानी जा सकती है। इतने पर भी यह जाननेके बाद अंतिम निर्णय तो तुमको ही करना है। यहां जो चपाती बनती है वह यदि तुमको माफिक आती हो तो मुझे डबल-रोटीका आग्रह करनेकी आवश्यकता नहीं।

तुम्हारी मुलाकातके बारेमें अभी कोई उत्तर नहीं आया।

आपरेशनके लिए अभी विलायत न जानेके बारमें स्थिति समझी। खुद मुझे तो ऐसी दहशत नहीं है। हजारों आदमियोंके कान बहते हैं और उन्हें कुछ भी दूसरा उपद्रव नहीं होता। यह सब भाग दिमागके पास हैं इसलिए अंतिम परिणाम आ सकता है, इस विचारसे डाक्टर स्वयं चौंक जाते हैं और बीमारको भी डरा देते हैं। इसलिए इस देशमें जितनी मदद मिल सकती हो उतनेसे ही संतोष माननेमें मुझे संकोच न होगा। परंतु यह बात अभी तो अप्रस्तुत है। शांति होनेके बाद इसका मार्ग अपने आप सूझ जायगा।

मेरी कोहनी जैसी थी वैसी ही है। वजन १०३ है, तबीयत कुल मिलाकर ठीक है।

इसके साथ जानकीबहनका पत्र भेजता हूं। उसमें कमलनयनके विषयमें जो कुछ लिखा है वह देख लेना। मैंने जवाबमें लिखा है कि कमलनयनके साथ मास्टर और रसोइया जाय यह मैं कभी मंजूर नहीं करूंगा। ऐसा करनेसे बाहर जानेका लाभ वह खो देगा। साथमें यह भी लिखा है कि तुम्हारे साथ इस संबंधमें बातचीत चल रही है।

[१५-१२-१९३२] बापूके आशीर्वाद

: १२९ :

चि. जानकीमैया,

वाह ! मेरे पत्रका जवाब तक न देना ? मेरा इतना ज्यादा डर है ? हरिजनको देते हुए जी दुःख पाता हो तो ऐसा लिखो। मुझे संतरे भेजते हुए थैली खुल जाती है, किंतु हरिजनके लिए बंद रहती है क्या ?

बापूके आशीर्वाद

कल जमनालाल बंबई गये। वहां डाक्टर मोदी उनकी जांच करेंगे। शरीर तो अच्छा है। तुम्हारे और खुद अपने संतोषके लिए ही गये हैं।

२६-३-१९३३]

: १३० :

चि. जमनालाल,

सेठ पूनमचंद रांकासे जितनी जल्दी मिल सको मिलना उचित है। उनसे कहना कि उनके उपवास सत्याग्रहकी नीतिके विरुद्ध हैं। और मैं समझता हूं कि किसी भी तरीकेसे उनका बचाव नहीं हो सकता। कैदियोंके वर्गीकरणके विरुद्ध सभी लोग नहीं हैं। जिन कैदियोंको 'अ', 'ब', वर्ग मिलता है, वे सब 'क' वर्गकी ही स्थितिमें नहीं जाते। जिन्हें ऊंचे वर्गमें रखा जाता है वे उस वर्गकी सुविधाओंको लेनेके लिए बाध्य नहीं हैं। जो इस सुविधासे लाभ उठाते हैं, अपनी इच्छासे ही उठाते हैं और उसका त्याग करनेके लिए सेठ पूनमचंद उन्हें मजबूर कैसे कर सकते हैं ? उसके लिए उपवास कैसे कर सकते हैं ? वे खुद चाहे जिस सुविधाका त्याग करें, यह दूसरी बात है। यह वर्गीकरण मुझे खुद पसंद नहीं है, किंतु उसमें फेरफार करानेका मार्ग उपवास हर्गिज नहीं है। मुझे आशा है कि सेठ पूनमचंद अपना हठ छोड़ेंगे। उनको यह भी जानना चाहिये कि जबतक वे अपनेको सत्याग्रही मानते हैं तबतक वे उनकी मर्यादाओंका पालन करनेके लिए बंधे हुए हैं। सत्याग्रहके प्रणेताके नाते उसकी मर्यादा स्थिर रखनेका मुझे कुछ तो अधिकार होना चाहिये। इस दृष्टिसे भी उन्हें मेरी सलाह मानना उचित है। ईश्वर तुमको सफलता दे।

८-४-१९३३] बापूके आशीर्वाद

: १३४ :

चि. जमनालाल,

तुम्हारे दो पत्र एक साथ मिले। तार भी मिला। तुम वहां रह गये हो यह मुझे बहुत अच्छा लगा है। इसी तरह निश्चिंततासे रहो। मैं मानता हूं कि उपवास निर्विघ्नतासे समाप्त हो जायेंगे।

तुम्हारे दर्दके लिए किसी वैद्य या हकीमकी सलाह लेना भी उचित मालूम होता है। कानमेंसे बहुतोंको पीप निकलकर बंद भी हो जाता है। इससे डरनेकी कोई वजह नहीं, खानपानका ध्यान रखो तो काफी है। गाय सामने

आई हो और उसके थन साफ करके साफ हाथसे दुहा जाय तो वह दूध ताजा ही पियो। खानेमें ध्यान रखो। अंटशंट कुछ न खाओ। दाल नहीं, मसाले नहीं, कच्ची सब्जी कुछ-न-कुछ चाहिये। टमाटर, सलाद अच्छी वस्तु है। कच्चे प्याज खानेका डा. देशमुखका खास आग्रह है।

जानकीबहनका समय किस तरह बीतता है? घूमती फिरती है? ओम क्या पढ़ रही है? प्रभुदास क्या करता है?

शांती रुइयाको समवेदनाका पत्र लिखा है। राधाकृष्णने खबर दी थी।

तुमको पत्र भेजे जाते रहेंगे।

७-५-१९३३] बापूके आशीर्वाद

: १३६ :

चि. जमनालाल,

ज्ञानके संबंधमें तार दिया है सो मिला होगा। छगनलालका पत्र इसके साथ है, इससे मैं समझता हूं कि ज्ञान वहां नहीं आई। ज्ञानने स्वीकार कर लिया, यह किस तरह हुआ, यह यदि तुम जान सके हो तो मुझे बताना।

१२ ता. वाली मीटिंगके लिए तुमको बरबस आनेकी बिलकुल जरूरत नहीं है। अपनी राय भेजना चाहो तो भेज दो। जरूरत होगी तो पढ़ लूंगा। अच्छा तो यह हो कि वह श्री. अणेको भेज दो।

कमलाके लिए भी आनेकी जरूरत नहीं। जो कुछ हो सकता है वह बराबर होते रहेगा। मैं पूछताछ करता रहता हूं। कमलनयन आता-जाता रहता है। जानकीदेवीसे भी मिला था। कमला भी मिल गई। वह अभी बच्ची ही है। खूब लाड़-प्यारमें पली है, इसलिए अपनी जिम्मेदारीका भान कम है। इसमें उसका कसूर नहीं। जैसे हम वैसी ही हमारी संतति। हमारे अंदर उत्तरोत्तर जो फेरफार हुआ करते हैं उनतक हमारी संतति नहीं पहुंच सकती है। हरिलालका उदाहरण सोलह आने है। वह सब मर्यादाएं लांघ गया। उसने ये सब प्रत्यक्ष रीतिसे तोड़ दीं। मैंने मनसे भोगोंको भोगा और बाह्येन्द्रियोंपर धीरे-धीरे अधिकार प्राप्त किया। यदि मनको भी अंतमें वश न कर सका होता तो मिथ्याचारीमें मेरी गिनती आसानीसे होती। परंतु मुझमें जो फेरफार हुए उनका स्पर्श हरिलालको कैसे होता? बीचमें यह व्याख्यान ही हो गया।

तुम शरीरको सम्हालकर सब काम करो। प्रभुदास यदि वहां आया हो तो उसके क्या हाल हैं? अब क्या खोजोगे?

विनोबा, बालकृष्ण और छोटेलालकी तबीयत कैसे रहती है?

राधिका आगई। अब देवलाली है। केशू अभी यहां है, शान्त है। अभी किसी निश्चय पर नहीं पहुंच सका। पहुंच जायगा। उसे काफी समय दे रहा हूं। लक्ष्मीनिवासकी पत्नी सुशीलाने ५००० रुपये हरिजन सेवाके लिए दिये, उसका तुमने क्या फैसला किया?

देवदास, लक्ष्मी रणछोड़दासके बंगलेमें रहते हैं। राजाजी घनश्यामदासके साथ। मेरी तबीयत ठीक हो रही है। रोज तीन बार करके ४५ मिनट घूमता हूं। वजन ९७ पौंड तक पहुंच गया है। और बढ़ेगा। अब मेरी चिंता करनेकी कोई बात नहीं रहती।

नारणदासका पुरुषोत्तम बहुत करके यहां आयगा और डा. दिनशाके वहां नसर्गिक उपचारकी शिक्षा लेगा।

वहांका तुम्हारा काम कब पूरा होगा?

गिरधारी फिर आज गिरफ्तार होगा। कल छूटा था। उसे हैदराबाद जानेका हुक्म है। उसने उसे नहीं माना।

तुम्हारा खानपान आदि ठीक चल रहा होगा। मुझे सविस्तर लिखना।

बापूके आशीर्वाद

आज १०–११.३० तक हरिजन सेवकोंके साथ बातचीत की।

२-७-१९३३]

: १३७ :

चि. जमनालाल,

मुझे जरा भी फुरसत नहीं रहती। इससे लिखनेकी इच्छा होते हुए भी नहीं लिख सकता। आश्रमको लिखे पत्रकी नक़ल इसके साथ है। मेरे विचार इस तरह उड़ते रहते हैं। आखिर कहां जाकर ठहरेंगे, यह पता नहीं। मेरा आजकलमें ठिकाना लग जायगा तो फिर ऐसे विचारका आदान-प्रदान नहीं हो सकेगा। परंतु तुम तो विचार करने लग ही जाओगे। जो ठीक लगे वैसी सलाह नारणदासको देना। मेरा पत्र विनोबा पढ़ेंगे ही, उनको लिखनेका समय मिला ही नहीं। और आज मिलनेकी आशा नहीं।

कमलाके उपवास चल रहे हैं। संभवतः आज छूटेंगे। मेहता ध्यान रखते हैं। मुझे रोज रिपोर्ट देते हैं। उपवासमें खूब हिम्मत रखी है।

तुम्हारा शरीर ठीक रहता होगा।

तुमको कूद तो पड़ना ही है। परंतु जल्दी न करो। शरीरको ठीकठाक करके आना।

१७-७-१९३३] बापूके आशीर्वाद

: १३९ :

चि. जमनालाल,

इधर तुम्हारा कोई पत्र नहीं। मैंने आशा रखी थी। पूनासे लिखा मेरा पत्र मिला होगा। आश्रमकी आहुति देनेके संबंधमें बातचीत कर रहा हूं। लगभग निश्चित जैसा है। आज निश्चय हो जायगा। इस आहुतिकी नक़ल करनेकी जरूरत नहीं। इसको आदर्श मानकर जो अपना आचरण बनाना

चाहें वे जरूर बनायेंगे। वर्धा आश्रमके संबंधमें भी फिलहाल साबरमतीका अनुकरण करनेकी आवश्यकता नहीं। समय मिला तो विशेष लिखूंगा।

अब्दुलगफ्फार खांका लड़का, जो विलायतमें था और वहांसे अमेरिका गया था, मुझसे पूनामें मिला था। अभी बंबईमें है। अमेरिकाके शक्करके कारखानेमें काम सीखकर आया है। कितना सीखा है सो तो भगवान जानें। खुर्शेदबहन वगैराकी सलाह है कि वह शक्करके किसी कारखानेमें फिलहाल काम करे तो अच्छा। तुम्हारे कारखानेमें उसे आजमा देखो। उसने मुझ पर अपनी होशियारीकी छाप नहीं डाली। भलमनसाहतकी डाली है। अभी तो कहता है कि जैसा आप कहेंगे वैसा करूंगा। इस समय तो उसे वेतन देनेकी बात नहीं है। एक महीनेके बाद यदि वह काममें कुशलता बतावे तो वेतन ठहराया जा सकता है। अभी तो उसके लिए रहने-खानेका इन्तजाम करना पड़ेगा।

मेरी तबीयत ठीक है। रणछोड़भाईके यहां ठहरा हूं। आश्रम रोज जाता हूं। आज मीराबहनसे मिलनेकी आशा रखता हूं। इजाजतके लिए तार दिया था सो वह मिल गई है।

२१-७-१९३३] बापूके आशीर्वाद

: १४० :

चि. जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। प्रश्न तो सब ठीक हैं। भरसक जवाब देता हूं। आश्रम सौंप देनेमें मतलब तो यह है कि जो वस्तु अंतमें उन्हें लेना ही है वह उन्हें सौंप देना अधिक अच्छा। प्रतिवर्ष लगानके लिए माल उठा ले जायं उससे तो शौकसे सारी जमीन ले लें। फिर हजारों लोग बिना इच्छाके बर्बाद हो गये तो सत्याग्रहके नामसे परिचित आश्रम खुद होकर सारा त्याग करे यह इष्ट है और धर्म भी मालूम होता है। परंतु इसका अर्थ यह नहीं कि अभीसे वहांके आश्रमको भी ऐसा ही करना है। इससे उलटा मुझे लगता है कि वहांसे जो-जो व्यक्ति निकल सकें उससे संतोष मान लें। विनोबा तो अब नहीं निकल सकते। उन्हें हरिजन सेवाके लिए रहना है। महिला आश्रमका उपयोग पूरा करना चाहता हूं। वहां बच्चे भी आवें क्या? कितनी ही बहनें तो वहां आयेंगी ही। नीला नागिनी और अमलाबहनका प्रश्न है ही। उन्हें वहां भेजे बिना दूसरा उपाय नहीं है। दोनोंसे हरिजन-सेवाका काम लेना है। अभी तो दोनोंको तैयार होना है। नागिनीदेवीका पुरुषोंसे संबंध कम होना चाहिये। जंगम संपत्ति यदि सरकार न ले तो कहीं खुलेमें रखेंगे। गायोंका प्रश्न बड़ा है। विचार कर रहा हूं।

तुमको अभी कूद पड़नेकी जल्दी नहीं करनी है। समय आने पर कूदना। इतना ब्यौरा काफी है न? बड़ी व्यस्ततामें लिख रहा हूं।

२२-७-१९३३] बापूके आशीर्वाद

: १४७ :

चि. जमनालाल,

नीला फिर रास्तेसे भटक गई है। उसके पत्रोंसे उसकी अव्यवस्था स्पष्ट झलकती है। इतने दिन हिंदू धर्मकी धुन थी, अब ईसाई धर्मकी लगी है। इसमें भी यदि निश्चय हो तो अच्छी बात है, परंतु मुझे ऐसा नहीं लगता। उसकी कल्पनाशक्ति उसे इधरसे-उधर झकझोरा करती है। मौन लेनेसे उसका मन अधिक चक्कर खा गया जान पड़ता है। साथवाला पत्र पढ़कर उसे दे देना और फुरसत मिल जाय तो उससे बात भी कर लेना। अथवा विनोबा करें। द्वारकानाथसे कुछ हो सकता हो तो वे आश्वासन दें।

मेरा तार तुमको मिला होगा। तुम्हारे साथ बात तो करनी ही है। परंतु मैं तुमको यहां घसीटना नहीं चाहता। पहले तो ऐसा ही लगता था कि बंबई थोड़े दिन रहकर वर्धा जाऊं, परंतु दो-तीन दिनसे कुछ अनिश्चितता आगई है। कदाचित् वहां आकर बंबई जाना ठीक होगा, लेकिन देखता हूं। जवाहरलाल छूट गया है सो उससे मिलनेकी भी जरूरत है, पर वह मुलाकात तो वर्धामें भी हो सकती है। आखिर तो जो होना होगा वही होगा। इसलिए मैं कोई योजनायें नहीं बनाता।

मेरा शरीर ठीक होता जा रहा है। दो पौंड दूध साग और फल लेता हूं।

[मिला, ४-९-१९३३] बापूके आशीर्वाद

: १५४ :

चि. जमनालाल,

कलकत्तेसे लिखा तुम्हारा पत्र मिल गया। लेकिन उससे यह नहीं समझ सका कि तुम सतीशबाबूसे मिले या नहीं। मिले तो होगे। यह भी नहीं लिखा कि तुम्हारी तबीयत कैसी रहती है। अब लिखना। शिवप्रसाद बच गये यही बड़ी बात समझनी चाहिये। यात्रा ठीक तरह चल रही है। मेरा शरीर सोचा था उससे ज्यादा काम दे रहा है, इसलिए चिंता करनेका जरा भी कारण नहीं है। ओमकी गाड़ी ठीक चल रही है। वह ऐसी नहीं है जो किसीको अपने लिए चिंता करने दे। मंत्रीपदके लिए धीरे-धीरे तैयार हो रही है। इतनी जागरूकता अभी नहीं आई कि मुझे पूरा संतोष हो, परंतु शरीरको खतरेमें डालकर उसपर भार चढ़ाना नहीं चाहता। आसानीसे जितना काम कर सकता हूं उतना ही लेता हूं। किसन मेरे साथ है, यह तो तुम जानते ही होगे। बहुत भली लड़की है। ओमके साथ खूब घुल-मिल गई है। इसका शरीर जेलमें छीज गया, नहीं तो अच्छी मजबूत थी और मन चंचल था। यात्रासे उसको फायदा हुआ मालूम होता है। इस बार मेरे साथ

मलकानी हैं। इनके विषयमें तो पूछना ही क्या। मेहनत कर रहे हैं। दामोदर ठीक काम दे रहा है। वह मंजा हुआ है। अंत्यज खातेसे रुपये दिल्ली भेजने थे सो भेज दिये क्या? गोशीबहनको प्रतिमास कुछ भेजते रहना होगा। वे भी किसी खातेसे निकालकर देना। मथुरादास जितने कहें उतने देना। बंबईसे पूरी रकम उनको मिलनी चाहिये थी, परंतु उन लोगोंने नहीं दी। अब मैं पत्रव्यवहार करूंगा, परंतु इस बीच उसे रुपया अवश्य मिलना चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

ता. क. बुधवार, सुबह प्रार्थनाके पूर्व––

जानकीबहन तुम्हारे क्रोधके बारमें लिखती है सो क्या बात है? उसमें तथ्य हो तो उसे निकाल देना। ओमसे पूछा तो वह भी कहती जरूर है कि मदनमोहनको भी तुम कभी-कभी रुलाते हो।

तारा तो अच्छा काम देनेवाली है ही। उसका शरीर अच्छा रहेगा तो वह मंज जायगी। डा. शर्मा (दिल्ली) का तार है। उसने अपनी संपत्ति १० हजारमें बेची है और ऋणमुक्त हो गया है। अब वह आश्रममें आना चाहता है। अपनी पत्नीके साथ आवेगा। उसको मैंने सुझाया है कि वह तुमको लिखे। उसे अपनानेकी आवश्यकता है। जंच जाय तो अच्छा, नहीं जंचा तो चला जायगा।

तुम अपने शरीरको संभालकर काम करते होगे। जानकीबाई सोमण यहां रहना चाहती हैं। जहां विद्या आदि रहते थे वहां उन्हें जगह दी जा सकती है क्या?

३१-१२-१९३३] बापूके आशीर्वाद

: १५८ :

चि. जानकीबहन,

यदि दिमागकी कमजोरीके कारण जमनालालको गुस्सा आता हो तो उसमें शिकायतकी क्या बात? बीमारके गुस्से पर भला कोई ध्यान देता है? बीमारकी चिढ़ तो हमेशा पी ही ली जाती है। या केवल विनोदके लिए मुझे पत्र लिखा है? मदालसासे कहना कि वह मुझे भूल गई मालूम होती है। ऐसा नहीं चल सकेगा। ओम मजेमें है।

रामकृष्ण कैसा है? तुम्हारी तबीयत कैसी है? बालीका ध्यान रखना।

३०-१-१९३४] बापूके आशीर्वाद

: १५९ :

चि. जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। मैंने गोंदिया तार दिया था और वर्धा भी दिया है। जबतक राजेंद्रबाबू खास तौर पर तुमको नहीं बुलावें तबतक अंगीकृत

कार्यको हर्गिज नहीं छोड़ना। राजेंद्रबाबू बिना विचारे नहीं बुलावेंगे। मैंने भी अपने बारेमें यही वृत्ति रखी है। मुझे इस विषयमें कोई संदेह नहीं है कि तुम्हारा अंगीकृत कार्य जल्दीसे नहीं छूट सकता। तुम्हारे गये बिना जहां काम नहीं चल सकता हो वहीं जा सकते हो। ऐसी हालत मुझे अभी नहीं दिखाई देती। राजेंद्रबाबूके बुलाने पर आश्रमके छूटे हुए लोगोंको भेजा है। कई लोगोंके जानेका तार आज आगया है। उनमें भी सुरेंद्रको नहीं भेज रहा हूं। क्योंकि वह तुम्हारे पास काम कर रहा है। उसकी जरूरत न हो तो उसे भेज सकते हो। जाय तो गर्म कपड़े साथ ले जाय। परंतु उसकी वहां जरूरत हो तो अभी उसके जानेकी जरूरत नहीं। स्वामीको जानेका तार दिया है।

ओमका ठीक चल रहा है।

३०-१-१९३४] बापूके आशीर्वाद

:१९२:

चि. जमनालाल,

एलविनका पत्र पढ़ गया। उसे अलग डाकसे लौटा रहा हूं। टिकट खर्च बचानेके लिए। इनकी संस्था देखनेके बाद इन्हें मदद देनी पड़ेगी ऐसा लगता है। उनके पास जो रुपये आते हैं वे कहांसे? वे गायन सिखाते हैं सो किस तरह? उनके साथ शामरावके अलावा और कौन हैं?

ऐसा मालूम होता है कि उनको मांसाहार किये बिना गति नहीं है। इनकी ऐसी श्रद्धा नहीं है कि दूध-फल पर निर्वाह हो सके। परंतु वे कुछ भी खायें, इस कारण उनकी मदद बंद करनेका कोई प्रयोजन नहीं है। परंतु कताई बंद हो जाय या हलकी पड़ जाय तो यह सहन नहीं किया जा सकता। यदि कताईमें उनका विश्वास न हो तो छोड़ देना चाहिये। मैं यह नहीं कहता कि वे कातें तभी मदद दी जाय, परंतु आशय यह है कि वे सत्यकी रक्षा करें। देखना इतना ही है कि काम सब स्वच्छ हो। एलविन सीधे-भोले हैं इसलिए खुदको धोखा दे सकते हैं। इसलिए इस बातकी आवश्यकता है कि मित्र लोग उनकी देखभाल करें।

डा. अन्सारीकी पार्टीका निश्चय हो गया होगा। जबतक इसका स्पष्टीकरण न हो जाय तबतक उसमें दिलचस्पी अवश्य लेना। राजा भी दिलचस्पी लें। मालवीयजीको अंदर लानेके बाद मदद भी देनी होगी और यह भी देखना होगा कि वे नुकसान भी न करने पावें। विलंब या जल्दी करके वे नुकसान पहुंचा सकते हैं।

जुलाई तकका कार्यक्रम तो देख लिया न? इसके अनुसार करनेसे बहुत जगह मुलाकाती मिल सकेंगे।

२१-५-१९३४] बापूके आशीर्वाद

: १७० :

चि. जमनालाल,

उपवासके बाद यह पहला पत्र लिख रहा हूं। मजेमें हूं। आज दूध लिया है। ब्लड प्रेशर अच्छा है। इसलिए मेरी चिन्ता न करो। जानकीबहन जबतक रहना चाहे तबतक उन्हें रहने दो। ओमको ज्यादा दिनतक वहां रखनेकी शायद जरूरत न हो। महादेव और मदनमोहन आवें तो आने दो। उनका जाना मुझे आवश्यक मालूम हुआ है। भले ही लौट सकें तो वह कल वापस लौट आयें। यहां परेशानी नहीं होगी। अतः हृदयमें रामको अंकित करके क्लोरोफार्म लेना। सब कुशल है। ईश्वरको तुमसे अभी बहुत सेवा लेनी है। बहुत अर्पण कराना है।

१५-८-१९३४] बापूके आशीर्वाद

: १७५ :

चि. जमनालाल,

कल विनोबाके रवाना होनेके बाद डा. जीवराजका बहुत अच्छा तार मिला। उससे मालूम हुआ कि फिर खूनकी शिकायत नहीं हुई और दर्द भी कम हुआ था। फिर भी ठीक हुआ जो विनोबा वहां डुबकी लगाने चले गये। उनके जानेमें कारण कमलनयन है, यह तो जाना होगा। कमलनयन खुद तुम्हारी शनिवारके दिनकी तकलीफ देखकर घबड़ा गया, इससे यहां पहुंचते ही महादेवके द्वारा उसने मुझे कहलाया। मैंने सूचनाका स्वागत किया और विनोबाको खबर भेजी। वे तुरन्त तैयार हो गये। मदालसाकी भी इच्छा हुई, परन्तु वह तो भक्त है न? इसलिए विनोबाकी मंशा देखकर रुक गई। उसका संयम उसे फलेगा। रह गई सो ठीक हुआ। अब यदि दर्द मिटा हो और चित्त शान्त हुआ हो तो विनोबाको जल्दी मुक्त कर देना। परन्तु जरूरत हो तबतक वह भले ही वहां रहें। यहांका तंत्र व्यवस्थित हो रहा है। विनोबा उसीमें रातदिन व्यस्त रहते हैं।

विद्याभ्यास संबंधी तुम्हारी प्रतिज्ञाका पालन अवश्य होगा। तुमको आश्वासन देनेके लिए इतना लिख दिया है। इसकी चर्चा विनोबाके साथ करनेकी जरूरत नहीं। इस समय तुमको इस बातकी साधना करनी है कि तुम्हारा शरीर जल्दी अच्छा हो जाय। यहांकी अथवा दूसरी और कोई भी चिन्ता अपने ऊपर लेनेकी जरूरत नहीं। मेरी तो बिलकुल ही न करना, क्योंकि मेरी गाड़ी अच्छी तरह चल रही है। राधाकिसन और शिवाजी बहुत अच्छी तरह पहरा दे रहे हैं। तुम बहुत नहीं बोलते होगे। डाक्टर जो छूट दे उसका उपयोग कंजूसीसे करनेमें ही हित है। डा. जो चाहें वह अगर धर्म विरुद्ध न हो तो करना चाहिये। हमारी इच्छाके अधीन होकर कोई छूट दे तो वह दूसरी बात है।

बापूके आशीर्वाद

जाजूजी मिले थे। खबर सुना गये। मदनमोहनको भेजनेकी जरा भी जल्दी न करना। यहां किसीको कोई तकलीफ नहीं है। यह निश्चित समझना।

२०-८-१९३४]

: १७७ :

चि. जमनालाल,

तुम्हारा, ओमका, जानकीमैयाका तथा मदनमोहनका पत्र मिला। विनोबासे समाचार जाने और अभी-अभी डा. शाहका तार भी मिला। इससे अब तो ऐसा ही मानना चाहिये कि थोड़े दिनमें ही जख्म भर जायगा। परन्तु तुम हवाई किले न बांधना। वहांका सब काम धीरजके साथ पूरा करना। किसी तरहकी जल्दी नहीं है। चिन्ता भी नहीं है। यहां राधा-किसन सब बातका ठीक इन्तजाम कर लेता है। और मेरी रखवाली तो वह तथा और दूसरे कई लोग कर रहे हैं।

जिस वाक्यके साथ 'विनोद' लिखना पड़े उसे क्या विनोद कहेंगे! जानकीमैया चिल्ल-पुकार मचा दे यह अच्छा या तुम मनमें सब कुछ दबाकर सपने देखते रहो यह अच्छा? जानकीमैया चिल्लपों मचा देती है तो इससे हम समझ जाते हैं कि उसे बड़ा दुःख है और तुम मनमें समझ लेते हो तो हम लोग धोखेमें पड़ जाते हैं। कहो अब कौन बढ़कर है?

२३-८-१९३४] बापूके आशीर्वाद

: १८० :

चि. जमनालाल,

तुम्हारे पत्र आते रहते हैं और खबर तो मिलती ही रहती है। ईश्वरका पूरा अनुग्रह मालूम होता है कि डाक्टरोंकी धारणाओंसे भी जल्दी जख्म भर रहा है। जल्दी बिलकुल न करना। जख्म पूरा भर जानेपर ही वहांसे निकलना है। सिंहगढ़का विचार मुझे पसंद है। मेहताकी मदद भी मिलती रहेगी। सिंहगढ़की हवा तो उत्तम है ही। पानी खूब हलका है। इससे पूरा लाभ मिलेगा। दूर भी नहीं कह सकते।

बातचीत ज्यादा न करना। करना भी पड़े तो पूरी आवाजसे नहीं, बल्कि बहुत धीमी आवाजसे। आवाज निकालनेका असर कान पर पड़े बिना रहता ही नहीं।

दालभात छोड़नेसे जरूर लाभ होगा। दूध पर अधिक आधार रखना। दही खट्टा बिलकुल नहीं होना चाहिये। जैसे-जैसे इजाजत मिलती जाय कसरत खूब बढ़ाते जायें। चिन्ता तो बिलकुल मत करना। ऐसा करनेसे कानके फायदेके साथ दिमाग भी तरोताजा हो जायगा।

मालवीयजी आज आगये। राधाकान्त भी साथ है। आसफ अली और खलीक आगये हैं। और लोग कल आयेंगे।

खानभाई खुश रहते हैं। रोज सुबह घूमते हैं और शामको ४ से ५ बजेका समय देता हूं। धीरे-धीरे बातें हो रही हैं।

मेरे संबंधमें पगलीकी बात तो सुनी होगी। उसमें मैं तुमको नहीं डालना चाहता। बादमें जब बिलकुल अच्छे हो जाओ तब जो टीका करनी हो सो करना। मुझे तो लगता है कि तुमको यह सब अच्छा लगेगा।

ओम मेरे पास ही रहती है। आवश्यक मदद करती है। सच पूछो तो एक या दो लड़कीका काम चार या पांच लड़कियोंमें बंट गया है। इससे सबके हिस्सेमें थोड़ा-थोड़ा आता है। और प्रभावती कहां ऐसी है जो दूसरोंको बहुत करने दे। फिर मदालसा तो अपना हिस्सा बटाने आती ही है।

राधाकिसन तुम्हारे सुझावोंके कारण इतना चिन्तित रहता है कि मुझ पर ठीक-ठीक पहरा रखते हुए भी घबराता रहता है। मैं जल्दी तो उठ ही जाता हूं। अधिक सोनेकी जरूरत नहीं रहती और मेरा काम निपट जाता है तो मन हलका रहता है। वजन अब धीरे-धीरे ही बढ़ेगा। खुराकमें वृद्धि करनेकी गुंजाइश नहीं। जो है उससे धीरे-धीरे बढ़ेगा। वही ठीक है। ताकत बढ़ती रहती है। दिनमें सो लेता हूं। रातको ८ बजकर ४५ मिनट पर और ज्यादासे ज्यादा ९ बजे चारपाई पर चला ही जाता हूं। इस तरह मैंने अपनी तबीयतके बारेमें उलहना मिलने जैसी बात नहीं रक्खी। तुम्हारे आने तक और उसके बाद भी यहीं रहूंगा। बिना कारण यहांसे खिसकना नहीं है।

एंडरूज फिर रविवारको आ रहे हैं।

कुमारप्पा २० दिनकी छुट्टी लेकर आये हैं। इनको फिर तुरन्त वापस भेज दूंगा। यहां मंगलवारको आवेंगे।

कन्याओंका ठीक चल रहा दीखता है। विनोबा ही सब कुछ देखा करते हैं। इसलिए मुझे किसीमें हाथ डालनेकी जरूरत नहीं रहती।

बापूके आशीर्वाद

आसामके बारेमें लिखना रह गया। वहां कांग्रेसके लोगोंको जानते हो तो उन्हें आसामके रुपये भेज देना। यदि न जानते हो तो ज्वालाप्रसादको भेज देना। मारवाड़ी रिलीफ वहां काम करती है। उसमें यह रकम मिलायी जाय। तुमको जैसा उचित लगे वैसा करना।

८-९-१९३४]

: १८३ :

चि. जमनालाल,

वल्लभभाई खबर देते हैं कि तुम * * में कपड़ेकी मिलका सौदा करना चाहते हो। तुम यानी तुम्हारी कंपनी। मुझे इसमे आघात तो पहुंचा ही। जो इतनी गहराई तक खादीमें उतरे हैं वह मिलके मालिक बनेंगे, यह बात अनहोनी-सी लगी; फिर भी मैं निश्चय नहीं कर सका कि क्या लिखूं। इतनेमें कल जानकीमैया आई। मध्यमाकी परीक्षा दे चुकी हैं इससे मन हलका है। उन्होंने जबसे यह सुना है तबसे उन्हें भी चैन नहीं पड़ी है। वे पूछती हैं कि यह बला किसके लिए? लड़के भी पसंद नहीं करते। नौकर कहते हैं कि अब तो घरकी ही मिल होगी इसलिए सेठजी खादी पहननेको थोड़े ही कहेंगे? यह कार्य किसीको पसंद नहीं है इसलिए मिलका विचार छोड़ देना। यदि सौदा हो गया हो तो नसीबमें आ पड़ा यह समझकर करना। भागीदारोंको लेना हो तो वे भले लें। यदि तुम धंधा ही चाहते हो तो बहुतसे व्यवसाय पड़े हैं। परोपकारके लिए ज्यादा कमाना चाहते हो तो परोपकारके बिना हम चला लेंगे। ओम् कहती है कि 'आप कांग्रेसके लिए धन चाहते हैं। क्या इसीलिए काकाजीको मिल खरीदनेकी प्रेरणा कर रहे हैं?' इन सबको क्या जवाब दूं? यदि हो सके तो इस विचारके छोड़ देनेकी खुशखबरी तारसे देना।

२७-९-१९३४] बापूके आशीर्वाद

: १८४ :

चि. जमनालाल,

तुम्हारे पत्र मिले। मिलकी झंझटसे अच्छे बचे। इस बाघके डरसे यहां जानकीमैया और बालकोंके मनका सुन्दर अनुभव मिला। सब व्याकुल हो गये थे, यह मुझे बहुत अच्छा लगा। यह वृत्ति कायम रहे ऐसी आशा हम सदा करें।

जबतक डाक्टर वहांसे बिलकुल मुक्त न करें तबतक वहांसे हिलना ही नहीं है।

जितनी हो सकेंगी उतनी बातें यहां करेंगे। बाकी कांग्रेसमें और उसके बाद। कांग्रेसके बाद तो फिलहाल वर्धा ही लौटना होगा। कांग्रेसके बाद तुरन्त नई बात करनेका कुछ सोचा ही नहीं है। इसका विचार तो यहीं होगा।

यहांका चल रहा है।

कमलाको पत्र लिखते रहते होगे। आजकल तो वहां खुर्शेदबहन हैं उनको लिखो तो भी चलेगा।

५-१०-१९३४] बापूके आशीर्वाद

: १९१ :

चि. जमनालाल,

तुम्हारे कानके विषयमें अभी तक कोई खबर क्यों नहीं? किशोरलाल और गोमतीने बिस्तर पकड़ लिये हैं। गोमती ठीक है। किशोरलालको अभी बुखार है, मगर उतार पर है। उद्योग संघको बगीचेमें ले जानेकी तैयारियां हो रही हैं। मकानके ऊपर दो कोठरियां बनानेकी तजवीज है। एक बनानेकी बात राधाकिसनने की थी। अब दोकी चल रही है। लगभग दो हजारके खर्चका सवाल है। ऐसा जरूरी नहीं है कि यह किया ही जाय। इसका सही उपयोग तो चौमासेमें होगा। दिनमें तो मैं नीचे पड़ा रह सकता हूं। रातको अवश्य ऊपर सोने जाऊंगा। ऊपरकी कोठरियां तो भविष्यकी दृष्टिसे ही बनानी चाहिये। बात निकली तो मुझे 'हां' कहनेका प्रलोभन हुआ। तुम इनकार कर दोगे तो काम बन जायेगा और दो हजार रुपया बच जायेगा। पर अब वे कहां तुम्हारे रहे हैं? यह लिखते समय मनमें यह विचार आ जाता है कि ऊपर मकान बनवानेको फिलहाल मुझे ही दृढ़ता पूर्वक मना करना चाहिये। ऐसा ही होगा। इसलिए ऊपरका लिखा रद्द समझना।

स्वरूपरानीकी ओरसे कृष्णा फिर धीमेसे प्रभाकी मांग कर रही है। मैंने तो लिखा है कि प्रभा इस तरह काममें लग गई है कि उसे मुक्त नहीं किया जा सकता परन्तु वहांसे किसी दूसरी बहनको भेज सकते हैं। उसको एक साथिन चाहिये और मैं मानता हूं कि ऐसी कोई बहन मिल सकेगी। तुम्हारी हिम्मत पड़े तो तुम स्वरूपरानीको तसल्ली देना। नहीं तो यह बात मुझ तक ही रहने देना।

२२-१२-१९३४] बापूके आशीर्वाद

: १९२ :

चि. जमनालाल,

तुम इस समय दो कोठरियां बनवानेका आग्रह न रखना। मैंने सोच समझकर ही मना किया है। सब कुछ ट्रस्ट ही है न? कौड़ी-कौड़ी करके बचानेसे ही बरकत रहती है। भले ही खानगी दुकान हो या दरिद्रनारायणकी। दरिद्रनारायणकी दुकानमें तो और भी अधिक सावधानी चाहिए। मगनलाल स्मारकका मसविदा नहीं बना सका। भरसक कोशिश तो करूंगा।

अभ्यंकर बच जाय तो बड़ा अच्छा हो। उनसे जब मिलो तो कहना कि मैं उन्हें बहुत याद करता हूं।

खानसाहब मेरे साथ दिल्ली आ रहे हैं। मेहेर तो साथ होगी ही। मेहेरका भी ठीक चल रहा है। आजकल यहां आनंदके पिता और बैकुंठ

मेहता हैं। आनंदके पिता दुनियाकी यात्रा करके आये हैं। उद्योग संघमें बहुत दिलचस्पी लेंगे।

२६-१२-१९३४] बापूके आशीर्वाद

: १९७ :

चि. जमनालाल,

तुम नहीं आ सकोगे यह समझा। जबतक डाक्टर इजाजत न दें तबतक वहीं रहना ठीक है। बहुत उपाधि मोल न लेना।

रामदासको मणिभवनमें रखनेकी मणिलालकी इच्छा कम है, ऐसा रामदासको प्रतीत होता है। अतः वहांसे उसका चला जाना ठीक ही है। अब वह अलग कमरा लेकर रहना चाहता है। उसका किराया २५ रु. तक होगा, जिसकी उसने मांग की है। मैं समझता हूं कि वह उसे लेने दें। यह सब अनुचित तो मालूम होता है किन्तु रामदासकी बीमारी ही ऐसी है कि उसके विषयमें अनुचित उचित मालूम होता है। इसमें पिताका मोह कहां तक मुझे गलत रास्ते ले जाता होगा, सो नहीं कह सकता। रामदासकी इस मांगमें यदि तुमको दोष मालूम होता हो तो उसके अनुसार उसे कहनेका अधिकार तुमको वर्षों पहले मिल चुका है। जैसा ठीक मालूम हो वैसा करना।

स्वरूपरानीके विषयमें समझा। स्वरूप तार भेजती रहती है। मुझे यहां २५ तक तो रहना ही पड़ेगा। २८ तो यहांसे रवाना होनेकी आखिरी तारीख है।

राजाजी कल लक्ष्मीको लेकर यहां आ रहे हैं।

जयप्रकाशसे मिलते रहते हो न?

१४-१-१९३५] बापूके आशीर्वाद

: २०५ :

चि. जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। डा. जीवराजके पत्रसे मुझे संतोष है। वे भोजनमें परिवर्तन करना सुझाते हैं। मक्खन ज्यादा लेनेको कहते हैं। उनके साथ बात करके बढ़ाना जरूरी समझो तो बढ़ा देना। मुझे डर है कि तुम बातचीत बहुत करते होगे और कसरत कम। यदि ऐसा हो तो तुमको दोनोंमें सुधार करनेकी जरूरत है। मुझे विस्तारसे लिखना।

कमलनयनके साथ बातें की हैं। मेरी निश्चित राय है कि यदि वह राजी हो जाय तो विवाह करके ही उसका विलायत जाना उचित है। परन्तु अपनी पत्नीको वह साथ न ले जाय। पत्नीको ले जाकर पढ़ सकना लगभग असंभव है। विलायतमें घर-गिरस्ती जोड़ना भी अनुचित है। हां, दोनों सैर-सपाटेके लिए जायें तो बात दूसरी। पर यहां तो सैर-सपाटेका सवाल है ही नहीं। मेरी राय इस प्रकार है। अभी सगाई कर ले। नलिनिया बाल्ल

होने पर कोलम्बो जाय। एक परीक्षा तो पास कर ही ले। फिर विलायत जाय। जानेसे पहले विवाह कर ले। थोड़ा समय संसारका सुख भोगना चाहे तो भोगे, परन्तु विलायत तो अकेला ही जाय। विलायतसे भले आता-जाता रहे। कोलम्बोका अनुभव कमलनयनको ठीक काम आयेगा। उसका जीवन अभी अध्ययनशील नहीं बना। यह हो जाने पर फिर कोई कठिनाई नहीं रहेगी।

उद्योग संघमें छः स्थायी ट्रस्टी नियुक्त किये हैं, उसमें तुम्हारा नाम लिखा है। यह आवश्यक था। अतः तुमको साधारण सदस्य बनानेकी जरूरत है। इसका फार्म इसके साथ भेज रहा हूं, उसे भरकर लौटती डाकसे भेज देना। इसमें संकोचका कोई कारण नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

कृष्णदास सगाईके लायक हो गया है। कोई लड़की तुमने निगाहमें रखी है? हो तो लिखना।

६-२-१९३५] बापू

: २०७ :

मुरब्बी भाई,

आपका दूसरा पत्र कल शामको पूज्य बापूको मिला। बापूने लिखाया है कि यदि पैदल चलनेमें चक्कर आनेका डर हो तो मोटरमें घूमने जाया करें। मोटरमें बैठकर खुली हवामें घूमने जाना चक्करके लिए भी अच्छा है।

ग्राम उद्योग संघके सदस्य होनेकी प्रतिज्ञाके संबंधमें बापू लिखाते हैं कि उन्होंने आपके विषयमें पूरा-पूरा विचार करके ही दस्तखत करनेकी सलाह दी है। उन्होंने सबसे कहा भी है कि वे आपकी सही प्राप्त कर सकेंगे। अब यदि आप नहीं करेंगे तो उसका असर खराब होगा। वे समझते हैं कि आपको सही करनेमें धर्मभीरु होनेका कोई भी कारण नहीं है। आपने मानसिक त्याग तो पूरा-पूरा किया ही है, आपकी वृत्ति भी ग्रामीण ही है। आज इतना ही उनके लिए काफी है। इसलिए वे जोर देकर लिखाते हैं कि फिलहाल तो उस पर सही करके भेज दीजिये।

यहां आनेके बाद मेरे साथ इस विषयमें पेट भरके चर्चा कर लें और यदि आप मुझे समझा सकें अथवा मैं आपको समझा न सकूं तो फिर आपके सदस्यतासे त्यागपत्र देनेमें मैं कोई आपत्ति न करूंगा। सदस्यतासे जब चाहें इस्तीफा देनेकी इसमें छूट है। आपके बिना यह ट्रस्टी-मंडल बनाना उन्हें (बापूको) ठीक नहीं लगता।

चि. कृष्णदासको संदेश कह दूंगा।

अन्य बातोंके विषयमें कलके पत्रमें लिखा है।

९-२-१९३५] किशोरलालके प्रणाम

: २१४ :

चि. जमनालाल,

तुम्हारे दोनों पत्र मिले। कुमारप्पासे पूछा। जब ये फार्म छपाये गये थे तब कोई अध्यक्ष नहीं नियुक्त किया गया था। खजानची तो थे ही। उनका नाम देना आवश्यक मालूम हुआ इसलिए छापा गया। मुझे इसकी कोई खबर नहीं थी। कागज भी मैंने तुम्हारा पत्र आनेके बाद मंगाकर देखा। अब आगे जो फार्म छपाया जायगा उसमें परिवर्तन करके छपानेकी सूचना की है। इसमें कोई खास बात नहीं है।

कमलनयन सरहदमें पहुंच गया यह ठीक है। पत्रोंमें था कि उसे चोट आई है। पर उसमें कोई खास बात नहीं मालूम होती।

कमलाका मालूम हुआ। कमलाकी इच्छा है कि जब वह जाने लगे तो बंबई जाकर मैं उससे मिल आऊं। तुम वहां हो ही सो मुझे सलाह देना।

कान कैसा रहता है इस प्रश्नका उत्तर नहीं है। आज ठक्करबापा आये हैं।

[१८-४-१९३५] बापूके आशीर्वाद

: २१७ :

चि. जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला।

मदालसा भले ही उबाला हुआ दूध पिये और रोटी हजम हो तो खाये। अपने शरीरकी संभाल रखकर जो जीमें आवे वह खाये पर चार बारसे अधिक नहीं। बीचमें भी कुछ नहीं। यह समझमें आ सकता है कि वह कसरत करेगी तो भोजनका परिमाण बढ़ेगा।

चौधरीके बारेमें कल लिख चुका हूं। उसे घर कहां दें? या तो पुराने बंगलेमेंसे दो कमरे या नयेमेंसे। बगीचेमें दोनों रह सकें ऐसी सुविधा नहीं देखता। चौधरीकी मुझपर अच्छी छाप पड़ रही है। वह काम किया करता है। दोनोंके लिए उसे १०० रु. की आवश्यकता है। उसकी पत्नीको ७५ रु. दूसरी जगहसे और उसे २५ रु. यहांसे, इस प्रकार १०० रु. दिये जा सकते हैं। मकानके बारेमें लिखना।

कानका मवाद बंद हुआ? राजेन्द्रबाबू और राजा आज आ गये। राजा बहुत थक गये हैं इसलिए अब वह जा रहे हैं।

प्रोफेसर भी आ गये।

बापूके आशीर्वाद

प्यारेलालके विषयमें तारादेवीको लिख चुका हूं।

[२८-४-१९३५]

: २३४ :

चि. जमनालाल,

सुनता हूं कि तुम्हारे आनेकी तारीख आगे बढ़ती जा रही है। अलमोड़ामें रहनेके लिए बढ़ रही है यह मुझे अच्छा लगता है। तुमको आराम करनेकी आवश्यकता है ही। वहां बैठे-बैठे भी तुम पूरा आराम ले सको यह संभव तो है नहीं। पत्र तो लिखने ही पड़ते हैं। लोग भी वहां मिलने-जुलने आते ही हैं, और वहांका काम तो है ही। यह होते हुए भी जो परिश्रम यहां उठाना पड़ता है वह तो वहां नहीं ही है, इस कारण जाड़ा शुरू होने तक वहां रहो तो मुझे अच्छा लगेगा। फिर वहांके जाड़ेकी तो तारीफ है। इससे भी अधिक अच्छा जाड़ा शिमलाका माना जाता है; और जाड़ेमें शिमलाका रहन-सहन वर्धासे भी सस्ता होता है। बंगले मुफ्तके जैसे किराये पर मिल जाते हैं। साग-सब्जी, फल वगैरा ढेरके ढेर और सस्ते मिलते हैं। और दृश्य उत्तमोत्तम होते हैं। सरदी लोगोंकी कल्पनामें ही होती है। लाहोरमें जितनी ठंड लगती है उसकी अपेक्षा वहां कम लगती है; इसलिए मैं तो तुमको सरदीके दिनोंकी भी छुट्टी दे दूंगा। जहां बैठे रहोगे वहांसे भी काम तो देते ही रहोगे। पूरा एक वर्ष शांतिसे अगर पहाड़ पर बिता दो तो मेरा खयाल है कि तुम्हारा कानका दर्द शांत हो जायगा, मदालसाका शरीर बिलकुल तैयार हो जायगा और जानकीमैया, हड्डियां न तोड़ लें तो, बढ़िया घुड़सवार बन जायेंगी। चर्खा संघकी सभामें तुम उपस्थित रहो ऐसी मेरी इच्छा तो जरूर है, पर अगर तुमको संतोष हो जाता हो तो मैं तुम्हारी उपस्थितिके बिना भी काम चला सकता हूं। नई नीतिके बारेमें चर्चा तो खूब की है। तुमको जो कहना हो वह लिखकर भेज सकते हो। खादी-प्रतिष्ठान, मेरठ और कश्मीरके भंडारके विषयमें विचार करनेकी बात हो तो इनके बारेमें भी मेरे विचार बन चुके हैं। इस संबंधमें तुम अपने अभिप्राय भेज सकते हो और फिर जो हो जाय उसे सहन करो।

उसके बाद कांग्रेस कमेटीकी मीटिंगका सवाल है। इसमें भी न आओ तो चलेगा। इन सबमेंसे मुक्ति इसी शर्त पर मिल सकती है कि तुमको किसी भी पहाड़ पर यह सारा समय बिताना चाहिए। अगर नीचे उतरते हो तो फिर दोनों बैठकोंमें शामिल होना यह तुम्हारा धर्म हो जाता है। तुम जालंधर जानेवाले थे सो क्या नहीं गये? राधाकृष्ण और सरदार ऐसा समझते हैं कि शायद तुम नहीं गये। सरदारको वहां जाना पड़ेगा। यहां सब ठीक चल रहा है। बालकोबा गौरीशंकरकी देखरेखमें केवल दूधका प्रयोग कर रहे हैं। अब ठीक हैं। इसके साथ भगवानजीका पत्र है। तुमने जिस आदमीके लिए लिखा उसे मिलनेको कह दिया है।

२०-९-१९३५] बापूके आशीर्वाद

: २३९ :

प्रिय मुरब्बी जमनालालजी,

यह पत्र नासिक पहुंचते-पहुंचते लिख रहा हूं। बापूकी तबीयत अच्छी है। बातचीत करनेमें तो बीमार लगते ही नहीं। गाड़ी रवाना होते ही सरदारके मजाक शुरू हो गये। डाक्टरसे बोले, "लो गाड़ी चलने लगी, अब बत्तीकी स्विच बंद करो।" और डाक्टर स्विच खोजने लगे। सब जोरोंसे हंस पड़े। तो बोले, "डाक्टर! थर्ड क्लासमें स्विच नहीं होती।" बापूजी सुबह पौने चार बजे उठे। अकेले ही प्रार्थना करके फिर सो गये। मैं और मणिबेन चार बजे उठे और यह समझकर कि बापू सो रहे हैं, हम दोनों भी प्रार्थना करके सो गये। सुबह पता चला कि बापू हमसे पहले ही प्रार्थना कर चुके थे। प्रार्थनाके बाद तुरत जो सोये तो ५॥ बजे उठे। बादमें फिर सो गये। सरदार ६॥ बजे बापूसे कहने लगे, "बीमार आप हैं या हम? आप तो लकड़ीकी इस कड़ी पट्टी पर भी सो जाते हैं। आपको बीमार कौन कहेगा? लकड़ीकी इन सीटों पर हम नहीं सो सकते, इस कारण बीमार तो हमीं हुए न?" इस तरह मजाक होते रहते हैं। डब्बा तो रिजर्व जैसा ही है। क्योंकि नासिक तक तो कोई आया ही नहीं। पर अब नासिक आ गया है और यह पत्र आपको कल मिल सके इस हिसाबसे डाकमें डालना हो तो उसे नासिकमें ही डालना चाहिए।

१७-१-१९३६] स्नेहाधीन महादेवके प्रणाम

: २४५ :

ग्राम-निवास संबंधी मेरी कल्पना

बाकी इच्छा हो तो उसे लेकर, न हो तो अकेले मुझे ही, सेगांवमें एक झोंपड़ी बनाकर रहना।

मीराबहनवाली झोंपड़ी शायद मेरे लिए काफी न हो।

झोंपड़ी बनानेमें कमसे कम खर्च करना। १०० रु. से ऊपर तो आना ही नहीं चाहिए।

मुझे जितनी मददकी जरूरत हो वह सेगांवमेंसे ही प्राप्त कर लेनी चाहिए।

जब जब जरूरत हो मुझे मगनवाड़ी जाते रहना चाहिए। ऐसा करनेके लिए जो वाहन मिले उसका उपयोग करना।

......के पास ही मीरा......रहे। मेरी सेवामें समय न दे, लेकिन गांवके काममें मदद दे सकती है।

जरूरत हो तो गड्डूरैन, शांति आदि वहां रहें। उनके लिए सादी झोंपड़ी बनाना।

ऐसा करते हुए बाहरके जिन कामोंमें मैं भाग ले रहा होऊं उनको जारी रखूं।

खास जरूरतके बगैर बाहरके लोग मुझसे मिलनेके लिए सेगांव न आवें। मगनवाड़ी जानेके जो दिन तय हुए हों उन दिनों वहां मिल लिया करें।

बाहर भ्रमण करनेकी जरूरत मालूम होने पर.....

मेरा पूर्ण वि......करनेसे खास.........लाभ होनेवाला है और ग्राम उद्योगका काम अधिक गतिसे चलेगा, लोगोंका ध्यान ग्राम उद्योगकी तरफ अधिक झुकेगा।

ऐसा करनेसे मीराबहनकी भारी शक्तिका पूरा उपयोग होगा। और महादेव, कांति, आदिको भी नया और अच्छा अनुभव मिलेगा।

मेरे गांवमें बस जानेसे मेरी कल्पनामें जो दोष होंगे वे ऊपर आ जायेंगे। दूसरोंको प्रोत्साहन तो मिलेगा ही।

सेगांवमें ही बसनेका.....नहीं है, पर यह प्रवाह-पतित मालूम होता है। लेकिन कोई दूसरा गांव अधिक ठीक मालूम हो तो उसपर विचार करनेको मैं तैयार हूं।

१९-३-१९३६] बापू

: २४८ :

प्रिय मु. जमनालालजी,

पूज्य बापू और सरदार दोनों मजेमें हैं। आज कुमारप्पा पहुंच गये। दीवान और डाक्टरकी मनाही होते हुए भी, बापू कुर्सीका उपयोग न करके सारी पहाड़ी पैदल ही चढ़ कर गये। पांच मीलकी चढ़ाई २। से २।। घंटेमें पूरी कर सके, पर थकान बिलकुल नहीं आई। यहां शांति तो अपार है, और यहांकी स्वच्छता और निर्जनता आकर्षक है। बापूको बहुत आराम और शांति मिलेगी इसमें शंका नहीं। राज्यने सारा प्रबन्ध हमारी रुचिको ध्यानमें रखकर किया है।

चितलियाने कुछ पर्चे भेजे थे सो उनमेंसे एक, जो आपके लिए था, इसके साथ भेजता हूं। अभी तक भगिनी सेवा मंदिरका कब्जा उसने छोड़ा नहीं है। और उस संबंधकी सारी योजनाकी रूपरेखा वह बना रहा है। बापूने उसे लिखा है कि सेवा-मंदिरका कब्जा छोड़नेके बाद ही उसकी योजना पर विचार हो सकेगा। इसपर भी विचार करना होगा कि वह ट्रस्टके हेतु तथा बापूकी विचार-सरणीके अनुरूप है भी या नहीं।

डा. अन्सारीकी मृत्युसे बापूको बहुत आघात पहुंचा है। अनेक पत्रोंमें उन्होंने लिखा है कि मृत्यु उनको हिला नहीं सकती, लेकिन इस मौतसे उनको बहुत आघात पहुंचा है। ऐसा लगता है मानो वह अकेले रह गये

हैं। उनकी मित्रता कोई राजनैतिक मित्रता नहीं थी, बल्कि गाढ़ व्यक्तिगत मित्रता थी। हरिजनमें भी बापूने अपना दुःख उंडेला है।

जिस बहनके संबंधमें डा. जाकिर हुसैन साहबका पत्र लखनऊमें आपको मिला था और जिसका उत्तर आपकी ओरसे मैंने दिया था, उस बहनका पत्र इसके साथ भेजता हूं। उसे मैं लिख देता हूं कि अपने आनेके संबंधमें सीधा आपसे पत्रव्यवहार करे।

आप कुशल होंगे। सबको यथायोग्य। किशोरलालभाईको प्रणाम। जानकीबहन, गोमतीबहन आदिको भी।

[१३-५-१९३६] सेवक महादेवके प्रणाम

: २६६ :

चि. जमनालाल,

उद्योग संघके इतने सारे सदस्य यहां आये, इससे कल मैं शरमिंदा हुआ और दुःखी भी। ऐसे कामके लिए मुझे वहां आना चाहिए। इससे ही खर्च वगैरामें बचत होती है। मेरे इतना चलने फिरनसे मेरे शरीरको कोई नुकसान नहीं होता, पर वहां न जाकर सबको यहां घसीटनेसे मुझे बहुत आघात पहुंचा। इसलिए मोटर या बैलगाड़ी जो भी हो, मुझे समय पर भिजवा देना कि जिससे मैं वहां अधिकसे अधिक पौने दो बजे तक पहुंच सकूं। सबको बंगले पर ही बुला लेना। अगर वहां न हो सके तो खुशीसे मगनवाड़ी ले जाना। चर्खा संघका सीधा या अटपटा जो काम हो उसे जहां तक हो सके तुम ही निबटा लेना; जिससे हम वहां अत्यन्त महत्वकी ही बातें कर सकें।

[१७-९-१९३७] बापूके आशीर्वाद

: २६९ :

चि. जमनालालजी,

तुम्हारा पत्र मिला। बहादुरजी आ सकते हैं।

श्रीमन्के बुखारके बारेमें मालूम हुआ। उसका बुखार खराब है। हठीला मालूम होता है। आज उसे देख आनेकी आशा रखता हूं। सुबहकी प्रार्थनाके बाद यह लिखा रहा हूं। श्रीमन्की बीमारीके कारण शिक्षा परिषदको स्थगित करनेकी सूचना महादेव और किशोरलालने रखी। वह मेरे गले नहीं उतरी। सौ मनुष्योंकी व्यवस्था करनेकी जिम्मेदारी तुम पर तो नहीं ही होनी चाहिए। पैसे तुम्हारे होंगे यह मैं मान लेता हूं। इसकी मुझे चिन्ता भी नहीं है। परन्तु मैं यह मानता हूं कि कामकाजका बोझा तुम्हारी सहायताके बिना दूसरे लोग न उठा सकें तो ऐसे काम करने ही नहीं चाहिए। अगर ऐसी शक्ति दूसरोंमें भी आ जाये तभी काम शोभित होंगे। इसी कारण मैंने आर्यनायकमको कहलवाया था कि उसकी अपनी श्रद्धा और लगन

हो तो ही परिषद भरने दे। नहीं तो भले ही स्थगित हो जाय। यह कल्पना ही श्रीमन्की थी और श्रीमन्के ऊपर ही मैंने आधार रखा था। वह तन्दुरुस्त था तबतक मैं निश्चिन्त था। उसके बारेमें मैंने मान लिया था कि वह तो बीमार पड़ेगा ही नहीं। इस कारण जब उसकी बीमारीका सुना तो मैं व्याकुल हो गया। तुम्हारी श्रीमन्की खोजको मैंने अत्यंत आश्चर्यजनक माना है। उसमें विद्वत्ता, प्रौढ़ता और नम्रताका असाधारण मिश्रण है। उसकी गैरहाजिरीमें परिषद मुझे अटपटी लगेगी। परन्तु हाथमें लिये काम अधूरे नहीं रखे जाने चाहिए, इस न्यायसे और नायकमकी श्रद्धा कम न हो वहां तक और तुम्हारा विरोध न हो तो परिषद करनेका मैंने आग्रह रखा है। मैं मानता हूं कि तुम्हारा विरोध सही जगह पर होगा। क्योंकि तुम्हारी व्यवहार-बुद्धिके बारेमें मुझे श्रद्धा है। तुम्हारे बिना, तुम्हारे बंगलेके बिना, परिषदका काम सांगोपांग हो सकेगा या नहीं इसकी पूरी जानकारी तो तुमको ही होगी। इस कारण अगर तुम चाहते हो कि परिषद स्थगित रखनी चाहिए तो मुझे तुरन्त तारसे खबर देना; तो परिषद स्थगित कर दूंगा।

तुम्हारी तबीयत ठीक होगी। सावित्रीका ठीक चल रहा होगा।

[१२-१०-१९३७] बापूके आशीर्वाद

: २८३ :

चि. जमनालाल,

महादेवके नाम तुम्हारा पत्र देखा। तुम्हारी व्यथा समझ सकता हूं। मैं चाहता हूं कि मेरा कदम उस व्यथाको, थोड़े बहुत अंशमें भी, कम करनेमें सहायक बने। मैंने अखबारोंके लिए एक लेख लिख तो रखा है, पर अभी छपाया नहीं। तुम्हारी सूचना विचारणीय तो है ही। मेरे स्वभावके अनुकूल दूसरी वस्तु है। ऐसी बातें जब मैं प्रकट करता हूं, तभी मुझे अधिक शांति मिलती है। तुम्हारे पत्रमें जो भय प्रकट किया गया है वह व्यावहारिक चीज है। विचार पूर्वक और धर्म समझकर जो कदम मैं उठाऊं उस पर दृढ़ रहनेकी शक्ति मैं खो बैठा हूं ऐसा मुझे नहीं लगता। फिर भी छपानेकी जल्दी नहीं करूंगा। वह स्थगित रहा तो भी जो लोग गुजराती नहीं समझते उनके लिए तो गुजराती जैसा वक्तव्य अंग्रेजीमें होना ही चाहिए।

सावित्रीके पुत्र-जन्मके समाचार कल गोवर्धनदासके द्वारा मिल गये थे। लक्ष्मणप्रसादको पत्र लिख रहा हूं।

[११-६-१९३८] बापूके आशीर्वाद

: २८४ :

प्रिय जमनालालजी,

आपका पत्र बापूजीको पढ़ा दिया था। उनका उत्तर इसके साथ है। आपको अब यहांकी परिस्थितिसे वाकिफ कराता हूं। बापूके इस प्रस्तावका

मीराबहनको छोड़कर और सब स्त्रियोंने तीव्र विरोध किया है। राजकुमारीका विरोध तो सबसे अधिक तीव्र है। पुरुषोंमें सुरेन्द्रजी, बलवंतसिंहजी जैसोंने इसका स्वागत किया है। विरोधियोंमें मुझ जैसे हैं। मैंने तो अनेक कारणोंसे विरोध करके नीचे लिखे अनुसार सूचना की थी:

१. बापूको भी वह स्वतंत्रता नहीं लेनी चाहिए जो दूसरे नहीं ले सकते। अगर बापूका यह सिद्धान्त तत्वतः स्वीकार करें तो, बापूको अपने लिए तथा अपने तमाम साथियोंके लिए, बहनोंके तमाम व्यक्तिगत तथा एकांतिक स्पर्श निषिद्ध मानने चाहिए।

२. जाहिरा तौर पर भी प्रत्येक अनावश्यक स्पर्श निषिद्ध मानना चाहिए।

इसके जवाबमें बापूका कहना है कि नैष्ठिक ब्रह्मचारीके अलावा और सबके लिए ये दो नियम पर्याप्त हैं। पर जिसे नैष्ठिक ब्रह्मचर्यका पालन करना है उसके लिए तो स्पर्शमात्र वर्ज्य होना चाहिए। मैं यह चीज स्वीकार नहीं करता। पर यह तो मुझ जैसोंके क्षेत्रसे बाहरकी बात है। मैं तो इतना ही समझता हूं कि अनेक बहनें बापूके स्पर्शसे पवित्र हुई हैं और अपनी अनेक व्याधियोंमें बापूसे आश्वासन प्राप्त कर सकी हैं। बापूको इस सेवासे बहनोंको वंचित नहीं रखना चाहिए।

इस प्रस्तावको समझानेवाला लंबा लेख हरिजनके लिए पिछले हफ्ते बापूने लिखाया था; उसे मैंने जोरदार कारण बताकर रोक दिया था। इस हफ्ते भी उसको रोकनेकी पूरी आशा है। फिर तो जो हो सो ठीक।

आपके पत्रसे मैं जरा घबरा गया। बापू अमुक काम करें तो हमारा मार्ग सरल हो यह कहना मुझे कठिन लगा। जिसका जितना अधिकार उसका वैसा ही मार्ग। मैं समझता हूं कि मैंने ऊपर जो मर्यादायें बताई हैं उन सबको हम सब साथी स्वीकार करके बापूको निश्चिंत कर दें तो बापूको कोई नया प्रस्ताव करनेकी बात नहीं रहेगी। इस चीजकी जाहिरा चर्चा करनेमें मैं आज तो लाभके बजाय हानि ही अधिक देखता हूं। अधिक क्या लिखूं? सुशीला और प्यारेलाल दो दिन हुए यहां आये हैं। सुशीलाकी सेवा तो निषिद्ध नहीं मानी है। पर दूसरी बहनोंको यह खटकता है। वे पूछती हैं कि हम उसकी अपेक्षा क्या कम पवित्र हैं? इन सर्दीके दिनोंमें भी ब्लड प्रेशर १८०/१०८ रहता है। इसे चिन्ताजनक तो मानना ही चाहिए। पर इस तरहकी चर्चाओंमें जब चौबीसों घंटे लगे रहते हैं, तब ब्लड प्रेशर कम कैसे हो सकता है?

[१२-६-१९३८] आपका महादेव

: २९३ :

चि. जमनालाल,

अभी अंग्रेजीकी एक सुंदर उक्ति देखी थी। उसका अर्थ यह है कि मनुष्य को अपने दोषोंका चिन्तन न करके गुणोंका करना चाहिए। क्योंकि मनुष्य जैसा चिन्तन करता है वैसा बनता है। इसका अर्थ यह नहीं कि दोष देखे ही न। देखे तो जरूर लेकिन उनका विचार करके पागल न बने। ऐसा हमारे शास्त्रोंमें भी मिलता है। इस कारण तुमको आत्मविश्वास रखकर यह निश्चय करना चाहिए कि तुम्हारे हाथों कल्याण ही होनेवाला है। हुआ तो है ही।

तुम्हारे लिए अतिलोभ छोड़ना उचित है। व्यक्तिगत व्यापार परोपकारके लिए भी खत्म कर देना चाहिए। खत्म न कर सको तो कड़ी मर्यादा निश्चित करनी चाहिए। राजनैतिक क्षेत्रसे भी निकलनेका प्रयत्न करना चाहिए। अगर उसमें रहना ही पड़े और तुम अपनी ही शर्तों पर रह सकते हो तो केवल मध्यप्रान्तके संगठनका कार्य करो। पर तुम्हारा क्षेत्र तो पारमार्थिक व्यापार है। इसलिए तुम फिरसे चर्खा संघमें अपनी सारी शक्तिका उपयोग करो। यह काम तुम्हारी बुद्धि, तुम्हारी नीति और तुम्हारी व्यापार-शक्तिका पूरा उपयोग ले सकता है। राजनीतिमें बहुत गंदगी होती रहती है। उसके अन्दर तुमको सन्तोष मिले इसकी कम ही संभावना है। चर्खा-संघ पूर्ण सफल हो जाय तो सहज ही पूर्ण स्वराज मिल सकता है। इसमें तुम कूद पड़ो, तो ग्राम-उद्योग, अस्पृश्यता-निवारण आदिमें भी थोड़ा बहुत ध्यान दे सकते हो। लेकिन वह तो तुम्हारी इच्छाके अनुसार ही। यह तो अतिलोभको रोकनेके लिए और तुमको मनके मुताबिक पूरा काम मिल सके इसके लिए सूचित कर दिया है।

दूसरी वस्तु विकार है। यह जरा कठिन है। मैं अगर तुमको ठीक-ठीक समझा होऊं तो मैं यह समझता हूं कि तुमको स्त्री-परिचर्या रोकना उचित है। सब इसे पचा नहीं सकते। यह कह सकते हैं कि हमारे मंडलमें स्त्री-परिचर्या करनेवाला अधिकांशमें मैं अकेला हूं। मेरी सफलता या असफलताका निर्णय मेरी मृत्युके बाद ही निकल सकेगा। मेरे लिए तो यह प्रयोग ही है। मैं स्वयं भी दावेके साथ नहीं कह सकता कि मैं सफल ही हुआ हूं। मेरी कामना शुकदेवजीकी स्थितिको पहुंचनेकी है। उस स्थितिसे मैं कई योजन दूर हूं। अगर तुमको आत्मविश्वास हो तो मुझे कुछ कहना ही नहीं है। लेकिन अगर न हो और मेरा समझना ठीक हो तो तुमको गहरे उतरकर उचित परिवर्तन करना चाहिए। इसमें स्त्री-सेवा छोड़नेकी बात नहीं है।

इनमेंसे एक भी चीजकी प्रतिध्वनि तुम्हारे हृदयमें न हो तो कुछ करना नहीं है। विचारोंका आदान-प्रदान करना। निराशाको कहीं भी स्थान

नहीं है। तुम पतित नहीं हो, सत्यनिष्ठ हो। सत्यनिष्ठका पतन संभव ही नहीं।

२६-१२-१९३८] बापूके आशीर्वाद

: ३२४ :

चि. जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला था। तुम और ५० वर्ष पूरे करो और तुम्हारी शुभेच्छायें परिपूर्ण हों। निराश बिलकुल मत होना। शान्तिसे वहां तबीयत सुधारो। यहां ठीक चल रहा है। कमलनयन लंबी बातें कर गया था। रामकृष्णका मन अभ्यासमें लग गया मालूम होता है। ओम् मजे करती है। श्रीमन्का तो पूछना ही क्या! अपने कर्तव्यमें परायण रहता है। राजाजी आज आये हैं। एंडरूज यहीं हैं। आज डा. जाकिर हुसेन आ रहे हैं।

३-१२-१९३९] बापूके आशीर्वाद

: ३३१ :

चि. जमनालाल,

तुम्हारा पत्र और तार मिले। शास्त्रीजीसे बातें कीं।

तुम्हारी वहांकी मियाद पूरी होने तक जयपुर जानेकी बिलकुल जरूरत नहीं है। फिर मेरा दिल्लीका काम निबटा नहीं है, तब तक जानेकी कोई बात है ही नहीं। इसलिए १५ तक सहज ही पहुंच जाते हैं। फिर कितने दिन बाकी रहते हैं? तबीयत ठीक करना भी धर्म है यह समझना जरूरी है। तुम्हारा मसविदा ठीक नहीं मालूम होता। तुमको कोई फरियाद करनी हो तो वह महाराजासे ही करनी है। उसे बीचमें लानेमें कोई सार नहीं समझता। तुम जब घूमने-फिरने लग जाओगे तब उनसे खुद जाकर मिल सकते हो। फिर जो होना हो सो हो।

वाइसरायके साथ जितनी गहराईमें तुम चाहते हो उतना मैं नहीं जा सकता। मूल बातके साथ जितना मेल हो उतने तक ही मैं जा सकता हूं। तुम्हारे मिलनेके बारेमें मेरे दिल्लीसे लौटनेके बाद विचार करेंगे।

मैं समझता हूं कि इसमें सब उत्तर आ जाते हैं। बाकी शास्त्रीजी बतावेंगे। जानकीदेवी और मदालसा मजेमें होंगे।

१-२-१९४०] बापूके आशीर्वाद

: ३४४ :

चि. जमनालाल,

तुम्हारा जयपुरवाला आज ही पढ़ा। हरिजनके लिए लिखने बैठा पर विचार किया कि अभी न लिखूं। यह सोचकर छोड़ दिया कि लिखनेसे तुम अधिक निगाहमें चढ़ जाओगे। लेकिन तुम समझते हो कि मेरे लिखनेसे लाभ

ही होगा तो मैं लिखनेको तैयार हूं। तुम्हारी और राजेन्द्रबाबूकी तबीयत कैसी है? मैं शिमला जा रहा हूं। रविवार या सोमवारको सेवाग्राम लौटूंगा।

वहांका काम तुम्हारे संतोषके लायक चल रहा होगा।

२५-९-१९४०] बापूके आशीर्वाद

: ३४६ :

चि. जमनालाल,

मेरा जी तुममें ही लगा रहेगा। वहां इच्छित लाभ मिले तो मुझे बहुत शांति मिलेगी। अधिक आधार तो राजकुमारीके निर्मल प्रेमके ऊपर है। लेकिन तुम्हारी मानसिक दृढ़ताका भी भाग उसमें होगा ही। खानेमें या और किसीमें कुछ परिवर्तन करना हो तो मुझे लिखना या तार देना।

मदालसा आज मीराबहनके पास रह गई है। उसकी भावनायें तो बहुत ऊंची हैं। उसका शरीर ठीक हो जाय और प्रसूति निर्विघ्न हो जाय तो मैं मानता हूं कि वह जरूर चमकेगी। विनोबाका शिक्षण सफल होना चाहिए।

१६-७-१९४१] बापूके आशीर्वाद

: ३५९ :

चि. जमनालाल,

इसके साथ शांताका पत्र है। वहां पहुंचते-पहुंचते अक्षर अस्पष्ट हो जायें और न पढ़े जायें तो पढ़नेकी तकलीफ मत उठाना। उसका सार मैंने आज तारमें दिया है। शांताको इच्छा भी नहीं है और अनिच्छा भी नहीं है। वह तो तुम्हारे अंदर समा गई है। अर्थात् जो तुम्हारी इच्छा वह उसकी इच्छा। यह है भी ठीक। इस कारण प्रश्न केवल उसके हितका रहता है। तुम वहां बहुत अधिक समय रहनेवाले हो तो शांता वहां जाकर कुछ प्राप्त भी कर सकती है। मेरी निगाहमें तो उसे वहां तुम्हारी अनुपस्थितिमें रहना चाहिए। शायद उसे वहां रहनेकी जरूरत भी न हो। भक्ति तो उसमें है। अब यह विचारणीय है कि वहांका वातावरण उसे सक्रिय बनाता है या नहीं। वह इस जन्ममें तो दूसरा गुरू बनानेवाली है नहीं। उसके गुरू तो तुम ही हो, इस कारण तुमको तो उसे आज्ञा ही देनी है। इस पत्र-व्यवहारमें ही तुम्हारा वहां रहनेका समय पूरा हो जायगा। अगर तुमको वहां शांति मिलती हो और जो चाहते हो वह मिल जाता हो तो वहांसे हटना नहीं। अगर वहां रहनेका निश्चय करो या और कुछ तय करो, पर शांताकी वहां उपस्थिति चाहते हो तो तार देना, उसे रवाना कर दूंगा। तुम्हारे तारमें विचारके लिए अवकाश था। इस कारण ही तार भेजा और जवाब मंगाया। महेश और शांता दोनोंके विषयमें विचार करनेकी बात तो थी ही। मैंने ऐसा अर्थ किया

कि दोनोंको उनकी खातिर बुलाया गया है, तुम्हारी सेवाकी खातिर नहीं। अगर बुलानेका हेतु सेवा ही हो तो जुदा विचार करना उचित है।

आज सरदारके कोई खास समाचार नहीं हैं। कलका पत्र मिला होगा। मदालसा मजेमें है।

२५-८-१९४१] बापूके आशीर्वाद

: ३६८ :

चि. जमनालाल,

भाई जुगलकिशोरके पत्रके अनुसार उनसे चर्खा संघ द्वारा काम लेना। कांगड़ामें जितना हो सके उतना पैसा तो अवश्य खर्च करेंगे; यही बात पिलानीके बारेमें।

मेरे विचारसे तो ए.आई.सी.सी.की बैठक वर्धामें हो यही ठीक होगा। तुमको भी ठीक लगे तो तारसे निमंत्रण भेज देना। बैठक मेरे आनेकी तारीखके बाद और १९वीं तारीखसे पहले हो जानी चाहिए।

इंदु यहां आई है।

मदालसा ठीक होगी। बच्चा बराबर बढ़ रहा होगा।

मुझे चर्खा संघमें तुम्हारी अनुपस्थिति बहुत महसूस हुई और अब वर्किंग कमेटीमें भी मालूम होगी। पर तुमसे आग्रह न करनेमें ही मैंने श्रेय समझा है।

मेरी तबीयत ठीक रहती है। तुम्हारी ठीक होगी।

२७ जनवरीके बाद गो-सेवा-संघकी सभा रख सकते हैं।

जानकीमैया आ गई? तबीयत बिगाड़ी तो नहीं न?

२१-१२-१९४१] बापूके आशीर्वाद

: ३७९ :

चि. जानकीबहन,

ईश्वरकी कृपा होगी तो तुम्हारी खबर लेनेके लिए तीसरी तारीखको पहुंच रहा हूं। 'कृपा' तो भूलसे लिख गया। ईश्वरकी तो हमेशा कृपा ही होती है। हम उस कृपाको न पहचान सकें यह हमारी मूर्खता है। पर उसकी इच्छाके तो हम अपनी इच्छा या अनिच्छासे अधीन हैं ही। अर्थात् उसकी इच्छा होगी तो तीसरीको मिलेंगे। मदालसा और ओम् वहां होंगी यह ठीक है। सावित्रीकी अनुपस्थिति खलेगी। कमलाका तो कहना ही क्या? यह तो बहुत जंजाली है। अब और नाम भरने लगूंगा तो दूसरी स्लिप लेनी पड़ेगी और फिर वक्त?

३१-७-१९४४] बापूके आशीर्वाद

२. भाग २ के पत्रोंका अनुवाद

: ६ :

चि. राधाकिसन,

एक पत्र महिलाश्रमके विषयमें लिखा है वह मिला होगा। जमनालालसे मिलता रहता हूं। उनकी तबीयत ठीक रहती है। कल सुना कि लक्ष्मीनारायण मंदिरमें दर्शन करने आनेवालोंकी संख्या घट गई है। क्या यह ठीक है? हाजिरीका कोई हिसाब रखा जाता है? हरिजनोंके लिए खोले गये दूसरे मंदिरोंके विषयमें भी जानकारी ले लेना।

२८-१-१९३३] बापू

: १५ :

प्रिय रामेश्वरदासजी,

वंदे। एक भाईने गुड़के प्रथक्करणका व्योरा भेजा है वह इसके साथ भेजता हूं। पू. बापूजीने कहलाया है कि आप अपने विशेषज्ञसे पूछ देखें कि यह ठीक है या नहीं? उसका quantitative प्रथक्करण हुआ है या हो सकता है क्या? भिन्न-भिन्न प्रकारके नमूने प्राप्त करके उसका quantitative प्रथक्करण हो सकता हो तो निकालकर उसकी रिपोर्ट भेज सको तो ठीक।

इस संबंधमें देशी तथा मिलकी सबसे शुद्ध शक्करमें, इसी तरह, शुद्ध और अशुद्ध शक्करोंमें क्या अन्तर होता है यह भी जाननेकी इच्छा है।

शक्कर बनानेके बाद जो molasses (इसका देशी शब्द क्या है?) बच रहता है उसमें क्या पदार्थ रहते हैं?

Glucose और fructose बनानेकी कोई घरेलू या काम चलाऊ पद्धति है? उसके लिए क्या क्रिया करनी पड़ती है?

यदि ये सब बातें किन्हीं पुस्तकोंमें मिलती हों तो उनके नाम भी लिखें। आप कुशल होंगे। यहां सब मजेमें हैं।

६-१२-१९३४] तुम्हारा किशोरलालके वंदेमातरम्

: २० :

चि. कमलनयन,

तेरे अक्षर सुन्दर तो लगते हैं लेकिन स्पष्ट नहीं हैं। 'द' और 'ह' एक जैसे होते हैं। 'अच्छा' में 'अ' अधूरा है। और 'च्छा' में 'च' अलग पड़ गया है और 'ट' पढ़ा जाता है। 'छा' 'ध्य' पढ़ा जाता है।

: २८ :

चि. कमलनयन,

पिताजीका भेजा अंग्रेजी पत्र कल मिला और उसका जवाब भी भेज दिया। तेरा पत्र आज मिला।

मैंने यह सलाह दी है कि तुम्हें हिन्दीमें उत्तमा परीक्षा देनी चाहिए और अंग्रेजी पर अच्छा अधिकार प्राप्त कर लेना चाहिए। इस प्रकार तुम परिपक्व हो जाओ और अभ्यासी बन जाओ। उसके बाद फिर पश्चिमकी तरफ जाओ तो पूरा लाभ उठा सकोगे। जब जानेका समय आवे तो मेरी सिफारिश है कि पहले अमेरिका जाओ। उसके बाद इंग्लैंड और फिर यूरोपके दूसरे प्रदेश। अन्तमें जापान और चीन।

यह मुझे अच्छा लगता है कि तुम्हें परीक्षाका लोभ नहीं है। अमेरिकामें तुम एक साल रहकर सूक्ष्म अनुभव प्राप्त करो, अंग्रेजीका अभ्यास बढ़ाओ, और फिर दूसरी जगह इच्छानुसार रहो। सब मिलाकर बाहर दो वर्ष रहो। इस प्रकार तुम्हें खूब अनुभव मिल जायगा और अपना भविष्य बना सकोगे। इस विचारमें अनुभवके आधार पर जो परिवर्तन करना पड़े वह किया जा सकता है। मुख्य बात यह है कि तुरंत तो पश्चिमकी ओर जानेका विचार छोड़ना चाहिए। हिन्दी पूर्ण करने और अंग्रेजी पक्की करनेके लिए मैं चार वर्ष जरूरी समझता हूं। हिन्दीके लिए ही संस्कृत अभ्यासकी आवश्यकता भी जरूरी समझता हूं। चार वर्ष तक राह देखना मैं अधिक नहीं समझता। रामकृष्णको आशीर्वाद। उसे संभालते होगे।

फरवरी, १९३४] बापूके आशीर्वाद

: २९ :

चि. कमल,

१. कम बोलना।
२. सबकी सुनना लेकिन शुद्ध हो वही करना।
३. हर मिनिटका हिसाब रखना और जिस क्षणका काम उसी क्षण करना।
४. गरीबके समान रहना। धनका अभिमान कभी मत करना।
५. पाई-पाईका हिसाब रखना।
६. अभ्यास ध्यानपूर्वक करना।
७. इसी प्रकार कसरत करना।
८. मिताहारी रहना।
९. डायरी लिखना।
१०. बुद्धिकी तीव्रताकी अपेक्षा हृदयका बल करोड़ों गुना कीमती है, अतः उसका विकास करना। उसके विकासके लिए गीताका, तुलसीदासका मनन आवश्यक है। भजनावली रोज पढ़ना। प्रार्थना रोज दोनों समय करना।

११. अब सगाई की है तो तू खूंटेसे बंध गया है। मनको दूसरी स्त्रीकी तरफ कभी न जाने देना।

१२. मुझे अपने कार्यके हिसाबका एक पत्र हर हफ्ते लिखा करेगा तो तेरा कल्याण है।

३-६-१९३५ बापूके आशीर्वाद

: ३३ :

चि. कमलनयन,

पिताजीसे सुना कि * * अब तुमसे शादी नहीं करना चाहती, इस कारण कल उसे मुक्ति दे दी। हमें यही शोभा देता है। तुम स्वस्थ होगे। तेरे नसीब अच्छे ही हैं। इस कारण तुम्हें योग्य स्त्री ही मिलेगी। अभी तो तुम अपने अध्ययन और अपने चरित्रके गठनकी तरफ ही सब कुछ छोड़छाड़ कर लग जाओ। मुझे पत्र लिखना तो बाकी है ही। अपनी अंग्रेजीका सुधार करना। रसपूर्वक अध्ययन करना, शरीर मजबूत बनाना। मजदूरी करनेमें आलस्य मत करना। उसमें शरमकी तो बात ही क्या है?

१६-७-१९३५] बापूके आशीर्वाद

: ३९ :

चि. कमलनयन,

तुम्हारा पत्र देरीसे ही सही, पर मिला यह ठीक हुआ।

अरे रामजपन भी अचूक करेगा तो तेरा भला ही होगा।

वहां तू हाथ कागज इस्तेमाल नहीं कर सकता इसकी चिन्ता नहीं। इसके लिए तेरे अन्दर उत्साह और गरीबोंके प्रति अत्यन्त अनुकंपा होनी चाहिए। यह तुम्हारे स्वभावमें पैदा हो जाय तब अपने आप तुम यह सब कर लोगे। जो वस्तु तुम अपने मनके उत्साहसे करोगे वही ठीक है, वही तुम्हें फलेगी।

तुम वहां बैठे-बैठे ब्रिटिश और अन्य विदेशीके भेदमें मत पड़ना।

कपड़ेके बारेमें भी एक बात कह दूं। वहां खादीका आग्रह स्वेच्छासे नहीं रख सकते हो तो उसे छोड़ देना। जिसमें तुम्हें सुविधा हो वह पोशाक पहनना और जिसकी सुविधा हो उस कपड़ेकी बनाना। मैं समझता हूं कि इनमें तुम्हारे सारे प्रश्नोंका उत्तर आ जाता है।

अर्थात् विदेशी या मिलके कपड़ेका ओवरकोट पहन सकते हो। मोजे पहन सकते हो, कसरतका बनियान पहन सकते हो। ये सब चीजें हाथकी ही प्राप्त करनेका प्रयत्न करना बुरा नहीं है। लेकिन ऐसा न करो तो पाप नहीं माना जायगा।

वहां तुम्हारा मुख्य काम अपना अध्ययन पक्का करना है। निर्भयता, वीरता, दृढ़ता, उद्यम, उदारता, दया, प्रेम इन सबका विकास करना है।

सादगी और नम्रता बढ़ानी है। वहांके जीवनका निरीक्षण करना। क्षण-क्षणका सदुपयोग करना। डायरी लिखना।

तेरा पत्र लौटाता हूं।

कोई बात रह जाती हो तो पूछ लेना।

४-९-१९३५] बापूके आशीर्वाद

: ४० :

चि. कमलनयन,

इसके साथ तीन पत्र भेजता हूं। ये तीसका काम करेंगे। वुडब्रुक बरमिंघममें है। वह अच्छी संस्था है। उनके संपर्कमें जल्दी ही आ जाना। यह लिखते-लिखते लगा कि प्रोफेसर होरेस एलेक्जेंडरको भी पत्र भेजूं, अर्थात् चार पत्र हो गये। वे वुड़ब्रुकके हैं। मुझे नियमित रूपसे लिखना। सुनना सबकी लेकिन करना अपने मनकी और तुमसे जो आशायें बंधती जाती हैं उसके अनुसार ही। वहांके प्रलोभनोंकी सीमा नहीं है। अपना नाम शोभित करना और उसके गुण याद करके 'कमल'के समान कीचड़में रहकर भी अलिप्त रहना। इससे सब कुछ कुशल ही होगा। अपनी शक्तिके अनुसार ही डुबकियां लगाना। किसीकी प्रतिस्पर्धा मत करना। प्रत्येक क्षणका सदुपयोग करेगा तो तेरी शक्तियां जितनी विकसित होनी होगी, हो जायेंगी। रामायण और गीताका गहरा अभ्यास करना। रोज अध्ययन करना। मूल गीता तो पढ़ोगे ही, लेकिन एडविन अरनोल्डका 'Song Celestial' भी पास रखना।

६-७-१९३६] बापूके आशीर्वाद

: ४१ :

१. चार वर्ष, अथवा कमलनयनका अध्ययन पूरा हो तबतक, विवाह न करना।

२. सावित्रीको अब जो शिक्षा लेनी हो वह हिन्दुस्तानमें ही ले। विवाहके बाद दोनों प्रवासके लिए या और कोई कामसे जहां इच्छा हो जायें।

३. कमलनयन–सावित्रीके बीच पत्र-व्यवहारकी खुली छूट होनी चाहिए। पत्र खानगी होनेकी जरूरत नहीं समझता।

४. सावित्रीको विवाहसे पहले भी समय-समय पर वर्धा या जानकीबहन वगैरा जहां हों आते-जाते रहना चाहिए।

१९३६] बापू

: ४४ :

चि. कमलनयन,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम गहरे उतर रहे हो और यहां सब तुम्हें जल्दी बुलानेकी बात कर रहे हैं। तुम्हारे ससुर भी जल्दी मचा रहे हैं। जानकीबहनकी भी यही इच्छा है। पिताजीका भी लगभग यही अभिप्राय है। मैं खुद तटस्थ हूं। यद्यपि मैं नहीं मानता कि तुम वहांसे बहुत कुछ ले आनेवाले हो, परन्तु जबतक वहां रहनेका मोह हो तबतक तुम्हें यहां बुलाना मुझे ठीक नहीं लगता। अगर तुम्हें व्यापारमें लगना हो तो डिग्रीका मोह छोड़ना चाहिए। बैरिस्टर होकर क्या करोगे? ग्रेज्युएट होकर क्या करोगे? जहां तक मैं तुम्हें समझता हूं तुम्हें कमाई करनी है, पिताके धनपर नहीं रहना। साधू भी नहीं बनना है। यह ठीक हो तो व्यापारमें ही तुम्हारा पुरुषार्थ है। इतना स्वीकार करो तो तुम बैरिस्टरी अथवा डिग्रीका लोभ छोड़ो। तुम्हारी अंग्रेजी अब ठीक-ठीक हो जानी चाहिए। परन्तु अगर तुम्हें डिग्री लेनी ही हो, कैम्ब्रिज या ऑक्सफोर्डमें रहना हो, तो दीनबंधु एंडरूजसे मिलना। ऑक्सफोर्ड या कैम्ब्रिजमें मैं जिन्हें जानता हूं उन्हें एंडरूजके द्वारा ही पहचानता हूं। इसलिए तुम उनसे मिल लो। वह तुम्हारी उचित व्यवस्था करा देंगे। वे कैम्ब्रिजमें रहते हैं। उन्हें तो तुम पहचानते ही हो। फिर भी मैं उनको लिखता हूं। इसलिए जब तुम उनको लिखोगे तब उन्हें याद आ जायेगी। उनका पता पेमब्रोक कालेज, मास्टर्स लॉज, कैम्ब्रिज है। जो कुछ करो पूर्ण विचार करके करना। मुझे लिखते रहना। लिखनेमें तुम कुछ आलस्य करते मालूम होते हो।

२६-२-१९३७]　　　　बापूके आशीर्वाद

: ४५ :

चि. कमलनयन,

मैं जाऊं तब तक तुम यहां नहीं पहुंचोगे ऐसा समझ कर यह पत्र लिख रहा हूं। तुम्हें मालूम होना चाहिए कि नागपुर बैंक जमनालालजीकी है, उन्होंने इसे परोपकारके लिए खोली थी। गरीबोंके लिए यह सेविंग्स बैंक बन सके, यह उनकी कल्पना थी और आज भी यही होनी चाहिए। इसलिए यह बैंक टूटनी नहीं चाहिए। यानी बैंक ऑफ इंग्लैंड, इम्पीरियल बैंक जब टूटे और यहां कोई उल्कापात हो तो ही नागपुर बैंक टूटे, अर्थात् वह अन्तमें टूटे शुरूमें नहीं। उसकी ऐसी साख बन जानी चाहिए। तुम जमनालालजीके वारिस हो। उसका सच्चा अर्थ तो यही है कि तुम उस साखके वारिस हो और यह समझकर ही मैंने जलियांवाला ट्रस्टको सलाह दी कि वहांके पैसे वहीं रखें और अधिक भेजनेकी चेष्टा करें। यही सलाह मैंने कुमारप्पाको दी है कि ग्रामोद्योगके पैसे वहीं रखे। यह विश्वास गलत साबित नहीं होना

चाहिए। फिर भी कल आते ही स्टेशनके ऊपर मुझे भारतनने दूसरी ही बात बताई। उसने तो प्रेमपूर्वक बात की और मैं उसका प्रमुख हूं इस हैसियतसे उसने पूछा। कुमारप्पाने मुझे पूछा था कि * * बैंकमें ग्रामोद्योगके पैसे रखें या नहीं? वैकुंठभाईने यह सलाह दी थी इसलिए उन्होंने यह मान लिया था कि मैं स्वीकार कर ही लूंगा। परन्तु मैंने तो शंका उठाई और स्वीकार नहीं किया। और कुमारप्पा उस बैंकमें पैसे जमा करा चुके थे। लेकिन अब वहांसे पैसे वापस निकाल ही लेने चाहिए। पर उस हालतमें ब्याज खोना पड़ेगा। ब्याज खोते हुए भी न निकाल सकें तो? इसलिए भारतनने मेरी सलाह मांगी। कुमारप्पा अभी यहां नहीं हैं। परन्तु मैंने कहा कि अगर वे लोग आपत्ति करें तो झगड़ा करके भी पैसे निकाल ही लेने चाहिए। नहीं तो मैं मानूंगा कि वह रकम जोखिममें है। और यह बाघरीके लिए भैंसको मारने जैसा होगा। * * बैंककी स्थिति क्या है, यह तो मैं आज भी ठीकसे नहीं जानता। अस्पष्ट खयाल जरूर है। नई बैंकोंके प्रति मेरे मनमें अरुचि और अविश्वास है। इसलिए जल्दीसे उनमें पैसा रखनेके लिए मैं तैयार होता ही नहीं। फिर सवाल यह पैदा हुआ कि * * बैंकमें नहीं रखते तो नागपुर बैंकमें क्यों? अपेक्षाकृत वह भी नई ही कहलायेगी न? यह भी एक प्रकारसे सच ही है और भारतनने साथ ही यह भी कहा कि नागपुर बैंकके तो एक दो महीनेमें ही बंद होनेकी बात सुनी जा रही है। कारण कि उसे नुकसान हुआ है और लोगोंके पैसे डूबनेका अन्देशा है; इसलिए पहलेसे ही क्यों न निपटा लें। मैंने यह बात नहीं मानी और मनमें दृढ़ रहा। पर इस अफवाहका मूल जाननेकी इच्छा हुई। उस समय राधाकृष्ण पास था। उससे मैंने पूछा। उसने मुझे समझाया। मुझे धीरज आई और मैंने भारतनसे कहा कि पैसे नागपुर बैंकमें ही रखने हैं। फिर भी मुझे लगा कि मुझे तुमको यह बात बतानी चाहिए इसलिए यह पत्र लिखा है। तुम विचार करना और सावधान रहना। जमनालालका वारिस होना कोई ऐसी वैसी बात नहीं है। तुम उनके पुत्रके तौरसे वारिस हो। मैं उनके दत्तक यानी माने हुए पिताके रूपमें वारिस हूं। मेरा स्वार्थ, उनका नाम अखंडित रहे इसमें है। उनका उठाया हुआ काम किसी प्रकार चलता रहे, इतना ही नहीं, परन्तु अधिक शोभित हो तभी तुम और मैं उनके सच्चे वारिस माने जायेंगे।

तुम पैसे कमाओगे और बड़े सेठ माने जाओगे यह संभव है। परन्तु उनके उत्तर जीवनके पारमार्थिक कामका क्या होगा, उत्तर जीवनमें खोली गई बैंकका क्या होगा? गरीब गायका क्या, खादीका क्या, ग्रामोद्योगका क्या? उनकी इच्छासे मैं वर्धामें आकर बसा हूं सो—वह भी सरदारका मीठा क्रोध सहकर। वे मुझे एककी जगह दस बगीचे बिना परिश्रमके दिला सकते थे। लेकिन वे जमनालाल नहीं दिला सकते थे। इसलिए मैंने इस

बगीचे छोड़ दिये। परन्तु अब मैं जमनालालको खो बैठा हूं, ऐसा जरा भी आभास अपने मनमें नहीं होने देना चाहता। उसकी कुंजी तुम्हारे हाथमें है, राधाकृष्णके हाथमें है, और जानकीदेवीके हाथमें है। जानकीदेवी तो निरक्षर हैं। और उनसे जिस विकासकी मैंने आशा रखी थी वह तो जमनालालजीके जानेके बाद सूख ही गई। इस कारण बैंकके संबंधमें मैं उसे समझा भी नहीं सकता। समझानेकी जरा कोशिश भी नहीं की। राधाकृष्ण बहुत चतुर है। वह गुना है परन्तु पढ़ा-लिखा तो नहीं ही कहलायेगा न? तुम तो विलायत हो आये हो। व्यापारीके रूपमें थोड़ा बहुत नाम भी कमाया है। तुम्हारे अन्दर आत्मविश्वास तो आवश्यकतासे अधिक है। जो भी हो वारिसके तौर पर और गद्दीनशीन होनेकी हैसियतसे तो मुझे तुम्हारी ओर ही देखना होगा। इसलिए कहता हूं कि तुम अपने पिताका नाम परोपकारीके रूपमें उज्वल करनेके लिए मर मिटना। ऐसा करनेकी शक्ति तुम अपनेमें न समझते हो तो नम्रतापूर्वक मुझे चेतावनी दे देना। सब लड़के अपने परोपकारी पिताके पीछे पीछे भला कहां चल सकते या चलते भी हैं? इस कारण तुम यह न करो तो कोई तुम्हारी ओर उंगली नहीं उठा सकता। फिर मैं तो उंगली उठानेवाला कौन होता हूं? परन्तु दादाकी हैसियतसे तुझे सलाह तो दूं, चेतावनी तो दूं। फिर तुम जो कुछ करोगे उसे चुपचाप स्वीकार कर लूंगा। इसमें तो मैंने तुमको बहुत कुछ लिख दिया है। उस पर पुख्ता विचार करना। और नागपुर बैंकके संबंधमें मैंने भारतनको जो सलाह दी है वह ठीक है या नहीं, इसका जवाब तो मुझे पहुंचा ही देना।

२२-११-१९४५] बापूके आशीर्वाद

: ८५ :

चि. मदालसा,

अभिमान खराब अर्थमें प्रयुक्त होता है, स्वाभिमान अच्छे अर्थमें। तुम बड़े आदमीकी लड़की हो यह समझकर फूल जाओ तो तुम अभिमानी कहलाओगी। परन्तु कोई तुम्हारा अपमान करे और उससे तुम डरो नहीं तो यह माना जायगा कि तुमने अपने स्वाभिमान या स्वमानकी रक्षा की। ओम् पत्र क्यों नहीं लिखती?

कमला तो लिखेगी ही क्यों?

बाबू अब तो बहुत बड़ा हो गया होगा। अभी भी उसे मिठाई बहुत चाहिए क्या?

पत्र लिखनेमें आलस्य न करना। बालकृष्णसे लिखनेको कहना।

१७-७-१९३२] बापू

: ८६ :

चि. मदालसा,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम भले ही मानो कि तुम्हारे अंदर ईर्षा, अभिमान वगैरा भरे पड़े हैं, पर मैं नहीं मानता। ये दोष तुमने कहांसे लिये होंगे? जमनालालमें तो ये हैं ही नहीं, जानकीबहनमें भी नहीं हैं। न तुमको कोई कुसंग हुआ, न तुम्हें किसी प्रकारकी कोई कमी है। क्रोध है यह तो मैं भी देखता था। वह जानकीबहनमें भी है। फिर तुम्हारा शरीर भी कमजोर है। लेकिन तुम समझदार हो, इस कारण विचारपूर्वक इस क्रोधको निकाल डालो। जैसे हम हैं वैसे ही सब हैं। सबमें एक ही जीव आत्मा है। इसलिए किसी और पर क्रोध करना अपने ऊपर ही क्रोध करनेके समान है। और जिसके अन्दर जीवमात्रकी सेवा-वृत्तिकी लगन पैदा होती है उसमें दोष रह ही नहीं सकते। तुम अपनी सेवा-वृत्ति बढ़ाना।

मुझे नियमित रूपसे लिखो तो ठीक।

२०-८-१९३२] बापूके आशीर्वाद

: ८७ :

चि. मदालसा,

तुम्हारे अक्षर तो बहुत सुधरते जा रहे हैं। तुम्हारा अभ्यासक्रम भी अच्छा है। शक्तिसे ज्यादा मेहनत मत करना। शरीर बिगाड़कर अध्ययन करनेसे दोनों बिगड़ेंगे। यह तुम जानती हो कि क्रोध बुरा है, अतः धीरे-धीरे वह निकल ही जायगा। इसी प्रकार अभिमानका समझो। चलते-फिरते रोना आ जाता है। यह कमजोरीका लक्षण है। तुम अगर खेल कूदमें लग जाओ तो रोना बंद हो जायगा। जरा भी रोने जैसा मालूम हो कि ऊंचे स्वरसे गीतापाठ करने लग जाओ तो रोना सूझेगा ही नहीं। यह करके देखना।

तुम कैसे कहती हो कि मंदिरमें रातदिन कोई नहीं रहता? मंदिरके पुजारी तो रहते ही हैं।

२२-११-१९३२] बापूके आशीर्वाद

: ८८ :

चि. मदालसा,

मालूम होता है कि तुम्हारी गाड़ी ठीक चल रही है। यही क्रम रहा तो थोड़े ही समयमें तुम्हारा [illegible]। जो खुराक लेती हो वह हजम हो जाती हो तो ठीक है।

जो प्रश्न तुम्हारे मनमें उठते हैं वे सब जिज्ञासुको उठते हैं। वाचन और विचारसे ये हल हो जाते हैं। जगत हम ही हैं। हम उसके अंदर हैं, वह हमारे अंदर है। ईश्वर भी हमारे अंदर है। हमारे अंदर हवा भरी हुई है, यह हम

आंखोंसे तो नहीं देखते, लेकिन उसे जाननेकी इन्द्रिय हमारे पास है। ईश्वरको जाननेकी इंद्रियका विकास किया जा सकता है। उसका विकास करलें तो उसे भी पहचान लेंगे। यह तुम्हें विनोबा सिखा रहे हैं। धीरज रखना।

जानकीमैयासे कहना कि जमनालालसे अकसर मिलता हूं। तबीयत अच्छी है।

११-१-१९३३] बापू

: ९० :

चि. मदालसा,

तुम्हारा पत्र मिला। यह डर नहीं रखना चाहिए कि विनोबाके लिए तुम भाररूप हो जाओगी। शिक्षकका कार्य है कि वह शिष्यकी अपूर्णताओंको दूर करे। अगर तुम संपूर्ण होती तो तुम्हें शिक्षककी मददकी क्या जरूरत रहती?

बाल काट डालनेका इतना डर क्यों? बाल तो घासके समान उगते ही रहते हैं। यह मैंने देखा है कि बहुतसी लड़कियोंके बाल काट डाले और बादमें वे पहलेसे भी ज्यादा लंबे हो गये। इस कारण बालोंका मोह न हो तो उनको काट डालो। पोशाकमें चड्डीके अलावा और कोई दूसरा परिवर्तन करनेकी जरूरत नहीं। तुम्हारे समान बालिकाका पोशाक सहज ही सहूलियत-वाला बनाया जा सकता है। पर अब तो हम थोड़े समयमें ही मिलेंगे।

९-९-१९३३] बापूके आशीर्वाद

: ९९ :

चि. मदालसा,

तुमने छोटा पर सुन्दर पत्र लिखा है। जानकीबहनका भय छोड़ दिया, यह ठीक किया। खूब आनन्दमें रहकर अपना शरीर अच्छा बनाना। श्रीमन् जैसा पति पाकर तुम्हें उनको और जमनालालको शोभित करना है। अनेक पुण्य करने पर ही श्रीमन् जैसा पति मिलता है। ईश्वर तुम्हें जल्दी अच्छा करे।

३-१२-१९३९] बापूके आशीर्वाद

: १०८ :

चि. मदालसा,

तेरे बारेमें सोचता ही रहता हूं इस कारण मुझे, जिसे कि सपने शायद ही कभी आते हैं, तुम्हारे बारेमें आया। इस वजहसे लिखनेको प्रेरित हुआ हूं। सपना तीन दिन पहले आया। पर लिखनेका समय आज ही मिला है।

बालकको पेटमें रखते हुए जितनी सावधानी रखनी पड़ती है उतनी ही उसका पालन-पोषण करनेमें। तुम्हारे दूधका गुण तुम्हारी खुराक और तुम्हारे रहन-सहनके ऊपर आधारित है। जैसे तुम्हारी खुराकका असर तुम्हारे दूध पर पड़ता है उसी प्रकार तुम्हारे स्वभाव और विचारका भी। यह बात

अनुभवसे लिखता हूं इसलिए इसे मानना। अतः जो कुछ तुम खाओ औषधि समझकर खाना। स्वादके लिए नहीं। औषधिमेंसे जो स्वाद निकलता है वह सच्चा स्वाद है और पोषक है। औषधिको रूढ़ अर्थमें लेकर उसकी घिन न रखना। दूध औषधिके रूपमें लिया जा सकता है और स्वादके लिए भी। एकसे शरीर बढ़ता है, दूसरेसे घटता है। बालकको कसरत, हवा, मालिश वगैरा बराबर मिलनी चाहिए। इस संबंधमें किसीकी बात न सुनना। लाड़-प्यार करनेवाले तो बहुत आ जायेंगे, लेकिन कुछ भी हो तुम अपने मनके मुताबिक करती रहना।

मेरे सपनेका मतलब पूरा हुआ। तुम मजेमें होगी। बालक बढ़ रहा होगा। मां बेटी झगड़ती नहीं होंगी, तुम रोती भी नहीं होगी। खटिया छोड़नेके बाद तुम कुछ महीने यहां रह जाओ तो शायद अच्छा हो।

१५-१०-१९४१] बापूके आशीर्वाद

: १११ :

चि. मदु,

तू पागल है और पागल ही रहेगी क्या? जल्दीसे जल्दी यहां आ जा। रहनेके लिए नहीं पर मिलनेके लिए तो सही। फिर जितना तुम्हारे दिलमें हो सब उंडेल देना और जी भरकर रो लेना। तुम्हें रोनेका इतना सुन्दर मौका दे रहा हूं इसलिए वहां रोना बंद रखना। बाकी जो नियम बताये हैं उनका पालन करती रहना तो सदा सुखी रहेगी।

तुम दोनोंको

२१-११-१९४१] बापूके आशीर्वाद

: ११५ :

चि. मदालसा,

सुरेन्द्रनारायणकी बात जानकर दुख हुआ। अभी तो सादी खुराक ही ले रहे होंगे। दूध, दही, फलोंका रस, सब्जीका रस, खा सकते हैं। बीज या छिलके पेटमें न जायं। पेडूपर मिट्टीकी पट्टी लाभ करेगी। कराहना नहीं चाहिए। बिना जोर लगाये दस्त न आता हो तो हलकी पिचकारी लें। मौका मिलते ही बंबई जाना चाहिए। वहां जाने पर डाक्टर लोग जो कहें वही करना चाहिए। ऐसा भी हो सकता है कि मेरे बताये अनुसार खुराक वगैरा लेनेसे अगर केवल सूजन होगी तो दर्द शायद कम भी हो जाय। रोटी खूब चबाकर ले सकते हैं। दाल छोड़नी चाहिए। जोर डालने वाले व्यायाम न करें। कटि-स्नान बहुत लाभ करेगा। घर्षण-स्नान भी।

बच्चेको कोई दवाई मत खिलाना। उसे सब्जीका पानी, फलोंका रस, दवारूप होगा। कसरत तो करे ही। शेष यहां आने पर। श्रीमन् इलाहाबाद जावें और सब निबटा आवें।

१५-६-१९४२] बापूके आशीर्वाद

: १२१ :

चि. पगली मदालसा,

तेरा पत्र मिला। अब श्रीमन्‌जी आ गये हैं तो अब जो वे कहें सो करना। तुम्हारे सलाहकार बहुत हैं। यह खराब है। जिसपर भरोसा बैठे, उसीकी बात सुनो और उसीके अनुसार चलो। दूसरेकी बात सुनो ही मत। और कोई करने आवे तो कान बंद कर लो। तब तुम सपाटेसे ठीक हो जाओगी। चिन्ता तो करो ही मत। बालकको जन्म दिया है तो अब उसका अच्छी तरह पालन-पोषण करना ही है। उसके खातिर ही सही, पागल मिटकर ज्ञानी न हो सको तो भी, समझदार बनो तो काफी है।

२३-११-१९४५] बापूके आशीर्वाद

: १२४ :

चि. मदु,

तुझ पर दया आती है और झुंझलाहट भी। दया आने जैसी बातें तुमने कीं। झुंझलाहट इसलिए कि इतने दिनों तक तुमने उन्हें अपने मनमें दबा रखा।

हम दूसरोंके दोष न देखें, अपने ही देखें, इसीसे जीवन सुखी होता है और हम स्वच्छ रहते हैं। मैंने तुमको कहा है कि तुम्हें कोई ऐसा काम खोज लेना चाहिए जिसमें तुम्हें अपने बारेमें सोचने-विचारनेका मौका ही न मिले। ऐसा काम महिलाश्रम तो था ही। वह ठीक जमा नहीं। तो अब तुमको अकेले या किसी खास व्यक्तिके साथ अन्य सेवाकार्य खोज निकालना चाहिए। कोई न सूझे तो चर्खेकी सारी क्रियाओंका ज्ञान प्राप्त करलेना चाहिए। नैसर्गिक उपचारकी पुस्तकें पढ़ जानी चाहिए। गुजरातीमें हैं। हिन्दीमें भी हैं।

मुझे हर मंगलवारको जरूर लिखो। और विस्तारसे लिखो। गुस्सा तो किसी पर करना नहीं चाहिए, अपने खुदके ऊपर भी नहीं। भजन ऊंचे स्वरसे गाना सीख लेना।

२४-८-१९४६] बापूके आशीर्वाद

: १२६ :

चि. मदु,

तुम्हारा पत्र मिला।

तुम अपने दोष और दूसरोंके गुण ही देखोगी तो सपाटेसे आगे बढ़ोगी और सुख अनुभव करोगी। दुःख जैसी कोई बात नहीं मालूम होगी। हमें

किसीसे कोई आशा रखनेका अधिकार नहीं है। हम देनदार हैं इसी कारण जन्म लेते हैं। लेनदार तो हैं ही नहीं। यह बात अगर तुम्हारी समझमें आ जाय तो सारा जगत तुम्हें सरल मालूम होगा। यह ज्ञानवार्ता नहीं है, परन्तु जीवन-प्रवाह सरलतासे बहानेका सही मार्ग है।

रसगुल्लोंको बहुत-बहुत प्यार।

११-९-१९४६] बापूके आशीर्वाद

: १२९ :

चि. मदु,

मैं यह चाहता हूं कि तुम अपनी प्रतिज्ञा न तोड़ो। कामसे फुरसत न मिले तो खाली पोस्टकार्ड ही डालो।

रजत अच्छा हो गया यह ईश्वरकी कृपा।

पति-पत्निमें गाढ़ मित्रोंके समान प्रेम हो और वह सर्वथा निर्विकार हो। वे सुख-दुःखके साथी हों। दोनोंमें एक दूसरेको सहन करनेकी शक्ति होनी चाहिए। एक दूसरेके प्रति उदारता होनी चाहिए। दोनोंके बीच पूर्ण स्वच्छता होनी चाहिए। वहम कभी नहीं, एक दूसरेसे कोई छिपाव नहीं।

मैं समझता हूं कि इतना काफी है। दृष्टांत जब मिलें तब पूछना।

तुम सबको

१६-१०-१९४६] बापूके आशीर्वाद

: १३१ :

चि. मदु,

तुम्हारे पत्र अनियमित हो गये हैं। वे तुम्हारी अनियमितताके प्रतीक तो नहीं हैं न? जो हो, तुम आनंद करो और शांत-चित्त होओ। तुम्हें और रामको यहां आने देना अच्छा तो लगता है, पर इसे गलत प्रलोभन मानता हूं। अखबारोंमें जो आता है उसमें कमसे कम ५० फीसदी कम करके पढ़ोगी तो यहांकी हालत कुछ समझ सकोगी। 'दूरके ढोल सुहावने' वाली कहावत सुनी है ना? और जहां रोज गांव बदलने पड़ते हों वहां तो तमाशबीन लोग भी भाररूप मालूम होते हैं। बहुतोंको इन्कार करता हूं। तो तुम दोको कैसे इजाजत दूं? मैं जानता हूं कि तुम लोग किसी भी प्रकार भाररूप नहीं बनोगे। फिर भी संयमका पालन करो। वहां बैठे-बैठे जो सेवा कार्य तुम करोगे, यहांके यज्ञमें उतने अंशोंमें तुमने भाग लिया है, यह मान लूंगा। बच्चोंको संभालना। अपना शरीर ठीक रखना। राम मजेमें होगा। उसने अपने बारेमें कुछ निर्णय किया क्या?

२६-१-१९४७] बापूके आशीर्वाद

: १३३ :

चि. मदालसा,

तुम्हारा पत्र मिला। तुमने तो मुझसे पत्र नहीं चाहा था। परन्तु मैं तो लिखूंगा क्योंकि अभी तुम बहुत प्रपंचमें पड़ी हो। * * * * * * तुम्हें श्रीमन्में समा जाना चाहिए। मैंने तो देखा है कि श्रीमन् तुम्हारी पूजा करता है। तुम उसे पूजती हो, परन्तु श्रीमन्के पास जो ज्ञान है वह तुममें नहीं। वासन्तीको सबकुछ कहो इसमें मैं कोई दोष नहीं देखता। वह समझदार है। परन्तु मैं यह नहीं मानता कि वासन्तीमें इतनी शक्ति है कि वह तुम्हें रास्ता दिखा सके। तुम्हारा सुख श्रीमन्के अन्दर समा जानेमें ही है, इस बारेमें मुझे शंका नहीं है। अगर तुम ज्ञानी होती तो मैं कहता कि श्रीमन्के साथ लड़ना। तुम यह मानती हो कि ऐसा ज्ञान तुम्हारे अन्दर नहीं है। अगर यह बात तुम्हारी समझमें आ जाय तो मैं जो कहता हूं उसका पूरा अनुभव करना। अगर जरासी भी शंका हो तो विनोबाको यह पत्र बताना। वह जैसा कहें वैसा करना। फिर भी विनोबाको तो यह पत्र बता ही देना। वासन्तीको भी दिखाना। रामकी सगाईके बारेमें समझा। इस संबंधमें मैंने अधिक ध्यान नहीं दिया। दोनों सुखी हों और शुद्ध सेवा करके पिताजीके नामकी उज्वलतामें वृद्धि करें, यही मेरी कामना है। रामको इतना कह देना।

तुम्हारा दूसरा पत्र मिल गया।

१५-२-१९४७] बापूके आशीर्वाद

: १३५ :

चि. मदालसा,

तुम्हारा पत्र मिला। श्रीमन् १२ तारीखको यहां आ रहे हैं। अब मैं हरिजनके लिए लिखने लगा हूं इसलिए अपनी उलझनें उसके द्वारा सुलझा लेना। तुम्हारा कथन मैं ठीक-ठीक समझ न सका। मेरे किसी लेख या आचरणमेंसे छिटक जानेका बहाना मत खोजना। जहां कठिनाई हो उसे दूर करना चाहिए। मेरे लेखमें स्वच्छंदताको स्थान होता ही नहीं। मेरा जीवन संयमके लिए है। यह हो सकता है कि मैं उसमें पार न उतरूं परन्तु मैं स्वेच्छाचारके लिए दरवाजे कभी नहीं खोजूंगा ऐसा मुझे विश्वास है।

९-६-१९४७] बापूके आशीर्वाद

: १४३ :

चि. ओम्,

चाहे जैसे अक्षर बनाकर केवल वचनका पालन करनेकी खातिर बेगार टालनेको तुम पत्र लिखो, तो मुझे तुम्हारे पत्र नहीं चाहिए। वचनका पालन

करो तो मन और कर्मसे। मनमें तो पालन करनेकी चोरी हो और कर्म पालन करनेका पुण्य प्राप्त करो यह असंभव बात है। मुझे यह जरा भी पसंद नहीं। मैंने क्या यह नहीं सिखाया कि जो करो वह ठीकसे करो और सुन्दरतासे करो? छोटे या बड़े किसी काममें बेगार न टालो।

एक पल भी व्यर्थ न जाने दो।

२०-८-१९३४] बापूके आशीर्वाद

: १४६ :

चि. ओम्

तू जबर्दस्त है। मालूम होता है कि मारवाड़ी तो अच्छा लिख लेती है। मारवाड़ीमें और गुजरातीमें बहुत फर्क नहीं है। कोई तो कहते हैं कि गुजराती मारवाड़ीमेंसे ही निकली है और अब तो वह मारवाड़ीसे भी चढ़ जाती है। इसी कारण तुमने मुझे 'दत्तक बाप' बनाया है न? यहां मदालसा खड़ी खड़ी तुम्हारी टीका कर रही है कि तुमने मारवाड़ी शुद्ध नहीं लिखी। लेकिन जैसा परीक्षक होगा वैसी ही परीक्षा होगी न? और फिर मदालसी कहांसे मारवाड़ी शिक्षिका या परीक्षिका बन गई? इस कारण तुम मारवाड़ीमें पास हो।

२९-८-१९३४] बापूके आशीर्वाद

: १४७ :

चि. पंडिता ओम्,

इस बारके पत्रमें तो तुमने अच्छा बोध दिया है। पर अपने बोधके अनुसार तुम खुद चलती भी हो? अगर मैं आराम न करता होऊं, जतन न करता होऊं तो हर रोज आधे पौण्डके हिसाबसे कैसे बढ़ सकता हूं? तुमने मुझे जिस तरह काम करते देखा है उससे आजकी तुलना करोगी तो तुम मुझे आलसी और अधिक सोनेवाला मानोगी। अच्छा ही है न कि तुम वहां बैठी-बैठी हैंगिंग गार्डनमें चक्कर काटती हो और शेखी बघार रही हो और बदलेमें काकाजीकी थोड़ी सेवा कर लेती हो! हैंगिंग गार्डनकी कथा तुम जानती हो? मेरा अभिप्राय यह है कि हमारे जैसे गरीबोंके घूमने जानेकी जगह वह नहीं है। वहां तो फक्कड़ लोग जाते हैं। अगर अब तुम जाओ तो देखना और मुझे लिखना कि कितने गरीब लोगोंको तुमने वहां देखा। मैं तो वहां एक या दो बार जाकर तृप्त हो गया।

भले मेरे पास तुमने अपना ज्ञान उंडेला। दत्तक बापके ऐसे ही हाल होते हैं! पर काकाजीको तो नहीं भड़काया न?

तुम्हारे लिखनेमें भूल है। काकाजीका वजन १०४ बताती है! उसको तो मैं शायद चार दिनमें ही लांघ जाऊंगा। २०४ से तो तुम्हारा मतलब नहीं है? रामायण पढ़ती है?

२-९-१९३४] बापूके आशीर्वाद

: १४९ :

चि. ओम्,

तेरे पत्रकी आशा रखना व्यर्थ है। मैंने तुम्हें लिखा नहीं पर तुम्हारी याद मुझे बराबर रहती ही है। इस बारका तुम्हारा आचरण मुझे जरा भी अच्छा नहीं लगा। तेरा पत्र भी अच्छा नहीं लगा। उसमें गलत बचाव था। मेरे साथ इतने महीने घूमनेके बाद तुमने क्या सीखा? इसका हिसाब लगायेगी? मुझे लिखेगी? कांग्रेसके समयमें एक सिरेसे दूसरे सिरे तक जाते हुए तुम मुझे दिखाई दीं। उस दिनका तुम्हारा वह पहनाव? मेरे दुख और क्रोधका पार न था। अपने दिये हुए वचनका तू पालन करना। कृत्रिम कभी मत बनना। जैसी हो वैसी ही दिखना। तेरी सगाईकी बातें चल रही हैं। उस बारेमें स्वतंत्रतासे अपने विचार बताना। सच्ची रहना, सच्चा विचारना, सच्चा बोलना। यदि यह तुम्हारी शक्तिके बाहर हो तो मेरा त्याग करना।

साफ अक्षरोंमें लिखे तुम्हारे सविस्तर पत्रकी राह देखूंगा।

७-११-१९३४] बापूके आशीर्वाद

: १५१ :

चि. ओम्,

यह खाते-खाते लिख रहा हूं इस कारण पेंसिलसे। खाते हुए लिखना कुटेव है। पेंसिलसे लिखना भी कुटेव है। इसकी नकल मत करना।

अभी भी तेरा कान दुखता लगता है। तुझे बंबई जाना चाहिये।

तार देनेकी सोचता हूं। मदालसाके भी हाल लिखना।

बापूके आशीर्वाद

: १५२ :

चि. ओम्,

बहुत दिनों राह देखनेके बाद तुम्हारा पत्र आया सही। तुझे उलहना थोड़े ही दिया जा सकता है! जितना तुम दोगी उतना स्वीकार कर लेता हूं। उतनेसे आनंद मानना चाहिये। अंबुजम्मा भी तेरी बार-बार खबर देती हैं। वहां तुझे अच्छा अनुभव मिल रहा है। उससे पूरा-पूरा लाभ उठाना। अंग्रेजी तो अच्छी करेगी ही। वहांका संगीत भी बहुत ही अच्छा माना जाता है। उसे अच्छी तरह सीख लेना। तामिल तो सीखेगी ही ऐसी आशा है। और यह भी आशा रखता हूं कि वहां हिन्दीका प्रचार भी करेगी। चरबी भी कम करना। संक्षेपमें इतना ही कि इतनी दूर जाकर बैठी हो और एक अक्षरका इतना बड़ा नाम रखा है, उसको शोभित करना। जिसके नामसे कल्याण होता है, ऐसा शास्त्र कहते हैं, वह नाम लेकर तुम बैठी हो, तो उसका कोई मतलब होगा न? यानी मेरी इच्छा है कि उस अर्थको तुम सार्थक करो।

इसके लिए आवश्यक कुछ गुण तो तुम्हारे अंदर हैं ही। कुछ और आ जायें तो पार उतरे समझो। तुम्हें मालूम न हो तो एक और खबर देता हूं। महाराष्ट्रके समान तामिलनाड़में भी संस्कृतके उच्चारण बहुत शुद्ध किये जाते हैं। महाराष्ट्रमें उच्चार तो है पर उतना उत्तम संगीत नहीं है। तामिलनाड़में तो मंत्रादि मधुर आवाज और सुरमें गाये जाते हैं। अंबुजम्माके द्वारा यह तू सीख सकेगी। यह सब सहजमें ही मिल सकता है। इसके लिए बहुत समय देनेकी जरूरत नहीं है। यह वर्ष तुम्हारे लिए मंगलदायक हो। आरंभ किया है सो समय-समय पर पत्र लिखती रहना।

८-११-१९३५]　　　　　　　　बापूके आशीर्वाद

: १५४ :

चि. ओम्,

मैं जानता हूं कि मेरी बीमारी तुम्हारे पत्र न लिखनेका अच्छा बहाना बन गई है। पर तुम यह जानती हो कि तुम्हारे पत्र मुझे बोझरूप कतई नहीं होते। पर यों पत्र लिखने लगो तो तुम 'सोती सुंदरी' मिट जाओगी न?

यह पत्र लिखनेका कारण तो यह है कि वहां तुम खुश नहीं रहती, घरकी याद आया करती है और कभी-कभी आंसू भी बहाती हो। ऐसी नाजुक तुम कबसे बन गई? अपने लिए तो जहां रहें उसे ही घर समझना चाहिये। आखिर तो इस जगमें हम लोग 'चंद रोजा' मुसाफिर ही हैं न? मैंने तो वह भाग देखा नहीं है, पर कहते हैं कि हवा वहांकी बहुत अच्छी है, और उसी प्रकार सुंदर भी है। श्री डंकनसे मिली होगी। वहांका वर्णन लिखना।

लखनऊमें काकाजी, मदालसा हम सब साथ ही हैं। तीसरी तारीखको इलाहाबाद जावेंगे और बहुत करके आठवींको लौट आवेंगे। पंद्रहवींके आसपास वर्धा पहुंचनेकी आशा है।

मेरी तबीयत अब ठीक कही जा सकती है। 'हरिजन सेवक' मंगाती हो क्या? अब तो अंग्रेजी भी बराबर समझती होगी।

३०-३-१९३६]　　　　　　　　बापूके आशीर्वाद

: १५५ :

चि. ओम्,

मुझे यहां छोटासा पुस्तकालय बनाना है। उसमें मराठी पुस्तकें चाहिये। तेरे पास या मदालसा या और किसीके पास छोटी-छोटी मराठी पुस्तकें हों जिनकी वहां अभी जरूरत न हो, तो मुझे यहां भेज देना। सीखनेकी और पढ़नेकी। यहांका काम नहीं चला तो वे पुस्तकें जिनकी होंगी उनको वापस मिल जायेंगी। काम चल निकला तो अमुक समयके बाद वे वापस कर दी जायेंगी। इसकी कमसे कम मियाद छः महीनेकी है। जो पुस्तकें सबके लिए

दी जा सकती हैं वे दे देनी हैं। ऐसी पुस्तकोंकी यादी मुझे भेज दो। दस रुपयेसे ज्यादाका पुस्तकालय मुझे नहीं बनाना है। इससे तुम्हें अंदाज हो जायगा कि मुझे किस तरहकी पुस्तकोंकी जरूरत है। मराठी अखबार भी किसीके पास हों तो वे भी, वहां उपयोग हो चुकनेके बाद, चाहिये। इसमें बड़े दानकी बात नहीं है। इसके लिए बडोंको परेशान करनेकी भी बात नहीं है। परंतु तुम्हारे जैसे लोग गांववालोंकी ओर जरा निगाह रखें तो ऐसे-ऐसे काम सहज हो कर सकते हैं। इतना तो पीछे लगकर करना। इसमें रस न आवे तो बेधडक होकर इनकार लिख भेजना। ताकि दूसरे ठिकाने आजिजी करूं।

[११-७-१९३६] बापूके आशीर्वाद

परिशिष्ट २

जमनालालजीकी डायरियों तथा पत्रोंमेंसे गांधीजी संबंधी चुने हुए अंश

: १ :

श्रीमती प्रिय देवी, कलकत्ता, ६-१-१७

श्री गांधीजी महाराज, उनकी धर्मपत्नी व पुत्र यहां आये थे। अपनी तरफसे सब प्रबन्ध किया गया था। इनकी सेवा करनेका १० रोज तक ठीक मौका मिल गया था।

* * *

केवल यही विचार बना रहता है कि संसार मिथ्या है, इसलिए शरीरसे जो-कुछ सेवा बन सके वह निस्वार्थ भावसे करनेका हमेशा प्रयत्न करना ही मनुष्य-जन्मका मुख्य कर्त्तव्य है। आशा है, तुम्हें भी यही ध्येय सामने रखकर कार्य करते रहनेसे अवश्य शान्ति मिलेगी। रायबहादुरकी पदवी सरकारसे मिलनेके कारण कई जगहसे मित्रोंके बधाईके तार व पत्र आते हैं। यह सब आडंबर है। फिर भी परमात्माने किया तो इस तरहके आडंबरका भी सेवा करनेमें उपयोग हो सकेगा। ईश्वरसे हमेशा यही प्रार्थना करते रहना आवश्यक है कि परमात्मा सद्बुद्धि प्रदान करे और निस्वार्थ भावसे सेवा करनेके लिए बल प्रदान करे।

: २ :

प्रिय देवी, पटनाके नजदीक चलती रेलमें, १५-८-२१

अब तुम और मैं तो विदेशी कपड़ा पहन नहीं सकते, इसका पूरा ध्यान रखना। अपना सब घर-कुटुंब पूरा स्वदेशी वस्त्र पहनने वाला तथा सादगीसे जीवन बिताने वाला होना चाहिये, इस बातका पूरा उद्योग करते रहना होगा। श्री मंदिरमें तो अब विदेशी कपड़ा स्वप्नके लिए भी नहीं रहना चाहिये। अगर रहा तो तुम जिम्मेदार हो। अगर तुमसे हो सके तो विदेशी सजावट (फर्निचर) आदि भी घरसे बाहर बगीचेमें रखवा दो। सब बच्चोंकी पढ़ाईका पूरा प्रबंध रखो, श्री भावेजीकी सलाहसे। योग्य आदमी बच्चोंके लिए ढूंढनेको उनसे कहा हुआ है। तुम भी आश्रममें बराबर जाती रहना। श्री भावेजीकी संगत, उपदेश-श्रवण करती रहना। भावेजी बहुत विद्वान व चरित्रवान हैं। इनके सत्संगसे अवश्य लाभ पहुंचना संभव है। आश्रमके बालकोंसे खूब प्रेमका बर्ताव तथा उनकी बीमारी आदि दुखमें पूर्ण सहायता

तथा शरीरसे सेवा करनेका ध्यान रखना। इस तरह करनेसे तुम्हारी बहुत ज्यादा उन्नति होवेगी, ऐसा मुझे विश्वास है। बने वहां तक नियमसे आश्रममें जाते रहना चाहिये तथा सूत आदि भी वहां पर थोडी देर काता जाए तो और भी ठीक होगा।

* * *

पूज्य बापूजीके साथ कलकत्ता, आसाम, मद्रास आदि स्थानोंमें जाना होगा। वह तो मुझे पहले ही ले जाना चाहते थे, परन्तु बम्बईके मित्रोंने नहीं जाने दिया। बापूजीके साथ रहनेमें मुझे तो बहुत फायदा पहुंचनेकी सभावना है। मेरी इच्छा तो ऐसी होती है कि तुम और मैं दोनों बापूजीके साथ भ्रमणमें रहा करें, जिससे इनकी सेवा करनेका भी मोका मिले तथा कई बातोंका ज्ञान हो। ईश्वरने किया तो यह इच्छा भी पूर्ण हो सकेगी।

: ३ :

प्रिय देवी, तेजपुर (आसाम), २२–८–२१

गोहाटी (आसाम) ता. १८ को पहुंचे। श्रावणी पूर्णिमा उसी दिन थी। रास्तेमे रेलवे स्टेशन पर स्नान करके पूज्य बापूजीके हाथसे नया जनेऊ पहना व उसी रोज शामको बापूजीके हाथसे ही रक्षा बंधवाई (कलकत्तेसे हाथका कता हुआ और कुसुंबी रंगमें रंगा हुआ सूतका तार साथ ले आये थे)। उन्होंने बहुत प्रेम तथा प्रसन्नतासे राखी बांधी। मैंने राखी बांधनेकी दक्षिणाके लिए पूछा तो उन्होंने विरासत संभालनेको कहा। तब मैंने कहा कि आप आशीर्वादके द्वारा आत्मिक बल मुझमें बढ़ा दें। यह बात तुम्हारे ध्यानमें लानेके लिए लिखी है। रक्षा-बंधनका दिन खाली नहीं गया। मेरी समझसे तो बापूजीने इस भावसे अभी तक और किसीको राखी नहीं बांधी होगी। इस तरह हम लोगोंकी जवाबदारी बढ़ती जाती है। उसी तरह परमात्मा ताकत भी बढ़ायेगा, ऐसा भरोसा है। दिनचर्या जितनी सादगीमें और सत्संगमें बितावेंगे उतनी ही इष्ट साधनामें सफलता प्राप्त होवेगी। तुमको यही लिखना है कि छोटे छोटे गृहस्थीके प्रपंचोंकी तरफ विशेष ध्यान न रखकर मनुष्य-कर्त्तव्यकी तरफ अधिक ध्यान रखो। हमेशा प्रेममय बर्ताव तथा आनन्दमय जीवन बिताना है। जितना आनन्द बढ़ेगा उतनी ही जल्दी श्रेयकी प्राप्ति होवेगी। कर्त्तव्य करते जाओ और खूब प्रसन्न रहो। जिंदगीको भार-रूप मत समझो। जबतक स्वराज्य प्राप्त न हो तबतक स्वराज्यके सिवाय दूसरी बातोंका स्वप्न भी हमें नहीं आना चाहिये।

: ४ :

प्रिय देवी, सिलहट (आसाम), अगस्त १९२१

मारवाड़ी स्त्रियोंकी सभा भी हुई। महात्माजीने विदेशी वस्त्र त्यागनेके बारेमें तो कहा ही। साथ ही अपने समाजमें गहने पहननेकी जो बहुत

बुरी प्रथा है उसके बारेमें भी कहा। इससे सुन्दरता नष्ट होती है इसलिए जहांतक हो सके गहने न पहने जावें। अगर पहने ही जावें तो बहुत थोड़े। कपड़े भी साफ स्वच्छ सफेद रंगके ज्यादा इस्तेमाल किये जायें जिससे मारवाड़की बहनें भी आसामी बहनोंकी भांति सीताजीकी तरह दिखने लग जावें। जिस प्रकार हो सके गहने और रंग बिरंगे कपड़े ज्यादा पहननेकी चाल कम करनेकी चेष्टा करनी चाहिये।

* * *

बापू इतना भारी कार्य करके भी खूब आनंदमें रहते हैं। कभी-कभी तो खूब हंसा करते हैं। मुझसे तो कहते थे कि अगर मुझे फांसीका हुक्म होगा तो भी मैं तो सब कार्य करते करते हंसता हुआ ही फांसी पर चढ़ जाऊंगा, ऐसा मेरा मन कहता है। ये सब बातें तुम्हें इसलिए लिखी हैं कि तुम जो बहुत ज्यादा फिकर किया करती हो सो अब भविष्यके लिए जितने आनन्दका उपयोग लिया जावे उतना लेनेका प्रयत्न करते रहना चाहिये। ज्यादा फिकर या उदास रहनेकी आवश्यकता नहीं। हमें तो अपना चरित्र शुद्ध रखते हुए आनंदसे हँसते हँसते सब शारीरिक कष्ट सहने हैं तथा मृत्यु प्राप्त करनी है।

* * *

गोहाटीमें बापू जिनके यहां उतरे थे वह श्रीयुत फूकनबाबू विलायतसे बैरिस्टरी पास किये हुए तथा बड़े ही शौकीन तबीयतके थे। उन्होंने अपने यहांके सारे विदेशी कपड़े, स्त्रियोंके सुन्दर सुन्दर भारीसे भारी कपड़े भी बापूके हाथसे आगमें जलवा दिये। करीब साढ़े तीन हजारके कपड़े थे। और भी लोगोंने जलाये। ये सब बातें देखते हुए अब तुम घरमें (कुटुंबमें) भारी या हलका विदेशी कपड़ा नहीं रख सकती यह विचार कर लेना। श्री फूकनबाबू तो बहुत धनी आदमी भी नहीं थे।

: ५ :

प्रिय देवी, कलकत्ता, १३-९-२१

मन्दिरमें प्रायः सब स्वदेशी कपड़ा हो गया। मुकुट सोने-चांदीका बनवानेका विचार लिखा सो ठीक। वे न बनें वहां तक खादीके बना लिये जायें। विशेष फर्निचर जो हो उसे बगीचेके बंगलेमें रखवा दे सकेंगे। तुमने लिखा कि अपने तो प्राण ही बापूको अर्पण है, स्वप्नेमें भी बापू ही दीखते हैं, यह पढ़कर बहुत ही समाधान व प्रसन्नता हुई। परमात्मा तुम्हारी इस प्रकारकी बुद्धि बनाए रखे। परमात्मा अवश्य ही सफलता और शक्ति प्रदान करेगा।

: ६ :

प्रिय देवी, कलकत्ता, १७-९-२१

तुमने लिखा कि पहले पत्रका जवाब आनेमें देरी हुई, इससे चिन्ता हो गई थी, सो इस तरह चिन्ता होना ठीक नहीं है। कठिन परीक्षाका समय

तो अब आनेवाला है। हम लोगोंका तो जेलमें जाना बहुत जल्दी संभव हो सकता है। अगर इस तरहकी छोटी-छोटी बातोंसे चिन्ता हुआ करेगी तो पीछे असली ध्येय प्राप्त करनेमें देर लगेगी और बाधा पहुंचेगी। मनको सदैव खूब शांत और आनन्दमें रखनेकी पूरी चेष्टा करनी चाहिये। जब हम लोगोंका परमात्मा पर पूरा विश्वास है तथा बापूका आशीर्वाद है तब हमें, चिन्ता क्या होती है, यह बिलकुल भूल जाना चाहिये। आशा है, पत्रमें इतना खुलासेवार लिखनेका भावार्थ तुम बराबर समझ जाओगी। भविष्यमें कभी किसी कारणसे चिन्ता मालूम हो तो इस पत्रको स्मरण करनेका ध्यान रखना। परमात्मा जो कुछ करता है वह ठीक ही करता है।

यहां विदेशी कपड़े तथा सूतके व्यापारियोंमें अच्छी सफलता मिल रही है। परमात्माने किया तो सोमवार तक पूरी सफलता मिल जावेगी। अब सफलतामें सन्देह नहीं रहा। आज मौलाना मुहम्मद अली, शौकत अली तथा डाक्टर किचलूकी गिरफ्तारीका समाचार मिला। यहां अभी तक खूब शान्ति है। परमात्मा सब जगह शान्ति रखेगा तो हमारा उद्देश्य (स्वराज्य) शीघ्र सफल होगा। अब तो जेलमें जानेमें ही विश्रांति तथा शान्ति अधिक मिलना संभव मालूम होता है।

गोहाटीमें सफलता ठीक हुई। मारवाड़ी व्यापारियोंने भविष्यमें विदेशी सूत व कपड़ा न मंगानेकी प्रतिज्ञा कर ली। यह कार्य तो बापूके ही प्रतापसे हुआ। परन्तु विशेष उद्योग किये बिना ही थोड़ा यश इसमें मुझे मिल गया। वहांके कार्यकर्ता बहुत प्रसन्न हो गये। यहांके लोग थोड़े भोले हैं, परन्तु उनमें बापूजी पर बहुत श्रद्धा व प्रेम है, और त्यागभावना भी है।

: ७ :

प्रिय जानकी, साबरमती आश्रम, २०-३-२२

पूज्य श्री बापूके मुकदमेका हाल सब समाचार-पत्रोंमें पढ़ा ही होगा। मुझे इस समय यहां आनेसे बहुत लाभ हुआ। बापूसे खूब बातें हुईं। बापूने हमेशाके लिए संग्रहके वास्ते एक बहुत ही सुन्दर पत्र[1] लिखकर दिया है। किसी समय अशान्ति मालूम हो तो उस पत्रसे बहुत लाभ पहुंचेगा। अदालतका दृश्य विचित्र था। ऐसा मालूम होता था कि जज तथा उसके साथी पूरे दोषी हैं और बापू उनको दोषसे मुक्त होनेका उपदेश प्रेमसे कर रहे हैं। जज आदिके अंग्रेज होते हुए भी उनपर खूब असर हुआ। १८ मार्चका दिन हमेशाके लिए याद रखने योग्य है। यह दिन हमारे भविष्यके इतिहासमें बिजलीकी तरह चमकता रहेगा। अच्छा होता कि तुम भी आ जातीं। खैर, कोई बात नहीं। बापूने मुझे खूब जोरसे पीठ ठोंक कर आशीर्वाद दिया। अब मुझे पूरा विश्वास है कि हम लोग अपनी उन्नति अवश्य कर सकेंगे। जिम्मेदारी

१. देखिए पृष्ठ १५-२२, पत्र संख्या १७।

खूब बढ़ गई है। अब कार्यकी दृष्टिसे जेल जानेकी जरूरत बिलकुल नहीं मालूम होती। हां, शान्ति तथा विश्रांतिके लिए जानेकी इच्छा होना संभव है। परन्तु इसे रोकना होगा। कार्य करते हुए वैसा मौका आ गया तो आनंदकी बात है। फिर भी जानबूझकर नहीं जाना है। बम्बईमें तथा यहां मेरे गिरफ्तार होनेकी बहुत जोरसे चर्चा थी। परन्तु उस चर्चामें कमसे कम हालमें कोई दम नहीं है। अगर मुझे गिरफ्तार होना ही पड़ा तो उस हालतमें हिन्दी नवजीवनके प्रकाशककी हैसियतसे मेरी जगह तुम्हारा नाम रखना चाहिये ऐसा मेरा विचार हुआ था। इस बारेमें मैंने महात्माजीसे पूछा था और उन्होंने भी कहा था कि ऐसे मौके पर उनका नाम रख सकते हो। खैर, अभी तो यह मौका नहीं है। जब आवेगा तब देखा जावेगा।

हां, एक बात लिखना रह गई। १७ ता. को सुबह अदालतमें कई मनुष्य रोये, प्रेम-वियोगसे। मेरी भी आंखोंमें थोड़े आंसू आ गये थे, पर मैंने बाहर जाकर पोंछ लिये। बापू खूब हंसते थे व कई लोग खूब हिम्मत रखे हुए थे। ये सब बातें रूबरू करनेमें ज्यादा आनंद आवेगा।

: ८ :

प्रिय देवी, बम्बई, ९-४-२२

कार्यका जो भार पूज्य बापूने तथा वर्किंग कमेटीने दिया है, वह बराबर व्यवस्था-पूर्वक होनेसे शान्ति मिलेगी। तुम शान्तिसे अपना कर्त्तव्य करती रहना। बापूको सजा हुई उस दिनसे मनमें ऐसी इच्छा थी कि हो सके वहां तक चर्खा थोड़ी देरके लिए ही सही अवश्य काता जाना चाहिये। परन्तु कई कारणोंसे यह इच्छा पूरी नहीं हो सकी। इससे भी मनमें थोड़ी अशान्ति रहती है। यहां घूमनेका कार्य ज्यादा रहता है। हर रोज कमसे कम एक घंटा चर्खा कातनेका तुम प्रयत्न किया करो, घरमें रहो तब तक।

* * *

बापूके जेल जानेके बाद कार्यकी जवाबदारी ज्यादा मालूम होती है। परन्तु बापू जाते समय जो उपहार—अपने हाथका लिखा हुआ उपदेश[1]—दे गये उससे शान्ति मिलती है और जवाबदारीका भान होता है। अब तुम्हें कमसे कम फालतू गहने बेचकर वह रुपया खादीके काममें लगा देना चाहिये। समय मिले तो जो गहना बेचना हो सो अलग निकालकर रख छोड़ना।

: ९ :

प्रिय जानकी, सितंबर, १९२२

मेरी बहुत वर्षोंसे यह इच्छा थी कि तुम्हारी व बालकोंकी इज्जत मेरे कारण न होकर तुम लोगोंके पवित्र सेवा-कार्यके कारण हो। उसमें तुम्हारा व बालकोंका भी श्रेय है व अपना भी श्रेय व गौरव है। यह कार्य अब जल्दी ही परमात्माकी दयासे व पू. बापूके आशीर्वादसे होता दिखाई

१. देखिए पृष्ठ १५-२२, पत्र संख्या १७।

दे रहा है। अपने घरमें अब सब छोटे-बड़े कम-ज्यादा प्रमाणमें सेवा-कार्य करनेवाले निकलेंगे, ऐसा विश्वास हो रहा है। सेवा-धर्ममें भी आनंद व सुख मिलता है।

: १० :

प्रिय देवी, बम्बई, ९–१०–२२

पूज्य बापूजी बच्चोंकी व तुम्हारी याद करते थे। तुम्हारे ऊपर उनका बहुत प्रेम व श्रद्धा है, ऐसा उनकी बात परसे मालूम होता था।

: ११ :

प्रिय देवी, ऑंगोल, १०–१–२४

दक्षिण प्रान्तमें एक मास अन्दाज घूमना पड़ेगा। यहां खादीका कार्य खूब हो सकता है। कई गांवोंको देखनेका मौका मिला। सूत कातने वाली स्त्रियां तथा बुनने वाले जुलाहे यहां खूब संख्यामें हैं। इन्हें रुई बराबर देकर, सूत, कपड़ा लेने व बेचनेकी बराबर व्यवस्था हो जाय तो लाखों रुपयोंकी खादी आन्ध्र देश बना सकता है। यहां घूमनेसे पूज्य बापूके खादी पर जोर देनेका महत्व अधिक ध्यानमें आया। अब तो चर्खा रोज काते बिना शांति नहीं मालूम होती।

* * *

अबकी बार बम्बई पहुंचते ही ५–६ परिचित मित्रोंकी मृत्युका समाचार एकदम मिला। उसपरसे भी यही मनमें आता है कि व्यर्थ समय बिलकुल न नष्ट करके जितना सेवाकार्य बन सके करनेमें ही लग जाना अपना कर्त्तव्य है। विशेष फिकर न करते हुए खासकर खादी प्रचारका व हिन्दुस्तानी प्रचारका काम करनेका ही निश्चय करनेका विचार है। इससे करोड़ों देश-भाइयोंकी सेवा करनेका थोड़ा संतोष हो सकेगा। ये दोनों कार्य ऐसे हैं जिनमें किसी तरहकी भी शंका नहीं हो सकती। आशा है, तुम भी इन दोनों कार्योंमें खूब सहायता करोगी।

: १२ :

प्रिय देवी, दिल्ली, १४–६–२५

पूज्य बापूजीसे मिला। बातें हुईं। बापूने बहुत बड़ी तपश्चर्या आरंभ की है। बापूका आत्मिक बल, परमात्मा पर जो श्रद्धा है, उसे देखते हुए विश्वास होता है कि उपवास पार पड़ जावेंगे। बा भी आज आ गई हैं। मेरे पास ही ठहरी हैं। बापूकी तपश्चर्या देखकर मनमें बहुत तरहकी कल्पनाएं आया करती हैं, परन्तु अपनी कमजोरी देखकर लज्जा होती है। बापूके इस मौकेसे हम लोगोंके जीवन व रहन-सहन और आचरणमें फरक हो तो भविष्यका जीवन सुखकर बीतना संभव है। मेरी राय है कि तुम अहमदाबाद आश्रममें

जाकर रहनेका विचार करो तो वहां रहनेसे जरूर आध्यात्मिक लाभ होना संभव है। मनकी कृपणता कम होकर दया-भाव, विश्वप्रेम, आत्मिक बल बढ़ानेका साधन मिलेगा। बच्चोंकी पढ़ाई और संगतमें तो पूरा लाभ होना संभव है।

* * *

चर्खा घर-भरमें बराबर चालू रहे। बापूके लिए हृदयसे प्रार्थना होती रहे, इसका खयाल रखना।

: १३ :

प्रिय देवी, पटना, २३-९-२५

तुमने अपने विचार या जो शंका थी वह पूज्य बापूजीको कह दी, यह जानकर अधिक सुख हुआ। अभी पूज्य बापूजीसे घरेलू बातोंके बारेमें मेरी बात नहीं हो पाई है। कारण वह बहुत कामोंमें लगे हुए हैं। जब बातें होंगी तब मालूम होगा।

: १४ :

प्रिय देवी, बम्बई, ३०-१-२६

मैं आज साबरमती जाकर आया। पूज्य बापूजीको ज्वर १०४ डिग्री तक हो गया था। उनका वजन आजकल ९७॥ रतल रह गया है। वहां इसलिए जाना पड़ा कि दूसरी जगह बदली जावे या अन्य इन्तजाम किया जावे। इसका विचार करने पर डाक्टरोंकी राय हुई कि अभी दूसरी जगह ले जानेकी जरूरत नहीं। गर्मीमें ले जाया जाय। आश्रममें ही आरामसे रह सकें, थोड़ी विश्रांति लेते रहें तो जल्दी वजन बढ़ जावेगा। एक हाथमें दर्द रहता है, वह भी कम हो जावेगा। पू. बापूने दवा और विश्रांति लेना स्वीकार कर लिया है। परमात्माने किया तो जल्दी ही ठीक हो जावेंगे।

* * *

चि. कमलाके विवाहके बारेमें श्री केशवदेवजी यहां आ गये थे। पू. बापूजीने तो कहा है कि सब तरहका विचार करनेके बाद मुझे तो आश्रममें ही विवाह करना ठीक मालूम होता है। फिर भी चि. रामेश्वरप्रसादकी इच्छा देख लो। वह भी आ गया था और उसने भी कहा मुझे आश्रममें ही विवाह करना सब तरहसे पसन्द है। उसने आश्रममें विवाह करनेके जो-जो कारण बतलाये उससे पूज्य बापूजीको व मुझे बहुत ही सन्तोष हुआ। अब विवाह आश्रममें करनेका ही निश्चय हो गया है।

: १५ :

प्रिय देवी, वर्धा, ६-११-२६

आशा है, तुम पू. बापूजीके उपदेश तथा सत्संगमें अधिक उदार तथा सिद्धांतसे जीवन बितानेका निश्चय करके यहां आओगी। सब बात तो यह

है कि मेरे तथा अपने घरके सुधार व परिवर्तनमें मुझे तुमसे पूरी सहायता मिलनी चाहिये। अब थोड़े वर्ष मानसिक सुधारोंकी बागडोर तुम अपने हाथमें ले सको तो आज मुझे कितना सुख और सन्तोष मिले इसका तुम ही विचार कर सकती हो। तुम चाहो तो पू. बापूजी व विनोबाकी सहायतासे अपने जीवनको और घरको ठीक कर सकती हो। मेरी कमजोरियां दूर करा सकती हो।

: १६ :

प्रिय जानकी, साबरमती, ५–४–२९

श्री. छगनलालभाई गांधीसे तथा पू. बासे, रुपये पैसेके मामलेमें, जो दुनियादारीकी दृष्टिसे बहुत भारी कसूर नहीं समझा जाता है. वैसी गलती या कसूर पर, इस बार पू. बापूजीने नवजीवनमें अपने हृदयका दुख लिखा है। तुम उसे भली प्रकार पढ़नेका प्रयत्न करना। यहां आश्रममें रहने वालोंकी कमजोरियोंसे पू. बापूजीको बहुत दुख व कष्ट हुआ करता है।

: १७ :

प्रिय जानकी, साबरमती आश्रम, ७–४–२९

इस बारके नवजीवनमें पू. बापूजीका आश्रम संबंधी लेख पढ़कर हृदय फटता है। उपाय नहीं। तुम खूब विचारके साथ इस लेखको दो-चार बार पढ़ना।

: १८ :

प्रिय जानकी, साबरमती आश्रम, १५–२–३०

पू. बापूजीने आजकल खूब उत्साह व जोरोंसे लड़ाईकी पूरी तैयारी कर रखी है। यहांका वातावरण पूरे जोश तथा उत्साहसे भरा हुआ है। छोटे-छोटे बच्चोंने भी जेल जानेकी इच्छा कर रखी है। तुम इस समय यहां रहती तो तुम्हें ठीक लाभ मिलता व पू. बापूजी तुम्हारा नाम भी जेल जानेवालोंकी फेहरिस्तमें, अगर तुम्हारा उत्साह और इच्छा होती तो, लिख लेते।

: १९ :

प्रिय जानकी, नासिक रोड सेन्ट्रल जेल, २१–६–३०

तुम्हारी व दूसरी बहनोंकी दो बार थोड़े समयकी गिरफ्तारीकी बात जानकर विनोद हुआ। अगर स्त्रियोंको गिरफ्तार करना शुरू हो जावेगा तो तुम्हारा नंबर जल्दी ही आ जावेगा। तुम तो सब तरहसे तैयार हो ही। तुम्हें तो कुछ समयके लिए जेलकी दुनियाका अनुभव मिल सकेगा व शान्ति भी मिलेगी। साथ ही जनतामें विशेष जीवन व जागृति आवेगी।

* * *

ईश्वरकी अपने पर पूर्ण दया व पू. बापूजीका आशीर्वाद है कि जिसके कारण अपनेको इस प्रकारकी बुद्धि होकर सेवा करनेका यानी अपनी कमजोरी कम करनेका मौका मिला। तुम्हारी बहादुरी व हिम्मत देखकर मनमें सुख होता है। मुझे तो तुम्हारे बारेमें व सारे कुटुंबके बारेमें पूरा सन्तोष व अभिमान है। मेरी यह इच्छा अवश्य है कि इस प्रकारके धर्म-युद्धमें हम लोगोंमेंसे सबोंकी या जो सबसे ज्यादा प्रिय हो उसकी आहुति हो तो परम सन्तोष व सुखकी बात होगी। एक दिन मरना तो अवश्य है ही। फिर जिससे देश व जाति व कुलकी प्रतिष्ठा बढ़े इस प्रकारकी पवित्र मृत्यु मिले तो फिर क्या बात! अब तो जेलकी मनमें नहीं रही। अगर इच्छा है तो ऐसी मृत्युकी ही है। खैर, जो होनी होगी सो होगी। चिन्ता करनेका समय नहीं है। अभी तो बहुत खेल खेलने व देखने होंगे, ऐसा दिखाई देता है। भविष्य बहुत ही उज्वल व साफ दिखाई देता है।

: २० :

प्रिय जानकी, नासिक रोड जेल, ७–७–३०

चि. कमलसे कहना कि वह जरा अधिक सभ्यता व नम्रताका व्यवहार करनेका खयाल रखे। अब वह सत्याग्रह-दलमें पू. बापूजीकी टुकड़ीका स्वयं-सेवक है। उसपर ज्यादा जिम्मेदारी है। मुंहसे एक एक बात सत्य व तौलकर निकालनी चाहिये, जिससे आगे चलकर वह जिम्मेवारीके साथ काम कर सके।

: २१ :

प्रिय जानकी, नासिक रोड जेल महल, २३–१०–३०

ईश्वर सब ठीक करेगा। तुम्हारे लिए मनमें स्थान तो पहले ही ठीक था, अबकी बारकी तुम्हारी हिम्मत, सेवा, योग्यताका विचार करके जो सुख व सन्तोष मिलता है वह कैसे लिखूं? हम लोग बहुत ही पुण्यवान् हैं। ईश्वरकी व पू. बापूजीकी दया व आशीर्वादसे मेरी समझमें अपने जितने सच्चे सुखी संसारमें प्रायः बहुत कम लोग होंगे। आशा है, जेलमेंसे हम लोग अधिक योग्य बनकर निकलेंगे।

: २२ :

प्रिय जानकी, सेंट्रल जेल, नासिक, जनवरी १९३१

परमात्माके व पू. बापूजीके आशीर्वादसे, हम लोगोंका, अपने जीवनका आदर्श प्राप्त करनेमें सफलीभूत होना बहुत सम्भव दिखाई देता है। अगर हम अपनी कमजोरियोंको बराबर पहचानते रहें व उन्हें निकालनेका तनतोड़ प्रयत्न करते रहें तो अवश्य जीवन पूरी तौरसे नहीं तो कुछ अंशमें तो सार्थक बना सकेंगे।

: २३ :

प्रिय जानकी, चलती रेलमें, प्रयाग, १४–२–३१

पू. बापूजी रफल[1] देखकर बहुत खुश हुए। उन्होंने कहा, मैं इसे अब दो वर्ष और चला सकूंगा। तुम्हारे लिखे समाचार उन्हें कह दिये। तुम्हारी भेजी हुई पूनी उन्होंने आज कातकर देखी। उन्होंने कहा है कि रुई तो अच्छी है, परन्तु पूनी ठीक नहीं बनी। लम्बी ज्यादा है व पोली भी है। आगेसे बहुत अच्छी पूनी बना सको तो थोड़ी बापूजीको भेजनेका प्रबंध करेंगे।

: २४ :

चि. मदालसा, अक्टूबर, १९३२

अपनी माताके नामके पू. बापूके पत्रकी नक़ल तुमने भेजी उसे पढ़कर सुख मिला। अपनी माताको कह देना कि वह उस मुताबिक पूरी तैयारी करनेमें लग जावे व बापूकी परीक्षामें इस जन्ममें पास हो जावे तो उससे खूब सुख व लाभ मिलेगा।

* * *

बापूके उपवासकी इस भीष्म-प्रतिज्ञाने तो हम सबकी अस्पृश्यता-निवारणकी जवाबदारी बहुत ज्यादा बढ़ा दी है। परमात्मासे हर रोज मैं तो प्रार्थना करता ही हूं, तुम सब भी किया करो, कि जिससे हम सब लोग अपना कर्त्तव्य व जवाबदारी पूर्णतया समझते रहें व उसे पूरा करनेके लिए जी-जानसे उद्योग करते रहें।

: २५ :

डायरीसे— यरवडा मंदिर, ११–१–३३

रातमें सुखकारक स्वप्न आया, याने आकाशवाणी हुई व प्रत्येक मंदिरोंकी देव मूर्तियां कहने लगीं कि 'गांधी' का कहना ठीक है, उसीके मुताबिक करो। अस्पृश्यताका भेद निकाल डालो, आदि उत्तम विचार।

: २६ :

डायरीसे— यरवडा मंदिर, २४–१–३३

जेलरने आजकी तारीखका बापूका वक्तव्य लाकर दिया, उसे चार-पांच बार पढ़ा। हृदयमें भक्ति, प्रेम, चिन्ता आदि उत्पन्न हुई।

: २७ :

डायरीसे— यरवडा मंदिर, २५–१–३३

बापूका स्टेटमेंट खूब शांतिसे ईश्वर प्रार्थना करके फिर पढ़-देखा, क्योंकि अभी सुबह ही वापस करना है।

1. देखिए पृष्ठ ९०, पत्र संख्या ११३।

: २८ :

डायरीसे— यरवडा मंदिर, २-२-३३

बापूसे १२-१० से १-१५ तक १४ वीं मुलाकात हुई। विविधवृत्त तथा अन्य पत्रोंका खुलासा। मुझे किसी प्रकारका विचार व चिंता न करनेको कहा। वे जो कुछ भेजें, बिना विचारके मैं पढ़ता रहूं।

: २९ :

डायरीसे— यरवडा मंदिर, ६-२-३३

पू. बापूसे १२ से १ तक १५ वीं मुलाकात। डॉ. अंबेडकरके विचार, व्यवहार, हिन्दू जातिसे लड़नेकी तैयारी आदिके संबंधमें विचार प्रगट किये। बापूको इससे दुःख तो पहुंचा ही। मंदिर-प्रवेशका हाल। अपने स्वास्थ्यके संबंधमें मैंने बापूसे प्रार्थना की कि आप मेरे बारेमें अधिकारियोंसे चर्चा न करें तो मुझे संतोष रहेगा। मैं खुद अपनी खुराक, जो कुछ ज्यादा है, घटाना चाहता हूं।

: ३० :

डायरीसे— यरवडा मंदिर, ७-२-३३

सवेरे बापूकी बकरियोंके दर्शन हुए, आनंद हुआ।

बापूने मिलने बुलाया। करीब आधा घंटा स्वास्थ्यके बारेमें व जेलकी चिन्ता न करनेके बारेमें समझाकर अपने उदाहरण देकर कहा। मैंने अपनी अड़चनें कहीं। बापूके कहनेसे हरिजन, अंग्रेजी पत्र, शुरुआतमें किन्हें भेजे जावें, उनकी फेहरिस्त जल्दीमें तैयार करके भेजी।

: ३१ :

डायरीसे— यरवडा मंदिर, १३-२-३३

पू. बापूसे १२-२० से १ बजे तक १७ वीं मुलाकात हुई। 'हरिजन'में एक कालम, उपवाससे लगाकर आज तककी हालत, बापू अपने हाथसे लिखा करें, यह सूचना मैंने की। उन्हें पसंद आई। हरिजन सोसाइटीके विधानके बारेमें थोड़ी सूचना की, उन्होंने लिखकर भेजनेको कहा। अम्बेडकर, राजभोज, रा. ब. राजा वगैरहके बारेमें उनका मत जाना।

* * *

बापूने कहा कि 'विनोबा' तीन वर्षके अन्दर ब्रह्मकी प्राप्ति कर लेने वाले हैं। अप्पासाहेबका फैसला हो गया, अब इस बारेमें बापूके उपवासका डर न रहा। हरिजन सोसायटीका विधान तीन बजे दुरुस्त करके वापस भेजा।

: ३२ :

डायरीसे— यरवडा मंदिर, ६–३–३३

पूज्य बापूसे तेईसवीं मुलाकात करीब ४० मिनट। स्वास्थ्यका हाल; बापूने मेरे बारेमें बंबई सरकारको जो पत्र लिखा था, वह मुझे दिखा सकते हैं या नहीं, उसपर थोड़ी चर्चा। मैंने कहा, मेरा पूरा समाधान नहीं हुआ, आदि।

: ३३ :

डायरीसे— यरवडा मंदिर, ९–३–३३

स्काउटिंग और ग्राम-सेवाकी श्री. श्रीरामजी बाजपेयी लिखित पुस्तक पर बापूने मेरी राय मंगाई थी, वह लिखकर भेजी।

: ३४ :

डायरीसे— यरवडा मंदिर, १४–३–३३

आज बापूकी बकरियोंसे खेला। उन्हें रोटी खिलाई। उन्होंने गेहूं नापास किया, बाजरा पास किया। उनके खान-पान व स्नानकी व्यवस्था करानी है, बाल भी बढ़ गये हैं।

: ३५ :

डायरीसे— यरवडा मंदिर, १५–३–३३

आज बापूको नोट भेजा, उसमें डेविड-योजनामें किनकी ओरसे मदद मिल सकती है उनके नाम लिख भेजे। श्री जानकीदेवी अगर बापूकी प्रार्थना-आज्ञा स्वीकार न करे तो बापूने उनका 'हुक्का पानी' बन्द (असहकार) करनेकी विनोदी सूचना लिख भेजी।

: ३६ :

डायरीसे— यरवडा मंदिर, १७–३–३३

बापूसे छब्बीसवीं मुलाकात। स्वास्थ्य, बापूका वजन १०५, वल्लभभाई दूध-फलके ऊपर, डेविड-योजना, म. चर्खा संघ, अनन्तपुर खादी-कार्य, हरिजन उच्चवर्णके लोग कैसे बनें, नैतिक व्यावहारिक अड़चनें, डॉ. अंबेडकरका विरोध संभव, आदि। मेरी शंकाओंका समाधान।

: ३७ :

डायरीसे— यरवडा मंदिर, २४–३–३३

पू. बापूसे अठ्ठाइसवीं मुलाकात—ईशु चरित, डेविड-योजना। नारायणदास व प्रेमाबहनको महिला-आश्रमके लिए बापू लिखेंगे। आश्रमके बीमारोंकी हालत, गुलजारीलालका स्वास्थ्य ठीक है, हरिजन बिल। बापू डॉ. मोदीको पत्र लिखेंगे। बापूने कहा, मुझे बंबईमें दूध लेना चाहिये। मैंने कतल वगैरहका

कारण समझाया। बापूने उसका खुलासा किया। हो सका तो बापू शुक्रवारको पत्र भेजा करेंगे। सत्याग्रह शुद्धतासे याने सत्य व अहिंसासे नहीं चल रहा है। बापूको पांच वर्ष इसी माफिक निकल जाते मालूम हुए।

: ३८ :

डायरीसे— पूना, ७–४–३३

पू. बापूसे डेविड-योजना, स्वास्थ्य, मोदी रिपोर्ट पर चर्चा। दण्ड किसीने जमा किया। भविष्यका कार्य। वर्धा जाना जरूरी हो गया, पूनमचंद रांकाके बारेमें बापूने कहा, उनसे खण्डवा मिलना जरूरी है।[1] मेरे कहनेपर राघवेन्द्र रावसे मिलना भी उन्होंने पसंद किया। मुझे स्टेटमेन्ट देनेकी जरूरत नहीं। उन्होंने कहा, कमसे कम एक महीना तो मुझे ठंडी जगह—मसूरी, महाबलेश्वर, पंचगनी, वगैरह रहना जरूरी है। मेरे पहनावेकी जानकीदेवीने चर्चा की। प्रश्न-उत्तरके बाद मामूली धोती, कुरता, टोपी, अभी निश्चित हुआ।

: ३९ :

डायरीसे— शैल आश्रम, अलमोड़ा, १०–५–३३

पूज्य बापूके छूटनेकी व पू. बापू व श्री अणे द्वारा डेढ़ मासके लिए सत्याग्रह स्थगित किये जानेकी खबर मिली। बापूका व सरकारका स्टेटमेंट पढ़ा। एक प्रकारसे खुशी हुई। परन्तु ज्यादा विचार करनेसे चिन्ता रही। रातको निद्रा बराबर नहीं आई, पूना जानेके विचार आदिके कारण।

: ४० :

डायरीसे— पूना-बम्बई, ३१–५–३३

पू. बापूके दर्शन, इच्छाके विरुद्ध, श्री महादेवभाई व मथुरादासभाईके आग्रहके कारण करने पड़े। खूब सुख मिला।

: ४१ :

डायरीसे— पूना-बम्बई, १८–६–३३

पू. बापूने मुझे फिर अलमोड़ा जानेको कहा। शरीरकी संभाल रखनेका मैंने उनसे वचन लिया। उन्होंने कहा कि मुझे अभी जीना है।

: ४२ :

प्रिय जानकी, वर्धा, ३०–८–३३

पूज्य बापूजीने तुमको वहीं रहनेको कहा है सो एक तरह ठीक ही है। अगर तुम उनके कहनेसे वहां बनी रहीं और खुदा-न-ख्वास्ता प्लेगकी शिकार हो गईं तो मुझे तो इतना संतोष रहेगा कि उस हालतमें पूज्य बापूजीका आशीर्वाद मिला और उसके साथ स्वर्ग भी। वहां प्लेगसे मरोगी तो बहुत करके पूज्य बापूका तो आशीर्वाद मिल ही जायगा। इससे अब तुम्हारी तरफकी चिन्ता कम है।

१. देखिए पृष्ठ २०७, पत्र संख्या १३०।

: ४३ :

प्रिय जानकी, पटना, २९–६–३४

पूनाकी दुर्घटनासे पू. बापूजी तो बचे ही, साथमें चि. ओम वगैरह भी बच गई। 'जिसको ईश्वर बचाने वाला है उसे कौन मार सकता है?' इस प्रकारकी घटनासे ईश्वरकी शक्ति (अस्तित्व) में विश्वास बढ़ता है।

: ४४ :

डायरीसे– वर्धा, ५–८–३४

बापूने कानके लिए बम्बई जानेका आग्रह किया। उन्होंने कहा कि नहीं तो मैं बम्बई चलूंगा, तथा अन्य दवाओंकी बातें कीं। जानेका निश्चय किया।

: ४५ :

प्रिय जानकी, बम्बई, १६–११–३४

पू. बापू अगर मेरी चिन्ता करना छोड़ दें तो मुझे कम तकलीफ हो।

: ४६ :

डायरीसे– वर्धा, २८–११–३४

गांधी-सेवा-संघका कार्य प्रायः दिनभर होता रहा। बापूजीका प्रवचन हुआ। मेरा ट्रस्टी व सभापतिपदका त्यागपत्र स्वीकार करनेके बारेमें बापूने सदस्योंको व ट्रस्टियोंको ठीक समझाया।

: ४७ :

डायरीसे– वर्धा, १४–१२–३४

सुबह घूमते हुए बापूके साथ अंतःस्थितिकी चर्चा, सभापतिका भार लेनेमें निरुत्साह, आदि।

बापूके साथ भी ग्राम-उद्योग मण्डलकी चर्चा, खूब विचारके बाद आखिर खुर्शेदबहनने इन्कार किया। मेरी स्थितिका खयाल करके बापूने हुक्म नहीं दिया। उन्हें दुःख हुआ। जाजूजी सभापति हुए। मनमें थोड़ा विचार।

: ४८ :

प्रिय जानकी, बम्बई, २९–१–३५

मुझे तो पू. बापूने ठीक प्रमाण पत्र (सर्टिफिकेट) भेजा है। तुम भी इस प्रकारके कामोंमें मदद करो तो कितना अच्छा हो।

: ४९ :

डायरीसे— वर्धा, २२–२–३५

बापूजीसे २ बजेसे ४ बजे तक बातचीत, खासकर व्यापारके सम्बन्धमें। उन्होंने हाउसिंग कंपनीका काम ठीक बतलाया, केमिकलका पसंद नहीं किया। रामेश्वर भी साथ था। उससे भी बात हुई।

: ५० :

डायरीसे— वर्धा, २५–२–३५

पू. बापूने वर्धासे ता. २४-२-३५ को एक मित्रको इस प्रकार लिखकर दिया—"हमें किसीको पापी माननेका अधिकार नहीं है, क्योंकि हम सब दोषसे भरे हुए हैं। जिसको हम अपनेसे ज्यादा पापी मानते हैं, वह सचमुच ऐसा है, यह माननेका हमारे पास न कारण है, न साधन है। एक पैसा चुराने वाला एक व्यभिचारीकी अपेक्षा अधिक पापी हो सकता है। सम्भव है कि पैसे चुराने वालेने जानबूझकर चोरी की हो और व्यभिचारीने अपनेको रोकनेका बड़ा प्रयत्न किया तो भी वह अपनेको रोक न सका हो। उसके शुभ प्रयत्नका किसीको ज्ञान हो सकता है? मनुष्यके हृदयको तो सिर्फ भगवान ही जानता है। इसलिए हम किसीके पापकी तुलना न करें, लेकिन क्षमा-वृत्ति बढ़ाते रहें, यह अहिंसा धर्मका एक लक्ष्य है।"

: ५१ :

डायरीसे— वर्धा, २१–७–३५

बापूके पास मगनवाड़ी, चर्खा-संघसे त्यागपत्र पर चर्चा, विचार। शंकरलाल तो पहलेसे विरोधी था ही। बापूसे फैसला हुआ कि सभापतिका काम वह करेंगे, सदस्य मैं रहूंगा व वह जो काम लेना चाहेंगे और मैं कर सकूंगा, उतना किया जावेगा।

: ५२ :

डायरीसे— वर्धा, १२–१२–३५

बापूसे मगनवाड़ीमें मिले। उन्हें वहांसे महिला-आश्रम या अपने यहां ले जानेको राजी किया, जोकि वह मगनवाड़ी छोड़ना नहीं चाहते थे।

: ५३ :

डायरीसे— वर्धा, १३–१–३६

प्रार्थनाके बाद बापूके समक्ष महादेवभाईने लीलावतीको बापूके दर्शन करानेके बारेमें दुराग्रह व जिद्द की। मेरा भी व्यवहार ठीक नहीं रहा। उसके दुःखका अनुभव होता रहा। बापूके सामने यह घटना नहीं होनी चाहिये थी। उन्हें भी विचार रहा होगा।[1]

१. उस समय बापू बीमार थे और उनकी रखवालीका काम जमनालालजीके जिम्मे था।

: ५४ :

डायरीसे— वर्धा, १४–१–३६

श्री महादेवभाईको दुःखसे भरा हुआ पत्र लिखा। उनका भी पत्र आया। दोपहरको सब फैसला हो गया। सरदारका व्यवहार न्यायसे थोड़ा अलग मालूम हुआ। आज मनमें काफी असन्तोष व दुःख रहा और आँखें भी गीली हुईं।

* * *

बापूने अपने मनमें दो बातें हैं ऐसा कहा— एक मगनवाड़ीको सफल बनाना व दूसरी आखिरी लड़ाई लड़ना। वर्धा ही सेंटर रखना जरूरी।

: ५५ :

चि. कमल, साबरमती आश्रम, १२–२–३६

यदि पूज्य बापू एवं विनोबाको तुम संतुष्ट कर सकोगे तो मुझे अधिक कुछ कहना नहीं रहेगा।

: ५६ :

डायरीसे— सावली, ४–३–३६

बापूने कान्फरेन्सकी कार्य-पद्धति पर टीका की। उस समय बहुत ज्यादा क्रोध आया। इतने क्रोधका इन वर्षोंमें अनुभव नहीं हुआ था। बापूसे भी ज्यादा पू. वल्लभभाई पर क्रोध आया। मनमें दुःख, विचार खूब रहा। विनोबा, किशोरलालभाईसे बातचीत। आखिर बापू व वल्लभभाईसे खुलासा होनेपर थोड़ी शान्ति।

: ५७ :

डायरीसे— लखनऊ, २८–३–३६

बापूके जेलरका चार्ज लेना पड़ा।

: ५८ :

डायरीसे— इलाहाबाद, ६–४–३६

सुबह बापू मौन होते हुए भी बाहर अकेले घूमने चले गये। थोड़ी देर तक खूब विचार व चिन्ता होती रही। दौड़-धूप रही। मोटर लेकर ढूंढ़ना शुरू किया। मिल गये। सरोजिनी साथ थीं।

: ५९ :

डायरीसे— लखनऊ, १६–४–३६

बापूके साथ पैदल घूमने राजेन्द्रबाबू भी साथ हो गये। जवाहरलाल, सरदार, मेरी स्थिति कही। मेरा नाम (वर्किंग कमेटीमें) आखिर रखा गया, उससे थोड़ी अशान्ति।

जवाहरलाल आये, साथमें मौलाना आजाद। बापूसे देर तक बातचीत। मुझे भी थोड़ा क्रोध आया, जो कहना था कहा।

: ६० :

डायरीसे— वर्धा, ३०–४–३६

बापू आजसे सेगांव रहने गये, वहां उनकी व्यवस्था देखकर आना।

: ६१ :

डायरीसे— वर्धा, ५–९–३६

सुबह अस्पतालमें बापूसे बातें। उन्होंने अपने स्वप्नकी थोड़ी बातें कहीं। मनोरंजक थीं। बादमें उन्हें ज्यादा बोलनेको मना किया।

: ६२ :

डायरीसे— वर्धा, १८–९–३६

बापूको करीब ९-४५ बजे भविष्यवाणीकी बात अकेलेमें कही।[1] विनोद, हँसी। उन्होंने अपने बारेमें विचार कहे कि जून १९३७ तकका समय मैंने निकाल दिया तो फिर पांच-सात वर्ष निकल जाना स्वाभाविक है।

: ६३ :

प्रिय जानकी, वर्धा, १८–९–३६

पूज्य बापूके बारेमें भविष्यवाणी, जैसी आशा थी, पूरी तरहसे झूठ साबित हुई। कल ता. १७ को शामको सिविल सर्जनको ले जाकर भली प्रकारसे जांच कर ली थी। ब्लड प्रेशर, हार्ट बहुत ठीक था। बापू खूब विनोद करते थे। आज सुबह बापूको अकेलेमें मैंने ९॥। बजे करीब यह बात कही। वह तो खूब हँसे — विनोद किया। औरोंसे ज्यादा चर्चा नहीं की। अब कल खूब विनोद करेंगे। सरदार भी कल आ जावेंगे। अब आगेसे भविष्यवाणी पर ज्यादा श्रद्धा नहीं रखना।

: ६४ :

डायरीसे— वर्धा, २०–९–३६

दोपहरको घनश्यामदास व सरदारके साथ सेगांव बापूके पास जाकर आये। सरदार व घनश्यामदासने भी मुझसे व्यापार आदि कम करनेके लिए खूब आग्रह किया। बापूने भी मदद करनेको कहा। विचार।

: ६५ :

प्रिय कमल, वर्धा, २४–९–३६

श्री वकीलकी बापूके संबंधकी १८ ता. को दिनके १० बजे हार्ट फेल होनेकी भविष्यवाणी गलत ठहरी। इसका तो समाधान है, परन्तु उस भविष्य-

१. एक ज्योतिषीने जमनालालजीसे १६ सितंबरको भविष्यवाणी की थी कि १८ सितंबरको दिनमें १० बजे गांधीजीकी मृत्यु हो जायगी।

बाणीसे तुम्हारी मां बहुत चिंतित रही। मुझे भी थोड़ी चिन्ता रही। व्यवस्था रखनी पड़ी। बिना कारण तार खर्च भी हुआ। मुझे तो विश्वास नहीं था, भविष्यमें तुम भी खयाल रखना।

: ६६ :

डायरीसे— वर्धा, १८–२–३७

सेगांवमें पू. बापूजीसे सम्मेलन-सभापति, कांग्रेस-सभापति, जाजूजी, ग्राम-उद्योग कार्य, मेरी मानसिक स्थिति व कमजोरीके बारेमें बातें। फिर मिलकर खुलासेवार बातें करना।

: ६७ :

डायरीसे— सेगांव, २१–२–३७

बापूके साथ घूमते समय मनःस्थिति, मनकी कमजोरी, ब्रह्मचर्य आदिके संबंधमें बातें। स्थिति साफ तौरसे उदाहरण देकर कही। बापूने स्थिति समझी व थोड़ा उपाय बतलाया। फिर बातें होंगी। हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा कांग्रेसके सभापतित्व आदि सबसे अलग हट जानेके बारेमें बातें हुईं।

: ६८ :

प्रिय कमल, जुहू (बम्बई), ३–६–३७

बापूजीको तुम्हारे विवाहमें ले जानेका आग्रह करनेका उत्साह नहीं होता है। वह तो वैसे ही कलकत्ता जाना पसन्द नहीं करते हैं।

* * * *

मेरा तो विचार है कि अगर तुम्हें जंचे तो तुम दोनों भाई विवाहके पहले जैसे जनेऊ लेते हैं, वैसे ले लो। बापूजीने महादेवभाईके लड़केको व एक औरको इसी प्रकार दिलाया था सो मेरा भी मन करता है। फिर जैसी तुम्हारी मरजी।

: ६९ :

प्रिय जानकी, जुहू (बम्बई), १३–१०–३७

पूज्य बापूजी आ गये। वह तो टाईफाइडके सबसे बड़े अनुभवी डाक्टर हैं। नर्सिंगका इन्तजाम खूब अच्छा रखना।

: ७० :

चि. कमल, वर्धा, २–१२–३७

पू. बापूजीका स्वास्थ्य इधर ज्यादा नरम रहता है। ब्लड प्रेशर सुबह २००-११४ होता था। दोपहरको कभी-कभी १५४-९० भी होता है। इतना

हमेशा रहे तो बहुत ठीक हो। डाक्टर लोगोंको भी थोड़ी चिन्ता है। इन्हें पूरा आराम मिले इसका खयाल तो रखा जाता है। मैं प्रायः सेगांवमें ही सोता हूं। मुलाकात वगैरह बन्द हैं। यहां आराम नहीं हुआ तो फिर इन्हें समुद्रतट पर ले जाना पड़ेगा। वह तो जाना नहीं चाहते हैं। तुम चिन्ता न करना। ईश्वरको उनसे सेवा लेनी होगी तो कोई जोखम होनेवाली नहीं है।

: ७१ :

डायरीसे— वर्धा, ९–१–३८

सेगांव — बापूसे महादेवभाईके साथ बातचीत। उन्हें हरिपुरा कांग्रेस तक पूरा आराम लेनेको कहा, परन्तु कोई फल नहीं निकला। बापूकी इच्छा मुताबिक महादेवभाई मुलाकात प्रोग्राम आदिकी व्यवस्था करेंगे।

: ७२ :

डायरीसे— वर्धा, २६–१–३८

सेगांव — बापूसे सेगांवका हिस्सा व अन्य इमारतें आदि ग्राम-सेवा मंडलको देनेके बारेमें विचार-विनिमय। बापूने अपना भावी कार्यक्रम व इच्छा बतलाई। उन्हें अब सेगांव छोड़ना नहीं है। फ्रंटियर रहना पड़े तो हिन्दू-मुस्लिम एकताके लिए विचारणीय है।

: ७३ :

डायरीसे— वर्धा, २९–१–३८

सेगांव — बापूसे सेगांव दान देनेके बारेमें बातचीत। मालगुजारीका हिस्सा दान देनेमें व्यावहारिक अड़चन। बगीचा व जमीन दान देनेका निश्चय, वसन्त पंचमीसे।

: ७४ :

डायरीसे— विठ्ठलनगर, हरिपुरा, १३–२–३८

सुभाषसे जितनी बातें हुईं वे सब घूमते हुए बापूको सुना दीं। उन्हें पसन्द आईं। सुभाष बापूसे मिल लिये, वही बातें हुईं।

: ७५ :

डायरीसे— विठ्ठलनगर, हरिपुरा, १६–२–३८

बापूके साथ बातचीत। मैं वर्किंग कमेटीमें नहीं रहूंगा, मुझे इसमेंसे निकालें। उन्होंने कबूल तो किया और हालत समझाई।

: ७६ :

डायरीसे— विठ्ठलनगर, हरिपुरा, २२–२–३८

बापूके जानेकी तैयारी। उनसे मिलना। बापूने अन्दर मुलनागा व मित्रोंका तथा सुभाषबाबूका आग्रह कि मैं वर्किंग कमेटीमें रहूं, उन्होंने चालू रखा। मैंने इन्कार किया।

: ७७ :

डायरीसे– वर्धा, ३–३–३८

सेगांव– बापूके पास। विनोबा, महादेवभाई साथमें। बापूसे नागपुर प्रान्तिक कांग्रेस कमेटीसे त्यागपत्र देनेके बारेमें विचार-विनिमय। देर तक बापूने अपनी नीति कही, सब जवाबदार कार्यकर्ताओंको कांग्रेसमें सम्मिलित होना चाहिये।

: ७८ :

डायरीसे– डेलांग, २८–३–३८

बापूने हिन्दू-मुस्लिम दंगेके बारेमें जो प्रस्ताव रखा था, उस बारेमें मेरी शंकाओंका समाधान करते हुए एक घंटे करीब भाषण किया।

: ७९ :

डायरीसे– कलकत्ता, ३–४–३८

वर्किंग कमेटी ८ से ११-३० और २ से ७ तक हुई। दो से पांच तक बापूजीके साथ नागपुर-शरीफ प्रकरण चला। सुबह सुभाषबाबूके घर डॉ. खरेने जो परिस्थिति कही उससे तो स्थिति एकदम बदली हुई मालूम हुई। विचार-विनिमय। बापूजीके सामने मैंने मि. शरीफको यहां बुलानेके बारेमें जो विचार कहे, वे सरदारको बिलकुल पसन्द नहीं आये। कई और मित्रोंको बहुत पसन्द आये। खैर।

: ८० :

डायरीसे– वर्धा, १९–४–३८

सेगांव– बापूसे करीब सवा घंटा बातचीत। जयपुर प्रजा मंडल, खादी प्रदर्शनी, वर्किंग कमेटी, स्वास्थ्य व मानसिक स्थिति, महिला मंडल व परीक्षा, मानसिक अशांति व महर्षि रमण, इत्यादि प्रश्नोंपर विचार-विनिमय।

: ८१ :

डायरीसे– वर्धा, २२–४–३८

सेगांवमें बापूसे दिल खोलकर स्पष्ट तौरसे मनकी स्थिति, कमजोरीका वर्णन किया। बापूने जवाब दिया। अपनी स्थितिका वर्णन किया। किशोरलालभाई, राजकुमारी, प्यारेलाल, मीराबहन वगैरह वहां मौजूद थे। मन थोड़ा हलका भी हुआ व दुःख भी हुआ।

: ८२ :

डायरीसे– (रेलमें) सवाई माधोपुर, जयपुर, ३०–४–३८

जिन्नासे समझौतेकी जो बात चल रही है, उस बारेमें बापूने अपने विचार कहे। मिनिस्ट्रीके बारेमें विचार-विनिमय। फ्रंटियरके बारेमें

महादेवभाईका नोट पढ़ा। थोड़ा दुःख हुआ। बापूके पास ही नाश्ता किया। बापू अपनी निराशाकी बातें करते थे, मैं अपनी।

: ८३ :

डायरीसे— वर्धा, २३-६-३८

जानकीसे कहा कि बापूको कहकर मन हलका कर लो, परन्तु वैसा नहीं हो सका।

: ८४ :

डायरीसे— देहली, १-१०-३८

पू. बापूके पास सरदार, घनश्यामदासजी, तीन बजेसे साढ़े चार बजे तक। सरदार वल्लभभाईका व मेरा मतभेद था, उसका खुलासा। आखिरमें यह भेद बहुत तीव्र स्वरूपका व दुःखदायक हो गया था। और तो कारण थे ही, यह भी एक कारण महत्वका था, जिससे वर्किंग कमेटीसे मुझे निकलना आवश्यक मालूम हुआ। पू. बापूने स्वीकृति दी। त्यागपत्रके मसविदेमें थोड़ी दुरुस्ती बापूने की।

: ८५ :

डायरीसे— देहली, २-१०-३८

वर्किंग कमेटीके पदसे त्यागपत्र दिया। बापूजीने सुन्दर व साफ तौरसे मेरी वकालत की। मैंने भी जो कहना था थोड़ेमें कहा। मेम्बर लोग स्वीकार करना नहीं चाहते थे। पू. बापूने विश्वास दिलाया कि वह ठीक कर लेंगे।

: ८६ :

डायरीसे— वर्धा, १७-१०-३८

सुभाषबाबूसे देर तक बातचीत। उनका आग्रहपूर्वक कहना था कि वर्किंग कमेटीसे मेरे त्यागपत्र स्वीकार करनेसे बहुत ज्यादा गलतफहमी फैलेगी। कई उदाहरण दिये। कमलसे बात हुई वह कही। वर्किंग कमेटीके सभी मेम्बरोंकी इच्छा है कि मुझे त्यागपत्र नहीं देना चाहिये, इत्यादि। मैंने अपनी मानसिक स्थिति समझाकर कही। उन्होंने आराम लेने व छुट्टी लेनेको कहा। उन्होंने कहा, वह पू. बापूको पत्र लिखेंगे।[1]

: ८७ :

डायरीसे— वर्धा, २७-११-३८

बापूसे बात करनेके नोट तैयार किये।

१. देखिए पृष्ठ ३६१-२, पत्र संख्या ३६।

सेगांव—बापूसे सवा घंटेके करीब बातचीत। मेरे जन्मदिनका पत्र[1] उन्हें नहीं मिला। आश्चर्य हुआ। प्यारेलालसे बातचीत। उसे भी पत्र नहीं मिला। बापूसे खुलासा।

मेरे त्यागपत्रोंके बारेमें वर्किंग कमेटीके समय मैं बाहर रह सकता हूं, उन्होंने कहा। जयपुरकी जिम्मेदारी नहीं छोड़ी जा सकती। नागपुरकी भी। परन्तु नागपुरकी तो शायद छोड़ी भी जा सकती है, अगर वह मेरा कहना न माने तो। राजकोटका उदाहरण जयपुर, उदयपुर, हैद्राबादको नहीं लागू करना चाहिये, बापूने साफ व जोरसे कहा।

: ८८ :

डायरीसे— मोरां-सागर, २८—२—३९

मुझे विनोबाके संसर्गमें अधिक रहना चाहिये। उसीसे मेरा मार्ग साफ निष्कंटक हो सकेगा व जीवनमें असली उत्साह प्राप्त हो सकेगा।

बापूके प्रेमका व उदारताका खयाल करता हूं तो अपनेको बहुत नीचा व नालायक समझने लगता हूं। बापूको समय बहुत कम मिलता है, इसलिए उनसे भी कई बार न्यायके मामलेमें गलतियां होती दिखाई देती हैं। परन्तु उनके मनमें द्वेष, ईर्षा, किसीका बिगाड़ हो यह वृत्ति न होनेसे उसका परिणाम ज्यादा कर ठीक ही होता है।

: ८९ :

डायरीसे— मोरां-सागर, ८—३—३९

बापूके उपवास करनेकी, छोड़नेकी व राजकोटका मामला सुलझनेकी खबरें पढ़कर सुख मिला। दो तीन रोजसे जो निरुत्साह था, वह चला गया।

: ९० :

डायरीसे— मोरां-सागर, ३—५—३९

बापूने जयपुर-कैदियोंके बारेमें जो लिखा वह देखा। मेरा भी उल्लेख किया है। इन दिनोंमें मेरी तो इच्छा रही कि मेरे स्थान बदलनेके बारेमें या साथी देनेके बारेमें कोई भी कोशिश न हो तो ठीक रहे। अब लगता है कि मुझे यहांसे जल्दी ही दूसरे स्थान पर ले जावेंगे।

: ९१ :

डायरीसे— (जयपुर कैदी) कर्णावतोंका बाग, २—८—३९

आज दोपहरको स्वप्न आया कि महादेवभाई व पू. बापू मुझे देखने आये। स्वास्थ्य व जयपुर स्थिति पर बातचीत। बादमें उन्होंने ए. जी. सी. (राजपूताना रेजिडेंट) से मिलने जानेकी तैयारी की। इतनेमें आंख खुल गई।

१. देखिए पृष्ठ २०२-४, पत्र संख्या २११।

: ९२ :

डायरीसे— वर्धा, १९–८–३९

सेगांव — बापूजीके पास गये। बापूजीने मेरे बारेमें डॉ. भरूचा, जीवराजजी व डॉ. मेहताकी रिपोर्ट ध्यानपूर्वक सुनी। विचार-विनिमयके बाद पूना रहकर डॉ. मेहताकी देखरेखमें इलाज करानेकी बापूने सलाह दी। जयपुर जाना जरूरी है, इसलिए एक महीने तक इच्छा हो तो डॉ. दासकी होमियोपैथिक चिकित्सा करके देख लूं। बापूने कहा, अनाज खाना एक बार बन्द कर दो। फल, साग, दूध लो। आजसे शुरू तो किया है।

: ९३ :

डायरीसे— वर्धा, २०–८–३९(?)

बापूके पास जाकर आये। जयपुर राज्य प्रजा मंडलके बारेमें नाममें थोड़ा परिवर्तन करना जरूरी मालूम दे तो कर लिया जावे। प्रजा मंडलके आफिस-बेअरर दूसरी राजनैतिक संस्थाके नहीं हों, यह बात बिलकुल स्वीकार न की जावे। अगर अधिकारी लोग लड़ना ही चाहते हों तो हम लड़ेंगे। थोड़े चुने हुए साथियोंको लेकर मुझे स्वास्थ्यके लिए व संचालनके लिए बाहर रहना जरूरी होगा। श्रावणकोरमें सत्याग्रह करनेकी मैं इजाजत देनेवाला हूं। बाहरके लोगोंकी सलाह सहायताके प्रश्नके विरोधके बारेमें बापूको कहा। मेरे त्यागपत्र, कांग्रेस-सभापति, गान्धी सेवा संघ सभापतिके बारेमें विचार-विनिमय।

: ९४ :

डायरीसे— दिल्ली, ४–१०–३९

बापूके सामने वाइसरायसे मिलनेके बारेमें मौलानाने ना कहा। बापूको बुरा लगा। समझाना। मुझे तो मौलानाके कहनेमें सार मालूम हुआ।

बापूसे शामकी प्रार्थनाके बाद खानगीमें अपनी कमजोरियोंका पूरा चित्र खोलकर कहा। उन्होंने हिम्मत व उत्साह दिलाया।

: ९५ :

डायरीसे— ८–१०–३९

वर्किंग कमेटी ८॥ से ११ व २ से ८ तक हुई। बापूका खुलासा रोषपूर्वक वर्किंग कमेटीमें ठीक रहा। लड़ाईके समय अगर ब्रिटिश सरकारने वर्किंग कमेटीकी मांग मंजूर कर ली तो बापूके व्यवहारका खुलासा ठीक हुआ। बापूको चोट तो खूब पहुँच रही है, परन्तु उपाय क्या?

देशी रियासतकी कार्यकारिणी जवाहरलालजीके सभापतित्वमें हुई। वहां १० बजे रात तक बैठना। जवाहरलालजीका स्टेटमेंट ठीक हुआ। मेरे

बारेमें भी जिक्र किया। वर्किंग कमेटी यह पोर्टफोलियो मुझे सौंपना चाहती है। बापूने मुझसे कहा, तब मैंने कहा कि मेरी अभी तैयारी नहीं है।

: ९६ :

डायरीसे— रामगढ़ कांग्रेस, १८–३–४०

वर्किंग कमेटी सुबह हुई। बादमें दोपहरको बापूकी उपस्थितिमें हुई। बापूको जवाबदारीसे मुक्त करनेके प्रस्तावको मौलाना, सरदार, जवाहरलाल वगैरहने नहीं माना। मैं मुक्त करनेके पक्षमें था। प्रफुल्लबाबू, देव, पट्टाभी, और राजाजीकी राय मेरे साथ थी।

: ९७ :

डायरीसे— वर्धा, २२–३–४०

बापू रामगढ़से आये, उनके साथ पैदल बंगले तक आया। टाँगमें थोड़ा दर्द तो था ही। बापूने मांके कान पकड़े, मांने बापूके कान पकड़े। हँसा-हँसी।

: ९८ :

डायरीसे— पूना, २८–७–४०

ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी ८–१५ से ११–१५ तक व २ से ८–३० तक हुई। आज काम समाप्त हुआ। देहली प्रस्ताव पर मत पक्षमें ९५, विरुद्धमें ४७। तटस्थ नहीं गिने गये। सब मिलकर उपस्थिति १९० के करीब होनी चाहिये। प्रस्ताव पास तो हुआ, परन्तु मनमें समाधान नहीं मिला। जवाहरलालका भाषण ठीक हुआ। राजाजीका भाषण व जवाब तो ठीक था, परन्तु बापूके बारेमें अव्यवहारिक आदि समालोचना जो उन्होंने व सरदारने की वह थोड़ी बुरी मालूम दी, क्योंकि इन लोगोंके मुंहसे इन बीस वर्षोंमें पहली बार ही इस प्रकार सुननेको मिला। वैसे तो मेरी भी राय इनके साथ ही थी, परन्तु वह कमजोरी आदिके कारणोंको लेकर।

: ९९ :

डायरीसे— नई दिल्ली, १–१०–४०

बापूजीने शिमलाकी बातचीतका सारांश कहा। बापूजीके साथ घूमना। नीचे लिखे प्रश्नोंका खुलासा व उन्होंने वाइसरायसे जयपुरके बारेमें बातें कीं, वे सुनीं। वाइसराय व आजादीका खुलासा सुना। मुझे जयपुरकी स्थिति सुलझानेमें ही विशेष समय लगानेकी सलाह दी। राजा ज्ञाननाथजी चिढ़कर जेल आदि भेजें तो ठीक ही है। राजेन्द्रबाबूको सीकरमें ही आराम लेने देना। वर्किंग कमेटीमें न आनेसे चलेगा, कहा। खादीकी जो रकम बम्बईमें जमा हुई, उसमें राजस्थानकी रकम राजपूतानाके लिए ईअरमार्क करनेको मैंने कहा। उन्होंने सुन लिया—विरोध नहीं किया। एक लाख तक। भावी प्रोग्रामकी थोड़ी रूपरेखा समझी।

: १०० :

डायरीसे— वर्धा, १३–१०–४०

पू. बापूके साथ पौनार। विनोबासे बातचीत। प्रथम सत्याग्रहीके नाते विचार-विनिमय। विनोबा अपना बयान तैयार करेंगे। बापू स्टेटमेंट बनावेंगे। विनोबा बापूसे ता. १५ मंगलवारको दो बजे मिलेंगे। बादमें निश्चित होगा। बहुत करके पौनारसे विनोबा बुध या गुरुवारको सत्याग्रह शुरू करेंगे।

: १०१ :

डायरीसे— नागपुर जेल, १५–१–४१

विनोबाके प्रति दिन-दिन श्रद्धा बढ़ती ही जाती है। परमात्मा मुझे अगर इस देहसे उनकी श्रद्धाके योग्य बना सके तो वह दिन मेरे लिए धन्य होगा। मुझे दुनियामें बापू पिता व विनोबा गुरुका प्रेम दे सकते हैं, अगर मैं अपनेको योग्य बना सकूं तो।

: १०२ :

डायरीसे— नागपुर जेल, १४–५–४१

बापूजी इतना प्रेम क्यों करते हैं? विनोबा भी। बापूजीको मेरी इस बीमारीके कारण दो तीन रोज बहुत बेचैनी रही। डा. दास कहते थे वे यहां मुझे देखने आनेको भी तैयार थे। परन्तु मेरे मना कराने पर व डॉ. दासने भी कहा कि जरूरत नहीं है, तब नहीं आये।

: १०३ :

डायरीसे— सेवाग्राम, १४–६–४१

बापूजीसे जेल जानेके बाद आज प्रथम बार खानगी बातचीत। किशोरलालभाई, राजकुमारी अमृत कौर, गोमतीबहन, डॉ. सुशीला वहां थे। मैंने अपनी मानसिक स्थिति कही। ता. १४ मईको नागपुर जेलमें डायरीमें जो नोट किया था, वह पढ़कर सुनाया। अन्य विचार-विनिमय। बापूको डायरी सुनानेके बाद मन थोड़ा हलका हुआ।

: १०४ :

डायरीसे— सेवाग्राम, १९–६–४१

पू. बापूसे स्वास्थ्य, प्रोग्राम, मनःस्थिति पर थोड़ी देर बात। उनकी इच्छा यह रही कि इस समय मुझे यहीं रहना चाहिये। मुझे एकान्तमें १५–२० मिनट रोज कुछ समय तक देना सम्भव हो तो, जो समय बापूको अनुकूल हो, देनेको कहा।

: १०५ :

प्रिय जानकी, सेवाग्राम, २४–६–४१

पू. बापूसे, मौका लगने पर, मैं ही मेरे क्रोध आदि आने व मेरा व्यवहार तुम्हें प्रायः असन्तोष देनेवाला होता है, इत्यादिके बारेमें कहना चाहता हूं। तुम्हें तो कहनेका पूर्ण अधिकार है ही। कोई रास्ता निकल सके तो सन्तोष ही होगा। ज्यादा क्या लिखूं?

: १०६ :

डायरीसे– सेवाग्राम, २६–६–४१

पू. बापूसे आज घूमते समय व बादमें १० से ११ तक एकान्तमें मनःस्थिति पर साफ-साफ बातें। अपनी स्थिति ज्यादा स्पष्ट तौरसे समझा सका। अब मुझे आशा हो गई है कि वे मेरी स्थिति पूरी तौरसे समझ गये हैं। परमात्माने चाहा तो कोई मार्ग निकल आवेगा।

: १०७ :

चि. मदू, शिमला वेस्ट, १९–७–४१

यहां एक तोफाबाई है। इससे घरके सब लोग इतना प्रेम करते हैं व सेवा इतनी ज्यादा करते हैं कि सचमुच आश्चर्य होता है। तुम्हारी मां व बाप इतना प्रेम व सेवा पू. बापू, विनोबा या अन्य गुरुजनोंकी या बालकोंकी कर सकें तो कितना अच्छा हो! यह तोफाबाई[१] कौन है, यह पू. बापूसे पूछ लेना। वह जानते हैं। उनकी गोदमें भी बैठनेका इसे सौभाग्य मिला है।

: १०८ :

चि. मदू, शिमला वेस्ट, २४–७–४१

बापूको पत्र इसलिए नहीं लिखता कि उन्हें जवाब लिखना पड़ेगा। बहन तो रोज लिखती ही हैं। बापू भी उन्हें लिखते रहते हैं, फिर दुहेरा क्यों बापूका काम बढ़ाऊं? तुम कह ही देती होगी।

तुझे तो बापू ग्वारपाठेका पाक खिलाते हैं और मुझे पेट भरकर रोटी भी नहीं देते! मिठाईकी तो बात ही कहां? क्या यह इन्साफ है?

: १०९ :

चि. मदू, मनोर विले, शिमला, २८–७–४१

एक बात अगर तुम्हारी मां कर सके याने पू. बापूके ऊपर हृदयसे पूरी श्रद्धा बढ़ा सके तो मुझे आशा है उसे खूब लाभ पहुंचेगा। बीच-बीचमें उसे बापूसे बात करनेका मौका मिलता रहे तो ठीक रहेगा। तुम भी इस बातका खयाल रखना। मैंने भी बापूको सूचित तो कर दिया है। बापू पर बोझ न

१. राजकुमारी अमृत कौरकी कुतियाका नाम।

पड़ते हुए उनके अनुभवोंसे हम लोगोंको लाभ अवश्य उठाना चाहिये। बापूसे ज्यादा शुद्ध प्रेम और कहांसे मिलनेवाला है ?

: ११० :

चि. मद्दू, रायपुर ग्रांट, देहरादून, २१-८-४१

मुझे बाप तो वापू मिल ही गये थे, मां आनन्दमयीजी मिल गईं। अब भी मुझे शान्ति नहीं मिली तो मेरा ही कोई भारी पाप आड़े आना सम्भव होगा। मुझे आशा है, शान्ति जरूर मिल जावेगी। मां आनन्दमयीसे मिलनेकी सूचना तो पूज्य बापूने ही की थी।

: १११ :

चि. मद्दू, १०-९-४१

पू. बापूजीसे मिलने पर खानपानके बंधन थोड़े ढीले करनेकी इच्छा है, अन्यथा सफरमें थोड़ा कष्ट होता है। खर्च भी ज्यादा आता है। मौका लगे तो मेरे पत्रका सारांश पू. बापूसे कह देना।

: ११२ :

डायरीसे– १-१-४२

पू. बापू कांग्रेससे अलग हुए। वह सब पढ़कर थोड़ा बुरा मालूम हुआ। परन्तु विचार करने पर लगा कि ठीक ही हुआ।

: ११३ :

डायरीसे– गोपुरी, १३-१-४२

वर्किंग कमेटी सुबह ९ से ११, दोपहरको २-१५ से ६-१५ तक हुई। दोपहरकी मीटिंगमें पू. बापूजी भी आये। ठीक चर्चा, विचार-विनिमय हुआ। मेरे त्यागपत्रके बारेमें बापूजीने कहा कि मौलाना तथा अन्य सदस्योंकी वृत्ति त्यागपत्र स्वीकार करनेकी नहीं है तो फिर मुझे इस समय आग्रह नहीं करना चाहिये। मैं अपने मन पर बोझ नहीं रखूं, इत्यादि।

परिशिष्ट ३

हिन्दी नवजीवन, यंग इंडिया, हरिजन सेवक तथा हरिजनसे जमनालालजी संबंधी चुने हुए अंश

THE ISSUE IN NAGPUR

In one of his memorable articles on Civil Disobedience Mahatma Gandhi has expressed his dream of ideal civil resisters. They would be, he said, like flocks of innocent lamb, being led to the slaughter house, with full consciousness of the fact.

* * * *

When I visited Nagpur last week, and when I saw batches of volunteers with the Swarajya Flag, being led to the scene of Satyagraha by Seth Jamnalalji, I saw with my own eyes the dream of Mahatmaji realised. It was a privilege to watch these valiant bands march through the town to the Civil Lines, doomed to be arrested and led to prison. They were marching cheerfully on.

* * * *

The Mussalman community has also given more than its full quota, and the fair sex is also represented.

And what is it that has drawn such devoted fighters to this movement? Surely it is the unique sacrifice of the men who are leading the movement, and their simple faith. But no less is the justice of the cause responsible for the hearty response. 'Surely you should not offend the susceptibilities of those who are devoted to the Union Jack?' was the question put to Shriyut Jamnalalji by one of the police officers. Straight went the reply: 'Why should they resent the Swarajya Flag? They might to-morrow resent my white cap and my Khadi dhoti. Am I therefore to discard them when I enter those sacred precincts called the Civil Lines?' That is the position so truly put by the man, than whom no one has sacrificed more for the Constructive Programme, but who feels that even his absorbing interest in that programme should not allow him to swallow the insult.

* * * *

I want to emphasise the fact that there is not a trace of aggression in Shriyut Jamnalalji's movement.

* * * *

Here therefore is a fight which the rest of the country cannot look on with indifference or even amused interest. I think the least that the All India Congress Committee can do is to set the seal of their approval on the Nagpur movement.

* * * *

It is a fight which if it is fought to the finish is fraught with great potentialities. It is a fight which will prepare people for an undertaking of a larger magnitude, viz., Mass Civil Disobedience. I hope, therefore, that the Working Committee and the next All-India Congress Committee will give the question the consideration that it deserves.

Young India, 17-5-23] —*Mahadev Desai*

GO TO NAGPUR

"I trust that by God's grace and the blessings of Bapu and all other elders I shall be able to pass the incarceration with courage and peaceful mind and utilise the time in spiritual meditation."

So wrote Jamnalal Bajaj, the beloved of the nation, on 16th June in a letter written the day before his arrest. "There is every probability of the [illegible] arrested possibly before 18th instant," he [illegible] and the statement has proved true. Those [illegible] Seth Jamnalal Bajaj and his work during these last three years, will understand the true sincerity and depth of feeling hidden in the simple words reproduced above which he wrote in expectation of his arrest. Of Jamnalalji's generosity and unlimited readiness for sacrifice of any sort that the cause demanded, the nation knows. No one had tasted like Jamnalalji the sweets of domestic happiness, wealth, position, influence and what is coveted by men more than anything else—friendship with the great and the powerful; in short everything that makes for abstinence from the sufferings and privations involved in the great enterprise initiated by Mahatmaji. Yet in a moment he changed his life completely and spurning all the ease and pleasures that could be purchased by his wealth and the power and influence that lay at his feet he

plunged into the thick of the fight like the humblest worker. Who can say our nation has not risen in stature?

Young India, 21-6-23]   —*C. Rajagopalachari*

धर्मवीर जमनालालजी

"जिस दिन मैं महात्माजीके पुत्र-वात्सल्यके योग्य हो सकूँगा, वही समय मेरे जीवनके लिए धन्य होगा। महात्माजीकी अनुपम दयासे अपनी कमजोरियोंको तो कमसे कम थोड़ा बहुत पहचानने लगा हूँ।"

इन मृदुल वचनोंमें मृदुल-हृदय जमनालालजीका सारा जीवन समा जाता है। दो वर्ष पहले, जब वे नागपुर-महासभाकी स्वागत-समितिके सभापति थे, मैंने उनका कुछ परिचय पाठकोंको कराया था। पर आज मैं देखता हूँ कि उनके थोड़े परिचयसे जमनालालजीका जो वर्णन मैंने किया था वह अब गाढ़ परिचय हो जाने पर भी, ज्योंका त्यों बना हुआ है। इसकी कुंजी है उनके जीवनकी सरलता। सिर्फ दो ही दिनके सहवाससे आप उन्हें पहचान सकते हैं और फिर वर्षों तक उनके संबंधकी अपनी धारणाको बदलनेकी जरूरत आपको न रहेगी।

जमनालालजी स्वभावतः बड़े प्रेमी और उदार हैं। इससे जिन लोगोंका साबका उनसे पड़ता है उनका हृदय वे अपने लड़कपनसे ही जीतते आये हैं। धनाढ्य जनको आश्रित, खुशामदिये तथा अंगरेजी हाकिम आम तौर पर घेरे रहते हैं। उन सबने उनकी अमियभरी चितवनका अनुभव किया है। पर वे यह मन्त्र लड़कपनसे ही सीखे हैं कि लक्ष्मी दुर्लभ रत्न है। उसका नाश करनेसे दुलत्तियाँ खानी पड़ती हैं। वह तो तभी श्रेय कार्योंमें बाधक नहीं हो सकती जब उसे अपने काबूमें रक्खा जाय। इसलिये वे तभीसे साधु-समागम करने लगे। "लक्ष्मीके बदौलत प्राप्त प्रतिष्ठा क्षणिक है, परन्तु सच्छील प्राप्त प्रतिष्ठा चिरस्थायी है," यह जानकर ही उन्होंने लो. तिलक, मालवीयजी, इत्यादिका समागम किया। 'जयन्ती अंक' में आप लिखते हैं—"इन सब महान् नरोंका परिचय मेरे लिए लाभदायक हुआ, पर महात्माजीने तो मेरी मनोभूमिका ही बदल दी।" अनेक सत्पुरुषोंका समागम करते करते बापूजी उन्हें मिले। उन्हें उन्होंने अपना हृदय-देव बनाया। १७वीं महासभाके समय उन्हें 'रायबहादुर' का खिताब मिला। कलकत्तेमें वे बापूजीके पास आकर कहते हैं—"मुझे आशीष दीजिएगा?" बापूजीने कहा—"आशीर्वाद क्या दूँ? इसका सदुपयोग करो। अपमान संचित करना आसान है; पर खिताबकी रक्षा करना मुश्किल है। खिताब बुरी चीज है। उसका सदुपयोगकी अपेक्षा दुरुपयोग ही अधिक होता है। आप हर मौके पर इसका सदुपयोग कीजिए। मैं चाहता हूँ कि यह आपके उत्कर्ष और देशभक्तिके लिए

बाधक न हो।" सच पूछिए तो उसी दिन उन्होंने दीक्षा ली। उसके बाद दिन-पर-दिन उन्होंने अपना उत्कर्ष ही किया है—दिन-पर-दिन वे अपने गुरु, अपनेको पुनर्जन्म दिलानेवाले पिताके पात्र होनेके लिए अधिकाधिक योग्य होते गये हैं।

नागपुर-महासभाके समय वे अपनी 'रायबहादुरी' छोड़कर राजनीतिके क्षेत्रमें उतरे। असहयोगके कामके लिए एक लाख रुपये बापूजीके चरणोंमें अर्पण किये। उस समय उनके मनकी स्थिति अद्भुत थी। एक दिन बापूजीने मुझसे कहा: "इनकी नम्रताका तो कोई ठिकाना ही नहीं। मुझसे कहते हैं कि मुझे देवदासकी तरह मानिए। मुझे आज्ञा कीजिए, मेरी भूलें सुधारिए, मुझे पांचवां पुत्र समझिए।" मित्र और स्नेहीके बदले वे नागपुरमें पांचवें पुत्र बने। उस दिन उनकी जिम्मेदारी पहलेसे अधिक बढ़ी। उस दिनसे वे प्रत्येक काम करते समय अपने दिलसे यही पूछने लगे: "बापूजी मुझे यदि यह काम करते समय देखें तो उनके दिल पर क्या असर हो?" और उनके अनुसार वे काम करते हैं। तबसे लेकर अबतकके उनके कार्योंका रहस्य इससे जाना जा सकता है।

ये बहुत पढ़े-लिखे नहीं हैं। हिन्दी, मराठी, गुजराती थोड़ा-बहुत जानते हैं। कुछ ही दिनोंसे वे राजगोपालाचार्यजीके साथ वैसी ही टूटी-फूटी अंगरेजी बोलना सीख गये हैं जैसी कि राजगोपालाचार्यजी टूटी-फूटी हिन्दी बोल लेते हैं। पर इस कमीसे, शानदार शिक्षाके अभावसे, उनका काम नहीं अटकता। उनकी व्यवहार-दक्षताको देखकर राजगोपालाचार्यजी ही नहीं, बल्कि विठ्ठलभाई पटेल जैसे भी दंग रह जाते हैं। पर जैसा कि मैं ऊपर कह चुका हूँ यह बाहरी व्यवहार-दक्षता नहीं। उसके मूलमें उनका यही भाव रहता है कि—"यह [illegible] होगा या नहीं?" जो टाटा-कंपनी मुल्शी-पेटावालों [illegible] उसके शेअर कैसे भर सकता हूँ? कलकत्तेकी दुकानके सिलसिलेमें अदालतोंमें बहुत जाना पड़ता है, इसलिए क्या कलकत्तेकी दुकानका काम बन्द कर देना ठीक नहीं? ऐसे सवाल ये बारबार पूछा करते हैं, और उत्तर प्राप्त करके उनका फैसला तुरन्त कर देते हैं।

उनके साथ रहने पर हम यह जान सकते हैं कि व्यापार तो उनके लिए एक मामूली बात है। जब डाक आती है तब उनके पास बैठकर देखना चाहिए। एक भारी पुलन्दा डाकका आता है। सबके उत्तर [illegible] लिखाते चले जाते हैं। कितने ही पत्र आर्थिक सहायता चाहनेवालोंके होते हैं। "कहां काम करते हैं? कामके संबंधमें इन्हें कोई पत्र लिखा है? यहां काफी बड़ा अच्छा काम कर रहा है। अच्छा, इतने रुपये भेज दो।" यह नित्यका काम है। बापूजी जेलमें गये। चन्देके बारेमें लोगोंकी अश्रद्धा बढ़ गई। वे

शिथिल हो गये। उनकी श्रद्धा बढ़ानेके लिए इसी भावसे उन्होंने २॥ लाख रुपये 'सेवक संघ' स्थापित करनेके निमित्त निकाले हैं कि बापूजीके समयमें जितना त्याग किया उससे अधिक त्याग करनेकी अब आवश्यकता है। पर मैं कह चुका हूँ कि त्याग तो उनके लिए एक मामूली बात है। लेकिन, त्यागसे मिलनेवाली शोहरत उन्हें पसंद नहीं। वे ऐसा ही दान करनेमें आनन्द मानते हैं कि, 'दाहिने हाथकी खबर बायें हाथको न हो।' इस त्याग और दानसे अधिक बढ़ी-चढ़ी उनकी पूर्वोक्त प्रवृत्ति है--एक ही शब्दमें कहूँ तो उनका धर्म-भाव है। इस धर्म-भावके कारण वे यदि किसी दिन मनुष्य-जातिके लिए फकीर बन बैठें तो आश्चर्य नहीं। अमेरिकाके करोड़पति लोग लाखों-करोड़ों रुपया दान करते हैं। पर उसमें उनका यह भाव प्रायः रहता है कि इस अतुल सम्पत्तिका विनियोग किस प्रकार किया जाय। मानव-जातिके हितके लिए फकीर होनेका भाव शायद ही उनके दिलमें होता हो। जमनालालजीके त्यागमें यही विशेषता है।

आज जो वे असहयोग-आन्दोलनके सिद्धान्तों पर इस प्रकार अटल हैं उसकी कुंजी उनका यही धर्म-भाव है। इसी कारण विट्ठलभाई और पण्डित मोतीलालजी जैसे मानते हैं कि हम सब लोगोंको अपनी तरफ कर सकते हैं, पर इस बनियेको मिलाना मुश्किल है।

वे शान्तिके साथ खादीका काम करते थे। धन एकत्र कर लाते थे। व्याख्यानबाजीकी हवस तो उन्हें हो ही क्यों? और लड़ाईको न्योता देनेकी लालसा तो उससे भी कम। पर नागपुरमें ऐसी स्थिति आ खड़ी हुई जिसकी कल्पना भी उन्हें न थी। उन्होंने अपनी शक्तिको तौलकर लड़ाईका शंख फूँका।

'प्रारभ्यचोत्तम जना न परित्यजन्ति' के भावसे वे लड़ाईमें कूदे और आज जेलमें बैठे हुए हैं।

जमनालालजी उन लोगोंमेंसे हैं जिन्हें साबरमती जेलसे बापूजीका पत्र मिलनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उनके नामका लंबा पत्र[1] प्रकाशित करनेका मुझे अधिकार नहीं। पर उसका कुछ अंश जो मदराससे 'स्वराज्य' में आया है यहां दे देता हूँ। बापूजीने लिखा था :--

"स्त्री, पुत्रादि, मित्र, परिग्रह, बन्धु ये सब सत्यके अधीन रहने चाहिए। सत्यकी खोज करते हुए यदि इन सबके सर्वथा त्याग करनेमें तत्पर रहें तभी सत्याग्रही हो सकते हैं। मैं इसी हेतुसे इस आन्दोलनमें पड़ा हूँ कि इस धर्मका पालन अधिक आसानीसे हो जाय। और इसीलिए आप जैसोंकी आहुति देते हुए हिचकिचाता नहीं। उसका बाहरी स्वरूप भारतीय स्वराज्य है।

१. देखिए पृष्ठ १५-२२, पत्र संख्या १७।

उसका सच्चा स्वरूप तो है प्रत्येक व्यक्तिका स्वराज्य। यह जो देर हो रही है उसका कारण यह है कि अभी एक भी ऐसा शुद्ध सत्याग्रही तैयार नहीं हुआ है। पर इससे घबड़ानेकी जरा भी आवश्यकता नहीं।"

भविष्यमें ऐसे आदर्श सत्याग्रही होनेवालोंका दर्शन मैं जमनालालजीमें करता हूँ। कायिक अहिंसा-परायण तो बहुत लोग होंगे; परन्तु वाचिक अहिंसा-परायण कम लोग हैं। उनमें एक जमनालालजी भी हैं। सरकारी हाकिम उनके प्रेम-भावसे चक्करमें पड़ जाते हैं और मेरा ख्याल है कि उन्हें गिरफ्तार करते हुए उन्हें बहुत ही दुःख हुआ होगा। ऐसे सत्याग्रहीका कारावास सच्चा कारावास है।

हिन्दी नवजीवन, २४-६-२३] — महादेव हरिभाई देसाई

नागपुर-संग्राम

"मैं धर्म समझकर इसमें शामिल हुआ हूँ"

वर्धाका मेजिस्ट्रेट जमनालालजीको 'एक मशहूर षड्यन्त्री' की पदवी देता है, और फिर पुलिसके गवाहसे पूछता है—"यह जमनालाल कौन है?" उधर नागपुरमें इसी जमनालालको जेलमें बैठाकर उनपर मुकदमा चलानेका जोड़-तोड़ हो रहा था। वर्धाके मेजिस्ट्रेटने जहाँ जमनालालजीको षड्यन्त्रका मुजरिम करार दे दिया, वहाँ नागपुरके मेजिस्ट्रेटने उन परसे 'षड्यन्त्र आदिका' आरोप उठा लिया! सिर्फ खिलाफ कानून लोगोंका दल इकट्ठा करनेमें मदद करनेका जुर्म उनपर लगाया गया है।

* * * *

उनके मुकदमेकी एक मनोरंजक घटना यहाँ दिये बिना नहीं रहा जाता। जमनालालजीसे अनेक सवाल पूछे जाते थे। उनके जवाब वे हिन्दीमें देते थे। मि. स्लोनीके साथ एक हिन्दुस्तानी मेजिस्ट्रेट दुभाषियेके तौर पर बैठा था। जमनालालजीने कहा—"मुझे जितनी कड़ी सजा दी जा सके उतनी दीजिए।" दुभाषिये मेजिस्ट्रेटने उसका जो तरजुमा किया उसका यह अर्थ होता था—"दूसरे सब लोगोंसे मैंने ज्यादा अपराध किया है, इसलिए मुझे सबसे अधिक सजा दीजिए।" सरकारी वकील चक्करमें पड़ा। उसने कहा—"जमनालालजीके कहनेका आशय तो यह मालूम होता है कि कानूनके अनुसार मुझे जितनी अधिक सजा दी जा सकती हो उतनी दीजिए।" इस बात पर चर्चा होने लगी। आखिर इन्साफ करनेका भार जमनालालजी पर पड़ा। उनसे पूछा गया—आपका आशय क्या था? जमनालालजीने शांत भावसे उत्तर दिया, "दोनों वातों कहनेका भाव एक ही था।" मेजिस्ट्रेट दंग रह गया।

* * * *

जमनालालजीकी शान्तिकी तो मर्यादा ही नहीं थी। उनका पेश किया गया बयान गंभीरतासे भरा हुआ था। उसमें एक भी शब्द आवश्यकतासे अधिक नहीं था।

"मैं धर्म समझकर इस आन्दोलनमें शरीक हुआ हूँ। धर्मके मार्गमें आनेवाले कष्टोंको सहन करना मेरा परम कर्तव्य है। उन्हें सहन करनेके लिए ईश्वर मुझे पूरी शक्ति और उत्साह दे।"

हिन्दी नवजीवन, १–७–२३] —महादेव हरिभाई देसाई

JAMNALALJI

Seth Jamnalal Bajaj has been awarded rigorous imprisonment for eighteen months and a fine of Rs. 3,000/- with a further term of four and a half months in default. Almost every national worker in India knows him personally as an affectionate brother, and will be glad to know that he is happier today in prison than at any time before. Words fail when the heart is full.

If there be any doubt still in any one's mind as to the Executive power carrying the magistracy as bond-maid, it will be cleared by the sentence imposed on Jamnalalji. Government was not satisfied that the movement would die in six months. So three counts had to be made up in order to get thrice the maximum sentence provided by the law. So the indictment was laid that he was present and abetted on three days. "I was present on many more days, not only on three," said innocent Jamnalalji, not knowing the purpose of the Magistrate.

We were there the other day in the great big house of Sethji's. It did not seem a big house when the large heart of its owner filled it with his presence. But now it was so empty. We had a meeting and on the platform for the first time his picture was installed. This was enough to move the weaker among us to tears, which they tried to hide. We appealed to the people not to let Jamnalalji's great sacrifice run to waste like water in desert sand. Does Satan whisper in your ears about family, property, affairs, during this national struggle? Then think of Jamnalalji. Had not Jamnalalji wife, children, property and affairs to manage? I have not seen any father love his children more than Jamnalalji. I have rarely met men so fond of children whether they be his own or other people's. It may be that this element of his character it was that impelled him to undertake suffering and imprisonment so readily. What is this Government of ours under which the best of us, the rich and propertied and

men of responsibility, position, and education are in prison, instead of looking after their affairs? When I saw Jamnalalji inside the walls of Nagpur Jail the other day, I found him more happy and cheerful than at any time before, when he was in our miserable company. There was a beautiful smile and a satisfaction in his face, which I had not seen before and which I truly envied.

Young India, 19-7-23] —*C. Rajagopalachari*

भिक्षां देही

हजारों सैनिकोंको नागपुर सत्याग्रहके युद्धमें भेजना हो तो कमसे कम पाँच लाख रुपये सिर्फ रेल-भाड़ेके चाहिए। यह कोई बहुत भारी रकम नहीं है। यदि चाहें तो एक ही मारवाड़ी भाई दे सकते हैं। महासभाके कार्यके लिए जब मैं जमनालालजीके साथ भारतमें घूमनेके लिए निकला, तब अनेक मारवाड़ी भाइयोंसे मेरा परिचय हुआ था। मारवाड़ी महासभामें भी मैं हाजर था। मारवाड़ी जातिका जमनालालजी पर बेहद प्रेम मैंने देखा। अपनी जातिकी उन्होंने खूब सेवा की है। क्या इस समय जमनालालजीकी तपश्चर्या उनके मारवाड़ी भाइयोंका दिल नहीं पिघलायेगी? मुझे विश्वास है कि यदि उस जातिको यह खबर पहुँचा दी जाय तो इतनी रकम तो आसानीसे मिल सकेगी।

हिन्दी नवजीवन, २२–७–२३] — वल्लभभाई पटेल

अलवर हत्याकांड

लोग जिसे 'अलवर हत्याकांड' कहते हैं उसके सम्बन्धमें कलकत्तेकी कार्यसमितिमें श्री जमनालाल बजाजने एक प्रस्ताव उपस्थित किया था कि एक जाँच-समिति नियत की जाय। बरसोंसे महासभाकी यह परंपरा चली आयी है कि वह देशी राज्योंके भीतरी मामलोंमें हस्तक्षेप न करे। कार्य-समितिके सदस्योंने अनुभव किया कि यह परंपरा अच्छी है और इसको तोड़ना नादानी होगी। तब श्री. जमनालालजीने इस पर जोर न दिया। फिर भी मैंने उनसे यह कहा था कि मैं यं. इं. में इस प्रश्नकी चर्चा करूँगा।

हिन्दी नवजीवन, २०–७–२५] — मो. क. गांधी

एक स्मरणीय विवाह

श्री. जमनालाल बजाजकी पुत्री बहन कमलाबाईके विवाहकी विधि गत रविवार ता. २८ को सत्याग्रहाश्रममें की गई थी। रूढ़ि और परंपराको अधिकसे अधिक पकड़ कर बैठी हुई मारवाड़ी कौमके अग्रगण्य नेता

श्री. जमनालालजीने परंपराका त्याग करके बड़ी सादगीके साथ, किसी भी प्रकार आडम्बरके बिना, भोजनादिके बड़े भारी खर्चके बिना, यह विधि होने दी, इसलिये श्री. जमनालालजी और उनके सम्बन्धी श्री. केशवदेवजी धन्यवादके पात्र हैं। इस अवसर पर श्री. गांधीजीने वर-वधूको जो आशीर्वाद दिया, उसमें इसका महत्त्व स्पष्ट समझाया गया है और इस आदर्श विवाहके सम्बन्धमें उनके उद्गार प्रत्येक हिन्दूके लिए विचारणीय हैं:—

"आप लोग, भाई और बहनें दोनों, जो बाहरसे परिश्रम उठाकर रामेश्वरप्रसाद और कमला इन दोनोंको आशीर्वाद देनेको आये हो, इससे मुझे आनन्द होता है और मैं आपको धन्यवाद भी देता हूँ।

* * * *

"जमनालालजीका और मेरा जो सम्बन्ध है वह तो आप खूब जानते ही हैं। हम दोनोंमें यह निश्चय हुआ कि जितनी सादगीसे और कम खर्चसे विवाह कर सकें करना चाहिए। इस तरहसे विवाहकी क्रिया करनी चाहिए कि जिससे दोनों पर ऐसा प्रभाव पड़े कि वे विवाहका सच्चा अर्थ समझ सकें। विवाहको आडम्बर-रहित बनाना, भोजनादिको और गान-तानको स्थान नहीं देना। ऐसा अच्छी तरहसे कहां हो सकता है? अगर बम्बईमें किया जाय तो मारवाड़ी समाजको और जमनालालजीके मित्रोंको इससे पाठ मिलेगा। आजकल सुधारोंके नामसे जो अधर्म चल रहा है, वह वायु नष्ट हो जावेगा। जो धर्म समझना चाहें उनके लिए दृष्टांत हो जावेगा। परन्तु मुझे यह भय था कि जितनी सादगीके साथ यहां विवाह हो सकता है उतनी सादगीके साथ वहां नहीं हो सकेगा। इसकी दलीलोंमें मैं उतरना नहीं चाहता। इसी कारणसे मैंने वर्धाको भी छोड़ दिया और बम्बईको भी छोड़ दिया। परन्तु इस कार्यको कैसे किया जाय? जमनालालजी और उनके माता-पिताकी सम्मतिसे ही काम नहीं चल सकता था। रामेश्वरप्रसादके वडील वर्गकी भी सम्मतिकी जरूरत थी। प्रभुका अनुग्रह था कि केशवदेवजीने भी इसे स्वीकार कर लिया।

* * * *

"हम दोनोंने सोचा कि बिलकुल सादगीसे विवाह किया जाय। इसमें स्वार्थ और परमार्थ दोनों हैं। जमनालालजी और केशवदेवजीका, रामेश्वर-प्रसाद और कमलाका भला सोचना यह तो स्वार्थ, और दूसरोंको मार्ग बताना यह परमार्थ। आप देखेंगे कि इस विवाहमें आडम्बर नहीं होगा। नाच-गान नहीं होगा, विवाहके समय केवल धार्मिक विधियां ही की जायेंगी। आप लोगोंको निमंत्रण इस भावसे दिया गया है कि आप इसके साक्षी हों और इसमें आप सम्मत हों और ऐसी प्रतिज्ञा करें कि आप इसका अनुकरण करेंगे।

* * * *

"अन्तमें मैं इन दोनोंको आशीर्वाद देता हूं कि ये दोनों दीर्घायु हों और अपने वडिलोंको भी सुशोभित करें और धर्मकी रक्षा तथा देशकी सेवा करें।"
हिन्दी नवजीवन, ४–३–२६]

मुमुक्षु जमनालालजी

(१)

श्री. जमनालालजीके जीवनचरितके लेखकने जब गांधीजीसे पूछा कि उनका जीवनचरित लिख सकते हैं कि नहीं, तब गांधीजीने उत्तर दिया कि सामान्य नियम तो यही है कि जीवित मनुष्योंकी जीवनी लिखना उचित नहीं समझा जाता है, परन्तु मुमुक्षुकी जीवनी तो लिख सकते हैं, क्योंकि उसमेंसे कुछ-न-कुछ नीतिकी शिक्षा मिलती है और श्री. जमनालालजीको मैं मुमुक्षु या आत्मार्थी मानता हूं।

यह आज्ञा मांगनेवाले श्री. रामनरेश त्रिपाठी थे। उन्होंने सोचा कि *अग्रवाल महासभाकी इस वर्षकी बैठकके जमनालालजी प्रमुख हैं और* इस अवसर पर जमनालालजीका जीवन-परिचय मारवाड़ी भाइयोंको करा देना अच्छा होगा। यह अवसर अच्छा था। और समयानुसार किया गया यह कार्य अवश्य प्रशंसनीय है। त्रिपाठीजीको जमनालालजीका ठीक परिचय है और उन्होंने इतना हाल इकट्ठा किया है, तब भी इस पुस्तकको जीवन-चरितका बड़ा नाम नहीं दे सकते हैं। जमनालालजीकी अवस्था ३७ वर्षकी है। कमसे कम ४०-५० वर्षकी लोक-सेवा तो उनकी राह देख ही रही है। और अबतकके थोड़ेसे जीवनमें भी जितनी लोक-सेवा अथवा लोक-सेवा द्वारा जो मोक्ष-साधन उन्होंने किया है इतना अधिक है कि इस थोड़ेसे परिचयमें उसकी केवल भूमिका मात्र ही आ सकती है। इनका पूरा पूरा इतिहास यदि लिखने लगें तो सौ पृष्ठोंकी पुस्तक कमसे कम ५०० पृष्ठोंकी तो बन ही जाय। उदाहरणार्थ इनकी मारवाड़ी कौमकी सेवा ही ले लीजिए। यदि उसीका उल्लेख करने लग जायें तो मारवाड़ी कौमकी १० वर्ष पीछेकी दशा और आजकी दशाका सारा इतिहास ही बताना पड़ेगा। उन्होंने महासभाकी सेवा किस प्रकारसे शुरू की, किस क्रमसे उन्होंने अपना सेवाका छोटा क्षेत्र विस्तृत कर दिया, इसका सारा रोचक इतिहास देना पड़ेगा।

परन्तु जमनालालजीके जीवनकी दृष्टिसे ऐसे छोटे परिचयकी भी आवश्यकता है। उसका कारण स्पष्ट है। जमनालालजीके जीवनका आरम्भसे लेकर अबतक जो शान्त और स्थिर प्रवाह रहा है उससे भावी जीवनकी भी झलक मिलती है। जिस सिद्धान्तको उन्होंने आज अपना लिया है उसको कार्यमें परिणत करनेका प्रयत्न तो वह खूब करेंगे, परन्तु उन सिद्धान्तोंसे

हटनेका मौका कदाचित् ही आवेगा। इसलिए यह छोटासा परिचय भी अनुचित नहीं है। जमनालालजीका जीवन दूसरे पुरुषोंके समान बदलता नहीं रहा है। एक समय विलासी और व्यसनी रहनेके बाद पीछे फिर यकायक संयमी बन गये हों और जीवन बिल्कुल बदल गया हो, ऐसा जमनालालजीके विषयमें कोई नहीं कह सकता। उनके जीवनने किसी भी समय पर यकायक पलटा नहीं खाया। उन्हें ईश्वरने धर्मवृत्ति जन्मसे ही दी थी। इस धर्मवृत्तिका दिन-प्रतिदिन अधिकाधिक विकास होता गया। जो दैवी संपत्ति मोक्ष देनेवाली होती है उस दैवी संपत्तिके बहुतसे लक्षण उनमें थोड़े-बहुत अंशमें सदा ही से दिखाई देते थे। अवसर आने पर और भी अधिक प्रकट होने लगे और वे उनमें विशेष रूपसे दृढ़ होने लगे।

यह बात कुछ विस्तारसे मैं इसलिए लिखता हूं कि कोई ऐसा न समझे कि असहयोगमें जमनालालजी १९२१ में शामिल हुए तबसे ही वे प्रसिद्ध हो गये, अथवा असहयोगमें आ जाना ही उनके जीवनकी बड़ी घटना है। यह बात तो इस छोटेसे परिचयमें भी बड़ी अच्छी रीतिसे बतलाई गई है। १९२१ पर्यंतका यानी जमनालालजीका ३०–३२ वर्षकी आयु तकका इतिहास भी बहुत रोचक है और बड़ा शिक्षाप्रद है। गरीब मा-बापके यहां सीकर नामकी रियासतमें एक बगैर कुंवेवाले निर्जल गाँवमें बचपन गुजारा। बड़ी मुश्किलसे बच्छराज सेठने उनको गोद लिया। लड़का गोद देने पर उनके माता-पिताने जन-कल्याणके लिए यह सौदा किया और बच्छराज सेठने यह बालक लेनेके बदलेमें गांवमें एक बड़ा पक्का कुआं बनवा दिया। तबसे यह बालक बच्छराज सेठका हुआ और वर्धा चला गया। बचपनमें रोज इनको एक रुपया दुकानसे मिलता था। इसीमेंसे बचा बचा कर इन्होंने जो धन इकट्ठा किया उसमेंसे १०० रुपयेका सोलह वर्षकी छोटी उम्रमें ही एक छापखानेको दान दिया।[१] उन्होंने एक दफा कहा था कि यह सौ देनेमें मेरी छाती ऐसी फूली कि वैसी कभी फिर लाख देनेमें भी नहीं फूली। इस समय भी भोग-विलासमें इनकी रुचि न थी। सतरह वर्षकी छोटी उम्रमें किये हुए उनके एक और कार्यमें दैवी संपत्तिके करीब करीब सब लक्षण — अभय, अहिंसा, सत्य, शांति, तेज, क्षमा और धृति — मौजूद थे। भावी जमनालालजीका उसी एक प्रसंगमें पूरा पूरा दर्शन होता है। उनके यह नये पिता बड़े क्रोधी थे। जरा जरासी बातमें उनका मिजाज बिगड़ जाता था और हर किसी आदमीका अपमान कर बैठते थे। एक दिन इन्होंने जमनालालजीका भी वैसा ही अपमान किया और अपनी दी हुई धन-दौलतके छीन लेनेकी धमकी दी और बड़े कठोर वचन कहे। इस पर इन्होंने पिताको जो पत्र लिखा वह

१. यह दान १९०६ में, लोकमान्य तिलकके 'केसरी' पत्रका हिन्दी संस्करण नागपुरसे निकालनेका तय हुआ, तब उसे दिया गया था।

वैसाका वैसा उद्धृत करने योग्य है और उसमें ऊपर कहे गये सब लक्षण स्पष्ट दिखाई देते हैं। पत्र मारवाड़ी भाषामें है इसलिए मारवाड़ीमें ही देते हैं।[१]

॥ श्री गणेशजी ॥

"सिद्धश्री वर्धा शुभस्थान पूज्य श्री बच्छराजजी रामधनदासने चि. जमनका चरणस्पर्श। सर्वत्र श्री लक्ष्मीनारायणजी महाराज सदा सहाय हैं। समाचार एक निगाह करें। आप आज मुझ पर निहायत नाराज हो गये सो कोई चिन्ता नहीं। श्री ठाकुरजीकी मर्जी। मैं गोद लिया हुआ था तब आपने ऐसा कहा। पर आपका कुछ भी कसूर नहीं है। कसूर है उनका, जिन्होंने मुझे गोद दिया।

"आपने कहा, नालिश करो, सो ठीक। पर मेरा आप पर कोई कर्ज तो नहीं है। आपका कमाया हुआ पैसा है। आपकी खुशी हो सो करें। मेरा आप पर कुछ अधिकार नहीं।

"आजतक मेरी बाबत या मेरे लिए जो कुछ आपका खर्च हुआ सो हुआ। आजके बाद आपसे एक छदाम-कौड़ी भी मैं लूंगा नहीं, और न मंगाऊंगा ही। आप अपने मनमें किसी किस्मका खयाल न करें। आपकी तरफ आजसे मेरा किसी तरहका हक नहीं रहा है। श्री लक्ष्मीनारायणजीसे मेरी अर्ज है कि आपका शरीर ठीक रखें और आपको अभी बीस-पचीस वर्ष तक कायम रखें। मैं जहां जाऊंगा, वहींसे आपके लिए ठाकुरजीसे इसी प्रकार विनती करता रहूंगा। मुझसे आजतक जो कुछ कसूर हुआ वह माफ़ करें।

"आपके मनमें यह हो कि सब पैसोंके साथी हैं, और यह भी पैसेके लिए सेवा करता है, सो मेरे मनमें तो आपके पैसेकी चाह बिलकुल नहीं है। और ठाकुरजी करेंगे तो आपके पैसेकी भविष्यमें भी मनमें आयगी नहीं, क्योंकि मेरी तकदीर मेरे साथ है। और पैसे मेरे पास हों भी तो मैं क्या करूंगा? मुझे तो पैसोंके नजदीक रहनेकी बिलकुल परवा नहीं है। आपकी दयासे श्री ठाकुरजीका भजन-सुमरन जो कुछ होगा सो करूंगा, जिससे इस जन्ममें सुख पाऊं और अगले जन्ममें भी। आप प्रसन्न-चित्त रहें। किसी किस्मकी फिक्र न करें। सब झूठे नाते हैं। न कोई किसीका पोता है, न कोई किसीका दादा। सब अपने अपने सुखके साथी हैं। सब झूठा पसारा है। आप अभी तक मायाजालमें फंस रहे हैं। मैं आज आपके उपदेशसे मायाजालसे छूट गया। आगे श्री भगवान संसारसे बचावें।

"अपने मनमें आप इस तरह कदापि न समझें कि हमारे पर नालिश-फरियाद करेगा। मैंने अपनी राजी-खुशीसे टिकिट लगाकर सही कर दी है कि आप पर अथवा आपकी स्टेट, पैसे, रुपये, गहना-गांठी आदि किसी सामान

१. यद्यपि 'नवजीवन'में यह पत्र मारवाड़ी भाषामें ही छपा था, तथापि यहां उसका हिन्दी अनुवाद दिया जाता है।

पर, आजसे मेरा कतई हक नहीं रहा है। और मेरे हाथका न कोई कर्ज बाकी है। किसीका एक पैसा भी देना नहीं है।

"अन्य समाचार कुछ है नहीं। समाचार तो बहुत हैं, पर मेरेसे लिखे नहीं जाते।

"संवत् १९६४ मिती वैशाख कृष्ण २, मंगलवार। पूज्य श्री १०५ दादाजी श्री बच्छराजजीसे जमनका चरणस्पर्श।

"बहुत बहुत सम्मानसे। आपकी तरफ मेरा कोई रीतका लेन-देन नहीं रहा है। श्री ठाकुरजीके मन्दिरका काम बराबर चलावें। आपसे दान-धर्म जो बने सो खूब करते जावें। ब्राह्मण साधुको गाली बिलकुल न दें। और किसीको भी हाथका उत्तर दें, मुंहका उत्तर नहीं। ज्यादा क्या लिखूं? इतनेमें ही समझ लें।

"और मैं आपकी कोई चीज साथ नहीं लूंगा। सब यहीं छोड़ जाता हूं। सिर्फ अंग पर कपड़े पहने हूं।"

इस पत्रका असर क्या हुआ होगा, यह बताना कुछ कठिन नहीं है। सेठ बच्छराजजीका कण्ठ रुंध गया और वह बड़े प्रेमसे जमनालालजीको मना लाये। गया हुआ रत्न फिर पा लिया। "म्हाने तो पीसा नजीक रहनेकी बिलकुल परवा छे नहीं"—यह वचन 'अर्थमनर्थं भावय नित्यं' समझके चलनेवालेका वचन है, और इस बातको समझनेवालेका जीवन कैसा बनेगा, इसकी आज कल्पना करना मुश्किल है।

हिन्दी नवजीवन, ८-७-२६] — महादेव हरिभाई देसाई

मुमुक्षु जमनालालजी

(२)

बच्छराजजी ४½ लाख रुपया छोड़ गये थे, परन्तु जमनालालजीने अपनी व्यापार-दक्षतासे, जो उन्होंने किसी विद्यालयमें पढ़ कर नहीं, परन्तु अनुभवसे प्राप्त की थी, चारसे चौबीस लाख कमाये। और इन चौबीस लाख कमानेमें असत्यसे जितने दूर यह रहे उतना कदाचित् ही कोई दूर रहा होगा।

* * * *

जिस विवेकसे उन्होंने धन कमाया उसी विवेकसे उन्होंने अपने धनका दान दिया। लाखों रुपया देकर 'सर' हो सकते थे। प्रवाहके अनुसार युनिवर्सिटीमें स्कॉलरशिप देकर और सरकारको सरकारी संस्थाओंके स्थापनार्थ धन देकर वे मान पा सकते थे। परंतु असहयोगी होनेके पहलेसे उनमें सच्ची विवेक-बुद्धिसे व्यवहार चलानेका स्वभाव था। हां, यह बात ठीक है कि असहयोगने उनका क्षेत्र बढ़ा दिया। वे कुल अपने ११ लाख

रुपयेका दान देनेमें बहुत विवेकपूर्ण रहे हैं। सर जगदीशचंद्र बोसकी विज्ञान-शालाके लिए ३५,००० दिया और काशी विश्वविद्यालयके पुस्तकालयके लिए ५१,००० का दान दिया। इसीसे उनके विवेक और दूरदर्शिताका पता लग जाता है। ११ लाख रुपयेके दानमेंसे केवल दो लाखके करीब उन्होंने अपने समाजके लिए दिया। मुसलमानोंको ही २१ हजारका दान दिया।

असहयोगी होनेसे पहलेसे ही आप बड़ी निर्भयताका व्यवहार करते रहे हैं। गवर्नरने एक बार आपको दरबारमें बुलाया और इस अवसर पर एक विशेष पोशाक ही पहन कर जानेकी आपको सूचना मिली। आपने वह पोशाक पहननेसे इन्कार कर दिया। आखिरकार आपसे कहा गया कि आप जिस तरह चाहें, आवें। गवर्नरको पार्टी देनेके समय भी आपने कलक्टरको साफ कहला भेजा कि अंडे, मांस या शराब न दिया जायगा। भारत-सचिव मिस्टर मॉंटेग्यु जिस समय भारतवर्षमें आये थे, दरभंगाके महाराजा सनातनधर्मियोंका एक डेप्युटेशन उनके पास ले जाना चाहते थे। जमना-लालजीने उनको लिखा कि यदि आप लोग भारत-सचिवके सामने यह मांग रक्खें कि लश्करके लिए जो गोवध होता है वह बन्द हो जाय तो मैं डेप्युटेशनमें शामिल हो सकता हूं। महाराजा दरभंगाने यह बात स्वीकार नहीं की और इसलिए आप डेप्युटेशनमें सम्मिलित नहीं हुए। बर्दवानके महाराजाने जमीं-दारोंके डेप्युटेशनमें सम्मिलित होनेका आपको न्यौता भेजा, परन्तु इसको खुशामदियोंका डेप्युटेशन समझ कर आप उसमें सम्मिलित नहीं हुए। रेलमें सफर करते समय भी 'टामियों' से न डर कर उन्हें डांट दिया करते थे और एक असभ्य यूरोपीयनको तो एक दफा लात मारनेको भी तैयार हो गये थे। यह सब आपकी असहयोगके पहलेकी निडरताके नमूने हैं।

सेवा द्वारा मोक्ष पानेकी इच्छा आपकी पहले ही से थी। एक ब्रह्म-मार्गी संन्यासीका सत्संग कई वर्षोंसे आप करते आये और अब भी आप उनकी सेवा करते हैं। अब भी अकसर हर शुभ कार्यमें आप उनका आशीर्वाद मांग कर ही हाथ डालते हैं। उनमें निर्भयता, वीरता, धर्मबुद्धि और सेवाभाव तो पहले ही से मौजूद थे, परंतु गांधीजीके सत्संगमें वह और विस्तृत हो गये हैं। संसारके प्रत्येक व्यवहारमें हर कामको वे धर्मके तराजू पर तौल लेते हैं। असहयोगी होने पर नये नये सिद्धान्तोंके पालन करनेका भार बढ़ा और उनकी सत्यनिष्ठाने उनके सम्मुख कई एक नयी नयी समस्यायें खड़ी कर दीं। टाटा कम्पनी मुल्शी पेटावालों पर अत्याचार कर रही है तो फिर उस कंपनीके शेयर मैं कैसे रख सकता हूं? कलकत्ताके व्यापारके कारण बार बार अदालतमें जाना पड़ता है तब फिर वहांका व्यापार बन्द ही क्यों न कर दूं? मैं अस्पृश्यतामें विश्वास नहीं रखता हूं, यह लोगोंको किस तरह बताऊं? बहुतसी रीतिरिवाजोंको मैं बुरा समझता हूं तो फिर लड़कीके विवाहमें ही उनको तिलांजलि क्यों न दे दूं?

आप गरीबसे गरीबके साथ एकसा व्यवहार करते हैं और भरसक गरीबोंसे रहनेका प्रयत्न करते हैं। ऐसे ही बहुतसे प्रश्नोंको उन्होंने स्वयं बड़े कष्ट सहन करके हल किया। ऐसे प्रयत्नोंके कई एक वर्णन इस जीवन परिचयमें आये हैं और ऐसे सैकड़ों प्रसंग उनके भविष्यके जीवनचरित्रमें लिखे जा सकते हैं। एक छोटीसी बात है, परन्तु यहां बिना लिखे जी नहीं मानता। खादीका व्रत खद्दर पहननेमें है, परन्तु जो चरखा-संघके सभ्य हैं, और रात दिन खद्दरका प्रचार करते हैं, वे दूसरे कामोंके लिए भी खद्दरको छोड़कर और दूसरे कपड़ेका उपयोग किस प्रकार कर सकते हैं? वर्धामें एक नया ही प्रश्न खड़ा हुआ। घरमें ५०–१०० निवाड़के पलंग थे। वैसे घरमें श्रीमती जानकीबाई और बालक सभी नखशिख खद्दर पहनते थे और सूत भी कातते थे, परंतु किसीको इस निवाड़का कभी ध्यान नहीं आया। जमना-लालजीने कहा कि यह मिलके सूतके निवाड़वाले पलंग काममें लानेकी क्या जरूरत है? व्यवहार कुशल जानकीदेवीने कहा: "आपके लिए हाथोंसे काते हुए सूतकी निवाड़का पलंग आया जाता है, परन्तु घरमें बहुतसे पलंगोंकी निवाड़ है उसको व्यर्थ नष्ट न कीजिये। परन्तु जमनालालजीने निश्चय कर लिया था कि घरमें मिलके सूतकी निवाड़वाले पलंग नहीं रक्खेंगे।

इस पुस्तकका परिचय मैं अधिक लम्बा बनाना नहीं चाहता हूं। इसी प्रकारके बहुतसे उदाहरण जो पुस्तकमें नहीं आये हैं, दिये जा सकते हैं। परन्तु उनके लिए यहां स्थान नहीं। उनकी असहयोगकी प्रवृत्ति आज संसारको विदित है। राय-बहादुर और आनररी मेजिस्ट्रेटीको तिलांजलि देकर देशके खजांची बन कर महासभाकी कार्यकारिणी समितिमें काम किया। अपना व्यापार-धन्धा कम करके तीन वर्ष तक देशमें भ्रमण किया। नागपुर-सत्याग्रहका संचालन करते हुए स्वयं जेलमें गये। हिन्दू-मुसलमानोंके झगड़ेमें मुसलमानोंको बचानेमें स्वयं जख्मी हुए। खद्दरके कामका व्रत धारण किया और गोरक्षाका प्रश्न हाथमें लिया। गोरक्षा और खद्दरका वाणिज्य--वैश्यके इन दोनों धन्धोंको--उत्साहपूर्वक उठा लेनेके लिए मारवाड़ी समाजसे आग्रह किया। ये सब बातें सब समाचारपत्र पढ़नेवाले अच्छी तरह जानते हैं। इन सब बातोंका इस पुस्तकमें वर्णन आ गया है, परन्तु उनके जीवनकी सारी जटिल समस्याओं अथवा अपनी धर्मपत्नीके प्रति व्यवहारकी सारी कहानी तो उनके विस्तृत जीवन-चरित्रमें ही लिखी जा सकती है। भविष्यमें जमनालालजी क्या करेंगे, यह जाननेके लिए यह छोटीसी पुस्तक भी लाभदायक हो सकती है। हमारी सबकी यही प्रार्थना है कि जिस ध्येयके लिए जमनालालजीने अपना जीवन समर्पण किया है उसमें उन्हें दिन-प्रतिदिन सफलता प्राप्त हो।

हिन्दी नवजीवन, १५–७–२६] — महादेव हरिभाई देसाई

A TRIUMPH OF JUSTICE

There is in Wardha a well-known and very well decorated shrine dedicated to Shri Lakshminarayan. It was built by Seth Jamnalalji's grandfather. It is a private temple made accessible to the public. Jamnalalji has been endeavouring to have this temple available to the so-called untouchables also, as he has been trying with great success to have wells in Wardha made accessible to them and generally to procure for them all the facilities available to the other classes. He had difficulty with the trustees in bringing them round to his view that this select temple should be thrown open to those whom blind orthodoxy has suppressed. Success has at last attended his effort. On the 17th inst. the trustees unanimously passed the following resolution:

"Whereas the question of admitting the so-called untouchables inside the temple of Shri Lakshminarayan has been before the committee on several occasions * * * the trustees hereby resolve * * * that the above named temple dedicated to Shri Lakshminarayan in Wardha be declared open to the 'Untouchables' and that the managing trustee, Seth Jamnalalji Bajaj be authorized to enforce this resolution in such manner as may appear to him to be best."

* * * *

It is a striking demonstration of the tremendous headway that the movement against untouchability has made. It shows too what quiet determination and persistence can do to create healthy public opinion in favour of a genuine movement for reform. I congratulate Seth Jamnalalji and his fellow trustees on the bold step that they have taken and hope that this example will be followed all over India.

Young India, 26-7-28] — *M. K. Gandhi*

शास्त्रके अनुकूल

भारत-भूषण पंडित मदनमोहन मालवीयजी सनातन धर्मके स्तंभ हैं। उन्होंने वर्धामें श्री. लक्ष्मीनारायण देवस्थानके बारेमें श्री. जमनालालजीको निम्नलिखित पत्र लिखा है:—

"आपने अपने भगवद्भक्त पूर्वजोंके स्थापित किये भगवान लक्ष्मी-नारायण मंदिरमें ब्राह्मणसे लेकर चाण्डाल पर्यन्त सब श्रद्धालु भाइयोंको जगत्पिताकी पावन मूर्तिका दर्शन करनेकी स्वतंत्रता दी और कुँवे बनवाये

उनपर सब जातिके भाइयोंको स्वच्छ बरतनसे पानी भरनेका अधिकार दिया, यह सुनकर मुझको बहुत संतोष हुआ। आपके ये दोनों काम शास्त्रके सर्वथा अनुकूल हैं और घट घट वासी विश्वात्मा इससे प्रसन्न होगा।"

हिन्दी नवजीवन, २३–८–२८] —मो. क. गांधी

रूढ़िपंथियोंसे मुठभेड़

इस आश्रमके संरक्षक श्रीयुत जमनालालजी बजाजने अपने पूर्वजों द्वारा स्थापित श्री. लक्ष्मीनारायण देवस्थानमें अछूतोंको भी प्रवेशाधिकार देकर रूढ़िपंथियोंके क्रोधको आमंत्रित कर लिया है। इस पर चिढ़कर उन्होंने सेठजीको जाति-बहिष्कृत कर दिया है। मगर इसका सेठजी पर कुछ असर तो पड़ा ही नहीं, बल्कि उल्टे वे एक पग और आगे बढ़कर रेवाड़ीमें अछूत लड़कोंका पकाया भोजन कर आये। इसी सम्बन्धमें मारवाड़ी-अग्रवालोंका एक शिष्ट मण्डल गांधीजीके पास आया था। इनकी शिकायत यह थी: "हम तो जमनालालजीके विधवा-विवाह, बाल-विवाह-निषेध आदि समाज-सुधार सम्बन्धी कामोंमें उन्हें सहायता देना चाहते हैं। वे मन्दिरमें भले ही अछूतोंको भी जाने दें। हम वह भी सह लेंगे। मगर अछूतोंके हाथका भोजन करना तो असह्य है। जब हम उनके लिए इतना आगे बढ़ते हैं तो उन्हें भी तो हमारे लिए कुछ करना चाहिए।"

जमनालालजी बोले, "जब मैं यहाँ आश्रममें अछूतोंके साथ छूतछात नहीं रखता तो बाहर किस मुंहसे रख सकता हूँ?"

मण्डलने कहा, "आप आश्रममें कुछ भी कीजिए। आश्रम तो जगन्नाथ-पुरी है। मगर बाहर तो समाजका कुछ खयाल रखिए।"

गांधीजीने टोक कर पूछा कि मण्डलका एतराज धार्मिक है या सामाजिक रूढ़ि है और मण्डलके यह कहने पर कि हम तो सामाजिक परंपराके आधार पर उज्र करते हैं, गांधीजीने यों समझाया:—

"तब तो आपको सेठजीका आचरण सह लेना चाहिए। अगर आप अपवित्रतासे रहनेवाले अछूतोंका छुआ खानेका विरोध करते तो ठीक था। मगर केवल किसी खास परिवारमें जन्म लेनेके ही कारण किसीको अछूत मानना तो धर्मको ही इन्कार करना है। मैं कबूल करता हूं कि समाजकी रक्षाके लिए सामाजिक परंपराको मान लेना चाहिए, चाहे हमें व्यक्तिगत रूपमें भले ही उसका पालन करनेकी आवश्यकता न जान पड़े। मगर जब कि वह परंपरा अत्याचारी हो जाय, तब भी उसे मान देनेसे तो मौत ही आती है। जमनालालजीने अपने लिए बड़ा कार्यक्षेत्र चुना है। वे किसी खास समाजमें ही अपनेको डुबा नहीं दे सकते। उनके लिए सारा संसार परिवार है और सारे मनुष्य-समाजकी सेवाके द्वारा ही वे अपने समाजकी सेवा कर सकते हैं।

इसलिए जमनालालजीको आप उनके अपने रास्ते जाने दीजिए। विरोधको हम प्रेमके द्वारा ही जीत सकते हैं। असत्य पर, सत्यको छोड़कर नहीं, बल्कि सत्यके ही द्वारा विजय प्राप्त कर सकते हैं। हम जरा अपने समाजकी ओर नजर दौड़ावें। इसलिए हम तपस्या करके, अपने अधिकारोंके लिए कष्ट सहकर, पंचोंको सुधारें। जमनालालजी यही तो कर रहे हैं। अगर आप उनका अनुरकण नहीं कर सकते तो उन्हें आशीर्वाद तो दीजिए। एक दिन वह भी जरूर आवेगा जब केवल आप ही नहीं, बल्कि कट्टर लोग भी इसे स्वीकार करेंगे कि जमनालालजीने अपने कामोंसे हिन्दू धर्मकी बड़ीसे बड़ी सेवा की है और इसके लिए आगे आनेवाली पीढ़ियां उन्हें असीसेंगी, धन्यवाद देंगी।"

जान पड़ता था कि गांधीजीके दिलसे निकली हुई सच्ची अपीलका प्रभाव श्रोताओं पर खूब ही पड़ा।

हिन्दी नवजीवन, ६–१२–२८] —प्यारेलाल

HINDI IN THE SOUTH

Sjt. Jamnalalji's tour in the South on behalf of Hindi should result in a double response in men and women desirous of learning Hindi and in contributions for conducting the Hindi Prachar Office. Accounts received from Madras show that Sjt. Jamnalalji's earnestness is producing the desired effect.

Young India, 31-1-29] —*M. K. Gandhi*

HINDI IN EXTREME SOUTH

From Trivandrum Sjt. Sesha Iyer, President of the Kerala Hindi Prachar Conference, writes to say that this conference was held at Ernakulam (Cochin) on 10th February last where the following resolution was unanimously adopted:

"This conference expresses its deep sense of gratitude to Gandhiji and Seth Jamnalal Bajaj for their untiring efforts in pushing on the Hindi Movement in South India and trying to make Hindi the National Language of India, and urges on all patriotic sons and daughters of India to help the movement by studying the language themselves and also by contributing to the Central Fund."

I have not published this resolution to advertise either myself or Seth Jamnalalji or the parties to the resolution. Everybody knows my keenness about Hindi Prachar in the South. Seth Jamnalalji was a confirmed lover of Hindi before I returned to India in 1915. His tour in the South has given a fresh impetus to Hindi propaganda there.

Young India, 7-3-29] —*M. K. Gandhi*

सेठ जमनालालजीका सत्कार्य

एक स्वाभिमानी पुरुषके नाते सेठ जमनालालजीने पण्डित सुंदरलालजीकी 'भारतमें अंग्रेजी राज्य' पुस्तकके सम्बन्धमें बम्बई-पुलिसके डिप्टी कमिश्नरकी प्रार्थनाका जो उत्तर दिया है, वह सर्वथा उनके अनुरूप ही है। उनका कहना सच है कि युक्त प्रान्तीय सरकारकी यह कार्रवाई 'निरंकुश और अन्यायय है,' और पुस्तकको लेकर देश-भरम मकानोंकी जो तलाशी ली गई है वह 'अत्यन्त अपमानजनक, आक्षेपयोग्य और बदलेकी भावनासे पूर्ण है।' वह कहते हैं कि उन्होंने पुस्तक पढ़ी है और उनकी रायमें वह न केवल बिलकुल 'निर्दोष ही है, बल्कि अहिंसाका पाठ पढ़ानेका एक स्तुत्य प्रयत्न भी है।' उनके विश्वास दिलाने पर भी कि पुस्तक न उनके मकानमें है, न कार्यालयमें, पुलिसका दोनोंकी तलाशी लेना, इस बातका एक योग्य प्रमाण है कि जमनालालजीने पुलिसके कार्योंको जिन शब्दोंमें निन्दा की है, वे उचित ही हैं। इस खानातलाशीका मकसद पुस्तककी तलाशी न थी, बल्कि जमनालालजीकी बेइज्जती करना था। ऐसे अपमानोंका उचित उत्तर तो यही होना चाहिये कि जिन लोगोंके पास पण्डित सुंदरलाल-जीकी पुस्तक है, वे उसकी इत्तिला अपने जिलेके पुलिस दफ्तरमें दे दें, समाचार-पत्रोंमें छपा दें, और सरकारको तलाशी लेने या मुकदमा चलाने या दोनोंके लिए चुनौती दें। अगर जनता इस नीतिको अपनाकर चलेगी, और यदि अबतक भी पुस्तककी कई प्रतियाँ लापता होंगी तो सरकारको जल्दी ही पता चल जायगा कि इस तरह लगातार असंख्य मकानोंकी निरर्थक खानातलाशी लेते रहना अपनी हँसाई आप कराना है।

हिन्दी नवजीवन, २०–६–२९] — मो. क. गांधी

ANTI-UNTOUCHABILITY CAMPAIGN

Sjt. Jamnalalji, the Secretary of the Congress Anti-Untouchability Committee, has succeeded in having the famous Dattatreya temple of Ellichpur, the former capital of Berar, thrown open to the so-called untouchables. He performed the opening ceremony before a distinguished gathering on 31st July last.

* * * *

The organisers of the ceremony deserve congratulations for the service they have rendered to Hinduism and the nation. Let us hope that Jamnalalji will be able to induce the trustees of other temples to follow the example of Wardha and now of Ellichpur.

Young India, 29-8-29] —*M. K. Gandhi*

APPEAL TO TEMPLE TRUSTEES

Sjt. Jamnalalji in his capacity as Hony. Secretary, Anti-Untouchability Committee of the Indian National Congress, has addressed the following forcible appeal to the trustees of the Public Hindu temples:

"You are probably aware that the Indian National Congress has appointed a separate committee this year for making special efforts for the removal of untouchability. The work has obviously to be done through the Hindus, and the Congress resolution is explicit on the point. In these days of terrific advance in material sciences, while the world is shrinking fast, India has constantly to be weighed in the scale of nations as a single individual unit, and when an evil within the fold of a community apart from its inherent injustice becomes a nuisance to its neighbours and a reproach to the entire nation, it is only appropriate, you will agree, that the premier national institution such as the Congress should interest itself in it, and help the community concerned to achieve its speedy elimination.

"Untouchability among the Hindus is no ordinary evil. That a community known throughout the world's history for its religious toleration and its most catholic culture should have established and maintained for centuries, and should still countenance in the name of religion, a social code which brands for life human beings as unworthy of ordinary intercourse and capable of polluting others by mere touch or sight, is a tragedy and riddle that baffles every right-minded Indian today.

"You have only to visualize the spirit of the Hindu Scriptures and the whole of its culture through centuries to perceive, that such treatment of those lower in the social scale, who are in fact termed the 'young brothers' by the Dharmashastras, is most reprehensible. It must be unnecessary for me to tax you with a host of Sanskrit texts in support of my contention. Suffice it to say that it is now a matter beyond dispute that the system of untouchability, whatever may be its origin or former justification, is now only a social usage fossilised and hardened into rank inhumanity that is usurping the place of intelligent religious conviction and conduct.

"If we turn to tradition, we find even less justification for anything like untouchability. The Hindu tradition, founded on Vedic and scriptural lore, and nurtured by the most dynamic teachings of Kabir, Gaurang, Jnaneshvar, Eknath, Tukaram,

Narsinha Mehta and a whole galaxy of Dravidian saints, not only broke the barriers in social intercourse between man and man, but emphatically repudiated and positively set their face against any such cruel distinctions.

"It is an irony of fate, that such glorious inheritance notwithstanding, we should have come to treat today one-third of our own kith and kin as pariahs worthy of treatment which we may not mete out even to dogs or to domesticated animals. Our weavers, our artisans, our sweepers and scavengers, who are the real toilers of the land and producers of national wealth, who help to keep us clean and healthy and fit for life's vocations—to these our benefactors, meek and lowly little brothers—we deny social and civic rights, protection, knowledge, intercourse, everything that makes life worth living. No wonder if under the inexorable law of Karma we are in turn ourselves treated the world over as pariahs and untouchables.

"But the evil consequences of this sin do not terminate here. The manifest injustice underlying such treatment, and the humiliation it involves for the victim, expose him to unrighteous influences outside, and make of him a disintegrating factor. This not only does enormous harm to the community itself, but it corrodes the social foundations of the entire nation. You have no doubt read how movements and counter-movements are launched and conducted with these unfortunate 'young brothers' of the Hindus as pawns and targets, and how it has sown in recent years seeds of unending bitterness and discord among our prominent communities; how some of the most responsible and respected leaders of the communities have suggested and discussed elaborate schemes of converting these 'Untouchables' to their respective faiths for non-religious and sometimes even unworthy considerations.

"With the modern growth of ideas, with the efforts of the reforming sections from amongst the Hindus themselves, and as a consequence of general self-consciousness born of the great awakening that has come upon the land during the last decade, the untouchables themselves are slowly beginning to feel their plight, and demand better treatment as a matter of birthright.

* * * *

"All this must be painful and humiliating to you, as it should be to every good Hindu. The remedy, however, lies in our own hands. We must admit with open arms these 'little brothers' of ours in the social fold without reservation. The barest justice

requires us to let them draw from the village well drinking water, to let their children have the same benefit of learning the three R's at the village school as our own, and to fling open for them the temples of God that we open to the rest of the Hindus. We have got to take these unfortunate brethren of ours to our bosom, and befriend them in all humility as a matter of penance for all our sins of omission and commission.

"To you, a custodian of Hindu religion and a trustee not of its monuments in brick and mortar only but of its true import and dignity, I have ventured to address this appeal. It is the Mandir which has been to the Hindu throughout centuries the repository of all his religious and social idealism. It is blasphemy for him to look upon or think of any living being as inferior or unworthy of Narayan's grace. It is one of the proudest legacies left to us by our great saints, most of whom by the by came from lower classes, not excluding untouchables, that we shall consider no human being as inferior to us. It would therefore be a tardy performance of duty for you to throw open the temple under your charge to the so-called untouchables.

"I shall be thankful if you will let me know what action you propose taking in response to my appeal to you."

Let us hope that the appeal will not fall on deaf ears. Wardha has led the way.

Young India, 5-9-29] — *M. K. Gandhi*

ANOTHER PICTURE

By way of an interesting contrast, here is another picture. Gandhiji spent an evening with Sir Chinubhai who had invited a few friends also to meet him. The same day a few hours before this, Seth Jamnalalji had been Sir Chinubhai's guest. Seth Jamnalalji, we may know, is a great propagandist, and I was told by the friends at Sir Chinubhai's house, that during one or two hours that he had spent there, he had been good enough to entertain his hosts with stories from his own life. He had told the Baronet, how years ago he had entertained Commissioners and Collectors to choicest wines, then felt that it meant a woeful sacrifice of principle, had later on asked the same dignitaries to be satisfied with what a strictly vegetarian teetotaller bania like him could give them, and how later he had burnt his boats and cast in his lot with Gandhiji. The same orthodox bania had during recent years shocked the orthodoxy of Wardha by opening his temple to all the so-called 'untouchables' and carrying on a vigorous campaign for having all the Hindu temples opened to these classes. Would not Sir Chinubhai open his own temple in Ahmedabad to the 'untouchables'? Sir Chinubhai had given him

no reply, but the whole story was narrated to Gandhiji, and as the latter asked him what reply he had given, the Baronet looked at his mother. "He is looking at you, Lady Chinubhai," said Gandhiji smiling, "which means that he is ready but waits for your permission." The dowager lady paused for a few seconds and said: "If it be your wish, so shall it be."

Young India, 28-5-31] — *Mahadev Desai*

WHY WARDHA?

A friendly Englishman asked Gandhiji the other day a question which rather surprised me: "You are a Gujarati, you belong to Gujarat. Why should you have selected a Marathi-speaking part for your work and experiments? And why Wardha of all places?" Gandhiji was no less surprised, but he calmly replied: "I do not belong to Gujarat, I belong to the whole of India. Wardha I selected, because it afforded so many facilities for work. There is Jamnalal Bajaj who is interested in my programme of work and my experiments, and he gave me his valuable garden and his garden house for the Village Industries Association of which I made Wardha the headquarters."

* * * *

Gandhiji's brief reply makes me feel like adding something about Jamnalalji that Gandhiji himself said publicly the other day, and which even the Indian readers do not know.

In the course of his little talk (to the students of the Marwadi Vidyalaya) * * * Gandhiji asked the boys to be not only worthy of the Principal, but of Jamnalalji who was such a capable 'fisher of men'. But he was more. "He had long ago broken the bonds of sect and community and creed," said Gandhiji, "and though the institution owed its existence to donations from Marwadis only—that is what gave it its name—Jamnalalji would not be satisfied until it was thrown open to boys of all castes and creeds. He had no interest in it until he had found his way to destroy its exclusive character, to throw it open as much to the Harijans as to any other section of Hindus, as much to the Mussalmans as to the Hindus. He has no room in his heart for untouchability, and he has none at all for any feeling that Hinduism is in any way superior to any other religion. He has helped Muslim institutions no less than he has done Hindu ones, and he has several Muslim friends whom he treats as blood-brothers. * * * And let me tell you one thing which you may not know, and perhaps many do not know. This passion for removal of untouchability and freedom from communal feeling, as well as equal regard for all religions, Jamnalalji does not at all owe to me. It is not

possible for anyone to transfer his conviction to another. All one can do is to help another to manifest that conviction which is already in him. But in respect of Jamnalalji I could not take the credit for having even helped him to arrive at or to manifest those convictions in his life. He had the convictions in him long before he met me and he had lived up to them. It was these inner convictions of his that brought him and me together and made possible the close co-operation in which we have been able to work together for so many years. You children have to be worthy of a man like him."

Harijan, 24-10-36] —*Mahadev Desai*

OUR BRETHREN THE SHOP ASSISTANTS

As these lines are being written the shop assistants in Bombay are meeting in conference under the presidency of Seth Jamnalal Bajaj. Gandhiji in a message to the Conference emphasized the significance of the Conference: "To have the Conference presided over by Jamnalalji who has numerous shop assistants in his employment is significant," he said. "Significant, because Jamnalalji knows in his heart no distinction between a seth and a servant, and his shop assistants, cooks, coachmen, and other servants are treated as members of the family. He knows that they need leisure as he needs it, he knows that they need a holiday occasionally as he needs it (but rarely takes it), he knows that they need to live with their wives and children in fair comfort, in clean and well-ventilated habitations and capable of looking after their own and their children's educational and medical needs even as he needs to do so. And he also knows the wretched lot of the average shop assistant, sweating for ten to thirteen hours, without a holiday, on a miserable salary, having to go on leave, if he can get it, without pay, losing every day in health, living a life without cheer, an eternal grind from morning till night."

* * * *

Gandhiji in his message also emphasized the necessity of peaceful and persuasive agitation, again ensured by the presence and guidance of Seth Jamnalal Bajaj.

Harijan, 23-10-37]

कार्य-समितिके प्रस्ताव

[कॉंग्रेसकी कार्य-समितिने वर्धाकी बैठकमें जो प्रस्ताव पास किये उनमेंसे महत्त्वके प्रस्ताव नीचे दिये जाते हैं।]

* * * *

(१) "जयपुर-सीकरके झगड़ेके सम्बन्धमें समझौता होनेकी खबर

कमेटीने सेठ जमनालालजी बजाजसे सुनी, और कमेटी जनताको इसके लिए बधाई देती है कि उसने सशस्त्र मुकाबला करनेका विचार त्यागकर अहिंसात्मक उपायोंको ग्रहण किया जिससे रक्तपातका निवारण हुआ। कार्य-समितिको इसपर दुःख है कि ४ जुलाईको सीकरमें गोलियाँ चलनेके कारण व्यर्थ कुछ मनुष्योंकी जानें गईं। मृतकोंके परिवारोंसे कमेटी अपनी समवेदना जाहिर करती है।

"कार्य-समितिको आशा है कि भविष्यमें सीकरकी जनतासे व्यवहार करनेमें जयपुरके अधिकारी सद्भावसे काम लेंगे, ताकि राज्य, रावराजा और सीकरकी जनतामें मैत्रीभाव पुनः जारी हो जाय।"

हरिजन सेवक, १३–८–३८] — मो. क. गांधी

जयपुरकी स्थिति

मालूम होता है कि जयपुरके अधिकारी उस समय तक खुश न होंगे जबतक कि वे जयपुरके देशभक्तोंके होश-हवास अच्छी तरह दुरुस्त न कर देंगे। क्योंकि अब उन्होंने जयपुर राज्य प्रजा-मण्डलको, जिसके कि जमनालालजी प्रेसीडेण्ट हैं, गैरकानूनी घोषित कर दिया है। जयपुरकी कौंसिल ऑफ स्टेटके प्रेसीडेण्टके नाम लिखे अपने पत्रको जमनालालजीने प्रकाशित कर दिया है।[1] उम्मीद थी कि वह पत्र अधिकारियोंको अपना पुराना हुक्म वापस लेनेकी प्रेरणा करेगा, मगर जयपुर कौंसिल (जिसके बारेमें भूलसे पिछले सप्ताह मैंने यह लिखा था कि उसमें सब बाहरके ही आदमी हैं, मगर अब मुझे मालूम हुआ है कि उसके चार सदस्य जयपुर राज्यके ही हैं) प्रकट-रूपसे इस बातके लिए उतारू दीखती है कि उन सब कार्योंका अस्तित्व ही मिटा दिया जाय, जिनसे जमनालालजी और उनके सहयोगियोंका सम्बन्ध है, फिर वे चाहे सामाजिक हों, या मानव-सेवाके अथवा ऐसे ही कोई और।

अधिकारियोंका उन लोगोंसे, जिनको वे पसन्द नहीं करते, पेश आनेका यह एक नया तरीका है। मैं केवल आशाके विरुद्ध आशा कर सकता हूं कि जयपुरके अधिकारी अखिल-भारतीय संकटको उत्पन्न करनेमें जल्दबाजीसे काम न लेंगे, क्योंकि इस बातके तीन कारण हैं, जिससे जयपुरका सवाल यह महत्त्व धारण कर लेगा।

जमनालालजी खुद ही एक संस्था हैं। इसके अलावा वह कांग्रेसके खजांची और उसकी वर्किंग कमेटीके मेम्बर भी हैं। फिर जयपुरमें जो तरीका अख्तियार किया जा रहा है, वह इतना भीषण है कि पूरी शक्तिके साथ उसका मुकाबला करना ही चाहिए; क्योंकि उसका मुकाबला न किया

१. देखिए पृष्ठ २९३-२९६, पत्र संख्या ४१।

गया तो रियासतोंमें होनेवाली ऐसी हरेक हलचलका ही अंत हो जायगा, जिसका प्रजाकी वैध राजनैतिक आकांक्षाओंसे जरा भी कोई सम्बन्ध हो।

जयपुरके बारेमें विचित्र बात यह है कि वहाँ असली शासन महाराजका नहीं, बल्कि एक ऊँचे अंग्रेज अधिकारीका है। क्या इसका मतलब यह है कि वे केन्द्रीय सत्ताकी इच्छानुसार चलते हैं? अगर ऐसा न हो, तो क्या कोई अंग्रेज दीवान ऐसी नीति पर चल सकता है जो खुद राज्यके लिए विनाशक हो? मैं समझता हूँ कि जयपुरका खजाना इतना भरा-पूरा है कि सर्वनाशके आधुनिक हथियारोंका सहारा लेनेके बावजूद प्रजा आत्मसमर्पण न करे और राज्यका लगातार बहिष्कार करती रहे तो भी उससे हर हालतमें राज्यका काम चलता रहेगा। लेकिन यह वक्त है कि राजा लोग और केन्द्रीय सरकार इस सम्बन्धमें अपनी कोई समान नीति बना लें। या, जैसा कि कुछ लोग कहते हैं, यह समझा जाय कि जयपुरने जो तरीका अख्तियार किया है, वही उनकी समान नीति है? मैं तो केवल यही उम्मीद कर सकता हूँ कि ऐसा नहीं है।

हरिजन सेवक, २१-१-३९] — मो. क. गांधी

जमनालालजी पर प्रतिबन्ध

जमनालालजी पर जो प्रतिबन्ध लगाया गया है, वह बड़ा अजीब है। उन्हें मिला हुआ हुक्म इस प्रकार है:—

"वर्धा (मध्यप्रांत) के सेठ जमनालाल बजाज,

चूंकि जयपुर-सरकारको यह मालूम हुआ है कि जयपुर राज्यमें तुम्हारी मौजूदगी और हलचलसे अमनमें खलल पड़नेकी सम्भावना है, लिहाजा सार्वजनिक हित और सार्वजनिक शांति बनाये रखनेके लिहाजसे जयपुर राज्यके अंदर तुम्हारे प्रवेशकी मनाई करना आवश्यक मालूम पड़ता है।

इसलिए तुम्हें चाहिए कि जबतक कोई और हुक्म न हो, तुम जयपुर राज्यमें न आओ।"

दरअसल तो जमनालालजी एक ऐसे आदमी हैं कि जिनकी उपस्थितिसे कहीं कोई खतरा होनेकी कमसे कम सम्भावना है। लोग तो हमेशा शांति करानेवालेके रूपमें ही उन्हें जानते रहे हैं। सरकारी अधिकारियोंके साथ उनके सम्बन्ध बहुत ही सुखद रहे हैं। उनके इन गुणोंकी कद्र भी इतनी हुई है कि सन् १९१६ या उसके आसपास उन्हें रायबहादुरका खिताब दिया गया था, जिसे असहयोगके दिनोंमें उन्होंने छोड़ा है। व्यापारी दुनियामें वह एक बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति हैं और बहुत बड़े व्यापारी होनेके अलावा वह बैंकर भी हैं। यों तो वह बड़े उत्साही कांग्रेसवादी हैं, मगर आन्दोलनके रूपमें वह

कभी मशहूर नहीं हुए। हाँ, रचनात्मक कार्य और समाज-सुधारमें वह सबसे आगे हैं। यह जरूर सच है कि अपनी अन्तरात्माके अनुसार चलनेका उनमें साहस है और उसके लिए वह कई बार अपने सर्वस्वकी भी बाजी लगा चुके हैं। जेलसे वह कभी नहीं डरते। जमनालालजी पर तामील किये गए हुक्ममें जो कुछ कहा गया है, स्पष्टतः वह गलत है और उन पर बिलकुल लागू नहीं होता। शायद यह कहा जाय कि हुक्मकी शब्दावली तो खाली जाब्तेके लिए है, क्योंकि बिना उसके कानूनन उन पर ऐसा हुक्म तामील नहीं किया जा सकता। अगर ऐसा हो, तो उससे निश्चितरूपसे यही साबित होता है कि जमनालालजी जैसे लोगों पर लागू करनेकी मंशासे यह कानून हर्गिज नहीं बना था। जमनालालजी जैसे व्यक्तियोंको जयपुर या देशके किसी अन्य भागमें न आने देनेके लिए उसका प्रयोग करना तो कानूनका शुद्ध और स्पष्ट दुरुपयोग मात्र है।

और इसमें भी मजेदार अंश वह है जिसमें जमनालालजीको 'वर्धाका' कहा गया है, क्योंकि दरअसल तो वह जयपुर राज्यके ही हैं। वहीं उनकी जायदाद है और वहीं उनके मा-बाप व अनेक सगे-सम्बन्धी रहते हैं।

ऐसे हुक्मके आगे मेरी ही सलाह पर जमनालालजीने पूरी तरह सिर झुकाया है। इस बातकी बड़ी अफवाह थी कि अगर उन्होंने जयपुरमें दाखिल होनेकी कोशिश की तो शायद उन्हें गिरफ्तार कर लिया जायगा। इसलिए इस बारेमें उन्होंने मुझसे सलाह ली कि अगर इस तरहका हुक्म उनपर तामील हो तो वह क्या करें। जयपुरके उनके कार्यकर्ताओंका तो यह मत था कि ऐसा कोई हुक्म हो तो वहीं फौरन वह उसका भंग करें। लेकिन मेरा मत इससे भिन्न था। अपनी राय पर पछतानेकी कोई वजह मुझे मालूम नहीं पड़ती। मैंने अपने मनमें सोचा कि ऐसा हुक्म देना तो बड़े पागलपनका काम होगा और जो पागल हैं उनकी बातों पर ज्यादा ध्यान नहीं देना चाहिए, बल्कि उन्हें शांत होनेका मौका दिया जाय। मुझे मालूम हुआ है कि गिरफ्तारीके खयालसे उसके लिए बड़ी-बड़ी तैयारियाँ भी की गई थीं। अतः जो लोग गिरफ्तार करनेके लिए आये थे उन्हें जरूर एक तरहकी निराशा हुई होगी।

जल्दबाजी न करने और अधिकारियोंको यह समझानेकी कोशिश करनेमें कि उन्होंने जल्दबाजीमें और गलत काम किया है, जमनालालजीका कोई नुकसान नहीं हुआ। जयपुरकी प्रजा और एक जिम्मेदार आदमी होनेके नाते, शायद यह उनका फर्ज ही था कि वे अधिकारियोंको अपने निश्चय पर फिरसे विचार करनेका मौका दें। फिर भी वे ध्यान न दें और जमनालालजी इस हुक्मको भंग करनेका निश्चय करें, जैसा कि उन्हें करना ही होगा, तो वह ऐसा और भी ज्यादा नैतिक शक्ति और प्रतिष्ठाके साथ करेंगे। और अहिंसात्मक कार्यमें तो नैतिक शक्तिकी ही जरूरत भी है।

यह स्मरण रहे कि महाराजा तो अपने उन मंत्रियोंके हाथोंकी कठपुतली मात्र हैं, जो सब बाहरी हैं, बल्कि उनमेंसे कुछ तो अंग्रेज हैं। वहाँकी प्रजा या वहाँके प्रदेशके बारेमें वे कुछ नहीं जानते। वे तो एक तरहसे उनपर जबर्दस्ती लदे हुए हैं। जयपुरके पढ़े-लिखे घाटेमें हैं, हालाँकि बाहरी अधिकारियोंके आनेसे पहले, किसी-न-किसी रूपमें, जयपुर राज्यका काम चल ही रहा था। पिछले सप्ताह मुझे उन दुःखद बातोंकी चर्चा करनी पड़ी थी, जो राजकोटमें अंग्रेज दीवानने अपने बहुत थोड़े कार्य-कालमें ही कर डालीं। इसमें कोई शक नहीं कि जयपुरके मुहकमा खासका, जिसमें सब बाहरी आदमी ही भरे हुए हैं, कमसे कम यह कृत्य उनकी गैरजिम्मेदारी और अयोग्यताका एक दुःखद प्रदर्शन है। एक आदमीका, फिर वह कितना ही बड़ा क्यों न हो, निर्वासन नगण्य-सी बात मालूम पड़ेगी। लेकिन घटनाएँ शायद यही सिद्ध करेंगी कि यह मामला कमसे कम मूर्खतापूर्ण और महँगा तो रहा ही है, क्योंकि पाठकोंको शायद ही यह पता हो कि जयपुरमें प्रजामंडल भी है, जो पिछले छः सालसे जमनालालजीकी प्रेरणासे काम कर रहा है। इस समय जमनालालजी ही उसके अध्यक्ष हैं। मंडल एक शक्तिशाली संस्था है, जिसके सदस्य जिम्मेदार आदमी हैं, और उसने काफी रचनात्मक कार्य किया है। अगर यह प्रतिबन्ध न उठा तो मंडलको भी अपना फर्ज अदा करना पड़ेगा। क्योंकि यह प्रतिबन्ध तो, ऐसा कहते हैं, मंडलके रचनात्मक और वैध कार्योंको भी रोकनेकी पेशबन्दी है। अधिकारी लोग ऐसी संस्थाके बढ़ते हुए प्रभावको बर्दाश्त नहीं कर सकते, जिसका उद्देश्य महाराजाकी छत्रछायाके अन्दर जयपुरमें उत्तरदायी शासन प्राप्त करना है, फिर उसके साधन कितने ही अच्छे क्यों न हों।

जमनालालजी पर लगाया गया यह एक अपशकुन है। ऐसा मालूम पड़ता है कि जिन संस्थाओंको किसी भी रूपमें कोई राजनैतिक आकांक्षा हो उनकी हलचलोंको रोकनेके लिए अख्तियार की [illegible] यह पेशबन्दी है और अफ़वाह तो यह भी है कि [illegible] ग्रहण की जानेवाली यह एक संयुक्त नीति है। यह सिर्फ जयपुरके लिए ही सच हो या अन्य सभी रियासतोंके लिए, यह सब पर्याप्त अपशकुन है और जमनालालजी तथा जयपुरकी जनताके लिए अपनी [illegible] मुकाबला करना आवश्यक है। यह जरूर है कि ऐ[illegible] अहिंसाके काँग्रेसी सिद्धान्तके अनुरूप हो।

हरिजन सेवक, २१–१–३९] — मो. क. गांधी

CONGRESS AND STATES

In reply to the correspondent's question as to what Gandhiji meant by saying in the last week's *Harijan* that "an all-India

crisis would occur if the Jaipur authorities persisted in prohibiting the entry of Seth Jamnalal Bajaj into the State, Gandhiji replied:

"Seth Jamnalal is an all-India man, though a subject of Jaipur. He is also a member of the Congress Working Committee, and essentially and admittedly a man of peace. He is the president of an organization which has been working and has been allowed to work in Jaipur for some years. Its activities have always been open. It contains well-known workers who are sober by disposition and who have done much constructive work, both among men and women. There is at the head of affairs in Jaipur a distinguished politico-military officer. He is shaping the policy of the State in connection with the ban pronounced against Jamnalalji and his association, the Jaipur Rajya Praja Mandal. I take it that Sir Beauchamp St. John, Prime Minister of Jaipur, would not be acting without at least the tacit approval of the Central authority, without whose consent he could not become the Prime Minister of an important State like Jaipur.

"If the action of the Jaipur authorities precipitates a first-class crisis, it is impossible for the Indian National Congress, and therefore all India, to stand by and look on with indifference whilst Jamnalalji, for no offence whatsoever, is imprisoned and members of the Praja Mandal are dealt with likewise. The Congress will be neglecting its duty if, having power, it shrank from using it and allowed the spirit of the people of Jaipur to be crushed for want of support from the Congress. This is the sense in which I have said that the example of Jaipur, or say Rajkot, might easily lead to an all-India crisis."

Harijan, 28-1-39]

राजकोट और जयपुर

जयपुरका मामला बहुत ही सीधा और राजकोटसे भिन्न है। अगर मुझे मिली हुई खबर सही है, तो वहाँके अंग्रेज प्रधानमंत्री इस बात पर तुले हुए हैं कि उत्तरदायी शासनकी भावनाको लोगोंमें फैलानेका भी कोई आन्दोलन न चलने दिया जाये। इसलिए जयपुरमें सविनय अवज्ञा उत्तरदायी शासनके लिए नहीं, बल्कि प्रजामंडल और उसके अध्यक्ष सेठ जमनालाल बजाज पर लगाये गये प्रतिबन्धको हटानेके लिए की जा रही है। मेरी रायमें वाइसरायका कर्त्तव्य है कि राजकोटके रेजिडेण्टसे कहें कि उस कौल-करारको चलने दें और जयपुरके प्रधानमंत्रीसे कहें कि पाबन्दी हटा लें। वाइसरायके ऐसा करनेसे किसी हालतमें यह नहीं समझा जा सकता कि उन्होंने देशी रियासतोंके मामलेमें अनावश्यक दस्तंदाजी की।

हरिजन सेवक, ४–२–३९] —मो. क. गांधी

विज्ञप्तियाँ संतोषकारक नहीं

भारत सरकार और जयपुर सरकारने जो विज्ञप्तियाँ निकाली है, उन पर गांधीजीने नीचे लिखा वक्तव्य ३ फरवरीको वर्धासे प्रकाशित कराया है :–

" जयपुरके बारेमें मुझे केवल एक शब्द कहना है। मैं यह बात अच्छी तरह जानता हूँ कि ब्रिटिश प्रधानमंत्री जयपुर राज्यकी कौंसिलके सदस्य हैं। इसलिए मेरा कहना यह है कि वही सबकुछ है। उन्होंने प्रजामंडल तथा सेठ जमनालाल बजाजसे बदला चुकानेकी शपथ ले ली है और मैं यह घोषित करता हूँ कि प्रजामंडलके सम्बन्धमें राज्य जो कार्रवाई कर रहा है उसके बारेमें वह चाहे जो शब्दाडम्बर रचे, प्रजामंडल गैरकानूनी संस्था घोषित की जा चुकी है। अगर प्रजामंडल गैरकानूनी संस्था नहीं घोषित की गई है तो अधिकारियोंको चाहिए कि वे सेठ जमनालाल बजाजको जयपुर राज्यमें प्रवेश करनेकी स्वतंत्रता दे दें और उन्हें तथा मंडलको बगैर किसी प्रकारकी छेड़खानी किये प्रजाको उत्तरदायी शासनकी शिक्षा देने दें। और अगर वे प्रत्यक्षरूपसे या अप्रत्यक्ष-रूपसे हिंसात्मक भाव जागृत करनेका प्रयत्न करें, तो अधिकारी गण उन्हें सजा भी दें।"

हरिजन सेवक, ११–२–३९]

अहिंसा बनाम मशीनगन

अभी कुछ दिन हुए कि सीकरके राव-राजाके कानूनी सलाहकार बैरिस्टर चुड़गरकी जयपुरके ब्रिटिश प्रधानमंत्रीके साथ बातचीत हुई थी। बातचीतके सारांशकी नीचे लिखी रिपोर्ट श्री. चुडगरने जमनालालजीके पास भेज दी।

(श्री. चुडगरका यह पत्र पृष्ठ ३९७-८ पर फुटनोटमें देखें)

मैं तो यह पढ़कर दिग्विमूढ़-सा हो गया। मुझे यह इतना अधिक चकित कर देनेवाला मालूम हुआ कि मैंने जयपुरके प्रधानमंत्रीके पास ऊपरका वक्तव्य १८–१–३९ को भेज दिया और साथ ही निम्नलिखित पत्र भी उन्हें लिखा।

(यह पत्र पृष्ठ ३९७-८ पर देखें)

प्रधानमंत्रीने २०–१–३९ को मुझे इस पत्रका जवाब दिया।

(यह पत्र पृष्ठ ३९९ पर देखें)

इसका जवाब फिर मैंने २२-१-३९ को नीचे लिखे अनुसार भेजा।

(यह पत्र पृष्ठ ३९९ पर देखें)

यह सारा पत्र-व्यवहार मैंने श्री. चुडगरको दिखाया और उन्होंने इस सम्बन्धमें २८–१–३९ को श्री. जमनालालजीको पत्र लिखा था, उसकी निम्नलिखित नक़ल मेरे पास भेज दी।

(यह पत्र पृष्ठ ४०१ पर फुटनोटमें देखें)

जयपुरके प्रधानमंत्रीके पत्र विस्मयमें डाल देते हैं। मैंने मांगी उनसे रोटी, पर उन्होंने दिया मुझे पत्थर! अब अगर वह अपना बयान देनेमें असमर्थ हों, और इस स्थितिमें मैं श्री. चुडगरके बयानको सच्चा मान लूं तो वह (सर बीचम) मुझे क्षमा करेंगे। उनका महज इन्कार करना, साथ ही धमकी देना, इसमें कोई वजन नहीं।

कॉंग्रेसमें ताकत होते हुए वह इंतजार करती रहे और चुपचाप देखा करे, और जयपुरकी प्रजाको मानसिक तथा नैतिक भूखसे मरने दे–खासकर जबकि एक प्राकृतिक अधिकार पर लगाई गई ऐसी पाबन्दीके पीछे ब्रिटिश साम्राज्यका पंजा हो–कॉंग्रेसके लिए यह सम्भव नहीं। जयपुरका प्रधानमंत्री अगर बगैर सत्ताके यह सब कर रहा हो तो कमसे कम पद परसे तो उसे हटा ही लेना चाहिए।

हरिजन सेवक, १८–२–३९] –मो. क. गांधी

जमनालालजी

आखिरकार जयपुर दरबारको जमनालालजीको गिरफ्तार करना ही पड़ा। कहते हैं कि उन्हें एक अपरिचित स्थानमें मजबूत चौकी-पहरेके नीचे अच्छे बढ़िया मकानमें रखा गया है। जान पड़ता है, हर बातमें गुप्तता रखी जाती है। मेरी सूचना यह है कि अधिकारियोंको उनके पते-ठिकानेकी, उन्हें दी जानेवाली सुविधाओं तथा उनके साथ पत्र-व्यवहार व मुलाकात करने संबंधी शर्तोंको प्रकाशित कर देना चाहिए। जमनालालजीको जहाँ उन्होंने रखा है वहाँ क्या डाक्टरी मदद आसानीसे मिल सकती है?

मगर शेखावाटीके बारेमें जो खबरें आ रही हैं, वे अगर सच हैं तो उनके आगे जमनालालजीकी नजरबंदी और उनके साथ किये जानेवाला बर्ताव गौण हो जाता है। राज्यकी ओरसे तफसीलवार खबरें प्रकाशित न होनेसे जनता अखबारोंमें आनेवाली तरह-तरहकी खबरोंको ही सत्य मानेगी।

हरिजन सेवक, ४–३–३९] –मो. क. गांधी

जयपुरके राजबंदी

जयपुर सरकारने सेठ जमनालाल बजाज तथा दूसरे राजबंदियोंके साथ किये जानेवाले बर्तावके बारेमें जो वक्तव्य प्रकाशित किया है, वह ऐसा मालूम होता है, जैसे कि अपने बचावके लिए खास प्रयत्नके साथ लिखा गया हो। सेठजीके संबंधका प्रश्न तो बिल्कुल सीधा-सादा है। यह स्वीकार किया गया है कि उन्हें ऐसी जगह रखा गया है, जहाँका पानी बहुत भारी बताया जाता है। यह भी कबूल कर लिया गया है कि वहाँ पहुँचना आसान नहीं है। उनका वहाँ कोई साथी भी नहीं। यह भारी अकेलापन किस लिए? क्या वे कोई खतरनाक आदमी हैं? क्या वे कोई षड्यंत्री हैं?

उनको नजरबंद रखना तो समझमें आजाता है, क्योंकि वे उस हुक्मकी अदूली करना चाहते हैं, जो उनको अपने जन्म-प्रदेशमें प्रवेश करनेसे रोकता है। अधिकारियोंको यह मालूम है कि सेठजी एक आदर्श कैदी हैं, वे जेलके नियंत्रणका पूरी तरह पालन करनेमें विश्वास रखते हैं। उन्हें जिस प्रकार बाहरकी सारी दुनियासे अलग कर दिया गया है, क्या वह अत्याचार और निर्दयता नहीं है?

कैदियोंकी सबसे बड़ी जरूरत ऐसे साथीकी होती है, जो आचार-विचार, रहन-सहन और व्यवहारमें उनका-सा हो। मेरा खयाल है कि बगैर कठिनाईके उनको एक ऐसे स्थान पर रखा जा सकता है, जहाँ पहुँचना कठिन न हो, साथ ही जहाँ उनके कुछ साथी हों।

* * * *

सत्याग्रहके ध्येयसे सम्बन्ध रखनेवाले अनेक और महत्त्वपूर्ण सवालोंका हल होना अभी बाकी है। लेकिन फिलहाल जो सवाल है, वह बहुत बड़ा नहीं है। इसका सम्बन्ध तो केवल प्रजामंडलको मंजूर करवानेके साथ है। सरकारने उसके लिए एक ऐसी शर्त रख दी है, जिसका स्वीकार करना अशक्य है। वह यह कि इसके अधिकारी वे लोग नहीं हो सकेंगे, जो राज्यसे बाहरकी राजनैतिक संस्थाओंके सदस्य होंगे। इससे तो खुद जमनालालजी ही प्रजामंडलके प्रमुख नहीं रह सकते, क्योंकि उनका सम्बन्ध काँग्रेससे है।

दूसरी रियासतोंकी तरह मेरे कहने पर जयपुरमें भी सत्याग्रह स्थगित कर दिया गया है। पर वह हमेशा स्थगित नहीं रह सकता। मुझे अब भी आशा है कि रियासत अपनी प्रजाके जाग्रत समुदायको संतुष्ट करेगी। मैं जयपुर-सरकारको यह सुझाना चाहता हूँ कि सत्याग्रह स्थगित होने पर भी इन सबको जेलमें रखकर वह उल्टे रास्ते पर जा रही है। इतना तो मैं फिर भी कहूँगा कि राजबन्दियोंके साथ, जिनमें सेठ जमनालाल भी शामिल हैं, होनेवाले इस अमानुषिक बर्तावको तुरन्त बन्द कर देना चाहिए।

हरिजन सेवक, ६–५–३९] —मो. क. गांधी

गांधी-सेवा-संघ सम्मेलन

१९२२–२३में जब गांधीजी जेलमें थे और काँग्रेसका रचनात्मक काम बिल्कुल ढीला पड़ गया था, तब जमनालालजीने सोचा कि जो लोग सत्य और अहिंसाको अपना ध्येय मानकर गांधीजीका रचनात्मक कार्य करनेके लिए प्रतिज्ञाबद्ध हों उन लोगोंका एक संगठन बनाया जाये। कई बरसों तक बहुत थोड़ोंके केवल तीन सदस्य ही गांधी-सेवा-संघके सदस्य रहे, और तीन साल पहले जमनालालजीने संघकी सदस्यतासे इसलिए इस्तीफा दे दिया, क्योंकि उन्हें ऐसा लगा कि संघकी नीतिके नैतिक और आध्यात्मिक

फलितार्थोंकी कसौटी पर वह पूरे नहीं उतर सके। अगर यह राजनैतिक दल होता तो उन्हें अपनी सदस्यतासे इस्तीफा देनेकी कोई वजह नहीं थी।[1]

*   *   *   *

हरिजन सेवक, १३–५–३९]   — महादेव देसाई

फिर जयपुर

जयपुरमें बहुत ही सुस्तीसे काम लिया जा रहा है। अखबारोंमें यह प्रकाशित हुआ था कि दरबार और प्रजाके बीच समझौता होनेवाला है और सेठ जमनालालजी तथा उनके साथी कार्यकर्ताओंको रिहा कर दिया जायगा। जिस बात पर झगड़ा है वह तो बहुत ही मामूली मालूम पड़ती है। केवल नागरिक स्वाधीनताकी रक्षाके लिए ही वहाँ सविनय-भंग करनेका निश्चय किया गया था। और तभी उसका सहारा लिया गया जब कि प्रजा-मंडल द्वारा लोगोंको वैध तरीकेसे राज्यके अन्दर स्थानीय उत्तरदायी शासनके लिए आन्दोलन करनेकी शिक्षा देनेके अधिकार तक पर आपत्ति की गई। कुछ समय पूर्व दरबारकी एक विज्ञप्ति निकली थी, जिसमें प्रजा-मंडलकी स्वीकृतिके लिए शर्तें दी हुई थीं। दरबारने चाहा होता तो निश्चय ही उनको ऐसे रूपमें रखा जा सकता था जिससे सविनय-भंगके नेता उन्हें मंजूर कर लेते। उदाहरणके लिए यह शर्त कि स्थानीय संघका कोई पदाधिकारी ऐसा न होगा जो राज्यसे बाहरकी किसी राजनैतिक संस्थाका भी सदस्य हो, केवल परेशान करनेके लिए ही रखी गई मालूम पड़ती है। भला, सेठ जमनालालजीको इस बिना पर प्रजामंडलका अध्यक्ष बननेके अयोग्य क्यों करार दिया जाये कि वह राष्ट्रीय महासभा (काँग्रेस) की कार्यसमितिके सदस्य हैं? या खास उन्हींकी खातिर यह शर्त रखी गई है? इसका स्पष्टीकरण आवश्यक है। और भी ऐसी शर्तें हैं, जिनके स्पष्टीकरणकी आवश्यकता है। आखिरी दो शर्तें ये हैं–(१) "मंडल श्रीमान महाराजा साहब बहादुर द्वारा स्थापित विधानके मातहत समय-समय पर निश्चित किये जानेवाले उपयुक्त जरियोंसे जयपुर राज्यकी प्रजाकी आकांक्षाओं और शिकायतोंको पेश करनेका वचन देगा"; और (२) "जयपुर राज्यमें बसे हुए लोग ही इसके सदस्य हो सकेंगे।"

ये दोनों ही शर्तें अस्पष्ट हैं। भला राज्य, जो सुधार देनेके लिए तैयार है, उनका पहलेसे ही प्रतिपादन करनेकी आजादी प्रजाको क्यों न दे दे? लेकिन आखिरी शर्त तो, मालूम पड़ता है, इस स्वाभाविक अधिकार पर बन्दिश लगानेके ही लिए है। और 'बसे हुए' शब्द तो ऐसा खतरनाक कानूनी शब्द

१. इस बारेमें अधिक जानकारीके लिए श्री. किशोरलाल मशरूवाला व जमनालालजीके बीच हुआ पत्रव्यवहार पृष्ठ ३८५–३९० पर देखें।

है कि जिसका राजनैतिक रूपमें कम ही व्यवहार किया जाता है। इसके बजाय अधिक प्रचलित 'निवासी' शब्दका प्रयोग क्यों न हो?

हरिजन सेवक, १०-६-३९] —मो. क. गांधी

जयपुर

जो लोग जयपुरके मामलेमें दिलचस्पी रखते हैं, वे आजकल बड़े शशोपंजमें पड़े हैं, क्योंकि उन्हें मालूम हुआ था कि सेठ जमनालालजी बजाज और रियासतके प्रधानमन्त्रीके बीच कुछ बातचीत चल रही थी। उन्हें यह सूचित करते हुए मुझे दुःख होता है कि उस बातचीतका कोई फल नहीं निकला, इसलिए हमारी लड़ाई जारी है। सत्याग्रह भी अपने एक तरीकेसे जारी है, भले ही अब गिरफ्तार होनेवाले नये जत्थोंका जाना बन्द हो गया है। जो लोग सत्याग्रहके सिलसिलेमें गिरफ्तार हुए थे, वे अब भी जेलमें शाही बन्दी हैं। उन्हें अभीतक रिहा नहीं किया गया। वे अपनी सजाकी पूरी मियाद भुगतकर ही बाहर आवेंगे। सेठजी ही अनिश्चित कालके लिए नजरबन्द हैं। वे रिहा होते ही रियासत छोड़नेका वचन देकर कभी बाहर नहीं आयेंगे और रियासतके अधिकारी, गिरफ्तारीके लिए नये जत्थोंका जाना बन्द होनेके बावजूद, उन्हें एक स्वतंत्र व्यक्तिकी भाँति जयपुरमें नहीं रहने देंगे। इस तरह वे सेठजीको जयपुरके लोगोंमें रचनात्मक कार्य-क्रम चलानेकी इजाजत तक भी नहीं देंगे। वे जानते हैं कि सेठजीकी ओरसे किसी गुप्त आंदोलनका — या कहें कुछ करें कुछ इसका — कोई भय नहीं है। वे अपनी खरी ईमानदारीके लिए प्रसिद्ध हैं और उनकी ईमानदारी पर कोई संदेह नहीं कर सकता।

सेठजीके घुटनोंमें दर्द रहनेके कारण सवाल कुछ पेचीदा हो गया है। रियासतके मेडिकल अफसरने सेठजीको इलाजके लिए यूरोप या कमसे कम किसी समुद्री किनारे पर जानेकी सलाह दी है। वे खुद अपनी ओरसे भरसक इलाज कर रहे हैं, लेकिन उनकी राय स्थान-परिवर्तनकी है। इधर सेठजी जबतक नजरबन्द हैं, अपने इलाजके लिए भी जयपुरसे बाहर जाना पसन्द नहीं करेंगे। उनके खयालमें आत्म-सम्मानका तकाजा है कि रिहाई बगैर किसी शर्तके हो। जबतक उनके ऊपर ऐसी पाबन्दी लगी हुई है, जिसे किसी भी तरह जायज नहीं सिद्ध किया जा सकता, [illegible] तक नहीं सोच सकते। जब सत्याग्रह ही स्थगित हो ग[illegible] नजरबन्द रखनेका कोई कारण मालूम नहीं हो[illegible] अधिकारी उन्हें छोड़ देते और जब वे रियासती कानूनोंका फिर भंग करें, उन्हें गिरफ्तार कर लें? अगर हम नरमसे नरम शब्दोंमें कहना चाहें, तो कह सकते हैं कि सेठ जमनालालजीके इलाजमें कुछ गैबी-सी चीज है। जयपुरके

अधिकारियोंका यह फर्ज है कि या तो वे उनकी अनिश्चित काल तककी कैदको उचित सिद्ध करें या उन्हें बिना किसी शर्तके रिहा कर दें।

जयपुरी लोग मुझसे पूछते रहते हैं कि उनके सत्याग्रह पर कबतक पाबन्दी लगी रहेगी? मैं उन्हें सिर्फ यही जवाब दे सकता हूँ कि जबतक वातावरणकी दृष्टिसे उसका स्थगित रहना आवश्यक हो। इस अरसेमें उन्हें रचनात्मक कार्य जारी रखना चाहिए। मेरी अब भी यही राय है कि ऐसा कोई भी व्यक्ति सत्याग्रह करनेका अधिकारी नहीं है, जिसने उन शर्तोंको पूरा नहीं कर लिया, जो शर्तें मैंने सत्याग्रहके लिए बताई हैं। लेकिन मेरी सब सलाहोंमें एक बात ऐसी है, जिससे गुंजायश निकल सकती है। जबतक किसीके दिल व दिमागमें मेरी बात बैठ नहीं जाती, वह उसपर अमल करनेके लिए बाध्य नहीं है। जबतक किसीको सच्चे दिलसे आन्तरिक प्रेरणा नहीं होती, तबतक "यह गांधीजीकी सलाह है," इस खयालसे उसे मानकर रुकना लाजिमी नहीं है। दूसरे शब्दोंमें, यह उन्हीं पर लागू होती है, जो आन्तरिक प्रेरणाका अनुभव नहीं करते और जो मेरे परिपक्व अनुभवों तथा मेरी सलाहकी गंभीरता पर विश्वास करते हैं।

हालाँकि समझौतेकी बातचीत टूट गई है, तो भी रियासतके अधिकारी इस गुत्थीका हल ढूंढनेकी जिम्मेदारीसे मुक्त नहीं हो गये। सत्याग्रह न करनेका यह अर्थ नहीं है कि स्वाधीनताके मौलिक अधिकार, जिनके लिए लड़ाई शुरू की गई थी, लेनेके लिए किसी भी प्रकारका आंदोलन न चलाया जाय। लोकमत अधिकारियोंको चैन नहीं लेने देगा। इसलिए जयपुरियोंको यह समझ लेना चाहिए कि जबतक उनमें दृढ़ संकल्प मौजूद है, उनके हाथमें शक्ति भी है। और इस शक्तिको अपने नियंत्रणमें रखनेसे यह सदा बढ़ती ही है। प्रत्येक शक्ति इसीलिए नहीं होती कि उसका इस्तेमाल किया जाय। शक्तिके पैदा होते ही उसे इस्तेमालमें लानेकी अपेक्षा उसका संचय कर लेना प्रायः अधिक प्रभावकारी होता है।

हरिजन सेवक, १५–७–३९] –मो. क. गांधी

SETH JAMNALALJI

Seth Jamnalalji is an extraordinary prisoner. He believes that as a prisoner he has not to care about his body beyond what the doctors provided for him do. And so I have only now come to know the true state of his health. Shri Shankarlal Banker, who happened to go to Jaipur to see Jamnalalji, got concerned about his health and told me how bad it was.

For the moment I refrain from publishing the correspondence which has come into my hands. According to the Jaipur Civil Surgeon his is a case for special treatment. If it is, the onus is on the State to release him unconditionally, leaving it to Jamnalalji whether he will [illegible] within the State or

without. It is futile to suggest to Jamnalalji that he should undertake to leave Jaipur if he is discharged. He will rather die in prison than be free under the very condition for the breach of which he has courted imprisonment. As I have already pointed out there is no fear of Jamnalalji promoting civil disobedience in the State. For it stands indefinitely suspended. The authorities know that Jamnalalji is essentially a non-violent man. They also know him to be a man of his word. To me his detention is a mystery and, in the present state of his health, a crime.

The public generally do not know that though the place where he is detained is good and accessible, it is a haunt of ferocious animals. * * * My purpose is to protest against Jamnalalji being kept in a tiger-infested place. I understand that even his keepers are not very happy over their job. There is no fear of Jamnalalji running away. If he must be kept in prison, why should he not be kept in an unobjectionable place where medical and other assistance is easily available?

There is also another point which calls for notice. Though *repeated requests have been made, he has not yet been permitted* to keep a companion. He has been given no nurse. Instances are on record when he was badly in need of night attendance. That he himself has made no complaint is no reason for the authorities' negligence in not providing necessary attendance. Their attention has been drawn to the matter more than once by Sethji's secretary.

— *M. K. Gandhi*

[The above was written on the 6th inst., but after we had gone to press the happy news has been received that Jamnalalji has been released. Ed.]

Harijan, 12-8-39]

जयपुर सत्याग्रह

जैसा कि सेठ जमनालालजीने अपने सार्वजनिक वक्तव्यमें घोषित किया है, जयपुरका सत्याग्रह सफलताके साथ समाप्त हो गया। महाराजा साहबसे उनकी कई मुलाकातें हुई हैं। उनके फलस्वरूप सभाओं और जुलूसों पर पाबन्दीवाला कानून (रेग्युलेशन) उठा लिया गया है, इसी प्रकार अखबारों पर लगा हुआ प्रतिबन्ध भी उठ गया है, और कई दूसरे सुधार जारी करनेका भी आश्वासन दिया गया है। इस सुखद परिणामके लिए महाराजा साहब और सेठ जमनालालजी दोनों ही धन्यवादके पात्र हैं -- महाराजा साहब तो अपनी न्यायबुद्धिके लिए और सेठ जमनालालजी जयपुर प्रजामंडलकी ओरसे बातचीत करनेमें प्रदर्शित अपनी बुद्धिमत्ता और विनम्रताके लिए। यह एक

ऐसे आन्दोलनका सुखद अन्त है, जो बड़े संयम और शांतिके साथ चलाया गया था। यह अहिंसाकी विजय है। इसमें बिलकुल शुरूसे ही अपनी मांगें इतनी कमसे कम रखी गयी थीं जितनी कि राजनैतिक शिक्षा और अपने विचारोंको प्रकट करनेके लिए आवश्यक हैं। उत्तरदायी शासनका ध्येय तो हमेशा रहा है, लेकिन उसे इस उग्र या आक्रमणात्मक रूपमें कभी नहीं रखा गया, मानो फौरन ही पूर्ण उत्तरदायित्व देने पर आग्रह हो। प्रजा-मंडलने अपनी मर्यादा और जनताकी पिछड़ी हुई हालतका बुद्धिमानीके साथ ध्यान रखा है। व्यावहारिक रूपमें राजपूतानेके अनेक राज्योंमें अभी तक कोई राजनैतिक शिक्षा नहीं देने दी गई है। अतः यदि जयपुरकी प्रजाको नागरिक स्वाधीनता उसकी असली भावनामें मिल गई हो तो यह एक ठोस लाभ होगा। पर यह जितना जयपुरके अधिकारियों पर निर्भर है उतना ही इस बात पर भी निर्भर है कि प्रजा किस बुद्धिमानीके साथ उसका उपयोग करती है।

इस सम्बन्धमें सेठ जमनालालजीने एक बहुत महत्त्वपूर्ण बात कही है। उनका आग्रह है कि किसी अंग्रेजको दीवान न बनाया जाय। मुझे इस राज्यके अंग्रेज दीवानके शासन-प्रबन्धकी आलोचनाका दुखदायी फर्ज अदा करना पड़ा है। मुझे इसमें कोई सन्देह नहीं कि किसी भी देशी राज्यमें अंग्रेज दीवान कभी भी उपयुक्त नहीं हो सकता।

* * * *

इसलिए, आशा की जाती है कि, अगर महाराजा साहबको अपना दीवान चुननेकी सचमुच छूट हो, तो वह किसी ऐसे भारतीयको ही चुनेंगे, जो अपनी ईमानदारी, योग्यता और प्रजाकी आकांक्षाओंके प्रति सहानुभूतिके लिए प्रसिद्ध हो। साथ ही, यह भी आशा की जाती है कि अगर ब्रिटिश सरकार ही चुनाव करे, तो वह किसी अंग्रेज दीवानको महाराजा साहबके ऊपर न थोपेगी।

हरिजन सेवक, २३–९–३९] — मो. क. गांधी

जयपुर राज्य और प्रजा-मंडल

आखिर प्रजा-मंडल और राज्यके बीच एक समझौता हो गया है। इस सुखद अन्तका श्रेय राज्याधिकारियों और सेठ जमनालालजी, दोनोंको है। आशा है कि इस समझौतेके फल-स्वरूप राज्याधिकारियों और प्रजामंडलके बीच सुन्दर सम्बन्ध स्थापित हो सकेगा, और इन दोनोंके सहयोगके परिणाम-स्वरूप हर दिशामें रियासती प्रजाकी दिन-दिन उन्नति होगी। इसके लिए राज्यको सहिष्णुताका परिचय देना होगा, और मंडलको अपने सभी कामों और वक्तव्योंमें संयमसे काम लेना होगा।

हरिजन सेवक, २०–४–४०] — मो. क. गांधी

जयपुर

सेठ जमनालालजी जयपुरमें मुसीबतोंके घने जंगलमेंसे अपना रास्ता निकालनेका यत्न कर रहे हैं। एक समझौता पिछले दिनोंमें हो चुका है। उसमें उनका काफी हिस्सा था। उसमें रियासतको भी वाहवाही मिली थी और मुसीबतें भी कम हो गई थीं। इसीलिए उन्होंने सोचा था कि इस बार उनका काम सुगम व सरल हो जायगा। मगर ऐसा नहीं हुआ। सेठजीके कहनेके अनुसार वहांके दीवान राजा ज्ञाननाथजी एक बिलकुल गैरजिम्मेदार व तरक्कीके दुश्मन व्यक्ति हैं। जयपुरके चिरकालसे पीड़ित काश्तकारोंको जरा भी तसल्ली नहीं दे सके हैं। वहांकी प्रजामें उनको हटाने और एक ऐसे दीवानको नियुक्त करनेके लिए आंदोलन चल रहा है जो प्रजामतकी कदर कर सके। सार्वभौम सरकारका यह कर्त्तव्य हो जाता है कि जब वह राजाओंके लिए किसी दीवानकी नियुक्ति करे तो यह अवश्य देख ले कि वह रैयतकी जरूरतोंकी तरफ सहानुभूति रखनेवाला है या नहीं। जब कोई दीवान जिस राजाकी नौकरी करता है उससे भी बढ़कर स्वेच्छाचारी बन जाय, तो यह इस बातका सूचक है कि वह हटा दिया जाय।

हरिजन सेवक, १९–१०–४०] — मो. क. गांधी

स्वर्गीय जमनालालजी

सेठ जमनालाल बजाजको छीनकर कालने हमारे बीचसे एक शक्तिशाली व्यक्तिको छीन लिया है। जब-जब मैंने धनवालोंके लिए यह लिखा कि वे लोक-कल्याणकी दृष्टिसे अपने धनके ट्रस्टी बन जायें, तब-तब मेरे सामने सदा ही इस वणिक शिरोमणिका उदाहरण मुख्य रहा। अगर वह अपनी सम्पत्तिके आदर्श ट्रस्टी नहीं बन पाये, तो इसमें दोष उनका नहीं था। मैंने जानबूझकर उनको रोका। मैं नहीं चाहता था कि वे उत्साहमें आकर ऐसा कोई काम कर लें, जिसके लिए बादमें शान्त मनसे सोचने पर उन्हें पछताना पड़े। उनकी सादगी तो उनकी अपनी ही चीज थी। अपने लिए उन्होंने जितने भी घर बनाये, वे उनके घर नहीं रहे, धर्मशाला बन गये। सत्याग्रहीके नाते उनका दान सर्वोत्तम रहा। राजनैतिक प्रश्नोंकी चर्चामें वह अपनी राय दृढ़तापूर्वक व्यक्त करते थे। उनके निर्णय पुख्ता हुआ करते थे। त्यागकी दृष्टिसे उनका अन्तिम कार्य सर्वश्रेष्ठ रहा। वे किसी ऐसे रचनात्मक काममें लग जाना चाहते थे, जिसमें वे अपनी पूरी योग्यताके साथ अपने जीवनका शेष भाग तन्मय होकर बिता सकें। देशके पशुधनकी रक्षाका काम उन्होंने अपने लिए चुना था, और गायको उसका प्रतीक माना था। इस काममें वह इतनी एकाग्रता और लगनके साथ जुट गये थे कि जिसकी

कोई मिसाल नहीं। उनकी उदारतामें जाति, धर्म या वर्णकी संकुचितताको कोई स्थान न था। वे एक ऐसी साधनामें लगे हुए थे, जो कामकाजी आदमीके लिए विरल है। विचार-संयम उनकी एक बड़ी साधना थी। वे सदा ही अपनेको तस्कर विचारोंसे बचानेकी कोशिशमें रहते थे। उनके अवसानसे वसुन्धराका एक रत्न कम हो गया है। उनको खोकर देशने अपना एक वीरसे वीर सेवक खोया है। जिस कार्यके लिए उन्होंने अपना शेष जीवन समर्पित कर दिया था, उसे अब उनको विधवा जानकीदेवीने स्वयं करनेका निश्चय किया है। उन्होंने अपनी समस्त निजी सम्पत्तिको, जो करीब ढाई लाखके आसपास है, कृष्णार्पण कर दिया है। ईश्वर उन्हें अपने इस अंगीकृत कार्यमें सफल होनेकी शक्ति दे।

हरिजन सेवक, १५–२–४२] —मो. क. गांधी

क्रूर प्रहार

डाक रवाना होनेके बाद फोन आया कि जमनालालजी अचानक बेहोश हो गये हैं। गांधीजी तुरन्त ही उन्हें देखनेको चल पड़े, लेकिन उनके वर्धा पहुंचनेसे पहले ही खबर मिली कि जमनालालजी चले गये।

कल रात उन्होंने फोन पर मुझसे देर तक बातें कीं। चीनके तारणहार श्री चांग काई-शेकके वर्धा आने पर उन्हें कहां टिकाया जाय, क्या-क्या प्रबन्ध किया जाय, वगैरा अनेक बातें मुझसे पूछीं और उन्हें अपने पास ही टिकानेकी उत्कण्ठा प्रकट की। फिर हँसते-हँसते बोले: "बापू मुझसे गोसेवाका काम लेना चाहते हैं, मगर वह हो कैसे? काम तो ऐसे-ऐसे आते रहते हैं।" मैंने कहा: "लेकिन आपको तो संसारके एक महापुरुषको अपना अतिथि भी बनाना है, और गोसेवा भी करनी है; फिर क्या हो?" इस पर आप बोले: "मेरे यहां तो संसारका सबसे बड़ा महापुरुष पहलेसे अतिथि बनकर बैठा है। क्या वह काफी नहीं?" फिर कहने लगे: "अब मैं गोपुरी जाता हूँ।" मैंने कहा: "अगर वे आये, तो आपको कुछ दिनोंके लिए गोपुरी छोड़ जानकी-पुरीमें आना पड़ेगा।" बोले: "गोपुरी भी तो आज जानकीपुरी बन गई है, क्योंकि जानकीदेवी गोपुरीमें ही आ बसी है।" इस प्रकार उन्होंने अपने सदा सुलभ हास्यके साथ रात बातें कीं। सबेरे भी वही प्रसन्नता, वे ही उल्लासभरी बातें, उतनी ही उत्कण्ठाभरी पूछताछ: "चांग काई-शेकके आनेकी कोई खबर है?"

क्या सपनेमें भी किसीने सोचा होगा कि इन्हीं जमनालालजीको दोपहर बाद अचानक खूनके दबावका दौरा २५० और १२५ का हो जायगा, और गांधीजीके उनके समीप पहुंचनेसे पहले ही वे हम सबको छोड़कर चल देंगे?

कालकी गतिको कौन जान पाया है? आज वर्धाकी सभी सार्वजनिक संस्थायें और उन संस्थाओंके कार्यकर्ता उनके अभावमें अनाथ हो कर बैठे हैं। सब बिलख रहे हैं। वे तो मरते दम तक सेवा करते और सेवाका ही ध्यान करते हुए चले गये। उनके समान धन्य मृत्यु बिरलोंको ही प्राप्त होती है। लेकिन उनके अभावमें अपंग बैठे हुए हम लोग क्या करें? गांधीजी क्या करें? जानकीबहन क्या करें? उनके प्रेम और पोषणसे पुष्ट होनेवाली संस्थायें क्या करें? इस समय तो आखोंके सामने अंधेरा छा रहा है और कलम आगे बढ़नेसे इनकार करती है।

हरिजन सेवक, १५–२–४२] —महादेव देसाई

कड़ी परीक्षा

बाईस वर्ष पहलेकी बात है। तीस सालका एक नवयुवक मेरे पास आया और बोला: "मैं आपसे कुछ मांगना चाहता हूँ।"

मैंने आश्चर्यके साथ कहा: "मांगो। चीज मेरे बसकी होगी तो मैं दूंगा।"

नवयुवकने कहा: "आप मुझे अपने देवदासकी तरह मानिये।"

मैंने कहा: "मान लिया! लेकिन इसमें तुमने मांगा क्या? दरअसल तो तुमने दिया और मैंने कमाया।"

यह नवयुवक जमनालाल थे।

वह किस तरह मेरे पुत्र बन कर रहे, सो तो हिन्दुस्तानवालोंने कुछ-कुछ अपनी आँखों देखा है। जहांतक मैं जानता हूँ, मैं कह सकता हूँ कि ऐसा पुत्र आज तक शायद किसीको नहीं मिला।

यों तो मेरे अनेक पुत्र और पुत्रियां हैं; क्योंकि सब पुत्रवत् कुछ-न-कुछ काम करते हैं। लेकिन जमनालाल तो अपनी इच्छासे पुत्र बने थे और उन्होंने अपना सर्वस्व दे दिया था। मेरी ऐसी एक भी प्रवृत्ति नहीं थी, जिसमें उन्होंने दिलसे पूरी-पूरी सहायता न की हो। और वह सभी कीमती साबित हुई, क्योंकि उनके पास बुद्धिकी तीव्रता और व्यवहारकी चतुरता दोनोंका सुन्दर सुमेल था। धन तो कुबेरके भण्डार-सा था। मेरे सब काम अच्छी तरह चलते हैं या नहीं, मेरा समय कोई नष्ट तो नहीं करता, मेरा स्वास्थ्य अच्छा रहता है या नहीं, मुझे आर्थिक सहायता बराबर मिलती है या नहीं, इसकी फिक्र उनको बराबर रहा करती थी। कार्यकर्ताओंको लाना भी उन्हींका काम था। अब ऐसा दूसरा पुत्र मैं कहांसे लाऊँ? जिस रोज मरे, उसी रोज जानकीदेवीके साथ वे मेरे पास आनेवाले थे। बातोंका निर्णय करना था, लेकिन भगवानको कुछ और ही मंजूर

रहा। ऐसे पुत्रके उठ जानेसे बाप पंगु बनता ही है। यही हाल आज मेरे हैं। जो हाल मगनलालके जानेसे हुए थे, वे ही ईश्वरने इस बार फिर मेरे किये हैं। इसमें भी उसकी कोई छिपी कृपा ही है। वह मेरी और भी परीक्षा करना चाहता है। करे। उत्तीर्ण होनेको शक्ति भी वही देगा।

हरिजन सेवक, २२-२-४२] —मो. क. गांधी

JAMNALALJI

"The angel
Came again with a great wakening light,
And showed the names whom love of God had blessed,
And lo! Sheth Jaman's name led all the rest."

Those who knew Jamnalalji — and the hundreds of telegrams that have been pouring in from places far and near show that the number of that blessed company was great — will not feel unhappy over the alteration I have made in Leigh Hunt's famous lines about Abou Ben Adhem. I do not know if on the fateful afternoon of the 11th Jamnalalji had a vision of any Angel come to receive him in the region of the blessed. But if he had, I am sure he must have spoken to him:

"Low but cheerly still; and said,
I pray thee then,
Write me as one that loves his fellowmen."

Never since the sudden and premature death of Manganlal Gandhi in 1928 had any bereavement dealt such a staggering blow on Gandhiji as the sudden and premature death of Jamnalalji. Words fail me when I attempt to describe his feeling of desolation. For two days he bore up bravely consoling the bereaved widow and the aged mother, but on the third day he broke down as he was saying: "Childless people adopt sons. But Jamnalalji adopted me as father. He should have been an heir to my all. Instead he has left me an heir to his all." The feeling of desolation is, if I may say so, universal. Wardha and Sevagram, even with Bapu and Ba in it, look dreary without Jamnalalji. The numerous institutions he had founded or helped in founding will experience a piercing sense of void without his sunny presence. Even the meetings of the Congress Working Committee must be dull and dreary without his scintillating and outspoken commonsense.

The feeling of loneliness that has come over most of us may be judged from these few lines from Vallabhbhai's letter:

"He had vowed not to sit in a train or a motor car, and his vow was to terminate on the 15th. He had promised thereafter to come and have rest with me in Hajira. Instead he has gone

to his eternal rest. No death could have been better. But as the proverb goes, 'Let a hundred die, but not the nourisher of a hundred.' Hundreds upon hundreds of our workers in various parts of our country must be shedding silent tears in their cottages. Bapu has lost a true son; Jankidevi and the family a true shelter; the country a loyal servant; the Congress a stately pillar; the cow her true friend and many institutions their patron; and we have lost a beloved blood brother. I feel so desolate and forlorn."

Everyone mourns his loss. Amongst the mourners are not only his friends of the Working Committee, not only his friends in the business world like the Birlas and the Tatas, Sir Purushottamdas and others, not only his numerous co-workers the humblest of whom he had brothered and befriended, but countless others who received his help without the world ever knowing it. The meeting to mourn his death held in Wardha was addressed by members of the Hindu Mahasabha and the Muslim League, and a Muslim barrister paid him a fine tribute. He said without Jamnalalji's sympathy and timely help the Anglo-Urdu School would not have been in existence. He had the priceless gift of friendship which endeared him to all, and everyone under his roof felt completely at home. He had literally broken the barriers of the family of his blood relationship, and made himself member of a vaster family to which men and women of all races and creeds belonged. Above all he had broken the barrier that wealth and position often create. His employees and his servants were members of his family, and they shared their joys and sorrows with him in an unstinted measure. There are few wealthy men on earth so utterly void of affectation and snobbery, so utterly innocent of possession and propriety (I mean ownership), so utterly free from communalism or provincialism, and so overflowing with the milk of human kindness.

Like some of those rare men who are gifted with the power of sublimating their desires and their passions, he was gifted with the power to sublimate his sense of possession. He followed the master cheerfully through all the numerous vicissitudes of the latter's life, because although 'he had great possessions', he had divested himself of the sense of proprietorship in them. Born of an obscure family in a waterless village in Jaipur State, he was adopted by a rich man from the same State who had settled in Wardha. Even the poor parents would not part with their child, until the rich Bachhrajji from Wardha promised to dig a well in the village. The boy was brought up by the adoptive father, and after two or three years in a Hindi school was put into business.

Once he incurred the rage of his hot-tempered father who reminded him of the riches he had come into possession of without labouring for them. He was just 17 then. He addressed a letter to the father couched in terms of humility and firmness characteristic of the Jamnalalji of future years.[1]

* * * *

The father relented, implored the son tearfully to stay, and he stayed. Sturdy commonsense and innate business skill enabled him to earn lakhs and give in charity five times the wealth he had inherited from the adoptive father. If he stayed home in response to the father's importunations, he knew he was a trustee of the father's wealth. Consciously or unconsciously that was his first lesson in the theory of trusteeship. The father who had adopted him taught that first lesson, the father he later adopted initiated him into the deep implications of it.

Similarly he had the virtue of fearlessness which the absence of a slavish education had left unimpaired. He had silenced Tommies travelling first and second and trying to bully him; he would not serve wines at a party he gave in honour of a Governor; to a Commissioner who said that the Chief Commissioner would not open his school unless he promised to be more loyal, he had said he would do without that costly privilege, and to a D.S.P. whom he was interviewing and who had remarked: "How I wish the boat that is carrying Tilak to England may go to the bottom of the sea," he had said: "You forget that there are numerous Englishmen on the boat!"

The fearlessness came into full play during the twenty years of his public life under Gandhiji's leadership. President Kruger was unlettered and Generalissimo Chiang Kai-shek knows no English. Ignorance of English was no handicap to them. It had in fact left the native vigour of their minds unspoilt. Even so with Jamnalalji. He could see the implications of an intricately worded Congress resolution quicker than many other members, and he would often raise his warning voice lest the Committee should put their foot into seemingly innocent propositions. It was he who raised earliest the question of moral and material co-operation in the war and who said that a nation of shop-keepers could not be duped by the promise of moral co-operation.

Treasurer of the nation's wealth, he was also the treasurer of the nation's honour. He was among the very few capitalists who recklessly threw themselves in the fray for the nation's freedom and bore the rigours of imprisonment every time the

1. *The English translation of the letter given here is deleted. Please see pp. 519-520 for its Hindi version.*

call was made. His faith burnt brightest when that of others flickered in times of stress and strain and dark despair. It was to revive the faith of others when Gandhiji was in jail under a six years' term of imprisonment that he donated Rs. 2,50,000 and founded the Gandhi Seva Sangh. Politics he could understand, but he often regarded it as a sorry game which might soil one's heart and soul. And so he had early set his heart on the constructive part of the Congress programme. Khadi to which he gave his wealth, his time, his organizing ability and his devotion; Harijan uplift for which he risked the wrath of his hide-bound community, threw open the first big temple in India to the Harijans, and gave to Gandhiji the whole of the income of the Harijan village—Sevagram—for the Harijans' welfare; Hindu-Muslim unity for which he cheerfully bore heavy blows in the course of a riot, and earnestness for which won him distinguished men like the Khan Sahebs as brothers and women like Raihanaben and the Captain Sisters as sisters; Village industries, for which he gave away a precious part of his patrimony; women's cause to which he devoted a good deal of his wealth and time; and the Cow to whose cause he dedicated his life.

Who could have been blessed with a richer life of service? And yet one could notice in various utterances of his a longing for something he had not yet achieved. His sense of truth and justice was keen even to harshness, so far at any rate as he was concerned. Before he met Gandhiji he had worshipped at many shrines. Gandhiji seemed to settle his mind, and Gandhiji's fierce passion for truth made him long to be his son. "Blessed will be the moment when I shall be worthy of being known as Mahatmaji's son," he wrote in 1923. "It is due to his infinite mercy that I have learnt at least to see my weaknesses and failings." He was often overwhelmed by a sense of his spiritual shortcomings, and he often longed to retire from all public activities. It was this spirit that endeared him to Gandhiji more than the sacrifice of material possessions, almost incomparably great as this was.

* * * *

Nourished on food like this, he grew from self-introspection to more self-introspection. Constant companionship with Vinoba, who had managed the Satyagrahashram at Wardha since the beginning, was a great help in the process. He had immense self-confidence. He knew that, if some day the crown of thorns of Congress Presidentship were to be bestowed on him, he would be equal to the burden. But his heart quailed when he thought of the spiritual journey he had still to do before entering the Kingdom of Heaven. It was not because he had riches. Owner-

ship in these he had cast away. But there were other things needed. And in order to purge himself of all dross he took the greatest step of his life — dedicating himself to the service of the cow. He left his house — the house which had lodged guests like Presidents of the Congress, Lord Lothian, H. E. Tai Chi Tao, Dr. John Mott, and the Egyptian Delegation — and went to live in a hut which he called Gopuri. Here he did his spinning, tended his cows with the devotion of King Dileepa, and kept a careful record of his thoughts and acts from day to day. As we visited the hut on the day he passed away, we saw on the little desk in front of his feet his diary written up complete to the day of his death. Even so his life was complete and regular and God-fearing. He had dedicated this to Mother Cow, in order that she may be for him the *Kamadugha*[1] that Cow Nandini had been to King Dileepa. Whether the death that came to him was the blessing given him by the Cow it is difficult to say. Perhaps it was. For no death could be more desirable. Almost until the last moment he was thinking of his Cow and his Gopuri, and when the end came it was so sudden and so quick that it seemed as though he had slipped into blissful peace. But whether the Cow had really proved his *Kamadugha*, there is no doubt that by his dedicated life he had rendered himself Gandhiji's *Kamadugha*. It was he who had made it possible for Gandhiji to settle first in Wardha and then in Sevagram, and it was he who was the living link between the outside world and Gandhiji. His death removes the link and leaves both Gandhiji and the outside world much poorer.

Harijan, 22-2-42] — *Mahadev Desai*

सतीका संकल्प

गत बुधवार ता. ११ फरवरीको दोपहर बाद करीब तीन बजे यकायक फोन पर गांधीजीसे कहा गया कि जमनालालजीको खूनके दबावका दौरा हुआ है, और ११० व २५० डिग्री दबावके बीच वे बेहोश पड़े हैं। खूनके दौरेको उतारनेके लिए जो दवा गांधीजी लिया करते हैं, वह डॉक्टरोंने तुरन्त ही मंगाई थी और उसके लिए एक मोटर भी रवाना की थी। मोटरके आते ही गांधीजी दवाके साथ उस पर सवार होकर वर्धा रवाना हुए। सेठ घनश्यामदासजी बिड़ला भी, जो कार्यवश उन दिनों यहीं थे, उनके साथ गये। मोटरमें बैठते-बैठते गांधीजीके मुंहसे अचानक यह उद्गार निकला: "अगर वे जिन्दा न मिले, तो बड़ा ही दुर्दैव होगा।" परन्तु उनके सहज

1. *Fulfiller of all desires.*

आशावादने यहाँ भी उनका साथ न छोड़ा। उन्होंने इसी सिलसिलेमें फौरन कहा : "मगर मुमकिन है कि हम उन्हें वहाँ हमेशाकी तरह हँसते-खेलते ही देखें।" लेकिन जमनालालजी तो उनके वर्धा पहुँचनेसे पहले ही गोलोकवासी बन चुके थे। जिसने सुना, वही स्तब्ध रह गया। किसीको विश्वास ही न होता था, क्योंकि न तो उनकी उम्र ही अभी इस लायक थी और न तन्दुरुस्ती ही इतनी खराब थी, कि वे अचानक चले जाते! उस दिन दोपहरको बारह बजे तो वे फोन पर हमसे बातें कर रहे थे। वही हँसी, वही मीठा मजाक। सेवाकी अभी उन्हें बड़ी बड़ी उमंगें थीं। पिछले दिनों जब नागपुर जेलमें हम सब साथ थे वे अकसर बातचीतके दौरानमें मुझसे कहा करते थे : "ऐसा कोई काम या प्रवृत्ति मुझे चाहिये, जिसमें मैं सारी शक्ति और समय लगाकर देशकी सेवा कर सकूं।" इसी दरमियान एकाएक तबीयत खराब हो जानेकी वजहसे वे अपनी मियादके कोई पाँच-छः हफ्ते पहले ही जेलसे रिहा कर दिये गये। रिहा होते ही वे एक सत्याग्रही सिपाहीके नाते सीधे गांधीजीके सामने हाजिर हुए। हुक्म मिला कि जब तक सजाकी मुद्दत पूरी न हो, दुबारा सत्याग्रह करना मुनासिब न होगा। यह वक्त तन्दुरुस्तीको संभालनेमें ही खर्च होना चाहिये। अतएव स्वास्थ्य-सुधारके विचारसे वे करीब एक महीने शिमला रह आये, और जिस दिन उनकी नौ महीनेकी सजाकी मुद्दत पूरी होती थी, ठीक उसी दिन वापस गांधीजीके पास आ पहुँचे। बहुत सोच-विचारके बाद गांधीजीने तय किया कि उनके शरीरकी जर्जरित अवस्थाको देखते हुए उन्हें फिरसे जेल जानेकी इजाजत तो वे न दे सकेंगे। चुनाँचे उन्होंने जमनालालजीको गोसेवाका काम उठा लेनेकी सलाह दी। और जमनालालजी किसी कामको आधे दिलसे तो कभी करते ही न थे। जिस चीजको हाथमें लेते थे, उसके पीछे अपना सर्वस्व लगा देते थे। वे तुरन्त ही गोसेवाके भेखधारी बन गये। वर्धा और नालवाड़ीके दरमियान उन्होंने अपने रुपयोंसे बहुत-सी खुली जमीन खरीद ली और उस पर अपने लिए घास-फूसकी एक कुटिया बनाकर उसीमें रहने लगे। फिर क्या था? जमनालालजी थे और उनकी गोसेवा थी। रात-दिन उसीकी लगन — उसीकी धुन! सचमुच गोसेवाको उन्होंने अपने लिए 'मोक्षका साधन' ही मान लिया था। ऐसा मालूम होता था मानो वशिष्ठकी नन्दिनीके इस वरदानको उन्होंने अपने जीवनका सूत्र बना लिया हो : "न केवलानां पयसः प्रसूतिमवे हि माम् कामदुधां प्रसन्नाम्।" (अर्थात् यह न सोचो कि मैं केवल दूध ही दे सकती हूँ; मैं कामधेनु हूं, प्रसन्न हो जाऊँ तो जो चाहूँ दे सकती हूँ।)

इसलिए जब उनके अग्निदाहका प्रश्न उठा, तो गांधीजीने उसके लिए गोपुरीकी भूमि ही पसन्द की। वहीं उनकी अर्थी पहुँचाई गई। वर्धाकी अधिकांश जनता तो उन्हें अपने पिताके रूपमें देखती थी। शामके वक्त

उनकी शव-यात्राके साथ सारा शहर गोपुरीमें उमड़ आया। वहीं गांधीजी भी जमनालालजीकी अस्सी वर्षकी वयोवृद्ध माता, पत्नी जानकीदेवी और अन्य कुटुम्बीजनोंके साथ आये। अतिशय स्नेह और आदरके साथ उन्होंने जमनालालजीकी सूनी कुटियाके कोने-कोनेकी 'यात्रा' की।

गांधीजीके लिए यह कोई साधारण अवसर न था। जमनालालजीके कुटुम्बियोंके लिए तो यह अग्निपरीक्षाका समय था ही, किन्तु स्वयं गांधीजीके लिए भी यह एक कड़ी कसौटीका समय था। गांधीजीका अपना यह जीवन-सिद्धान्त है कि आदमी खुद जो कहता या करता है, उससे उसकी इतनी जाँच नहीं होती, जितनी उसके कहने या करनेसे उसके अपने निकटके साथियों और कुटुम्बियोंके आचरण पर पड़नेवाले प्रभावसे होती है। इसलिए जमनालालजीके स्वर्गवासके बाद, ईश्वरके भेजे हुए इस वज्रपातका जवाब उनके कुटुम्बीजन किस तरह देते हैं, इसीमें उन्होंने उनकी और अपनी परीक्षा समझी। एक ओर उन्होंने जमनालालजीकी माताको दिलासा दे-देकर शान्त किया, दूसरी ओर जानकीदेवीजीको, जो 'सती' होनेके विचारसे चिता पर बैठनेको तैयार थीं, 'सती' का सच्चा अर्थ समझाया और उनसे चिताग्निकी साक्षीमें पतिके अपूर्ण कार्यको पूरा करनेके लिए अपना सर्वस्व दे देने और शेष जीवन यज्ञबुद्धिसे बितानेका संकल्प करवाया। श्री विनोबा तो वहाँ थे ही। कुष्ठरोगसे पीड़ित श्री परचुरे शास्त्री भी अपनी रोगशय्या छोड़कर सेवाग्रामसे पैदल गोपुरी आये थे और वहाँ मौजूद थे। श्री विनोबाके और शास्त्रीजीके मंत्रोच्चारकी ध्वनिसे सारी गोपुरी गूँज उठी। श्रीमती अम्तुल सलामने 'फातेहा' पढ़ा, कुरानकी कुछ आयतें पढ़ीं। इतनेमें काफी अंधेरा हो गया। चिता धू-धू जल रही थी। थोड़े ही समयमें जमनालालजीका भौतिक शरीर जलकर भस्म स्वरूप बन गया, किन्तु चिताग्निकी लाल-नीली लपटोंके उस प्रकाशमें जब सब लोग विसर्जित होकर अपने-अपने घर लौटे तो बजाय शोक या रुदनके सबके चेहरों पर सतीके पुण्य संकल्पकी झलक ही नजर आई। ऐसा प्रतीत होता था मानो सब अपने किसी महानुभाव साथीको किसी लम्बी पुण्य-यात्राके लिए बिदा करके उसके पदचिन्हों पर चलनेका निश्चय लिये लौट रहे हों।

* * * *

उस दिन सेवाग्राम लौटने पर शामकी प्रार्थनाके बाद गांधीजीने आश्रमवासियोंके सामने सारी घटनाका वर्णन करते हुए अपने हृदयके जो उद्‌गार प्रकट किये, श्री महादेवभाईके शब्दोंमें उनका सार इस प्रकार है :–

"सवाल यह था कि अग्निदाह कहाँ किया जाय – सेवाग्रामके पास टीले पर, सार्वजनिक स्मशान-भूमिमें या गोपुरीमें। आखिर यह तय हुआ कि जिस गोपुरीको उन्होंने अपना घर बनाया था, जहाँ अपने जीवनके अन्तिम

कार्यके लिए अपना सर्वार्पण करके उन्होंने फकीरीको अपनानेका निश्चय किया था, अग्निदाह भी वहीं किया जाय। मैं इस बारेमें तटस्थ था, लेकिन मुझे यह निर्णय अच्छा लगा।

"उनके शवके साथ हजारों लोग गोपुरी तक आये। अग्निदाहके बाद विनोबाने अपने मधुर कण्ठसे सारेका सारा ईशोपनिषद् सुनाया। फिर मैंने उनसे 'गीताई' का बारहवाँ अध्याय सुनानेको कहा, ताकि वहाँ उपस्थित सब लोग उसे समझ सकें। बारहवाँ अध्याय मैंने इसलिए सुझाया था कि वह छोटा है, किन्तु उन्हें तो अठारहों अध्याय जबानी याद हैं, इसलिए उन्होंने नवाँ सुनाया। मगर उतनेसे मुझे तृप्ति नहीं हुई। मैंने कहा: कोई अभंग सुनाओ। इस पर उन्होंने तुकारामका एक अभंग भी सुनाया। अन्तमें मैंने कहा: अब 'वैष्णव जन तो तेने कहिये' भी सुना दो। उन्होंने वह भी सुनाया। श्री परचुरे शास्त्री वहाँ पहले ही पहुँच चुके थे। उन्होंने वेद-मंत्र पढ़े और मेरे कहने पर लोगोंको उन मंत्रोंका अर्थ भी सुनाया। मंत्र बड़े अर्थ-गंभीर और सामयिक थे। थोड़ेमें उनका सार यह था: 'जो ज्योति जमनालालजीमें सीमित थी, वह अब सीमारहित विश्व ज्योतिमें समा गई है, यानी हम सबमें आ मिली है। शरीर तो मिट्टीका था, मिट्टीमें मिल गया। परन्तु उसमें जो शाश्वत था, मगर एक सीमामें बंधा हुआ था, वह अब हम सबका हो गया है। जब तक जीवित थे, जमनालालजी कुछ ही लोगोंके थे; किन्तु अब वे सारे विश्वके बन गये हैं। उनके शरीरका अन्त हुआ है, किन्तु उनके व्रत, उनकी प्रतिज्ञाएँ, उनकी गोसेवा, उनकी खादी-सेवा, सत्य और अहिंसाकी उनकी लगन, ये सब तो अब हममें आकर मिल गई हैं—हमारी विरासत बन गई हैं। उन्होंने इन सब व्रतोंको सिद्ध करनेके लिए जो जो कुछ भी किया, सो सब तो अब हमारा है ही, लेकिन जितना कुछ वह अधूरा छोड़ गये हैं, उसे पूरा करनेका जिम्मा भी हमारा है। अपनी मृत्यु द्वारा वे आज हमें यही सिखा गये हैं।'

"इससे ज्यादा सच्चा संदेश और क्या हो सकता है? यह मैं कैसे कहूँ कि मुझे उनके जानेका दुःख नहीं हुआ? दुःख होना तो स्वाभाविक था, क्योंकि मेरे लिए तो वही मेरी कामधेनु थे। आफत-मुसीबत हो तो बुलाओ जमनालालजीको; कुछ काम करना हो, कोई जरूरत आ पड़ी हो, तो बुलाओ जमनालालजीको; और जमनालाल भी ऐसे कि बुलावा गया नहीं, और वे आये नहीं। ऐसे जमनालालका दुःख कैसे न हो? लेकिन जब उनके किये कामोंको याद करता हूँ और हमारे लिए जो सन्देश वे छोड़ गये हैं, उसका विचार करता हूँ, तो अपना दुःख भूल जाता हूँ।

"आज हमें विचार तो यह करना है कि हम उनकी जमीन पर बैठे हैं। सेवाग्रामके लिए उनके मनमें कितना अनुराग था, सो मैं जानता हूँ। यहाँ

एक-एक कौड़ी उन्हींकी खर्च होती है। उन्हें इस बातकी चिन्ता रहती थी कि यहाँ खर्च होनेवाली एक एक पाईका ठीक-ठीक हिसाब रहता है या नहीं; क्योंकि वे खुद अपनी कौड़ी-कौड़ीका हिसाब रखते थे। वे हमेशा इस बातका आग्रह रखते थे कि सेवाग्रामका कोई आदमी बाहर जाय, तो उसका बर्ताव और उसकी रहन-सहन सेवाग्रामको शोभित करनेवाली होनी चाहिये।

"उनका अपना जीवन भी कैसा अनोखा था? एक दिन आकर कहने लगे: 'मानता हूँ कि आपका मुझ पर बड़ा प्रेम है, लेकिन मुझे तो देवदासकी तरह आपका पुत्र बनना है।' पहाड़ी डीलडौलवाले जमनालालजीको मैं अपना पुत्र कैसे बनाता? परन्तु आखिर उनके प्रेम और आग्रहके सामने मुझे झुकना ही पड़ा। मैंने कहा: 'अच्छी बात है।' लोग बेटेको गोद लेते हैं, लेकिन यहाँ तो बेटेने बापको गोद लिया! और गोद भी किस तरह लिया? बोले: 'बस, अब तो मुझे अपना अन्तर्बाह्य सब सदाके लिए आपके चरणोंमें चढ़ा देना है। मेरे मनमें मलिन विचार तो आते ही रहते हैं, लेकिन अब मैं उन सबको आपके सामने उगल दिया करूँगा, ताकि मेरी शुद्धि हो और मुझे शांति मिले।' अपने इस संकल्पका उन्होंने मरते दम तक पालन किया। वे रायबहादुर थे। लेकिन मेरे साथ उनका सम्बन्ध रायबहादुरीसे पहले ही कायम हो चुका था। मैंने उन्हें रायबहादुरी लेने दी, क्योंकि उन दिनों मैं सोचता था कि उसका भी कुछ सदुपयोग हो सकेगा। जब उसे छोड़नेकी बात आई, तो उन्हें उसका त्याग करनेमें एक क्षणकी भी देर न लगी। उनकी निर्भयता तो असाधारण ही थी। जबसे 'पुत्र' बने तबसे वे अपनी समस्त प्रवृत्तियोंकी चर्चा मुझसे करने लगे थे। अन्तमें जब उन्होंने गोसेवाके लिए फकीर बननेका निश्चय किया, तो वह भी मेरे साथ पूरी तरह सलाह-मशविरा करके ही किया। वे जिस कामको हाथमें लेते थे, उसमें जी-जानसे जुट जाते थे। यही उनका स्वभाव था। जब रुपया कमाने लगे तो ढेरों रुपया कमाया; लेकिन जहाँ तक मुझे मालूम है, मैं दावेके साथ कह सकता हूँ कि अनीतिसे उन्होंने एक पाई भी कभी न कमाई। और जो कुछ कमाया, सो सब उन्होंने जनता-जनार्दनके हितमें ही खर्च किया।

"जानकीदेवीके दुःखकी तो हम सब कल्पना कर सकते हैं। वे तो पागल ही हो गई थीं। कहती थीं: 'बस, मुझे तो इनके साथ सती होना है। इनके बिना मैं जी ही नहीं सकती।' मैंने कहा: 'यह न समझो कि इस तरह सती होनेसे लोग तुम्हारी पूजा करेंगे। इससे तो उलटे निन्दा होगी। हाँ, अगर कर सको, तो योगाग्नि पैदा करो और उसमें भस्म होकर सती हो जाओ। न मैं तुम्हें रोकूंगा और न दूसरा ही कोई तुम्हें रोक सकेगा। लेकिन वह तो सम्भव नहीं। इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ कि अब तो उनके पीछे जोगिन बनकर ही तुम्हें सच्ची सती बनना होगा!' घनश्यामदासजी

पास ही थे। उन्होंने कहा : 'हमारे यहाँ तो ऐसे मौकों पर कोई शुभ संकल्प करनेका रिवाज है। जानकीदेवीसे ऐसा कोई संकल्प कराइये।' जानकी-बाईने खुद ही कहा : 'मेरा संकल्प तो यही है कि वे मेरे लिए जो कुछ छोड़ गये हैं, सो सब मैं उनके कामके लिए अर्पण करती हूँ।' उन्होंने मुझे अपना हिसाब भी बताया : दो-ढ़ाई लाखकी रकम थी। यह सब उन्होंने गोसेवाके लिए अर्पण कर दी। इसके बाद जब वह चिताग्निके प्रकाशमें खड़ी थीं, मैंने एक और बात भी उनसे कही। मैंने कहा : 'सिर्फ इससे काम न चलेगा। अपना सारा धन कृष्णार्पण करके तुम भिखारिन बन गई हो। अब लड़के तुम्हें खिलायेंगे तो तुम खाओगी, और नहीं खिलायेंगे तो मेरे पास आ जाओगी और मेरे भिक्षान्नमें शरीक हो जाओगी। लेकिन इसके साथ ही अब तुम्हें इस चिताकी साक्षीमें अपने आपको भी इसी कामके लिए समर्पित कर देना है। अब तुम्हें अपने लिए नहीं, बल्कि जमनालालजीके इस गोसेवा-कार्यके लिए ही जीना है। अब न तो लड़कोंका घर तुम्हारे लिए है, न लड़कियोंका। तुम्हें या तो गोपुरीमें रहना है, या मेरे पास सेवाग्राममें। तीसरी जगह तुम्हारे लिए नहीं। और चूंकि तुम अपना सर्वस्व इस कार्यके लिए दे रही हो, इसलिए अब शोक करनेका भी कोई अधिकार तुम्हें नहीं रह जाता।' जानकीदेवीने इसे भी स्वीकार किया और स्वयं जमनालालजीकी गोपुरीमें गड़ जानेका निश्चय कर लिया। इस तरह वे सच्चे अर्थमें सती बनीं। यह सब शुद्ध वैराग्यसे हुआ है, या स्मशान वैराग्य ही है, सो तो समय ही बतायेगा। वह खुद पूछती थीं : 'क्या ईश्वर मुझे यह सब करनेकी शक्ति देगा?' विनोबा वहीं थे। उन्होंने कहा : 'जहाँ शुभेच्छा होती है, वहाँ ईश्वर उसको पूर्ण करनेकी शक्ति भी देता ही है।' इस पर मुझे महारानी विक्टो-रियाकी याद हो आई। राजगादी पर बैठते समय उनकी उम्र सिर्फ १९ बरसकी थी। जब उनका प्रधानमंत्री रानीके रूपमें उनको सलाम करने आया, तो वह अपने सिंहासनसे नीचे उतर आई और बूढ़े प्रधानके आगे सिर झुकाकर खड़ी हो गईं। जब उनके राज्याभिषेककी घोषणा की गई, तो उन्होंने ईश्वरसे प्रार्थना की और प्रतिज्ञा ली : I will be good —अर्थात् मैं भली बनूँगी। बस, यह उनका एक शुद्ध संकल्प था, जो उनके मंत्रियोंकी सहायतासे चमक उठा! हिन्दुस्तानकी वह सम्राज्ञी थीं। यह मैं नहीं कहता कि उनके राज्यमें हमें कोई तकलीफ ही नहीं हुई। फिर भी इतिहास इस बातका साक्षी है कि वह अपने उस शुभ संकल्पके अनुसार अपनी प्रजाकी सेवा करना चाहती थीं। जो काम उन्होंने किया, वही जानकीदेवी भी कर सकती हैं। वे गोसेवाका सारा काम अपने हाथमें लेकर उसे पूरी तरह सफल बना सकती हैं।

"मैं फिर कहता हूँ कि हमें हमेशा यह याद रखना होगा कि हम जमनालालजीकी भूमि पर बैठे हैं। हमें उनके नामको सुशोभित करना है। ऐसा कोई काम हमारे हाथों न हो, जिससे उनकी कीर्तिमें बट्टा लगे। उनकी शुद्ध कमाईको हमें खूब सोच-विचारकर खर्च करना चाहिये, और एक-एक पाईका हिसाब रख कर हमेशा अपव्ययसे बचना चाहिये। उनका संयम हमारे लिए मार्ग-दर्शक हो!"

किन्तु गांधीजीको इससे भी संतोष नहीं हुआ। उस रात वे एक मिनट भी नहीं सो पाये। मुझे याद नहीं पड़ता कि इससे पहले कभी किसी प्रियजनकी मृत्यु पर उन्होंने इस तरह सारी रात आँखोंमें काटी हो। दूसरे दिन उन्होंने जमनालालजीके सारे परिवारको इकट्ठा किया, और जिससे उन्हें जो आशा थी, सो उसे बता दी। जमनालालजीके सबसे बड़े पुत्र चि. कमलनयनसे उन्होंने कहा: "हिन्दू धर्ममें सबसे बड़ा पुत्र दूसरे पुत्रोंकी तरह अपने पिताकी सम्पत्तिका वारिस तो होता ही है, मगर साथ ही वह कुलधर्मका और अपने पिताकी नीति और सिद्धान्तोंका संरक्षक भी बनता है। इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम व्यापारमें लगे हो, तो लगे रहो; धन कमाना हो, कमाओ; लेकिन तुम्हारी सारी कमाई जमनालालजीकी तरह धर्मकी कमाई होनी चाहिये। साथ ही, यह भी याद रखो कि, जमनालालजीकी तरह तुम्हें भी लोकहितके लिए अपनी सम्पत्तिका संरक्षक बनकर रहना है। तुम अपनी कमाईका रुपया अपने लिए नहीं, लोकसेवाके लिए खर्च करोगे, तभी तुम्हारा ट्रस्टीपन सार्थक हो सकेगा।" इसके बाद छोटे भाई चि. रामकृष्णको समझाते हुए कहा: "तुमसे तो मैं यह आशा करता हूँ कि तुम अपना सारा जीवन सेवाके लिए और जमनालालजी द्वारा छोड़े हुए अधूरे कामोंको पूरा करनेके लिए समर्पित कर दोगे। लेकिन मैं तुम्हें इसके लिए मजबूर करना नहीं चाहता। तुम्हारी हिम्मत हो, तो संकल्प करो। याद रखो कि जो शुभ संकल्प हम करते हैं, उन्हें निबाहनेकी शक्ति भी ईश्वर हमें दे ही देता है। और मान लो कि हम सफल नहीं हो पाये, तो भी कोई नुक़सान नहीं। गीताकी भाषामें 'योगभ्रष्ट' की गति भी शुभ ही होती है।" फिर उन्होंने जमनालालजीके भतीजे श्री राधाकृष्णजीसे कहा: "जानकीदेवीके व्रतको तो तुम जानते ही हो। मैं मानता हूँ कि अगर उन्हें एक योग्य सचिव मिल जाय, जैसा महारानी विक्टोरियाको मेलबोर्न मिल गया था, तो वह अवश्य ही गोसेवा-संघकी सभानेत्रीके पदको सुशोभित कर सकेंगी। वह गोमाताकी 'पुत्री' हैं, अतएव वह अपनी 'माँ' की अच्छी सेवा कर सकेंगी। आजकी इस गिरी हुई तन्दुरुस्तीमें मैं उन

पर ज्यादा बोझ नहीं डालना चाहता। किन्तु मैं जानता हूँ कि 'त्याग-मूर्ति' के संकल्पका बल उसकी देहको वज्रवत् बना दिया करता है। तुम याद रखो कि और सब काम बँट जाने पर जो बाकी रह जायगा, उस सबकी जिम्मेदारी तुम्हारे कन्धों रहेगी।" अन्तमें जमनालालजीकी पुत्रियोंसे बात करते हुए उन्होंने कहा: "अभी जो बातें मैंने चि. कमलनयन और रामकृष्ण वगैरासे कही हैं, वे सब तो तुमने सुनी ही हैं। याद रखो कि तुम्हें भी वही सब करना है। तुमसे भी मैं तुम्हारी शक्तिके अनुसार त्यागकी आशा रखूंगा। यह कभी न भूलो कि जमनालालजीकी जितनी कमाई थी, सो सभी असलमें कृष्णार्पण थी। अगर उसका कुछ हिस्सा तुम्हें मिला है, तो वह भी ट्रस्टीशिपकी शर्तके साथ ही मिला समझो! वह तुम्हारे भोग-विलासके लिए नहीं, बल्कि इसलिए है कि जमनालालजीकी तरह तुम भी उसकी ट्रस्टी बन कर रहो।"

हरिजन सेवक, २२–२–४२] —प्यारेलाल

जमनालालजी और स्त्री-समाज

गांधीजीने स्व. जमनालालजीके जीवनकी चर्चा करते हुए महिला-आश्रमकी बहनोंके सामने नीचे लिखा प्रवचन किया:—

"महिला-आश्रमकी बहनें तो जमनालालजीकी खास तौर पर ऋणी हैं। वे इस ऋणको किस तरह चुकायेंगी? सिर्फ रोने-धोनेसे तो यह ऋण नहीं चुकेगा। सेवा ही उनका उत्तम स्मारक है। आत्मा तो अमर है। शरीर ही नाशवान है लेकिन जमनालालजीकी तरह हर आदमी लोगोंके दिलमें अमरता नहीं पाता।

* * * *

"जमनालालजीने स्त्री-कार्यकर्ता तैयार करनेके विचारसे महिला-सेवा-मण्डलकी स्थापना की थी। आप और कुछ न करें, तो कमसे कम उनके सेवाभावको तो अवश्य ही तन-मनसे अपना लें, और जब जीवनके विशाल क्षेत्रमें प्रवेश करें, तो उसे अपने कवचके रूपमें धारण करलें। आपमें जो कुंवारी हैं, उनमेंसे अधिकतर तो ब्याह करके घर-गृहस्थी संभालेंगी। यह स्वाभाविक है। जमनालालजी तो जोड़े जुड़ानेका काम भी बड़ी निपुणताके साथ करते थे, इसलिए मैं तो उन्हें मजाकमें 'शादीलाल' ही कहा करता था। मेरी तरह उनकी भी यह प्रबल इच्छा थी कि कुंवारी बहनें अपनी अभागिन बहनोंकी सेवाके लिए स्वेच्छा-पूर्वक अविवाहित रहें। लेकिन ऐसी स्त्रियां तो इनी-गिनी ही हो सकती हैं।

* * * *

"जमनालालजी एक बेजोड़ आदमी थे। वे सेवाके लिए ही पैदा हुए थे, और उनकी सेवाका जन्म भी संकुचित क्षेत्रमें रहनेके लिए नहीं हुआ था। कोई काम वे आधे दिलसे न करते थे। उनकी लगन आश्चर्यजनक थी। जिस गायका दूध वे पीते थे, उसकी सारी सार-संभाल वे खुद करने लगे थे। उनकी तन्मयता कुछ ऐसी ही थी। वे चाहते थे कि काम करते-करते मरें। ईश्वरने उन्हें वैसी ही मृत्यु दी। उनकी हर चीजका हर आदमी अनुसरण नहीं कर सकता, लेकिन जिन जमनालालजीने आप लोगोंके लिए इतना किया है, उनके लिए आपके दिलमें सचमुच ही प्रेम और आदर हो, तो आपको उनके जीवनसे कमसे कम एक पाठ तो सीखना ही चाहिये। स्त्रीत्वका जो ऊंचा आदर्श उन्होंने आपके सामने रक्खा है, उसे सिद्ध करनेका आप सब प्रयत्न कीजिये और उसके लिए अपना जीवन समर्पित कर दीजिये।"

हरिजन सेवक, ८–३–४२] — अमृत कुंवर

जमनालालजीका सच्चा स्मारक

(१)

सत्यशोधकको तो हर बातमें अपना रास्ता दुनियासे न्यारा ही निकालना पड़ता है। और, जमनालालजीने तो गांधीजीसे सत्य-शोधक बनना ही सीखा था। गांधीजीने सत्यकी ही तलाशमें अपने परिवारका त्याग किया, और सारी दुनियाको अपना परिवार माना। जमनालालजीने जगतकी सेवाको अपना जीवन-कार्य बनाया। यही वह अमर गांठ थी, जो दोनोंको एक-दूसरेसे जोड़े रही। इसलिए गांधीजीने बड़ी खूबीके साथ जमनालालजीकी मृत्युके शोकको एक नया ही रूप दे दिया।

जमनालालजी अकेले एक व्यक्ति ही नहीं थे, वे सच्चे अर्थमें देशकी एक संस्था थे। उनके आकस्मिक स्वर्गवासके बाद गांधीजीने तय किया कि उनकी तमाम सार्वजनिक प्रवृत्तियोंको पहलेकी तरह अखण्ड रूपसे चलाते रहना ही उनका सच्चा स्मारक हो सकता है। इस हेतुको सफल बनानेके लिए उन्होंने जमनालालजीके करीब दो सौ ऐसे मित्रोंको, जिन्हें उनके जीवन-कार्यसे सहानुभूति थी, अपनी सहीसे निमंत्रण भेजकर सलाह-मशविरेके लिए वर्धा बुलाया। जमना-लालजीके राष्ट्र-भाषा-प्रचारके सिद्धांतको ध्यानमें रखकर निमंत्रण-पत्र हिन्दी और उर्दू दोनों लिपियोंमें छापा गया था। वर्धाके नवभारत विद्यालयमें २० और २२ फरवरीको दोपहर बाद इस निमित्त आये

हुए भाई-बहनोंकी दो सभायें हुईं। इस अवसर पर गांधीजीने जो भाषण किया, वह अपनी मिसाल आप ही है। उनके मुंहसे ऐसे वचन, इस प्रकारके अवसर पर शायद पहले कभी सुननेमें नहीं आये। रुपये-पैसे द्वारा ईंट-पत्थरका स्मारक बनानेकी बातको छोड़कर जमनालालजीकी मृत्युको आत्मोन्नतिका और उनके जीवन-कार्योंको आगे बढ़ानेका एक साधन बना लेनेकी सलाह देते हुए उन्होंने वहाँ एकत्र मित्र-मण्डलीसे कहा :—

बोझ बंटाइये

"आजका-सा अवसर मेरे जीवनमें इससे पहले कभी नहीं आया था, और जहां तक मैं सोच पाता हूँ, आगे भी कभी नहीं आयेगा। आप देखते हैं कि जो कार्रवाई आज हम यहां करने जा रहे हैं, उसके लिए कोई सभापति नहीं चुना गया है। मैं तो सभापति हूँ ही नहीं। क्यों नहीं हूँ, सो आप खुद ही थोड़े समयमें समझ जाइयेगा।

"कहा जा सकता है कि मेरे साथ जमनालालजीका सम्बन्ध करीब-करीब तभीसे शुरू हुआ, जबसे मैंने हिन्दुस्तानके सार्वजनिक जीवनमें प्रवेश किया। उन्होंने मेरे सभी कामोंको पूरी तरह अपना लिया था। यहां तक कि मुझे कुछ करना ही नहीं पड़ता था। ज्योंही मैं किसी नये कामको शुरू करता, वे उसका बोझ खुद उठा लेते थे। इस तरह मुझे निश्चिन्त कर देना," मानो उनका जीवनकार्य ही बन गया था। यों, हमारा काम मजेमें चल रहा था। लेकिन अब तो वे खुद ही चले गये हैं और उनके सब कामोंको चलानेका भार मेरे कन्धों पर आ पड़ा है। इसलिए मैंने सोचा कि मैं उनके सब मित्रोंको जो उनके अनेकानेक सेवा-कार्योंमें सहायक होते रहते थे, यहां बुलाऊं और उनसे निवेदन करूं कि वे इस असह्य बोझको उठानेमें अपनी ताकतभर मेरी मदद करके इसे हलका करें। आज मैं आपके सामने एक भिक्षुककी हैसियतसे यहां खड़ा हूं। फिर इस सभाका सभापति कैसे बन सकता हूँ?

भिक्षा कौन देगा?

"अपना भिक्षा-पात्र लेकर मैं आपके सामने खड़ा तो हूं, लेकिन मैं धन-दौलतकी भीख नहीं चाहता। वैसी भीख भी मैंने अपने जीवनमें खूब मांगी है। गरीबकी कौड़ी और अमीरके करोड़ोंकी मुझे जरूरत रही है। लेकिन आज जो काम मुझे करना है, उसमें रुपये-पैसेकी कम ही जरूरत है। अगर मैं चाहता तो आजके दिन जमनालालजीके सब धनिक मित्रोंको यहां इकट्ठा करके उन पर दबाव

डाल सकता था, उनकी खुशामद कर सकता था, और उनकी भावनाओंको द्रवित करके थैलियोंके मुंह खुलवा सकता था। यह धन्धा भी मैंने अपने जीवनमें जी भरकर किया है, और वह मुझे अच्छी तरह आता भी है। लेकिन अगर वही सब आज मैं यहां करने बैठता, तो उस व्यक्तिके नामको बड़ा धब्बा लगता, जो मुझे अपना सर्वस्व देकर चल बसा है, जो मेरे पास आया तो मेरी परीक्षा लेने था, मगर पुत्र बनकर बैठ गया, और मेरा सारा बोझ उठाता रहा। मुझे जो भिक्षा आज आपसे मांगनी है, वह तो यह है कि जमनालालजीके उठ जानेसे जो बोझ बढ़ गया है उसको उठानेमें कौन-कौन मेरी मदद करेंगे। अकेले एक आदमीकी मददसे नहीं चलेगा; मदद तो सबको मिलकर देनी होगी और काम बाँट लेना होगा।

अब तक क्या हो सका है?

"इस सम्बन्धमें आगे कुछ कहनेसे पहले मैं आपको यह बता दूं कि अभी तक मैंने क्या किया है। ११ फरवरीको जब मैं जमनालालजीके द्वार पर पहुँचा, तो उनका देहान्त हो चुका था। मेरे पास वर्धासे संदेशा तो सिर्फ यही आया था कि खूनका दौरा कम करनेकी दवा भेजें। मैं दवा भेजकर अपने दिलकी तसल्ली कर सकता था। लेकिन उस दिन मैंने महसूस किया कि नहीं, मुझे खुद ही जाना चाहिए। जब वहां पहुंचा, तो मामला कुछ और ही पाया। मैं उस अवसर पर भी निर्दय बन गया। जानकीदेवी तो पतिके शवके साथ सती होनेकी ही बात करती थीं। मैंने कहा: 'सचमुच सती होना है, तो जीती-जागती सती बन जाओ। धनका जितना त्याग कर सको, कर दो।' यह तो उनके लिए एक मामूली बात थी। आखिर धनसे वह कितना सुख और आराम भोग सकती थीं? लेकिन दूसरी चीज उतनी आसान नहीं थी। सम्भव है, वह अब भी उतनी आसान न हो। मैंने कहा, वह अपने पतिका स्थान ले लें। उन्हें संकोच हुआ, फिर भी मैंने उनसे प्रतिज्ञा करा ही ली। इतना कठोर मैं बन गया।

"इस तरह जानकीदेवीने तो त्यागकी दीक्षा ली, लेकिन फिर मैंने सोचा कि उनके लड़कों, लड़कियों और दामाद वगैराको भी ऐसा ही त्याग करना चाहिये। मैं उनके साथ भी कठोर हो गया। मैंने उनसे कहा: 'बेशक, आप जमनालालजीकी तरह व्यापार कीजिये; लेकिन उसमें उनकी विशेषताको निबाहते रहिये, यानी व्यापार भी सेवाभावसे अथवा धर्मभावसे कीजिये। जितना कमायें, [illegible] और उसे खर्च भी पुण्यकार्यके लिए ही कीजिये, [illegible] लिए नहीं। यानी आप अपने कमाये धनके भी संरक्षक बनकर रहिये।'

"जमनालालजी करीब छः लाख रुपया अपने लड़कोंके पास छोड़ गये थे, ताकि वे उसका उपयोग सेवार्थ करें, यानी उससे मेरे जैसे भिखारियोंकी झोलियां भरें। लड़के कह सकते थे, कि एक बार हमें जी भरकर ऐश-आराम कर लेने दीजिये, फिर हम त्याग भी करते रहेंगे। लेकिन नहीं; एक-दो दिनके गंभीर विचारके बाद उन्होंने वह सारी रकम सेवा-कार्यके लिए दे दी। इसके सिवा, जमनालालजीके जीवन-कालमें कांग्रेस-जनोंके और दूसरे कार्यकर्ताओं वगैराके आतिथ्य पर हर साल करीब २० हजार रुपया खर्च होता था। उन्होंने इसको भी पहलेकी तरह जारी रखनेका निश्चय किया, और सारे खर्चकी जिम्मेदारी बच्छराज-जमनालाल फर्मकी तरफसे अपने कन्धों पर उठा ली। सेठजीने बजाजवाड़ीका एक हिस्सा जानकीदेवीके लिए और बच्चोंके लिए रक्खा था। लेकिन उनके परिवारवालोंने यह तय किया कि उनमेंसे कोई उन बंगलोंमें नहीं रहेंगे। उनका उपयोग सिर्फ अतिथि-सत्कार अथवा सार्वजनिक कामके लिए ही होगा। वे खुद तो अभी गोपुरीमें ही रहना पसंद करते हैं।

स्वराज्य-प्राप्तिसे भी कठिन

"इस तरह शुभ संकल्पोंके साथ यह काम शुरू हुआ है। जमनालालजीकी आंख बन्द होते ही मैंने उनके बोझका बँटवारा शुरू कर दिया है। आप देखेंगे कि जमनालालजीके कामोंकी जो फेहरिस्त आपको भेजी गई है, उसमें उनके आखिरी कामको पहला स्थान मिला है। यह काम स्वराज्य-प्राप्तिके कामसे भी कठिन है। स्वराज्य मिलनेसे यह अपने-आप नहीं हो जायगा। यह सिर्फ पैसेसे होनेवाला काम नहीं। मैं इस बातका साक्षी हूं कि आजीवन अलौकिक निष्ठासे काम करनेवाले उस व्यक्तिने किस अपूर्व निष्ठासे इस कामको शुरू किया था। उन्हें इस तरह काम करते देखकर एक दिन सहज ही मेरे मुंहसे यह निकल गया था कि जिस वेगसे वे इस कामको कर रहे हैं, उसको उनका शरीर सह सकेगा या नहीं? कहीं बीच ही में वह धोखा तो न दे जायगा? आज मेरा वह कथन भविष्यवाणी साबित हुआ है—मानो उस समय भगवान् ही मेरे मुंहसे बोल रहे थे। सारांश यह कि यह काम पैसेसे नहीं, एक-निष्ठासे ही होनेवाला है।

* * * *

"जानकीदेवीके दानकी रकमके साथ मिलकर यह रकम हमारी आजकी आवश्यकताके लिए काफी है। लेकिन कार्यकर्ता काफी नहीं हैं। गोसेवाका काम आज तक जिस तरह चला, उससे न जमनालालजीको संतोष था, न मुझे। इस कामको संतोषजनक रूपसे चलानेके

लिए मुझे आपकी तन-मनसे मदद मिलनी चाहिए। जबतक यह न हो जायगा, मुझे चैन न पड़ेगा। असलमें वारिस तो उन्हें मेरा बनना चाहिये था, पर वह तो चले गये और जीत गये। अब परीक्षा मेरी है। मैं एक नये रूपमें उनका वारिस बन गया हूं, यानी उनके सारेके सारे कामोंको मैंने अपने जिम्मे ले लिया है। लेकिन यह तो एक ऐसी चीज है, जिसके वारिस आप सब बन सकते हैं। जब आप सब मिलकर इन कामोंको उठा लेंगे, तो ये पहलेसे भी ज्यादा व्यवस्थित और संतोषजनक रीतिसे चलेंगे, और तभी मैं इस परीक्षाओंमें उत्तीर्ण हो पाऊंगा।

* * * *

खादी और ग्रामोद्योग

"अब दूसरी चीज लीजिये। मिसालके तौर पर, खादीके काममें उनकी दिलचस्पी मुझसे कम न थी। खादीके लिए जितना समय मैंने दिया, उतना ही उन्होंने भी दिया। उन्होंने इस कामके पीछे मुझसे कम बुद्धि खर्च नहीं की थी। इसके लिए कार्यकर्त्ता भी वे ही ढूंढ-ढूंढ कर लाया करते थे। थोड़ेमें यह कह लीजिये कि अगर मैंने खादीका मंत्र दिया, तो जमनालालजीने उसको मूर्तिरूप दिया। खादीका काम शुरू होनेके बाद मैं तो जेलमें जा बैठा। मगर वे जानते थे कि मेरे नजदीक खादी ही में स्वराज्य है। अगर उन्होंने तुरन्त ही उसमें रत होकर उसे संगठित रूप न दिया होता, तो मेरी गैरहाजिरीमें सारा काम तीन-तेरह हो जाता।

"यही बात ग्रामोद्योगकी थी। उन्होंने इसके लिए मगनवाड़ी तो दी ही थी, साथ ही उसके सामनेकी कुछ जमीन भी वे मगन-वाड़ीके लिए खरीदनेका संकल्प कर चुके थे। अब चि. कमलनयनने वह जमीन भी मगनवाड़ीको दे दी है।

* * * *

"अब तक इस देशकी आजादीको खोनेमें व्यापारी-समाजकी खास जिम्मेदारी रही है। जमनालालजीको यह चीज बराबर खटका करती थी। इसीलिए आज आपके सामने मुझे ये सारी बातें रखनी पड़ी हैं।

* * * *

"जमनालालजीके दूसरे कामोंके बारेमें मैं आपका इस वक्त ज्यादा समय लेना नहीं चाहता। वे सब आपकी आंखोंके सामने ही हैं। महिला-आश्रमको ही लीजिये। यह उनकी अपनी एक विशेष कृति है। उन्हींकी कल्पनाके अनुसार यह अबतक काम करता रहा है। जमनालालजीके सामने सवाल यह था कि जो लोग देशके काममें जुट कर भिखारी बन जाते हैं, उनके बाल-बच्चोंकी शिक्षाका क्या

प्रबन्ध हो? उन्होंने कहा कि कमसे कम उनकी लड़कियोंको तो यहां सरकारी मदरसोंके मुकाबले अच्छी ही तालीम मिल सकेगी। बस, इसी खयालसे महिला-आश्रमकी स्थापना हुई।

* * * *

"बुनियादी तालीम और हरिजन-सेवक-संघके कामका भी यही हाल है। आप इनमें शरीक हो सकते हैं। हिन्दू-मुस्लिम एकताके लिए उनके दिलमें खास लगन थी। उनके अन्दर साम्प्रदायिक द्वेषकी बू तक न थी। आप उनके जीवनसे इस गुणको ग्रहण कर सकते हैं।

सच्चा स्मारक

"जमनालालजीका स्मृति-स्तंभ खड़ा करके हम उनकी यादको चिरस्थायी नहीं बना सकते। स्तंभ पर खुदे हुए शिलालेखको तो लोग पढ़ कर थोड़े ही समयमें भूल जायेंगे, परन्तु जिस आदमीने दुनियाके लिए इतना-कुछ किया है, उसके कामको चिरस्थायी रखनेका संकल्प कोई कर ले, तो वह उसका सच्चा स्मारक हो रहेगा।

* * * *

"मैं इसे अपने जीवनका एक अत्यन्त गंभीर अवसर मानता हूं। जो शुद्ध धर्मभावना अन्तिम समयमें जमनालालजीकी थी, उसे मैं कायम रखना चाहता हूं। इसलिए जिसे जो कुछ करना हो, उसी भावनासे करे। एकान्तमें बैठे, अन्तर्मुख बने और ईश्वरको साक्षी रख कर जो संकल्प करना हो, करे।"

हरिजन सेवक, ८–३–४२] — प्यारेलाल

जमनालालजीका सच्चा स्मारक

(२)

* * * *

दूसरे दिन सभाकी कार्रवाई शुरू करते हुए गांधीजीने कहा :—

"अगर जमनालालजीकी मृत्युसे हम फायदा उठाना चाहते हैं, तो हमें बहुत ज्यादा सावधान बनना होगा, बहुत ज्यादा संयम और त्याग सीखना होगा।

* * * *

"मैं अकसर सोचता हूं कि अगर हममेंसे हरएकको एक सालके फौजी अनुशासनका तजरबा रहता, तो आज हमारी हालत कुछ और होती। जमनालालजी किसी फौजी विद्यालयमें तालीम लेने नहीं गये थे। मगर उन्होंने खुद अपनी कोशिशसे अपने अंदर फौजी अनुशासनके गुण पैदा कर लिये थे। वैसी ही तालीम हममेंसे हरएकको खुद ले लेनी होगी।

* * * *

"इसलिए कल मैंने अपनेसे यह तय कर लिया था कि अगर इस मौके पर पैसा इकट्ठा करनेके बजाय मैं आपको सावधान कर पाऊं, तो वही मेरा सच्चा व्यापार होगा। मैं फिर आपसे कहता हूँ कि आप अपने दिलको खूब टटोल कर देखिये, और जहां कहीं जड़ता नजर आये, उसे उखाड़ फेंकिये। और भविष्यके लिए यहांसे यही संकल्प करके उठिये कि जो अच्छी सलाह आपको मिलेगी या अन्तरसे जो प्रेरणा उठेगी, उसके अनुसार आप तुरन्त काममें जुट जाया करेंगे। जमनालालजीके स्मारककी सच्ची स्थापनाका इससे अच्छा या महत्त्वपूर्ण आरम्भ और क्या हो सकता है?"

* * * *

हरिजन सेवक, १५–३–४२] —प्यारेलाल

एक अंग्रेजकी श्रद्धाञ्जली

[मेरे नाम लिखे अपने एक पत्रमें श्री वेरियर एल्विनने स्व. जमनालालजीके सम्बन्धमें नीचे लिखे उद्‌गार प्रकट किये हैं।

—महादेव देसाई]

पिछले कुछ सालोंमें मैं जमनालालजीको बहुत ही कम देख पाया था। हालांकि एक वक्त ऐसा था, जब हम एक-दूसरेके काफी नजदीक थे। ऐसा कोई वक्त मुझे याद नहीं पड़ता, जब मैंने प्रेम और कृतज्ञताके साथ उनका स्मरण न किया हो।

* * * *

दस साल पहले जब मैं धूलिया जेलमें जमनालालजीसे मिलने गया, और उन्हें 'सी' क्लासमें रहते देखा, तो मुझे इतना आघात पहुंचा कि मैंने उसी समय प्रतिज्ञा की कि जबतक हमारे देशमें ये बातें होती रहती हैं, मैं नंगे पैर ही घूमूंगा। * * * मैं आज भी नंगे पैर ही घूमता हूँ, और यह एक ऐसी घटना है, जो प्रायः मुझे अपने मित्रका स्मरण करा दिया करती है।

* * * *

आजसे दस बरस पहले वर्धामें जमनालालजीके उस छोटेसे सीधे-सादे घरमें उनके मेहमान बन कर रहना एक अद्‌भुत चीज थी। अपने जीवनमें जमनालालजीने कभी सादगीका त्याग नहीं किया। बादमें जब वर्धाने राजधानीका रूप ले लिया, तो सहज ही वहां बहुतसी नई इमारतें और संस्थायें खड़ी हो गईं, और जो थीं वे भर गईं। मगर १९३१-३२ में तो उनके घरमें साधुकी कुटियाकी तरह शान्ति और सादगीका वातावरण मानो मुंहसे बोलता था।

* * * *

जमनालालजीमें कई ऐसे गुण थे, जो पश्चिमवालोंको खूब पसन्द आते। उनकी सादगी और स्वाभिमान, उनकी सच्चाई और स्पष्टवादिता, और जीवनके प्रति क्वेकरोंसी उनकी वृत्ति पश्चिमवालों पर अपना प्रभाव डाले बिना न रहती।

* * * *

उनके जैसे धनी आदमीमें सत्यका इतना आग्रह क्वचित ही पाया जाता है। उनके मुंहसे निकलनेवाले प्रत्येक शब्दको आप जब चाहें कसौटी पर पूरा उतार सकते थे; आपको विश्वास रहता था कि उनकी भावुकतामें कोई परिवर्तन न होगा, और उनके आदर्शमें कोई कमी न आयेगी। मैं उनको दिलसे प्यार करता था, और आज जब वे चले गये हैं, मैं अपने जीवनमें एक बड़े अभावका अनुभव कर रहा हूं, हालांकि पिछले कुछ सालोंमें मैंने शायद ही उन्हें देखा हो। मैं यह भी अनुभव करता हूं कि आज वर्धामें रहते हुए आप सब लोगोंको और देशकी जनताको उनके समान शुद्ध हृदय, प्रेमी, उदार और व्यापक सहानुभूतिवाले व्यक्तिका अभाव कितना खटक रहा होगा।
हरिजन सेवक, २९–३–४२]

पशुपालन

"वर्धामें जो केन्द्रीय गोसेवा-संघ चलता है, वह स्वर्गीय श्री. जमनालालजीकी अन्तिम कृति है। उनकी लोकोपयोगी प्रवृत्तियाँ अनेक थीं। वर्षोंसे धन कमानेका मोह उन्होंने छोड़ रखा था। जो कुछ धन कमाते थे, सो लोकसेवामें लगानेके लिए। ११ फरवरीको उनकी पांचवीं पुण्यतिथि थी। उनके अनुयायियों और साथियोंने उस पुण्यतिथिका समय जमनालालजीकी अन्तिम प्रवृत्तिका विचार करनेमें बिताया और इस तरह तिथि मनाई। सब जानते हैं कि अपने देहान्तके एक घण्टे पूर्व भी वे कुछ-न-कुछ गोसेवाका कार्य कर रहे थे। गोपुरी नामका क्षेत्र भी उन्होंने बनाया था। उनकी समाधि गोपुरीमें ही है।
हरिजन सेवक, १७–२–४६] — मो. क. गांधी

महादेव देसाई

महादेवभाईके मरनेके बाद मैंने बापूसे एक रोज पूछा: "आज तक आपने जितनी मौतें देखीं, उन सबमें महादेवभाईकी मौतसे क्या आपको सबसे ज्यादा सदमा नहीं पहुँचा?" उन्होंने जवाब दिया: "जमनालालजी, मगनलाल और महादेव — इनमेंसे हरएक अपने-अपने क्षेत्रमें अनूठे थे। मेरा खयाल है कि उनकी जगह दूसरे नहीं ले सकते।"
हरिजन सेवक, १८–८–४६] — सुशीला नय्यर

"क्रोध नहीं, मोह नहीं"

* * * स्व. भाई जमनालालजीकी इच्छासे हिन्दुस्तानी प्रचार सभा कायम हुई। इससे उर्दू रिसाला निकालना लाजमी हो गया।

* * * *

मैं साहित्यके प्रचारकी दृष्टिसे हिंदी साहित्य सम्मेलनका सदस्य नहीं बना था। स्व. भाई श्री. जमनालालजी और दूसरे अनेक मित्रोंने मुझे बताया था कि नाम चाहे कुछ भी हो, उन लोगोंका मन साहित्यमें नहीं था; उनका दिल राष्ट्रभाषामें ही था और इसीलिए मैंने दक्षिणमें राष्ट्रभाषाका जोरसे प्रचार किया।

हरिजन सेवक, २५-१-४८] —मो. क. गांधी

उनकी अन्तिम चिन्ता

* * * *

सारे दिन लोग लगातार मुलाकात करनेके लिए आते रहे। उनमें दिल्लीके मौलाना लोग भी थे। उन्होंने गांधीजीके वर्धा जानेके बारेमें अपनी सम्मति दे दी। गांधीजीने उनसे कहा कि मैं सिर्फ थोड़े दिनोंके लिए ही यहांसे गैरहाजिर रहूंगा, और अगर भगवानकी कुछ और ही मर्जी न हुई और कोई आकस्मिक घटना न घटी, तो ११ तारीखको स्वर्गीय सेठ जमनालालजीकी पुण्यतिथि मनानेके बाद बहुत करके १४ वीं तारीखको मैं लौट आऊंगा।[1]

* * * *

हरिजन सेवक, १५-२-४८] —प्यारेलाल

"सवाल जवाब"

सवाल—क्या आप उन संस्थाओंकी यादी देनेकी कृपा करेंगे जिन्हें गांधीजीने स्थापित किया है या जिन्हें उनके उपदेशोंसे प्रेरणा मिली है?

जवाब—वर्धा और उसके आसपासके गाँवोंकी नीचे लिखी संस्थायें श्री जमनालालजीके उत्साह, श्री विनोबाजीके मार्गदर्शन और हमेशा मिलते रहनेवाले गांधीजीके आदेशोंके कारण ही कायम हुईं, बन्द की गईं या उन्हें नया रूप दिया गया।

क. कन्या आश्रम, वर्धा। १९३५ में बन्द हो गया।

ख. महिला आश्रम, वर्धा, १९३५।

१. यह अंश प्यारेलालजीके लेखमेंसे लिया गया है जिसमें उन्होंने गांधीजीके देहान्तके बाद उनके अंतिम दिनोंका वर्णन किया है। ३० जनवरी १९४८ को गांधीजीका देहान्त हो गया था और वे वर्धा नहीं जा सके थे।

ग. गोसेवा मण्डल, नालवाड़ी, वर्धा ।
घ. गोसेवा चर्मालय, नालवाड़ी, वर्धा ।
ङ. महारोगी (कोढ़) आश्रम, दत्तपुर, वर्धा ।
च. गोसेवा संघ, गोपुरी, वर्धा ।
छ. ग्राम-सेवा मण्डल, वर्धा ।
ज. स्वराज्य भण्डार, वर्धा ।
झ. परमधाम, पवनार, वर्धा । पिछले कुछ सालोंसे श्री विनोबा यहीं रहते थे।

हरिजन सेवक, १२–१२–४८] — किशोरलाल मशरूवाला

'दादीजी' बजाज

'दादीजी'–स्व. जमनालालजी बजाजकी माता श्री. विरदीबाईका देहान्त २१ मई (वैशाख-ज्येष्ठ कृ. ११) को शामके करीब साढ़े चार बजे लगभग ९० वर्षकी उमरमें हुआ। गुजरातीमें साखी है कि :

जननी जण तो भक्त जण, कां दाता कां शूर।
नहीं तो रहेजे वांझणी, मा गुमावीश नूर॥

श्री. जमनालालजी जैसे भक्त, दाता और शूरकी जन्मदात्री वर्धावासियोंकी 'दादीजी' ने इस आदेशको सफल करके अपना जीवन आदरणीय किया था। जब तक आंख, कान और हाथ-पैरोंने काम दिया, वे अपने निजी कामोंमें सदा स्वावलम्बी रहीं। जवानीमें उन्होंने बहुत सख्त परिश्रम किया था और अभी-अभी तक घण्टों बराबर सूत कातती रहीं। कितने ही प्रियजनोंको उन्होंने अपने सूतकी खादी दी होगी। शरीरके अवयवों और ज्ञानेंद्रियोंकी शक्ति कम हो जानेसे चरखा चलाना मुश्किल हो गया, तब समय कैसे काटें इसकी उन्हें बेचैनी मालूम होने लगी। फिर भी विनोबाजीकी सलाहसे जबतक बन पड़ा वे कातती रहीं। अपने ही सूतके वस्त्रोंमें उन्होंने आखिर अग्निस्नान किया।

उनका शरीर पूरे पके पानकी तरह हो गया था। अपना काम पूरा करके उसका गिर जाना उचित ही हुआ है। परन्तु जिस तरह 'वृक्ष सूना इक पर्ण बिना', वैसे ही बजाजवाड़ी और गोपुरी जो उनके दो निवासस्थान थे, उस पीले पानसे भी शोभावान मालूम होते थे। वे अब परिचित मित्रोंको फीके मालूम होंगे। उनके जीवनकी सौम्य सुगंधकी स्मृति स्वजनोंको प्रेरणा देती रहेगी।

हरिजन सेवक, ९–६–५१] — कि. घ. मशरूवाला

काकीनाडा,
शनिश्चर

भाई जमनालालजी,

अग्रवाल भाईयोंको मे इतना हि कहना चाहता हुं की हिंदुस्तानकी जो कोइ कोम शुद्ध बलीदान दे सकती है हिंदुस्तानकी और स्वधर्मकी रक्षा कर सकती है। मेरी उमीद है इस समय अग्रवाल जाति स्वराज्यका महान् जंगमे अपना पूरा हिस्सा दे देगी। मैं जानता हुं की मारवाडी कोममें धन है, धर्म-प्रेम है, दान देनेका भाव है। आधुनिक प्रवृत्ति आत्मशुद्धिकी और धर्मरक्षाकी है। उसमें अग्रवाल भाईको बलीदान देनेकी शक्ति ईश्वर दे दें ऐसी मैं प्रार्थना करता हुं।[1]

आपका

मोहनदास गांधी

१. यह पत्र, किताब करीब करीब छप चुकने पर मिलनेके कारण, पहले भागमें नहीं दिया जा सका, इसलिए यहाँ दिया जाता है।

परिशिष्ट ४

गांधीजीके अपने हाथों लिखे पत्र

जो पत्र गांधीजीने अपने हाथों लिखे हैं उनकी भाषा बिना कुछ फरक किए ज्यों की त्यों (गलतियों सहित) रखी गई है। ऐसे पत्रोंकी क्रमसंख्या निम्नांकित है:—

भाग १: १ से ९, १७, १८, २२ से २६, २८, २९, ३२ से ३४, ४४ से ४६, ४८, ५५, ६०, ६२, ६६ से ७२, ७४ से ८०, ८९, ९०, ९५, ९६, १००, १०५, १०६, १०८, १११ से ११३, ११५, १२७, १२९ से १३२, १३४ से १३७, १४०, १४४, १४६, १४७, १४९, १५२ से १५५, १५८ से १६०, १६२ से १६६, १७०, १७२, १७४ से १७८, १८० से १८७, १८९ से १९३, १९५, १९७, १९८, २०० से २०२, २०४, २०५, २०८ से २१०, २१२ से २१७, २२० से २२२, २२४ से २२६, २२९, २३६, २४५ से २४७, २५० से २५२, २५६, २६२ से २६५, २६९, २७८, २८१, २८२, २८५, २८६, २९२, २९३, २९५, ३०५, ३१२, ३१४, ३१५, ३२०, ३२३ से ३२७, ३३१, ३३९, ३४०, ३४२ से ३४४, ३४६, ३४९, ३५१ से ३५४, ३५७, ३५९, ३६४ से ३६६, ३६८, ३७०, ३७१, ३७४ से ३७६, ३७९, ३८०।

भाग २: ३, ४, ६, ९ से ११, १३, १६, १८, १९, २१ से २३, २६, २७, २९, ३३, ३७, ४०, ४३, ४५, ४६, ४९ से ५१, ५३, ५४, ५७ से ६३, ६५ से ७२, ७४, ७५, ७७, ७९, ८२ से ८६, ८८ से ९३, ९५ से १०४, १०६ से १२१, १२३ से १३०, १३४ से १३६, १३८ से १४७, १४९ से १५१, १५४, १५६ से १५८, १६०, १६२ से १६४, १६६, १६७।

भाग ३: १५, २२, २६, ३१, ३३, ३७, ४० से ४२, ४५।

परिशिष्ट ३: अंतिम पत्र (पृष्ठ ५७०)।

शुद्धिपत्र

पत्र संख्या	पृष्ठ	पॅरा	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
१४	१४	२	२	ह ।	है ।
१७	२१	३	६	रूडं	रूडुं
३६	३९	.		म. भाईश्री	मु. भाईश्री
५६	५४	३	१	भाईलालजीनं	भाई लालजीनुं
७१	६२			फा. व. १	का. व. १
१०९	८४	४	८	ौव ्हां	और वहां
११४	९१	५	२	ी होसकते	ही हो सकते
११६	९४			२७–९–३२	२१–९–३२
१३६	१०९	१	२	थय	थयुं
१४०	११२			च. जमनालाल	चि. जमनालाल
१४०	११२	१	१	बन तेटलो	बने तेटलो
१४४	११४	१	२	तेन	तेनुं
१५४	१२१	ता. क.	१	पुव	पूर्व
१५६	१२२	१	२	nterrupt	interrupt
१८०	१३५	४	२	नाखवापणं	नाखवापणुं
१८४	१३९	१	२	संदर	सुंदर
१९१	१४३	२	५	सतोषजो	संतोपजो
२०७	१५२	२	२	म	में
२१६	१५७	१	१	थयो छ	थयो छे
२४८	१७९	२	१	चीतलीआ	चीतलीआए
२६२	१८७	३	२	जाओ ो	जाओ तो
२७८	१९५	१	२	जो जो ।	जोजो ।
२८५	१९९	१	१	आज	आजे
२९०	२०२	२	२	ोशिश	कोशिश
२९१	२०३	१	१६	मरा पतन	मेरा पतन
३०६	२१३	फुटनोट २	४	कद	कैद
३२७	२२६	१	१	जपुर	जेपुर
३३४	२३०	१	४	लये	लिये
३४०	२३५	१	३	दा. पटलनां	दा. पटेलनां

अनुक्रमणिका